अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष

ABHIMANYU ANAT KE UPANYASON MEIN MAURITIUS KE AAPRAVASI BHARATIYON KA JEEVAN SANGHARSH

[मिजोरम विश्वविद्यालय, आईजोल के हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध]

आराधना शुक्ला

ARADHANA SHUKLA

MZU Regd. No. 1501771

Ph.D. Regd. No. MZU/Ph.D./861 of 19.04.2016

हिंदी विभाग

शिक्षा एवं मानविकी संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF EDUCATION AND HUMANITIES

अगस्त, 2021

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष

ABHIMANYU ANAT KE UPANYASON MEIN MAURITIUS KE AAPRAVASI BHARATIYON KA JEEVAN SANGHARSH

प्रस्तुतकर्ता

आराधना शुक्ला

हिंदी विभाग

Aradhana Shukla

Department of Hindi

शोध-निर्देशक

प्रो. संजय कुमार

हिंदी विभाग

Prof. Sanjay Kumar

Department of Hindi

मिजोरम विश्वविद्यालय, आईजोल के शिक्षा एवं मानविकी संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) की उपाधि के लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध

Submitted in partial fulfilment of the requirement of the degree of Doctorate of Philosophy in Hindi of Mizoram University, Aizawl.

प्रो. संजय कुमार
आचार्य
हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आईजोल -796004

केंद्रीय विश्वविद्यालय
A Central University
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

Prof. Sanjay Kumar
Professor
Department of Hindi
Mizoram University,
Aizawl-796004

Mobile No. - 09402112143; 09774517465; E-mail: sanjaykumarmzu@gmail.com ; Website : www.mzu.edu.in

दिनांक: 31.08.2021

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **आराधना शुक्ला** ने मेरे निर्देशन में मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आईजोल की **डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.- हिंदी)** की उपाधि हेतु **'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष'** विषय पर शोध-कार्य किया है। प्रस्तुत शोध कार्य शोधार्थी की अपनी निजी गवेषणा का फल है। यह इनका मौलिक कार्य है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, प्रस्तुत शोध-प्रबंध या इसके किसी भी अंश को किसी विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी प्रकार की उपाधि हेतु अद्यावधि प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत शोध-प्रबंध को मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आईजोल की **डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.- हिंदी)** की उपाधि हेतु मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

(प्रो. संजय कुमार)
शोध-निर्देशक

हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आईजोल

अगस्त, 2021

<u>घोषणा पत्र</u>

मैं **आराधना शुक्ला** एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध की विषय-सामग्री मेरे द्वारा किए गए शोध-कार्यों का सुपरिणाम है। इस शोध-सामग्री के आधार पर न तो मुझे और जहाँ तक मुझे ज्ञात है, न किसी अन्य को कोई उपाधि प्रदान की गई है और न ही यह शोध-प्रबंध मेरे द्वारा कोई अन्य उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में प्रस्तुत किया गया है। इस शोध-प्रबंध लेखन के दौरान जिन ग्रंथों की सहायता ली गयी है उसे समुचित रूप से उद्धृत किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आईजोल के सम्मुख हिंदी विषय में **डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.- हिंदी)** की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

Aradhana Shukla
(आराधना शुक्ला)
शोधार्थी

(प्रो. सुशील कुमार शर्मा)
अध्यक्ष

(प्रो. संजय कुमार)
शोध-निर्देशक

आभार अभिव्यक्ति

प्रस्तुत शोध-प्रबंध प्रो. संजय कुमार, आचार्य, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के निर्देशन में संभव हो पाया है। यह मेरा परम सौभाग्य रहा है कि उनके जैसे उदारमना, संवेदनशील हृदय व प्रतिभाशाली व्यक्तित्व की छत्रछाया में मुझे शोध-कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। शोध-प्रबंध के विषय-चयन से लेकर उसकी परिसमाप्ति तक उन्होंने अपना अमूल्य समय मुझे दिया। अपने गुरुवर से मुझे सदैव मौलिक विचार प्राप्त होते रहे हैं। उन्होंने सदैव अभिभावक की दृष्टि से अपना आशीर्वाद मुझे प्रदान किया। अपने शोध-निर्देशक के अमूल्य सुझाव, कुशल मार्गदर्शन और प्रेरणादायक सहयोग से ही यह शोध-प्रबंध अपनी पूर्णता तक पहुँच सका है। उनके द्वारा प्राप्त कुशल मार्गदर्शन, आशीर्वाद और स्नेह के लिए मैं आजीवन उनकी ऋणी रहूँगी।

मैं प्रो. सुशील कुमार शर्मा, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल एवं अपने अन्य आदरणीय गुरुजनों - डॉ. सुषमा कुमारी और डॉ. अमिष वर्मा के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने समय-समय पर अपने उचित सुझाव देकर मेरा मार्गदर्शन किया।

मैं उन व्यक्तियों के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने शोध-सामग्री संकलित करने में मेरी सहायता की है। ऐसे लोगों में डॉ. स्नेहा त्रिपाठी, उप-

पुस्तकालयाध्यक्षा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; सुश्री गर्विता झम्ब, शोध-छात्रा, पुस्तकालय विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; श्री दीपक कपूर, व्यावसायिक सहायक, एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली; श्री घनश्याम, पुस्तकालय एवं सूचना सहायक, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मैं, प्रेमचन्द साहित्य एवं अभिमन्यु अनत साहित्य के मर्मज्ञ डॉ. कमल किशोर गोयनका जी के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने समय-समय पर फ़ोन वार्तालाप के माध्यम से न सिर्फ मेरी शोध-विषयक समस्याओं का निराकरण किया बल्कि शोध से सम्बंधित सहायक सामग्री के स्रोतों से भी अवगत कराते रहें हैं।

मैं अपनी गुरुमाता श्रीमती मंजुला सिंह के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने शोध-कार्य के दौरान मुझे अपना स्नेह व आशीर्वाद प्रदान करने के साथ-साथ मेरे मनोबल को बढ़ाया साथ ही समय-समय पर उचित परामर्श प्रदान कर मेरे शोध-कार्य को परिपूर्णता तक पहुँचाने में मेरी मदद की। इनके अमूल्य योगदान के लिये मैं सदैव इनकी ऋणी रहूँगी। अपने विभागीय मित्रों में - ललरिनकिमी सांगी, ललमुआनओमा साइलो, किमी, जेनी आदि के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने शोध-यात्रा के दौरान मेरे मनोबल को बढ़ाया तथा विविध रूप से मेरी मदद की है। मैं अपने घनिष्ठतम मित्रों में - तुहिना, जया, अंकिता, अनामिका एवं स्मृति आदि के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने शोध-यात्रा के दौरान न सिर्फ मेरे मनोबल को बढ़ाया बल्कि

विविध माध्यमों के जरिए मुझे शोध से सम्बंधित सामग्री भी उपलब्ध कराकर तथा समय-समय पर अपने उचित सुझाव देकर शोध-कार्य को पूर्ण करने में मेरी मदद की।

मेरे पिता स्मृतिशेष श्री जागेश्वर प्रसाद शुक्ल का स्नेह और आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ रहा। मेरे शोध कार्य के दौरान ही उनका आकस्मिक देहांत हो गया। उन्हीं से मुझे शोध-कार्य की प्रेरणा मिली थी। ऐसे समय में जब वे नहीं रहे, मेरा शोध-प्रबंध पूर्ण हुआ। मेरा यह शोध-प्रबंध श्रद्धा सहित मेरे पूज्य पिता जी को समर्पित है। मेरे पिता का गौरवमयी व्यक्तित्व, परिश्रमशीलता व संघर्षशक्ति मेरा आदर्श बनकर सदैव मुझे कार्यरत रहने हेतु प्रेरित करता रहेगा। मेरी माता श्रीमती शकुंतला शुक्ल, जिनके ममत्व में मैं पली-बढ़ी और जिन्होंने मुझे शिक्षा के लिए प्रेरित किया तथा नैतिकता का पाठ पढ़ाया उनके प्रति मैं शब्दों में आभार व्यक्त नहीं कर सकती। उनका आशीर्वाद और स्नेह सदैव मेरे सम्बल रहे हैं। मैं अपने दोनों बड़े भाइयों – डॉ. अखण्डानन्द शुक्ल एवं श्री शिवानंद शुक्ल के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मेरे शोध-कार्य के दौरान हर प्रकार से मेरी मदद की है तथा हर प्रकार की सुविधाएँ मुहैया कराकर मेरे शोध-कार्य को पूर्णता तक पहुँचाने में मदद की। इनके सहयोग, आशीर्वाद और स्नेह के परिणामस्वरूप ही मेरा शोध-कार्य अपनी पूर्णता तक पहुँच सका। इसके लिए मैं अपने दोनों भाइयों की चिर ऋणी रहूँगी। मैं अपनी छोटी बहन पूजा शुक्ल के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिसने मुझे हमेशा शोध-कार्य में तत्पर रहने की प्रेरणा दी तथा घरेलू कार्यों से मुक्त करके मुझे अध्ययन हेतु पर्याप्त समय उपलब्ध कराया। मैं अपनी दोनों भाभियों - श्रीमती अर्चना

शुक्ल एवं श्रीमती सविता शुक्ल के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने घर के कार्यों से मुक्त करके मुझे शोध-कार्य के दौरान पर्याप्त समय उपलब्ध कराया। मैं अपनी दोनों भतीजियों - अधीति एवं अभिज्ञा तथा भतीजा - आदित्यवर्धन (काशी) के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपनी बालसुलभ गतिविधियों से मेरी मानसिक थकावट को कम करके मुझमें नवीन चेतना का संचार किया। मैं अपने चाचा श्री पुरूषोत्तम दास शुक्ल, चाची श्रीमती प्रेमा शुक्ल एवम् बड़ी बहन आरती शुक्ल के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके स्नेह, आशीर्वाद एवम् कुशल मार्गदर्शन और सहयोग की वजह से मैं उच्चशिक्षा प्राप्त कर शोध-कार्य की ओर उन्मुख हुई। इनके इस योगदान एवम् आशीर्वाद के लिए मैं चिर ऋणी रहूँगी।

मैं, अपने ससुराल पक्ष के लोगों में श्री श्रीशचन्द मिश्र, श्री धनंजय मिश्र, श्री अनंग मिश्र, रूपेश मिश्र, निष्ठा मिश्र आदि के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ। इनके आशीर्वाद, स्नेह और प्रेरणादायक सहयोग के लिए मैं सदैव ऋणी रहूँगी। मैं, अपनी सासू माँ श्रीमती कंचन मिश्र के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने गृहस्थ कार्यों के दायित्वों से मुक्त करके मुझे पर्याप्त समय उपलब्ध कराकर मेरे शोध-कार्य को पूर्णता तक पहुँचाने में मेरी मदद की, इनके आशीर्वाद, स्नेह और प्रेरणादायक सहयोग के लिए मैं सदैव ऋणी रहूँगी।

मैं मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजाल के केंद्रीय पुस्तकालय के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जहाँ से मुझे शोध-कार्य से सम्बन्धित सामग्री एकत्रित करने में मदद मिली है। मैं अपने विभाग के अन्य कर्मचारियों – श्री रंजीत एवम् श्री रिकी के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने कार्यालयी कामों में मेरी मदद की।

किसी भी कार्य को पूर्ण करने में बहुत से लोगों का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष योगदान निहित होता है। अत: मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मेरे शोध-कार्य को पूर्ण करने में किसी भी प्रकार का सहयोग किया है। मेरा यह शोध-कार्य यदि अभिमन्यु अनत के साहित्य, विशेषकर उपन्यासों के अध्ययन में कुछ नयी कड़ियाँ जोड़ सका तो यही मेरे शोध-कार्य की सफलता होगी।

अंत में सम्भाव्य त्रुटियों की क्षमा-याचना करते हुए मैं अपना प्रस्तुत शोध-प्रबंध मूल्याँकनार्थ सुधी समीक्षकों को समर्पित करती हूँ।

Aradhana Shukla

(आराधना शुक्ला)

हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय

आइज़ॉल – 796 004

प्राक्कथन

प्रवासी हिंदी साहित्यकारों में अभिमन्यु अनत का नाम प्रथम पंक्ति में आता है। अभिमन्यु अनत का नाम उन प्रवासी साहित्यकारों में लिया जाता है, जिन्होंने 'शर्तबंद प्रथा' के तहत भारत से गिरमिटिया मजदूर के रूप में जीवन यापन की तलाश में विभिन्न देशों- मॉरिशस, फीजी, गयाना, सूरीनाम, युगांडा आदि देशों की ओर प्रस्थान करने वाले भारतीय मजदूरों के जीवन संघर्ष को केंद्र में रखकर साहित्य-सृजन किया।

'इंद्रधनुष की काँपती प्रत्यंचा' व 'हिन्दमहासागर का मोती' कहे जाने वाले द्वीप 'मॉरिशस' में जन्में हिंदी के विश्वविख्यात साहित्यकार अभिमन्यु अनत ने अपने साहित्य-सृजन के माध्यम से उन गिरमिटिया मजदूरों के संघर्षमय जीवन को चित्रित किया है, जिन्हें सन 1834 ई. के आस-पास 'शर्तबंद प्रथा' के तहत भारत से मॉरिशस में सुखमय जीवन यापन का सपना दिखाकर एवं मॉरिशस में 'पत्थरों के नीचे सोना-ही-सोना' मिलने का सब्जबाग दिखाकर, छल-कपट पूर्वक दलालों द्वारा ले जाया गया था।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार अभिमन्यु अनत ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं- कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, जीवनी, बाल-साहित्य, चित्रकारी, पत्रकारिता, संकलन-संपादन आदि में अपनी लेखनी चलायी है। अनत जी अपनी लेखनी के माध्यम से जहाँ एक ओर ब्रिटिश औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के विविधोन्मुखी शोषण को व्यक्त किया है, वहीं दूसरी ओर विविध विधाओं में

साहित्य-सृजन करके आने वाली पीढ़ी के लिए नए संभावनाओं के द्वार भी खोले। अनत जी वस्तु और शिल्प दोनों ही दृष्टि से मॉरिशसीय हिंदी साहित्य को नयी भाव-भूमि प्रदान की। अनत जी ने विभिन्न विधाओं के माध्यम से औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में गोरों के शासनकाल में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों एवं आप्रवासी भारतीयों के जीवन-संघर्ष को चित्रित किया है। किन्तु जिस विधा में उन्होंने सर्वाधिक मात्रा में साहित्य रचा है, वह है उपन्यास विधा। उनके द्वारा रचित उपन्यासों का मूल स्वर है- मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का दीर्घकालीन संघर्ष। अभिमन्यु अनत ने अपनी रचनाओं में मॉरिशस में रहने वाले आप्रवासी भारतीयों की संघर्ष गाथा वगोरे शासकों की बर्बरता को यथार्थ रूप में व्यक्त किया है। अनत जी द्वारा रचित 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास तथा 'गूँगा इतिहास' नाटक में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के जीवन संघर्ष एवं गोरे शासकों के अन्याय, अत्याचार, भेद-भावपरक व्यवहार, बर्बरता आदि का जीवन्त चित्रण किया गया है। अनत जी के उपन्यासों में गौरवर्णी शासकों, कोठी के मालिकों, सरदारों, गोरों के हिमायतियों आदि के शोषणतंत्र में पिसते भारतीय गिरमिटया मजदूरों की शोषित, पीड़ित उपेक्षित व दयनीय दशा को प्राप्त स्थिति का जीवंत चित्रण मिलता है।

गोरे शासकों के शासनकाल में शर्तबंद प्रथा के तहत जाने वाले गिरमिटिया मजदूरों के साथ काले दासों जैसा बर्ताव किया जाता था। भारतीय मजदूरों को वहाँ (मॉरिशस) पर न तो भरपेट भोजन दिया जाता था और न ही पीने को पानी। उनके साथ पशुओं से भी बदतर व्यवहार किया जाता था। भारतीय मजदूरों की स्थिति गोरे मालिकों के पालतू कुत्तों से भी गैर-गुजरी थी। वहाँ पर मजदूरों की भाषा व संस्कृति की खिल्ली उड़ाई जाती थी। बात-बात पर उन्हें जाहिल, गँवार, असभ्य, जंगली आदि शब्दों से

सम्बोधित किया जाता। न तो उन्हें पूजा-पाठ करने की छूट थी और न ही धार्मिक ग्रंथों-रामायण, गीता, हनुमान चालीसा आदि को पढ़ने एवं उनकी पंक्तियाँ गुनगुनाने की छूट थी। यदि कभी किसी मजदूर के मुँह से वे रामायण आदि की चौपाइयाँ गाते सुन लेते तो उस मजदूर पर कोड़ों की बौछार शुरू होते देर नहीं लगती थी। कठोर-से-कठोर काम भारतीय मजदूरों के लिए होते थे और कम मेहनत वाले काम अन्य मजदूरों या क्रियोलों के लिए होते थे। बैलों के स्थान पर भारतीय मजदूरों से गन्ने से भरी गाड़ियाँ खिंचवायी जाती। और यदि कभी कोई मजदूर अत्यधिक थकावट की वजह से काम में पीछे रह जाता तो उस पर सरदारों के कोड़ों की बौछार शुरू हो जाती। भारतीय मजदूरों के साथ काम के स्तर पर तो भेद-भाव किया ही जाता था, पारिश्रमिक के स्तर भी भेद-भाव किया जाता था। अधिक-से-अधिक काम करवाकर भी कम-से-कम वेतन दिया जाता था और कभी-कभी तो मजदूरों पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण करके उनके वेतन की कटौती कर ली जाती थी।

भारतीय मजदूरों द्वारा यदि कभी कोठी के सरदारों व दलालों से अपने साथ होने वाले अन्याय, अत्याचार, भेद-भावपरक व्यवहार के बारे पूँछा जाता तो, इसके प्रत्युत्तर में उन पर गालियों की बौछार होती या उन पर मालिकों के पालतू कुत्ते दौड़ा दिए जाते, ताकि वे मजदूरों की बोटी-बोटी कर सकें। विद्रोही तेवर के मजदूरों को रास्ते से हटाने के लिए कभी उनको कैद में डाल दिया जाता तो कभी फाँसी के फन्दे पर लटका दिया जाता। अनत जी ने अपने साहित्य, विशेषकर उपन्यासों के माध्यम से मॉरिशस में शर्तबंद प्रथा के तहत लाये गए गिरमिटिया मजदूरों की उस त्रासदपूर्ण गाथा का यथार्थपरक चित्रण किया है, जिसे न तो वहाँ के इतिहासकारों ने अपने इतिहास ग्रंथों में स्थान दिया और न ही तत्कालीन साहित्यकारों ने। गोरों के अमानवीय अत्याचार और आप्रवासी भारतीय

मजदूरों के साहस, संघर्ष, त्याग, बलिदान आदि से प्रभावित होकर अनत जी साहित्य-सृजन की ओर उन्मुख होते हैं। और अपनी सशक्त लेखनी, संवेदनशील ह्रदय व प्रखर आलोचकीय दृष्टि से मॉरिशसीय समाज की जीवन्त झाँकी प्रस्तुत कर सके। अनत जी द्वारा रचित 'लाल पसीना' उपन्यास उनका बहुचर्चित उपन्यास है। यह उपन्यास अनत जी की लोकप्रियता का प्रमुख कारण भी रहा है।

'लाल पसीना' उपन्यास को पढ़ने के बाद मेरे मन में अनत जी के साहित्य एवं आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के विषय में और अधिक जानने की इच्छा बलवती होती गयी। जिसके परिणामस्वरूप मैंने अनत जी के साहित्य, विशेषकर उपन्यासों पर शोध-कार्य करने का निर्णय लिया।

मॉरिशसीय साहित्यकार अभिमन्यु अनत के साहित्य को आधार बनाकर अब तक बहुत से शोध-कार्य हो चुके हैं। किन्तु 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष' विषय पर अभी तक कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है। अनत जी के उपन्यासों की नए दृष्टि से अवलोकन करने हेतु मैंने उक्त विषय को अपने शोध-कार्य के लिए चयनित किया है। मेरे इस शोध-कार्य द्वारा अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के जीवन संघर्ष को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। मेरे इस शोध-कार्य से अभिमन्यु अनत के उपन्यासों से सम्बंधित तथा आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों से सम्बंधित जो नवीन तथ्य प्राप्त होंगे वे एक नई दिशा की ओर हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत शोध-प्रबंध को 5 अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय 'अभिमन्यु अनत: व्यक्तित्व और कृतित्व' है। जिसमें दो उप-अध्याय हैं। प्रथम उप-अध्याय 'अभिमन्यु अनत: व्यक्तित्व' में मॉरिशसीय साहित्यकार अभिमन्यु अनत के व्यक्तित्व का एवं उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न परिस्थितियों, घटनाओं व व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है, जिनसे अनत जी की अंतर्मानसिकता प्रभावित होती है और जिनकी वजह से वे वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना पाते हैं। द्वितीय उप-अध्याय 'अभिमन्यु अनत: कृतित्व' है। इसके अन्तर्गत अनत जी के समस्त रचना-संसार का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय' है। जिसे तीन उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप-अध्याय 'मॉरिशस: इतिहास और भूगोल की अंतर्यात्रा' में मॉरिशस के इतिहास एवं वहाँ की भौगोलिक स्थिति तथा प्राकृतिक सुषमा की नैसर्गिक छटा का वर्णन किया गया है। द्वितीय उप-अध्याय 'आप्रवासी भारतीय की अवधारणा' में प्रवास, प्रवासी, आप्रवासी, भारतवंशी आदि शब्दों के अंतर को स्पष्ट करते हुए उन्हें परिभाषित किया गया है साथ ही प्रवास के विभिन्न प्रकारों की चर्चा भी की गयी है। तृतीय उप-अध्याय 'मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन' में मॉरिशस द्वीप पर विभिन्न जत्थों में भिन्न-भिन्न उद्देश्य से तथा भिन्न-भिन्न रूपों में आने वाले भारतीयों के आगमन का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष' है। जिसे चार उप-अध्यायों में बाँटा गया है। प्रथम

उप-अध्याय 'सामाजिक संघर्ष' में शर्तबन्द प्रथा के तहत मॉरिशस जाने वाले गिरमिटिया मजदूरों की संघर्ष गाथा एवं गोरों के अमानवीय अत्याचारों का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। द्वितीय उप-अध्याय 'राजनीतिक संघर्ष' में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है साथ ही उनके द्वारा मॉरिशस को ब्रिटिश दासता से मुक्त कराने हेतु किए गए संघर्षों पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय उप-अध्याय 'आर्थिक संघर्ष' है। जिसके अंतर्गत स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय मजदूरों के आर्थिक संघर्ष का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। साथ ही आर्थिक तंगी की पराकाष्ठा से जूझते किसान मजदूरों की विपन्नता का एवं आर्थिक तंगी के विभिन्न कारणों एवं उसके दुष्परिणामों को भी विवेचित किया गया है। चतुर्थ उप-अध्याय 'धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्ष' में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में शर्तबंद प्रथा के तहत मॉरिशस जाने वाले गिरमिटिया मजदूरों की अपने धर्म व संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा व प्रेम का चित्रण किया गया है साथ ही उनके द्वारा पराई भूमि में अपनी सभ्यता, संस्कृति व धार्मिक आस्था को जीवंत बनाए रखने के लिए किए गए संघर्ष को भी विवेचित किया गया है तथा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा मनाए जाने वाले विभिन्न रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार, परम्पराएँ, मान्यताएँ, लोक-विश्वास, साहित्यिक संघर्ष आदि को भी विश्लेषित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष' है। जिसे चार उप-अध्यायों में बाँटा गया है। प्रथम उप-अध्याय 'सामाजिक संघर्ष' में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीयों के सामाजिक संघर्ष को दर्शाया गया है। द्वितीय उप-अध्याय 'राजनीतिक संघर्ष' में

स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक स्थिति, उसमें आप्रवासी भारतीयों की सक्रिय भागीदारी, भ्रष्ट शासन प्रणाली, राजनीतिक हथकंडे तथा चुनावी सरगर्मियों एवं चुनाव के पश्चात् मंत्रिमंडल में होने वाली खींचातानी आदि का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। तृतीय उप-अध्याय 'आर्थिक संघर्ष' में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों की आर्थिक तंगी, आर्थिक तंगी के विभिन्न कारणों उसकी वजह से उत्पन्न अनेक समस्याओं तथा उसके दुष्परिणामों का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। चतुर्थ उप-अध्याय 'धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्ष' में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था, भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के प्रति उनके लगाव एवं उसके संरक्षण हेतु आप्रवासी भारतीयों द्वारा किए गए संघर्षों का विवेचन किया गया है।

पंचम अध्याय 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्री' है। जिसे तीन अध्यायों में बाँटा गया है। प्रथम अध्याय 'पितृसत्तात्मकता और स्त्री' में स्वतन्त्रता-पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में स्त्रियों की शोषित, पीड़ित, उपेक्षित व दयनीय दशा का निरूपण किया गया है। द्वितीय उप-अध्याय 'पारिवारिक एवं आर्थिक जीवन' में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की पारिवारिक ज़िम्मेदारी व उनके द्वारा निभाए जाने वाले दायित्वों को दर्शाते हुए अर्थोपार्जन के क्षेत्र में उनके योगदान को भी विवेचित, विश्लेषित किया गया है। तृतीय उप-अध्याय 'नारी मुक्ति की चेतना' में आधुनिक चेतना से सम्पन्न, स्वतंत्र विचारों वाली, शिक्षित नवयुवतियों की विचारधारा को विवेचित किया गया है, जो पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था की उन सड़ी-

गली मान्यताओं, मूल्यों, नियमों व क़ानूनों को मानने से इंकार करती हैं जिनकी वजह से स्त्रियों की व्यक्तिगत भावों व विचारों, आशा-आकाँक्षा आदि की उपेक्षा होती है।

उपसंहार के अंतर्गत प्रस्तुत शोध-प्रबंध के अध्यायों से प्राप्त निष्कर्षों का समाहार एवं समाकलन प्रस्तुत किया गया है। अंत में परिशिष्ट एक के अंतर्गत संदर्भ ग्रंथ सूची दी गयी है जिसके अंतर्गत प्रस्तुत शोध-प्रबंध लेखन के दौरान जिन पुस्तकों की सहायता ली गयी है उसका सम्पूर्ण विवरण आधार ग्रंथ सूची एवं सहायक ग्रंथ सूची के अंतर्गत दिया गया है। परिशिष्ट दो के अंतर्गत अनुसंधित्सु का सम्पूर्ण विवरण मिज़ोरम विश्वविद्यालय के नियमानुसार दिया गया है।

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस के

आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
प्रमाण पत्र	**i**
घोषणा पत्र	**ii**
आभार अभिव्यक्ति	**iii**
प्राक्कथन	**viii**
विषयानुक्रमणिका	**xvi**
प्रथम अध्याय: अभिमन्यु अनत: व्यक्तित्व और कृतित्व	**1-89**
(क) अभिमन्यु अनत: व्यक्तित्व	2
(ख) अभिमन्यु अनत: कृतित्व	26
द्वितीय अध्याय: मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय	**90-166**
(क) मॉरिशस: इतिहास और भूगोल की अंतर्यात्रा	90
(ख) आप्रवासी भारतीय: अवधारणा	138
(ग) मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन	143
तृतीय अध्याय: अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष	**167-295**

(क)	सामाजिक संघर्ष	169
(ख)	राजनीतिक संघर्ष	208
(ग)	आर्थिक संघर्ष	233
(घ)	धार्मिक एवं सांस्कृतिक संघर्ष	254

चतुर्थ अध्याय: अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयोंका जीवन संघर्ष **296-392**

(क)	सामाजिक संघर्ष	297
(ख)	राजनीतिक संघर्ष	323
(ग)	आर्थिक संघर्ष	342
(घ)	धार्मिक एवं सांस्कृतिक संघर्ष	356

पंचम अध्याय: अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्री **393-482**

(क)	पितृसत्तात्मकता और स्त्री	394
(ख)	पारिवारिक एवं आर्थिक जीवन	430
(ग)	नारी मुक्ति की चेतना	458

उपसंहार **483-520**

परिशिष्ट- 1

संदर्भ ग्रंथ सूची **521-527**

परिशिष्ट- 2

अनुसंधित्सु का बायोडाटा **528-529**

अनुसंधित्सु का विवरण **530**

प्रथम अध्याय

अभिमन्यु अनत: व्यक्तित्व और कृतित्व

विषय प्रतिपादन

मॉरिशस हिन्द महासागर में स्थित एक छोटा सा द्वीप है, जो अफ्रीका के दक्षिणपूर्वी तट से 2000 किलोमीटर दूरी पर अवस्थित है। मॉरिशस संसार का एक अनोखा देश है जिसका ऐतिहासिक संबंध हालैण्ड, फ्रांस, अफ्रीका, इंग्लैंड, चीन और भारत आदि देशों से जुड़ा रहा है। मॉरिशस द्वीप की खोज तब हुई जब डच, फ्रेंच तथा अंग्रेज़ जातियाँ अपने-अपने व्यापारिक हितों को ध्यान में रखकर हिन्द महासागर के तटवर्तीय देशों को तथा पूर्व के देशों को अपने-अपने उपनिवेश बनाने में संलग्न थे। सर्वप्रथम अरबवासियों का आगमन मॉरिशस द्वीप पर हुआ था। फिर 17वीं शताब्दी के प्रारंभ में पुर्तगालियों का आगमन हुआ और उन्होंने इस द्वीप पर कब्जा कर लिया। 1638 से लेकर 1710 ई. तक पुर्तगालियों का कब्जा इस द्वीप पर रहा। बाद में फ्रांसीसी आए और उन्होंने इस पर कब्जा कर लिया। 1715 से लेकर 1810 ई. तक फ्रांस का कब्जा इस द्वीप पर रहा। नौसैनिक युद्ध (ग्रां पोर्ट युद्ध) के बाद ब्रिटेन ने मॉरिशस पर कब्जा कर लिया और उसका यह कब्जा 1810 से लेकर 1968 ई. तक मॉरिशस के स्वतंत्र होने तक बकरार रहा। लंबे संघर्ष के बाद 1968 ई. में मॉरिशस को स्वतंत्र प्राप्त हुई और 1992 ई. में वहाँ गणतंत्र की स्थापना हुई। अगर ध्यान से देखा जाए तो मॉरिशसके प्रारंभिक तीन शताब्दियों का इतिहास यूरोपीय उपनिवेशिक शक्तियों की अमानुषिक लूट,बर्बरता और अत्याचार की गवाह रही है जिसने मॉरिशस के इतिहास, भूगोल एवं समाज को अनगिनत घाव दिये हैं।

मॉरिशस उन भारतेतर देशों में से है जहाँ सन् 1834 ई॰ से शर्तबंद प्रथा के अंतर्गत, जो दासत्व का दूसरा रूप था, भारतीयों को भेजा जाता रहा। इसके अंतर्गत सन्

1923 ई॰ तक लगभग साढ़े चार लाख भारतीय मॉरिशस आये जिनमें से लगभग डेढ़ लाख भारतीय अपना पट्टा पूरा कर स्वदेश (भारत) लौट गए और शेष तीन लाख के करीब लोग गोरों के अमानवीय अत्याचार सहकर भी वहीं रह गये। जिन भारतीयों के आत्मबलिदान से इस देश का कायाकल्प हुआ और जिनकी परिश्रमशीलता से यह संसार के मानचित्र पर उभरा उन्हीं भारतीयों की संतानों ने बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में अपने राजनीतिक अधिकारों को पहचानकर संघर्ष किया और बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में मॉरिशस को स्वतंत्र कराके अपने नेतृत्व का उदाहरण पेश किया। आज उन्हीं में से कुछ लोग या उनके वंशज प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, गवर्नर जनरल, सरकारी और अर्द्ध-सरकारी संस्थानों के निदेशकों के अलावा बैंकों के निदेशक, बीमा कंपनियों के संचालक, कृषि तथा वाणिज्य मण्डल के निदेशक आदि बनकर अपनी पहचान बनाए हुए हैं। इसी वर्ग से उच्चकोटि के लेखक और साहित्यकार भी हुए जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की। ऐसे लेखकों में अभिमन्यु अनत, प्रह्लाद रामशरण, रामदेव धुरंधर, सोमदेव बखौरी, मुनीश्वरलाल चिंतामणि आदि प्रमुख हैं। मॉरिशस में रहकर भी हिन्दी भाषा व साहित्य के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशीलरहने वाले लेखकों में अभिमन्यु अनत का नाम सबसे ऊपर रहा है।

(क) व्यक्तित्व

किसी भी व्यक्ति के 'व्यक्तित्व' को जानने से पूर्व यह जानना आवश्यक हो जाता है कि 'व्यक्तित्व' है क्या? इसका सामान्य अर्थ क्या है? व इसकी परिभाषा क्या है?

''व्यक्तित्व' शब्द अँग्रेजी के 'पर्सनैलिटी' (personality) का हिन्दी रूपांतर है। यह लैटिन शब्द 'परसोना' (persona) से लिया गया है। जिसका अर्थ है- वेशभूषा। जिसे नाटक करते समय, नाटक के पात्र पहनकर तरह-तरह के रूप बदला करते थे। आरंभ में

'व्यक्तित्व' शब्द का अर्थ बाह्य आवरण के रूप में किया जाता था। इस प्रकार 'व्यक्तित्व' शब्द बाह्य गुणों की ओर संकेत करता है।"[1]

साधारणतया 'व्यक्तित्व' शब्द का अर्थ किसी व्यक्ति के रंग-रूप, वेश-भूषा, आकृति विशेष, खान-पान, रहन-सहन व बात-व्यवहार से लिया जाता है। किन्तु सिर्फ इतने से ही किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का आकलन नहीं किया जा सकता है क्योंकि व्यक्तित्व में व्यक्ति के बाह्य गुणों के साथ-साथ उसका आंतरिक गुण भी समाहित होता है, जिसके अंतर्गत उसकी स्वभावगत विशेषताएँ भी निहित होती हैं।

किसी भी व्यक्ति के आचार-विचार, रहन-सहन, व्यवहार, वेश-भूषा तथा कार्य करने के तरीके आदि में उसके व्यक्तित्व की झलक देखी जा सकती है,जो उसे अन्य लोगों से भिन्न बनाती है। आधुनिक युग में 'व्यक्तित्व' शब्द का व्यापक अर्थ ग्रहण किया गया है, जिसमें व्यक्ति के बाह्य आकृति के साथ-साथ उसके आंतरिक गुणों को भी समाहित किया गया है। 'व्यक्तित्व' शब्द को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। व्यक्तित्व से संबन्धित कुछ परिभाषाएँ निम्नवत् प्रस्तुत हैं-

वेलेंटीन के अनुसार- ***"व्यक्तित्व जन्मजात और अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।"[2]***

आलपोर्ट के अनुसार- ***"व्यक्तित्व, व्यक्ति के भीतर उन मनो-शारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अद्वितीय समायोजन निर्धारित करता है।"[3]***

मन के अनुसार-***"व्यक्तित्व, एक व्यक्ति के व्यवहार के तरीकों, रुचियों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं, योग्यताओं तथा अभिरुचियों का विशिष्ट संगठन है।"[4]***

मनोविज्ञान में 'व्यक्तित्व' को व्यक्ति का न सिर्फ बाह्य आवरण माना गया है और न ही केवल आंतरिक गुण। बल्कि दोनों (आंतरिक और बाह्य तत्व) के समन्वित रूप को व्यक्तित्व की संज्ञा दी गयी है जिसमें व्यक्ति के वंशानुगत प्रणाली और वातावरण का अहम् योगदान रहता है। किसी भी व्यक्ति के 'व्यक्तित्व' के विकास में उसके पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश की विशेष भूमिका होती है। क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते समाज में घटित होने वाली हर छोटी-बड़ी घटनाओं से वह किसी-न-किसी रूप से प्रभावित होता है। भले ही उस घटना का प्रभाव सभी व्यक्तियों पर समान रूप से न पड़े, किन्तु प्रभावित हुए बगैर मनुष्य नहीं रह सकता। और यही प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। अत: किसी भी संवेदनशील व प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार के रचनाकर्म को समझने के लिए उसके व्यक्तित्व एवं व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का अध्ययन अनिवार्य हो जाता है। यहाँ पर मॉरिशस के हिन्दी कथा-सम्राट अभिमन्यु अनत के रचनाकर्म को समझने के लिए उनके व्यक्तित्व एवं उनको प्रभावित करने वाली विभिन्न परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है।

'हिन्द महासागर के मोती' माने जाने वाले द्वीप 'मॉरिशस' में जन्में हिन्दी के प्रतिष्ठित कथाकार अभिमन्यु अनत ने भारत के हिन्दी पाठकों में भी ख़ासी लोकप्रियता हासिल की है। अभिमन्यु अनत सर्वाधिक चर्चित भारतेतर साहित्यकार हैं जो मॉरिशस में रहते हुए भी हिन्दी भाषा में साहित्य-सृजन करते हैं।

अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त 1937 ई॰ को मॉरिशस के उत्तर प्रांत के त्रिओले नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम पतिसिंह व माता का नाम सुभागो देवी था। इनके पिता जी अत्यंत उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। साथ ही वे कुशल सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। वे हिन्दी के साथ-साथ अँग्रेजी व फ्रेंच भाषा का भी ज्ञान रखते थे। लोगों को कानूनी सुझाव देने के साथ-साथ उन्हें पत्र-पत्रिकाएँ भी पढ़कर सुनाते थे। पिता जी की उदार प्रवृत्ति के कारण इनका परिवार सदैव आर्थिक तंगी से जूझता रहा। अनत जी की

माता जी अत्यंत दृढ़संकल्प, धैर्यवान तथा धार्मिक आस्था वाली महिला थीं। वे 'रामायण', 'महाभारत' आदि धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करती थीं और हिन्दी भाषा का भी पर्याप्त ज्ञान रखती थीं। पठन-पाठन में भी उनकी विशेष रुचि थी। वे अनुशासन प्रिय थीं। माता जी के दृढ़ व्यक्तित्व और अटूट लगन से ही इनका पारिवारिक संतुलन बना रहा।गाय-बकरियों को पालकर तथा खेतों में काम करके वे अपने परिवार का भरण-पोषण करती थीं। अपने माता-पिता के स्वभाव व उनकी गतिविधियों का वर्णन करते हुए तथा स्वयं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले उसके प्रभाव के बारे में अनत जी कहते हैं- **"मेरे माँ-बाप मॉरिशस में जनमें थे और यहीं विवाह हुआ उनका। पिता जी हिन्दी के साथ-साथ अँग्रेजी-फ्रेंच का भी ज्ञान रखते थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दिनों वे जब अखबार लेकर बैठते थे तो बीस-तीस लोग उनके इर्द-गिर्द होते थे उन खबरों को सुनने के लिए। गाँव के लोग उनसे पत्र लिखाने और पढ़वाने आ जाते थे। वह लोगों को कानूनी सुझाव भी देते रहते थे। वह कई सभाओं के मंत्री, प्रधान भी रह चुके थे। सामाजिक कार्यों से कभी थके नहीं, अपनी 94 वर्ष की उम्र तक। जहाँ तक माँ की बात है, वे केवल हिन्दी पढ़ लेती हैं। बड़ी विचित्र स्थिति में उन्होंने हिन्दी सीखी थी। मेरे मामा घर पर बच्चों को हिन्दी सिखाते थे। मेरी माँ सुना-सुनी, देखा-देखी हिन्दी स्वयं लिखती-पढ़ती रहीं। वे 'रामायण' पढ़ती थी जो मुझे कभी नहीं आयी। मेरे जनमने के बाद घर में जो समृद्धि थी,वह लुप्त हो चली थी। मेरी माँ खेतों में काम करके गाय-बकरियाँ पालती थीं। वह अनुशासनप्रिय थीं। सफाई इत्यादि के लिए मेरी बहनों की नाक में दम आ जाता था। ग्यारह वर्ष की उम्र में उनकी शादी हुई थी। मेरे ग्यारह भाई-बहनों में आज केवल चार बाकी हैं। दो बड़ी बहनें और एक छोटा भाई। माँ पूजा-पाठ पर बहुत अधिक विश्वास करती हैं, विशेषकर दुर्गा पाठ पर। आज 83 वर्ष की उम्र में वह बीमार रहती हैं, पर पढ़ना नहीं छूटा। मेरे अध्ययन कक्ष में जो भी पुस्तक उनके हाथ आ जाती है, उसे पढ़ने बैठ जाती हैं। रामायण-महाभारत पर लंबी चर्चा करके खुश होती हैं।**

माँ के धार्मिक संस्कारों को तो मैं उस हद तक नहीं अपना सका, लेकिन उनकी वह तल्लीन पठन-प्रवृत्ति मेरा उनसे मिला सबसे बड़ा संस्कार है। अपने पिता का हरिश्चंद्री स्वभाव तो नहीं पा सका, लेकिन आम आदमी के प्रति उनका वह रुझान मेरा संस्कार जरूर बन गया।"[5]

अनत जी के पूर्वज बिहार के आरा जिले से मॉरिशस पहुँचे थे। अपने पूर्वजों का परिचय देते हुए एवं मॉरिशस में उनके संघर्षमय जीवन का उल्लेख करते हुए वे डा॰ कमलकिशोर गोयनका से एक साक्षात्कार में कहते हैं- **"मेरे दादा जी आगरा के थे। मेरी दादी बंगालिन थीं। मेरे नाना चंडेल गाँव के थे। चिनार स्टेशन बताते थे। नानी भी राजस्थान की थीं। उनसे सुनी ढोलामारू की कहानी आज भी मेरी माँ बच्चों को सुनाती है। दादा का नाम अनत सिंह था और नाना जवाहिर सिंह थे। दलालों के इस बहकावे में कि मॉरिशस के पत्थर पलटने पर सोना मिलेगा, मजदूर रूप में यहाँ आ गये थे। पिता का नाम पतिसिंह और माँ का नाम सुभागिया है। मेरे दादा विद्रोही स्वभाव के थे कोठी के गोरों के साथ उनकी कई बार मुठभेड़ होती रही थी। मेरे पिता जी बताते थे कि मजदूरों को संगठित करने और उनकी दास-नियति को समाप्त करने के लिए उन्होंने अनेक प्रयास किए। मेरे पिता जी मजदूर से खेतिहर बने, पर अपने दानी स्वभाव की वजह से जब मरे तो एक बीघा जमीन भी नहीं छोड़ गये।"**[6]

मॉरिशस में अपने पूर्वजों के आगमन और उनके साथ गोरों द्वारा किए गए छल-कपट और दुर्व्यवहार के बारे में अनत जी बताते हैं-**"मेरे दादा जी गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस लाये गये थे। उन्हें कुली कहा जाता था। उस समय मॉरिशस को फ्रांसीसियों से अंग्रेजों ने जीत लिया था, लेकिन देश में फ्रांसीसियों का प्रभुत्व नहीं मिटा**

था। उन्हीं फ्रांसीसियों की कोठी में काम करने के लिए भारतीय मजदूर लाये गये थे, क्योंकि मडागास्कर से आए हुए दास, दास-प्रथा की समाप्ति के कारण, ईख के खेतों में काम करने से इनकार कर चुके थे। जिन शर्तों और परिस्थितियों में भारतीय मजदूरों को मॉरिशस में जीना पड़ा वे हृदयविदारक हैं। 'लाल पसीना' उसी व्यथा, उसी इतिहास का उपन्यास है। लोगों पर चाबुकों की बौछार होती थी। सप्ताह भर के काम के लिए बारह आने और दो डिबिया चावल-दाल मिलते थे। अपनी संस्कृति से उन्हें हटाने की कोशिश हर बार की जाती थी। 'रामायण' और हिन्दी पढ़ना मना था। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने पर थोड़ी-बहुत इज्जत मिल जाती थी और खेतों से हटकर दफ्तरों में नौकरी मिल पाती थी। एक बहुत ही लंबी अवधि के बाद भारतीय मजदूर अपने सिर उठाने में सफल हुए थे। इससे पहले खेतों में काम करते हुए कमर सीधी करने का मतलब था-गोरे मालिकों की गालियों की बौछार और कोड़ों की मार। मॉरिशस में मेरे परिवार के साथ वही सब कुछ हुआ जो अन्य हजारों मजदूरों के साथ हुआ। कपड़े रोटी की मोहताजी और खून-पसीना एक करके गोरे-मालिकों की तिजोरियाँ भरने की विवशता उनके सामने थी। चोरी-चुपके हिन्दी पढ़ते-पढ़ाते अपनी संस्कृति को जीवित रखे आ रहे थे। उन अत्याचारों को मैंने देखा तो नहीं था,लेकिन उनके परिणामों को भुगता जरूर। उसी के फलस्वरूप गरीबी को भोगते हुए। उस शोषण को मानसिक स्तर पर हर वक्त जीता रहा। उसे जीकर ही ऐतिहासिक यातनाओं की प्रतिक्रियास्वरूप लेखक बना।"[7]

अनत जी का बचपन अत्यंत गरीबी में बीता है। अनत जी स्वीकार करते हैं कि कभी-कभी घर में भोजन की कमी पड़ जाती थी तो उनकी माँ दोनों भाईयों को भुने हुए शकरकंद देती थीं। दोनों भाई शकरकंद खाकर अपनी भूख मिटाते थे। गरीबी के कारण अनत जी अपनी औपचारिक शिक्षा नहीं पूरी कर पाए। उनकी स्कूली शिक्षा मात्र तीसरी कक्षा तक ही हो पाई। इस संदर्भ में वे एक साक्षात्कार में डा. कमल किशोर गोयनका से कहते हैं- **"इस जन्म में तो**

पढ़ने और प्रमाण-पत्र हासिल करने का मुझे अवसर ही नहीं मिला। यह बात एकदम सही है कि गलियों में मेरी पढ़ाई हुई। आम आदमी मेरे अपने विश्वविद्यालय के अध्यापक रहे और अपने देश की तत्कालीन स्थितियों और परिस्थितियों ने मेरे भीतर के रचनाकार को जन्म दिया।"[8]

अनत जी अपनी आर्थिक तंगी व अभावग्रस्त जीवन का उल्लेख करते हुए अपने जीवन की उन घटनाओं का भी जिक्र करते हैं जिनकी वजह से उनके व्यक्तित्व में निखार आया और जिन्होंने उन्हें किसी न किसी रूप में लेखन की ओर प्रेरित किया। अपनी आपबीती सुनाते हुए वे डा.कमल किशोर गोयनका से कहते हैं- **"दो घटनाएँ तो आप को बता ही दूँ। पहली घटना तो उस समय की है जब मैं अठारह साल का हो चला था। माँ-बाप दोनों लंबी बीमारी झेल रहे थे। घर पर हम लोग मकई, कंद, फ्रीआपें (विलायती कटहल) और रोटीफल (जिसे उबालकर खाया जाता है) खाकर दिन गुजार रहे थे। मेरे कालेज की पढ़ाई तीसरी कक्षा के बाद बंद हो गयी थी। घर पर बहन और भाई थे। माँ विवश होकर कह देती कि मैं कोई नौकरी क्यों नहीं करता। हमारा एक बहुत ही धनी रिश्तेदार था जिसकी परवरिश कभी हमारे घरहुई थी। माँ को किसी तरह मनाकर हम उस रिश्तेदार के यहाँ पहुँचे। माँ ने जब उससे मेरे लिए नौकरी की माँग की तो वह तपाक से बोला था मुझ जैसा जवान व्यक्ति तो जहाँ चाहे वहाँ से दो-तीन रुपये कमा ही सकता है तो फिर अब तक मैं बेकार रहकर नौकरी की भीख क्यों माँगता फिर रहा हूँ। मेरे कमजोर शरीर और हमेशा बीमार रहने की वजह से माँ नहीं चाहती थी कि मैं कोई भारी शारीरिक काम करूँ। वह हमेशा मेरे लिए एक आरामदेह नौकरी की ख़्वाहिश रखे हुई थीं। उस रिश्तेदार की इंकारी के बाद वह निराश थीं; पर मैं नहीं। उस घटना ने मुझे जो संकल्प दिया वही आज मुझे यहाँ तक ले आया है।"**[9]

अपने व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली दूसरी घटना का उल्लेख करते हुए वे कहते हैं- **"दूसरी घटना तब की है जब उधर से संकल्प के बाद मैं गाँव की कोठी में मजदूर बना। ईख की कटाई हो रही थी। कड़कती धूप में पसीने से तर मजदूरों के बीच मैं भी हाथ में गड़ासा लिए छूटे हुए गन्ने बटोर रहा था कि कोठी का भीमकाय मालिक मेरे पीछे से आकर मुझे गाली दे गया। मैं चुप रहा। आगे बढ़कर उसने आग के लिए पुलिया बटोरती एक औरत को भी गाली दी। मैं चुप ही रहा। फिर सामने जो मजदूर था उसे अपने छाते से पीट-पीटकर उसकी माँ-बहन पर उतार आया।———मालिक की उस हरकत ने मेरे खून को खौला दिया और उसकी दिशा में अपने गड़ासे को चलाकर मैं मुंडेर पर खड़ा हो गया। उसके सहम जाने पर मैं पगडंडी से होकर घर लौट आया- इस बार उस प्रण के साथ कि मैं मजदूरों के लिए गड़ासा तो नहीं चलाऊँगा, पर उनकी ओर से सवाल जरूर करूँगा। अपना शब्द-स्वर उछालूँगा।"**[10]

अनत जी का वैवाहिक जीवन: अनत जी का विवाह एक अनाथ लड़की से हुआ। उनकी पत्नी का नाम सरिता देवी था। जो बहुत ही साधारण किस्म की औरत थीं। वे अनपढ़ थीं शादी के पश्चात् अनत जी के सानिध्य में हिन्दी का ज्ञानार्जन किया तथा अनत जी की रचनाओं की पाठक भी बनी औरअपने पति के लेखन कार्य में सहयोग देने के लिए उनके लेखन की प्रतिलिपियाँ भी तैयार करती थीं। अनत जी अपनी पत्नी के स्वभाव एवं अपने लेखन में उनके योगदान को स्वीकार करते हुए कहते हैं- **"मेरे साहित्यिक जीवन में मेरी पत्नी का योगदान बहुत अधिक है। मैंने एक अनाथ लड़की से ब्याह किया था। वह बहुत ही साधारण थी, वह आज भी वैसी ही है और उसके उसी गुण ने मुझे सृजन का बल दिया है। वह कहाँ तक सुसंस्कृत भारतीय गृहिणी है, यह तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन मेरे लिए आदर्श रही है- सादगी लिए हुए, परिस्थितियों का सामना करने वाली और तिमिर में ज्योत्स्ना लिए हुए। हमारे वैवाहिक जीवन में मेरे लेखन की अनन्यता ने कभी कोई ऐसी स्थिति नहीं पैदा की जहाँ सरिता उसे सौतन मानने को विवश हुई हो। मैंने कई अवसरों**

पर उसके अधिकारों का हनन जरूर किया है, पर उसने उसे भी मेरे कर्तव्य का ही अर्थ दिया। लिखने की रौ में कई बार भूला हूँ कि मैं शादीशुदा हूँ। सरिता पढ़ी-लिखी नहीं थी। मेरे यहाँ आकर उसने हिन्दी सीखी और आज मेरी रचनाएँ पढ़ लेती है। शुरू में जब मेरे पास टाइपिंग की सुविधा नहीं थी तो वह मेरी रचनाओं की प्रतिलिपि भी तैयार करती थी। उसे बड़ा गर्व है कि मैं लेखक हूँ। यह गर्व एक और लड़की को भी है जो पाठक-विहीन वीरान द्वीप में मेरी सबसे सूक्ष्म पाठक है। वह जितनी सराहना करती है उतनी ही रचनाओं को कमजोर पाने पर खबर भी लेती है।"[11] अपनी पत्नी के स्वभाव एवं अपने जीवन में किसी अन्य लड़की,जो उनके रचनाओं की प्रथम पाठक थी, की उपस्थिति का अनत जी ने अपनी कई रचनाओं-'शेफाली', 'चलती रहो अनुपमा' आदि उपन्यासों में उल्लेख किया है।

अनत जी को अपने वैवाहिक जीवन में संतान सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती है। तमाम डाक्टरी इलाज के बावजूद जब उन्हें संतान की प्राप्ति नहीं हो पाती तब वे अपने भतीजों एवं भांजों को अपने पास रखकर उनसे संतान सुख का अनुभव प्राप्त करते हैं। अपनी संतानहीनता के बारे में वे डा॰ कमलकिशोर गोयनका से एक साक्षात्कार में कहते हैं-**"गोयनका जी, मेरा कोई बच्चा नहीं है। शुरू में जीनेकालोजी के दरवाजे बहुत खटखटाये। आज वैसी कोई इच्छा न तो मेरी बाकी रह गयी है और न सरिता की ही। घर पर एक भांजा और दो भतीजे हैं। तीनों अपने माँ-बाप से अधिक प्यार हमसे लेते हैं और हमें देते हैं। मेरे ये बच्चे जानते हैं कि मैं लेखक हूँ, परंतु यह लेखक कभी उनके और मेरे बीच कोई दीवार नहीं बना।... जब जेहन विचारों से शून्य होता है तो या तो हाथ में पुस्तक होती है या बच्चों के साथ खेल लेता हूँ। मुझे बच्चों के साथ खेलते देख मेरी माँ कई बार कह चुकी हैं, "तू भी ई लोगन के संगे लयका बन जाले।"[12]** संतान सुख के अभाव एवं उसकी पीड़ा को अनत जी ने अपनी कई रचनाओं में विभिन्न पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। उन्होंने 'गाँधी जी बोले

थे', 'अपना मन उपवन' व 'चलती रहो अनुपमा' आदि उपन्यासों में क्रमश: परकाश, रामचरण तथा अभिजीत आदि पात्रों के माध्यम से संतानहीनता की पीड़ा को दर्शाया है। साथ ही कई कहानियों में भी इस पीड़ा को चित्रित किया है।

अनत जी का व्यावसायिक जीवन: अनत जी का बचपन अभावों में बीता था, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें औपचारिक शिक्षा से भी वंचित रहना पड़ा। अपनी पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु अनत जी को विभिन्न प्रकार के व्यवसाय की ओर उन्मुख होना पड़ा। यद्यपि वे स्वभावत: एक लेखक हैं, बावजूद उन्हें खेतों में मजदूरी करनी पड़ी तथा कुछ दिनों तक बस कंडक्टर का भी काम करना पड़ा। 18 वर्षों तक उन्होंने मॉरिशस में हिन्दी अध्यापन का कार्य किया तथा तीन वर्षों तक युवा मंत्रालय मॉरिशस में नाट्य-कला विभाग में नाट्य-शिक्षक के रूप में कार्य किया। उन्होंने न केवल नाट्य शिक्षक का काम किया बल्कि इसके साथ ही नाट्य-लेखन, सम्पादन व नाट्य मंचन व निर्देशन का भी दायित्व निभाया। इसके उपरांत दो वर्ष के लिए महात्मा गाँधी संस्थान, मॉरिशस में हिन्दीशिक्षक का पदभार ग्रहण किया तथा मॉरिशस में भारतीय भाषा-विभाग एवं सर्जनात्मक लेखन तथा प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष के रूप में 24 वर्षों तक कार्य किया। वे कई वर्षों तक संस्थान की हिन्दी पत्रिका 'बसंत' एवं बाल-पत्रिका 'रिमझिम' के भी संपादक रहे। इसके बाद उन्होंने मॉरिशस स्थित 'रवीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान' के निदेशक का पदभार ग्रहण किया।

अनत जी द्वारा किए गए अन्य कार्यों का विवरण निम्नवत् है-

- 'ला मॉरिशियन' फ्रेंच अखबार में 25 वर्षों तक नियमित कालम का लेखन।

- रंगमंच एवं दूरदर्शन के लिए दर्जनों नाटकों एवं धारावाहिकों का लेखन, निर्देशन तथा अभिनय।
- 'बसंत' तथा 'रिमझिम' पत्रिकाओं का 20 वर्षों तक सम्पादन।
- विभिन चित्र प्रदर्शनियाँ तथा 'गीतांजलि' पर भी चित्रों की प्रदर्शनी।
- साहित्य-सम्मेलनों एवं सांस्कृतिक सेमिनारों में भागीदारी के लिए अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, भारत, त्रिनिडाड इत्यादि देशों की अनेक यात्राएँ।
- भारत की 50 से भी अधिक यात्राएँ।

पुरस्कार, सम्मान एवं उपलब्धियाँ: अभिमन्यु अनत को विभिन्न संस्थाओं द्वारा उनके साहित्यिक योगदान हेतु अनेक पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित किया गया है। 'रवीन्द्रनाथ टैगोर इंस्टिट्यूट' के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने अपने व्याख्यान का प्रारम्भ श्री अभिमन्यु अनत की एक कविता से किया था। अभिमन्यु अनत को प्राप्त पुरस्कारों व सम्मानों की सूची काफी लंबी है-

- साहित्य अकादमी पुरस्कार
- सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार
- मैथिलीशरण गुप्त सम्मान
- यशपाल पुरस्कार
- जन संस्कृति सम्मान
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार
- प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन, नागपुर द्वारा 1975 में सम्मानित
- लखनऊ सिटिजन संस्था द्वारा 1978 में सम्मानित
- राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा 1979 में सम्मानित

- इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा 1980 में सम्मानित
- प्रेस कम्युनिटी आव् बनारस द्वारा 1982 में सम्मानित
- हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा 1994 में सम्मानित
- राजीव गाँधी स्मृति परिषद
- के. के. बिड़ला फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 1994 में सम्मानित
- भारत भवन, भोपाल द्वारा 1995 में सम्मानित
- पाँचवें विश्व हिन्दी सम्मेलन, त्रिनिदाद द्वारा 1996 में सम्मानित
- गढ़वाल विश्वविद्यालय से 1997 में सम्मानित
- राजीव गाँधी मेमोरियल अवार्ड से 1997 में सम्मानित (जो तत्कालीन राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा द्वारा दिया गया)
- केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा 1999 में सम्मानित
- जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार, केंद्रीय हिन्दी संस्थान आगरा द्वारा 2002 में
- साहित्य अकादमी द्वारा 'मानद महत्तर सदस्यता' से सम्मानित
- साहित्य-संस्थान, इलाहाबाद द्वारा 'साहित्य महोपाध्याय' से सम्मानित
- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'लाल पसीना' उपन्यास के लिए सम्मानित
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'शेफाली' उपन्यास पुरस्कृत
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का 'साहित्य भूषण' सम्मान से सम्मानित (जो तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी द्वारा प्रदान किया गया)
- कर्नाटक सरकार द्वारा बेंगलुरु में 'कुम्भ साहित्य' अवार्ड से 2004 में सम्मानित

- महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय,वर्धा द्वारा महाराष्ट्र का सम्मान
- हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मुंबई फरवरी 2010 का सम्मान

अनत जी के साहित्यिक जीवन के प्रेरणा स्रोत: अनत जी के साहित्यिक जीवन को प्रभावित करने में उनकी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों के अलावा देश-विदेश के विभिन्न साहित्यकारों का भी विशेष योगदान रहा है।

अनत जी के लेखकीय व्यक्तित्व को प्रभावित करने में मॉरिशसीय लेखकों, नेताओं और समाज सुधारकों का विशेष योगदान रहा है। इस संदर्भ में अनत जी की टिप्पणी है- **"अपने देश के पंडित वासुदेव विष्णुदयाल से मैं सबसे अधिक प्रभावित और प्रेरित रहा हूँ। फिर जयनारायण राय, सोमदत्त बखौरी जैसे हिन्दी-प्रेमी व्यक्तियों का सहयोग मिला। रोबर्ट एडबर्ड हार्ट, मार्सेल काबों, माल्कोम दे साजाल को चाव से पढ़ा। अपनी पीढ़ी के नेमा, धुरंधर, जीबोध, असगरअली, देव विरास्वामी आदि के विचारों का आदर करता हूँ।"**[13]

अनत जी के लेखन को प्रभावित करने में मॉरिशसीय साहित्यकारों व समाज सुधारकों के अलावा भारतीय साहित्यकारों, समाज सुधारकों, क्रान्तिकारी नेताओं का भी अहम् योगदान रहा है। इस संदर्भ में अनत जी कहते हैं- **"भारत बचपन से ही मेरे लिए प्रेरणा-स्रोत रहा है। माँ-बाप से तो भारत की बातें सुनता ही रहता था, साथ ही घर की पुस्तकों के बीच 'महाभारत', 'रामायण' के अलावा महारानी झाँसी, दुर्गादास राठौर,**

शिवाजी, महाराणा प्रताप, विवेकानंद जैसे महापुरुषों के जीवन चरित्रों को मैंने दस-ग्यारह साल की उम्र से ही पढ़ना शुरू कर दिया था। इस बीच भारत के स्वतन्त्रता-अभियान के दौरान महात्मा जी, गुरुदेव, नेता जी तथा क्रांतिकारियों की जीवनियाँ पढ़ने को मिलती रहीं। जिस दिन माईक पर वंदे मातरम् गाने का अवसर मिला था, मुझे लगा था मैं भी उन क्रांतिकारियों के साथ कदम मिलकर चल रहा हूँ। उस समय हमारे यहाँ सेवा-समिति के सदस्यों का मार्च सोंग था-'कदम कदम बढ़ाये जा, खुशी के गीत गाये जा।' इस गीत को गाते हुये मेरे भीतर की भारतीयता उभरने लगी थी। नेता जी की तस्वीरें बना-बनाकर मैं मित्रों में बाँटता फिरता था। भगवान कृष्ण पहले से मेरे प्रिय हीरो थे। फिर साहित्य दौर आया। 'चंद्रकांता' के बाद प्रेमचंद साहित्य और फिर शरत बाबू की कोई भी पुस्तक न छोड़ने का प्रण जागा और जैसे कि पहले कह चुका हूँ, शरत बाबू का 'चरित्रहीन' पढ़ते वक्त से ही खुद को रचनाकर बनाने का पागलपन सिर पर सवार हो गया। धीरे-धीरे आधुनिक साहित्यकारों की रचनाओं के संपर्क में भी आता गया। यही नहीं, पढ़ने की सनक में प्यारेलाल आवारा से लेकर देहाती पुस्तक भंडार तक के सभी जासूसी उपन्यासों को भी चबाता गया। दूसरी ओर बंकिम बाबू और बाद में ताराशंकर, विमल मित्र, भगवती बाबू और विशेषकर रेणु जी से प्रभावित हुआ। मैं जिस रफ्तार से हिन्दी पढ़ता था उसके लिए घर वाले कोसते रहते थे-"अँग्रेजी-फ्रेंच भी पढ़ो, सिर्फ हिन्दी पढ़ने से जीविका नहीं मिलेगी।" मैं तो अँग्रेजी-फ्रेंच की पुस्तकों के बीच छिपाकर जैनेन्द्र, यशपाल को पढ़ता रहता और बहुत बाद में राकेश, कमलेश्वर, भारती, यादव, मुक्तिबोध, धूमिल इन सहयात्रियों की रचनाओं से प्रेरणा पाता रहा। प्रोफेसर रामप्रकाश के संपर्क में आकर मैंने नई दिशा पायी। जो लेखक के रूप में मैंने पाया, वही मनुष्य के रूप में भी भारत से पाया। मेरी धमनियों में

मॉरिशस दौड़ता है, क्योंकि बना तो मॉरिशस की मिट्टी से ही हूँ, लेकिन रोशनी मुझे भारत ने दी। इसलिए मेरे अंग-अंग में मॉरिशस साथ-साथ भारत हर वक्त विद्यमान रहता है।"[14]

अनत जी के साहित्यिक जीवन को प्रभावित करने में न सिर्फ भारतीय व मॉरिशसीय साहित्यकारों, चिंतकों, विचारकों का योगदान रहा है बल्कि इनके साथ-साथ पाश्चात्य साहित्यकारों का भी उन पर प्रभाव पड़ा है। वे कहते हैं- **"भारत से बाहर के लेखकों में स्टेनबेक, माम, हेमिंग्वे, ह्यूगो, कामू, सात्र, काफ्का, ब्रेक्ट, वेकेट, टाल्सताय, दास्तोवास्की, पुश्किन, नैट हमसन, कावाबाता, लू शुन, मेलर, बेली, नेरुदा, मान, मोराविया, क्लीवर, फेनन आदि से बहुत कुछ सीखा।"...इनके अलावा और भी कई लेखकों से प्रभावित रहा हूँ... जहाँ तक मैं सोचता हूँ, इन सभी के मानव-मूल्यों से ही मैं प्रभावित रहा हूँ।"**[15] अनत जी को मार्क्स, फ्रायड व महात्मा गाँधी के दार्शनिक तत्वों ने भी प्रभावित किया है जिनकी अभिव्यक्ति उनके साहित्य में दिखाई देती है। अनत जी के साहित्यिक जीवन पर भारतीय हिन्दी कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद का गहरा से प्रभाव पड़ा है। वस्तु और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से अनत जी पर प्रेमचंद का प्रभाव परिलक्षित होता है। इसी वजह से अनत जी को 'मॉरिशस का प्रेमचंद' कहा जाता है। अनत जी प्रेमचंद को अपना साहित्यिक गुरु मानते हैं। प्रेमचंद के साथ-साथ वे शरतचंद्र से भी काफी प्रभावित हुए थे। इस संदर्भ में अनत जी कहते हैं- **"मैंने प्रेमचंद और शरतचंद्र से बहुत कुछ पाया है। एक से आम आदमी को समझने की सीख और दूसरे की एक कलाकार की दृष्टि। इन दोनों द्रोणाचार्यों से इस एकलव्य ने जो कुछ सीखा है। उन सभी को आप मेरी रचनाओं में परख पायेंगे। विश्वविद्यालय में ज्ञानार्जन का अवसर न मिलने का एक बहुत बड़ा लाभ यह भी रहा कि मैंने अपनी पसंद से गुरु चुने। मेरा गुरु कभी विश्व का कोई महान लेखक रहा है तो कभी गली का अक्षरहीन आदमी भी।"**[16]

अनत जी का साहित्यिक संघर्ष: 'मॉरिशस के प्रेमचंद' कहे जाने वाले एवं हिन्दी भाषा को विदेशी भूमि में पुष्पित एवं पल्लवित करने वाले आप्रवासी साहित्यकार अभिमन्यु अनत को साहित्यिक क्षेत्र में विभिन्न संघर्षों का सामना करना पड़ा, विशेषकर सत्ता के कोपभाजन का शिकार होना पड़ा। जिस प्रकार भारत में प्रेमचंद की कुछ रचनाओं को भारतीय सरकार ने जब्त कराकर उन्हें आग के हवाले कर दिया था। ठीक उसी प्रकार मॉरिशस में अनत जी की कुछ रचनाओं को मॉरिशसीय सरकार ने जब्त कराकर उन्हें आग के हवाले कर दिया था क्योंकि सरकार को उन रचनाओं में देशद्रोह की गंध महसूस हो रही थी। सरकार यह नहीं चाहती कि उसके काले कारनामों को जनता के सामने उजागर किया जाए। इसीलिए वह उनकी रचनाओं को जलाने का आदेश दे देती है तथा रचनाकार पर देशद्रोही का झूठे आरोप मढ़ देती है। अपने साहित्यिक संघर्ष एवं अपनी रचनाओं के प्रति सरकार की उपेक्षापूर्ण नीति का वर्णन करते हुए अनत जी कहते हैं- **"अभिव्यक्ति का संकट मुझे कई बार झेलना पड़ा है। यहाँ तक कि मेरे एक कविता-संग्रह के कारण मुझे देशद्रोही का खिताब भी मिला। मेरा एक नाटक 'कोप-भवन' एक ही प्रदर्शन के बाद खतरनाक घोषित कर दिया गया और टेलीविज़न कार्यक्रम में तय होकर भी प्रसारित नहीं हो सका। 'वसंत' पत्रिका के एक अंक की सभी प्रतियाँ जला दी गयी थीं, क्योंकि उसमें मेरे संपादकीय को व्यवस्था पचा नहीं पा रही थी। टेलीविज़न पर मेरा 40 मिनट का पाक्षिक साहित्यिक कार्यक्रम चलता था। उसे भी आपत्तिजनक कहकर रोक दिया गया, जबकि कलात्मक स्तर पर कुछ ही दिन पहले विभाग का निदेशक उसे स्थानीय टेलीविज़न का सबसे बेहतरीन कार्यक्रम मान चुका था। व्यवस्था के भीतर रहकर भी मैंने कभी अपनी अभिव्यक्ति को गिरवी नहीं रखा। अपने जलाए गए संपादकीय को 'धर्मयुग' में छपवाकर ही रहा। काफी शोर हुआ, पर मैंने अपनी लेखकीय स्वतन्त्रता को कभी नीलम नहीं**

किया।... मेरे एक नाटक 'मरिशा गवाही देना' के प्रसारण के बाद मुझे टेलीविज़न से हटा दिया गया। मेरी एक लघुकथा 'एकलव्य' को 'वसंत' से उड़ा दिया गया।"[17]

रचनाकर की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर शासन के हस्तक्षेप का उद्घाटन वे निम्न शब्दों में करते हैं- **"यहाँ केवल मेरी ही रचना व्यवस्था के हस्तक्षेप के पंजे में नहीं आयी, बल्कि अन्य लेखक भी उस हस्तक्षेप के बराबर शिकार होते रहे हैं। मेरे 'लाल पसीना' पर जब कमलेश्वर, सत्यू और अन्य लोगों ने फिल्म बनानी चाही तो इसलिए इजाजत नहीं दी गई, क्योंकि सत्ता की ओर से, उसके ऐतिहासिक सत्य को, अपने आकाओं के विरुद्ध पड़ते हुए महसूस किया गया था।"[18]**

अनत जी की रचनाशीलता को प्रभावित करने में सामाजिक परिवेश की भी अहम भूमिका रही है। अनत जी यह स्वीकार करते हैं कि उनके लेखन को वहाँ की प्राकृतिक सुषमा ने कम प्रभावित किया है बल्कि समाज में व्याप्त अनेक विसंगतियो और अंतर्विरोधों ने उनके रचनाकर्म को प्रभावित किया है। इस संदर्भ में उनका वक्तव्य है- **"मुझे इस द्वीप के प्राकृतिक सौंदर्य और यहाँ के मनमोहक समुद्रों ने लेखक नहीं बनाया है। यहाँ की प्रकृति और जनजीवन दोनों के बीच उठते तूफानों और ज्वार-भाटों ने मुझे लेखक बनाया है। यहाँ के जनजीवन के संघर्ष, उनकी यातनाओं और उनकी जीविका ने मुझे कलम उठाने की शक्ति प्रदान की है। विपरीत स्थितियों में अपने को टूटने से बचाये रखने के उनके संकल्प और सांस्कृतिक अस्मिता पर उनकी आस्था ने मुझे बल दिया है। यहाँ के इतिहास के दारुण-दंड और जुल्मों ने मुझे यह कहने को विवश किया कि –**

तुमने आदमी को खाली पेट दिया
ठीक किया

एक प्रश्न है रे नियति
खाली पेट वालों को
तुमने घुटने क्यों दिए
फैलने वाला हाथ क्यों दिया ?"

प्राकृतिक आँधी तूफानों की तरह हमारे सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन में भी अस्थिरता रही है। इस जीवन को रेखांकित करने के लिए मैंने उन जुल्मों को अपने इर्द-गिर्द हर वक्त अनुभव किया है- कभी सरकार में, कभी समाज में, कभी दफ्तरी एवं कभी जमींदारी व्यवस्था में। वह जुल्म कभी सांस्कृतिक रहा है, कभी राजनीतिक। कभी भाषा के साथ हो रहे व्यभिचार में मैंने उस जुल्म को झेला है, कभी विसंस्कृतिकरण की चक्की में पिसते लोगों में। आज वह जुल्म अपनी पराकाष्ठा को छूता प्रतीत हो रहा है। ऐसी स्थिति में मेरी साहित्यधर्मिता मुझे चुप कैसे रहने देगी।"[19] अनत जी ने अपनी रचनाओं में अतिशय भावुकता के स्थान पर जीवन के कटु सत्य को उद्घाटित किया है। उनकी रचनाओं में उनके सामाजिक,राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक परिवेश का यथार्थपरक चित्रण मिलता है।

अनत जी के लेखन का उद्देश्य: कोई भी सृजनशील साहित्यकार बिना किसी उद्देश्य के साहित्य-सृजन नहीं करता। अनत जी अपनेलेखन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं- **"मैंने अपनी सभी रचनाओं- कविता, कहानी, नाटक, लेख, उपन्यास आदि में यही चाहा है कि आदमी और आदमी के बीच संवाद हो सके, रिश्ते बन सकें। चाहे वह मजदूर और मालिक के बीच का हो,राजनीतिज्ञ और अवाम के हो, ग्राहक और बनिया के हो, गुरु और**

शिष्य के हो, पति और पत्नी के हो, वेश्या और समाज के हो... बस सभी के बीच मानव-मूल्यों के आधार पर सही रिश्ता बन सके।"[20] अनत जी साहित्य के क्षेत्र में स्वांत:सुखाय की भावना से नहीं प्रवृत्त होते बल्कि बहुजन हिताय की भावना से वे साहित्य-सृजन में प्रवेश करते हैं। साहित्य के क्षेत्र में वे अपने को एक बौद्ध यात्री मानते हैं,जो बहुजन हिताय की भावना से आगे की ओर बढ़े जा रहे हैं।

अनत जी की दृष्टि में साहित्य का उद्देश्य: अनत जी साहित्य की उपयोगिता के संबंध में अपनी राय व्यक्त करते हुए कहते हैं- **"साहित्य को मैं लेखक की आत्माभिव्यक्ति अवश्य मानता हूँ, लेकिन उसे मात्र आत्माभिव्यक्ति नहीं मानता। मैं उसे कुहासे के बीच की वह रोशनी मानता हूँ जो यात्री को सही दिशा दे सके। कोलाहल के बीच किसी मंदिर से आती हुई वह शंख-ध्वनि मानता हूँ उसे जो किसी खतरे के प्रति सचेत करती हो। कविता और साहित्य अपने सभी विचारों में एक परिभाषा है, एक अर्थ है, एक सुझाव है, दृष्टि देने का प्रश्न भी है। इसे मैं अनुभूति भीमानता हूँ और एक बेहतर जीवन के लिए अनुभूति का नियंत्रण भी। वह मानवीय सम्बन्धों और मूल्यों की सर्जना है। साहित्य जहाँ सत्य, शिव और सुंदर है वहाँ शिव का वह तांडव रूप अख़्तियार करने का अधिकारी भी है। तब आलोचना उसका धर्म हो जाता है जो विध्वंश के लिए नहीं, बल्कि नवनिर्माण के लिए होती है। मेरे अपने लिए तो साहित्य कि यही परिभाषा और उपयोगिता रही है।"**[21]

अनत जी की दृष्टि में लेखक और रचना का दायित्व: समाज के प्रति एक साहित्यकार की क्या भूमिका होनी चाहिए तथा उसकी रचनाएँ समाज को किस हद तक और किस रूप में प्रभावित करें इस संदर्भ में अनत जी कहते हैं:- **"मैं लेखक को मसीहा नहीं मानता। लेखक के प्रश्नों से साहित्य जिन स्थितियों-परिस्थितियों को सामने लाता है, उनसे अगर समाज**

को दृष्टि मिल जाए तो बस लेखक अपने दायित्व का निर्वाह् कर गया।... रचना का सबसे बड़ा दायित्व मेरी अपनी नजर में यह् होता है कि सोये हुए को झकझोर कर जगा दिया जाए, ताकि वह् अपने घर में लगी आग को देख सके। जागे हुए की ओर से आग को बुझाने की प्रक्रिया में समस्या का जो समाधान है, वह् लेखन के द्वारा झकझोरे जाने के बाद ही हुआ। इसलिए साहित्य के प्रश्नों का उत्तर साहित्य में निहित है। मैं बस उस श्रेय लेने वाली बात से कतराता हूँ।"[22]

अनत जी का साहित्यिक रुझान: अनत जी एक कुशल कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार होने के साथ-साथ एक चित्रकार भी थे। लेखन से पूर्व अनत जी का चित्रकारी के प्रति विशेष अनुराग था। लेकिन व्यवस्था व जनता द्वारा उनके चित्रों को वह महत्व नहीं प्रदान किया गया, जिनके वे ह्कदार थे, फलस्वरूप चित्रकारी के प्रति उनका मोह्भंग हो जाता है। सत्ता व समाज द्वारा अपने कलाकार जीवन की उपेक्षा के दर्द व कुंठा को अनत जी ने अपने कई उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। वे चित्रकारी को छोड़कर लेखन के प्रति इसलिए भी उन्मुख होते हैं, क्योंकि जिन प्रश्नों को वे उठाना चाह्ते थे उसकी सफल अभिव्यक्ति वे चित्रों में नहीं कर पा रहे थे। इसलिए वे लेखन को अपनाते हैं। इस संदर्भ में वे कह्ते हैं- **"लेखक से पहले मेरा रिश्ता तूलिका, कैनवास और रंगों से था। बहुत सारी तस्वीरें बनाने के बाद मुझे लगा कि मैं फलक पर अपने प्रश्नों को नहीं उतार पा रहा हूँ तो मैंने उस इरादे को अपने से इस्तीफा दे दिया।"[23]**

अनत जी की पह्ली रचना एक रेडियो नाटिका थी। इसके बाद उन्होंने कहानियाँ लिखीं। इसके साथ-साथउन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलायी है। कविताएँ उन्होंने सबसे बाद में लिखना शुरू किया। उनकी पह्ली कविता का शीर्षक

था- **'पसीना किसी का, फसल किसी की।'** यह अपने में कई कविताओं को लिए हुए एक कविता थी। इस कविता को भारत के तत्कालीन 'नवभारत टाइम्स' के संपादक महावीर ने अपने अखबारों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया था क्योंकि महावीर इस कविता से बहुत प्रभावित हुए थे। कविता की अंतर्वस्तु में मालिक मजदूर के संघर्ष को चित्रित किया गया था जिसका संबंध स्वयं अनत जी के जीवन से था।

अनत जी की प्रथम प्रकाशित रचना **'टूटी प्रतिमा'** कहानी है। जो मॉरिशस से ही प्रकाशित होने वाली पत्रिका **'अनुराग'** में पंडित दौलतराम शर्मा के संपादकत्व में प्रकाशित हुई थी। भारत से प्रकाशित होने वाली उनकी पहली रचना **'लहरें कराह उठीं'** शीर्षक से **'रानी'** पत्रिका में छपी थी। अनत जी की प्रथम पुस्तकाकार रचना **'और नदी बहती रही'** उपन्यास है, जो भारत से सन् 1970 ई॰ में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ।

अनत जी ने अपने साहित्य में समाज की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। साथ ही गोरों व सत्तासीन लोगों के शोषणतंत्र में शोषित एवं अपने प्रति किए जाने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज न उठा पाने वाले गूंगे वर्ग की पीड़ा को व्यक्त किया है। अपने लेखन के केंद्रीय विषय के बारे में वे कहते हैं- **"मेरा लेखन एक समर्पित लेखन है। मैं उन सभी वर्गों की पीड़ा को शब्द देने का प्रयास करता हूँ जिनकी आवाजें जब्त हैं। मेरे पात्रों में वह फाइलों के नीचे दबता हुआ क्लर्क भी है, अफसरों की गुलामी को स्वीकारे हुए चपरासी भी है, मंत्री को चुनाव के दौरान बालोट पर छोटा-सा क्रास देकर अब ईसा का क्रास पीठ पर लिए दबा जा रहा आदमी भी है, मालिकों के लिए जमीन पर उगी फसल**

काटता हुआ गरीब मजदूर भी है, वह औरत भी है जो वेश्या है पर भोगने वालों की नजर में औरत नहीं है। वास्तव में, मैं उन बहरों तक उनकी आवाज पहुँचाने की चेष्टा करता हूँ, जो इनकी आवाजों को न सुन पाने का स्वांग रचे होते हैं।"[24] ***(वही, पृ- 15)*** अपनी रचना प्रक्रिया व रचना के अंतर्वस्तु के विषय में अनत जी कहते हैं- **"मेरे अपने सामने स्थितियाँ होती हैं और कभी वह एक अकेला आदमी होता है जिसकी खामोश यातनाओं को मैं देखता महसूसता रहता हूँ। फिर उस स्थिति-परिस्थिति और आदमी के इर्द-गिर्द मेरी पूरी मानसिक प्रक्रिया परिक्रमा करती रहती है। पहले प्रश्न ही प्रश्न पैदा होते हैं। यह स्थिति क्यों हैं? इस स्थिति में फँसा हुआ यह आदमी कौन है? ये स्थितियाँ उसके सामने किसने पैदा कीं? क्यों कीं? और फिर धीरे-धीरे उस स्थिति को मैं अपने में समेटकर उस प्रतिक्रिया को अनुभव करता हूँ। उस स्थिति के मेरी मानसिक स्थिति से जुड़ जाने और उस आदमी के संघर्ष को सही तरह जानकर मैं उस स्थिति और आदमी के इर्द-गिर्द अपनी कथा को बुनता हूँ। 'लाल पसीना' के लिए मेरे सामने इतिहास की स्थितियाँ थीं। 'एक बीघा प्यार' के लिए मेरे सामने गाँव के खेतिहर जीवन की समस्याएँ थीं, लेकिन 'शेफाली' के लिए मेरे सामने स्थिति से पहले खुद शेफाली थी एक आदमी के रूप में और इस प्रकार उसके साथ क्षणों को झेलते-भुगगते रचना का प्रारूप लेता चला जाता है और संबन्धित सामग्री का संचयन इसी प्रक्रिया में होता चलता है।"**[25]

अभिमन्यु अनत की लेखकीय मानस भूमि को निर्मित करने में तत्कालीन राजनीतिक स्थितियों-परिस्थितियों और आप्रवासी भारतीयों के हितार्थ गोरों के विरुद्ध किए जाने वाले विभिन्न आंदोलनों तथा मॉरिशस की स्वतन्त्रता हेतु किए जाने संघर्षों का भी व्यापक प्रभाव पड़ा है।अभिमन्यु अनत के समय में मॉरिशस ब्रिटिश शासन के अधीन था। गोरों के शासनतंत्र में आप्रवासी भारतीयों के साथ अन्यायपरक व्यवहार किया जाता

था। उन्हें पशु से भी गैर-गुजरा समझा जाता था। साथ ही उनके साथ रंग, जाति, भाषा-बोली, संस्कृति आदि के आधार पर भेद-भाव किया जाता था। इसके अतिरिक्त कठोर-से-कठोर कामों के लिए भारतीयों की नियुक्ति करते तथा कम परिश्रम वाले काम अन्य लोगों को सौंपे जाते। आप्रवासी भारतीयों को उनके श्रम का पूरा परिश्रमिक भी नहीं दिया जाता था। इतना ही नहीं यदि कोई मजदूर किसी कारणवश एक-दो दिन काम में नहीं जा पाता तो उसके वेतन से आधी तनख्वाह काट ली जाती। इस प्रकार आप्रवासी भारतीयों को अनेक प्रकार की यातनाओं का शिकार होना पड़ा। किन्तु धीरे-धीरे उन आप्रवासी भारतीयों में अपने प्रति होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करने की हिम्मत आती है तब उनका सामूहिक विरोध एक आंदोलन का रूप ले लेता है। गोरे शासकों के विरुद्ध तथा भारतीय मजदूरों के हितार्थ देश में कई आंदोलन होते हैं। जिसके परिणामस्वरूप उनकी स्थिति में कुछ सुधार होता है। देश में हुए विभिन्न आंदोलनों की चर्चा करते हुए अनत जी पंडित वासुदेव विष्णुदयाल के सांस्कृतिक आंदोलन 'जन आंदोलन' की भी चर्चा करते हैं, जो आप्रवासी भारतीयों की स्थिति में सुधार हेतु किया गया था। अनत जी की टिप्पणी है- **"देश के छ: महत्वपूर्ण आंदोलनों में जिनका उद्देश्य आदमी को उसकी इज्जत और उसका हक दिलवाना था, जन आंदोलन एक था। उससे पहले रेमी ओलिए का अभियान था फिर आदोल्फ दे प्लेविथ और गोदार का। लोरौँ का लाकस्यो लिबेराल और मॉरिश कूरे का पार्ची त्रावाईस्त ने मॉरिशसीय जनता के हित में जो संघर्ष किया उससे कम संघर्ष जन आंदोलन ने नहीं किया।"**[26]

अनत जी के लेखकीय व्यक्तित्व पर गाँधी जी के सत्याग्रह व भारत के स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रभाव के साथ-साथ मॉरिशस के पंडित विष्णुदयाल के जन आंदोलन का विशेष प्रभाव पड़ा है। क्योंकि अनत जी 'जन आंदोलन' में सक्रिय रूप से जुड़े थे। इस संदर्भ में वे स्वयं कहते हैं-**"मैं 'जन आंदोलन' से जुड़ा हुआ विद्यार्थी था। हिन्दी के प्रति मेरा रुझान**

उसी आंदोलन की वजह से रहा यही कारण था कि जमाना की दस प्रतियाँ जो हमारे यहाँ खरीदने की प्रथा थी वह उसके अंतिम अंक तक बनी रही। उधर जनता का भी कोई अंक खरीदने से हम चूके नहीं।"[27] वे अन्यत्र कहते हैं- **"पंडित वासुदेव विष्णुदयाल की उन सांस्कृतिक गतिविधियों का आभास मुझे तब हुआ था जब त्रियोले की महेश्वरनाथ पाठशाला के प्रांगण में हजारों श्रोताओं के बीच मैं भी एक हुआ करता था-उन्हें सुनने के लिए। उस भरी हुजूम में हजारों लोगों में मैं भी एक होता था जो पंडित जी के व्यक्तित्व और वक्तव्य दोनों से प्रभावित था। उस समय मेरे ऊपर उनका प्रभाव इतना तीव्र था कि मैं उन्हें सुनने के लिए अपने बाप के साथ दूर-दूर तक निकल जाता था। उस छः सात की उम्र में उनके भाषणों को समझ पाने का प्रश्न ही नहीं उठता था फिर भी उन्हें सुनते हुए कभी भी थकता नहीं था औए न ही कभी उन प्रवचनों से ऊबने की नौबत आई। मैं उनसे इतना अधिक प्रभावित था कि एक बार अपने बाप के पीछे यह हठ लेकर पड़ गया था कि, वे जहाँ से भी हो सके मेरे लिए नेता जी सुभाष चंद्र बोस और प्रोफेसर विष्णुदयाल की तस्वीरें खरीद कर ला दें। मेरा हठ इतना भारी था कि उसी शाम मेरे पिता जी को वे दोनों तस्वीरें मुझे लाकर देनी ही पड़ी थीं।"[28]**

इस प्रकार देखा जा सकता है कि अनत जी के व्यक्तित्व और उनके रचनाकर्म को प्रभावित करने में उनके परिवार और सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक सांस्कृतिक परिवेश का अहम् योगदान रहा है। अनत जी अपने समाज में घटित होने वाली घटनाओं एवं सामाजिक विसंगतियों तथा विभिन्न अंतर्विरोधों से प्रभावित होकर ही रचनाकर्म में प्रवृत्त होते हैं जिसकी अभिव्यक्ति उनके साहित्य में देखी जा सकती है।

अनत जी का देहावसान: लम्बे समय तक अस्वस्थ रहने के कारण 81 वर्ष की आयु में मॉरिशस के कथा-सम्राट व मॉरिशस के हिन्दी-साहित्य को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने वाले साहित्यकार अनत जी का 4 जून 2018 को देहावसान हो गया।

(ख) कृतित्व

अभिमन्यु अनत बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। इन्होंने हिन्दी भाषा के अतिरिक्त फ्रेंच व अँग्रेजी भाषा में भी लेखन कार्य किया है। मॉरिशस के वे एकमात्र ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने गद्य-पद्य की प्राय: सभी विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, कविता, एकाँकी, यात्रा-साहित्य, संस्मरण, जीवनी, अनुवाद, सह-लेखन आदि) में अपनी लेखनी चलायी है। इसके साथ-साथ इन्होंने बाल-साहित्य, सम्पादन/संकलन व नाट्य निर्देशन में भी अपनी अहम् भूमिका अदा की है। अनत जी एक कुशल कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार भी थे जिसकी झलक इनके सम्पूर्ण रचनाकर्म में दिखाई देती है। **"वे एक सम्पूर्ण कलाकार के रूप में जीवन के विविध रंगों, रूपों, दृश्यों, चुनौतियों एवं संभावनाओं का बड़ी कुशलता से चित्रण करतेहैं।"[29]**

अनत जी ने अपनी रचनाओं में मॉरिशस में रहने वाले आप्रवासी भारतीयों की संघर्ष गाथा व गोरे शासकों की बर्बरता को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। अनत जी के कथा- साहित्य में विषयों की विविधता है, जिसके कारण इन्हें 'मॉरिशस का प्रेमचंद' कहा जाता है। विषयगत विविधता के साथ-साथ विधागत विविधता भी इनके रचनाकर्म की विशेषता है। अनत जी के सम्पूर्ण रचनाकर्म को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्न शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है-

उपन्यास विधा: अनत जी ने लगभग 32 उपन्यासों की रचना की है जिनके नाम निम्नवत् हैं -

1) और नदी बहती रही (1970)
2) आंदोलन (1971)
3) एक बीघा प्यार (1972)
4) जम गया सूरज (1973)
5) तीसरे किनारे पर (1976)
6) तपती दोपहरी (1977)
7) लाल पसीना (1977)
8) चौथा प्राणी (1977)
9) कुहासे का दायरा (1978)
10) शेफाली (1979)
11) हड़ताल कल होगी (1979)
12) चुन-चुन-चुनाव (1981)
13) अपनी ही तलाश (1982)
14) अपनी-अपनी सीमा(1983)
15) पर पगडंडी नहीं मरती(1983)
16) गांधी जी बोले थे (1984)
17) मार्क ट्वेन का स्वर्ग (1985)
18) फैसला आपका (1986)
19) मुड़िया पहाड़ बोल उठा (1987)
20) शब्दभंग (1989)

21) अचित्रित (1990)

22) और पसीना बहता रहा (1993)

23) लहरों की बेटी (1995)

24) घर लौट चलो वैशाली (1995)

25) चलती रहो अनुपमा (1998)

26) आसमान अपना आँगन (2000)

27) अस्ति-अस्तु (2003)

28) एक उम्मीद और (2003)

29) हम प्रवासी (2004)

30) क्यों न फिर से (2004)

31) अपना मन उपवन (2006)

32) मेरा निर्णय (2010)

कहानी संग्रह: अनत जी ने लगभग 200 कहानियों की रचना की है। अब तक इनके 8 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनके नाम निम्नवत् प्रस्तुत हैं:-

1) खामोशी के चीत्कार (1976)

2) इंसान और मशीन (1976)

3) वह बीच का आदमी (1981)

4) एक थाली समंदर (1988)

5) अभिमन्यु अनत की आरंभिक कहानियाँ (2002)

6) मातमपुरसी (2007)

7) अब कल आएगा यमराज (2010)

8) बवंडर बाहर-भीतर (2011)

नाटक: अनत जी की साहित्यिक यात्रा का आरंभ नाटकों से हुआ है उन्होंने स्वीकार किया है कि उनकी पहली रचना रेडियो नाटिका थी। अनत जी के अब तक 6 नाटक प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैंः-

1) विरोध (1977)
2) तीन दृश्य (1981)
3) गूँगा इतिहास (1984)
4) रोक दो कान्हा (1986)
5) भरत सम भाई (1990)
6) देख कबीरा हाँसी (1995)

कविता संग्रह: अनत जी के अब तक 4 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं–

1) नागफनी में उलझी साँसे (1977)
2) कैक्टस के दाँत (1982)
3) एक डायरी बयान (1985)
4) गुलमोहर खौल उठा (1995)

संकलित ग्रंथ :- अनत जी द्वारा संकलित रचनाएँ निम्नवत् हैं:-

1) आत्मविज्ञापन (1984)
2) ‘Les Nuit’ (Translation in French By Aslekha Callyarm-Proag) (1984)
3) अभिमन्यु अनत: समग्र कविताएँ (1998)
4) अभिमन्यु अनत: प्रतिनिधि रचनाएँ (1999)

संपादित ग्रंथ: अनत जी द्वारा संपादित ग्रन्थों की संख्या 7 है, जिनके नाम निम्नवत् हैं-

1) मॉरिशस की हिन्दी कविता (1975)
2) मॉरिशस की हिन्दी कहानी (1976)
3) मॉरिशसीय हिन्दी कहानियाँ (1987)
4) मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि (1988)
5) मॉरिशस के हिन्दी एकाँकी (1990)
6) सोमदत्त बखौरी की चुनी हुई कविताएं (1990)
7) वसंत चयनिका (1993)

जीवनी: अनत जी द्वारा रचित दो जीवनी ग्रंथ मिलते हैं,जिनके नाम निम्नवत् हैं-

1) जन आंदोलन के प्रणेता: प्रो॰ वासुदेव विष्णुदयाल (1987)
2) मजदूर नेता: राम नारायण (1988)

एकाँकी: अनत जी द्वारा रचित एकांकियों के नाम इस प्रकार हैं-

1) परिवर्तन
2) क्लर्क की मौत
3) बिल्ली को दफना दो
4) मरिशा गवाही देना
5) जारी रहे तलाश
6) महामारी

यात्रा-साहित्य: अनत जी द्वारा लिखित यात्रा-साहित्य के नाम निम्नवत् हैं-

1) मेरी क्यूबेक यात्रा
2) कुछ यादें बंबई की
3) यादों का पहर

संस्मरण: अनत जी द्वारा रचित प्रमुख संस्मरणों के नाम इस प्रकार हैं-

1) प्रधानमंत्री का वह दफ्तर
2) आज भी शूद्र हूँ
3) ईंट की रोटी
4) मैं चरित्रहीन पढ़ रहा था
5) डाक्टरों का मुर्दा

आत्मकथा: अनत जी द्वारा लिखित आत्मकथा का नाम निम्नवत् है-

1) यादों का पहला पहर (2005)

अनूदित ग्रंथ: अनत जी ने लेखन के साथ-साथ अनुवाद कार्य भी किया है। उनके द्वारा अनूदित पुस्तक का नाम निम्नवत् है-

1) मॉरिशस में भारतीय प्रवासियों का इतिहास (1978)

सह लेखन: अनत जी ने सह लेखन का भी कार्य किया है। सह-लेखन से संबन्धित ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं-

1) Mauritius Its People and Culture (1987) [Co-writers: S. Selvon and Dr. I. Asgarally]
2) 'History of the Port' (1987) [Co-writer: S. Selvon]

उपन्यास विधा:

यद्यपि अभिमन्यु अनत ने साहित्य की विविध विधाओं में लेखनी चलायी है किन्तु जिस विधा के माध्यम से वे एक सशक्त रचनाकार के रूप में पाठकों व आलोचकों के समक्ष उभरकर आये हैं, वह है उपन्यास विधा। अनत जी के उपन्यासों का मूल स्वर- 'मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का दीर्घकालीन संघर्ष है।' आप्रवासी भारतीयों की इस दीर्घकालीन संघर्ष की पुरजोर अभिव्यक्ति अनत जी द्वारा 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और

पसीना बहता रहा' तथा 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा'(उपन्यास) व 'गूँगा इतिहास' (नाटक) में हुई है।

अनत जी द्वारा रचित अब तक 32 उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं जिनका परिचयात्मक विवरण रचना के प्रकाशन वर्ष के क्रमानुसार प्रस्तुत किया जा रहा है।

1) 'और नदी बहती रही' (1970): 'और नदी बहती रही' अभिमन्यु अनत का प्रथम प्रकाशित उपन्यास है। यह उपन्यास सन् 1970 ई॰ में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में लेखक ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस समाज के ग्रामीण जीवन की विषमताओं एवं युवामन में जन्म लेने वाली इच्छाओं का वर्णन किया है। साथ ही मालिक-मजदूर की समस्या, महाजनी सभ्यता के दोषों से जकड़े ऋणग्रस्त परिवारों की विवशता का भी अंकन किया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- मधुकर, राजेश, जोगिया सरदार, सुमित्रा, कृष्णावती, धनेश्वरी आदिके नाम लिए जा सकते हैं। मधुकर के माध्यम से लेखक ने उन बेबस किसानों व मजदूरों की स्थिति का अंकन किया है जिनकी आजीविका सिर्फ और सिर्फ गन्ने की खेती पर निर्भर है और जो गोरे मालिकों के शोषण के शिकार हैं। जोगिया सरदार ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो गोरे शासकों के अधीन रहकर अपने ही लोगों पर रौब जमाता है साथ ही अपने लोगों को सूद पर कर्ज भी देता है। उपन्यास में लेखक ने नारी जीवन की विवशता का भी अंकन किया है किन्तु कृष्णावती के माध्यम से एक सशक्त नारी चरित्र को भी उभारा है जो परित्यक्ता होकर भी त्याग और करूणा की प्रतिमूर्ति है। जिस प्रकार प्रेमचंद की अधिकांश रचनाओं में हृदय परिवर्तन की भावना परिलक्षित होती है उसी प्रकार अनत जी के प्रस्तुत उपन्यास में हृदय परिवर्तन की भावना दिखाई देती है।

2) 'आंदोलन' (1971): 'आंदोलन' उपन्यास सन् 1971 ई॰ में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के युवा आंदोलन एवं

उसके कारणों तथा सरकार द्वारा उनके आंदोलन को दबाने हेतु किए गए अनैतिक व्यवहारों का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- रवि, दयानन्द, विनेश, आँती, सलमा, सलोनी, रमावती, आँती के पिता,भाई व सलमा के पिता आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

रवि के माध्यम से युवा असंतोष, आक्रोश एवं उनके विद्रोह के स्वर को उभारा गया है। आजादी के पश्चात् भी मॉरिशस में बेरोजगारी, बेकारी, महँगाई, गरीबी, घूसख़ोरी, भाई-भतीजावाद जैसी समस्याएँ दिनों-दिन बढ़ती जा रही हैं जिसके परिणामस्वरूप अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूक नवयुवक अपने अधिकारों के लिए व देश की समस्याओं से निजात पाने के लिए शासन से अनुनय-विनय करते हैं किन्तु जब इनकी बातों को सरकार अनसुना कर देती है तब ये एकजुट होकर आंदोलन खड़ा करते हैं। इन युवाओं का विद्रोह इस बात के लिए रहता है कि सभी को समान अवसर व सुविधा प्रदान की जाए। किसानों व मजदूरों को उनके श्रम का पूरा पारिश्रमिक दिया जाये। उन्हें भी समाज में वही महत्व व सम्मान मिले जो एक सरकारी पद पर कार्यरत कर्मचारी को मिलता है। किसानों के श्रम को सराहा जाए। उनकी भी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की जाए। सरकार के विरुद्ध किए गए आंदोलन का सार्थक परिणाम रवि को प्राप्त होता है।

उपन्यास में सरकार की दमनकारी नीतियों का भी पर्दाफाश किया गया है। रमावती के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में शोषित, दमित व दुर्दमनीय स्थिति को प्राप्त स्त्री का चित्रण किया गया है। साथ ही यह भी प्रश्न उठाया गया है कि यौन-सम्बन्धों की वैधता या अवैधता सिर्फ मनुष्य जाति पर ही क्यों लागू है? विपरीत लिंग के प्रति सहज आकर्षण एक प्राकृतिक नियम है। क्या प्राकृतिक नियमों से अधिक शक्तिशाली हैं सामाजिक बंधन व मान-मर्यादा की दीवारें। पति द्वारा परित्यक्त रमावती

समाज द्वारा बनाए गए बंधनों की अवहेलना कर रवि के प्रति आकर्षण का भाव रखती है। आँती व उसके परिवार वालों के माध्यम से उच्चवर्गीय चरित्रों का चित्रांकन किया गया है। सलमा के माध्यम से मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज की स्थिति को दर्शाया गया है। रवि व सलमा के प्रेम-सम्बन्धों के माध्यम से अंतर्धर्मीय प्रेम को दर्शाया गया है। उपन्यास में युवा आंदोलन के साथ-साथ एक प्रेम कथा भी चलती है साथ ही अंतर्धर्मीय विवाह की समस्या को भी अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है जिसके परिणामस्वरूप उपन्यास का मूल लक्ष्य आंदोलन दब जाता है और प्रेम-विवाह व अंतर्धर्मीय विवाह की समस्या उभरकर सामने आती है। इस संदर्भ में डा॰ श्यामधर तिवारी लिखते हैं- **"'आंदोलन' उपन्यास एक असफल आंदोलन की सफल कहानी है।"**[30]

3) 'एक बीघा प्यार' (1972): 'एक बीघा प्यार' अनत जी का संख्या क्रम की दृष्टि से तीसरा उपन्यास है। यह उपन्यास सन् 1972 ई॰ में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया है, विषेशकर किसानों के कठिन परिश्रम, उनकी आर्थिक विपन्नता एवं अभावग्रस्त जीवन को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- सोम, हीरा, विमला, करुणा, चमेली, जगलाल, सुखरामसिंह, यूसुफ, जोगिया व धरमवा आदि के नाम लिए जा सकतेहैं।प्रस्तुत उपन्यास में ग्रामीण एवं किसान जीवन की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण जीवन की अच्छाइयों एवं बुराइयों को भी चित्रित किया गया है। एक तरफ ग्रामीणों की संगठन शक्ति, उनके सभा व बैठकाओं के महत्व को प्रतिपादित किया गया है तो दूसरी तरफ उनके आपसी तकरार, मतभेद, ईर्ष्या-द्वेष की भी झाँकी प्रस्तुत की गयी है। साथ ही प्रेम के त्रिकोणात्मक स्वरूप व उसके दंश को भी दर्शाया गया है। एक तरफ ग्रामीणों की बुज़दिली का चित्रण किया गया है,जो अन्याय व शोषण को झेलते हुए भी उसके खिलाफ आवाज़ नहीं उठाते।

तो दूसरी तरफ उनके साहस को दर्शाया गया है। एक तरफ किसानों की आर्थिक तंगी, भूख व अभाव को विवेचित किया गया है तो दूसरी तरफ उनकी ज़िंदादिली को भी चित्रित किया गया है, जो अभावों व विपत्तियों से घिरे होने के बावजूद भी जीवन जीने की राह खोज लेते हैं।

4) 'जम गया सूरज' (1973): 'जम गया सूरज' अनत जी का संख्याक्रम की दृष्टि से चौथा उपन्यास है।यह एक सामाजिक उपन्यास है। यह उपन्यास सन्1973 ई॰ में सूर्या प्रकाशन, राजस्थान से प्रकाशित हुआ। इसमें अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय मजदूरों की आर्थिक स्थिति पर विस्तार से प्रकाश डाला है। साथ ही मजदूरों द्वारा अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए किए गए हड़ताल व हड़ताल की सफलता आदि का भी वर्णन किया है। इस उपन्यास में मॉरिशस की राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक गतिविधियों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

उपन्यास के प्रमुख पात्रों में– लालमन, धरमेन, किशोर, घनश्याम, धनुवा भगत, जगदीश, देवन्ती, प्रभा, सरस (सरस्वती), भामा, राधिका व चन्दनआदि के नाम लिए जा सकते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में शिक्षित युवाओं की बेरोजगारी, बेरोजगारी के कारणों व नौकरी में योग्यता के बदले भाई-भतीजावाद, सिफारिश, चापलूसी जैसी मनोवृत्ति का अंकन किया गया है। साथ ही युवा आक्रोश को भी वाणी प्रदान की गयी है। युवा बेरोजगारी के साथ-साथ राजनेताओं की वादाखिलाफी, गुंडागर्दी, ऐय्याशी आदि को भी दर्शाया है। मॉरिशसीय समाज में व्याप्त जातिगत श्रेष्ठता, धार्मिक मान्यताओं, लोक विश्वासों व अंध विश्वासों को भी चित्रित किया गया है। लेखक ने उपन्यास के नायक लालमन व भामा के माध्यम से प्रेम-विवाह की समस्या को दर्शाया है तो सरस व लालमन के माध्यम से तलाक़शुदा स्त्री और एक बच्ची की माँ का कुँवारे युवक के साथ विवाह की

समस्या को दर्शाया है। राधिका (लालमन की माँ) के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के अनुकूल आचरण करने वाली स्त्री का चित्रण किया है तो सरस के द्वारा आधुनिक विचारों व विद्रोही स्वभाव वाली स्त्री का चरित्रांकन किया है। धरमेन उन युवाओं का प्रतिनिधित्व करता है जो मजदूरों व किसानों के हितार्थ स्वयं के परिवार वालों के साथ भी विद्रोह करने से नहीं चूकता। लालमन के द्वारा कृषि के प्रति लगाव रखने वाले नवयुवकों का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में अनत जी ने अन्य व्यवसायों की तुलना में कृषि को अधिक महत्व प्रदान किया है। उनके अधिकांश पात्र कृषि से जुड़े हुए हैं,जिनमें लालमन, धरमेन, धनुवा भगत, जगदीश, देवन्ती, सरस आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

5) 'तीसरे किनारे पर' (1976): अनत जी द्वारा रचित यह उपन्यास सन् 1976 ई० में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, से प्रकाशित हुआ। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- राकेश, उसके चाचा, पिता, माँ, मौसी, दाया (नौकरानी), अरुणा, देवलाल, चंदा, अशोक, शीला, रमावती, सहदेवसिंह, फातमा, फिरोज़ा, विसुन महतो, देव, राजेश, रमेश व मारीज़ आदि प्रमुख हैं।

इस उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सामाजिक समस्याओं, राजनीतिक गतिविधियों व युवा आंदोलन की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। राकेश व उसके दोस्तों(देव,राजेश,रमेश आदि) के माध्यम से सम्पन्न परिवारों व नेताओं तथा मंत्रियों के बच्चों की उद्दंडता व उच्छृंखलता को दर्शाया गया है, जो स्कूल-कालेजों में अच्छी शिक्षा व संस्कार प्राप्त करने के बजाय शिक्षकों से कुतर्क करते हैं, उनको अपमानित करते हैं। क्लास में न जाकर सिनेमा देखने जाते हैं और लड़कियों से छेड़खानी करते हैं। राकेश के चाचा उन नेताओं व मंत्रियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो चुनाव के दौरान सच्चे जनसेवक बनने का

ढोंग रचते हैं और चुनाव जीतने के पश्चात् पदासीन होते ही देश व समाज की समस्याओं से बेखबर रहकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में मशगूल हो जाते हैं। राकेश के पिता उन उद्योगपतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं,जिन्हें अपने उद्योग को विस्तृत करने हेतु समय-समय पर उद्योग से संबन्धित नेताओं वमंत्रियों को पार्टियाँ देनी पड़ती हैं तथा उनकी जेब गरम करनी पड़ती है। सुखदेवसिंह व विसुन महतो उन आप्रवासी भारतीयों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अभावग्रस्त जीवन जीते हुए भी अपने बच्चों को उच्च व बेहतर शिक्षा दिलाने हेतु रात-दिन मेहनत करते हैं तथा अपनी जमीन जायदाद को भी इसलिए बेच देते हैं ताकि उनके बच्चे पढ़-लिखकर कुछ बन सकें जिससे उनका तथा उनके देश का नाम रोशन हो। मारीज़ स्वतंत्र विचारों वाली आधुनिक नवयुवतियों का प्रतिनिधित्व करती है,जो पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था की बन्दिशों से स्वयं को मुक्त रखती है तथा उनके द्वारा बनाए गए नियमों एवं कानूनों पर कटाक्ष करती है।मिस्टर सामयूएल के माध्यम से युवा आंदोलन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्तियों का चित्रण किया गया है। अशोक,शीला व राकेश की मौसी के माध्यम से असफल प्रेम का चित्रण किया गया है। उपन्यास की नायिका व राकेश के प्रेम संबंधों को स्वीकृति देकर लेखक ने प्रेम विवाह में हैसियत के अंतर को पाटने का प्रयास किया है।

6) 'तपती दोपहरी' (1977): 'तपती दोपहरी' उपन्यास सन् 1977 ई॰ में सरस्वती विहार प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- राजेन, दर्शन, लोचन, गोविंद, दयानन्द, मुक्ताराम, साधना, रजनी, उर्मिला, लाजवंती व रजनी के पिता आदि हैं। यह सामाजिक समस्या प्रधान उपन्यास है। इसमें विभिन्न पात्रों के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की विभिन्न सामाजिक समस्याओं को दर्शाया गया है। उपन्यास के नायक राजेन के परिवार के माध्यम से आर्थिक तंगी से जूझते परिवारों का चित्रण किया गया है। राजेन के माध्यम से सरकारी शोषणतंत्र में पिसते कर्मचारी की दुविधाग्रस्त

मन:स्थिति को चित्रित किया गया है,जो एक तरफ मजदूरों व श्रमिकों के श्रम के शोषण को रोकने हेतु आंदोलन में सक्रिय रहना चाहता है तो दूसरी तरफ उसका बास उसे इस आंदोलन से दूर रहने की सलाह देता है साथ ही नौकरी से हाथ धो देने की धमकी भी देता है। किन्तु राजेन उसकी धमकियों की परवाह किए बगैर आंदोलन में सक्रिय भाग लेता है और नौकरी से निकाल दिए जाने के पश्चात् वह कृषि कार्य में लग जाता है। लोचन के माध्यम से कृषि के प्रति अत्यधिक मोह रखने वाले नवयुवकों को चित्रण किया गया है जो अपने पूर्वजों के व्यवसाय को अपना कर जीवन यापन करते हैं और कृषि कार्य में संलग्न रहकर खुशी का अनुभव करते हैं। गोविंद के माध्यम से स्त्रियों के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण रखने वाले युवाओं का चित्रण किया गया है। दयानन्द, रजनी तथा गोविंद व साधना के माध्यम से असफल प्रेम का चित्रण किया गया है जिसके प्रमुख कारणों में कहीं हैसियत का अंतर है तो कहीं जातिगत भिन्नता है। राजेन,रजनी व उर्मिला के माध्यम से त्रिकोणात्मक प्रेम को दर्शाया गया है।

7) 'लाल पसीना' (1977): 'लाल पसीना' अनत जी का बहुचर्चित उपन्यास है। यह उपन्यास सन् 1977 ई॰ में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में लेखक ने भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण व संघर्ष के साथ-साथ गोरे शासकों की अमानवीयता, क्रूरता, बर्बरता व अन्याय का भी विस्तार से यथार्थपरक वर्णन किया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में –किसन, मदन, मीरा, कुन्दन, विवेक,मंगरु, रूपलाल, रामदेव, रघुसिंह, धनलाल, लखन, सोमा, संतू, सोहना, गोपाल, फरीद, सोनालाल, कोसला, फूलवंती, पुष्पा, सीता, रेखा, आन्द्रेआ, विनय सरदार, राम जी सरदार, जीतुआ सरदार, हरखू सरदार, रेमो साहब, मोरेल साहब, रोला व फिलिप सरदार आदि के नाम लिए जा सकते हैं।मॉरिशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित इस उपन्यास में उन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के जीवन-संघर्षों की कहानी है जिन्हें चालाक फ्रांसीसी और ब्रिटिश

उपनिवेशवादी सोना मिलने के सब्जबाग दिखाकर मॉरिशस ले गए थे। यह उपन्यास दो खंडों में विभक्त है। इसमें सन् 1850 ई॰ से 1900 ई॰ तक की घटनाओं को 'लाल पसीना' के फलक के रूप में चुना गया है।

उपन्यास के प्रथम भाग का नायक किसनसिंह है, जो मजदूर होने के साथ-साथ कवि भी है। किसनसिंह ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो गोरे शासकों के क्रूरतम, अमानवीय व अन्यायपरक नीतियों के खिलाफ आवाज बुलंद करता है। किसनसिंह विद्रोही किस्म का युवक है। वह अंग्रेजों द्वारा बस्ती के मजदूरों पर ढाये जाने वाले जुल्मों के प्रति सरदारों से सवाल भी करने का साहस दिखाता है साथ ही गोरे शासकों के आदेशों का उल्लंघन करने से भी नहीं चूकता। उपन्यास के दूसरे भाग का नायक मदनसिंह है, जो किसनसिंह का पुत्र है। वह किसनसिंह द्वारा चलाये गए संघर्ष को जारी रखता है। मदन भी विद्रोही किस्म का युवक है। अंग्रेजों के प्रति विरोध प्रकट करने पर उसे भी अन्य मजदूरों के समान अनेक प्रकार की यातनाओं को सहना पड़ता है। उपन्यास में रघुसिंह ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी शक्ति व सामर्थ्य से अनभिज्ञ रहकर यथास्थिति को बने रहने देना चाहता है। हरखू सरदार, रामजी सरदार, जीतुआ सरदार व विनय सरदार आदि ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो गिरमिटिया मजदूर होकर भी चंद सुविधाओं के लोभ में आकर अंग्रेज़ शासकों के हिमायती व उनके रखवाले बन जाते हैं और अपने ही अन्य भाई-बंधुओं पर कोड़ों की बौछार करने से नहीं चूकते। वे अंग्रेज़ शासकों से भी बढ़कर अपने लोगों को कष्ट पहुँचाने को आतुर रहते हैं। उपन्यास में रेमो (लंगड़वा) साहब, मोरेल साहब, रोलां व फिलिप सरदार अंग्रेज़ शासकों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनके द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को विभिन्न प्रकार से प्रताड़ित किया जाता था। उपन्यास में लेखक ने एक तरफ इन्हीं गोरे शासकों की बर्बरता व अमानुषिक कृत्यों का पर्दाफाश किया है तो दूसरी तरफ भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषित, पीड़ित व दयनीय दशा का

यथार्थपरक चित्रण किया है। 'लाल पसीना' उपन्यास की ऐतिहासिकता तथा घटनाओं एवं पात्रों की यथार्थता के संबंध में अनत जी कहते हैं- **"लाल पसीना, उन छोटे लोगों का इतिहास है जिन्होंने बहुत बड़ा काम किया। इन्हीं लोगों ने सबसे पहले मानवीय अधिकारों और स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी। यह अभियान खेतों और बैठाकाओं से ही शुरू हुआ। हिन्दी और भारतीय संस्कृति ने इस देश को सबसे अधिक राष्ट्रीय भावना दी है। प्रमाणत: जब आजादी का संघर्ष शुरू हुआ उस समय गैर-भारतीयों ने उसका जबरदस्त विरोध किया।...'लाल पसीना' के सभी तो नहीं, पर किसनसिंह, मदन, मीरा, विवेक ये और कुछ दूसरे भी प्रमुख पात्र मेरे अपने पुरुखों में से हैं जो कभी हाड़-माँस के थे।... उनसे संबद्ध घटनाएँ बड़ी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत की गयी हैं। किसनसिंह अगर मेरे दादा हैं तो मदन मेरे मामा।"**[31]

8) 'चौथा प्राणी' (1977): 'चौथा प्राणी' उपन्यास सन् 1977 ई॰ में ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- सिरपरसाद, शारदा, वीणा, बिन्दू, चंदरसिंह, माधव, कमला, महावीर महतो, सोना, विनय, शोभा, धनपत महतो, मालती, सतीश व संजय आदि के नाम लिए जा सकते हैं। यह नायिका प्रधान उपन्यास है। पूरे उपन्यास का ताना-बाना सिरपरसाद की बड़ी बेटी वीणा को केंद्र में रखकर बुना गया है। उपन्यास में वीणा की उपस्थिति आद्योपांत बनी रहती है। वीणा के माध्यम से पितृविहीन 18 वर्षीय बालिका के जीवन संघर्ष को दर्शाया गया है। अकस्मात् सिरपरसाद की मृत्यु से वीणा के सिर पर पारिवारिक व आर्थिक ज़िम्मेदारी आ जाती है। माँ के अस्वस्थ रहने पर वीणा ही अपनी माँ एवं छोटे भाई-बहनों की परवरिश करती है पारिवारिक समस्याओं एवं अर्थाभाव को दूर करने हेतु वह गाय, बकरी, मुर्गी आदि को अपनी आय का साधन बनाती है तथा आर्थिक तंगी के चलते वह खेतों में भी काम करने जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में वीणा के त्याग, बलिदान, साहस, संघर्ष व सहनशीलता को दर्शाया गया है। संजय के

माध्यम से स्त्रियों के प्रति भोगवादी दृष्टि रखने वालों का तथा विनय व माधव के माध्यम से स्त्रियों के प्रति सम्मान भाव रखने वालों का चित्रण किया गया है। चंदरसिंह के माध्यम से उन अभिभावकों का चित्रण किया गया है जो अपने बच्चों की खुशी के खातिर वर्षों पुरानी जड़ता व रूढ़ियों को तोड़ने का साहस करते हैं। इसी वजह से चंदरसिंह अपने पुत्र माधव व सिरपरसाद की पुत्री वीणा के पारस्परिक प्रेम को वैवाहिक संबंध में बदलने की अनुमति दे देता है,यह जानते हुए कि वीणा उनकी जाति की नहीं है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने जातिगत बंधन को तोड़ने एवं प्रेम विवाह को सफल बनाने की कोशिश की है।

9) 'कुहासे का दायरा' (1978): 'कुहासे का दायरा' उपन्यास सन् 1978 ई॰ में राजपाल एण्ड संस प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। यह एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें लेखक ने मॉरिशस देश में व्याप्त विभिन्न समस्याओं के चित्रण के साथ-साथ वहाँ की राजनीतिक गतिविधियों एवं चुनावी सरगर्मियों का भी यथार्थपरक चित्रण किया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- रतन सिंह, धनेश, विनेश, भीसम, सीधू, शांति, नीरा, महावीर, रूपलाल भगत आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

धनेश के माध्यम से ऐसे सीधे-सादे, ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों का चित्रण किया गया है जिन्हें राजनीतिक साजिशों का शिकार बनाकर उनका मान-सम्मान, पद व प्रतिष्ठा आदि छीन लिया जाता है। सीधू के माध्यम से नेताओं व मंत्रियों के उन वफादार व्यक्तियों व सहयोगियों का चित्रण किया गया है जो अपनी जान की परवाह किए बगैर मंत्रियों का साथ देते रहते हैं किन्तु ऐसे वफादार व्यक्ति की हत्या होने पर मंत्री लोग उसके दरवाजे तक नहीं जाते। भीसम उन नवयुवकों का प्रतिनिधित्व करता है,जो अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु किसी भी हद तक जा सकते हैं। ऐसे लोगों के लिए दूसरों की भावनाओं एवं इच्छाओं का कोई महत्व नहीं रहता। वे लोगों की नृशंस हत्या करवाने से भी नहीं चूकते। राजनीतिक दाँव-पेंचों के साथ-साथ लेखक ने तत्कालीन समाज में व्याप्त विसंगतियों-ऊँच-

नीच, जातिगत भेद-भाव, आर्थिक विषमता आदि पर भी प्रकाश डाला है। साथ ही इन विसंगतियों के दुष्परिणामों को भी उजागर किया है।

10) 'शेफाली' (1979): 'शेफाली' अनत जी द्वारा रचित संख्याक्रम की दृष्टि से दसवाँ उपन्यास है। यह उपन्यास सन् 1979 ई॰ में राजपाल एण्ड संस प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। 'शेफाली' अनत जी का ऐसा पहला उपन्यास है, जिसका नामकरण एक पात्र के नाम पर किया गया है। साथ ही यह नायिका प्रधान उपन्यास है। शेफाली इस उपन्यास की नायिका है। उसी को केंद्र में रखकर उपन्यास का ताना-बाना बुना गया है। इस उपन्यास में अनत जी ने शेफाली के माध्यम से वेश्याजीवन की त्रासदी का अंकन किया है। साथ-ही-साथ आम आदमी द्वारा वेश्याओं के प्रति अपनायी जाने वाली उपेक्षापूर्ण दृष्टि का भी चित्रण किया है।उपन्यास के प्रमुख पात्रों में– शेफाली, अशित, धरम, धनंजय, आशा, कुमारी, अनवर तैयब (डिप्टी मेयर),विनोद आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

11) 'हड़ताल कल होगी' (1979): अनत जी द्वारा रचित उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' सन् 1979 ई॰ में राजपाल एंड संस प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसका पुनर्प्रकाशन सन्1983 ई॰ में हिन्दी पाकेट बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। अनत जी का यह उपन्यास मूलत: गोरे मालिकों व काले भारतीय मजदूरों के संघर्ष को उजागर करता है। इसमें अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्थितियों व रंगभेद जैसी समस्याओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- अमित, किशोर, मिशेल, सुरेन, सत्येन, जानीन, आशा, राधिका, अमित के माँ-बाप व जानीन के माँ-बाप, दादी आदि हैं। प्रस्तुत उपन्यास में अमित एक ऐसे युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपने व्यक्तिगत हितों का परित्याग करके अपनी नौकरी से

इस्तीफा देकर आप्रवासी भारतीय मजदूरों व किसानों के अधिकारों के हितार्थ मजदूर संघ का नेतृत्व करता है। वह मजदूरों को अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति जागरूक करके उन्हें संगठित होकर हड़ताल करने के लिए प्रेरित करता है ताकि वे भी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें और सुखमय जीवन यापन कर सकें। किशोर के माध्यम से उन कलाकारों का चित्रण किया गया है जिसकी कला एवं प्रतिभा को तत्कालीन देश, समाज,संस्थानों व व्यक्तियों द्वारा कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता। अपनी कला के प्रति उपेक्षा भाव से त्रस्त होकर किशोर हीनताबोध से ग्रस्त हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह आत्महत्या कर लेता है। जानीन के माध्यम से उन चंद गोरे लोगों के चरित्र को उभरा गया है जो आप्रवासी भारतीयों के प्रति गोरे लोगों के भेदभावपरक एवं अमानवीय व्यवहार के प्रति कटु आलोचना करती है। जानीन के पिता के द्वारा उन गोरे लोगों की जातीय अहंवादिता को दर्शाया गया है जिसके तहत वे काले भारतीयों के साथ हर प्रकार के अमानवीय व्यवहार करना उचित समझते हैं तथा जो अपने पद व प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। इस उपन्यास में शिक्षित युवा बेरोजगारी, नौकरी में योग्यता के बदले भाई-भतीजावाद, सिफारिश व चापलूसी जैसी प्रवृत्तियों पर भी टिप्पणी की गयी है।'हड़ताल कल होगी' उपन्यास के अंतर्वस्तु के संबंध में अनत जी कहते हैं- **"'हड़ताल कल होगी' मॉरिशस का अपना सामयिक सत्य है। काले-गोरे के बीच का भेद-भाव, धनी-निर्धन के बीच का अंतर, शोषक और शोषित के बीच की अमानवीयता- ये वे चीजें हैं जिन्हें मैं देखना नहीं चाहता। गोरा कल भी गोरा था, आज भी गोरा है। वह कल भी धनी था, आज भी धनी है। वह कल भी शोषक था, आज भी शोषक है। अब उसके साथ दो-चार काले भी जुड़ गए हैं। विडम्बना तो बस यह है कि मॉरिशसीयता तथा एक राष्ट्र और एक प्रजा की दुहाई देकर भी मॉरिशस का एक काला नौजवान मॉरिशस की एक गोरी लड़की को ब्याहने में असफल रहा क्योंकि गोरा गोरा ही होता है और काला काला। आजादी के बाद भी गोरे काले का यह सामाजिक मिलन आज**

भी असंभव है। मॉरिशस का काला फ्रांस से गोरी लड़की तो ब्याह लाता है, परंतु अपने देश की गोरी लड़की को ब्याहना उसके लिए उतना ही असंभव है जितना कि सूरज की किरणों का बर्फ हो जाना।"[32]

12) 'चुन-चुन-चुनाव' (1981): यह उपन्यास सन् 1981 ई॰ में पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसका पुनर्प्रकाशन सन् 2001 ई॰ में अक्षय प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक गतिविधियों एवं चुनाव जीतने हेतु चुनावी हथकंडों के प्रयोग का यथार्थपरक अंकन किया गया है।इसके साथ ही शिक्षित नवयुवकों की बेरोजगारी, गोरे शासकों के खिदमतगारों द्वारा हिन्दी भाषा, संस्कृति एवं आप्रवासी भारतीयों के साथ किए जाने वाले भेदभावपरक व्यवहार का भी अंकन किया गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- स्वस्ति, अमिष, संवेश, रितेश, फ्रांस्वाज़, धरती, सेलीन, माधवसिंह, रामजतन व स्वस्ति के माँ-बाप, भाई आदि हैं। स्वस्ति के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में आधुनिक विचारों से सम्पन्न व नारी मुक्ति की चेतना से युक्त युवती का चित्रांकन किया गया है। जो पारंपरिक मूल्यों व मान्यताओं को चुनौती देती हुई घर की दहलीज पार कर राजनीति के क्षेत्र तक जाती है और विभिन्न विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करती है। अमिष के माध्यम से सरकारी तंत्र में पिसते बुद्धिजीवी वर्ग को दर्शाया गया है, जो चाहकर भी व्यवस्था के विपरीत आचरण के प्रति आवाज नहीं उठा सकते। निदेशक के द्वारा उन पदासीन कर्मचारियों की नियति को दर्शाया है जो अपने कर्तव्य को भूलकर स्वार्थ की रोटी सेंकने में मशगूल रहते हैं। माधव सिंह के द्वारा उन आप्रवासी भारतीयों की उपेक्षा को चित्रित किया गया है जो व्यवसाय, धर्म व भाषा के स्तर पर गोरे शासकों व उनके हिमायतियों के शोषण के शिकार होते हैं। रामजतन उन आमलोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो चुनाव प्रचार के दौरान दोनों ही पक्षों से लाभ प्राप्त करते हैं। संवेश उन भोगवादी

एवं अहंवादी युवकों का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी साधन-संपन्नता के बल पर किसी भी हद तक जा सकता है। वह अपनी पूर्व प्रेमिका स्वस्ति को चुनाव में हराने के लिए कोई भी कसर बाकी नहीं रखता। धरती व स्वस्ति की माँ पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के अनुकूल आचरण करने वाली स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। अनत जी का यह उपन्यास जून 1982 की चुनावी गतिविधियों का जीवंत चित्र प्रस्तुत करता है। मॉरिशस में 1982 के आम चुनाव में सत्तारूढ़ दल के उम्मीदवार डा. शिवसागर रामगुलाम अपने सभी चुनावी क्षेत्रों से पराजित होते हैं और उनके विरोध में खड़ी नयी पार्टी एम. एम. एम. की जीत होती है। जिसके परिणामस्वरूप एम. एम. एम. और पी. एस. एम. के गठबंधन में प्रथम समाजवादी सरकार का गठन होता है। अपने समय के राजनीतिक यथार्थ को अनत जी ने प्रस्तुत उपन्यास में अभिव्यक्त किया है। इस संदर्भ में अनत जी कहते हैं- **"'चुन-चुन-चुनाव' मैंने सामयिक यथार्थ के आधार पर लिखा है। आम आदमी की अपनी सरकार जब आम आदमी से कटकर अपने निजी स्वार्थ के लिए सामंतवर्ग की बनकर रह जाती है, उस समय जनता को उससे बेहतर सरकार की चिंता से कहीं अधिक चिंता गलत दिशाओं की ओर जाने वाली सरकार को मिटा देने की होती है। 'चुन-चुन-चुनाव' लिखते समय चुनाव की सरगर्मी शुरू नहीं हुई थी, फिर भी मैं जानता था कि चालीस साल की वह सरकार मटियामेट होकर रहेगी। आम आदमी के प्रतिशोध का ही परिणाम था वह गोयनका जी, जिसे मैंने 'और नदी बहती रही' से 'चुन-चुन-चुनाव' तक स्वर दिया था।"[33]**

13) 'अपनी ही तलाश' (1982): 'अपनी ही तलाश' उपन्यास सन् 1982 ई॰ में अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। प्रमुख पात्रों में- सोमू, मोना, वासू, रुना, धनुकचंद, मीला व बाना आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सामाजिक व राजनीतिक घटनाओं का चित्रण किया गया है। सोमू के माध्यम से उन पदासीन मंत्री व नेताओं का चरित्रांकन किया गया है, जो स्वार्थ सिद्धि हेतु किसी भी हद

तक जा सकते हैं तथा अपनी कुर्सी बचाने हेतु वे अपनी घनिष्ठ मित्रता को भी दाँव में लगाने से नहीं हिचकिचाते। वासू के माध्यम से राजनीतिक षड्यंत्रों के शिकार एक लेखक की कुंठा, मानसिक यातना, रचना-प्रक्रिया के संघर्ष एवं रचनाओं की सामाजिक अवहेलना तथा प्रकाशन में होने वाली दिक्कतों आदि का चित्रण किया गया है साथ ही लेखक के अस्तित्व की तलाश के प्रयासों को भी दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त नवयुवकों की बेरोजगारी, बेकारी, आर्थिक तंगी, पारिवारिक विघटन आदि का चित्रण किया गया है।'अपनी ही तलाश' उपन्यास के वैशिष्ट्य को उद्घाटित करते हुए अनत जी कहते हैं- **"'अपनी ही तलाश' मेरे अन्य उपन्यासों से भिन्न है- कैनवास भी अलग है, रंग और रेखाएँ भी अलग हैं। कहीं रेखाओं का विद्रोह है तो कहीं रंगों का। एक तरह से पहली बार मैंने अपनी रचना में नरक का वर्णन करने की चेष्टा की है। सेक्स और धन की साजिश की कहानी है 'अपनी ही तलाश'... वह साजिश जिसका अगर आभास वक्त पर नहीं हो जाता तो आदमी बौना बनकर रह जाता है। आदमीयत को गिरवी रखने के चंद क्षणों का उपन्यास है-'अपनी ही तलाश'। उस गिरवी रखने की प्रक्रिया और उसे अस्वीकारने को मैंने पहली बार न भी सही तो थोड़ा-सा अलग ढंग से प्रस्तुत किया है। इसके संवादों को मैं अपने अब तक के उपन्यासों के संवादों से अधिक स्वाभाविक और सार्थक मानता हूँ –यह मेरा मोह भी हो सकता है।"[34]**

14) 'अपनी-अपनी सीमा' (1983): 'अपनी-अपनी सीमा' अनत जी द्वारा रचित एक सामाजिक उपन्यास है। यह सन् 1983 ई० में राजपाल एंड संस, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में नारी के विविध प्रकार के शोषण तंत्रों का यथार्थपरक अंकन किया गया है। इसके साथ ही मॉरिशसीय समाज में व्याप्त बेरोजगारी, महँगाई एवं राजनीतिक दाँव-पेंच का भी वर्णन किया गया है। साथ ही यह भी दर्शाया गया है कि किस प्रकार नेता व मंत्री लोग आम

चुनाव के दौरान सियासी वादों का जाल फैलाकर आम जनता को अपने पक्ष में वोट देने हेतु प्रेरित करते हैं और चुनाव जीतने के पश्चात् जनता से किए गए वादों को भूल जाते हैं और अपने क्षेत्रीय जनता को पहचानने से भी इन्कार कर देते हैं। इसमें शिक्षित बेरोजगार युवाओं के निर्रथकता बोध एवं महँगाई की समस्या से जूझते हुए लोगों का वर्णन किया गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- सीमा, आलोक, आलोक की माँ, मधु (आलोक की बहन), श्याम(आलोक का मित्र), फीफी(पुत्री), बलराम, सुगुन, पंडित(दलाल), मंत्री, सानी, उर्मिला, डा॰ किरण, भगतवा, सुग्रिमवा आदि हैं। सीमा इस उपन्यास की केन्द्रीय पात्र है। सीमा के माध्यम से उन असंख्य स्त्रियों की दारुण दशा का चित्रण किया गया है जो पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में विविध प्रकार से प्रताड़ित की जाती हैं और निर्दोष होकर भी सजा भुगतती हैं।

इस उपन्यास में अनत जी ने 'उपन्यास से पहले' शीर्षक लिखकर शिल्पगत नवीन प्रयोग किया है। 'उपन्यास से पहले' शीर्षक के अंतर्गत विभिन्न धर्मों की स्त्रियों से यह जानने के लिए साक्षात्कार लिया गया है कि क्या उनका पति उन्हें पीटता है? या उनका वैवाहिक जीवन कैसा था? और क्या कारण थे जिसकी वजह से उनका विवाह-विच्छेद होता है? और इस अलगाव के बाद क्या वे खुश हैं? इन स्त्रियों की मनोदशा, अनुभव और जवाब ही प्रस्तुत उपन्यास का प्रकारांतर से कथ्य बनता है और लेखक का उद्देश्य इस उपन्यास के माध्यम से उन्हें ही प्रेषित करना है। पात्रों के नाम बादल जाने से स्त्रियों की स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ता है। लेखक स्त्रियों के साक्षात्कार का सृजनात्मक इस्तेमाल अपने उपन्यास में करता है और उसे अपने उपन्यास के कथ्य का आधार बनाता है।इस अर्थ में यह एक शैलीगत नवीन प्रयोग बन जाता है।

15) 'पर पगडंडी नहीं मरती' (1983): 'पर पगडंडी नहीं मरती' उपन्यास सन् 1983 ई॰ में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। प्रमुख पात्रों में- विक्रम, अंजू, धीरजवा, फातमा, फुलवा, धरमयशवा, सहोदर, लोरिक, नारायण पांडे (फुलवा के पिता),

नंदूलाला (सरदार), शिवराजा (मंदिर के पुजारी), विक्रम के माता-पिता व जतन शाव आदि उल्लेखनीय हैं।

इस उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सामाजिक समस्याओं पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है। गोरे शासकों, कोठी के सरदारों व उनके दलालों द्वारा आप्रवासी भारतीयों के साथ किए जाने वाले क्रूरतम व अन्यायपरक व्यवहार का चित्रण किया गया है। साथ ही आप्रवासी भारतीय मजदूरों की सहनशीलता, साहस व कठोर परिश्रमी स्वभाव को भी दर्शाया गया है। विक्रम के माध्यम से उन आप्रवासी भारतीय नवयुवकों की जागृत चेतना को दर्शाया गया है, जो मजदूरों को श्रम व संघर्ष के प्रति जागरूक करके उन्हें मजदूरों के हितार्थ मजदूर संघ की स्थापना करते हैं। इसमें अनत जी ने मॉरिशस को आजाद कराने में शहीद हुए मजदूर नेताओं- किसनसिंह, मदन, फरीद, मीरा, भारते आदि के योगदान, त्याग, बलिदान आदि को भी चित्रित किया है। साथ ही पंडित विष्णुदयाल के सांस्कृतिक आंदोलन व आंदोलन को दबाने हेतु सरकार के विविध प्रयासों को भी दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त भारतीय स्त्रियों के प्रति सरदारों की ज्यादती,आर्थिक तंगी, जातिगत भेद-भाव, आर्थिक असमानता, धर्मांतरण की प्रक्रिया, असफल प्रेम-विवाह, धार्मिक आस्था, अंधविश्वास, रूढ़ियाँ आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। नंदूलाला के माध्यम से उन आप्रवासी भारतीयों का चित्रण किया गया है,जो पद व प्रतिष्ठा तथा जमीन-जायदाद के लोभ में आकर गोरे शासकों के हिमायती बन जाते हैं और अपने ही भाई-बंधुओं पर जुर्म ढाने से नहीं कतराते बल्कि कभी-कभी तो गोरों से भी ज्यादा त्रास देते हैं।

16) 'गांधी जी बोले थे' (1984): यह उपन्यास सन् 1984 ई० में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास 'लाल पसीना' उपन्यास की अगली कड़ी के रूप में

लिखा गया है। इसमें भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की दयनीय स्थिति एवं उनके मेहनत, लगन व गोरे शासकों के अत्याचारों का वर्णन किया गया है। साथ ही उन अत्याचारों के प्रति भारतीय मजदूरों द्वारा किए गए विरोध को भी वाणी प्रदान की गयी है। गोरे शासकों, कोठी के मालिकों, सरदारों व गोरों के हिमायती काले भारतीयों द्वारा आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के प्रति किए जाने वाले दुर्व्यवहारों की यथार्थपरक झाँकी इसमें प्रस्तुत की गयी है। इसके साथ ही मॉरिशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के हितार्थ काम करने वाले भारतीय वकीलों- डा॰ मणिलाल एवं बैरिस्टर बुधन के सत्प्रयासों का वर्णन किया गया है। साथ ही मॉरिशस में महात्मा गांधी जी के आगमन एवं भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को संबोधित करके दिए गए उनके भाषण एवं उस भाषण का आप्रवासी भारतीयों पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव को भी चित्रित किया गया है। गाँधी जी के भाषण से प्रभावित होकर ही गिरमिटिया मजदूरों ने अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने के लिए ठोस कदम उठाए तथा वहाँ की राजनीति में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- मदन, परकाश,प्रेमसिंह, सुगुन, हनीफ, दाऊद मियां, मीरा, सीता, सीमा, ज़ीनत, हरखू सरदार, मगनलाल सरदार, मोरेल साहब, रोलां साहब, वकील मणिलाल व वकील बुधन आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

17) 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग' (1985): यह उपन्यास सन् 1986 ई॰ में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का यथार्थपरक चित्रांकन किया गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- शिल्वी, येफे, रेडफोर्ड, मानी, शिल्वी के पिता, शकुन, सुनीता, प्रेम (होटल का बेयरा), होटल का मैनेजर, मंत्री, रामटहल(गाँव का मुखिया) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसमें लेखक ने यह दर्शाया है कि जिस मॉरिशस की भव्यता व प्राकृतिक सुषमा से आकर्षित होकर अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक मार्क ट्वेन ने कहा था कि- **'पहले ईश्वर ने**

मॉरिशस को बनाया होगा, फिर उसकी नकल में स्वर्ग का निर्माण किया है।'उसी स्वर्ग तुल्य देश में केवल मुट्ठी भर लोग ही समृद्ध जीवन जी रहे हैं, शेष काली जनता तो अभाव, निर्धनता, मुफलिसी में जीवन यापन करने को मजबूर हैं। इसमें बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अशिक्षा, नस्लीय भेदभाव आदि समस्याओं को भी वाणी प्रदान की गयी है।

18) 'फैसला आपका' (1986): 'फैसला आपका' सन् 1986 ई॰ में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति का यथार्थपरक अंकन किया है।इसमें प्रमुखत: राजनीतिक षडयंत्रों- मौकापरस्ती, धनलोलुपता, तस्करी एवं अवैध तरीके से धनार्जन हेतु अन्य लोगों को इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति आदि को यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। साथ ही राजनेताओं के राष्ट्रविरोधी कुचक्रों का भी वर्णन किया गया है। उपन्यास की नायिका प्रिया सिबालिक सामाजिक सुरक्षा मंत्री हेमराज राजमन के इन्हीं कुचक्रों का शिकार होती है। प्रिया पर पंद्रह लाख के सोने के जेवरों तथा पाँच किलो अफीम की तस्करी का झूठा आरोप लगाकर गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया जाता है। जबकि वास्तव में प्रिया का इन धंधों से कोई संबंध नहीं रहता है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- प्रिया सिबालिक, मनोज, केशव, हेमराज राजमन (सामाजिक सुरक्षा मंत्री), शिरीन, सुनीता, मी॰ ग्रेगोर(कस्टम अधिकारी), सुखना आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

19) 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा'(1987): यह उपन्यास सन् 1987 ई॰ में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक स्थिति एवं चुनावी प्रक्रिया व चुनाव जीतने हेतु अपनाए जाने वाले विभिन्न राजनीतिक हथकण्डों की यथार्थ झाँकी प्रस्तुत की गयी है। उपन्यास के प्रमुख पात्र- उमेश, अरूण, नेहा, जुबैदा व नेहा के पिता आदि हैं। उमेश व अरूण के द्वारा उन नवयुवक उम्मीदवारों का चरित्रांकन

किया गया है,जो चुनाव जीतने हेतु सभी राजनीतिक हथकण्डों को अपनाते हैं और चुनाव के पश्चात् जनता से किए गए वादों को भूलकर स्वार्थ पूर्ति में संलग्न हो जाते हैं। नेहा के माध्यम से एक गरीब परिवार से संबंध रखने वाली स्वाभिमानी, मेहनतकश एवं जागरूक चेतना से सम्पन्न युवती का चरित्रांकन किया गया है, जो स्वयं के हितों की परवाह न करके फैक्टरी में काम करने वाली महिलाओं के हितार्थ एक आंदोलन खड़ा करती है और फैक्टरी के मालिक से अपनी शर्तों को मनवाकर नारी शक्ति का परिचय देती है। सरला फैक्टरी में काम करने वाली उन महिला कामगरों का प्रतिनिधित्व करती है,जिन्हें फैक्टरी में मालिकों व मैनेजर की ज़्यादतियों का शिकार होना पड़ता है और कभी-कभी तो मैनेजर के अमानवीय कृत्यों व दुर्व्यवहारों से उन्हें अपनी जान तक गंवानी पड़ जाती है। नेहा के पिता की बीमारी व उनके आपरेशन में हो रही देरी के कारणों पर प्रकाश डालते हुए डाक्टरों व वकीलों की घूसख़ोरी प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया गया है।

20) 'शब्दभंग' (1989): अनत जी द्वारा रचित उपन्यास 'शब्दभंग' सन् 1989 ई॰ में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सामाजिक व राजनीतिक परिदृश्यों को चित्रित किया गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- रोबीन (पत्रकार), विभा, रहीम, आइसा, सुरेश, मंसूर (मंत्री), सात्रिमूतू, जयवर्धन, गोपीचन्द (उद्योगपति), साम्यूएल (पुलिस), प्रमोद महेश्वर, तोतां रोलां व मनोज आदि उल्लेखनीय हैं।

रोबीन नामक स्वाभिमानी व परिश्रमी युवक के माध्यम से टेलीविज़न व पत्रकारिता से जुड़े कर्मचारी की मानसिक कुंठा तथा तनाव का चित्रण किया गया है। रोबीन एक तरफ राजनीतिक शोषणतंत्र का शिकार होता है, तो दूसरी तरफ आर्थिक तंगी का शिकार होता है। रोबीन के माध्यम से यह भी दर्शाया गया है कि पदोन्नति के समय बोर्ड के सदस्य व अध्यक्ष पात्र की योग्यता व अनुभव को महत्व नहीं देते बल्कि चापलूसी,

घूँसख़ोरी, भाई-भतीजावाद व जातिवाद जैसे तत्वों को बढ़ावा देते हैं। रोबीन व रहीम के माध्यम से हिन्दू- मुस्लिम एकता, उनके आपसी सहयोग व घनिष्ठता का परिचय दिया गया है। मंसूर, सात्रिमूतू, गोपीचन्द, जयवर्धन आदि पात्रों के माध्यम से उन नेताओं, मंत्रियों की पोल खोली गयी है,जो स्वयं को देश का रक्षक घोषित करते हैं और नशीले पदार्थों के धंधे में संलिप्त रहकर उसे बढ़ावा देते हैं अपना आर्थिक स्तर मजबूत करते हैं और देश की आम जनता को गुमराह कर उन्हें मौत के घाट उतार रहे हैं। साम्यूएल के माध्यम से उन पुलिस कर्मचारियों की पोल खोली गयी है जो देशद्रोहियों व गुनाहगारों को सजा देने के बजाय उन्हें संरक्षण प्रदान करते हैं ऐसा करके वे स्वयं की तरक्की करवाते हैं। प्रमोद महेश्वर के माध्यम से उन लोगों का चित्रण किया गया जो नशीले पदार्थों के धंधे को रोकने के लिए असली गुनाहगार को अदालत में लाकर सजा दिलाना चाहता है किन्तु मंत्रियों की साजिश व कानून व्यवस्था की मिली भगत से वह स्वयं कठघरे में आ जाता है। विभा व रोबीन के माध्यम से आर्थिक तंगी से जूझते दंपति का चित्रण किया गया है

21) 'अचित्रित' (1990): अनत जी द्वारा रचित उपन्यास 'अचित्रित' सन् 1990 ई॰ में किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों का चित्रण किया गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- वानी, मरियम, मरियम की चाची, अनवर, मंसूर, वानी के माता-पिता, राधिका, विक्रम, योगेश, रामनाथ नौरतन, चन्दन, नीता आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।वानी व मरियम के माध्यम से वेश्या जीवन की त्रासदी एवं वेश्याओं के आशा-आकाँक्षाओं को भी वाणी प्रदान की गयी है। अनवर के माध्यम से नशीले पदार्थों के सेवन से ग्रसित कम उम्र के बालकों की दयनीय दशा का चित्रण किया गया है। वानी के परिवार के माध्यम से आर्थिक तंगी से जूझते परिवारों की विपन्नता को दर्शाया गया है। मंसूर, रेन्नो पिल्लै व इस्माइल के माध्यम से कानूनी संरक्षण प्राप्त मंत्री, नेता व उद्योगपतियों के अवैध

धंधों को बढ़ावा देने वाली प्रवृत्ति को दर्शाया गया है। वानी की बहन राधिका के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में परित्यक्ता स्त्रियों की वेदना को अभिव्यक्त किया गया है। चन्दन की पत्नी नीता के माध्यम से मंत्रियों के पत्नियों के अकेलेपन व ऊब को चित्रित किया गया है। विक्रम उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है,जो मॉरिशस की स्वतन्त्रता के खिलाफ आवाज बुलंद करते हैं तथा रामनाथ नौरतन व वानी के माध्यम उन देशभक्तों का चित्रण किया गया है,जो मॉरिशस को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने हेतु हर संभव प्रयास करते हैं। वानी के माध्यम से एक वेश्या की देशभक्ति को दर्शाया गया है।

22) 'और पसीना बहता रहा' (1993): यह उपन्यास सन् 1993 ई॰ में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। प्रमुख पात्र- परकाश, सीमा, सीता, हरि (हरिप्रसाद रामनारायण), प्रभा, सुगुनवा, अनुराधा, हासनमूसा, ज़ुलेखा, सोन्द्रों, अंजलि, जगदम्बी, सहदेव ठाकुर, फरीद, फातमा, सुग्रीम, रामबरन, गोविंद, महेंदरसिंह (बैठका के प्रधान), संतोष, आन्द्रे रोबियार, डा. मोरिस क्यूरे, सर शिवसागर रामगुलाम, वासुदेव विष्णुदयाल, अनिरुद्ध जगन्नाथ, हरखू सरदार, गास्तों आदि हैं।

इस उपन्यास की रचना अनत जी ने 'लाल पसीना' और 'गांधी जी बोले थे' उपन्यास की अगली कड़ी के रूप में किया है। इसमें स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें अनत जी ने उन आप्रवासी भारतीयों की दारुण दशा का चित्रण किया है,जो अपनी आर्थिक तंगी को दूर करने तथा अपार धन कमाने के उद्देश्य से दलालों के प्रलोभन में आकर अनुबंध के तहत मॉरिशस की ओर प्रस्थान किए। लेखक ने यह भी दर्शाया है कि मॉरिशस में पत्थरों के नीचे सोना मिलने के प्रलोभन में आकर न सिर्फ पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार के लोगअनुबंध के तहत मजदूरी करने को तैयार हो जाते हैं और अपनी मातृभूमि

को त्याग कर मॉरिशस के लिए प्रस्थान करते हैं बल्कि इनके साथ-साथ आन्ध्रप्रदेश, मद्रास, महाराष्ट्र व गुजरात के लोग भी अनुबंध के तहत मॉरिशस जाते हैं। अनत जी ने यह भी चित्रित किया है कि मॉरिशस में न सिर्फ धन कमाने के उद्देश्य से भारतीयों का आगमन हुआ है बल्कि भारत में ब्रिटिश शासकों के चंगुल से बचने के उद्देश्य से कुछ क्रांतिकारी लोगों ने मॉरिशस में शरण ली है। इसमें यह भी दर्शाया गया है कि भारत से जितनी तादात में अनुबंध के तहत भारतीय मजदूरों को ले जाया गया उनमें से बहुत कम ही लोग अनुबंध की समाप्ति पर अपने मुल्क को वापस हुए हैं। इस उपन्यास में गोरे शासकों, कोठी के सरदारों, दलालों, पुलिस कर्मचारी, न्याय-व्यवस्था के संचालकों तथा पूँजीपतियों व मिल-मालिकों के विविधोंमुखी शोषण-तन्त्र में पिसते आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की यातनाओं की सजीव झाँकी प्रस्तुत की गयी है साथ ही आप्रवासी भारतीयों की सहनशीलता, कर्मठता, संघर्ष, साहस, त्याग-बलिदान आदि को चित्रित किया गया है। इसमें 'लाल पसीना' उपन्यास के नायक किसनसिंह के मजदूर आंदोलन की सफलता को दर्शाया गया है। हरि, किसनसिंह के सपनों को साकार करता है। वह गोरे शासकों की अमानवीयता का सख्त विरोध करता है। इसके लिए वह मजदूर संघ का निर्माण करता है तथा पूरे देश के मजदूरों को संगठित करके अहिंसात्मक हड़ताल करता है तथा जेल भी जाता है। अंततः वह मजदूरों की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन लाता है तथा गाँधी जी के विचारों को याद करके राजनीति में भी सक्रिय भागीदारी करके विधानसभा में अपना स्थान बनाता है। इस उपन्यास में लेखक ने मजदूरों के हितार्थ किए जाने वाले आन्दोलन में स्त्रियों की सक्रिय भागीदारी व उनके त्याग एवं बलिदान को भी चित्रित किया है। साथ ही मजदूर आंदोलन को दबाने हेतु सरकार के तमाम साजिशों का भी चित्रण किया है। इसके साथ ही लेखक ने भारतीयों द्वारा मॉरिशस में छापाखाना तथा पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की शुरुआत करने का भी उल्लेख किया है। इस उपन्यास में अनत जी ने एक तरफ गोरे शासकों से आप्रवासी भारतीयों के संघर्ष को दर्शाया है तो दूसरी तरफ आप्रवासी भारतीयों

के आपसी मतभेद, कलह, सहयोग की भावना तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता को भी चित्रित किया है।

23) 'लहरों की बेटी' (1995): 'लहरों की बेटी' उपन्यास सन् 1955 ई॰ में प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही मछुआरों के जीवन का चित्रण किया गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- लखन, जीवनदत्त, विदुला, दुलारी, गौतम, शांति, धनदेव साब, मूनूसामी, आरती, हीरामन, सुमेर, पंकज व पंकज के माता-पिता आदि के नाम लिए जा सकते हैं। इन पात्रों के माध्यम से लेखक ने मॉरिशसीय समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत उपन्यास में लखन व विदुला के माध्यम से मछुआ जीवन का चित्रण किया गया है। धनदेव साब के माध्यम से उन पूँजीपतियों का चित्रण किया गया है,जो कानून व्यवस्था से साठ-गाँठ करके अवैध धंधा करते हैं और देश में नशाखोरी को बढ़ावा देते हैं। जीवनदत्त के माध्यम से अपने श्रम व आय के महत्व को समझने वाले तथा सहकारी संगठन को महत्व देने वाले नवयुवकों का चित्रण किया गया है। इसके साथ ही जातिगत भेद-भाव, आर्थिक असमानता, पारिवारिक विघटन, आप्रवासी भारतीयों के वैचारिक मतभेद तथा पीढ़ीगत संघर्ष की झाँकी प्रस्तुत की गयी है।

24) 'घर लौट चलो वैशाली' (1995): यह नायिका प्रधान उपन्यास है। इसमें अंतर्धर्मीय विवाह की समस्या को चित्रित किया गया है। यह उपन्यास सन् 1995 ई॰ में किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। प्रमुख पात्रों में- वैशाली, अख्तर, सोनी, अमृता, रूमा, समीर, डा॰ कमलजीत व प्रभा रामचरण के अतिरिक्त अख्तर की माँ आदि हैं। इसमें आर्यसमाजी ब्राह्मण की बेटी वैशाली और इस्लाम धर्मावलम्बी अख्तर के प्रेम-विवाह एवं

अंतर्धर्मीय विवाह की सफलता को चित्रित करने के साथ ही अंतर्धर्मीय विवाह के परिणामस्वरूप दांपत्य जीवन में होने वाली टकराहटों एवं उसके दुष्परिणामों को भी अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। सोनी के माध्यम से उन बच्चों की दयनीय स्थिति का वर्णन किया गया है,जिनके माँ-बाप के बीच हमेशा झगड़ा होता रहता है या जो तलाकशुदा जिंदगी बिताते हैं या भिन्न-भिन्न धर्मों को मानने वाले होते हैं। ऐसी स्थिति में एक बच्चे के लिए यह तय कर पाना मुश्किल हो जाता है कि वह माँ के साथ रहे या पिता के साथ रहे या अपने को किस धर्म का माने। ऐसी स्थिति में बच्चे का मानसिक व सामाजिक विकास रुक जाता है। वह कुंठा का शिकार हो जाता है। साथ ही उसे अपने हमउम्र बच्चों व समाज की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। तलाकशुदा माँ-बाप के बच्चों की मानसिक ऊहापोह को मन्नू भण्डारी ने 'आपका बंटी' उपन्यास में सफलतापूर्वक दर्शाया है तो प्रवासी कथाकार सुषमा वेदी ने 'मोरचे' उपन्यास में चित्रित किया है। समीर के माध्यम से मॉरिशस में नाट्य विधा के लेखन व नाटक को अभिनीत करने वाले कलाकारों के प्रति सरकार व समाज द्वारा उपेक्षापूर्ण दृष्टि को चित्रित किया गया है। साथ ही लेखकों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति में सरकार द्वारा किए गए हस्तक्षेपों का भी वर्णन किया गया है। इसमें स्त्री सशक्तीकरण की अनुगूँज भी सुनाई पड़ती है। वैशाली, अमृता व प्रभारामचरण के व्यक्तित्व में इस सशक्तीकरण के प्रभाव को देखा जा सकता है।

25) 'चलती रहो अनुपमा' (1998): 'चलती रहो अनुपमा' सन् 1998 ई॰ में किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- अनुपमा, गीतेश, अभिजीत, शारदा, सफीना, रामचरण, जसोदा, सुमीत, सलोनी, सुमन,जोजियान, राकेश, राजीव, चित्रा आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सामाजिक विसंगतियों पर कुठाराघात किया है। इसमें देश में बढ़ते उद्योग-धंधों एवं उद्योग-धंधों में चलने वाली

होड़बाजी, फैशनपरस्ती, गुंडागर्दी, संस्कृतिहीनता, विघटित मानव-मूल्य, संवेदनहीनता, पारिवारिक कलह, आर्थिक तंगी, आर्थिक असमानता, जातीय अहंवादिता, जातिगत भेद-भाव, अंतर्धर्मीय प्रेम-विवाह की समस्या आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही रचनाकार की रचनाधर्मिता व समाज में उसके लेखन की सामाजिक मान्यता संबंधी तथ्यों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त नाट्यप्रदर्शन में होने वाली दिक्कतों पर टिप्पणी की गयी है। चित्रा के माध्यम से भारतीय संस्कृति व कला के प्रति लगाव रखने वालों का भी वर्णन किया गया है।

26) 'आसमान अपना आँगन' (2000): 'आसमान अपना आँगन' सन् 2000 ई॰ में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक गतिविधियों, चुनावी सरगर्मियों एवं चुनाव के बाद की राजनीतिक दाँव-पेंच को भी चित्रित किया गया है। साथ ही मानव-मूल्यों की स्थापना की गयी है तथा वैज्ञानिक आविष्कारों की प्रगति पर भी प्रकाश डाला गया है। प्रमुख पात्रों में- हंस(हरिवंश), शोभा, मुनमुन, रेने मेरेवील व उनकी पत्नी शांति(मृत पात्र), नंदिनी, अनुराधा, दिनेश, सुधीर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रस्तुत उपन्यास का ताना-बाना डायरी शैली में रचा गया है। हंस के माध्यम से मानवीय मूल्यों की स्थापना की गयी है। दिनेश उन चुनावी उम्मीदवारों का प्रतिनिधित्व करता है, जो चुनाव जीतने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं तथा जो स्त्रियों के प्रति मात्र भोगवादी दृष्टि रखते हैं। शोभा, नंदिनी व अनुराधा के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के व्यूह में फँसी नारियों की शोषित व उपेक्षित दशा का चित्रण किया गया है। साथ ही इन तीनों स्त्री पात्रों के जरिये नारी मुक्ति की चेतना को भी वाणी प्रदान की गयी है। ये तीनों अपने-अपने तरीके से पितृसत्तात्मक समाज द्वारा खड़ी की गयी दीवारों को तोड़ती हैं और अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। मुनमुन के माध्यम से लेखक ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि

मनुष्य का पुनर्जन्म होता है। उपन्यास में मुनमुन को शांति के पुनर्जन्म के रूप में दर्शाया गया है। शांति नामक मृत पात्र के माध्यम से यह चित्रित किया गया है कि सच्चरित व्यक्ति की आत्माएँ कभी-कभी जीवित व्यक्ति को आगामी घटनाओं का पूर्वाभास करा जाती हैं। कभी स्वप्न के माध्यम से तो कभी अन्य संकेतों के जरिए। रेने मेरेवील नामक मृत फ्रांसीसी युवक के माध्यम से भारतीय सभ्यता, संस्कृति व साहित्य के प्रति आस्था रखने वाले गोरे शासक के सच्चरित्र को उजागर किया गया है साथ ही मेरेवील की खगोलशास्त्र व वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रति लगाव को भी चित्रित किया गया है।

27) 'अस्ति-अस्तु' (2003): 'अस्ति-अस्तु' अनत जी का मादक दृव्यों के व्यवसायीकरण पर आधारित उपन्यास है। यह सन् 2003 ई॰ में प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र- करन, भूपेन्द्र, हमजा, परमेश्वर, कासिम दिलमुहम्मद शाह, सोमू, सुषमा, दिव्या, संगीता, नरेन व कनुप्रिया आदि हैं। इसमें अनत जी ने मादक दृव्यों के व्यवसाय में संलिप्त व्यापारियों व इस व्यवसाय को संरक्षण प्रदान करने वाले कानून के तथाकथित रखवाले उच्च पदाधिकारियों व पुलिस कर्मचारियों का पर्दाफाश किया है। साथ ही मादक दृव्यों के सेवन से ग्रसित व्यक्तियों की दयनीय स्थिति और उसकी मनोदशा का भी चित्रण किया है। सोमू एक ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो कम उम्र में ही ड्रग का शिकार हो जाते हैं। ड्रग्स के व्यापारी इस व्यवसाय को बढ़ाने के लिए कम उम्र के बच्चों को भी माध्यम बनाने से नहीं चूकते हैं। सुषमा ऐसे ही वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जो कम उम्र में ही ड्रग के व्यवसाय में संलिप्त हो जाती है। दिव्या के माध्यम से स्त्री जाति के एक ऐसे वर्ग का चित्रण किया गया है जो पुरुषों के अधीन रहना पसंद नहीं करती बल्कि उनसे कंधे-से-कंधा मिलाकर या उनसे एक कदम आगे चलने की ख़्वाहिश रखती हैं।

28) 'एक उम्मीद और' (2003): 'एक उम्मीद और' पुनर्जन्म की अवधारणा पर आधारित उपन्यास है। यह सन् 2003 ई॰ में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें गर्भस्थ शिशु को नैरेटर (कथावाचक) बनाकर कथानक का ताना-बाना बुना गया है।

उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- उदय, उमेश, भूपेन, प्रिया, अंजू,दादी, रहमान, फेरोज, करीम, अख्तर, उषा, आनंद (गर्भस्थ शिशु), अमीना आदि के नाम लिए जा सकते हैं। इस कृति में धार्मिक कट्टरता, सांप्रदायिक दंगे, आतंकवाद एवं आतंकवाद को प्रश्रय देने वाले शिक्षण संस्थानों आदि के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही पदोन्नति में अनुभव व योग्यता के स्थान पर जातिवाद व भाई-भतीजावाद को प्राथमिकता देने वाली प्रवृत्ति का भी पर्दाफाश किया गया है। इसके अतिरिक्त विज्ञान के आविष्कार व उसके दुरुपयोग से मानव जीवन व पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का भी वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया है। उपन्यास का मुख्य उद्देश्य- धरती पर पर्यावरण और आदमी की आदमीयत की रक्षा करना है। **"यह उपन्यास अपनी रचनात्मक विशिष्टता और सहज प्रवाह के कारण न केवल पाठकीय संवेदना को स्पंदित करता है बल्कि वैचारिक उत्तेजना को नया आयाम प्रदान करता है।"*** ***(अभिमन्यु अनत, एक उम्मीद और, फ्लैप से)***

29) 'हम प्रवासी' (2004): 'हम प्रवासी' उपन्यास सन् 2004 ई॰ में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसके प्रमुख पात्रों में- मधुवा, हनीफ, चुरामन, राजमन, आइसा, सोनाली, सागूनदाले, सीमोन, परेम जी, पादरी, डाक्टर, कोठी के सरदार, देनिस पीचेन (दलाल), प्रवासी रक्षक (जान एंडरसन), सुगिया, महावीर, चम्पा, रामेसर, गणपति, अकबर आदि के नाम लिए जा सकते हैं। इस उपन्यास में अनत जी ने अनुबंध के तहत अपार धन संचित करने की लालसा से मॉरिशस की ओर गमन करने वाले भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की त्रासदी का यथार्थपरक अंकन किया है। साथ ही आप्रवासी भारतीयों के प्रति गोरे शासकों व कोठी के सरदारों व दलालों की उपेक्षापरक दृष्टि, अन्याय, अत्याचार तथा विविधोंमुखी शोषण को भी दर्शाया गया है। इस उपन्यास में भारतीय मजदूरों की मॉरिशस की ओर गमन करने की विवशता व मॉरिशस पहुँचकर अपना देश छोड़ने के पश्चाताप् के साथ जहाज यात्रा के दौरान होने वाली असुविधाओं एवं शारीरिक व मानसिक पीड़ा को भी चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में जान एंडरसन

नामक प्रवासी रक्षक की भारतीयों के प्रति सकारात्मक व्यवहार का चित्रण किया गया है। यह उपन्यास 'लाल पसीना' उपन्यास से भावसाम्य रखता है।

30) 'क्यों न फिर से' (2004): 'क्यों न फिर से' अनत जी द्वारा रचित राजनीतिक गतिविधियों पर आधारित उपन्यास है। यह उपन्यास सन् 2004 ई॰ में किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- अजय जयराम, भवन्ती, सुरेखा, महिमा, माधव, सुमित्रा, अशोक, राजेन्द्र, ज्यूडी, सुजाता, विमल, किरण आदि के नाम लिए जा सकते हैं। इसमें लेखक ने भारत, मॉरिशस व अमेरिकी परिवेश को चित्रित किया है। मॉरिशस व अमेरिका में बसे भारतवंशियों की भारत के प्रति अगाध स्नेह व मोह को भी दर्शाया है। भवन्ती के माध्यम से मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों की भारतीय सभ्यता, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज व भाषा और साहित्य के प्रति मोहग्रस्तता को चित्रित किया गया है। अजय के मध्यम से मॉरिशसीय समाज की राजनीतिक गतिविधियों, विशेषकर चुनावी सरगर्मियों का वर्णन किया गया है। ज्यूडी के माध्यम से अमेरिका में बसे रेड इंडियनों की भारत के प्रति मोह को दर्शाया गया है,जो अमेरिका में जन्म लेकर भी भारतीय साहित्य व संस्कृति के प्रति रुचि रखती है और अपने भारतीय पति अशोक के साथ भारत आकर भारत में रहने का निर्णय करती है। अशोक के माध्यम से उन युवाओं की मानसिकता का चित्रण किया गया है जो पैसा कमाने के लिए विदेशों की ओर गमन करते हैं। महिमा के माध्यम से शिक्षित कामकाजी व आधुनिक विचारों से सम्पन्न युवती की पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में शोषित दशा का चित्रण किया गया है। अपने ससुराल वालों को परिवार का वारिस न देने के कारण उसे छोड़ दिया जाता है और उसका पति किसी दूसरी लड़की से शादी कर लेता है। महिमा का पति विमल बजाज उन अहंवादी पुरुषों का प्रतिनिधित्व करता है जो मानवीय मूल्यों का परित्याग कर अपनी स्वार्थ पूर्ति हेतु किसी भी हद तक जा सकते हैं। विमल बजाज अमेरिका में पाँव जमाने हेतु एक अमेरिकी लड़की से शादी करता है उसकी एक बच्ची भी होती है किन्तु कुछ समय पश्चात् वह दिल्ली में महिमा से इसलिए शादी करता है ताकि भारत में उसका जो

कारोबार है,उसकी देखभाल हेतु उसे वारिस मिल जाए किन्तु महिमा जब एक पुत्री को जन्म देती है तब वह महिमा को छोड़ देता है और किसी अन्य लड़की से शादी कर लेता है तथा महिमा को नीचा दिखाने हेतु वह उसकी पुत्री सुजाताका अपहरण करवाने से भी नहीं चूकता।

31) 'अपना मन उपवन' (2006): यह उपन्यास सन् 2008 ई० में सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। रामचरण, प्रियदत्त, धर्मा, निशा, उर्मिला, अरविंद, अखिलेश, रंभा, खतीजा, नमिता, विपिन, शालिनी, रोजालीन आदि प्रमुख पात्र हैं। इन प्रमुख पात्रों के माध्यम से अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की विभिन्न सामाजिक समस्याओं को निरूपित किया है। इस उपन्यास में वैज्ञानिक आविष्कारों के लाभ एवं उसके दुष्परिणामों की झाँकी प्रस्तुत की गयी है तथा प्रकृति के सानिध्य व उसके संरक्षण के प्रति लोगों को आगाह किया गया है। इसमें संस्कृतिहीनता, बदलते मानव-मूल्य, पीढ़ीगत संघर्ष, वृद्धावस्था की समस्या, जातिगत भेद-भाव, आर्थिक असमानता, अंतर्धर्मीय व अंतर्जातीय प्रेम-विवाह की समस्या, पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में शोषित नारी की दयनीय स्थिति आदि की यथार्थपरक अभिव्यक्ति की गयी है। रामचरण के माध्यम से हिन्दी भाषा व साहित्य के प्रति अनुराग रखने वालों का चित्रण किया गया है। प्रियदत्त के माध्यम से नाटकों के प्रति अनुराग रखने वालों का चित्रण किया गया है।

32) 'मेरा निर्णय' (2010): यह उपन्यास सन् 2010 ई० में भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में- अमिता, सत्यानंद, पंडित जीवनलाल, फ्रेडरिक, सौरभ, हुस्ना, सूर्या, प्रमोद, सुधीर, विमला, मेट्रन सोफिया, मालती, राजेश, सुरेखा, मोतीलाल आदि के नाम लिए जा सकते हैं। इस उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की आर्थिक तंगी, शिक्षित नवयुवकों की बेरोजगारी, बेकारी व उससे उत्पन्न

अनेक समस्याओं को चित्रित किया गया है। साथ ही पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में परित्यक्ता स्त्रियों की त्रासदपूर्ण स्थिति का चित्रण किया गया है। इसके साथ ही दाम्पत्य जीवन के बिखराव एवं उसके विभिन्न कारणों तथा उसके दुष्परिणामों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है तथा मॉरिशसीय समाज में व्याप्त रंगभेद, जातिभेद व आर्थिक विषमता, अंतर्धर्मीय विवाह की समस्या आदि को भी चित्रित किया गया है।

कहानी विधा:

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार अभिमन्यु अनत ने अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य किया है। इन्होंने उपन्यास विधा के साथ-साथ कहानी विधा के विकास में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। जिस प्रकार भारत में हिन्दी कथा-साहित्य के विकास में प्रेमचंद का योगदान अविस्मरणीय है। ठीक उसी प्रकार मॉरिशस के हिन्दी कथा-साहित्य के विकास में अनत जी का विशिष्ट योगदान है। इसी वजह से अनत जी को 'मॉरिशस का प्रेमचंद' कहा जाता है। अनत जी ने लगभग 200 कहानियों का सृजन किया है। इनके अब तक 8 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से अनत जी ने मॉरिशस के उन अनछुए, अनकहे सत्य को उजागर करने का प्रयास किया है, जिसे वहाँ के इतिहास लेखकों ने भी अपने इतिहास में स्थान नहीं दिया। मॉरिशस देश में व्याप्त विभिन्न समस्याओं- अशिक्षा, गरीबी, बेकारी, भ्रष्ट राजनीति, कानूनी अव्यवस्था, घूसखोरी, चापलूसी, वेश्यावृत्ति, भाई-भतीजावाद, रंगभेद, जातिभेद, असफल प्रेम, विसंस्कृतिकरण, नेताओं व मंत्रियों की वादाखिलाफी, गोरी जाति की अहंवादिता एवं होटल संस्कृति व आम जनता की आर्थिक विपन्नता आदि का

यथार्थपरक चित्रणउन्होंने अपनी कहानियों में किया है। अनत जी के कहानी संग्रहों का संक्षिप्त परिचय निम्नवत् प्रस्तुत है:

1) **'खामोशी के चीत्कार'(1976):** 'खामोशी के चीत्कार' अनत जी का पहला कहानी संग्रह है। यह सन् 1976 ई॰ में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल 13 कहानियाँ संकलित हैं। जिनके नाम् निम्नवत हैं:

- माथे का टीका
- खामोशी के चीत्कार
- स्वर्ग के उस पार
- वापसी सूरज की
- कोलाहल
- नयी तलाश
- मुसाफिर
- द्विविधा
- अस्वीकार
- जहर और दवा
- धमाका
- सुलह
- रात की पार्टी के बाद

'खामोशी के चीत्कार', 'जहर और दवा', धमाका', सुलह' व 'रात की पार्टी के बाद' शीर्षक कहानियों में पति-पत्नी के मध्य बनते-बिगड़ते रिश्तों एवं उससे उत्पन्न मानसिक कुंठा, तनाव एवं कड़वाहट आदि के चित्रण के साथ दाम्पत्य जीवन में आने वाली दरार के विभिन्न कारणों पर भी प्रकाश डाला गया है। इन कारणों में कहीं पति की आर्थिक तंगी है,

तो कहीं पति-पत्नी के मध्य तीसरे व्यक्ति (स्त्री/पुरूष) का प्रवेश है, तो कहीं दाम्पत्य-जीवन में यौन-सुख का अभाव है। जिसके करण दाम्पत्य-जीवन में कड़वाहट, अजनबीपन व अविश्वसनीयता का प्रवेश हो जाता है।

'माथे का टीका' शीर्षक कहानी में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त शिक्षित नवयुवकों की बेरोजगारी, बेकारी व वेश्यावृत्ति की समस्या को उजागर किया गया है।

'स्वर्ग के उस पार' शीर्षक कहानी में रोमी नामक युवक की तपेदिक से ग्रस्त लंबी बीमारी व उसकी मन:स्थितियों का वर्णन किया गया है। यह कहानी अनत जी के व्यक्तिगत जीवन से जुड़ी हुई है। इस संबंध में अनत जी कहते हैं:**"'स्वर्ग के उस पार' के पात्र की वह काफी लंबी बीमारी मेरी अपनी ही थी।"**[35]

'वापसी सूरज की' शीर्षक कहानी में लालमन नामक युवक के माध्यम से जीवन से ऊबे हुए, थके-हारे, बेरोजगार व बेबस व्यक्ति के मानसिक ऊहापोहों का यथार्थपरक अंकन किया गया है। 'कोलाहल' शीर्षक कहानी में आजादी की तीसरी वर्षगांठ के जश्न एवं उसके भव्य आयोजन के कारणों तथा आमजनता की आजादी के प्रति मोहभंग की स्थिति को दर्शाया गया है। 'नयी तलाश' शीर्षक कहानी में होटलों में चलने वाली वेश्यावृत्ति का एवं बाल-मन पर पड़ने वाले उसके दुष्प्रभावों का वर्णन एमिल नामक 12 वर्षीय बालक के माध्यम से किया गया है। 'मुसाफिर' शीर्षक कहानी में एक अजनबी युवक मनोज एवं पर्वतीय प्रदेश में रहने वाली लड़की नीला के माध्यम से युवामन में उठने वाले प्रेमतरंगों का वर्णन किया गया है। 'द्विविधा' कहानी में बलवीर, कोसिला व परसाद के त्रिकोणात्मक

एवं असफल प्रेम के चित्रण के साथ बलवीर की दुविधाग्रस्त मन:स्थिति का यथार्थपरक चित्रण किया गया है।

'खामोशी के चीत्कार' कहानी संग्रह की कहानियों की यथार्थपरकता एवं प्रामाणिकता के संबंध में अनत जी कथन दृष्टव्य है-"**'खामोशी के चीत्कार' की ये कहानियाँ मेरे अपने जीवन से संबद्ध हैं- 'माथे का टीका', 'खामोशी के चीत्कार', कोलाहल', 'सुलह' आदि। 'माथे का टीका' कहानी में जिस पूजा का वर्णन है वह हमारे घर होती रही है और उसी दौरान मैंने उस पुजारी को भी देखा था-तब मैं बेकार था। 'खामोशी के चीत्कार' कहानी मेरे टेलीविज़न जीवन की एक घटना है जब अठारह साल पहले मैं टेलीविज़न के लिए लिखता था, निर्देशन करता था और भूमिकाएँ निभाता था। 'सुलह' भी उसी समय की एक घटना है। 'कोलाहल' कहानी का मैं वह मुख्य पात्र हूँ जिसने आजादी का अर्थ न तो तब समझा था और न आज समझ पाया है। इसी तरह 'स्वर्ग के उस पार' के पात्र की वह काफी लंबी बीमारी मेरी अपनी ही थी। 'द्विविधा' का पात्र मेरा वह दोस्त है जिसे मैंने उसके बाप के सामने प्रश्न करने को भड़काया था। 'अस्वीकार' की सारी स्थितियों की बरछी को मैं अपने जीवन में अनुभव कर चुका हूँ। इस तरह आप देखेंगे कि इस संग्रह की सभी कहानियों में मेरे अपने जीवन से बहुत सारी समानताएँ हैं।...लेकिन इस समानता को मैंने मात्र प्रतिबिंब के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है, बल्कि एक आंतरिक अनुभूति के बाद प्रश्नों के रूप में ही चित्रित किया है।"[36]**

2) **'इंसान और मशीन'(1976):** इंसान और मशीन' अनत जी का दूसरा कहानी संग्रह है। यह कहानी संग्रह सन् 1976 ई० में सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में अनत जी की 44 लघुकथाएँ संकलित हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं-

- मुट्ठी में बंद उजाला
- बड़ों से सीखा पाठ
- धृतराष्ट्र और शकुनि के बीच
- देश का कपड़ा
- भाग्यफल
- इंसान और मशीन
- और जब बत्ती जली
- मंजिल के दो फासले
- अपना रंग
- नचिकेता
- मोह
- समय
- परिणाम
- प्रमाण-पत्र
- फार्मूला
- भगवान जिंदा है
- सच्चाई
- सूचना
- सबसे पहले कौन
- कीटाणु
- नन्हें मछुए का भाग्य
- वह
- मजबूर चूसी हुई ईख
- भय की खोज
- फैसला
- दूध
- इंसान और कुत्ता
- कड़वाहट बीयर की
- चारा
- उद्घाटन
- एकलव्य
- भिखारी
- जीवित मुर्दा
- विदुर की साग
- मशीन की मृत्यु
- वंदी
- खिलौना
- सिफारिश
- अखबार
- शकुंतला
- प्रभाव
- भीतर की बातें
- अपने लोग
- रंग

'बड़ों से सीखा पाठ', 'ढंग का कपड़ा', 'अपना रंग', 'खिलौना' व 'रंग' शीर्षक कहानियों में काले भारतीयों के प्रति गोरों के अमानवीय कृत्यों, अन्याय, अत्याचार व बर्बरता का चित्रण किया गया है। रंगभेद की यातना से पीड़ित काले भारतीयों की दयनीय स्थिति को भी चित्रित किया गया है।

'विदुर की साग', 'सिफारिश' व 'शकुंतला' शीर्षक कहानियों में मॉरिशसीय समाज की चुनावी प्रक्रिया व चुनाव जीतने हेतु विभिन्न खोखलेवादों एवं आमजनता के भोलेपन व उनकी पीड़ित दशा का चित्रण किया गया है।

'चारा', 'भिखारी', 'दूध', 'मशीन की मृत्यु', 'भीतर की बातें', 'अपने लोग', 'मूठी में बंद उजाला' व 'मजबूर चूसी हुई ईख' शीर्षक कहानियों में आर्थिक विपन्नता, बेरोजगारी व तज्जनित अभावों, परेशानियों आदि का अंकन किया गया है।

'प्रमाण-पत्र', 'फार्मूला', 'सच्चाई' व 'उद्घाटन' शीर्षक कहानियों में मॉरिशसीय समाज में व्याप्त घूँसखोरी, चापलूसी, भाई-भतीजावाद आदि प्रवृत्तियों को उजागर किया गया है, जहाँ पर नौकरी योग्यता व अनुभव के आधार पर नहीं बल्कि सिफारिश, चापलूसी व रिश्तेदारी के नाते दी जाती है।

'नचिकेता', 'मोह', 'परिणाम', 'कीटाणु', 'दूध', 'इंसान और कुत्ता', 'एकलव्य', 'जीवित मुर्दा', 'बंदी', 'भीतर की बातें' शीर्षक कहानियों के माध्यम से राजनेताओं, मंत्रियों

व पूँजीपतियों के शोषणतन्त्र में पिसते आम आदमी की व्यथा को चित्रित किया गया है। 'और जब बत्ती जली' कहानी में प्रेम के त्रिकोणात्मक स्वरूप की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। यह कहानी मन्नू भण्डारी की 'यही सच है'कहानी से भाव-साम्य रखती है।'समय' शीर्षक कहानी में वैज्ञानिक प्रगति व नित-नये आविष्कारों की तुलना में प्रकृति के द्वारा संचालित गतिविधियों की श्रेष्ठता को दर्शाया गया है।

इस संग्रह की कहानियों के वैशिष्ट्य को उद्घाटित करते हुए डा. कमलकिशोर गोयनका जी लिखते हैं- **"'इंसान और मशीन' में चौवालीस लघुकथाएँ हैं, जो उसी प्रकार की हैं, जैसी 'कांग्रेस' (1964-67) में मुनीश्वरलाल चिंतामणि की प्रकाशित हुई थीं, लेकिन इनका अपना वैशिष्ट्य भी है। अनत की ये लघुकथाएँ राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक कथानकों तथा समस्याओं पर आधारित हैं तथा इनमें तीव्र हास्यात्मक व्यंग्य, विडम्बना, कटाक्ष तथा मर्मभेदी व्यंग्य है। इन लघुकथाओं में पहली बार अनत ने भारत के पौराणिक पात्रों का उपयोग मॉरिशस के जीवन को समझने तथा उसको निरावृत्त करने के लिए किया है। इस प्रकार कहानीकार पौराणिकता को आधुनिकता से देखता है।... अभिमन्यु भी लघुकथाओं के लिए 'रामायण' और 'महाभारत' दोनों ही का उपयोग करते हैं। अभिमन्यु अनत अपनी कहानी-कला में प्राय: उपदेशात्मक नहीं रहे, लेकिन इन लघु कथाओं में शिक्षा की प्रवृत्ति है, परंतु यह प्राय: अप्रत्यक्ष ही है।"[3]**

3) **'वह बीच का आदमी'(1981):** 'वह बीच का आदमी' अनत जी का तीसरा कहानी संग्रह है। यह सन् 1981 ई॰ में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल 18 कहानियाँ संकलित हैं,जिनके नाम निम्नवत् हैं-

- वह बीच का आदमी
- मान रक्षा
- कल से खेतों में
- गोली की आवाज
- बादलों के बीच से
- नींद के बाद
- नीम की छाया में लड़की
- अवलंब
- घर और अस्पताल के बीच
- बोझिल
- पुनर्जन्म
- मानों को विश्वास था
- तोषण
- नदी जा रही सागर को
- उस दिन का वह भारी बोझ
- बर्फ के भीतर की वह गरमी
- कविता जो लिखी न गई
- जीत

'वह बीच का आदमी', 'मान रक्षा' व 'गोली की आवाज' शीर्षक कहानियों में भारतीयों के साथ गोरों द्वारा किए गए अन्याय, अत्याचार व अमानवीय कृत्यों को उजागर किया गया है। 'कल से खेतों में', 'बादलों के बीच से', 'जीत', 'नींद के बाद' व 'मानोन को विश्वास था' शीर्षक कहानियों में मॉरिशस में व्याप्त बेरोजगारी, आर्थिक तंगी व भुखमरी आदि का चित्रण किया गया है। 'अवलंब', 'घर और अस्पताल के बीच', 'नदी जा रही सागर को', 'पुनर्जन्म' व 'उस दिन का वह भारी बोझ' शीर्षक कहानियों में असफल प्रेम एवं उसके विभिन्न कारणों पर प्रकाश डाला गया है। 'बोझिल', 'नीम की छाया में लड़की' व 'कविता जो लिखी न गयी' शीर्षक कहानियों में पात्रों की मानसिक पीड़ा व उनके अंतर्द्वंद्व को चित्रित किया गया है। 'तोषण' शीर्षक कहानी में रघुसिंह के माध्यम से मानव-मूल्यों की स्थापना की गयी है। 'बर्फ के भीतर की गर्मी' कहानी में

सोनिया व धीरेन के माध्यम से यौन-सुख के अभाव में पति-पत्नी के मध्य होने वाली टकराहटों एवं रिश्तों में पड़ने वाली दरारों का भी चित्रांकन किया गया है। इस संग्रह की कहानियों के मर्म को उद्घाटित करते हुएपुस्तक केफ्लैप पर लिखा हुआ है: **"इस संग्रह की कहानियाँ एक ओर जहाँ उन स्थितियों और कारणों की खोज में सक्रिय दिखायी देती हैं,जो व्यवस्था में मानवीय तत्वों के विघटन के परिणामस्वरूप मनुष्य को बहुत ओछा या हल्का बना देते हैं, वहीं ये कहानियाँ मानवीय अनुभूतियों, प्रासंगिक और गैर-प्रासंगिक के बीच बड़ी सावधानी के साथ उसे रेखांकित करते हैं;जो प्रासंगिक हैं और अर्थपूर्ण भी। दरअसल अभिमन्यु अनत की ये कहानियाँ आम आदमी की जिंदगी से सरोकार रखती हैं। सामाजिक विसंगतियों और अंतर्विरोधों को परत-दर-परत खोलने वाली ये कहानियाँ साधनहीन और विपन्न आदमी के शोषण को बेसाख्ता रेखांकित करती हैं।"[38]**

4) **'एक थाली समंदर' (1988):** 'एक थाली समंदर' अनत जी का संख्या क्रम की दृष्टि से चौथा कहानी संग्रह है। यह सन् 1988 ई॰ में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 24 कहानियाँ संकलित हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं-

- एक थाली समंदर
- क्षितिज कहाँ
- भीतर आना मना है
- अंधेरे में आदमी
- मुट्ठी भर रेत
- दिन हमारे नहीं
- नयी तलाश
- बख्शीश
- अस्वीकार - 2
- घटाटोप अंधेरा
- अंधेरे-उजाले के बीच
- इतिहास चक्र
- दो गलियों के बीच की गली
- शिष्टाचार के साथ
- एक छोटी-सी भेंट
- नो वेकेंसी
- दोषी
- आवाज
- बर्फ की आत्मा

- काफी हाउस की वह शाम
- निहत्था
- प्रोमोशन
- मान-रक्षा
- मातमपुरसी

'एक थाली समंदर', 'अंधेरे-उजाले के बीच', 'दोषी', 'निहत्था' शीर्षक कहानियों में दाम्पत्य-जीवन के बिखराव एवं उसके विभिन्न कारणों पर प्रकाश डाला गया है। 'अंधेरे में आदमी', 'दिन हमारे नहीं', 'घटाटोप अंधेरा', 'दो गलियों के बीच की गली', 'बर्फ की आत्मा' व 'मातमपुरसी' शीर्षक कहानियों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त आर्थिक तंगी, बेरोजगारी, बेकारी व तज्जनित उत्पन्न समस्याओं का चित्रण किया गया है। 'मुट्ठी भर रेत' में असफल प्रेम का चित्रण किया गया है।'बख्शीश', 'आवाज' व 'मान रक्षा' में रंगभेद की समस्या के साथ-साथ आप्रवासी भारतीयों के प्रति गोरों की अमानवीयता, अत्याचार तथा भेदभावपरक नीति का वर्णन किया गया है। 'मान रक्षा' कहानी में वृद्धावस्था की समस्या को भी दर्शाया गया है। 'इतिहास चक्र', 'शिष्टाचार के साथ', 'प्रमोशन' व 'भीतर आना मना है' शीर्षक कहानियों में सत्तासीन अधिकारियों के शोषण में पिसते कर्मचारियों की मन:स्थिति को चित्रित किया गया है तथा सत्तासीन लोगों की चापलूसी, घूसखोरी, भाई-भतीजावाद को बढ़ावा देने वाली नीतियों का पर्दाफाश किया गया है।

'एक थाली समंदर' कहानी संग्रह की कहानियों के वैशिष्ट्य के संदर्भ में डा. कमलकिशोर गोयनका लिखते हैं-**"ये कहानियाँ मॉरिशस के जन-जीवन की कुछ ऐसी कलात्मक झाँकियाँ हैं, जो हमारे मन-मस्तिष्क को उद्वेलित करती हैं, कहीं भाव-विभोर और कहीं विचारोत्तेजित करके सोचने समझने को विवश करती हैं। कहानियों में जीवन को बड़ी बारीकी से पकड़ लेना और अपनी सृजन-क्षमता से उसे एक कलात्मक इकाई में बदल देना अनत की एक और विशेषता है।... कहानी जीवन की एकोन्मुखी कलात्मक अभिव्यक्ति**

है। अनत की कहानियाँ निश्चय ही इसी कोटि में आती हैं। वह अपनी कहानियों में मानव-जीवन के प्रेम, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, स्वाभिमान, दंभ, क्रोध, दमन, शोषण, मैत्री आदि भावों को साकार एवं जीवंत बनाने में पूर्णत: सफल हुए हैं।"[39]

5) 'अभिमन्यु अनत की आरंभिक कहानियाँ'(2002): 'अभिमन्यु अनत की आरंभिक कहानियाँ' अनत जी का संख्या क्रम की दृष्टि से पाँचवां कहानी संग्रह है। यह सन् 2002 ई॰ में डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 21 कहानियाँ संकलित हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं-

- सुबह दूर नहीं
- गठरी
- त्रिकोण
- प्लास्टिक गर्ल
- घड़ी
- वह सपना नहीं था
- प्रलयंकर लहरें
- नीहारिका
- और डान जुआन मर गया
- काफी हाउस की वह शाम
- संध्या आयी चली गयी
- डोडो की वापसी
- वाह छाया नहीं थीं
- घर और अस्पताल के बीच
- पूर्व-प्रबोध
- बैगनी फूल अर्थी का
- संभावना दो होती हैं
- एक मोती लहरें अनेक
- पागलखाने की खिड़की से
- निर्दोष दोषी
- घरौंदा

'त्रिकोण', 'वह सपना नहीं था', 'प्रलयंकर लहरें', 'नीहारिका', 'और डान जुआन मर गया' व 'निर्दोष दोषी' शीर्षक कहानियों में दाम्पत्य-जीवन के बिखराव और उसके

विभिन्न कारणों – आर्थिक तंगी, पति-पत्नी के मध्य तीसरे व्यक्ति (स्त्री/पुरुष) का प्रवेश, यौन-सुख का अभाव, विवाहेतर शारीरिक संबंध आदि पर प्रकाश डाला गया है।

'प्लास्टिक गर्ल', 'संध्या आयी चली गयी', 'वह छाया नहीं थी', 'घर और अस्पताल के बीच', 'पागलखाने की खिड़की से' व 'घरौंदा' शीर्षक कहानियों में असफल प्रेम का चित्रण किया गया है। साथ ही प्रेम की इस असफलता के विभिन्न कारणों पर भी प्रकाश डाला गया है, जिसमें रंगभेद, जातिगत भेद, आर्थिक असमानता, मजहबी कट्टरपन आदि प्रमुख हैं।

'बैगनी फूल अर्थी का' व 'गठरी' शीर्षक कहानियों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की बहुसंख्य जनता की आर्थिक तंगी व उसके वीभत्स रूप को चित्रित किया गया है।'डोडो की वापसी' में चुनावी गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है। 'संभावना दो होती हैं' में पूर्व में किए गए अपने गलत कार्यों के प्रति पश्चाताप का वर्णन किया गया है। 'सुबह दूर नहीं' व 'पूर्व-प्रबोध' कहानियों में उन अवैध संतानों को जीवित रखने एवं उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाने की पुरजोर कोशिश की गयी है, जो विवाह-पूर्व शारीरिक संबंधों से जन्में हैं।

इस संग्रह की कहानियों के वस्तु एवं शिल्प के वैशिष्ट्य को उद्घाटित करते हुए सुरेश ऋतुपर्ण लिखते हैं- **"लगभग 35 से 50 वर्ष पहले लिखी गयी इन कहानियों में संवेदना और शिल्प की एक ऐसी आत्मीय तराश मिलती है जो सामान्यत: किसी किशोर कथाकार की रचनाओं में मिलनी मुश्किल होती है। 15 से 25 वर्ष की किशोर-युवा उम्र के**

बीच लिखी गयी इन कहानियों में जहाँ एक ओर किशोर मन की भावुकता के दर्शन होते हैं वहीं दूसरी ओर यथार्थ की भरपूर पकड़ रखने वाली परिपक्व युवा समझ भी विद्यमान है। इन कहानियों में अनत की कलम युवा मन में उमड़ते सपनों और सुलगते सवालों को बड़ी मार्मिकता और कौशल के साथ चित्रित कर पाने में सफल होती है। स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के धरातल, प्रेम-सेक्स के अतिरिक्त पेट की भूख और जीवन अस्तित्व के संघर्ष, द्वंद्व और विडंबनाओं की अनेक आयामी अभिव्यक्ति इन कहानियों में सहज ही देखी जा सकती है।"[40]

6) **'अब कल आएगा यमराज'(2010):** 'अब कल आएगा यमराज' कहानी संग्रह सन् 2010 ई० में ज्ञानगंगा प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 22 कहानियाँ संकलित हैं, जिनमें से 8 लघुकहानी हैं। इस संकलन में संकलित कहानियों के नाम इस प्रकार हैं-

- अब कल आयेगा यमराज
- अपने लोग
- वह आजादी
- अपनी पहचान
- हैलो, मैं प्रधानमंत्री के दफ्तर से बोल रहा हूँ
- रिश्ते
- नाहक
- कड़वी रोटी
- बिसायंध
- पत्रकार की प्राथमिकता
- एक स्वयंबर और
- सिरदर्द
- उष्णता
- नया खिलौना
- राजनीति की अदालत
- उपकार
- सबसे योग्य
- फिजूल
- नमकीन शरबत
- तोबा
- वंचित
- अपना जहान

'नाहक', 'पत्रकार की प्राथमिकता', 'सिरदर्द', 'उष्णता', 'नया खिलौना', 'उपकार', 'सबसे योग्य' व 'वंचित' शीर्षक कहानियाँ लघु कहानी हैं। 'अब कल आएगा यमराज', 'बिसायंध', 'फिजूल' व 'तोबा' शीर्षक कहानियों में आर्थिक विपन्नता व उससे उत्पन्न अनेक समस्याओं को चित्रित किया गया है। 'अपनी पहचान', 'रिश्ते', 'कड़वी रोटी' शीर्षक कहानियों में दांपत्य-जीवन के बिखराव और उसके विभिन्न कारणों तथा पात्रों के मानसिक ऊहापोह का वर्णन किया गया है। 'एक स्वयंबर और' कहानी में सिर्फ एक पात्र के द्वारा पूर्वदीप्ति शैली में आत्मकथ्य के माध्यम से सम्पूर्ण कहानी का ताना-बाना बुना गया है। 'अपना जहान' कहानी में वृद्धावस्था की समस्या पर प्रकाश डाला गया है। 'अपने लोग', 'वह आजादी', 'हैलो, मैं प्रधानमंत्री के दफ्तर से बोल रहा हूँ' व 'राजनीति की अदालत' शीर्षक कहानियों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक गतिविधियों, चुनावी सरगर्मियों, नेता व मंत्रियों के खोखलेवादों और वादाखिलाफी प्रवृत्ति व नौकरी में योग्यता के बदले भाई-भतीजावाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद को बढ़ावा देने वाली मानसिकता को दर्शाया गया है।'पत्रकार की प्राथमिकता' शीर्षक कहानी में वर्तमान समय के पत्रकारों की अपने व्यवसाय व उसकी सच्ची प्रतिबद्धता के प्रति बरती जाने वाली लापरवाही का वर्णन किया गया है। 'नाहक' शीर्षक लघुकहानी में दो पागलों के माध्यम से वर्तमान शिक्षा-पद्धति पर करारा व्यंग्य किया गया है। इस संग्रह के कहानियों के वैशिष्ट्य को उद्घाटित करते हुए कमलेश्वर जी लिखते हैं- **"आधुनिक भारतीय कथा परंपरा में अभिमन्यु अनत की ये कहानियाँ पूरी तरह से यथार्थ सापेक्ष और सघन मानवीय चेतना की समर्थ कहानियाँ हैं। अभिमन्यु की ये 'हिन्दी कहानियाँ' भारतीय हिन्दी कहानी को वैश्विक फलक पर मनुष्य के हित में प्रस्थापित करती हैं।"**[41]

7) 'बवंडर बाहर-भीतर' (2011): 'बवंडर बाहर-भीतर' कहानी संग्रह सन् 2011 ई॰ में ज्ञानगंगा प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 17 कहानी संकलित हैं,जिनके नाम निम्नवत् हैं-

- इतिहास का वर्तमान
- उस रात भी बारिश थी
- वह तीसरी तस्वीर
- बेक़सूरों के बीच
- आन-रक्षक
- कुर्बानी
- विकल्प
- फैसला
- राबिन हुड की मौत
- आमंत्रण
- कमीज
- अहल्या
- तिलमिलाहट
- भगवान की आँखें
- गिरफ्त
- आँखों में ज्वार-भाटा
- बवंडर बाहर-भीतर

'बेक़सूरों के बीच', 'फैसला', 'कमीज' व 'भगवान की आँखें' शीर्षक कहानियाँ लघुकहानी हैं। 'उस रात भी बारिश थी', 'वह तीसरी तस्वीर', 'अहल्या' व 'तिलमिलाहट' शीर्षक कहानियों में दाम्पत्य-जीवन के बनते-बिगड़ते रिश्तों एवं पारिवारिक विघटन को दर्शाया गया है साथ ही पति-पत्नी के बीच दरार पड़ने के विभिन्न कारणों- आर्थिक तंगी, पति का शराबी होना, पति-पत्नी के मध्य तीसरे व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) का प्रवेश, पुरुष की नपुंसकता व वैवाहिक-जीवन में यौन-सुख का अभाव इत्यादि पर भी प्रकाश डाला गया है। 'विकल्प', 'फैसला', 'गिरफ्त' व 'आँखों में ज्वार-भाटा' शीर्षक कहानियों में बेकारी, बेरोजगारी, अर्थाभाव व उससे उत्पन्न अनेक पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक व मानसिक

समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही पुनर्विवाह की समस्या, वैधव्य जीवन की त्रासदी व वृद्धावस्था की समस्या को दर्शाया गया है।

'इतिहास का वर्तमान' कहानी में आप्रवासी भारतीयों के प्रति गोरे शासकों के अमानवीय अत्याचारों व भेदभावपरक व्यवहार के साथ-साथ रंगभेद की समस्या एवं उसके दंश को भी चित्रित किया गया है। साथ ही बिसेसर नामक पात्र के माध्यम से भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की मानसिक पीड़ा को भी दर्शाया गया है।

'कुर्बानी' शीर्षक कहानी में मॉरिशस की स्वतन्त्रता से कुछ समय पूर्व सन् 1968 के सांप्रदायिक दंगे एवं उसका खामियाजा भुगतते हुए आमजनता व स्त्रियों की शोषित दशा का चित्रण किया गया है। साथ ही इस्लाम धर्म के धार्मिक कट्टरपन को भी दर्शाया गया है।

'आन-रक्षक' व राबिन हुड की मौत' कहानी में भ्रष्ट शासनतंत्र व उसमें संलिप्त नेताओं, मंत्रियों, कानून व्यवस्था के कर्मचारियों की घूसखोरी, चापलूसी व देशद्रोही प्रवृत्ति को दर्शाया गया है। साथ ही देश में नशाखोरी, वेश्यावृत्ति आदि को बढ़ावा देने वाले मंत्रियों के काले कारनामों का भी पर्दाफाश किया गया है तथा यह भी दिखाया गया है कि नेता व मंत्री अपने गुनाहों की सजा अपने निर्दोष वफादार कर्मचारियों के सिर मढ़ देते हैं।

'कमीज' शीर्षक कहानी में उन पूँजीपतियों व उच्च-पदस्थ अधिकारियों की मनोवृत्ति को उजागर किया गया है, जो यह नहीं चाहते कि जिस प्रकार की सुख-सुविधाओं को वे लोग भोग रहे हैं, वैसी सुविधाएं उनके अधीन कार्यरत कर्मचारियों के पास हों।

'बवंडर बाहर-भीतर' कहानी में हरनाम की पुत्री सोनिया के माध्यम से विदेशों की ओर गमन करने वाली शिक्षित नवयुवतियों का चित्रण किया गया है, जिन्हें दलालों द्वारा

विदेशी नवयुवकों से शादी कराने, विदेश में रहने व बेहतर भविष्य का प्रलोभन दिया जाता है और विवाहोपरांत कुछ समय बाद विदेशों में उन्हें वेश्यावृत्ति के धंधे में ढ़केल दिया जाता है। इस संग्रह की कहानियों के विषय में डा. कमलकिशोर गोयनका कहते हैं- **"इस संग्रह की कहानियाँ मुख्यत: मॉरिशस की राजनीति, समाज, धर्म, संस्कृति आदि के जीवंत सत्यों का उद्घाटन करती हैं। मॉरिशस की स्वतन्त्रता के बाद वहाँ के समाज में राजनेताओं का जो पतन हुआ, तस्करी, भ्रष्टाचार और देशद्रोहिता जिस रूप में पनपी है, आदमी आदमी के रिश्तों में जो गिरावट आयी है, स्त्री के शोषण की जो परिस्थितियाँ बनी हुई हैं, उन्हें लेखक ने सजीवता के साथ इन कहानियों में प्रस्तुत किया है। ये कहानियाँ ऐसे बवंडर को उजागर करती हैं जो मॉरिशस के जन-जीवन को अंदर-बाहर दोनों ओर से मथ रहा है।"**[42]

नाटक विधा:

1) **'विरोध'(1977):** 'विरोध' अनत जी द्वारा रचित प्रथम प्रकाशित नाटक है। यह सन् 1977 ई॰ में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें तीन अंक व तीन दृश्य हैं। किन्तु प्रत्येक अंक के दृश्य वही हैं, सिर्फ दृश्य-विधान में सुबह, दोपहर, शाम का विभाजन करके दृश्यबन्ध तैयार किया गया है। नाटक के प्रमुख पात्रों में- **सिंहल, केतु, मासा (बेरोजगार नवयुवक), छैला (गाँव का प्रतिनिधि), अहमाथे (नेता/मंत्री), सैलानी, अखबार वाला, भिखारी, पागल, पहला मजदूर, दूसरा मजदूर, पहला सिपाही व दूसरा सिपाही** आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

प्रस्तुत नाटक में सिंहल, केतु और मासा के माध्यम से देश के बेरोजगार नवयुवकों की बेकारी, गरीबी, भुखमरी व आर्थिक तंगी की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। भिखारी व पागल के माध्यम से समाज की विसंगतियों एवं समस्याओं पर तीखा व्यंग्य किया गया है। अहमाथे के माध्यम से उन नेताओं व मंत्रियों के क्रिया-कलापों व गतिविधियों तथा वादाखिलाफी प्रवृत्तियों का पर्दाफाश किया गया है,जो चुनाव के दौरान आमजनता की समस्याओं को दूर करने का वादा करके जनता से वोट मांगते हैं और चुनाव जीतने पर अपने क्षेत्रीय जनता व उनकी समस्याओं से बेखबर हो जाते हैं। जनता द्वारा याद दिलाने पर भी वे उसे पहचानने से इंकार कर देते हैं या गलत पहचान बताते हैं। और देश की समस्याओं से बेखबर रहकर विदेशों से संपर्क साधने में मशगूल रहते हैं। उनका अधिकांश समय विदेशी दौरों में ही बीतता है तथा वे विदेशी दौरों को ही महत्व देते हैं। छैला, मासा व सिंहल के माध्यम से उन युवाओं का चित्रण किया गया है, जो आरंभ में देश में व्याप्त बेरोजगारी, महँगाई आदि को लेकर सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हैं। किन्तु सत्ता पक्ष द्वारा प्रलोभन दिए जाने पर उनका आंदोलन व विरोध प्रदर्शन शांत व निष्क्रिय हो जाता है। अहमाथे द्वारा मासा, सिंहल व छैला को नौकरी देकर विरोध को शांत कर दिया जाता है। क्योंकि अहमाथे भौंकने वाले कुत्तों के मुँह में नौकरी स्वरूप हड्डी डाल देता है जिससे उनका भूँकना बंद हो जाता है और फिर सरकार के प्रति किया जाने वाला विरोध शांत हो जाता है। इस संदर्भ में अनत जी कहते हैं- **"व्यवस्था द्वारा दिए हुए इस जहर को पीकर युवा-मानसिकता भी उस व्यक्तिवाद को पहुँच गयी है,जहाँ निजी स्वार्थ के लिए सब कुछ जायज है। यही वजह है कि आज इस देश में कोई सही आंदोलन पैदा नहीं हो पा रहा है।"**[43]

रंगमंचीयता की दृष्टि से 'विरोध' एक सफल नाटक है। नाटकीय तत्वों के साथ-साथ इसमें हास्य का पुट भी विद्यमान है, जो इसे सुग्राह्य बनाता है जिसके कारण यह

मॉरिशस के साथ-साथ भारत में भी मंचित किया गया है जिसमें लखनऊ का मंचन सबसे अधिक सराहनीय रहा।

2) 'रोक दो कान्हा' (1986): 'रोकदो कान्हा' नाटक सन् 1986 ई॰ में किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत नाटक में पौराणिक आख्यान महाभारत की कथा,विशेषकर कुरुक्षेत्र के युद्ध की विभीषिका को आधार बनाकर द्वितीय विश्व-युद्ध की विभीषिका, त्रासदी, भय, आतंक, अमानवीयता एवं बर्बरता का पर्दाफाश किया गया है। साथ ही इसमें युद्ध के समय एवं युद्धोपरांत स्थितियों, परिस्थितियों एवं मन:स्थितियों पर पड़ने वाले उनके प्रभावों का भी चित्रण किया गया है तथा छीजती हुई मनुष्यता व संवेदनहीनता पर प्रहार किया गया है। टूटती हुई मर्यादाएँ, बढ़ती अविश्वसनीयता एवं खंडित रिश्तों का सजीव अंकन किया गया है। नाटक के प्रमुख पात्रों में- युयुत्सु, अभिमन्यु, दुर्योधन, द्रोणाचार्य, गोकुलवासी, युधिष्ठिर, उत्तरा, सुभद्रा, पहला सैनिक, दूसरा सैनिक, तीसरा सैनिक तथा अस्त्रपति के नाम लिए जा सकते हैं। अनत जी द्वारा रचित यह नाटक धर्मवीर भारती द्वारा रचित गीतिनाट्य 'अंधायुग' से भावसाम्य रखता है।

3) 'देख कबीरा हाँसी'(1995): 'देख कबीरा हाँसी' नामक नाटक सन् 1995 ई॰ में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। यह नाटक दो दृश्यों में विभक्त है।इसके प्रमुख पात्रों में- राजनायक, राजसचिव, राजरक्षक, राजगुरु, राजनायिका, राजसुंदरी, युवक, भिखारी, चोर, व्यापारी व दर्शकगणआदि हैं। इसमें युवक, भिखारी व दर्शकगण के माध्यम से मॉरिशसीय समाज में व्याप्त विसंगतियों, भूख, गरीबी, बेरोजगारी व बेकारी आदि का यथार्थपरक अंकन किया गया है। साथ ही सरकार के अधीन कार्यरत कर्मचारियों,यथा- राजसचिव, राजरक्षक, राजगुरु आदि की घूसखोरी, चापलूस प्रवृत्ति व

धांधलेबाजी आदि का चित्रण किया गया है। इस नाटक में लेखक ने इन्हीं सत्तासीन बिचौलियों के कारनामों का जिक्र करते हुए यह दर्शाने का प्रयास किया है कि सरकार व आम जनता के बीच जो अलगाव झलकता है या सरकार के प्रति जनता में जो असंतोष व विद्रोह की भावना है,उसके मूल में बिचौलियों द्वारा किए गए गैर-कानूनी व अनैतिक कृत्य हैं। ये बिचौलिये आमजनता के दु:ख-दर्द को, उनकी समस्याओं को सरकार तक नहीं पहुँचने देते हैं और न ही प्रत्यक्ष रूप से जनता व सरकार का आमना-सामना होने देते हैं।

वे उन्हीं लोगों को सरकार के प्रतिनिधि नेता व मंत्री से मिलने देते हैं, जो उन्हें तोहफे स्वरूप महँगी-से-महँगी चीजें प्रदान करते हैं। इस कारण आमजनता नेता व मंत्रियों से प्रत्यक्षत: नहीं मिल पाती,उन्हें सिर्फ झूठे आश्वासन दिए जाते हैं जबकि धनवान व्यक्ति को तुरंत ही मिलने दिया जाता है। इन बिचौलियों की साठ-गाँठ चोर, पुलिस, भिखारी व मंत्री सभी से रहती है। ये समय-समय पर इन सभी से अपना काम निकालते रहते हैं। यद्यपि यह समस्याप्रधान सामाजिक व राजनीतिक नाटक है फिर भी इसमें हास्य-व्यंग्य का पुट विद्यमान है।

संपादित ग्रंथ:

अभिमन्यु अनत ने साहित्य की विविध विधाओं में लेखनी चलाने के साथ-साथ पर्याप्त मात्रा में सम्पादन कार्य भी किया है। इनके द्वारा संपादित पुस्तकों के नाम निम्नवत् हैं-

1) **'मॉरिशस की हिन्दी कहानी'(1976):** अनत जी द्वारा संपादित 'मॉरिशस की हिन्दी कहानी' सन् 1976 ई॰ में महात्मा गाँधी संस्थान, मोका से प्रकाशित हुई है। इस संकलन में कुल 12 कहानियाँ संकलित हैं। इसमें संकलित कहानी एवं कहानीकरों के नाम निम्नवत् हैं-

- अंधेरी सुरंग (रामदेव धुरंधर)
- ओवर टाइम (कृष्ण लाल बिहारी)
- A. K. सीस सां (पुष्पा बम्मा)
- स्याही (मोहनलाल दयाल)
- नया सफर सहने का (पूजानन्द नेमा)
- तूफान के बाद (महेश रामजियावान)
- धुएँ की उठती लकीर (हेमराज सुंदर)
- ट्यूशन फीस (नारायणपत देसाई)
- अंतिम मिनट (अस्तानन्द सदासिंह)
- पश्चाताप (सोनालाल नेमधारी)
- अनुबंधन (भानुमती नागदान)
- जहर और दवा (अभिमन्यु अनत)

इस संग्रह में संकलित कहानियों के वैशिष्ट्य को उद्घाटित करते हुए डा. के हजारी सिंह पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं- **"ये कहानियाँ अपनी खामियाँ और खूबियाँ लिए हुए मॉरिशस के जनजीवन की उन समस्याओं को सामने प्रस्तुत करती हैं,जो केवल यहीं तक सीमित नहीं हैं।"[44]**

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये कहानियाँ भले ही मॉरिशसीय कथाकारों द्वारा लिखी गयी हों,किन्तु इनमें जिन समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है वे समस्याएँ मात्र मॉरिशसीय समाज की नहीं हैं अपितु वे विश्वव्यापी समस्याएँ हैं। इसी वजह से ये कहानियाँ हर वर्ग के पाठकों का ध्यान आकृष्ट करती हैं।

2) **'मॉरिशस की हिन्दी कहानियाँ'(1987):** 'मॉरिशस कीहिन्दी कहानियाँ' सन् 1987 ई० में महात्मा गाँधी संस्थान, मोका से प्रकाशित हुई। इसमें कुल 15 कहानियाँ संकलित हैं। इसमें संकलित कहानी एवं कहानीकारों के नाम निम्नवत् हैं-

- विष मंथन (रामदेव धुरंधर)

- चक्कर (महेश रामजियावान)
- एम॰बी॰ई॰ (भानुमती नागदान)
- मिन्नत (साहेबा बीबी फर्जली)
- हिन्दी अध्यापक (बीरसेन जागासिंह)
- वह चालू थी (पूजानन्द नेमा)
- स्कूल नहीं, कालिज (लक्ष्मी प्रसाद रामयाद)
- कनफेशन (लोचन विदेशी)
- समस्या (सोनालाल नेमधारी)
- फिसलन (पुष्पा बम्मा)
- गुरु जी (दीपचंद बिहारी)
- चाहे-अनचाहे (जय जीउत)
- मौत का सौदागर (मुनीश्वर लाल चिंतामणि)
- बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं (ठाकुरदत्त पाण्डेय)
- टूटा पहिया (अभिमन्यु अनत)

इस संग्रह में संपादित कहानियों के वैशिष्ट्य के संदर्भ में अभिमन्यु अनत लिखते हैं- **"इन कहानियों में भी अस्मिता की लड़ाई है। अधिकार और इज्जत के लिए छटपटाहट है और नहीं कहने की शक्ति है।... सभी कहानियों की अपनी विशेषता है- वह यह की हर कहानी मॉरिशसीय जन-जीवन के साहस और संघर्ष को रेखांकित करती हुई यहाँ के विघटन, लिजलिजेपन और टूटन की ओर भी उतनी ही ईमानदारी के साथ संकेत करती है।"[45]**

3) **'मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि' (1988):** 'मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि'सन् 1988 ई॰ में महात्मा गाँधी संस्थान, मोका से प्रकाशित हुई। इस संकलन में मॉरिशस के नौ हिन्दी

कवियों की कविताओं को संपादित किया गया है। इसमें कुल 102 कविताएं संकलित हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं-

- ‘कैंसर का मरीज’, ‘तृतीय विश्व-युद्ध’, ‘स्कूल से साधना तक’, ‘कटनी’, ‘तीसरी दुनिया की चाल’, ‘दूर भी है’, ‘सच्चाई की तलाश’, ‘आज’, ‘कोष्ठक’, ‘अनजान डर’, ‘टेलीफोन’ **(लेखक: सोमदत्त बखौरी)।**
- ‘जो गैर हाजिर है’, ‘नाइंतिहा सफर’, ‘अवमूल्यन के बाद’, ‘चुप्पी की आवाज’, ‘सौदा’, ‘गुरुमंत्र’, ‘गदहपचीसी’, ‘आह का असर’, ‘सुबह की धुन्ध’, ‘अधिकार और भोग’, ‘पीठ’, ‘कंधों का सफर’, ‘नागरी-नियति’ **(लेखक: पूजानन्द नेमा)।**
- ‘सर्वहारा’, ‘एक लघु ज्वालामुखी’, ‘अपराजित’, ‘उपेक्षित आदमी’, ‘प्रतिबंध कैसा?’, ‘मैंने शबनम की आवाज सुनी है’, ‘सम्पूर्ण मॉरिशस की आत्मा एक है’, ‘एक अनुभूति’, ‘अकेला और असुरक्षित’, ‘एहसास’, ‘प्रजा’, ‘एक पीड़ा’ **(लेखक: हेमराज सुंदर)।**
- ‘चक्कर’, ‘दंभ’, ‘पर आखिर क्यों?’, ‘दस्तक’, ‘आक्रांत’, ‘चढ़ावा’, ‘धार’, ‘कटी-कटी साँसे’, ‘चेतना’, ‘जाने क्यों?’, ‘क्षणिकाएँ’ **(लेखक: सुमति बुधन)।**
- ‘चीख’, ‘चक्रव्यूह’, ‘इतिहास क्या साक्षी है?’, ‘काँटा’, ‘पुजारी’, ‘कसावट’, ‘संध्या’, ‘साँझ का पथिक’ **(लेखक: हरिनारायण सीता)।**

- ‘मत’, ‘कटा पंख’, ‘चिनगारी’, ‘मेरी सीमा’, ‘थका यात्री’, ‘तीर्थ यात्रा’, ‘मॉरिस्यानिज़्म’, ‘मातृभाषा’, ‘गुलाम’, ‘रूटीन’, ‘कर्णवादी’, ‘त्राहि’, ‘क्रूर’, ‘समझौता’, ‘विरासत’ **(लेखक: सूर्यदेव सिबरत)।**
- ‘अपाहिज’, ‘मार्गदर्शन’, ‘प्रभाती’, ‘पानी में’, ‘त्रिशंकु’, ‘भिखमंगे’, ‘भटकन’, ‘श्रेणीहीन’, ‘गाँधी बाबा को’, ‘अपना-अपना सूरज’, ‘एक चिथड़ा सुख’, ‘मेरे अनुबंधन’ **(लेखक: महेश रामजियावान)।**
- ‘फूलों की करम’, ‘अपहरण’, ‘आधी रात को’, ‘किसी मोड पर’, ‘मैं कुछ नहीं’, ‘हिन्दी’, ‘कशिश’, ‘साजिश’, ‘डसन आस-पास की’ **(लेखक: मुकेश जीबोध)।**
- ‘नागफनी में उलझी साँसे 1’, ‘यहाँ आदमी के पाँवों में ऊँची एड़ी के जूते हैं’, ‘नागफनी में उलझी साँसे 2’, ‘लक्ष्मी का प्रश्न’, ‘कैक्टस के दाँत’, ‘उत्तरों का प्रश्न’, ‘इंकार’, ‘एक प्रेमगीत’, ‘गूँगापन’, ‘एक प्रश्न’, ‘इतिहास की अस्मिता’, ‘गणित सही रहा’ **(लेखक: अभिमन्यु अनत)।**

जीवनी विधा:

1) **‘जन आंदोलन के प्रणेता: प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल’:** यहअनत जी द्वारा रचित जीवनीपरक रचना है। यह सन् 1987 ई॰ में महात्मा गांधी संस्थान, मॉरिशस से प्रकाशित हुआ। यह पुस्तक नौ खंडों में विभक्त है, जिनके नाम इस प्रकार हैं- प्रज्वलित प्रवेश, प्रेरणा और प्रघोष, प्रचार-सभा, प्रणेय-प्रणाली, प्रतप्त-प्रहरी, प्रचित-प्रवचन,

प्रवाह-प्रदान, प्रसार-प्रतिध्वनि और प्रकाश प्रखरता आदि। इसमें मॉरिशस के बहुचर्चित समाज सुधारक, चिंतनशील मनीषी, साहित्यकार, क्रांतिकारी नेता व ओजस्वी व्यक्तित्व से सम्पन्न पंडित वासुदेव विष्णुदयाल के व्यक्तित्व एवं उनके सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक अवदान को विस्तारपूर्वक विवेचित किया गया है। साथ ही विष्णुदयाल द्वारा चलाये गए 'जन आंदोलन' के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत मॉरिशस के सबसे प्रमुख कथाकार रहे हैं। उन्होंने मॉरिशस में रहते हुए भी हिन्दी भाषा व साहित्य के विकास के लिए भगीरथ प्रयास किया है। अनत जी के व्यक्तित्व एवं उनकी रचनाशीलता को प्रभावित करने में उनके युगीन परिवेश का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसके साथ ही देश-विदेश के साहित्यकारों, क्रांतिकारी नेताओं व समाज सुधारकों की विचारधाराओं ने भी अनत जी के व्यक्तित्व और रचनाकर्म को प्रभावित किया है। जिसके फलस्वरूप ही अनत जी एक सशक्त रचनाकार के रूप में अपनी पैठ बनाते हैं तथा उत्तम कोटि का साहित्य-सृजन करते हुए हिन्दी भाषा व साहित्य को वैश्विक धरातल प्रदान करते हैं। इसके साथ ही मॉरिशस तथा मॉरिशस से इतर अन्य देशों के पाठकों में भी विशेषकर भारतीय पाठकों में भी ख़ासी लोकप्रियता हासिल करते हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी, संवेदनशील हृदय व पैनी दृष्टि से सम्पन्न अनत जी ने अपनी रचनाओं में अपने समय व समाज का यथार्थ चित्र खींचा है तथा विविध विधाओं में साहित्य-सृजन करके अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया है। इन्होंने मॉरिशसीय समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन्होंने वस्तु

और शिल्प दोनों ही दृष्टियों मॉरिशसीय हिन्दी कथा साहित्य को नवीनता प्रदान कर हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में अपनी अहम् भूमिका का निर्वाह किया।

संदर्भ-सूची:

1. डॉ. मालती सारस्वत, माध्यमिक शिक्षा मनोविज्ञान, पृ- 124
2. डॉ. रामपाल सिंह, अधिगम का मनोविज्ञान, पृ- 220
3. डॉ. मालती सारस्वत, माध्यमिक शिक्षा मनोविज्ञान, पृ- 125
4. वही, पृ- 125
5. डॉ. कमलकिशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत: एक बातचीत, पृ- 30
6. वही, पृ- 27
7. वही, पृ- 28
8. वही, पृ- 8
9. वही, पृ- 35
10. वही, पृ- 35
11. वही, पृ- 32-33
12. वही, पृ- 33
13. वही, पृ- 43
14. वही, पृ- 42-43
15. वही, पृ- 43
16. वही, पृ- 110
17. वही, पृ- 19
18. वही, पृ- 18-19
19. वही, पृ- 2-3
20. वही, पृ- 40
21. वही, पृ- 45

22. वही, पृ- 4

23. वही, पृ- 3

24. वही, पृ- 15

25. वही, पृ- 9

26. वही, पृ- 117

27. वही, पृ- 110

28. वही, पृ- 7-8

29. अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, आवरण पृष्ठ से

30. डॉ. श्यामधर तिवारी, मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, पृ- 153

31. डॉ. कमलकिशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत: एक बातचीत, पृ- 81-82

32. वही, पृ- 91

33. वही, पृ- 97-98

34. वही, पृ- 99

35. वही, पृ- 103

36. वही, पृ- 102-103

37. डॉ. कमलकिशोर गोयनका, मॉरिशस की हिन्दी कहानियाँ, भूमिका से पृ- 29

38. अभिमन्यु अनत, वह बीच का आदमी, फ्लैप से

39. अभिमन्यु अनत, एक थाली समंदर, भूमिका से

40. अभिमन्यु अनत, अभिमन्यु अनत की आरंभिक कहानियाँ, भूमिका से

41. अभिमन्यु अनत, अब कल आएगा यमराज, भूमिका से पृ- 3-4

42. अभिमन्यु अनत, बवंडर बाहर-भीतर, भूमिका से पृ- 6

43. डॉ. कमलकिशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत: एक बातचीत, पृ- 105

44. संपा-अभिमन्यु अनत, मॉरिशस की हिन्दी कहानी, भूमिका से

45. संपा-अभिमन्यु अनत, मॉरिशसीय हिन्दी कहानियाँ, भूमिका से

द्वितीय अध्याय

मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय

क- मॉरिशस: इतिहास और भूगोल की अंतर्यात्रा

किसी भी देश के साहित्य को जानने से पूर्व उस देश के इतिहास एवं भूगोल को जानना बहुत ही आवश्यक हो जाता है क्योंकि कोई भी संवेदनशील साहित्यकार अपने देश और समाज तथा वहाँ की परिस्थितियों से प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकता है। अभिमन्यु अनत के साहित्य और उनकी सृजनशीलता को समझने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि पहले उनके देश मॉरिशस की ऐतिहासिक घटनाओं एवं भौगोलिक परिदृश्यों की जानकारी हो। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत अंश को दो उपखंडों में विभक्त किया गया है-

1) मॉरिशस का इतिहास
2) मॉरिशस की भौगोलिक स्थिति

1) मॉरिशस का इतिहास

किसी भी देश के इतिहास को जाने बगैर उसके वर्तमान स्वरूप को नहीं समझा जा सकता है। हिन्द महासागर का 'चमकदार मोती' कहा जाने वाला द्वीप मॉरिशस चार सौ वर्षों से आबाद है। उपनिवेश के दंश को झेलता हुआ यह देश 12 मार्च 1968 ई. को आजाद हुआ। 1992 ई. में इसे राष्ट्रकुल के तहत गणराज्य घोषित किया गया। मॉरिशस के इतिहास का उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"गणराज्य मॉरिशस का इतिहास बहुत पुराना नहीं है जैसा भारत, चीन अथवा ब्रिटेन। हमारे इतिहास का प्रारम्भ सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगाली नाविकों के आगमन से हुआ बताया जाता है। किन्तु उनके गमन के**

बाद यह द्वीप डच, फ्रेंच तथा अँग्रेज़ उपनिवेशवादियों द्वारा आबाद एवं शासित रहा। 1968 ई. में मॉरिशस आजाद हुआ और 1992 में इसे गणराज्य घोषित किया गया।"[1]

मॉरिशस द्वीप की खोज तब हुई बतायी जाती है जब भारतीय व यूरोपीय शक्तियाँ अपने व्यापारिक हितों को ध्यान में रखकर व देशाटन के उद्देश्य से समुद्री यात्राएं करती थीं। उसी समुद्री यात्रा के दौरान भारतीय नाविकों को 'मॉरिशस द्वीप' की जानकारी मिली। किन्तु इस निर्जन द्वीप पर बसने एवं उस पर आधिपत्य जमाने का काम यूरोपियों ने किया। इस संबंध में मॉरिशसीय इतिहासकार प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"यद्यपि मॉरिशस द्वीप का उल्लेख प्लिनी और हेरोटोडस के ग्रन्थों में हुआ है, तो भी यह देश यूरोपीय जातियों के आगमन काल में ही आबाद हुआ था। भारतीय नाविकों को मासकारीन के तीनों द्वीपों- रीनियन, मॉरिशस और रोड्रीग का ज्ञान था।"[2]**

मॉरीशस द्वीप में समय-समय पर अनेक यूरोपीय शक्तियों(यथा: पुर्तगाली, डच, फ्रेंच, अँग्रेज़) का आगमन हुआ और उन्होंने वहाँ पर आधिपत्य जमाया। इन यूरोपीय शक्तियों ने अपने-अपने ढंग से मॉरिशस द्वीप को बसाने का काम किया तथा उसकी प्राकृतिक सम्पदा का दोहन किया।

अरबों का आगमन- ऐसा माना जाता है कि सातवीं शताब्दी में अरब के नाविकों का प्रवेश हिन्द महासागर में हो गया था और अपनी समुद्री यात्रा के दौरान ही उन्हें मॉरिशस द्वीप की जानकारी हुई। किन्तु कुछ विद्वानों का मत है कि सबसे पहले 1507 ई. में अरब व्यापारियों ने मॉरिशस द्वीप की खोज की और उन्होंने इसका नाम **'दीना अरोबी'** रखा था। अरब-व्यापारी इस द्वीप का उपयोग समुद्री यात्रा के दौरान आराम करने, जहाजों की

मरम्मत करने की दृष्टि से करते थे। वे लोग यह नहीं चाहते थे कि इस जगह की जानकारी किसी और को हो। इसलिए वे इस द्वीप के विषय में लोगों के मध्य गलत अफवाह फैला दिया कि इस द्वीप का किनारा बहुत छिछला है, जिसमें नावों के टूटने एवं डूबने का भय बना रहता है।

पुर्तगालियों का आगमन- मॉरिशसमें पुर्तगालियों के आगमन एवं उनके शासनकाल का उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"मॉरिशस का इतिहास तब शुरू हुआ बताया जाता है जब क्रिस्टफर कोलंबस नई दुनिया (अमेरिका) की खोज के लिए अपने प्राणों को संकट में डाल चुका था। उधर उस साहसी नाविक ने संसार को एक नई दुनिया तो दी थी, और इधर प्रख्यात पुर्तगाली नाविक वास्को-द-गामा ने उत्तमाशा अन्तरीप से होकर भारत जाने में सफलता पाई।..... कालीकट में पुर्तगालियों के पैर जमते ही भारतीयों पर अत्याचार शुरू हो गया। पुर्तगाली लोग तलवार के बल से भारतीयों को ईसाई बनाने लगे। इस प्रकार से गोवा में डच राज्य स्थापित हुआ और अलबूकर्क राज्यपाल बने। अलबूकर्क अपने देशवासियों के अत्याचार से परेशान हुए। उन्होंने पुर्तगाल के महाराज से सहायता माँगी। इसी सिलसिले में अलबूकर्क का चाचा 15 जहाजों का एक बेड़ा लेकर 12 मार्च सन् 1505 ई. को लिस्बन से रवाना हुआ।..... अलबूकर्क के चाचा के एक बेड़े का एक जहाज था- 'सांता-मारिया-द-सारा'। इस जहाज का कप्तान था-दोमिंगो फरनांडज।..... सन् 1510 ई. के ऐसे ही एक यात्रा के दौरान दोमिंगो फरनांडज के जहाज ने मॉरिशस को छू लिया था। उस समय के प्रथानुसार जहाज के कप्तान ने अपने नाम के आधार पर ही द्वीप का नामकरण किया। इसलिए मॉरिशस का पहला नाम 'दोमिंगो फरनांडज' रखा गया था।..... किन्तु पुर्तगाल के लोग इस द्वीप में बसने नहीं आए थे। उन्होंने मोज़ाम्बिक, गोवा, मलाबार तट, लंका, मलाका और इन्डोनेशिया में अपना पैर जमाया था। फिर भी उत्तमाशा अन्तरीप और एशियाई तटों के मध्य में स्थित, मॉरिशस**

का इस्तेमाल, वे अपने टूटे जहाजों की मरम्मत के लिए अथवा शत्रु-जहाजों से बचने के लिए अथवा सिर्फ मीठा पानी लेने के लिए करते थे।"[3]

मॉरिशस द्वीप लगभग एक शताब्दी तक पुर्तगालियों के आधिपत्य में रहा। पुर्तगालियों ने इस निर्जन टापू को अपना औपनिवेशिक स्थल तो नहीं बनाया किन्तु इस द्वीप पर उनका आवागमन बना रहा। जिसके फलस्वरूप बकरी, हिरण, बंदर, सूअर व अन्य पशुओं को वे इस द्वीप पर लाते हैं। पुर्तगालियों के समय में इस द्वीप में सिर्फ चूहों का राज था। चूहों के अलावा यहाँ पर डोडो पक्षी बहुतायत मात्रा में पाये जाते थे। इन पक्षियों को पुर्तगालियों ने 'राजहंस' समझा था।

डच शासन काल (1638-1710)

मॉरिशस में डचों का आगमन- मॉरिशस द्वीप पर डचों का आगमन 16वीं शती के उत्तरार्द्ध में होता है। डचों ने जावा, सुमात्रा, बोर्निया आदि देशों में अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ व समृद्ध करने के उद्देश्य से सन् 1595 ई. में 8 मालवाही जहाजों को पूर्वीय द्वीप की ओर भेजा। समुद्री यात्रा के दौरान दक्षिण-अफ्रीका के पास इनके आठों जहाज तितर-बितर हो गए। इनमें से 5 जहाज 'वायब्रंट वान वारविक' नामक कप्तान के नेतृत्व में दक्षिण-पूर्व की ओर चले गए। जिसके परिणामस्वरूप उनका परिचय मॉरिशस द्वीप से हुआ। नए द्वीप की खोज की खुशी में जहाज के कप्तान ने इस द्वीप का नाम अपने देश के राजकुमार के नाम पर 'मॉरिशस' रखा। राजकुमार का नाम -'मारिश-एव-नासो' था। तब से ही इस द्वीप का नया व दूसरा नाम 'मॉरिशस' पड़ गया।

डचों के आगमन के समय यह द्वीप बीहड़ जंगल था। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के बहुमूल्य वृक्ष भी पाये जाते थे, जिनमें-आबनूस, सागौन, पाल्म आदि प्रमुख थे। इसके अतिरिक्त मीठे पानी के झरने व सोते भी थे। उस समय मॉरिशस में चमगादड़ के साथ-साथ भारी-भरकम शरीर वाले कछुए भी पाये जाते थे। डचों के आगमन के समय यहाँ पर एक विशेषकर प्रकार का कबूतर, भूरे रंग के सुग्गे, भारतीय कौवे व 'डोडो' नामक विशालकाय पक्षी भी पाये जाते थे। इन डोडो पक्षियों को वे लोग न सिर्फ शिकार करके खाने लगे अपितु वे यूरोप में भी इनका निर्यात करने लगे।

सन् 1620 ई. में प्रसिद्ध डच नाविक पीटर बोथ का आगमन हुआ। उस समय तक मॉरिशस में न तो डचो के व्यावसायिक केंद्र थे और न ही डच शासन प्रणाली लागू थी। पीटरबोथ अपने औपनिवेशिक देश इन्डोनेशिया में डच व्यापारिक केंद्र की स्थापना करके पुन: 1626 ई. में मॉरिशस आया किन्तु उसका जहाज तूफान की चपेट में आकर पोर्टलुई बन्दरगाह पर ही डूब गया। इस घटना के कुछ वर्ष पश्चात् सन् 1638 ई. में डच इण्डिया कंपनी ने 'कौरनीलियस सीमोनेज गोयर' नामक व्यक्ति को मॉरिशस का गवर्नर नियुक्त किया। तत्कालीन गवर्नर 25 डचों की मदद से मॉरिशस पर कब्जा करके ग्रानपोर्ट में 6 मई 1638 ई. को प्रथम किले का निर्माण करवाया। डच इंडिया कंपनी मॉरिशस के नवनियुक्त गवर्नर को कुछ सुझाव देती है। जिसके बारे में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"डच इंडिया कंपनी ने गवर्नर गोयर को निम्नलिखित काम करने का आदेश दिया था-**

1- कीमती आबनूस लकड़ी का यूरोप निर्यात करना।

2- आमब्रेजी (तृणमणि) की खोज और उसका भी निर्यात करना।

3- तंबाकू और अनाजों की खेती करना, जिससे द्वीपवासी आत्मनिर्भर बन सकें।

4- पशु-पक्षी पालन करना, जिससे आगत डचों को माँस मिल सके।

5- द्वीप में खनिज पदार्थों की खोज करना।

6- वटेविया से डच रोगियों को यहाँ लाकर चिकित्सा करना।

7- ग्रान पोर्ट में एक किले का निर्माण करना।

8- अन्य जाति के जहाजों को द्वीप पर उतरने से रोकना।"[4]

डचों के आगमन के समय मॉरिशस में आबनूस की अधिकता थी। इस बहुमूल्य लकड़ी की यूरोप में माँग होने की वजह से डचों ने पर्याप्त मात्र में इसका निर्यात किया। इसके अतिरिक्त वे तृणमणि नामक सुगंधयुक्त वस्तु की खोज में थे, जो कस्तूरी के समान सुगंधित होती थी तथा जो ह्वेल नामक मछली से प्राप्त होती थी। डचों ने अपने औपनिवेशिक देश वटेविया से बहुत से कैदियों व दासों को इस द्वीप पर लाकर बसाया ताकि पर्याप्त मात्रा में मॉरिशस की बहुमूल्य लकड़ियों और अन्य बहुमूल्य वस्तुओं का निर्यात किया जा सके।

डचों के समय मॉरिशस में पहली बार सन् 1641 ई. में माडेगास्कर से काले दासों को लाया गया। ये दास तत्कालीन गवर्नर 'वान-देर-स्तैल' के नेतृत्व में आए थे। डचों द्वारा काले दासों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए जाते थे। डच शासनकाल में दासों की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"उन दिनों दासों की समुद्र-यात्रा बड़ी कष्ट-साध्य होती थी। उन्हें मछली के समान जहाज में भर दिया जाता था। कुछ दास तो तंग आकर समुद्र में कूद जाते थे।.....डच मालिक दासों के साथ बड़ा अत्याचार करते थे। इसलिए मौका पाते ही वे घने जंगलों में भाग जाते थे।..... एक बार एक दास को मक्खन और दूध की चोरी के इल्जाम में पकड़ा गया। उसे नंगा करके खंभे में बांध दिया गया। फिर एक काँटेदार चाबुक से मारा गया। यही नहीं, उसकी उखड़ी चमड़ी पर लाल मिर्चऔर सिरका मला गया। उन दिनों दासों को बड़ा कठोर दंड दिया जाता था। पुरुषों को क्रॉस में बाँधकर गर्म सड़ासी से उनके शरीर के मांसल भागों की चमड़ी उधेड़ी जाती थी। दिन-भर कष्ट देकर शाम को उसे फाँसी पर चढ़ा दिया जाता था।"[5]**

डच शासनकाल में सन 1645 ई. में मॉरिशस में प्रथम पक्की सड़क का निर्माण हुआ। जिसको आबनूस की लकड़ी ढोने के लिए फ्लाक त्रुदोदूस के समुद्र तट तक 3 मील लंबी सड़क बनाई गयी थी। दूसरी सड़क 1677 ई. में बनी। जिसकी लंबाई 10 मील थी। यह फ्लाक और त्रुदोदूस से होती हुई दक्षिणी-पूर्वी बड़ी नदी के मुहाने तक जाती है। डचों ने ग्रांपोर को मॉरिशस की प्रथम राजधानी बनाया। इनके समय में फ्लाक सबसे महत्वपूर्ण जिला माना जाता था। अपने व्यवसाय को सुचारु रूप से चलाने एवं उसको समुन्नत बनाने के लिए तत्कालीन डच गवर्नर हयूगो ने 1673 ई. में ग्रांपोर्ट में एक आरा यंत्र लगवाया। मॉरिशस में गन्ने की खेती को बढ़ावा देने हेतु तत्कालीन डच गवर्नर 'पोर'ने वटेविया से ईख के टुकड़े मंगवाया तथा गन्ने की खेती शुरू कारवाई किन्तु द्वीप में चूहों के आतंक के कारण इस व्यवसाय से अधिक लाभ नहीं मिल पाया। इन्हीं के शासनकाल में फ्लाक के 'बीलबाग' नामक गाँव में चीनी का बड़ा कारख़ाना खुला। डचों ने चीनी, तंबाकू, रुई की खेती, शराब आदि उद्योग को बढ़ावा दिया तथा नारंगी, नींबू, अनानास को अन्य देशों से लाकर मॉरिशस में लगाया। इसके साथ ही पशु-पालन को बढ़ावा देने हेतु अन्य देशों से बकरी, मुर्गी, सूअर आदि को आयातित किया गया। 1639 ई. में डचों ने मॉरीशस में वटेविया से हिरन लाकर छोड़ा।

मॉरिशस द्वीप में 1563 ई. से 1710 ई. तक डचों ने शासन किया किन्तु इस बीच वे तीन बार इस द्वीप को छोड़ चुके थे। चूहों, मक्खियों, बाढ़, तूफान व सूखा आदि के प्रकोप से त्रस्त होकर लगातार वे इस द्वीप पर टिक नहीं सके। अपने आलसी स्वभाव, अयोग्य गवर्नर, मजदूरों की कमी, पलायित दासों व लुटेरों का भय सदैव उन्हें आतंकित किए रहता था जिसकी वजह से 1710 ई. में वे इस टापू से सदैव के लिए चले गए। डच शासनकाल के महत्व को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से व्याख्यायित किया है।

माईकल हेरीसन के मतानुसार- **“पुर्तगालियों ने मॉरिशस की खोज करके ही त्याग दिया था और डच लोगों ने एक सौ वर्ष के पश्चात् इसे छोड़ा था।”[6]** एक अन्य इतिहासकर, इंग्राम लिखते हैं कि- **“डच लोगों ने अपना आबनूस का काम दो सौ वर्ष तक करने के पश्चात् मॉरिशस को छोड़ा था।”[7]** एक अन्य इतिहासकार ने डच शासनकाल का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि- **“डच लोगों ने पहला कार्य व्यापार, दूसरा निर्दयता, तीसरा निकृष्ट कार्य संप्रदाय रखा और संस्कृति कहीं नहीं। उन्होंने एवोनी लकड़ी का निर्यात भी खूब किया, डोडो पक्षी को नष्ट किया, पर जाते समय यहाँ कुछ जानवरों को छोड़ दिया था।”[8]**

डच लोग मॉरिशस को एक कृषि प्रधान उपनिवेश बनाना चाहते थे। इसके लिए वे आस-पास के देशों से कुछ दास भी लाए। किन्तु चूहों के आतंक व प्राकृतिक आपदा- बाढ़, सूखा, अकाल, तूफान आदि की वजह से तथा दासों के विद्रोही स्वभाव की वजह से वे अपने उद्देश्य में बहुत सफल नहीं हो पाए। सन् 1712 ई. में प्लेग के प्रकोप से तंग आकर उन्होंने मॉरिशस को सदैव के लिए त्याग दिया।

फ्रेंच शासन काल (1715 ई.-1810 ई.)

मॉरिशस में फ्रेंचों का आगमन- सन् 1715ई. में डचों के जाने के 3 वर्ष पश्चात् मॉरिशस द्वीप पर फ्रांसीसियों का आगमन हुआ। वे पहले से ही रीनियन द्वीप पर रह रहे थे। रीनियन से ही ‘जिफ्रेन’ नामक कप्तान ने ‘शासेर’ नामक जहाज से 20 सितंबर 1715 ई. को कुछ व्यक्तियों के सहयोग से मॉरिशस द्वीप पर कब्जा किया और द्वीप का नाम बदलकर ‘इल-द-फ्रांस’ (फ्रांस का द्वीप) रखा। फ्रेंचों के आगमन के 10-15 वर्ष बाद ही इस द्वीप को आबाद करने की योजनाएँ बनी। 21 अक्तूबर 1721 ई. को गार्नियें जिफुजरे नामक व्यक्ति का यहाँ आगमन हुआ। द्वीप का निरीक्षण करने के बाद जिफुजरे ने फ्रांस के महाराज को

मॉरिशस को आबाद करने का सुझाव दिया ताकि यह द्वीप समुद्री लुटेरों व अन्य जातियों के अधिकार में जाने से बच जाए। इसके बाद 25 दिसंबर 1721 ई. से इस द्वीप पर फ्रांसीसी शासन सुचारु रूप से संचालित होने लगा। मॉरिशस में सुव्यवस्थित तरीके से शासन करने हेतु फ्रांस के महाराज ने प्रथम राज्यपाल 'न्योन' की नियुक्ति की। तथा 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी' के कर्मचारियों को भेजा। राज्यपाल 'न्योन' ने कर्मचारियों की मदद से एक उच्च परिषद की स्थापना की, जिसके माध्यम से मॉरिशस का शासन संचालित होता था। राज्यपाल 'न्योन' के कार्यकाल में मोज़ाम्बिक, माडेगास्कर तथा पश्चिम अफ्रीका से काफी मात्रा में दासों को लाया गया। साथ ही रीनियन द्वीप से सेना के दो रेजीमेंट भी मँगवाए गए। फ्रेंचों के शासनकाल से ही मॉरिशस में लाए गए दासों को कोबर्ट द्वारा सन् 1685 में बनाए गए 'काला कानून' के तहत जीवन जीना पड़ता है। यह नियम समस्त फ्रांसीसी उपनिवेशों के दासों पर लागू था। इस नियम के तहत राज्यपाल पुरुष दास को दंडित कर सकता था, किन्तु स्त्री दास को नहीं। स्त्री को दंडित करने का अधिकार सिर्फ उसके पति को था। 'काला कानून' के तहत दासों को सुबह से शाम तक खेतों में ही काम करना पड़ता तथा उनको वहीं रहना पड़ता। खाने के लिए उनको प्रतिदिन कंद (मान्योक) व मकई दी जाती तथा सप्ताह में एक दिन माँस देने का विधान था। जो दास किसी कारणवश काम पर नहीं जाता तो उस दिन उसे खाना नहीं दिया जाता था सिर्फ वनस्पति और जल पीकर ही उसे दिन गुज़ारना पड़ता। सभी दासों को ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाती। इसी वजह से 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी' द्वारा इस टापू पर दो पादरियों की नियुक्ति की गयी।

'न्योन' के बाद 'ब्राउन' राज्यपाल बना। सदाचारी होने के नाते उसने मानवहित वाले कानून बनाए जिसकी वजह से उसे मुख्य अफसरों के विरोध का सामना करना पड़ा।

'ब्राउन' के पश्चात् 'मापें' मॉरिशस का गवर्नर बना। 1726-1735 ई. तक मापें ने देश की शासन व्यवस्था को संचालित किया। 'मापें' ने मॉरिशस की राजधानी 'व्ये-ग्रां-पोर' से हटाकर 'पोर्टलुई' को मॉरिशस की नयी राजधानी बनाया। इनके ही कार्यकाल में फ्रांसीसी रेजीमेंट ने पत्थर और लकड़ी के हस्त-शिल्प बनाने के संदर्भ में उपद्रव मचाया। उपद्रव को शांत करके मापें ने अपराधियों को दंड दिया। इन्हीं के कार्यकाल में 1732 ई. में 'कोसिग्नि' नामक इंजीनियर का आगमन हुआ। जिसने मॉरिशस का निरीक्षण करके एक नक्शा बनाया और मॉरिशस में एक सैनिक अड्डा बनाने का सुझाव दिया। सन् 1730 ई. के आस-पास मॉरिशस की आबादी का उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"सन् 1730 ई. में द्वीप की आबादी 160 थी। एक गवर्नर, तीस फ्रेंच जमींदार, बीस दास और प्रथम और द्वितीय रेजीमेंट के तिरपन-तिरपन स्वीस्टज सैनिक थे।"**[9]

सन् 1735 ई. में लाबुरदोने राज्यपाल के रूप में नियुक्त हुए। ये 1735 से 1747 ई. तक मॉरिशस के राज्यपाल पद पर कार्यरत रहे। लाबुरदोने महत्वाकाँक्षी शूरवीर, सच्चे देशभक्त व कुशल राजनीतिज्ञ थे। लाबुरदोने के प्रयत्नों से ही 'इल-द-फ्रांस' रहने योग्य देश बना। इनको ही मॉरिशस में फ्रेंच शासन की नींव पक्की करने का श्रेय दिया जाता है। राज्यपाल लाबुरदोने के कार्यों का उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"लाबुरदोने ने भारतीय शिल्पकारों की सहायता से, पोर्टलुई की राजधानी और उसके साथ-साथ सरकारी भवन, जहाजों के लिए बन्दरगाह, तोपखाना, दुर्ग, अस्पताल आदि का निर्माण करवाया था। उन्होंने टापू भर में चौड़ी सड़के बनवाई थीं। अपने निवास के लिए पाम्प्लेमूस के 'मोंप्लेजीर भवन' भी बनवाया था।**

कृषि की जड़ मजबूत करने के लिए ईख, तंबाकू, मक्की, मान्योक(कंद), तरह-तरह के फल और अनाज आदि की खेती बड़े पैमाने पर शुरू की थी। नील और कपास का धंधा भी शुरू किया था। चीनी के कारखानों के साथ-साथ लाबुरदोने ने नील और कपास के कारखाने भी स्थापित करवाये थे। .....नील और कपास के कारखानों की बनी वस्तुओं के लिए लाबुरदोने सूरत, मोच्छा, ओरमेज़ और यूरोप के बाजार प्राप्त करने में सफल हुए थे।"[10] सन् 1747 ई. में 'बार तेलमी दाविद(डेविड)' मॉरिशस के गवर्नर नियुक्त हुए। 1747 ई. से 1753 ई. तक मॉरिशस के राज्यपाल रहे। इन्होंने मॉरिशस में 'रेज्वी' नामक विशाल व भव्य भवन का निर्माण करवाया। कृषि उद्योग को बढ़ावा देने हेतु एक प्रयोगशाला की स्थापना की। चूना और पत्थर से निर्मित प्रथम भवन का निर्माण इन्हीं के शासनकाल में हुआ। तथा भारत से मैना पक्षी को लाया गया।

डेविड के बाद सन् 1753 ई. में 'दे-लोजिए-बुवेथ' मॉरिशस के राज्यपाल नियुक्त हुए। इन्होंने 1756 ई. तक मॉरिशस में शासन किया। इनके कार्यकाल में टापू का नक्शा बनाया गया तथा नदियों की लंबाई एवं पहाड़ों की ऊँचाई की माप ली गयी। जिससे जनसामान्य को द्वीप के बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी हो सके। बुवेथ के ही कार्यकाल में मॉरिशस में लौंग और जायफल की खेती की शुरुआत की गयी। चीनी के कारोबार में उन्नति हुई जिससे कंपनी को 9,00,000 (9 लाख) रुपये का मुनाफा हुआ।

सन् 1756 ई. में 'रेनो-मागों-देला-बिलबाग' मॉरिशस के गवर्नर नियुक्त हुए तथा 1759 ई. तक कार्यरत रहे। इनके शासनकाल में 'सीसेल्स' टापू पर कब्जा किया गया। साथ ही माडेगास्कर से गाय, बैल इत्यादि पालतू पशुओं को लाने की शुरुआत हुई। वनस्पतियों

के बगीचे का निर्माण हुआ। पाम्प्लेमूस का ईसाई चर्च बना तथा जानवरों के लिए 'फताक' नामक घास का रोपण किया गया। 'रेनो-मागों' के कार्यकाल में चीनी उत्पादन में गुणवत्ता आई।

सन् 1759 ई. में 'दे-फोश-बुशे' मॉरिशस के गवर्नर नियुक्त हुए। वे 1767 ई. तक कार्यरत रहे। 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी' की देखरेख में बुशे मॉरिशस के अंतिम गवर्नर थे। इनके कार्यकाल के दौरान फ्रांस और इंग्लैंड के मध्य युद्ध जारी था जिसके फलस्वरूप टापू की तमाम संपत्ति युद्ध क्षेत्र बनाने एवं जहाज की मरम्मत कराने में ही नष्ट हो गयी। कृषि की ओर विशेष ध्यान न देने के कारण फसल उत्पादन में भी कमी आई। इसी समय भारत में अंग्रेजों ने फ्रेंचों को परास्त करके अपना अधिकार जमा लिया। 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी' इस द्वीप को 2,50,000 रुपये में फ्रांस की सरकार को बेच दिया। जिसके फलस्वरूप मॉरिशस में राजसत्ता का आरंभ हो जाता है। इस समय द्वीप की आबादी 18000 के आस-पास थी, जिसमें 3000 यूरोपियन थे और 15000 के आस-पास काले गुलाम थे। उस समय मॉरिशस में 6400 बीघा जमीन पर कृषि होती थी।

फ्रेंच राजसत्ता का आरंभ- उस दौरान फ्रांस और इंग्लैंड के मध्य सात वर्ष तक युद्ध चला। युद्ध में पराजय के बाद 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी' फ्रांस सरकार के अधीन हो जाती है। तभी से मॉरिशस में राजसत्ता का आरंभ हो जाता है। राजसत्ता कायम होने के बाद मॉरिशस के द्वीप के प्रथम गवर्नर 'जान दानियल जुमा' नियुक्त हुए तथा 'पियेर प्वाव्र' प्रथम प्रशासक नियुक्त हुए। 'प्वाव्र' को रीनियन और मॉरिशस में सुगंधित पौधों के रोपण की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी थी। उन्होंने कीमती और शोभायुक्त वृक्षों का रोपण किया तथा पूर्वी देशों से

अनेक प्रकार के पौधे मँगवाकर मॉरिशस में लगवाया। मसाले, गोल मिर्च और सुगंधित पदार्थों की खेती का विस्तार किया। ब्राज़ील से 'आपाना' नामक वनस्पति मँगवाया। पोर्टलुई की मुख्य इमारतों का निर्माण करवाया। तथा सड़कों व गलियों को चौड़ी करवाया। पोर्टलुई में प्रथम छापाखाना खुला। वन संरक्षण हेतु कानून बनाए तथा पोर्टलुई बन्दरगाह की गहराई की सफाई की कारवाई।

सन् 1769 ई. में 'देरोश' मॉरिशस के गवर्नर नियुक्त हुए। इनके कार्यकाल(1769-1772) में अनेक सुधारपरक कार्य हुए। पहाड़ी के नीचे वृक्षारोपण किया गया। नवीन मार्गों का निर्माण हुआ। प्राचीन श्मशान भूमि का स्थानांतरण काशी नामक स्थान में किया गया। अन्य देशों के साथ व्यापार करने की योजना बनाई। पाम्प्लेमूस का प्रसिद्ध बगीचा देरोश के कार्यकाल में 'राजा का बाग' नाम से विख्यात था। 'प्वावने' नामक राजनीतिज्ञ व्यक्ति के द्वारा द्वीप में मसालों के पौधे लगाए गए।

सन् 1772 ई. में 'देतेरने' मॉरिशस के राज्यपाल नियुक्त हुए। 1776 ई. तक ये कार्यरत रहे। इनके शासनकाल में मॉरिशस की प्रगति हुई। तथा व्यापार में भी बढ़ोत्तरी हुई। सन् 1776 ई. से 1779 ई. तक 'दे-लाब्रियान' गवर्नर का पदभार ग्रहण किया। इन्होंने गवर्नर के लिए एक विशेष प्रकार के परिधान का सुझाव दिया। 1779 ई. से 1787 ई. तक 'दे-सूयाक' मॉरिशस के गवर्नर रहे। इनके कार्यकाल में टापू में शिरीष, रावेनाल, पाल्म और झावा वृक्षों का रोपण किया गया। सुयाक एक चतुर, दक्ष और राजकार्य में तत्पर व्यक्ति था जिसकी वजह से फ्रेंच सरकार उन्हें भारत में पांडिचेरी का राज्यपाल नियुक्त कर देती है। तत्पश्चात् 'दांत्रे कास्तो' गवर्नर नियुक्त हुए। इन्होंने 1787 ई. से 1789 ई. तक मॉरिशस के

गवर्नर का पदभार संभाला। 1789 ई. से 1790 ई. तक 'दे-कोनवे' का कार्यकाल रहता है। इनके शासन काल में मॉरिशस की जनता पर 'फ्रांस की जनक्रांति'(1789)का असर पड़ता है। जिसके परिणामस्वरूप 30 अप्रैल 1790 ई. में फ्रांस के पार्लियामेंट में मॉरिशस के दो प्रतिनिधियों को सदस्य बनाने का प्रस्ताव मंजूर कर लिया जाता है। और तभी से मॉरिशस में प्रजातांत्रिक शासन लागू हो जाता है। 1790 ई. से 1792 ई. तक 'दे-कोसिनी' ने मॉरिशस के गवर्नर का पदभार ग्रहण किया। इनके कार्यकाल में राजतंत्र और प्रजातन्त्र के समर्थकों के मध्य वैचारिक संघर्ष जारी था। इसी समय भारत से 'कौंट-माकने-मारा' नामक जंगी जहाज के अधिपति का आगमन मॉरिशस में हुआ। 'कौंट-माकने' राजतंत्र का समर्थक तथा प्रजातन्त्र का विरोधी था। प्रजातन्त्र के समर्थक उसके इस व्यवहार से क्षुब्ध होकर उसकी हत्या कर देते हैं। उसके पश्चात् उसके सिर को धड़ से अलग करके पूरे द्वीप में घुमाया जाता है। 'कौंट' की नृशंस हत्या के संबंध में पंडित आत्माराम विश्वनाथ लिखते हैं-

"राजा और प्रजा के युद्ध में प्रथम आहुति इस 'कौंट-माकने-मारा' की पड़ी।"[11]

1792 ई. से 1800 ई. तक 'कौंट मालार्तिक' मॉरिशस के राज्यपाल रहे। अपने कुशल नेतृत्व की वजह से ये द्वीप में शांति स्थापित करते हैं। प्रजातन्त्र के समर्थक होने के कारण फ्रांस की सरकार को गुलामों को आजाद करने का सलाह दिया। मालार्तिक के बाद 1803 में 'जनरल देकाँ' मॉरिशस के गवर्नर नियुक्त हुए। इनके कार्यकाल में मॉरिशस में न्यायमंदिर, पाठशाला, ग्रांडरिवर पर लटकता हुआ पुल तथा पोर्टलुई का नाम बदलकर 'पोर्ट नेपोलियन' रखा जाता है। देकां के कार्यकाल में फ्रेंचों व अंग्रेजों के मध्य 20 अगस्त 1810 ई. का माहेबर्ग का सागरीय युद्ध व 29 नवंबर 1810 ई. का मोताईलाँग का भूमि युद्ध हुआ। जिसमें अँग्रेजी सेना से परास्त होकर फ्रेंचों ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करके

उनसे संधि कर ली। और 3 दिसंबर 1810 ई. से मॉरिशस पर ब्रिटिश सत्ता कायम हो जाती है।

ब्रिटिश शासनकाल (1810-1968)

मॉरिशस में अंग्रेजों का आगमन- मॉरिशस में अँग्रेजी सत्ता की स्थापना का प्रमुख कारण समुद्री लुटेरों द्वारा अंग्रेजों के मालवाही जहाजों को नुकसान पहुँचाना था। हिन्द महासागर से गुजरने वाले ब्रिटिश मालवाही जहाजों को मॉरिशस के तट पर लूट लिया जाता था। इन मालवाही जहाजों को लुटवाने में तत्कालीन फ्रेंच गवर्नर 'देकां' का भी हाथ था। इस संदर्भ में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"गवर्नर देकां को द्वीप के नव-निर्माण के लिए अत्यधिक पैसों की जरूरत होती थी।..... द्वीप की रक्षा के लिए सैनिकों, नाविकों तथा सरकारी कर्मचारियों का वेतन भी जुटाना होता था।..... इन सब कार्यों के लिए धन की आवश्यकता होती थी। अत: फ्रेंच गवर्नर भी समुद्री लुटेरों को शत्रु जहाज लूटने संबंधी विशेष पत्र दिया करता था। रोबर्ट सूर्कूफ जिन्हें समुद्री लुटेरों का बादशाह कहा जाता था, इन्हीं लुटेरों का सरदार था।"**[12] समुद्री लुटेरों के आतंक से त्रस्त होकर 'ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी' मॉरिशस पर आधिपत्य जमाने की योजना बनाती है। परिणामस्वरूप ब्रिटिशों ने सन् 1809 ई. में 250 यूरोपीय सैनिकों व 200 भारतीय सैनिकों के सहयोग से पहले रोड्रीग द्वीप पर कब्जा किया। तत्पश्चात् 1810 ई. में रीनियन द्वीप पर अधिकार कर लिया। उसके बाद 20 अगस्त 1810 ई. को तत्कालीन फ्रेंच गवर्नर देकां और अंग्रेज़ सैनिकों के मध्य ग्रान-पोर्ट का सागरीय युद्ध हुआ। यह युद्ध 23,24व 25 अगस्त, 1810 ई. तक लगातार चलता रहा जिसमें अंग्रेजों की पराजय हुई। इस संदर्भ में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"इस युद्ध में अंग्रेजों की हार हुई। उनके बहुत से सैनिक मारे गए। नाविक और मल्लाह 3600 की संख्या में कैदी बने थे और सौ समुद्री और फौजी अफसर कैदी हो गये।"**[13] ग्रानपोर्ट के

युद्ध में पराजित अंग्रेजों ने ढाई-तीन महीने बाद पुन: द्वीप पर आक्रमण किया। इस बार वे रणनीति बनाकर, प्रचुर मात्रा में युद्ध सामग्री तथा तमाम सैनिकों के साथ आक्रमण करते हैं। अंग्रेजों की युद्ध सामग्री व सैन्य शक्ति के बारे में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"जब रोड्रीग द्वीप पर अंग्रेजों की सैन्य-शक्ति संगठित हो गयी, तब वह साठ युद्धपोतों की सहायता से इस द्वीप पर पुन: आक्रमण करने चले। कप्तान आलवरमार्ल बेरची के नेतृत्व में अनेक जहाज 29 नवंबर 1810 ई. को टापू के उत्तरी सागर में पहुँचे। उनके पास लगभग 23,590 सैनिक थे, जिनमें 8,740 भारतीय योद्धा थे।"[14]** ओबरक्रोंबी नामक सेनापति के नेतृत्व में अंग्रेजों ने सर्वप्रथम ग्रांबे पर अपने 1000 सैनिक उतारे तत्पश्चात्'पाम्प्लेमूस के पाउडर मील' नामक स्थान पर पड़ाव डाला। तीसरे दिन फ्रेंचों व अंग्रेजों के मध्य मोताईलाँग का घमासान युद्ध हुआ। चौथे दिन के युद्ध में अंग्रेजों ने पेचित रिव्येर(छोटी नदी) नामक स्थान पर आक्रमण किया तथा फ्रेंचों के छक्के छुड़ा दिए। तब तत्कालीन फ्रेंच गवर्नर 'देकां' अँग्रेजी सेनापति ओबरक्रोंबी के पास युद्ध समाप्त करने का संदेश भेजवाकर संधि का प्रस्ताव रखता है। दोनों सेनाओं के मध्य 2 दिसंबर 1810 ई. को संधि पत्र पर हस्ताक्षर करके युद्ध को समाप्त कर दिया गया और 3 दिसंबर 1810 ई. से मॉरिशस पर अंग्रेजों का आधिपत्य हो जाता है। दोनों सेनाओं के मध्य हुए समझौते में फ्रेंचों को इस द्वीप को छोड़ने के अलावा और किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई जाती है। क्योंकि जो संधि-पत्र तैयार किया गया था वह फ्रेंचों के अनुकूल था। संधि-पत्र की शर्तें इस प्रकार थीं- **"फ्रेंच सैनिक अपने शास्त्रास्त्रों के साथ अपनी सारी संपत्ति लेकर अँग्रेजी खर्च पर फ्रांस जा सकते थे। उन्हें कैदी नहीं समझा जाए। फ्रेंच प्रजा को अपना धर्म, अपने रीति-रिवाज, कायदे-कानून, अपनी संपत्ति अपने पास रखने का पूरा अधिकार था। किसी को कष्ट न हो, इसलिए उनको दो वर्ष की अवधि दी गयी थी, जिससे वे अपनी-अपनी अचल संपत्ति को बेंचकर स्वदेश (फ्रांस) लौट सकते थे।"[15]**

3 दिसंबर 1810 ई. से मॉरिशस में ब्रिटिश सत्ता कायम हो जाती है। तब फारकूहार नामक प्रथम अंग्रेज़ गवर्नर की नियुक्ति हुई। इनका कार्यकाल 1810 ई. से 1823 ई. तक रहा। इनके कार्यकाल में मॉरिशस में अनेक सुधारपरक कार्य हुए। द्वीप का नामकरण ‘इल-द-फ्रांस’ के स्थान पर डचों द्वारा दिए गए नाम ‘मॉरिशस’ को रखा गया। ‘पोर्ट नापोलेओ’ और ‘पोर्ट एम्पोरियल’ को क्रमश: ‘पोर्टलुई’ और ‘ग्रानपोर्ट’ नाम दिया गया। विजित फ्रांस प्रजा को बलपूर्वक अपने अधीन किया गया। 1811 ई. में एक बही खाता खोला गया तथा समस्त मॉरिशस निवासियों से उस पर हस्ताक्षर लेकर उनको जार्ज तृतीय के राजभक्त होने की शपथ दिलवायी गयी। इनके ही कार्यकाल में कर्नल ड्रेपर ने ‘मॉरिशस टर्फ क्लब’ की स्थापना की। तथा 25 जून 1812 ई. को द्वीप की प्रथम घुड़दौड़ हुई। 1816 ई. में तत्कालीन भारतीय गवर्नर से बातचीत करके भारतीय कैदियों को बुलवाकर मॉरिशस में सड़कों का निर्माण करवाया गया। मालवाही जहाजों के माध्यम से आने वाली बीमारियों को रोकने हेतु क्वारान्टाइन(बीमारग्रस्त यात्री जहाज को नजर बंद रखने की व्यवस्था) संबंधी कानून बनाए गए और कड़ाई से उन्हें लागू किया गया। सन् 1816 ई. में पोर्टलुई में भयंकर आग लग जाती है। पोर्टलुई के पुनर्निर्माण हेतु ‘काउंसिल द कोम्यून’ (जन परिषद) का गठन किया गया। फ्रेंच गवर्नर देकां द्वारा निर्मित ‘कोलोन्यल कालेज’ का नाम परिवर्तित करके ‘रायेल कालेज’ रखा गया। 1816 ई. में फारकूहार ने पोर्टलुई बन्दरगाह को अन्य जातियों के मालवाही जहाजों के आवागमन के लिए खोल दिया। इससे पहले पोर्टलुई बन्दरगाह पर सिर्फ यूरोपीय जातियों के मालवाही जहाजों के आवागमन के लिए छूट थी। फारकूहार के प्रयासों से ही द्वीप में गन्ने की खेती का विस्तार हुआ जिससे चीनी के उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई और मॉरिशस चीनी उद्योग के मामले में वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाता है। फरकूहार ने वन-रक्षा संबंधी कानून भी पारित किए। तथा टापू से दास-प्रथा को समाप्त करने हेतु सतत संघर्षशील रहे।

1823 ई. से 1828 ई. तक 'सर लाउरी काल' मॉरिशस के गवर्नर रहे। इन्होंने चीनी के कर को कम करवाया तथा फ्रेंच जमींदारों द्वारा मलगासी मजदूरों पर किए जाने वाले अत्याचारों की जाँच करवायी तथा दास-प्रथा को बंद कर देने का सुझाव दिया। सन् 1828 ई. से 1833 ई. तक 'चार्लस कोलविल' राज्यपाल पद पर आसीन रहे। इनके कार्यकाल में काले गुलामों के हितार्थ कानून बने तथा इंग्लैंड की सार्वभौम सरकार ने भी गुलामों को मुक्त करने और उनको समस्त सुविधाएं प्रदान करने का सुझाव दिया। मजदूरों की स्थिति की सही जानकारी हेतु 'मजदूर रक्षक' नियुक्त किए गए। 1833 ई. से 1840 ई. तक 'वैल्यम निकोले' गवर्नर रहे। इनके कार्यकाल में 1 अप्रैल 1835 ई. को दास-प्रथा की समाप्ति की घोषणा की गयी। दास-प्रथा की समाप्ति के बाद से ही मॉरिशस द्वीप पर अनुबंध के तहत भारतीय मजदूरों को ले जाने की परंपरा की शुरुआत हुई। 1840 ई. से 1842 ई. तक 'लिओनेल स्मिथ' गवर्नर पद पर रहे। इनके कार्यकाल में भारत से गिरमिटिया मजदूरों का आगमन सुचारु रूप से चालू था। 1842 ई. से 1849 ई. तक 'वैल्यम गोम' गवर्नर पद पर आसीन रहे। गोम के कार्यकाल में मद्रास व कलकत्ता के अलावा बम्बई बन्दरगाह से भी भारतीय कुलियों का आगमन जारी रहा। इसी समय मॉरीशस के अदालतों में अँग्रेजी भाषा को प्रवेश दिलाया गया। क्योंकि इससे पूर्व अदालतों में फ्रेंच भाषा का चलन था। अर्थात फ्रेंच राजकाज की भाषा थी। फ्रेंच भाषा के साथ-साथ फ्रेंच नियमों व क़ानूनों को भी अदालत से बाहिष्कृत किया गया। गोम के पश्चात 'जार्ज आंडरसन' गवर्नर पद पर आसीन हुए। सन् 1849 ई. से 1850 ई. तक इनका कार्यकाल रहा। इनके कार्यकाल में ही मॉरिशस में म्युनिसिपलिटी की नींव रखी गयी। आंडरसन की गतिविधियों का चित्रण अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यास 'और पसीना बहता रहा' में किया है। सन् 1851 ई. से 1857 ई. तक जेम्स हिगिनसन गवर्नर पद पर पदासीन हुए। इनके समय में मॉरिशस में अनेक जनहित के कार्य हुए तथा भारत से बहुतायत में कुलियों

का आगमन हुआ। द्वीप की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। सन् 1857 ई. से 1863 ई. तक 'वैल्यम स्टिवेनसन' के कार्यकाल में लांगरिज नामक इंजीनियर की मदद से मॉरिशस की भौगोलिक स्थिति का आकलन किया गया। तथा मॉरिशस में रेलमार्ग की नींव रखी गयी। पोर्टलुई में सुप्रसिद्ध फ्रेंच गवर्नर 'माहे लाबूर्दोने' की भव्य मूर्ति स्थापित की गयी। इनके कार्यकाल में भी भारत से गिरमिटिया मजदूरों का आगमन जारी था। साथ ही मजदूरों के प्रति किए गए अत्याचार की खबर भारत तक पहुँचने लगी थी।

सन् 1863 ई. से 1870 ई. तक 'हेनरी वार्कले' मॉरीशस के गवर्नर रहे। इनके शासनकाल में अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए। मॉरिशस के तटवर्ती इलाकों में रात्रि के समय जहाजों के आवागमन हेतु प्रकाश स्तम्भ का निर्माण किया गया। बोंबासे में मानसिक रोग से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए पागलखाना खुलवाया गया। 1867 में मलेरिया के प्रकोप से भारी तादाद में मृत्यु हुई जिसकी वजह से दूसरे श्मशान का निर्माण करवाया गया। पोर्टलुई में ड्रेनेज (मोरी योजना) की खुदाई शुरू हुई। भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के धर्मांतरण पर ज़ोर दिया गया तथा मजदूरों के लिए बने 'श्रमकानून' में संशोधन किया गया किन्तु उसमें मजदूरों के हितार्थ कोई कानून नहीं था। इस संबंध में प्लेवित्ज महोदय का कथन है- **"बार्कले-युग में ऐसे क्रूर कानून बने थे जो भारतीय मजदूरों के हित में नहीं थे। वे धर्मांध भी थे और उन्होंने बड़े पैमाने पर भारतीयों को ईसाई बनाने की योजना तैयार की थी। उनके कार्यकाल में साढ़े तीन लाख की आबादी में कोई तीस हजार मजदूरों को जेल में ठूँसा गया था।..... उन्होंने ऐसे कानून बनाए थे जो मजदूरों को प्राय: दास बना देता था।"**[16] वार्कले द्वारा सन् 1867 ई. में जो श्रम कानून बनाया गया उसकी कटु आलोचना करते हुए प्लेवित्ज महोदय कहते हैं- **"यह कानून इसलिए बनाया गया था जिससे पुराने आप्रवासियों का जीवन इतना दुखमय बना दिया जाएकि उनका बड़ा हिस्सा हताश होकर**

फिर से रियासत में आकर मालिकों की शर्तों पर काम करने पर मजबूर हो जाएँ।"[17] इनके कार्यकाल में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का शोषण अपनी पराकाष्ठा पर था।

सन् 1871 ई. से 1874 ई. तक 'सर आर्थर हामिलटन गार्डन' मॉरिशस के गवर्नर रहे। गार्डन एकमात्र ऐसे ब्रिटिश राज्यपाल थे, जिन्होंने भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की दयनीय दशा से द्रवित होकर फ्रेंच जमींदारों के खिलाफ इंग्लैंड की सरकार से शिकायत की जिसके पारिणामस्वरूप 1871 ई. में 'रायल कमीशन' का गठन होता है, जो मजदूरों की वास्तविक स्थिति की जाँच करती है। तथा मजदूरों मजदूरों के हितार्थ कुछ सुझाव भी देती है। मजदूरों का शुभचिंतक होने के नाते गार्डन को गोरे शासकों, फ्रेंच जमींदारों की अवहेलना का भी शिकार होना पड़ा।

सन् 1874 ई. से 1879 ई. तक 'सर आर्थर पायरी' गवर्नर पद पर रहे। इनके कार्यकाल में 'रायल कमीशन'की सिफारिश के परिणामस्वरूप एक नया कानून बना,'जिसे लेबर ला' अर्थात्'श्रम कानून' कहा जाता है। इसके अतिरिक्त रेलवे की दो नई शाखाएँ 'मोका' और 'सव्हान' में खुलती हैं। इन्हीं के कार्यकाल में 1877 में एक भयंकर तूफान आता है, जिससे फसलों एवं मकानों को काफी क्षति पहुँचती है।

सन् 1883 ई. से 1889 ई. तक 'सर जान पोप हेनिसी' मॉरिशस के राज्यपाल रहे। ये एक आयरिश व्यक्ति थे। इनके कार्यकाल में जनता के हितार्थ अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए। पोप हेनिसी के ही सत्प्रयत्नों से कौंसिल में जनप्रतिनिधि को प्रवेश मिलता है। जिसके परिणामस्वरूप 1885 ई. के चुनाव में दो जनप्रतिनिधि को स्थान दिया जाता है। हेनिसी

के ही प्रोत्साहन से मी. नेराक, मारते, सोजिए आदि व्यक्ति जनता की तरफ से गवर्नर से अपनी समस्या के बारे में बातचीत कर सकने में कामयाब हुए। प्रथम निर्वाचन 1886 ई. में हुआ जिसमें दो पक्ष थे- 1- राजपक्ष 2- प्रजापक्ष। राजपक्ष के समर्थक 'क्लिकफोर्ड लाइड' थे। राजपक्ष वाले यह नहीं चाहते थे कि आम जनता में राजनीतिक चेतना आए और वह कौंसिल में अपने प्रतिनिधि रखे। इसीलिए वे प्रजापक्ष के समर्थक हेनिसी पर राजद्रोह का झूठा आरोप लगाकर उन्हें गवर्नर पद से हटवा देते हैं। हेनिसी ने कृषि उत्पादन की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया। चाय उत्पादन के प्रति भी लोगों में रुचि जागृत की। मेर वाक्का का शुद्ध पानी द्वीप के चारों ओर पहुँचाया। हेनिसी के कार्यों से प्रसन्न होकर उनके सम्मानार्थ 1908 ई. में शहर की नाट्यशाला के सामने उनकी मूर्ति स्थापित की गयी।पोप हेनिसी के बाद 'सर चार्ल्स लीज' 1889 ई. से 1892 ई. तक राज्यपाल पद पर कार्यरत थे। इनके कार्यकाल में 29 अप्रैल 1892 को भयंकर तूफान आया। इस तूफान से बहुत अधिक मात्रा में नुकसान हुआ। जिसके बारे में पंडित आत्माराम विश्वनाथ लिखते हैं- **"इस ईश्वरीय क्रोध में 1100 मनुष्य मर गए। 2000 जख्मी हुए। 5000 बिना घर के हो गए और गन्ने की आधी खेती नष्ट हो गयी। 2,00,000 वृक्ष जड़ समेत उखड़कर गिर पड़े। तमाम टापू भर में मजूर कुलियों की एक भी झोपड़ी खड़ी न रही और सभी मकानों का कुछ-न कुछ नुकसान हुआ।..... शाम को पवन की शक्ति ऐसी प्रचंड थी कि एक घंटे में 121 मील की उसकी गति थी।"**[18] वे पुन: लिखते हैं- **"बोंबासें का चीनी बनाने का कारख़ाना टूट गया है और उसमें 100 मनुष्य मर गए हैं..... रेल की गाडियाँ उलटी पड़ी हैं।..... सबसे अधिक हानि हिंदुस्तानियों की ही हुई थी।..... सारे घरों पर मृत्यु सूचक काले पर्दे टंगे हुए हैं। बहुत से घरों की दीवारें टूट जाने से दस-दस बारह-बारह मनुष्यों का सारा कुटुंब कबीला उनके नीचे दबकर मर गया है।"**[19]

लीज के कार्यकाल के बाद 1892 ई. से 1897 ई. तक लीज के सेक्रेटेरी ई. एच. जरनिघाम गवर्नर पद पर कार्य किया। इनके शासन काल में शहर में भयंकर आग लग जाती है जिसमें सारी दुकानें जलकर राख हो जाती हैं तथा लाखों रुपये का नुकसान होता है। मॉरिशस में 1893 ई. में प्रथम विद्युत संदेश पहुँचाने वाली तार पड़ी। तथा ड्रेनेज की योजना को लोगों ने स्वीकार किया। सन् 1897 ई. से 1903 ई. तक 'सर चार्ल्स ब्रूस' मॉरिशस के राज्यपाल पद पर कार्यरत रहे। मॉरिशस द्वीप के हितार्थ इन्होंने कई प्रकार के कार्य किए। गन्ना ढ़ोने के लिए 'ट्राम वे' की शुरुआत हुई । 1891 ई. में 'प्लेग' का आक्रमण हुआ। साथ ही 'सुरा' नामक पशुओं की बीमारी का भी आक्रमण हुआ, जिसमें घोड़े, बैल, खच्चर आदि मवेशियों की मौत हुई। सन् 1901 ई. में राजा जार्ज और रानी मेरी का आगमन हुआ। उन्हीं के करकमलों द्वारा महारानी विक्टोरिया की भव्य मूर्ति का अनावरण किया गया। अपने कार्यकाल की समाप्ति के बाद भी ब्रूस मॉरिशस के हितार्थ प्रयत्नशील रहे। सन् 1903 ई. में 'सर कवेंडिश बाईल' ने गवर्नर का पदभार ग्रहण किया। इनके शासनकाल में मॉरिशस की आर्थिक स्थिति एकदम खराब थी। मॉरिशस की आर्थिक स्थिति की जाँच हेतु इंग्लैंड की सार्वभौम सरकार 1909 ई. में एक त्रि-सदस्यीय कमेटी मॉरिशस भेजती है, जो मॉरिशस की आर्थिक स्थिति व कारोबार के विषय में गहराई से छानबीन करती है। इसके साथ ही रेलवे विभाग एवं कस्टम विभाग की फिजूलखर्ची की जाँच कराई गयी। बाईल के ही कार्यकाल में कानून बनाने वाली सरकारी कौंसिल का निर्वाचन हुआ। तथा 1911 ई. का चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसमें दो पार्टियाँ थीं- 1-ओलीगार्क 2- डेमोक्रेट। 'ओलिगार्क पार्टी' फ्रेंच जमींदारों, पूँजीपतियों व धनाढ्य लोगों की पार्टी थी। ये लोग नहीं चाहते थे कि कौंसिल में आमजनता के प्रतिनिधि का चयन हो, इसके लिए वे 'डेमोक्रेट पार्टी' पर तरह-तरह के आरोप लगाकर तथा लोगों को डरा-धमकाकर चुनाव से हटाने का षडयंत्र रचते हैं। 'डेमोक्रेट पार्टी' की तरफ से 'डॉ. लोरॉ' ने प्रतिनिधित्व किया। लोरॉ ने ही

आम जनता में राजनीतिक चेतना का विस्तार करके उन्हें अपने हक के लिए संघर्षरत रहने की प्रेरणा दिया। सन् 1911 ई. के चुनाव में मॉरिशस की क्रियोल व मोज़ाम्बिक जनता ने मतदान किया किन्तु इस चुनाव में भारतीय कुलियों को कोई महत्व नहीं दिया गया। तात्पर्य यह कि इस चुनाव में उनकी भागीदारी नगण्य थी। 'बाईल' के ही कार्यकाल में 1909 ई. में 'रायल कमीशन' की जाँच से फ्रेंच पूँजीपतियों के काले कारनामे जनता के सम्मुख उजागर हुए जिसके परिणामस्वरूप जनता में गोरे मालिकों के प्रति विद्रोह की भावना घर कर जाती है। तथा भारत से 'शर्तबंद कुलियों' के आगमन पर रोक लग जाती है। तथा आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के हितार्थ नए कानून बने जिसमें उन्हें कई प्रकार की सहूलियतें प्रदान की गयीं। सन् 1911 ई. से 1916 ई. तक 'राबर्ट चांसलर' राज्यपाल रहे। भारतीय मजदूरों के हितार्थ 'रायल कमीशन' के सुझावों को लागू करने एवं उनको क्रियान्वित करने हेतु इनकी नियुक्ति हुई। इनके कार्यकाल में पानी की केनालें, हिन्दी सिविल विवाह की शुरुआत हुई तथा परस्पर सहकारी संस्थाओं का गठन हुआ। भारत से 'विल्बर फोर्स' नामक व्यक्ति का आगमन हुआ, जिन्होंने मॉरिशस स्थित भारतीय जनता की स्थिति का अवलोकन किया तथा मॉरिशस के भारतीयों के कार्यों की प्रशंसा की। 'विल्बर फोर्स' की सूचना के आधार पर मि. जयगोपाल नामक पंजाबी व्यक्ति का आगमन हुआ, जो रजिस्ट्रार के रूप में आए और 25-30 नई सहकारी संस्थाएं खोलीं। सन् 1914 ई. के प्रथम विश्वयुद्ध के समय मॉरिशस की सैन्य शक्ति ने भी उस युद्ध में सहभागिता की तथा मॉरिशस में 'स्वयं सेवक संघ' कि स्थापना हुई। सन् 1916 ई. में 'सर हेनरी हेसकेथ बेल' मॉरिशस के गवर्नर नियुक्त हुए। इनके कार्यकाल में जर्मन युद्ध की समाप्ति हुई, चीनी के दाम में गिरावट आई। तथा इंग्लैंड की सरकार की ओर से 'लेबर ला' से 'दंडात्मक भाग' को हटा देने का आदेश पारित हुआ। फ्रेंच प्रजा पुन: 'रेत्रो' अर्थात् प्रतिगमन की योजना

बनाती है, जिसका भारतीय प्रजा ने सख्त विरोध किया। भारतीयों की इस राजभक्ति से प्रसन्न होकर गवर्नर ने कौंसिल में दो नामजद भारतीयों को स्थान दिया। जिनके नाम बैरिस्टर रामखेलावन बुधन व डॉ. साकिर हैं। हेसकेथ बेल धार्मिक व उदार प्रवृत्ति के राज्यपाल थे। इसी वजह से वे भारतीयों के धार्मिक उत्सवों में भी भाग लेते थे।

मॉरिशस में भारतीयों का आगमन- मॉरिशस में भारतीयों का आगमन दास-प्रथा की समाप्ति के परिणामस्वरूप 'शर्तबंद प्रथा' के तहत सन् 1834 ई. से प्रारम्भ हुआ। जो सन् 1920 ई. तक जारी रहा। यद्यपि अँग्रेजी शासनकाल से पूर्व डचों व फ्रेंचों के समय में भी मॉरिशस में भारतीय कैदियों का आगमन हुआ है। भारतीयों की परिश्रमशीलता, लगन व धैर्य से प्रभावित होकर मॉरिशस की फ्रेंच सरकार अपने औपनिवेशक देश भारत से कुछ कैदियों को मॉरिशस बुलाकर उनसे सड़क निर्माण का काम करवाया। फ्रेंच शासनकाल में आने वाले अधिकांश भारतीय पांडिचेरी व चंद्रनगर के थे। जो व्यावसायिक वर्ग से जुड़े थे। कोई सुनार था, तो कोई लुहार था, कोई मोची था, तो कोई बढ़ई था। फ्रेंचों के समय में आने वाले भारतीयों के बारे में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"फ्रेंच काल में भारत के उन फ्रांसीसियों द्वारा शासित नगरों से काफी मात्रा में भारतीयों को यहाँ लाया गया था। ये भारतीय मजदूर विशेषत: चंद्रनगर और पांडिचेरी के थे। इनमें से कुछ मजदूरों ने जमीन में काम करने के बजाय, पोर्टलुई के बन्दरगाह का निर्माण किया था। इन भारतीयों में कुछ व्यापारी थे। कुछ सुनार, कुछ मोची तथा कुछ घरेलू नौकर-चाकर।"**[20] फ्रेंच सत्ता के विरुद्ध ब्रिटिशों द्वारा जब सन् 1810 ई. में मॉरिशस पर आक्रमण किया जाता है उस समय भी सैनिक के रूप में लगभग 8000 भारतीयों का आगमन हुआ था। इसके बाद मॉरिशस में ब्रिटिश सत्ता कायम हो जाने पर प्रथम अंग्रेज़ गवर्नर फारकूहार के शासनकाल में भारत से करीब 800 कैदियों को सड़क-निर्माण के उद्देश्य से बुलाया गया। जिनके सहयोग से

पोर्टलुई की सड़कों व बन्दरगाह का निर्माण हुआ। मॉरिशस की अधिकांश सड़कों का निर्माण इन्हीं भारतीय कैदियों के परिश्रम से ही हुआ है।

सन् 1833 ई. में ब्रिटिश संसद द्वारा समस्त औपनिवेशिक देशों से दास-प्रथा को समाप्त कर दिया गया। जिसके परिणामस्वरूप 1834 ई. में मॉरिशस के काले दासों को भी मुक्त कर दिया गया। दास-प्रथा की समाप्ति के बाद मुक्त दासों ने खेतों में काम करने से इंकार कर दिया, क्योंकि खेतों के काम को वे गुलामों का ही काम समझते थे। मुक्त दास स्वतंत्र रूप से अपने मनपसंद व्यवसाय करने लगे। काले दासों के इस व्यवहार से शक्कर-कोठी के मालिकों व जमींदारों को अपने उद्योग की चिंता सताने लगी। मजदूरों के अभाव से उनके गन्ने की खेती नष्ट होने के कगार पर पहुँच जाती है। मजदूरों की समस्या से निबटने हेतु कोठी के मालिक व फ्रेंच जमींदारों ने तत्कालीन भारत सरकार से प्रार्थना की। क्योंकि उस समय भारत में भी ब्रिटिश सत्ता कायम थी। अत: वहाँ के अंग्रेज़ अधिकारियों को भारतीयों की कार्यकुशलता व परिश्रमी स्वभाव की जानकारी थी, जिसके परिणामस्वरूप वे भारत से भारतीय मजदूरों को 'शर्तबंद-प्रथा' के तहत मॉरिशस भेजने की योजना बनाते हैं, जो दासत्व का ही परिवर्तित और परिवर्धित रूप था। सन् 1834 ई. में 'शर्तबंद-प्रथा' के तहत दो जत्थों में 87 मजदूरों को मॉरिशस लाया गया। भारत के विशेषकर, पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार के आरा, छपरा आदि स्थानों से सूखा, अकाल से पीड़ित व आर्थिक तंगी से जूझते किसान मजदूरों को फ्रेंच जमींदारों के दलालों व अरकाटियों द्वारा मॉरीशस में पत्थरों के नीचे सोना-ही-सोना मिलने का सब्जबाग दिखाकर लाया गया। गरीब मजदूरों को मॉरिशस में अधिक धन कमाने का लोभ देकर तथा वहाँ सुखमय जीवन यापन का झूठा स्वप्न दिखाकर तथा डरा-धमकाकर भारी संख्या में मॉरिशस आने के लिए तैयार किया जाता था। कलकत्ता डिपो में इन बेबस, अनपढ़ व

परिस्थिति के मारे भारतीय मजदूरों से 'शर्तबंद' के पत्रों पर जबरन अँगूठा लगवाकर मॉरिशस लाया जाता था। इन मजदूरों की तीन-चार महीने की सामुद्रिक यात्रा अत्यंत कष्टकारी होती थी। जहाजों में इन मजदूरों को न तो ठीक से बैठने की सुविधा होती थी और न ही इन्हें भरपेट भोजन मिलता था और न ही शुद्ध जल। जहाज में बीमार व्यक्तियों पर भी विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था। दवा के अभाव में बहुत से मजदूर रास्ते में ही दम तोड़ देते थे। और कभी-कभी तो दलालों के मुँह लगने वाले तथा अपने साथ किए जाने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वाले मजदूर को दलालों द्वारा जिन्दा ही समुद्र में फेंक दिया जाता था। अपने घर, परिवार व बंधुजनों के विछोह से पीड़ित इन मजदूरों का दुख उस समय और बढ़ जाता है, जब मॉरिशस पहुँचकर इनको वास्तविकता का पता लगता था कि मॉरिशस में इन्हें कुली बनाकर लाया गया है। न की अपार धन बटोरने के लिए व पत्थरों के नीचे सोना निकालने के लिए। मॉरिशस के बन्दरगाह पर इन मजदूरों को अलग-अलग कोठियों के मालिकों द्वारा खरीद लिया जाता था। अपने देश, घर-परिवार व भाई- बंधुओं से बिछुड़कर इन मजदूरों का जहाज के सहयात्रियों से जहाज़ी भाई का रिश्ता बन जाता था। लेकिन मॉरिशस में पहुँचते ही उनको इनके इस रिश्ते से भी महरूम कर दिया जाता था। क्योंकि इन मजदूरों को अलग-अलग कोठी के सरदारों द्वारा खरीद लिया जाता था। जिन शर्तों के आधार पर इन भारतीय मजदूरों को मॉरिशस लाया जाता है, उन शर्तों को दरकिनार कर फ्रेंच जमींदारों व उनके सरदारों तथा दलालों द्वारा मजदूरों के साथ काले दासों व गुलामों जैसा वर्ताव किया जाता था। इन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों से पत्थर तुड़वाया जाता था व गन्ने की खेती कराई जाती था। रात-दिन कठोर परिश्रम करवाने के बाद भी मजदूरों को न तो भरपेट खाना दिया जाता था और न ही तन ढकने को वस्त्र। इन मजदूरों को जो भी भोजन की सामग्री दी जाती थी वह सड़ी-गली व कीड़े युक्त होती थी। यदि कभी कोई मजदूर किसी कारणवश काम में न जाता या देर से पहुँचता तो उस मजदूर से दूसरे दिन दुगुना काम लिया जाता था और दो दिन

का वेतन काट लिया जाता था। इसके अतिरिक्त यदि कभी कोई मजदूर अपने प्रति या अन्य मजदूरों के साथ होने वाले अन्याय के बारे में गोरे शासकों व कोठी के सरदारों से सवाल करता था तो उस पर कोड़ों व बाँसों की बौछार होती थी। कभी-कभी उन पर मालिकों के शिकारी कुत्ते छोड़ दिये जाते थे। और कभी-कभी तो बैलों की जगह मजदूरों से ही गन्ने से लदी गाड़ियाँ खिंचवायी जाती थीं। गोरे शासकों के अत्याचारों के शिकार न सिर्फ भारतीय मजदूर होते थे बल्कि मजदूर स्त्रियाँ भी शोषण की शिकार होती थीं। स्त्रियों की स्थिति तो और भी दयनीय थी। एक ओर जहाँ उनके श्रम का शोषण किया जाता था वहीं दूसरी ओर उन्हें गोरे मालिकों व कोठी के सरदारों तथा दलालों के हवश का भी शिकार होना पड़ता था। 'शर्तबंद-प्रथा' के तहत जाने वाले भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ शक्कर कोठी के मालिकों, सरदारों व दलालों द्वारा सदैव भेद-भावपरक व्यवहार किया जाता था तथा बात-बात पर भारतीयों को जलील किया जाता था। उनकी बोलो-बानी, भाषा-संस्कृति की खिल्ली उड़ाई जाती थी तथा भारतीय मजदूरों को जंगली, गँवार,असभ्य आदि शब्दों से संबोधित किया जाता था। रंग के आधार पर भी उनसे भेद-भावपरक व्यवहार किया जाता था। इन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति पशुओं से भी गई-गुजरी थी। मॉरिशस के भारतीय गिरमिरिया मजदूरों की दयनीय स्थिति से द्रवित होकर कुछ अंग्रेज़ गवर्नरों ने भारतीय मजदूरों के हितार्थ कानून बनाए, कुली रक्षक की नियुक्ति की तथा मजदूरों के खाने–पीने व रहने की व्यवस्था में इजाफा किया। बावजूद इसके गोरे जमींदारों द्वारा इन क़ानूनों को लागू नहीं किया जाता था। भारतीय मजदूरों की इस दयनीय स्थिति से दुखी होकर कुछ स्थानीय लोगों ने 'शर्तबंद प्रथा' के विरुद्ध आवाज बुलंद की जिसके परिणामस्वरूप मॉरिशस की सरकार ने सन् 1838 ई. में आप्रवासी भारतीयों की स्थिति की जाँच हेतु एक कमीशन का गठन किया। जिसे 'आण्डरसन कमीशन' कहते हैं। जाँच की रिपोर्ट में फ्रेंच जमींदारों की ज्यादती व भारतीय मजदूरों की दयनीय दशा से परिचित होकर तत्लकलीन भारत सरकार मजदूरों के प्रवासन पर रोक लगा देती है। यह रोक 1839

ई. से 1842 ई. तक जारी रही। 'आंडरसन कमीशन' के सुझाव से मॉरिशस के तत्कालीन गवर्नर 'निकोले' ने आप्रवासी भारतीय मजदूरों के लिए कुछ नए नियम व कानून बनाए, जिसमें मजदूरों को 'शर्तबंद' की अवधि पूरी होने पर स्वदेश लौटने, उचित मजदूरी देने, पर्याप्त मात्रा में भोजन सामग्री देने तथा महिला मजदूरों को लाने की बात कही गयी। और मॉरिशस सरकार ने मजदूरों की समस्याओं को निबटाने हेतु 'मजदूर रक्षक' की नियुक्ति की। इसके बाद 1842 ई. से पुन: 'शर्तबंद प्रथा' के अंतर्गत भारतीय मजदूरों का आगमन शुरू हुआ। सन् 1850-60 के दशक में भारी तादाद में भारत से गिरमिटिया मजदूरों का आगमन हुआ। मॉरिशस में भारतीय मजदूरों के आगमन से कुछ वर्षों बाद 'रेमी ओलिए' का आगमन हुआ। रेमी ओलिए भारतीय मजदूरों के शुभचिंतक थे। आभारतीय होते हुए भी रेमी ओलिए ने भारतीय मजदूरों के साथ किए जाने वाले अत्याचार के खिलाफ अपने लेखों के माध्यम से आवाज बुलंद की। तथा मॉरिशस की विधान परिषद में रंगीन जाति के लोगों को नामजद करने की सिफारिश इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया से की। रेमी ओलिए के अतिरिक्त गवर्नर गार्डन, दे-प्लेवित्स, हेनरी बार्कले, पोप हेनिसी, कवेंडिश बाईल व हेनरी हेसकेथ बेल आदि गवर्नरों ने आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के हितार्थ ठोस कदम उठाए। जिसके परिणामस्वरूप 1872 ई. में इंग्लैंड की सरकार ने भारतीय मजदूरों की वास्तविक स्थिति की जाँच हेतु 'रायल कमीशन' का गठन किया। यह कमीशन मजदूरों की दशा का अवलोकन करके उनके हितार्थ कानून व नियम बनाती है तथा मजदूरों के 'श्रम कानून' में संशोधन करके उनकी दशा में सुधार करती है। आर्थिक विपन्नता व धार्मिक संकीर्णता के चलते 19वीं शती के अंत तक आप्रवासी भारतीय मजदूरों की स्थिति अत्यंत दयनीय व सोचनीय थी। किन्तु 20वीं शती के आरंभ में 1901 ई. में मॉरिशस में गाँधी जी के आगमन से उनमें राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ। क्योंकि गाँधी जी ने आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों से अपील की थी कि वे अपने बच्चों को पढ़ाएँ तथा स्वयं देश

की राजनीति में हिस्सा लें। इसके बगैर उनकी दयनीय स्थिति में सुधार की गुंजाइश नहीं है। गाँधी जी के सलाह पर 11 अक्तूबर 1907 ई. को बैरिस्टर मणिलाल का आगमन हुआ। मजदूरों की दशा सुधारने तथा उनमें राजनीतिक चेतना का विस्तार करने में इनका अप्रतिम योगदान रहा है। इन्होंने अपने लेखों के माध्यम से 'शर्तबंद' मजदूरों की समस्या से मॉरिशस की जनता के साथ-साथ भारतीय सरकार व जनता को रु-ब-रु कराया। तथा सन् 1910 ई. में 'अखिल भारतीय नेशनल कांग्रेस' में भी गिरमिटिया मजदूरों की समस्या को प्रस्तुत किया। तथा मॉरिशस में 'हिंदुस्तानी' दैनिक पत्र का प्रकाशन करवाया। इसके साथ ही 'रायल कमीशन' से यह माँग की कि 'मॉरिशस के न्यायालयों में अंग्रेज़ न्यायाधीश नियुक्त हों, भारतीय बच्चों को स्कूलों में भारतीय भाषाओं में शिक्षा दी जाए, छोटे किसानों की सहायता के लिए सहकारी बैंक खोले जाएँ।' मणिलाल के सशक्त आंदोलन तथा उनके कार्यों व विचारों से प्रेरित होकर ही सन् 1911 ई. के चुनाव में दो भारतीय चुनाव लड़े। जिसमें इनकी हार हुई बावजूद इसके डा. साकिर को सरकारी परिषद का नामजद सदस्य बनाया गया। मणिलाल के ही प्रेरणा से 'मॉरिशस आर्य पत्रिका' तथा 'ओरियंटल गज़ट' का प्रकाशन हुआ। और पंडित काशीनाथ, पंडित रामावध और रामखेलावन बुधन उच्च शिक्षा हेतु विदेशों की ओर प्रस्थान किए।

सन् 1924 ई. में भारत सरकार की ओर से मजदूरों की स्थिति की जाँच हेतु मॉरिशस में कुँवर महाराजसिंह का आगमन हुआ। उन्होंने मजदूरों की स्थिति की जाँच करके 1925 ई. में भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसके परिणामस्वरूप 1925 ई. से 'शर्तबंद प्रथा' को हमेशा के लिए बंद कर दिया गया। सन् 1935 ई. में मारिश क्यूरे ने 'लेबर पार्टी' का गठन किया। गोरे शासकों के अत्याचार से त्रस्त होकर मजदूरों ने

1937 ई. में एक जबरदस्त हड़ताल की। और 1947 ई. में मॉरिशस को एक नया संविधान मिला। जिसमें पहली बार साक्षर व्यक्तियों को मतदान करने का अवसर प्रदान किया गया। जिसकी वजह से सन् 1948 ई. के आम चुनाव में देश की बहुसंख्यक भारतीय जनता ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। सन् 1959 ई. का चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर हुआ। इस चुनाव में भी भारतीयों ने भागीदारी की। इसी चुनाव के बाद मॉरिशस में मंत्रिमंडलीय शासनप्रणाली लागू हुई और रामगुलाम मुख्यमंत्री बने। सन् 1963 ई. के चुनाव में भारतीयों ने उम्मीदवारी की लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। रामगुलाम ने मजदूर दल के नेतृत्व में प्रथम मिली-जुली सरकार बनाई। और 1967 ई. के चुनाव में गौर वर्णों की पार्टी को मात देकर आप्रवासी भारतीयों ने बहुमत से चुनाव जीतकर अपना परचम लहराया। और 12 मार्च 1968 ई. को मॉरिशस को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराया और सर शिवसागर रामगुलाम स्वतंत्र मॉरिशस के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

स्वतन्त्रता के बाद का मॉरिशस- 12 मार्च 1968 ई. को मॉरिशस अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुआ जिसके परिणामस्वरूप देश की शासन-व्यवस्था से गोरों के एकछत्र साम्राज्य का पतन हुआ। क्योंकि सन् 1967 ई. का चुनाव मॉरिशस की आजादी को लेकर ही लड़ा गया था। मुट्ठी भर गोरे लोग मॉरिशस की आजादी के पक्ष में नहीं थे, जबकि शेष जनता मॉरिशस की आजादी के लिए कटिबद्ध थी। इस चुनाव में आजादी के समर्थकों की जीत हुई तथा सर शिवसागर रामगुलाम के नेतृत्व में विधानसभा में बहुमत से मॉरिशस की आजादी का प्रस्ताव पास हुआ। और सर शिवसागर रामगुलाम स्वतंत्र मॉरिशस के प्रथम आप्रवासी भारतीय प्रधानमंत्री बने। जो मॉरिशस के इतिहास में एक ऐतिहासिक घटना साबित होती है। आजादी के एक वर्ष पश्चात् शिवसागर रामगुलाम ने विरोधी दल के साथ समझौता करके मिली-जुली सरकार का गठन किया। किन्तु मिली-जुली सरकार की वजह से देश का कोई भी काम सुचारु रूप से नहीं सम्पन्न हो पाया। जिसके परिणामस्वरूप वामपंथी विचारधारा का जन्म हुआ। वामपंथी विचारधारा से प्रेरित नवयुवकों ने संगठित होकर

1969 ई. में एम.एम.एम. (मॉरीशस मिलिटेंट मूवमेंट) नामक राजनीतिक दल की स्थापना की। इस पार्टी के कर्णधार पोल बेरांजे थे। 2 जून 1970 ई. को मॉरिशस में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी का आगमन हुआ। 3 जून 1970 ई. को अपने कर कमलों से इन्होंने मोका में 'महात्मा गाँधी संस्थान' की नींव रखी। आजादी के बाद मॉरिशस में गायता जुवाल की सरकार में उद्योग-धन्धों को काफी बढ़ावा मिला। गायता की विदेश नीति से प्रभावित होकर फ्रांस और इंग्लैंड की सरकार ने मॉरिशस को आर्थिक सहायता प्रदान की जिससे पोर्टलुई के दक्षिण में एक औद्योगिक क्षेत्र की नींव रखी गयी। इस औद्योगिक क्षेत्र में विभिन्न देशों- फ्रांस, इंग्लैंड, हांगकांग, पश्चिमी जर्मनी तथा भारत के उद्योगपतियों ने आकर नए-नए कारखाने खोले। बहुत से विदेशी व्यावसायिकों ने होटल खोलकर पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दिया।जिसके परिणामस्वरूप देश की बेरोजगारी कुछ हद तक कम हुई। साथ ही मॉरिशस के कारखानों से निर्मित वस्तुओं का यूरोपीय देशों में निर्यात होने लगा। सन् 1973 ई. में आयोजित 'बारहवें अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन' के अवसर पर पोर्टलुई नगरपालिका के मेयर गायता जुवाल ने 'नागरिकता के पद' से आर्यसभा को सम्मानित किया और हिन्दी भाषा को 'संयुक्त राष्ट्र संघ' में मान्यता दिलाने हेतु एक प्रस्ताव पारित किया। सन् 1974 ई. में अंतर्राष्ट्रीय मंडी में चीनी का दाम बढ़ जाने से मॉरिशस के चीनी उद्योग को काफी लाभ हुआ। इसी वर्ष पोर्टलुई में अनेक सरकारी भवनों का निर्माण कार्य शुरू हुआ। तथा पोर्टलुई के व्यापारिक भवन में भयंकार अग्निकांड हुआ। इसी वर्ष तत्कालीन भारत सरकार ने मॉरिशस को 'अमर' नामक युद्धपोत प्रदान किया, जो सागरीय क्षेत्रों की सुरक्षा हेतु दिया गया था। तथा फ्रांस की सरकार ने मॉरिशस को 'आलूवेत' नामक हेलीकाप्टर दिया। तत्कालीन शिक्षण-व्यवस्था से असंतुष्ट होकर 21 मई 1975 ई. को छात्रों ने एक भारी हड़ताल की। सन् 1976 ई. में 'महात्मा गाँधी संस्थान' में अफ्रीका एकता संगठन का वार्षिक जुटाव हुआ, जिसमें अफ्रीकी देशों के

48 प्रतिनिधियों ने तथा 7 देशों के राष्ट्रनायकों ने प्रतिभागिता की। और इसी वर्ष 19-30 अगस्त तक 'महात्मा गाँधी संस्थान' मोका में द्वितीय 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' का आयोजन हुआ जिसमें यूरोपीय, एशियाई, अफ्रीकी तथा अमरीकी देशों के प्रतिनिधियों ने सिरकत की। इसी सम्मेलन में हिन्दी को 'संयुक्त राष्ट्र संघ' द्वारा मान्यता दिलाने का प्रस्ताव पारित हुआ। सन् 1976 ई. का चुनाव मॉरिशस के इतिहास में ऐतिहासिक महत्व रखता है। क्योंकि यह स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस का प्रथम चुनाव था। इस चुनाव के बारे में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"इस चुनाव में एम. एम. एम. की भारी जीत हुई थी।..... इसी चुनाव में शिखर के अनेक राजनेता परास्त हुए थे, जिनमें रजाक मुहम्मद, गायता जुवाल और सुखदेव विष्णुदयाल प्रमुख थे।..... सन 1976 ई. में चुनाव-परिणाम का मतलब था- देश की राजनीति से अधिकांश वरिष्ठ राजनेताओं का निष्कासन।"**[21] सन् 1977 ई. में सर शिवसागर रामगुलाम ने नि:शुल्क शिक्षा की बुनियाद रखी। देश में प्राथमिक, माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय स्तर पर नि:शुल्क शिक्षा का प्रावधान किया। पाम्प्लेमूस, मोका तथा वाक्वा में लड़कियों के लिए माध्यमिक स्कूल खोलने की योजना बनाई। सन् 1980 में तत्कालीन सरकार द्वारा राष्ट्रीय परिवहन निगम, सी. एन. टी. की बुनियाद रखी। तथा पोर्टलुई में थोक लदान प्रणाली (बल्क टर्मिनल) की शुरुआत हुई। इसी वर्ष मोका स्थित 'महात्मा गाँधी संस्थान' में 'अंतर्राष्ट्रीय तमिल सम्मेलन' का आयोजन हुआ, जिसमें मलेशिया, लंका, भारत, दक्षिण अफ्रीका तथा रीनियन द्वीप के प्रतिभागियों ने सहभागिता की। और इसी वर्ष तत्कालीन प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम की राष्ट्रीय तौर पर 80वीं वर्षगाँठ मनाई गयी। साथ ही राष्ट्रकुल के सम्मेलन में सर शिवसागर रामगुलाम को विश्व का सबसे वरिष्ठ राजनायक घोषित किया गया।

14 फरवरी 1982 ई. को आजाद मॉरिशस के दूसरे चुनाव का ऐलान किया गया। सन् 1982 ई. का चुनाव मॉरिशस के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस चुनाव के बारे में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"11 जून 1982 का दिन ऐतिहासिक था। देश भर में भारी तादाद में लोगों ने मतदान किया था। मतदान शांतिपूर्वक ढंग से हुआ था और 12 जून में जब परिणाम निकला तब सारा संसार आश्चर्य में पड़ गया। एक ओर रामगुलाम के 'मजदूर दल' की तो दूसरी ओर गायता जुवाल की 'पार्ची मोरिस्ये' की करारी हार हुई थी। मॉरिशस के बीच चुनाव क्षेत्रों से साठ एम.एम.एम. और पी.एस.एम. के उम्मीदवार निर्वाचित हुए थे।"[22]** 1982 के चुनाव परिणाम के बाद माननीय अनिरुद्ध जगन्नाथ प्रधानमंत्री बने। पदभार ग्रहण करने के बाद अनिरुद्ध जगन्नाथ की सरकार योजनाबद्ध तरीके से सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक ढाँचों में परिवर्तन किया। जिससे देश की शासन-प्रणाली में सकारात्मक प्रभाव पड़ा। इन्हीं के कार्यकाल में हिन्द महासागरीय खेलों का आयोजन हुआ तथा नशीली दवाओं की तस्करी से संबद्ध संसद सदस्यों की जाँच हुई। जिसमें 6 संसद सदस्य शामिल थे। सन् 1991 ई. के चुनाव के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ ने 1992 ई. में मॉरिशस को गणराज्य बनाया। विरास्वामी रिंगाडू मॉरिशस के प्रथम राष्ट्रपति बने। 1993 ई. में आप्रवासी भारतीय महिला विद्यानारायण मॉरिशस के सुप्रीम कोर्ट की प्रथम महिला जज बनीं। उपर्युक्त विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है गुलामी की दासता से जकड़े हुए आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों ने गोरे शासकों के शोषण के शिकार होकर भी अपने साहस, शक्ति, धैर्य एवं संघर्ष के बल पर मॉरिशस को गोरों के चंगुल से मुक्त कराकर वहाँ की राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करके देश की बागडोर अपने हाथों में लिया। और मॉरिशस के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक-सांस्कृतिक ढाँचे में आमूल-चूल परिवर्तन करके अपना परचम लहराया तथा मॉरिशस को वैश्विक पहचान दिलायी।

2) मॉरिशस की भौगोलिक स्थिति

मॉरिशस विश्व का एक ऐसा अनोखा देश है, जिसका ऐतिहासिक संबंध फ्रांस, इंग्लैंड, हॉलैण्ड, चीन, अफ्रीका व भारत आदि देशों से जुड़ा रहा है। यह उन भारतेतर देशों में से है, जहाँ सन् 1834 ई. से शर्तबंद प्रथा के तहत, जो दासत्व का दूसरा रूप था, भारतीयों को भेजा जाता रहा था। मॉरिशस की खोज उस समय हुई है जब डच, फ्रेंच तथा अँग्रेज़ जातियाँ अपने व्यापारिक हितों को ध्यान में रखकर हिन्द महासागर के तटवर्तीय तथा पूर्व के देशों को अपने उपनिवेश बनाने के लिए कटिबद्ध थीं।

द्वीप की उत्पत्ति- मॉरिशस द्वीप की उत्पत्ति के संबंध में प्रह्लाद रामशरण अपने इतिहास ग्रंथ में लिखते हैं- **"प्रकृति में जो उथल-पुथल होती रही, उसी की प्रक्रिया मात्र से धरती के महाद्वीप और महासागर बने हैं। उस प्रारंभिक काल में भारत और अफ्रीका के बीच हिन्द महासागर नहीं था, बल्कि उसकी जगह पर गौड़वानालेण्ड भूखण्ड था। कालक्रम से गौड़वानालेण्ड समुद्र में धँस गया और इस प्रकार से हिन्द महासागर की उत्पत्ति हुई। इसके साथ-साथ इन दोनों महाद्वीपों के बीच में अनेक छोटे-बड़े द्वीपों का प्रादुर्भाव हुआ। इन्हीं द्वीपों में मॉरिशस भी एक है।"[23]**

मॉरिशस द्वीप की भू-रचना के संबंध में रामशरण जी लिखते हैं- **"मॉरिशस की भूमि के ऊपर और अंदर की चीजों को देखने से पता लगता है कि अत्यंत प्राचीन समय में यह टापू ज्वालामुखी के विस्फोट से बना था। टापू के अनेक स्थानों से ज्वालाएँ निकली थीं। जिन स्थानों से ऐसी ज्वालाएँ निकली थीं, उनके अवशेष ज्वालामुखी, अर्थात् क्रेटर आज भी अनेक स्थानों पर देखे जा सकते हैं। श्वेत और गंगा तालाब, शांदे मास का मैदान, सप्तरंगी भूमिखण्ड और क्यूर्पीप का मृगकुण्ड ऐसे ही सुप्त ज्वालामुखी के मुख हैं।"[24]**

'भारत भूमि की पुत्री' कहा जाने वाला द्वीप मॉरिशस हिन्द महासागर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इस द्वीप की दक्षिणोत्तर लम्बाई 72 किलोमीटर है और पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 47 किलोमिटर है। द्वीप का क्षेत्रफल 1152 किलोमीटर है। यह मकर अयन वृत्त पर स्थित है। मॉरिशस से अफ्रीका भूखण्ड की दूरी 2400 किलोमीटर है और आस्ट्रेलिया की दूरी 7360 किलोमीटर है। मॉरिशस से मुंबई की दूरी 4320 किलोमीटर है। इसके आस-पास के द्वीपों में रीनियन द्वीप 254 किलोमीटर तथा मेडागास्कर 500 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

किसी भी देश के साहित्यकार की रचनाधर्मिता एवं उसके साहित्य को प्रभावित करने में वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों का भी अहम् योगदान होता है। भूगोल के महत्व एवं मॉरिशस की भौगोलिक स्थिति का निरूपण करते हुए मॉरिशस के इतिहासकार प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"आधुनिक विचारकों का मत है कि हर देश का भूगोल उसके इतिहास को प्रभावित करता है। ये भौगोलिक और पर्यावरणात्मक परिस्थितियाँ मॉरिशस की विशेष अस्मिता बनाती हैं। ज्वालामुखी से बनी इसकी चट्टानें, समुद्रतट, यहाँ के वृक्ष और वनस्पतियाँ, यहाँ की ईख और चाय की उपज ये सब चीजें यहाँ आने वाले डच, पुर्तगाली, अंग्रेज़ सब तरह के विदेशी आक्रांताओं और शासकों की लहर पर लहर को उन्होंने बहुत मनोरंजक ढंग से एक साथ लपेटा है।"**[25]

किसी भी देश के भौगोलिक परिवेश को रूपायित करने में वहाँ के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, वन्य-जीव, नदी-तालाब, झील, पर्वत, कंदराएँ, गुफा, वन-सम्पदा, खनिज भंडार, जलवायु इत्यादि का विशेष योगदान रहता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इन्हीं उपर्युक्त तथ्यों के संयोजन से ही भौगोलिक स्थिति का निर्माण होता है। प्रत्येक देश की भौगोलिक स्थिति

हर दूसरे देश की भौगोलिक स्थिति से संरचना व जलवायु इत्यादि के आधार पर भिन्न होती है। मॉरिशस की भौगोलिक स्थिति को निम्नवत् प्रस्तुत किया जा सकता है-

मॉरिशस की जलवायु- मॉरिशस के मौसम पर सागरीय जलवायु का प्रभाव विशेष रूप से रहता है। जिसके परिणामस्वरूप यहाँ सर्दी और गर्मी के मौसम में बहुत कम अंतर दिखाई पड़ता है। द्वीप के निचले समतल मैदानी भागों में सर्दी के मौसम में 13° से 19° तापक्रम रहता है और ग्रीष्म ऋतु में तापक्रम 19° से 25° तक रहता है। यहाँ पर आर्द्रता अधिक रहती है किन्तु रात और दिन के तापमान व आर्द्रता में कोई विशेष अंतर नहीं होता। सर्दियों के मौसम में प्रात:काल 7 बजे से सायंकाल 5:30 बजे तक दिन रहता है और गर्मियों के मौसम में 5 बजे प्रात:काल से सायंकाल 7 बजे तक दिन रहता है। गर्मियों के मौसम में प्रात:काल का वातावरण रमणीक होता है। सुबह के समय वातावरण शान्त और स्वच्छ रहता है साथ ही आकाश नीलापन लिए हुए रहता है। ताजी हवा मंद गति से चलती रहती है। खेतों, जंगलों और पहाड़ों पर सर्वत्र हरियाली छायी रहती है। इस मौसम की रात्रि भी कम सुहावनी नहीं होती है। ग्रीष्म ऋतु में कभी-कभी भीषण तूफान भी आ जाते हैं, जिससे जान-माल की काफी क्षति होती है। भयंकर तूफानों की गति 75-100 मील/घंटा से बढ़कर कभी-कभी डेढ़-दो सौ मील/घंटा से भी अधिक हो जाती है। जिसके परिणामस्वरूप पेड़-पौधे, मकान, जीव-जन्तु, कृषि, संचार-साधनों व यातायात के साधनों को विशेष क्षति पहुँचती है। लोगों का जीवन कष्टमय हो जाता है, विशेषकर गरीब जनता पर इस प्राकृतिक आपदा का विशेष असर होता है। ग्रीष्म ऋतु में कभी-कभी सूखा भी पड़ जाता है जिसके कारण किसानों के लहलहाते फसल सूख जाते हैं। तथा नदी, तालाब व अन्य जलाशय भी सूख जाते हैं। मॉरिशस के जलवायु के संबंध में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"टापू के पश्चिमी प्रान्तों में वर्ष भर 60 इंच वर्षा होती है और ऊँचे भागों में 200 इंच।**

वर्षा ऋतु में स्थान-स्थान पर जलाशय बन जाते हैं और पहाड़ों पर जलप्रपात। वर्षा के बाद आकाश में प्राय: इंद्रधनुष दिखाई देने लगता है जिसके सात रंगों की रमणीयता के साथ-साथ उसकी छाया भी आकाश को रमणीय बना देता है।"[26]

सागरीय व स्थलीय जीव-जन्तु- चारों ओर समुद्र से घिरे होने के कारण मॉरिशस में पर्याप्त मात्रा में और विभिन्न प्रजातियों के जीव-जन्तु पाये जाते हैं। यहाँ के समुद्र में मछलियों की अलग-अलग नस्लें पायी जाती हैं। इसके साथ ही यहाँ के जलीय वातावरण में सैकड़ों प्रकार के घोंघें और दरियाई घोड़े पाये जाते हैं। मॉरिशस के सागरीय जलों में केवल घोंघें की ही 2800 प्रजातियाँ मिलती हैं। इस संदर्भ में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"पोर्ट लुईस का अजायबघर इस दृष्टि से एक धनी व समृद्ध संग्रहालय माना जाता है। इस विशाल भंडार के अध्ययन के लिए टापू के पश्चिम में एक सागरीय संस्थान कार्यरत है।"[27]** मॉरिशस में पाये जाने वाले स्थलीय जीव-जंतुओं के बारे में प्रह्लाद रामशरण अपनी पुस्तक 'मॉरिशस का इतिहास' में आगे लिखते हैं- **"मनुष्य के पदार्पण से पहले मॉरिशस द्वीप एक विशाल, पर भव्य जंगल था। इसमें बड़े-बड़े कछुए, विषहीन साँप की कुछ जातियाँ (जो अब नहीं हैं) और छिपकलियाँ ही इस निर्जन द्वीप के मूल निवासी थे। इसके अतिरिक्त चमगादड़, विचित्र-2 पक्षियों के झुंड आकाश में मंडराया करते थे।"[28]** मॉरिशस में 'डोडो' नामक विचित्र प्रकार के विशालकाय पक्षी भी पाये जाते थे, जो अब विलुप्त हो गए हैं। ये पक्षी सिर्फ मॉरिशस में ही पाये जाते थे। 'डोडो' पक्षी मॉरिशस का राष्ट्रीय पक्षी है। इस विशालकाय पक्षी के पंख बहुत छोटे-छोटे होते थे तथा इसके डैने भी अत्यंत छोटे होते थे जिसके कारण यह उड़ने में असमर्थ होता था। 'डोडो' की इसी कमजोरी का फायदा उठाकर डच शासकों ने इसका खूब शिकार किया। जिसकी वजह से ये धीरे-धीरे टापू से विलुप्त हो गए। डोडो की चोंच पीले रंग की चपटी-सी होती थी साथ में कुछ टेढ़ी भी होती थी। चोंच

सिर से बड़ी होती थी। **"विलायत के बाल-साहित्यकार लेविस कैरोल ने 'आलीस की दुनिया' नामक अपनी पुस्तक में डोडो पक्षी का वर्णन करके इसे अमर कर दिया।"**[29] शुरू में इस टापू में लगभग 25-26 नस्ल के पक्षी पाये जाते थे किन्तु अब सिर्फ नौ नस्ल ही शेष बचे हैं। यहाँ के जंगली जानवरों में जावा के हिरन और माकाक के बंदर पाये जाते हैं। इसके साथ ही यहाँ पर भारतीय खरगोश एवं नेवले भी देखने को मिलते हैं। छिपकलियों की 15 प्रजाति व विषहीन साँप की चार प्रजातियाँ आज भी विद्यमान हैं।

वन सम्पदा- मॉरिशस द्वीप की सौन्दर्य वृद्धि में न सिर्फ वहाँ के रमणीक समुद्र तट, नदी व झरने सहायक हैं, बल्कि इनके साथ-साथ वहाँ की अपार वन-सम्पदा भी उसके सौंदर्य में चार-चाँद लगाते नजर आते हैं। मॉरिशस में विभिन्न किस्म के पेड़-पौधे, फल-फूल, लताएँ आदि वहाँ की नैसर्गिक आभा में वृद्धि करते हैं। मॉरिशस में विभिन्न प्रकार के फलों के वृक्ष पाये जाते हैं, जिनमें- आम, अमरूद, लीची, जामुन, पपीता, केला, अन्नानास, अमरख, सीताफल व रामफल आदि प्रमुख हैं। जो अपने अलग-अलग स्वाद के कारण प्रसिद्ध हैं। मॉरिशस में भिन्न-भिन्न किस्म के फूलों के वृक्ष व लताएँ भी हैं जो वहाँ की प्राकृतिक सुषमा को बनाएँ रखती हैं और घनी छाया भी प्रदान करती हैं। ऐसे वृक्षों में- झावा, अर्जुन, गुलमोहर, पीपल, वट, बरगद, इमली, बादाम, बबूल, सेंहुल, वैगनवेलिया आदि के नाम लिए जा सकते हैं। मॉरिशस में 'तालिपो' नामक एक विशेष प्रकार का वृक्ष पाया जाता है। जिसमें प्रत्येक सौ वर्ष के अंतराल में फूल आते हैं। इस वृक्ष के फूलों को देखने हेतु पर्यटकों में काफी उत्साह रहता है। मॉरिशस में कुछ ऐसे वृक्ष भी हैं जो सौंदर्य वृद्धि के साथ-साथ वहाँ की अर्थव्यवस्था को भी समृद्ध करने में सहायक हैं। ऐसे वृक्षों में- आबनूस, सागौन, पाकड़, चीड़, सरो, देवदारु, लोगान, सिंदूर, जयकरंडे, कपूर और भोजपत्र आदि के नाम

उल्लेखनीय हैं। ये सभी वृक्ष यहाँ के बहुमूल्य खजाना हैं। मॉरिशस की इन्हीं भौतिक व प्राकृतिक धन-सम्पदा से प्रभावित होकर ही यूरोपीयों ने इस टापू को अपना उपनिवेश बनाया और बहुतायत मात्रा में यहाँ से आबनूस, देवदारु, कपूर व सिंदूर जैसी कीमती लकड़ियों का यूरोप में निर्यात किया। मॉरिशस द्वीप के पश्चिमी तट पर लगभग 6574 एकड़ जमीन पर 'ब्लैक रीवर गोर्ज' नामक प्राकृतिक राष्ट्रीय पार्क है, जिसमें सैकड़ों किस्म की वनस्पतियाँ मौजूद हैं।

ज्वालामुखियों के अवशेष- मॉरिशस द्वीप में ज्वालामुखियों के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। जो अपनी नैसर्गिक छटा से पर्यटकों को सहज ही आकर्षित कर लेते हैं। इन ज्वालामुखियों के अवशेषों का अपना-अपना इतिहास व विशेषता है। स्वयं मॉरिशस द्वीप की भी उत्पत्ति ज्वालामुखियों के विस्फोट से हुई मानी जाती है। मॉरिशस के शमारेल का सतरंगी मैदान, क्यूर्पीप का मृगकुंड व शॉ-दे-मॉर्श का मैदान आदि ज्वालामुखियों की देन हैं। मॉरिशस की प्रसिद्धि में इन ज्वालामुखियों का भी अहम् योगदान है।

शमारेल का सप्तरंगी भूमिखण्ड अत्यंत ही रमणीक पर्यटन स्थल है। वैज्ञानिकों का मत है कि यह ज्वालामुखियों की देन है। यहाँ पर लाल, हरी, नीली, पीली, सफेद एवं सुनहरी रंगों की मिट्टी के अनेक छोटे-छोटे टीले बने हुए हैं। इन टीलों पर घास तक नहीं उगती है। वैज्ञानिकों ने यहाँ की रंगीन मिट्टी के 40 तक रंग गिने हैं। इस भूमिखण्ड की विशेषता को उल्लिखित करते हुए प्रह्लाद रामशरण अपनी पुस्तक 'मॉरिशस का इतिहास' में लिखते हैं-**"मॉरिशस के सिवाय इतने रंग की मिट्टी संसार में एक ही स्थान पर कहीं नहीं पायी जाती है।"**[30] शमारेल के 'सप्तरंगी भूमिखण्ड' के अतिरिक्त क्यूर्पीप का 'मृगकुंड' भी

ज्वालामुखियों की ही देन है। यह मृगकुंड दर्शकों व पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। इस मृगकुंड की ऊँचाई समुद्रतल से 2000 फीट है। यह 300 फीट गहरा और लगभग 200 फीट चौड़ा है। इसका मुख चौड़ा तथा तल संकरा है। यह बहुत बड़ा है जिसका आकार हवनकुंड के गड्ढे जैसा है। चारों ओर से ढालू होने के कारण नीचे जाकर यह एक गड्ढे का आकार ले लेता है इस मृगकुंड पर हमेशा हरियाली रहती है। इसके चारों ओर पक्की सड़के बनी हैं जिससे पर्यटक कार पर बैठे-बैठे ही इस कुंड का चक्कर लगा लेते हैं।

प्रमुख पर्यटन स्थल/महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थल- मॉरिशस में कुछ ऐसे विशेष स्थल हैं, जो अपनी विशिष्टिता के कारण प्रसिद्ध हैं और पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बिन्दु बने हुए हैं प्रत्येक स्थल अपनी नैसर्गिक छवि के कारण लोगों का मन मोह लेते हैं। ऐसे महत्वपूर्ण स्थलों में- क्यूर्पीप, शमारेल, पोर्टलुई, बोबासें-रोजहिल, कात्रबोन-वाक्का, मोका, त्रियोले, ग्राँ-बे, गुडलेन्स, फ्लाक, रोसबेल, माहेबर्ग, परीतालाब व आप्रवासी घाट आदि प्रमुख हैं।

- **क्यूर्पीप-** 'क्यूर्पीप' फ्रेंच भाषा का शब्द है जिसका अर्थ 'पाइप' या चिलम झाड़ने, ताजा करने की जगह है। फ्रेंच शासक उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम जाते समय इस ऊँचे स्थान पर पहुँचकर अपने घोड़ों को आराम देने हेतु यहाँ पर रुकते थे और स्वयं को तरोताजा करने के लिए अपने चिलम(पाइप) को साफ करके उसमें नया तंबाकू भरते और उसका सेवन करतेथे। इसी कारण इस जगह का नाम क्यूर्पीप पड़ गया। 'क्यूर्पीप' में वर्ष भर हरियाली रहती है। इसे मॉरिशस का कश्मीर माना जाता है। समुद्रतल से इसकी ऊँचाई 2000 है। यहाँ का मृगकुंड पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। 'क्यूर्पीप' नगर के मध्य में मॉरिशस का ऐतिहासिक विद्यालय रॉयल कालेज भवन है। इसी के समीप जार्ज पंचम नामक एक फुटबाल का स्टेडियम है, जिसके

समीप स्वस्तिका नामक एक भव्य मंदिर भी है। ‘क्यूर्पीप’ में ही मॉरिशस का रेडियो टेलीविज़न प्रसारण केंद्र है।

- **शमारेल-** यह मॉरिशस का एक छोटा-सा गाँव है। जहाँ पर पहाड़ों से 100 मीटर की ऊँचाई से एक झरना गिरता है। इसके अतिरिक्त इस स्थल की एक और विशेषता है, वह है यहाँ की सतरंगी मिट्टी। जिसके अनुपम सौन्दर्य को देखने के लिए दूर-दूर से भारी तादात में पर्यटक आते हैं। और यहाँ की अनुपम छँटा को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।
- **पोर्टलुई-** 'पोर्टलुई' मॉरिशस की राजधानी है। हिन्दमहासागर के तट पर स्थित यह मॉरिशस का सबसे बड़ा शहर और प्रमुख बन्दरगाह है। सन् 2003 की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या 147688 है। सन् 1935 ई. में माहे-दे-लाबूर्दोने ने इसे मॉरिशस की राजधानी बनाया। यह तीन ओर पहाड़ों व एक ओर समुद्र से घिरा हुआ है। 'पोर्टलुई' द्वीप का इकलौता बन्दरगाह है, साथ ही यह व्यापार और उद्योग का केंद्रीय स्थल है। पोर्टलुई के पश्चिम में खुला औद्योगिक केंद्र है। उत्तर में जहाजों एवं नावों से आवेष्टित बन्दरगाह है। इसके पूर्व में 'पेर लावाल' नामक संत का समाधिस्थल है तथा तमिलों का एक विशाल मंदिर भी है। पोर्टलुई के दक्षिण-पूर्व में घुड़दौड़ का मैदान है। यहाँ पर चीनियों, भारतीयों तथा गोरों की बड़ी-बड़ी दुकाने हैं।

पोर्टलुई के नगरपालिका के समीप एमानियेल आंकचिल नामक एक बहुमंजिला सरकारी इमारत है। उसके समीप बहुत पुराना थियेटर भवन तथा सुप्रीम कोर्ट भी है। इसी के समीप पाँच मंज़िला सचिवालय भवन तथा विधानसभा है। विधानसभा के ही सामने माहे-दे-लाबूर्दोने द्वारा निर्मित कराया गया सरकारी भवन है, जिसमें महारानी विक्टोरिया की प्रतिमा स्थापित है। इसी से कुछ दूरी

पर समुद्र तट के सामने 'माहे-दे-लाबूर्दोने' की प्रतिमा है तथा मॉरिशस के राष्ट्रपिता डॉ. शिवसागर रामगुलाम की भी प्रतिमा स्थापित है। सरकारी भवन से कुछ दूरी पर कंपनी बाग नामक स्थान है जहाँ पर अनेक साहित्यकारों, राजनीतिक नेताओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ-साथ मणिलाल डॉक्टर की भी प्रतिमा स्थापित है। **"शॉ-दे मॉर्श के बगल में आर्य सभा भवन, आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा भवन तथा आंध्र महासभा भवन हैं। यहीं से एक फलांग पर विष्णु क्षेत्र मंदिर तथा पं. गयासिंह अनाथालय स्थित है।..... शॉ-दे-मॉर्श के बगल में एक पगोडा (चीनियों का बौद्ध मंदिर) भी है और उसी के सामने तहेर बाग स्थित है जहाँ पर महात्मा गाँधी, चार्ल्स ब्रूस, मणिलाल डॉक्टर तथा महाराजसिंह आदि प्रतिष्ठित पुरुषों का स्वागत किया गया था। इसके अतिरिक्त पोर्टलुई में कोई एक दर्जन मस्जिदें तथा आधा दर्जन गिरजाघर, तीन-चार तमिल मंदिर तथा एकाध शिव मंदिर भी हैं।"**[31] प्रह्लाद रामशरण ने अपनी पुस्तक 'मॉरिशस का इतिहास' में पोर्टलुई का विस्तृत परिचय दिया है।

- **बोबासें-रोजहिल-** मॉरिशस के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहरों में बोबासें-रोजहिल का अपना विशिष्ट महत्व है। 'बोबासें-रोजहिल' को जुड़वा बहनों की उपाधि दी जाती है। 'बोबासें' नगर में 'बालफूर' नामक एक उद्यान है तथा इसी के समीप खाड़ीदार तल में नदी बहती है जिसमें अनेक मनमोहक जलप्रपात देखे जा सकते हैं। इस शहर में मॉरिशस का एकमात्र मानसिक रोग चिकित्सालय है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर जान केनेडी तथा क्वीन एलिज़ाबेथ कालेज भी है। यहीं पर मॉरिशस का सबसे प्राचीन एवं विशालकाय क़ैदख़ाना भी है।
- **रोजहिल-** रोजहिल मॉरिशस का एक सांस्कृतिक केंद्र है। इस नगर के पीछे 'कोर-दे-गार्द' नामक एक पहाड़ है, जहाँ पर शाम के समय डूबते हुए सूर्य की लालिमा

झलकती रहती है। इसी लालिमायुक्त आभा के कारण इस स्थान का नाम 'रोजहिल' पड़ गया। रोजहिल का अर्थ है-'गुलाबी पहाड़'। इस नगर में सर शिवसागर रामगुलाम पशु चिकित्सालय है। यहाँ पर प्राचीन थियेटर 'प्लाजा' व शाल बोदलेर सांस्कृतिक केंद्र भी है साथ ही ब्रिटिश काउंसिल का विशाल पुस्तकालय और सांस्कृतिक केंद्र भी है। प्लाजा भवन में बोबासें व रोजहिल दोनों शहरों का प्रशासनिक कार्यालय है। इन दोनों शहरों में अनेक गिरजाघर व मस्जिदें भी देखी जा सकती हैं।

- **कात्रबोन-वाक्वा-** 'कात्रबोन' मॉरिशस का एक छोटा-सा शहर है। जिसका वर्तमान में 'सेंजा' और 'सादेनाक' मोहल्लों के कारण महत्व बढ़ गया है। शहर के अधिकांश बुद्धिजीवी लोग 'कात्रबोन' में ही निवास करते हैं। यहाँ से लगभग 10-12 किमी दूरी पर 'कासेला' नामक एक पार्क है, जहाँ पर 2000 से अधिक पक्षी निवास करते हैं। लगभग 25 एकड़ भूमि पर बने दरबों में 180 नस्ल के पक्षी पाये जाते हैं। यहाँ पर फुटबाल का एक मैदान भी है।

मॉरिशस के पर्यटन स्थलों में 'वाक्वा' का अपना विशेष महत्व है। यह खेल-कूद के मैदान के लिए प्रसिद्ध है। स्वतन्त्रता से पूर्व अंग्रेज़ अफसर व सैनिक यहीं(वाक्वा) पर निवास करते थे। तत्पश्चात् इस स्थान पर विदेशी विशेषज्ञ निवास करने लगे। 'वाक्वा' में ही एक वेधशाला, ई. एन. टी. चिकित्सालय, रामकृष्ण मिशन का विशाल मंदिर, खादी गाँधी आश्रम व आर्यन वैदिक स्कूल आदि मौजूद हैं। युवा मंत्रालय का थियेटर और 'मोरिश क्यूरे' नामक बालिका विद्यालय भी इसी शहर में है।

- **मोका-** 'मोका' को मॉरिशस का शिक्षा केंद्र माना जाता है। पोर्टलुई के पीछे मोका पर्वतमाला को पार करके 'मोका' नामक स्थान मिलता है। मोका के रेज्वी नामक स्थल पर राष्ट्रपति भवन बना हुआ है। रेज्वी से कुछ दूरी पर 'मॉरिशसीय परीक्षा सिंडीकेट', 'मॉरिशसीय शिक्षा संस्थान', 'मॉरिशसीय विश्वविद्यालय' व 'महात्मा गाँधी संस्थान' आदि पाये जाते हैं। इसी के समीप ऐबेन इलाके में साइबरसिटी बनी है। मोका में ही 'मारी लीस जूसतें' नामक आधुनिकतम स्टेडियम है साथ ही 'कॉलेज अव द ओंद' का मुख्यालय भी है। मोका में ही देश के डाकघरों के मुख्यालय बनाने व केंद्रीय ग्रंथालय बनाने की भी योजना है।
- **त्रियोले-** मॉरिशस के कथा-सम्राट व 'मॉरिशस के प्रेमचंद' कहे जाने वाले प्रसिद्ध साहित्यकार अभिमन्यु अनत की जन्मस्थली है 'त्रियोले'। त्रियोले पोर्टलुई के उत्तरी छोर पर लगभग 12 किमी की दूरी पर स्थित है। त्रियोले में पं. सजीवन लाल द्वारा निर्मित किया गया 19वीं शती के अंतिम समय का अति प्राचीन शिव जी का मंदिर है। त्रियोले के समीप 'त्रु-ओ-बीश' नामक समुद्र तट है, जहाँ पर पाँच सितारे होटल मौजूद हैं। त्रियोले से कुछ दूरी पर 'सर शिवसागर रामगुलाम' नामक हृदयरोग से संबन्धित चिकित्सालय है, जहाँ पर हृदय रोग का खुला आपरेशन किया जाता है।
- **ग्राँ-बे-** 'ग्राँ-बे''मारे-आक्स-वाकोस' शहर से थोड़ी ही दूर पर स्थित है। इस स्थान पर एक सुषुप्त ज्वालामुखी में दो झीलें आकर मिलती हैं। ग्राँ-बे हिंदुओं का धार्मिक स्थल भी है। प्रत्येक शिवरात्रि के अवसर पर भारतवंशी हिंदुओं द्वारा इस स्थान पर भव्य पूजा का आयोजन किया जाता है। यहाँ पर भगवान शिव की एक विशालकाय मूर्ति भी स्थित है। ग्राँ-बे के बारे प्रह्लाद रामशरण अपनी पुस्तक 'मॉरिशस का इतिहास' में लिखते हैं- **"देश के उत्तर के दूसरे महत्वपूर्ण समुद्रतटीय**

ग्राम हैं ग्राँबे, जो अभी हाल तक एक साधारण गाँव था। किन्तु बीसवीं सदी के अंतिम दशकों से इस ग्राम में पर्यटक-उद्योग के विकास के तहत इसका कायाकल्प हो गया है। यहाँ अनेक पाँच सितारे होटल, नाइट क्लब, बड़े-बड़े बंगले, बैंक, सैकड़ों छोटी-बड़ी दुकानें, हाइपर मार्केट आदि देखे जा सकते हैं। इसी शहर में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने के लिए एक प्रेक्षाग्रह बना है। यहाँ के समुद्र में जलक्रीड़ा की सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ साल भर पर्यटकों का जमघट होने से वास्तव में यह ग्राम व शहर मॉरिशस का सबसे लोकप्रिय पर्यटक केंद्र बन गया है। इसके पास मापू ग्राम है जहाँ पाम्प्लेमूस-रिव्येर जी रांपार जिला-परिषद का कार्यालय है। इस प्रांत का कार्यालय इसी ग्राम में है।"[32]

- **गुडलेन्स-**'गुडलेन्स' मॉरिशस के उत्तरी छोर पर समुद्री इलाके से कुछ दूरी पर स्थित एक गाँव है। यहाँ पर विभिन्न धर्मावलम्बियों के धार्मिक स्थल हैं तथा चीनी कारखाने के साथ-साथ कपड़े उद्योग के अनेक कारखाने भी हैं। यहाँ पर प्रत्येक रविवार को मंडी लगती है। गुडलेन्स में सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों के अतिरिक्त क्षयरोग का एक चिकित्सालय भी स्थित है।

- **फ्लाक-** मॉरिशस के पूर्वी छोर पर स्थित 'फ्लाक' एकमात्र ग्रामीण शहर है। फ्लाक अपने रविवासरीय मंडी के लिए प्रसिद्ध है। फ्लाक में अनेक गिरजाघर, मंदिर, मस्जिद, जिला-न्यायालय, अस्पताल, आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त खेल-कूद के मैदान व कई माध्यमिक विद्यालय हैं। इससे कुछ दूरी पर ऐतिहासिक चीनी कारख़ाना है जहाँ पर सन् 1937 ई. के मजदूर आंदोलन में 4 मजदूरों की मौत हो गयी थी। फ्लाक से 8-10 किमी की दूरी पर आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त बेलमार नामक तट पर जल-उद्यान है। फ्लाक से ही 10-15 किमी की दूरी पर पर्यटकों के आकर्षण केंद्र 'इल-ओ-सर्फ' नामक टापू है जहाँ पर जाने के लिए नौका का प्रयोग किया जाता है। फ्लाक से 12-15 किमी की दूरी पर मॉरिशस के

राष्ट्रपिता 'शिवसागर रामगुलाम' की जन्मस्थली 'केवलनगर' ग्राम है। जिसे एक आदर्श नगर में परिणत करने की योजना बनाई गयी है।

- **रोसबेल-** 'रोसबेल' मॉरिशस की राजधानी 'पोर्टलुई' से लगभग 35-40 किमी की दूरी पर दक्षिण दिशा में अवस्थित है। यहाँ सप्ताह में दो बार मेलानुमा मंडी लगती है। रोसबेल में वस्त्र उद्योग के कई इमारतें, बैंक, सरकारी व गैर-सरकारी माध्यमिक विद्यालय व चीनी का कारख़ाना भी है। इसके साथ ही यहाँ पर कई मंदिर व मस्जिदें भी हैं। रोसबेल में ही 'जवाहर लाल नेहरू' नामक एक अस्पताल है, जो आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त है। इसका निर्माण भारत सरकार के सहयोग से हुआ है। रोसबेल से 10-12 कि.मी. की दूरी पर 'लावानिल' नामक मगरमच्छ पार्क है जिसमें विभिन्न किस्म के जीव-जन्तु पाये जाते हैं।
- **माहेबर्ग-** 'माहेबर्ग' मॉरिशस का एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। सन् 1810 ई. में इसी शहर के सामने अँग्रेज़ और फ्रेंच सेनाओं के मध्य सागरीय युद्ध हुआ था। यहाँ पर एक ऐतिहासिक संग्रहालय है जिसमें 1810 ई. के युद्ध से संबन्धित अवशेष आज भी मौजूद हैं। माहेबर्ग से कुछ दूरी पर 'व्ये ग्रांपोर' नामक एक गाँव है, जो डचों के शासनकाल में मॉरिशस की राजधानी थी। यहाँ पर डच शासनकाल की अनेक इमारतों के अवशेष देखे जा सकते हैं। साथ ही यहाँ पर कपड़ा उद्योग की इमारतें, बैंक, दक्षिण टापू का बस अड्डा व कई माध्यमिक विद्यालय हैं। माहेबर्ग से कुछ दूरी पर 'लेवाल' नामक एक प्राकृतिक उद्यान(पार्क) है। यह पार्क लगभग सौ एकड़ जमीन पर बना हुआ है। इस पार्क में बंदर, हिरन व पक्षियों के अतिरिक्त मीठे पानी के तालाब में विविध प्रकार की मछलियाँ व झींगे भी पाये जाते हैं। माहेबर्ग शहर के पास ही 'सर शिवसागर रामगुलाम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा' है।

माहेबर्ग से कुछ दूरी पर 'ब्लूबे' नामक एक पर्यटन केंद्र है, जो यहाँ के रमणीय समुद्रतट व पाँच सितारे होटल के कारण प्रसिद्ध है। माहेबर्ग मॉरिशस के दक्षिणी समुद्र तट पर स्थित है। **"इस शहर के सागरोन्मुख भाग को सजाकर इसे 'गायता जुवाल वाटर फ्रंट' नाम दिया गया है।"[33]**

- **परी तालाब-** 'परी तालाब' एक प्राकृतिक झील है। इसका जल अत्यंत पवित्र है। मॉरिशस के दक्षिण में स्थित झील Grand Bassin नाम से भी इसे जाना जाता है। फ्रांसीसियों के शासनकाल में इसका नाम Grand Bassin था। परी तालाब के संबंध में एक किंवदंती है कि प्राचीन काल में स्वर्ग से परियाँ आकर इस झील के शीतल, निर्मल और गंधरहित जल में स्नान और जलक्रीड़ाएँ करती थीं। इसी वजह से झमन गोसाई नामक व्यक्ति ने इसका सांस्कृतिक नाम परी तालाब रखा। मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय परी तालाब को अपना तीर्थ स्थल मानते हैं। वे लोग शिवरात्रि के अवसर पर पैदल जाकर इस तालाब से काँवर में जल लाते हैं और उसे भगवान शिव पर चढ़ाते हैं। भारत से गंगाजल लाकर इस झील में प्रवाहित किया गया था तत्पश्चात इसका नाम 'गंगा तालाब' रखा गया। सन् 2005 में इसमें हिमालय से प्रवाहित गंगोत्री का जल लाकर डाला गया। जिससे इसका महत्व और बढ़ जाता है। वर्तमान में यह हिंदुओं का सबसे बड़ा तीर्थस्थल है।
- **आप्रवासी घाट-** सन् 2006 में मॉरिशस में स्थित आप्रवासी घाट को विश्व धरोहर का दर्जा दिया गया है। **"आप्रवासी घाट हिन्द महासागर में मॉरिशस की राजधानी पोर्टलुई में स्थित एक इमारत परिसर है। यह भारत से लाए गए अनुबंधित श्रमिकों एवं कर्मचारियों तथा गिरमिटिया मजदूरों का एक आव्रजन डिपो या केंद्र था जो कालांतर में एक ब्रिटिश उपनिवेश बन गया। 1849 से 1923 के बीच लगभग 5 लाख से अधिक अनुबंधित भारतीय अनुबंधित श्रमिकों के रूप में इस इमिग्रेशन डिपो से गुजरे जिन्हें ब्रिटिश साम्राज्य भर में फैले प्लांटेशन में भेजा गया था।.....**

इनमें अधिकांश संख्या भारतीयों की थी। इस प्रकार ये आप्रवासी डिपो या घाट मॉरिशस की एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पहचान बन गया है। इसका वर्तमान नाम आप्रवासी घाट 1987 से प्रयोग में आया है। इसका अँग्रेजी रूपान्तरण इमिग्रेशन डिपो है।"[34]

मॉरिशस के समुद्र तट- मॉरिशस के भौगोलिक परिदृश्य को सुशोभित करने एवं उसको वैश्विक पहचान दिलाने में वहाँ के मनमोहक समुद्र तटों की भी अहम् भूमिका रही है। मॉरिशस के समुद्र तट बहुत ही आकर्षक हैं, अपने इन्हीं गुणों के कारण वे सहज ही पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। मॉरिशस के समुद्र तटों की चारुता का उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण अपनी पुस्तक 'मॉरिशस का इतिहास' में लिखते हैं- **"मॉरिशस के समुद्र तट बड़े रमणीक हैं। तट की सफेद बालू मोती की तरह चमचम चमकती रहती है।..... -सूर्य- स्नान के इच्छुक आनंदविभोर होकर सूर्य-स्नान का आनन्द लूटते हैं तथा सागर-स्नान के प्रेमी समुद्र के निर्मल जल में गोता लगाकर आँख मिचौनी करते हैं और नाना प्रकार की क्रीड़ाओं में मग्न रहते हैं। यहाँ के रमणीय और निरापद समुद्र तट विदेशी पर्यटकों को अत्यधिक आकर्षित करती हैं। इसीलिए उनका कहना है कि मॉरिशस का समुद्र तट दुनिया के समस्त रमणीय समुद्र तटों से कहीं अधिक सुहावने हैं।..... यहाँ के समुद्रतट अपनी प्राकृतिक सुषमा, मछलियाँ पकड़ने, नौका विहार, तैराकी और तरंग पटी खेलों के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध हैं।..... टापू के पूर्व में बेलमार, पश्चिम में फ्लीक-आँ-फ्लाक, उत्तर में मोश्वाजी और ग्रांबे तथा दक्षिण में ओ-ब्ले कुछ ऐसे समुद्र तट हैं जिन पर छुट्टियों के दिन जमघट लगा रहता है।"[35]**

मॉरिशस के कुछ प्रसिद्ध समुद्रतटों का परिचय निम्नवत् प्रस्तुत है-

Troud Argent Beach-यह रोड्रिग द्वीप में स्थित छोटा-सा साफ-सुथरा समुद्र तट है, जो स्वच्छ समुद्री जल, सफेद बालू और पथरीले किनारों से आवेष्टित है। यह समुद्र तट आरामदायक पिकनिक और सूर्य-स्नान के लिए सर्वोत्तम जगह है।

Ilot Gabriel Beach- मॉरिशस स्थित यह समुद्र तट अपने सूर्योदय एवं सूर्यास्त के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का सूर्योदय एक अनोखा रंग लिए होता है, जिसको देखने के लिए पर्यटकों का हुजूम मौजूद रहता है।

Ile Aux Cerfs-मॉरिशस के पूर्वी तट पर स्थित 'सफेद रेत का बीच' अपने आप में अनोखा है। साथ ही यह शैलानियों को लुभाने वाला समुद्री तट है। इसके आस-पास लगे हरे-भरे वृक्ष और समुद्र का नीला पानी दोनों मिलकर इस तट की सुषमा में चार चाँद लगाते हैं। इस स्थान पर पर्यटकों को एक अजीब तरह की शांति का अनुभव होता है। अपनी इसी नैसर्गिक चारुता के कारण यह तट काफी मशहूर है।

ख- आप्रवासी भारतीय: अवधारणा

'आप्रवासी भारतीय' की अवधारणा को समझने से पूर्व यह जानना आवश्यक हो जाता है कि 'आप्रवासी से क्या तात्पर्य है? यह शब्द किन लोगों के लिए प्रयुक्त किया जाता है तथा इसके समानार्थी शब्द क्या हैं? यहाँ पर सर्वप्रथम 'प्रवास' के बारे में जानना आवश्यक है क्योंकि प्रवास से ही जुड़ा हुआ शब्द है आप्रवासी।

प्रवास- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते वह अनेक व्यक्ति के संपर्क में आता है तथा विचारों एवं भावों का आदान-प्रदान करता है। इसके साथ ही वह विभिन्न उद्देश्यों से विभिन्न स्थानों और देशों की ओर गमन करता है और कुछ समय व्यतीत करने या अपने उद्देश्य की पूर्ति होने पर पुन: अपने देश वापस आ जाता है। मनुष्य द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर रहना प्रवास कहलाता है। 'प्रवास' शब्द 'वस'

धातु में 'प्र' उपसर्ग लगने से बना है। 'वस' धातु का प्रयोग 'रहने' या 'वास करने' के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। 'प्र' उपसर्ग लगाने से इसके अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। प्रवास का शाब्दिक अर्थ विदेश गमन अथवा घर से अन्य स्थान पर बसना या वास करना से लिया जाता है। इस प्रकार प्रवास का अर्थ है अपने मूलस्थान या घर को छोड़कर अन्य स्थान पर वास करना। वृहत हिन्दी कोश के अनुसार- प्रवास(संज्ञा) **"परदेश में रहना, विदेश वास, परदेश जाना।"[36]** संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर के अनुसार- प्रवास (संज्ञा) **"अपना देश छोड़कर दूसरे देश में रहना, विदेश।"[37]**

भारत से विदेशों की ओर गमन करने वाले तथा वहाँ रहकर जीवन यापन करने वाले लोगों को सामान्यत: प्रवासी भारतीय, आप्रवासी भारतीय व भारतवंशी आदि शब्दों से संबोधित किया जाता है किन्तु साहित्य की दृष्टि से इन समानार्थी शब्दों में मूलभूत अंतर भी विद्यमान है, जिसे समझना नितांत आवश्यक है।

प्रवासी- 'प्रवासी' उन लोगों को कहा जाता है जो विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान या देश में जाकर निवास करते हैं और एक निश्चित अवधि में अपने उद्देश्यों को पूरा कर पुन: स्वदेश लौट आते हैं। दूसरे शब्दों में प्रवासी से तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों से है जो अपना घर गाँव तथा देश को छोड़कर अन्य स्थान या देश में निवास करते हैं। संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर के अनुसार- **"प्रवासी (विशेषण)-परदेश में रहने वाला, परदेशी"[38]होता है।**

संस्कृत हिन्दी कोश के अनुसार- **"प्रवासी' किंवा प्रवासिन् का अर्थ है- (प्रवसणानि) यात्री, बटोही या विदेश में रहने वाला।"[39]**

प्रवासी शब्द को परिभाषित करते हुए उषा राजे सक्सेना लिखती हैं- **" 'प्रवासी' शब्द 'प्रवास' का विशेषण है। प्रवासी एक मनोविज्ञान है, एक अंतर्दृष्टि है जिसे स्वत: 'फोर्म्युलेट' होने में बरसों-बरस लगते हैं। एक तरह से प्रवासी वे कलमें हैं जो अपने पेड़ों से कटी हुई टहनियाँ होने के बावजूद बरसों-बरस किसी और मिट्टी-खाद-पानी में अपनी जड़े रोपती हुई अपना बहुत कुछ खोने और नया कुछ उस भूमि से लेने-पाने के साथ अपने अंदर की गहराइयों में नई ऊर्जा सृजित करती हुई चेतना की कोंपले विकसित करती है।"[40]**

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निश्चित अवधि के लिए किया गया गमन प्रवास कहलाता है और तत्संबंधित व्यक्ति प्रवासी कहलाता है।

आप्रवासी- 'आप्रवासी' शब्द का प्रयोग ऐसे व्यक्तियों के लिए किया जाता है। जो एक निश्चित उद्देश्य से विदेश की ओर प्रस्थान करते हैं और फिर अलग-अलग कारणों से वे अपने देश न लौटकर वहीं विदेशी भूमि पर रच- बस जाते हैं। दूसरे शब्दों में वे लोग आप्रवासी कहलाते हैं, जो स्वदेश का परित्याग कर पूर्णत: विदेशों में बस जाते हैं। ऐसे लोगों की स्वदेश लौटने की संभावना नहीं रहती है। आप्रवासी से तात्पर्य उन लोगों से है जो अपने मूल देश से बाहर आकर किसी दूसरे देश में बस जाते हैं। वृहत हिन्दी कोश के अनुसार- **"बाहर से आकर किसी देश के भीतर बस जाने वाला।"[41]** तो राजपाल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार- **"आप्रवासी सं.(पु.)- किसी देश में आकर बस जाने वाला व्यक्ति।"[42]** आप्रवासी होता है।

आप्रवासी भारतीय की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए हिन्दी साहित्य और प्रवासी हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. कमलकिशोर गोयनका अपने साक्षात्कार (शोधार्थी

द्वारा दिनांक: 24.12.2019 को फोन के माध्यम से लिया गया साक्षात्कार / वार्तालाप) में कहते हैं कि –**"प्रारंभ में अँग्रेजी शब्द 'Immigrant' के लिए आप्रवासी शब्द प्रयुक्त होता रहा है। जब गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका गए थे उस समय विदेशों की ओर गमन करने वालों के लिए हिन्दी जर्नलिज़्म में आप्रवासी शब्द का इस्तेमाल किया जाता था। किन्तु जब से साहित्य में विदेशों की ओर गमन करने वालों की चर्चा होने लगी तब से प्रवासी शब्द का प्रयोग होने लगा।"**[43]

आप्रवासी भारतीय को निम्नवत् परिभाषित किया गया है- **"यह ऐसे भारतीय हैं जो लंबे समय से विदेशों में रह रहे हैं परन्तु उनके पास उस देश की नागरिकता नहीं है। इनके पासपासपोर्ट भी भारतीय ही होता है।"**[44]

'प्रवासी' और 'आप्रवासी' शब्दों में मूल अंतर सिर्फ इतना है कि जहाँ प्रवासी व्यक्ति की स्वदेश लौटने की अवधि निश्चित होती है, वहीं आप्रवासी व्यक्ति की स्वदेश लौटने की संभावना नगण्य होती है। दूसरे शब्दों में आप्रवासी व्यक्ति विदेशी भूमि में ही रच-बस जाता है।

भारतवंशी- 'भारतवंशी' ऐसे लोगों को कहा जाता है, जिनके पूर्वज भारत से बाहर जाकर विदेशी भूमि में हमेशा के लिए बस गए हैं तथा जो आप्रवासी भारतीय कहलाते हैं। इन्हीं आप्रवासी भारतीयों की विदेशी भूमि पर जन्मी सन्तानें 'भारतवंशी' कहलाती हैं। क्योंकि विदेशी भूमि पर जन्मी इन संतानों के पूर्वजों का संबंध भारत से रहा है।

मानव जीवन के इतिहास में प्रवास की यह प्रक्रिया बहुत पुरानी है। मानव जीवन के इतिहास में भिन्न-भिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर भिन्न भिन्न कालखण्डों में प्रवास की यह प्रक्रिया जारी रही है। प्रवास की दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं-

1- स्वेच्छा से प्रवास करना।

2- विवशता में प्रवास करना।

स्वेच्छा से प्रवास करना- स्वेच्छा से प्रवास करने वालों में वे व्यक्ति आते हैं जो किसी निश्चित उद्देश्य से एक निश्चित अवधि के लिए विभिन देशों की ओर गमन करते हैं और अपने उद्देश्य की पूर्ति होते ही वे पुन: स्वदेश लौट आते हैं। धर्म-प्रचार, शिक्षा, व्यवसाय इत्यादि उद्देश्यों से किया गया स्थानांतरण प्रवास कहलाता। प्राचीन काल में धर्म प्रचार हेतु तथा व्यापार वृद्धि हेतु अनेक लोगों ने भारत से विदेशों की ओर प्रस्थान किया था। यूरोपीय शक्तियों द्वारा विभिन्न देशों में साम्राज्य विस्तार हेतु किया गया प्रवास स्वेच्छा से किया जाने वाला प्रवास था। स्वतन्त्रता के पश्चात् 80-90 के दशक में अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, जर्मनी, डेनमार्क, स्विट्जरलैंड, चेकोस्लोवाकिया, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, इटली, कनाडा, इंग्लैंड आदि देशों की ओर पर्याप्त मात्रा में लोग ने उच्च शिक्षा, उन्नत व्यवसाय व अधिक आमदनी के उद्देश्य से गमन किया। स्वेच्छा से प्रवास करने वाले इन लोगों द्वारा रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है। इनके द्वारा रचित साहित्य में दो संस्कृतियों के मध्य होने वाली टकराहट एवं अपनी संस्कृति के प्रति मोह को दर्शाया जाता है।

विवशता में प्रवास करना- इसके अंतर्गत वे लोग आते हैं, जिन्हें यूरोपीय शक्तियों द्वारा छल-कपटपूर्वक, प्रलोभन देकर तथा डरा-धमकाकर ब्रिटिश औपनिवेशिक राष्ट्रों की ओर ले जाया गया। सन् 1834 ई. के आस-पास भारत से मॉरिशस, फीजी, सूरीनाम, गयाना, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिडाड एवं टोबैगो आदि औपनिवेशिक राष्ट्रों की ओर भारी तादाद में

भारतीय मजदूरों को वहाँ 'सोना-ही-सोना' मिलने का सब्जबाग दिखाकर तथा सुखमय जीवन यापन के झूठे सपने दिखाकर 'शर्तबंद प्रथा' के तहत ले जाया गया। वहाँ पर इन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ पशुवत् व्यवहार किया जाता था। साथ ही हर स्तर पर उनसे भेद-भावपरक व्यवहार किया जाता था। कड़ी-से कड़ी मेहनत करने के बावजूद भी उन्हें भरपेट भोजन के लिए तरसना पड़ता था। इन भारतीय मजदूरों को सड़ा-गला व अधपका खाना दिया जाताथा। तथा गोरे शासकों के कोड़ो की बौछार भी सहनी पड़ती थी। इन भारतीयों द्वारा अपने साथ लाये गए 'रामचरित मानस', 'गीता', 'रामायण', 'महाभारत', 'आल्हा' आदि धार्मिक ग्रंथ तथा भोजपुरी लोकगीत व हिन्दी मुहावरे विपत्ति के समय इनके संबल बने। विवशता में किए गए प्रवास में व्यक्ति के अपने देश पुन: वापस लौटने की संभावना कम थी क्योंकि ये गुलाम बनाकर ले जाए गए थे। अत: मालिक की अनुमति के बगैर वे लोग कोई भी कार्य नहीं कर सकते थे और न ही अपने देश लौट सकते थे। गिरमिटिया के तहत जाने वाले लोगों में बहुत कम लोग थे जो 'शर्तबंद' की शर्त को पूरा कर स्वदेश लौटे पाये हों। अर्थात् ये लोग वहीं पर रच-बस गए और यही लोग आप्रवासी भारतीय कहलाये। मॉरिशस, फीजी आदि देशों के हिन्दी साहित्यकारों द्वारा रचित साहित्य को आप्रवासी साहित्य कहा जाता है। इनकी रचनाओं में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की त्रासदी का यथार्थपरक अंकन मिलता है।

ग- मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन

मॉरिशस द्वीप में भारतीयों का आगमन व्यवस्थित रूप से अंग्रेजों के शासनकाल में सन् 1834 ई. से शुरू होता है किन्तु इससे पूर्व भी इस टापू पर भारतवासियों की उपस्थिति डच व फ्रेंच शासनकाल में भी थी। भारतीयों की परिश्रमशीलता, कार्यकुशलता, धैर्य व दृढ़संकल्पशक्ति से प्रभावित होकर फ्रेंच सरकार भारत से कुछ भारतीयों को

मॉरिशस में बुलाकर उनसे सड़क निर्माण व बन्दरगाह का निर्माण करवाई। फ्रांसीसियों के शासनकाल में मॉरिशस आने वाले भारतीय पांडिचेरी व चंद्रनगर के थे। इस तथ्य की ऐतिहासिकता व प्रामाणिकता के संदर्भ में प्रह्लाद रामशरण अपने ग्रंथ 'मॉरिशस का इतिहास' में लिखते हैं- **"यद्यपि मॉरिशस में भारतीय मजदूरों का आगमन व्यवस्थित रूप से सन् 1834 ई. में शुरू हुआ था, तथापि उससे पूर्व फ्रेंचकाल में काफी भारतीय इस टापू में रहते थे। ..... डचों के समय में भी एक भारतीय को माडेगास्कर से लाया गया था।..... जब डचों ने इस टापू को छोड़ा था तब भी कलकतिया नाम का एक भारतीय मजदूर यहाँ रहता था। फ्रेंचकाल में भारत के उन फ्रांसीसियों द्वारा शासित नगरों से काफी मात्रा में भारतीयों को यहाँ लाया गया था। ये भारतीय मजदूर विशेषत: चंद्रनगर और पांडिचेरी के थे। इनमें से कुछ मजदूरों ने जमीन में काम करने के बजाय पोर्टलुई के बंदरगाह का निर्माण किया था।..... इन भारतीयों में कुछ व्यापारी थे। कुछ सुनार, मोची तथा कुछ घरेलू नौकर-चाकर।"[45]**

सन् 1769 ई. के आस-पास भारत में 'मालाबार' के समुद्रतट पर फ्रेंचों का आधिपत्य था, उन्होंने पांडिचेरी को अपनी राजधानी बनाया था। अपने व्यापारिक हितों को ध्यान में रखकर ही फ्रेंचों ने 'मालाबार' से मद्रासी लोगों को यहाँ लाये। क्योंकि इससे पूर्व 'मलगासी' गुलाम मॉरिशस में मौजूद थे, जो खेती करने के अलावा कोई हुनर नहीं जानते थे। इसी वजह से फ्रेंचों ने व्यापार, नौकरी-चाकरी, हुनर, शिल्प आदि कार्यों के लिए मद्रासी लोगों को मॉरिशस लाये। मॉरिशस में आकर मद्रासियों ने अपने हुनर से काफी धन कमाया और वे काफी धनाढ्य हुए।

हिंदुस्तानी गुलाम- सन् 1758 ई. से पूर्व भारत के बंगाल प्रदेश से बहुत से गुलाम मॉरिशस लाये गए। क्योंकि उस समय मॉरिशस के समान भारत में भी फ्रेंचों का आधिपत्य था। देशी राजाओं के शासनकाल में भारतीयों को गुलाम बनाकर सुदूर देशों की ओर ले जाने की प्रथा थी। उस समय मॉरिशस में मोज़ाम्बिक के गुलाम रहते थे। उन्हीं के साथ भारतीय गुलामों को भी रखा जाता था।

भारतीय सैनिकों का आगमन- मॉरिशस द्वीप में सन् 1810 ई. में भी भारतीय सैनिकों का आगमन होता है। उस समय मॉरिशस में लगभग 9000 भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश सत्ता की ओर से फ्रेंचों के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया तथा मोताईलाँग के युद्ध में फ्रेंचों के छक्के छुड़ा दिए और अपनी वीरता का परिचय दिया। दूसरे शब्दों में कहें तो भारतीय सैनिकों के सहयोग से ही अंग्रेज़ मॉरिशस द्वीप पर कब्जा कर पाने में सफल हुए।

भारतीय कैदियों का आगमन- सन् 1810 ई. में मॉरिशस में अँग्रेजी सत्ता स्थापित हो जाने के बाद प्रथम अंग्रेज़ गवर्नर फारकुहार के शासनकाल में 835 भारतीय कैदियों का मॉरिशस में आगमन होता है जिनमें 6 औरतें भी थीं। उस समय भारत में भी ब्रिटिश सत्ता कायम थी। डकैत, खून, भारी अपराध व ब्रिटशों का विरोध करने वाले क्रांतिकारी युवकों को 15-20 वर्ष की कड़ी सजा दी जाने की प्रथा थी। मॉरिशस में अँग्रेजी सत्ता को स्थापित करने तथा यातायात की सुविधा के निमित्त सड़कों के निर्माण हेतु तत्कालीन गवर्नर फारकुहार ने 1816 ई. में भारत के तत्कालीन गवर्नर को एक प्रार्थना-पत्र लिखकर भारतीय कैदियों को मँगवाया और उनसे सड़क निर्माण तथा बन्दरगाह का निर्माण करवाया। इन्हीं भारतीय कैदियों की मदद से मॉरिशस की अधिकांश सड़कों का निर्माण हुआ तथा पोर्टलुई से क्यूर्पीप तक की मॉरिशस की पहली सड़क बनी। 'सितादेल' नामक दुर्ग का निर्माण हुआ। भारतीयों की परिश्रमशीलता व कार्यकुशलता से प्रभावित होकर तत्कालीन अँग्रेज़ गवर्नर जनरल हाल ने उन्हें 26 हजार डालर देने का हुक्म दिया था और

उनकी प्रशंसा करते हुए कहा था कि- **"भारतीय कैदियों ने अपने उत्तम कार्य से दो यात्रियों का मन जीत लिया था।"**[46] भारतीय कैदियों के कार्य की तारीफ करते हुए पादरी बीटन अपने ग्रंथ 'मॉरिशस में पाँच वर्ष' में लिखा है कि- **"कैदियों ने हमारा उपकार किया है।"**[47] इस प्रकार विभिन कार्यों हेतु भारत से सजा पाये कैदियों को लाया जाता रहा और सजा की अवधि समाप्त होने पर उन्हें पुन: वापस भारत भेज दिया जाता था। इसके अतिरिक्त कुछ अँग्रेज़ गवर्नर भारत से कुली मँगाने के पक्ष में भी थे क्योंकि उस समय दासप्रथा का अंत नहीं हुआ था और मॉरिशस में विभिन्न देशों के गुलाम काम करते थे। अपने व्यवसाय को उन्नत बनाने के उद्देश्य से अंग्रेज़ों ने भारतीय कुलियों को लाने की योजना बनायी। सन् 1834 ई. से पूर्व जिन कुलियों को यहाँ लाया गया उनसे गुलामों जैसा वर्ताव किया जाता था क्योंकि उस समय कुलियों के लिए न कोई नियम-कानून था और न ही उनका कोई शुभचिंतक (कुलीरक्षक का प्रावधान) था।

प्रतिज्ञाबद्ध कुलियों का आगमन- मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन योजनाबद्ध तरीके से दासप्रथा के समाप्त होने के बाद शुरू होता है। नेपोलियन की हार के पश्चात् ब्रिटेन में दास-प्रथा को बंद करने का पुरजोर प्रयास किया गया। विलियम बिल्बर फोर्स, जो दासों के शुभचिंतक थे, के नेतृत्व में व उनके अथक प्रयासों के पश्चात् ब्रिटेन में सन् 1807 ई. में दास-प्रथा को समाप्त कर दिया गया। जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश जहाजों पर दासों को नहीं ले जाया जा सकता था। ब्रिटेन में अपने आंदोलन की सफलता से उत्साहित होकर विलियम बिल्बर ने दुनिया भर के ब्रिटिश औपनिवेशिक देशों में दास-प्रथा को समाप्त करवाने हेतु आंदोलन चलाया। कई वर्षों के लंबे संघर्ष के बाद सन् 1833 ई. में ब्रिटिश संसद ने एक प्रस्ताव पारित करके समस्त औपनिवेशिक देशों में दास-प्रथा को समाप्त करने की घोषणा की। इस घटना के एक वर्ष बाद 1834 ई. में मॉरिशस, जो कि औपनिवेशिक देश था, में भी दासों को मुक्त कर दिया गया। मॉरिशस में इस नियम के लागू

होते ही दासों ने अपने को पूर्णरूपेण दासत्व से मुक्त कर लिया साथ ही उन्होंने गोरे शासकों के अधीन काम करने से साफ इन्कार कर दिया जिसके परिणामस्वरूप गोरे शासकों के चीनी उद्योग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगा। अपने उद्योग में हो रही हानि से चिंतित होकर कोठी के मालिकों व फ्रेंच जमींदारों ने सरकार के समक्ष अपनी समस्या रखी। कोठी के मालिक व जमींदार इस समस्या से निजात पाने की तरकीब खोजने लगे। मॉरिशस और भारत दोनों ही देशों में उस समय ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित था, जिसकी वजह से अंग्रेज़ों को भारतीयों की संघर्षशीलता, साहस तथा कठिन परिश्रमी होने की जानकारी थी। इसी वजह से भारत से 'शर्तबंद' प्रथा के तहत, जो दासत्व का ही दूसरा परिवर्तित, परिवर्धित और रूपांतरित रूप था, भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को भेजा जाने लगा।

सर्वप्रथम सन् 1834 ई. में 'शर्तबंद' प्रथा के तहत भारत से 2 जत्थों में लगभग 87 मजदूरों को मॉरिशस लाया गया। इन मजदूरों को दलालों व अरकाटियों द्वारा मॉरिशस में 'हर पत्थर के नीचे सोना-ही-सोना' मिलने तथा 'अपार धन प्राप्ति' व 'सुखमय जीवन यापन' का प्रलोभन देकर मॉरिशस में भेजा गया था। अकाल और भूख से पीड़ित निर्धन भारतीयों, विशेषकर- पूर्वी उत्तरप्रदेश तथा बिहार के भोली भाली गरीब जनता, को दलालों ने प्रलोभन व विभिन्न प्रकार की धमकी देकर तथा मजबूर करके उन्हें मॉरिशस आने के लिए प्रेरित किया। ये दलाल व अरकाटी ऐसा इसलिए करते थे क्योंकि उन्हें मॉरिशस के गोरे जमींदारों द्वारा प्रत्येक मजदूर पर 120 रुपये की रकम मिलती थी। इसीलिए अधिक-से अधिक धन कमाने के उद्देश्य से ये दलाल लोग ज्यादा-से-ज्यादा भारतीय मजदूरों को मॉरिशस भेजने की कोशिश करते थे। दलालों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को कलकत्ता डिपो में एकत्र किया जाता था और फिर समुद्री जहाजों द्वारा उन्हें मॉरिशस भेजा जाता था। 'शर्तबंद' प्रथा के तहत मजदूरों को मॉरिशस में आने

के पहले एक सहमति-पत्र पर भी हस्ताक्षर करना पड़ता था जिसे 'एग्रीमेंट' कहा जाता था। इस 'एग्रीमेंट' में मजदूरों के लिए कुछ शर्तें होती थीं जिनसे सहमत होकर मजदूर अपना 'एग्रीमेंट' करवाते थे। 'सहमति-पत्र' पर जो शर्तें होती थीं, उनका उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"शर्तबंद प्रथा को गिरमिट प्रथा भी कहा जाता है। इस प्रथा के अनुसार प्रत्येक भारतीय प्रवासी को नौकरी करने से पहले एक सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर करना होता था। उनकी शर्तें देखने में आकर्षक होती थी, पर वास्तव में उनकी दशा कृत-दासों के समान हो जाती थी। उनके नियम थे-**

1- पाँच वर्ष तक मॉरिशस में काम करना होगा।

2- आने-जाने का मार्ग-व्यय मालिक द्वारा दिया जाएगा।

3- पुरुष का वेतन पाँच रुपये मासिक और स्त्री का चार रुपये मासिक होगा।

4- निम्नलिखित राशन, प्रतिदिन दिया जाएगा: -

क- एक सेर चावल पुरुष को

ख- तीन पाव चावल स्त्री को

ग- पाव भर दाल

घ- आधी छटाँक नमक

ङ- आधी छटाँक सरसों

च- आधी छटाँक तेल

5- साल भर में एक बार निम्नलिखित वस्तुएँ दी जाएँगी: -

क- एक धोती

ख- एक कमीज

ग- दो कम्बल

घ- एक फितई (जाकेट)

ङ- दो टोपियाँ

6- नौकरी स्वीकार करते समय छह महीने का वेतन पेशगी दिया जाएगा, बाकी हर महीने मिला करेगा।"[48]

प्रवासन की यह प्रक्रिया सन् 1834 ई. से प्रारम्भ होकर सन् 1838 ई. तक लगातार जारी रही। प्रवासन की इस अवधि में लगभग 40 हजार भारतीयों को 'एग्रीमेंट' के तहत मॉरिशस लाया गया। मॉरिशस में उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाता था तथा उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी जाती थीं। भारत से मजदूरों को तो 'शर्तबंद' प्रथा के तहत ले जाया जाता था किन्तु मॉरिशस में उनके साथ क्रीत दासों जैसा व्यवहार किया जाता था। इन गिरमिटिया मजदूरों का शोषण भारत छोड़ते ही समुद्री यात्रा के दौरान ही प्रारम्भ हो जाता था। समुद्री जहाजों में इनके लिए न तो ढंग से बैठने के लिए जगह होती थी और न ही खाने-पीने तथा सोने का उचित प्रबंध होता था। समुद्री यात्रा के दौरान बीमार होने पर यात्रियों के लिए भी न तो दवा का प्रबंध होता था और न ही जहाज के डाक्टर को इलाज करने दिया जाता था। मजदूरों के साथ अन्याय करने तथा उनकी बातों को दलालों द्वारा अनसुनी कर दिए जाने पर यदि कोई व्यक्ति सवाल करता था तो उस पर या तो कोड़े की बौछार होती थी या फिर उसे उठाकर समुद्र में फेंक दिया जाता था। कभी-कभी तो अत्यधिक बीमार व्यक्ति को जीवित ही समुद्र के हवाले कर दिया जाता था। समुद्री यात्रा के दौरान दलालों की प्रताड़णा से तंग आकर तथा कभी-कभी अपनों के बिछुड़ने के गम से भी कुछ लोगों ने अथाह सागर में पनाह लेना उचित समझा अर्थात् कुछ लोगों ने यात्रा के दौरान ही आत्महत्या कर ली। तीन-चार महीनों की समुद्री यात्रा की यातनाओं से बचकर जो कुली मॉरिशस पहुँचते थे उनको सर्वप्रथम बन्दरगाह के कुलीखाना में रखा जाता था और फिर कोठी के मालिक व गोरे जमीदारों द्वारा अपने मनमुताबिक कुलियों की खरीद-फरोख्त होती थी। कभी-कभी तो अच्छे और हृष्ट-पुष्ट कुली को लेने के लिए मालिकों में हाथापाई तक हो जाती थी। मालिकों को सौंपने से पूर्व कुलीखाना में

कुलियों के फोटो, उनके नाम, पता, उम्र आदि को नोट किया जाता था और उनको टीन के टुकड़े में अंकित एक नंबर दिया जाता था। यह नंबर ही मॉरिशस में उनका पहचान पत्र बन जाता था। इसके खो जाने पर कुली को जुर्माना भरना पड़ता था। साथ ही इस नंबर के बिना उन्हें कहीं भी आने जाने की छूट नहीं होती थी। इन जहाजी भाइयों को कुलीखाना से खरीदकर अलग-अलग कोठियों में रखा जाता था। यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी समेत यहाँ मजदूर के रूप में आता था तो उन दोनों को एक ही कोठी में न रखकर अलग-अलग कोठी में भी रखा जाता था। इन गिरमिटिया मजदूरों की पीड़ा उस समय और बढ़ जाती थी जब इन्हें इस वास्तविकता का पता चलता था कि मॉरिशस में उन्हें मजदूर नहीं बल्कि दास बनाकर लाया गया है। वे अपने को ठगा-सा महसूस करने लगते थे। परंतु अपने देश और समाज से दूर एक अनजान देश में क्रूर मालिकों के बीच वे बेचारे असहाय गिरमिटिया मजदूर कर भी क्या सकते थे! और तब शुरू होता था उनके अंतहीन शोषण के बीच जिंदा रहने का संघर्ष!

'शर्तबंद प्रथा' के तहत जिन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को मॉरिशस लाया गया था उनके साथ फ्रेंच जमींदारों, कोठी के मालिकों तथा कोठी के सरदारों द्वारा क्रीतदासों के समान व्यवहार किया जाता था। गिरमिट की शर्तों को दरकिनार कर उनका हर प्रकार से शोषण किया जाता था। उनसे गन्ने की खेती तथा पत्थर तुड़वाने का काम लिया जाता था। उनसे कठोर-से-कठोरतम काम करवाया जाता था। बावजूद इसके उन्हें भूखों मरने के लिए छोड़ दिया जाता था। क्योंकि मजदूरों को जो खाद्य-सामग्री दी जाती थी वह सड़ी-गली और अधपकी होती थी। रहने के लिए फूस से बनी झोपड़ी दी जाती थी जिसमें न तो प्रकाश पहुँचता था न ही शुद्ध हवा आती थी। शीलन से भरी होने के कारण वह झोपड़ी अनेक रोगों का घर होती थी। गिरमिटिया मजदूरों से खेतों में गन्ने की रोपाई, निराई, कटाई आदि करवाया जाता था तथा बैलों के स्थान पर मजदूरों से ही गन्ने से भरी हुई

गाड़ियाँ खिंचवायी जाती थीं। यदि कभी कोई मजदूर खेतों में विलम्ब से पहुँचताथा या काम करने में ढीलापन दिखाता थाया कभी बीमार पड़ जाता थाया काम की थकावट से सुस्ताने लगता था तो कोठी के सरदारों द्वारा उन पर कोड़ों तथा बाँसों की बौछार होने लगती थी। मालिकों से सवाल करने या अपने प्रति किए गए अत्याचार के बारे जब कोई मजदूर विरोध करता था तब कोठी के सरदारों तथा मालिकों द्वारा उन्हें कैद में डाल दिया जाता था या उन पर मालिकों के कुत्ते छोड़ दिए जाते थे, जो मजदूरों को नोच डालते थे। यदि कभी कोई मजदूर बीमारी की वजह से या किसी अन्य कारण से काम पर न पहुँच पाता था तो दूसरे दिन उससे दुगुना काम लिया जाता थाऔर दो दिन का उसका वेतन काट लिया जाता था। इस नियम को 'डबल कट' कहते थे। मॉरिशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ किए गए अन्याय व उनकी त्रासदपूर्ण स्थिति का वर्णन करते हुए पंडित आत्माराम विश्वनाथ 'मोरिशस का इतिहास' में लिखते हैं- **"रात को दो बजे कुली को उसकी झोपड़ी से खींचकर काम पर ले जाया करते थे और आठ या दस बजे रात्रि को उसको छुट्टी मिलती थी। सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम करना, यह तो सर्वत्र नियम ही सा हो गया था।..... कोठी के कर्मचारी गाड़ी में डंडा को लादकर बाहर निकला करते थे। 500 या 700 कुलियों का सत्कार करने के लिए एक कोर (बोझा) लकड़ी जरूर ही साथ होनी चाहिए। स्वयं कमिश्नरों का विधान है कि मारपीट और लाठी प्रहार, यह तो नित्य की परिपाटी ही थी।"..... "सुंदर, नाजुक और कोमल शरीर धारण करने वाली फ्रेंच औरतें भी कभी-कभी काली माई का रुद्र रूप धारण करके कुलियों को मारपीट की प्रसादी बाँटा करती थीं।"**[49]

मॉरिशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ अनेक प्रकार के अन्याय किए जाते थे, जिनमें से एक था- वेतन न देना। भारतीय गिरमिटिया मजदूरों से कठोर परिश्रम कराने के बावजूद भी उन्हें न तो पूरी पगार दी जाती थी और न ही नियत समय पर दी

जाती थी। कभी-कभी तो तीन-तीन, चार-चार महीने तक वेतन नहीं दिया जाता था। और कभी-कभी तो अनेक प्रकार के दण्ड विधान करके उनके वेतन की कटौती कर ली जाती थी। इस संबंध में 'रायल कमीशन' में कहा गया है- **"चार से छ: मास तक कुलियों का वेतन रोक रखना जमींदारों की नजर में कोई अपराध नहीं था। तीन मास तक तलब न देना, यह तो सामान्य नियम ही सा हो गया था।"**[50]

भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के निवास स्थान (घर)- आरंभ में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के रहने के लिए कोई उचित प्रबंध नहीं था। सन् 1858 ई. में एक सरकारी नियम के अनुसार कोठी मालिकों को कुलियों के रहने के लिए उचित प्रबंध करने पर मजबूर किया गया। जिसके परिणामस्वरूप लकड़ी और पत्थरों की दीवारों पर घास-फूस का छप्पर डालकर मजदूरों के रहने हेतु व्यवस्था की गयी। जिसमें न तो शुद्ध हवा पहुँच पाती थी और न ही धूप व रोशनी पहुँच पाती थी। एक ही घर में कई-कई लोगों को रहना पड़ता था। उसी में उनके मवेशी भी रहते थे जिसकी वजह से शीलन व दुर्गंध हमेशा बनी रहती थी, जो बीमारी का कारण बनता था। सन् 1867 ई. में एक नया कानून बना जिसमें भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के निवासस्थल के बारे में सुधार की बात की गयी तथा सन् 1878 ई. के पश्चात् कुलियों के मकान की लंबाई, चौड़ाई व ऊँचाई तथा एक मकान के अंदर रहने वालों की संख्या निश्चित की गयी। साथ ही घरों में हवा व प्रकाश की समुचित व्यवस्था की गयी तथा घरों के आगे और पीछे की तरफ खुली जगह की व्यवस्था की गयी। 'रायल कमीशन' के सिफारिश के परिणामस्वरूप ही कुलियों के घर में परिवर्तन हुआ।

मॉरिशस में कुलियों के लिए जो दवाखाना था वह कोठी मालिकों के इशारे पर चलता था। दवाखाना में न तो हर मर्ज की दवा रहती थी और न ही समय पर डाक्टर रहते थे। और अगर रहते भी थे तो वे उचित इलाज नहीं करते थे। क्योंकि वे कोठी

मालिकों के अधीन काम करते थे। अत: वे स्वेच्छा से किसी भी मजदूरों का इलाज नहीं करते थे। कभी-कभी तो मालिकों के इशारे पर वे मजदूरों को ऐसी दवाएँ दे देते थे कि उनकी हालत सुधरने के बजाय दिन-ब-दिन बिगड़ती जाती थी। डाक्टरों के इस तरह के बर्ताव से तंग आकर मरीज अस्पताल से भाग जाते थे या मरने पर मजबूर हो जाते थे। मजदूरों के स्वास्थ्य की देखभाल हेतु सन् 1845 ई. में एक कानून बना जिसमें हर कोठी में एक दवाखाना होने की बात कही गयी। इसके कुछ दिन पश्चात् और एक कानून बना जिसके तहत मजदूरों की दवा का प्रबंध कोठी मालिकों के जिम्मे डाला गया। लेकिन कोठी मालिकों द्वारा इस कानून का सख्त विरोध किया गया।

तत्कालीन समय में कुलियों व गुलामों का नैतिक पतन पर्याप्त मात्रा में हुआ। क्योंकि उस समय कुली मजदूर के रूप में स्त्रियों की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक थी। मॉरिशस में स्त्रियों को लेकर मजदूरों व कोठी मालिकों के बीच तथा अन्य देशों से आए गुलामों के मध्य झगड़ा होता रहता था। उस समय स्त्रियों की दशा अत्यंत ही दयनीय थी। वह पुरुष वर्ग के लिए नरम चारा थी। हर वर्ग के पुरुष उससे अपनी वासनापूर्ति करते थे। कभी-कभी तो स्त्री पर अपना एकाधिकार जमाने के लिए पुरुषों में मार-काट तक की नौबत आ जाती थी। उस समय किसी भी मजदूर स्त्री की आबरू सुरक्षित नहीं थी। लोग अपनी आँखों के सामने अपनी पत्नी व बहू-बेटियों की इज्जत नीलाम होते देखते रह जाते थे उनमें प्रतिकार करने की हिम्मत नहीं थी। क्योंकि वे प्रतिकार के परिणाम से भली-भाँति परिचित थे। कोठी के मालिकों, गोरे जमीदारों, सरदारों, दलालों व अन्य पुरुषों की हवस की शिकार स्त्रियाँ या तो आत्महत्या कर लेती थीं या फिर नदी, कुआँ आदि में कूदकर अपनी जान दे देती थीं या यौन शोषण को चुपचाप बर्दाश्त करती रहती थीं। कुलियों में व्याप्त अनैतिकता के बारे में स्कोब्ल साहब लिखते हैं- **"कुलियों में भयंकर नैतिक अत्याचार प्रचलित हैं। स्त्री-पुरुष के संभोग के विषय में कोई निर्बंध नहीं है। विवाह को कोई जानता**

ही नहीं है। इससे भी घृणित आरोप यह था कि पुरुषों में अस्वाभाविक कुकर्म (संभोग) जारी है।..... मॉरिशस के सारे लोग इन नीच घटनाओं से परिचित हैं।"[51]

तत्कालीन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक दशा का उल्लेख करते हुए 'रायल कमीशन' में कहा गया है- **"समुद्र का उल्लंघन करके परदेश की यात्रा करना हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार निषिद्ध है। कलकत्ता, बम्बई, मद्रास आदि बंदरों को छोड़कर जहाज पर चढ़ते ही कुली लोगों की यही भावना रहती थी कि उनका धर्म नष्ट हो गया। कई अपना यज्ञोपवीत तोड़कर समुद्र में फेंक देते थे और कई अपनी चोटी ही काट डालते थे।"[52]** उस समय मॉरिशस में भारत से तीन जातियाँ अधिकांश मात्रा में पहुँची थी, जिनमें- मद्रासी, बिहारी और मराठा प्रमुख थे। मॉरिशस में मद्रासी प्रजा के मंदिर सर्वत्र देखे जा सकते हैं तथा उनके पर्व 'कावड़ी' का भी आयोजन होता था। मुसलमानों का पर्व मुहर्रम भी मनाया जाता था। उस समय हिंदुओं को उतनी छूट नहीं थी कि वे अपने पर्व व त्यौहार मना सकें। उन्हें तो गीता, रामायण, भागवत, रामचरितमानस, हनुमान चालीसा आदि का पाठ करने या उनकी पंक्तियाँ गुनगुनाने पर भी कड़ी-से-कड़ी सजा दी जाती थी। स्वधर्माभिमान और जात्याभिमान के नष्ट हो जाने पर बहुत से हिंदुओं ने धर्म परिवर्तन कर लिया। तत्कालीन समय में हिन्दू प्रजा को अपने रीति-रिवाजों तथा संस्कारों को विधिवत करने की पूर्ण मनाही थी। हिन्दू प्रजा के शवों को जलाने की अनुमति नहीं थी। किन्तु 'रायल कमीशन' के सिफारिशों के पश्चात् उनकी धार्मिक दशा में सुधार हुआ।

मॉरिशस की कानून व्यवस्था और प्रशासन भी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के पक्ष में कोई काम नहीं करती थी। बल्कि गोरे जमींदार व कोठी के मालिक कानून व्यवस्था और प्रशासनसे साँठ-गाँठ करके मजदूरों पर कहर बरपाते थे। मॉरिशस में भारतीय कुलियों एवं कोठी मालिकों के मध्य होने वाले झगड़ों का निबटारा करने एवं कुलियों को न्याय दिलाने

तथा उनके हक के रक्षार्थ 'कुलीरक्षक' की नियुक्ति की गयी थी। लेकिन ये कुली रक्षक भी गोरे शासकों व कोठी के मालिकों से साँठ-गाँठ करके मालिकों के ही हितार्थ कार्य करते थे। वे न तो कुलियों की वास्तविक स्थिति की जानकारी रखते थे और न ही उनके द्वारा किए जाने वाली शिकायतों पर ध्यान देते थे। जब कभी ब्रिटिश संसद द्वारा या मॉरिशस के राज्यपाल द्वारा उनसे मजदूरों की स्थिति की जानकारी माँगी जाती थी तब वे जवाब में यही कहते थे कि 'यहाँ के गिरमिटिया मजदूरों को किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं है, अपितु वे यहाँ पर बहुत खुश हैं तथा सुखमय जीवन यापन कर रहे हैं। कोठी के मालिक उनका बहुत ख्याल रखते हैं।' इस प्रकार की झूठी बातें कहकर वे अपनी ज़िम्मेदारी से मुक्त हो जाते थे। जबकि वास्तव में मजदूरों की स्थिति अत्यंत ही दयनीय होती थी। 'कुलीरक्षक' कुलियों के रक्षक तो नहीं बन सके लेकिन उनके अधिकारों का हनन करके, उनके दुख-दर्दों को अनसुनी करके कुलियों के भक्षक जरूर बन गए थे।

मॉरिशस में कुलियों के साथ निर्मम व्यवहार किया जाता था। उन्हें मनुष्य समझा ही नहीं जाता था अपितु उनको हाड़-माँस निर्मित यंत्र समझा जाता था। इसी वजह से उनके साथ पशुवत् व्यवहार किया जाता था। मॉरिशस में भारतीय कुलियों की स्थिति जेलखाने के कैदियों से भी बदतर थी। रात-दिन कठोर-से-कठोर मेहनत करने के बावजूद भी उन मजदूरों को न तो भरपेट भोजन दिया जाताथा और न ही उन्हें चैन की नींद सोने दिया जाता था। कभी-कभी तो मालिकों की ज़्यादतियों से तंग आकर तथा उन त्रासदियों से बचने हेतु बहुत से मजदूर जेलखाने की शरण लेना पसंद करते थे। क्योंकि जेलखाने में इतना कष्ट नहीं दिया जाता था। वहाँ के कैदियों का जीवन इन मजदूरों से बेहतर था। भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की त्रासदी का चित्रण करते हुए पंडित आत्माराम विश्वनाथ 'रायल कमीशन' का हवाला देते हुए लिखते हैं- **"कमीशन ने एक स्थान पर लिखा है कि खेत पर के भयंकर कष्टों को सहन न कर सकने के कारण बहुत से कुली अपनी आँखों में सूई**

भोंककर दवाखाने में जाया करते थे। इसी तरह खेत में 10 या 12 घंटे काम करके मरने की अपेक्षा जेलखाना में रहना ही कुली अधिक पसंद करते थे। कुली को जेलखाने में भोजन ठीक मिलता था, सोने का प्रबंध अच्छा था, दवा दारू मिलती थी, सख्त काम नहीं करना पड़ता था, हित-मित्रों की भेंट मुलाक़ात हो सकती थी, चोरी छुपी से हुक्का पानी भी प्राप्त हो सकता था और सोने को भी खूब मिलता था। तात्पर्य यह कि कैदियों को जेलखाने में आराम रहता था।"[53]

भारतीय गिरमिटिया मजदूर अपने कठोर परिश्रम से मॉरिशस के जंगल को हरे-भरे उपवन में तब्दील कर रहे थे। इसके बावजूद भी कोठी के मालिकों तथा जमींदारों द्वारा उनके साथ पशुवत् व्यवहार किया जाता था। भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की दयनीय स्थिति से द्रवित होकर कुछ स्थानीय लोग ने 'शर्तबंद प्रथा' के विरोध में आवाज बुलंद किया। जिसके परिणामस्वरूप मॉरिशस की सरकार ने मजदूरों की वास्तविक स्थिति को जानने हेतु सन् 1838 ई. में 'आंडरसन कमीशन' नामक एक जाँच आयोग का गठन किया। जाँच के पश्चात्कमीशन द्वारा मजदूरों के संदर्भ में एक प्रतिवेदन सरकार को पेश किया गया जिसमें मजदूरों के शोषण और दयनीय दशा का उद्घाटन किया गया। उस प्रतिवेदन का उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं-

"भारतीय मजदूरों को प्रतिदिन पंद्रह-पंद्रह घंटे काम कराकर उन्हें दण्डित किया जाता है।

1- भारतीय मजदूरों के घर संकुचित और गंदे होते हैं।

2- बीमार मजदूरों के प्रति उनके मालिक कोई ध्यान नहीं देते हैं।

3- रोगी मजदूरों को किसी प्रकार की दवा-दारू नहीं दी जाती है।

4- कुल भारतीय मजदूरों में आठ-नौ प्रतिशत मजदूर बीमार होकर मर जाते हैं।

5- मजदूरों को निर्धारित समय में अत्यधिक श्रम करना पड़ता है।

6- मजदूरों के निवास-स्थान दुर्गंधयुक्त होते हैं।"54

'आंडरसन कमीशन' के प्रतिवेदन से तत्कालीन भारत सरकार भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की वास्तविक स्थिति से वाकिफ होकर भारतीय मजदूरों के आप्रवासन पर रोक लगा देती है। जिसके परिणामस्वरूप सन् 1839 से 1842 ई. तक 'शर्तबंद प्रथा' के तहत मॉरिशस जाने वाले मजदूरों पर रोक लग जाती है। 'आंडरसन कमीशन' के सुझाव के परिणामस्वरूप तत्कालीन मॉरिशस के गवर्नर निकोले द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के हितार्थ कुछ नए कानून बनाए जाते हैं जिसके तहत 'शर्तबंद प्रथा' के अंतर्गत आये हुए मजदूरों को उनके एग्रीमेंट की समाप्त होने पर उन्हें वापस भेजने, उचित पारिश्रमिक देने, पर्याप्त मात्रा में भोजन सामग्री देने एवं काफी संख्या में भारतीय स्त्रियों को मॉरीशस में लाने का वादा किया गया था।

सन् 1839 से 1842 ई. तक 'शर्तबंद प्रथा' पर रोक लग जाने से मॉरिशस के कोठी मालिकों एवं जमींदारों को काफी नुकसान होने लगा। खेतों में काम करने वाले मजदूरों की कमी की वजह से उद्योग-धंधों में गिरावट आने लगी। इससे चिंतित होकर मॉरिशस की सरकार ने भारत की सरकार से 'शर्तबंद प्रथा' को पुनः चालू करने के लिए अनुनय-विनय किया। भारत सरकार ने मजदूरों के हितार्थ कुछ नए नियमों, जिसमें मजदूर रक्षक की नियुक्ति एवं एग्रीमेंट की अवधि पूरी कर चुकने वालों को स्वदेश लौटने का मार्ग-व्यय सरकार द्वारा वहन किए जाने, को लागू करके 'शर्तबंद प्रथा' को पुन: चालू कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप भारी तादाद में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का प्रवासन हुआ।

मजदूरों की आवाजाही का उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण एक तालिका[55] प्रस्तुत करते हैं, जो निम्नवत् है-

तालिका- 1

आगमन / प्रस्थानसाल	**आगमन**			**प्रस्थान**			**मॉरिशस में पीछे रह गए भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की कुल संख्या**
	पुरुष	**स्त्रियाँ**	**कुल**	**पुरुष**	**स्त्रियाँ**	**कुल**	
1834-1840	22,442	961	**23,403**	10,042	61	**10,103**	**13,300**
1841-1850	79,863	13,827	**93,690**	25,131	2,359	**27,490**	**66,200**
1851-1860	1,35,860	48,193	**1,84,053**	35,542	6,659	**42,201**	**1,41,852**
1861-1870	51,898	19,404	**71,302**	22,891	6,775	**29,666**	**41,636**
कुल जोड़	**2,90,063**	**82,385**	**3,72,448**	**93,606**	**15,854**	**1,09,460**	**2,62,988**

इस 'शर्तबंद प्रथा' के तहत आप्रवासन के 35 वर्षों में लगभग 3 लाख 72 हजार 448 भारतीय स्त्री-पुरुषों का आगमन मॉरिशस में हुआ तथा एक लाख 9 हजार 460 के करीब भारतीय गिरमिटिया मजदूर शर्तबंद की अवधि पूरी करके स्वदेश लौटे। इस प्रकार मॉरिशस में पीछे रह गए भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की कुल संख्या लगभग दो लाख 62 हजार 988 रही जिन्होंने तमाम कष्टों, अन्यायों और अत्याचारों को सहकर भी मॉरिशस को ही अपना देश मान लिया और हमेशा के लिए वहीं बसने को मजबूर हो गए। आंडरसन कमीशन के सुझावों के बाद भी कोठी मालिकों के अत्याचार कम नहीं हुए। अपितु मजदूरों की यातनाएँ और बढ़ गयीं। सन् 1840-50 ई. के मध्य समुद्री यात्रा के

दौरान भारतीय मजदूरों को दिए जाने वाले कष्टों का उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"सन् चालीस और पचास में भी इनकी समुद्री-यात्रा असहनीय होती थी। इसीलिए एक यात्रा के दौरान कोई पाँच सौ भारतीय मरे थे और जो बच भी गए थे उनकी मृत्यु अस्पताल में हो गयी थी। आप्रवासन के शुरू-शुरू में अफ्रीकी-मूलक लोगों में यह धारणा बन गयी थी कि भारतीय लोग मॉरिशस में ज्वर, हैजा आदि बीमारियाँ लाये थे। इसीलिए मजदूरों से लदे दो जहाजों को पोर्टलुई के बंदरगाह पर आने नहीं दिया गया था। उन्हें द्वीप के उत्तर में एक निर्जन पथरीले द्वीप पर उतार दिया गया था और दो सप्ताह में कोई दो सौ यात्रियों की मृत्यु हो गयी थी।"[56]**

कोठी के मालिक सन् 1847 ई. के श्रम कानून में 'डबल कट' प्रणाली लागू करके मजदूरों के श्रम का शोषण करते थे। 'डबल कट' प्रणाली के तहत एक दिन की अनुपस्थिति पर दो दिन का वेतन काटने व मजदूरों से दुगुना काम करवाने का नियम था। 'एग्रीमेंट' के पूरा हो जाने पर मजदूरों को स्वदेश लौटने की अनुमति थी लेकिन जो मजदूर वापस नहीं लौटना चाहता था वह स्वतंत्र रूप से किसी भी कोठी में या अन्य दूसरे गाँव में रह सकता था। परन्तु कोठी के मालिकों व जमींदारों को मजदूरों का स्वतंत्र रहकर जीवन यापन करना गवारा नहीं था। इसीलिए सन् 1853 ई. से 1859 ई. तक मजदूरों को स्वदेश वापसी का टिकट नहीं दिया गया। कानून की मदद से मुक्त मजदूरों पर तरह-तरह के आरोप लगाकर उनको कैद में डाल दिया जाता था और इन कैदियों को पुन: काम में लगा दिया जाता था।

भारतीय मजदूरों का शोषण करने हेतु सन् 1867 ई. में एक कानून बना जिसके तहत प्रत्येक मजदूरों के पास 'अनुमति-पत्र' व 'पास' का होना अनिवार्य था। जिनके पास ये जरूरी कागजात नहीं होते थे उनको दो पौंड का जुर्माना देना पड़ता थाया फिर दो सप्ताह

कैद में बिताना पड़ता था। इस कानून के उल्लंघन में सन् 1867 ई. से 1872 ई. तक भारतीय मजदूरों से लगभग 20,000 पाउंड वसूला गया। और इन कागजातों के खो जाने पर लगभग 30,000 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। ये आँकड़े स्पष्ट रूप से मॉरिशस के प्रशासन और कोठी के मालिकों व जमींदारों की नीयत और उनके आपसी साँठ-गाँठ कर के भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण की कहानी बयान करते हैं।

मॉरिशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की मृत्यु भी भारी तादाद में होती थी। इस संदर्भ में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"भारतीय आप्रवासन पर सन् 1851 ई. का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज़ बीटन महोदय का ग्रंथ है जिसमें उन्होंने बताया है कि आप्रवासियों के बीच मृत्यु की संख्या बहुत अधिक थी। उन्होंने एक स्थानीय पत्रिका से निम्नलिखित उद्धरण[57] दिया है,** जिसे तालिका- 2 में देखा जा सकता है-

तालिका- 2

साल	**पुरुष**	**स्त्री**	**बच्चे**	**कुल**
1845	1,238	122	31	1391
1846	797	121	45	963
1847	530	75	13	618

सन् 1846 ई. के आस-पास मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों की उपस्थिति 50 हजार के करीब थी, जिनमें मुस्लिम भी शामिल थे। जबकि उस समय पूरे टापू की आबादी लगभग डेढ़ लाख थी। उसके पंद्रह वर्ष बाद सन् 1861 ई. में मॉरिशस में 2 लाख के करीब भारतीय थे, जबकि उस समय पूरे द्वीप की आबादी सिर्फ तीन लाख थी।

मॉरिशस में भारतीय कैदियों व गिरमिटिया मजदूरों के अतिरिक्त भारतीय सैनिकों का भी आगमन होता था। भारत के कई प्रान्तों से कई जत्थों में मॉरिशस द्वीप पर भारतीय सैनिकों का आगमन हुआ। इस संदर्भ में प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"प्रथम बंगाल सैन्य दल (रेजीमेंट) का आगमन, मॉरिशस में 1898 ई. में हुआ था। इसके कमांडर एच. हावकिन थे। तब से 1906 ई. तक मॉरीशस की रक्षक सेना (गैरिज़न) में, एक या दो भारतीय रक्षक सेना रखी जाती थी। इसी सिलसिले में एच. सी. सूटन की देख-रेख में सन् 1899 ई. में सातवाँ मद्रास रेजीमेंट का भी आगमन हुआ था। इसके अतिरिक्त भारतीय सेना की और दो रेजीमेंट, अठारहवाँ बंगाल, जो अठारहवाँ राजपूत रेजीमेंट बन गयी थी और सत्ताइसवाँ मद्रास रेजीमेंट आ-आकर मॉरिशस में ठहरी रेजीमेंटों में शामिल हो गयी थी। इसी तरह सन् 1905 ई. और 1906 ई. में पचहत्तरवाँ कर्नाटक और ग्यारहवाँ राजपूत रेजीमेंट भी मॉरिशस पहुँची थी।"**[58]

बहुतायत में भारतीय मजदूरों के आगमन से मॉरिशस की धरती का कायाकल्प हुआ। भारतीयों के योगदान से ही मॉरिशस के चीनी उद्योग में वृद्धि हुई तथा सड़कों, रेलमार्गों का निर्माण हुआ। गन्ने के अलावा सब्जियों की उपज होने लगी तथा रेशम उद्योग में सफलता मिली। इसके अतिरिक्त विदेशों से व्यापारिक रिश्ता कायम हुआ। आयात-निर्यात शुरू हुआ। भारतीय मजदूरों ने अपने खून- पसीना से वहाँ के उद्योगों को नया आयाम दिया और देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया। मॉरिशस की अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के अनथक प्रयासों का और उनके महनीय योगदान का उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण अपनी पुस्तक 'मॉरिशस का इतिहास' में लिखते हैं- **"भारी तादाद में भारतीय आप्रवासियों के आगमन से मॉरिशस को एक नया रूप तथा एक नया आर्थिक औद्योगिक ढाँचा मिलना स्वाभाविक था। भारतीय आप्रवासन से पहले जहाँ**

चीनी उद्योग लड़खड़ा रहा था, उसी उद्योग ने सन् 1835 ई. के बाद कोई ढ्राई लाख टन चीनी तैयार करके दुनिया के मानचित्र पर मॉरिशस को प्रसिद्ध कर दिया था।"[59]

सन् 1834 ई. से लेकर 1920 ई. तक मॉरिशस में लगभग साढ़े चार लाख भारतीयों को एग्रीमेंट के तहत लाया गया। यह एग्रीमेंट 5 वर्ष की अवधि का होता था। इन गिरमिटिया मजदूरों में से लगभग डेढ़ लाख भारतीय अपनी 'शर्तबंद' की अवधि समाप्त करके वापस भारत आ गए और बाकी बचे हुए तीन लाख लोगों ने मॉरिशस की धरती को, जिसे उन्होंने अपने खून-पसीना से सींचा था, अपनी मातृभूमि मानकर वहीं रच-बस गए। जिन भारतीयों के आत्मबलिदान से इस देश का कायाकल्प हुआ और जिनकी परिश्रमशीलता से यह विश्व के मानचित्र पर उभरा उन्हीं भारतीयों की संतानों ने 20वीं शती के पूर्वार्द्ध में अपने राजनीतिक अधिकारों को पहचान कर संघर्ष किया। और 20वीं शती के उतरार्द्ध में मॉरिशस को स्वतंत्र कराके अपने नेतृत्व का उदाहरण पेश किया। इन्हीं गिरमिटिया मजदूरों की तीसरी-चौथी पीढ़ी के लोग आज वहाँ के मूल नागरिक बने हुए हैं। और स्वयं के भारतवंशी होने पर गर्व का अनुभव करते हैं। यही भारतवंशी आज मॉरिशस के विभिन्न क्षेत्रों में तथा उच्च पदों पर कार्यरत हैं। इन्हीं में से कुछ लोग ने प्रधानमंत्री, गवर्नर जनरल, राष्ट्रपति, सरकारी और अर्द्ध-सरकारी संस्थाओं के निदेशकों के अलावा बैंकों के निदेशक, बीमा कंपनियों के संचालक, कृषि तथा वाणिज्य मण्डल के निदेशक आदि बनकर अपनी पहचान स्थापित किया और अपने भारतवंशी अस्मिता को एक नयी पहचान और स्वीकृति दिलाई। इसी वर्ग से उच्चकोटि के लेखक और साहित्यकार हुए जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात हैं, जिनमें मुनीश्वर लाल चिंतामणि, सोमदत्त बखौरी, दीपचन्द बिहारी, कृष्णलाल बिहारी 'बेखबर', आस्तानन्द सिंह, प्रह्लाद रामशरण, रामदेव धुरंधर तथा मॉरिशस के कथा सम्राट अभिमन्यु अनत आदि के नाम लिये जा सकते

हैं। इनकी रचनाओं में आप्रवासी भारतीयों की त्रासदी का यथार्थपरक अंकन मिलता है, विशेषकर अभिमन्यु अनत ने अपनी रचनाओं में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की त्रासदपूर्ण गाथा का यथार्थपरक चित्रण किया है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि मॉरिशस द्वीप का भौगोलिक परिदृश्य, वहाँ की प्राकृतिक सुषमा तथा वहाँ की ऐतिहासिक घटनाएँ, विशेषकर विभिन्न जत्थों में भिन्न-भिन्न उद्देश्यों से मॉरिशस में भारतीयों का आगमन, दलालों व सरदारों द्वारा भारतीय मजदूरों के साथ किए गए छल-कपट व अमानवीय व्यवहार, जहाज यात्रा की पीड़ा आदि घटनाओं ने अनत जी के जीवन को प्रभावित किया। इसके साथ ही मॉरिशस द्वीप में श्वेतवर्णी शासकों व उनके सरदारों द्वारा भारतीय मजदूरों के प्रति अमानवीय व अन्यायपरक व्यवहार तथा आप्रवासी भारतीयों के साहस, संघर्ष, परिश्रमशीलता और त्याग-बलिदान की गाथाओं ने रचनाकार की अन्तर्मानसिकता को गहरे से प्रभावित किया जिसके परिणामस्वरूप अनत जी उन घटनाओं को अपने साहित्य में स्थान दे सके। तथा अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से उन ऐतिहासिक क्षणों को जीवंत कर सकने में सफल रहे।

संदर्भ-सूची:

1. प्रह्लाद रामशरण, मॉरिशस का इतिहास, पृ- सन्देश से
2. वही, पृ- 29
3. वही, पृ- 31-32
4. वही, पृ- 34

5. वही, पृ- 35
6. वही, पृ- 37
7. वही, पृ- 37
8. वही, पृ- 38
9. वही, पृ- 44
10. वही, पृ- 45
11. पं. आत्माराम विश्वनाथ, मोरिशस का इतिहास, पृ- 19
12. प्रह्लाद रामशरण, मॉरिशस का इतिहास, पृ- 59
13. वही, पृ- 61
14. वही, पृ- 62
15. वही, पृ- 63
16. वही, पृ- 91
17. वही, पृ- 92
18. पं. आत्माराम विश्वनाथ, मोरिशस का इतिहास, पृ- 70-71
19. वही, पृ- 72-73
20. प्रह्लाद रामशरण, मॉरिशस का इतिहास, पृ- 78
21. वही, पृ- 149-150
22. वही, पृ- 153
23. वही, पृ- 15
24. वही, पृ- 16-17
25. वही, पृ- भूमिका से
26. वही, पृ- 18
27. वही, पृ- 21
28. वही, पृ- 20
29. वही, पृ- 20

30. वही, पृ- 19
31. वही, पृ- 22-23
32. वही, पृ- 26
33. वही, पृ- 27
34. विकीपीडिया से।
35. प्रह्लाद रामशरण, मॉरिशस का इतिहास, पृ- 18-19
36. संपा. मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, वृहत हिन्दी कोश, पृ- 744
37. संपा. रामचन्द्र वर्मा, संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर, पृ- 659
38. वही, पृ- 659
39. संपा. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ- 674
40. संपा. डॉ. रमा, प्रवासी हिन्दी साहित्य: विविध आयाम, पृ- 139-140
41. संपा. मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, वृहत हिन्दी कोश, पृ- 129
42. संपा. डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल हिन्दी शब्दकोश, पृ- 86
43. डॉ. कमलकिशोर गोयनका का शोधार्थी द्वारा दिनांक: 24.12.2019 को फोन के माध्यम से लिया गया साक्षात्कार / फोन वार्तालाप
44. संपा. रामशरण जोशी, भारतीय डायस्पोरा: विविध आयाम, पृ- 192
45. प्रह्लाद रामशरण, मॉरिशस का इतिहास, पृ- 78
46. वही, पृ- 67
47. वही, पृ- 69
48. वही, पृ- 79-80
49. पं. आत्माराम विश्वनाथ, मोरिशस का इतिहास, पृ- 142-143
50. वही, पृ- 145
51. वही, पृ- 156
52. वही, पृ- 157
53. वही, पृ- 166

54. प्रह्लाद रामशरण, मॉरिशस का इतिहास, पृ- 82
55. वही, पृ- 83
56. वही, पृ- 84
57. वही, पृ- 84
58. वही, पृ- 104
59. वही, पृ- 81

तृतीय अध्याय

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार अभिमन्यु अनत उन भारतेतर हिन्दी लेखकों में से एक हैं, जिन्होंने प्रवासी देशों में रहकर भी हिन्दी भाषा के प्रति लगाव बनाए रखा है और उसको पुष्पित एवं पल्लवित कर वैश्विक धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। अभिमन्यु अनत का संबंध उन प्रवासी भारतीयों में से है, जिनके पूर्वजों को सन् 1834 ई॰ में 'शर्तबंद प्रथा' के अंतर्गत 'मारीच' देश में सोना-ही-सोना मिलने का सब्जबाग दिखाकर गोरे शासकों के दलालों द्वारा ले जाया गया था। जिन्हें मॉरिशस में गोरे शासकों, शक्कर कोठी के मालिकों, कोठी के सरदारों व दलालों के अमानवीय अत्याचारों का शिकार होना पड़ा था। इन्हीं आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की तीसरी और चौथी पीढ़ी के लोग वर्तमान में मॉरिशस के मूल निवासी बन गए हैं। वर्तमान समय में यही लोग अपनी प्रतिभा तथा कार्य-कुशलता से मॉरिशस के प्रतिष्ठित पदों पर पदासीन हैं साथ ही मॉरिशस को वैश्विक पहचान दिला रहे हैं जिनमें अभिमन्यु अनत एक सशक्त हस्ताक्षर हैं।

औपनिवेशिक राष्ट्र रहने के कारण मॉरिशस में यद्यपि फ्रेंच एवं अँग्रेजी भाषा का वर्चस्व रहा है, बावजूद वहाँ कुछ ऐसे साहित्यकार भी हुए हैं जिन्होंने फ्रेंच व अँग्रेजी भाषा में साहित्य-सृजन करते हुए भी हिन्दी भाषा में विपुल मात्रा में साहित्य-सृजन किया है। हिन्दी भाषा के प्रति विशेषानुराग होने के कारण ही भारतवंशी हिन्दी रचनाकारों, विशेषकर अभिमन्यु अनत ने पर्याप्त मात्रा में हिन्दी भाषा में साहित्य-सृजन किया है।

अभिमन्यु अनत मॉरिशस के ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपनी सशक्त लेखनी, संवेदनशील हृदय व पैनी दृष्टि के कारण अपने देश, समाज व समय की नब्ज को पकड़ने की कोशिश की है। जिसकी झलक उनके रचनाकर्म में सर्वत्र देखी जा सकती है। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं- उपन्यास, नाटक, कहानी, संस्मरण, जीवनी, यात्रा-वृतांत, बाल-साहित्य, चित्रकारी व संकलन-सम्पादन आदि में अपनी सशक्त लेखनी चलायी है। इसके अतिरिक्त अनत जी ने कहानी व उपन्यास विधा को एक नई भाव-भूमि भी प्रदान किया। मॉरिशसीय हिन्दी कथा-साहित्य को पुष्पित पल्लवित करने एवं उसको वैश्विक धरातल पर प्रतिष्ठित करने में अनत जी का अप्रतिम योगदान रहा है।

यद्यपि अभिमन्यु अनत की साहित्यिक यात्रा नाटकों से आरंभ होती है, किन्तु जिस विधा के माध्यम से वे मॉरिशस व उससे इतर अन्य देशों में लोकप्रिय व बहुचर्चित हुए, वह है- उपन्यास विधा। अनत जी के उपन्यासों में विषय-वैविध्य के साथ-साथ हर वर्ग के पात्र अपनी बोली-बानी एवं सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के साथ उपस्थित हैं। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के समान अनत जी के भी कथा-साहित्य में समाज की विविध समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। इसी वजह से अनत जी को 'मॉरिशस का प्रेमचंद' कहा जाता है।

अभिमन्यु अनत ने लगभग 32 उपन्यास लिखे हैं, जिनमें उन्होंने अपने देश मॉरिशस की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का यथार्थपरक चित्रण किया है। अनत जी के 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' तथा 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के जीवन-संघर्ष को दर्शाया गया है। प्रस्तुत अध्याय में उपर्युक्त वर्णित उपन्यासों के आलोक में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय

गिरमिटिया मजदूरों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्षों का अध्ययन किया जाएगा।

क- सामाजिक संघर्ष

कोई भी संवेदनशील रचनाकार अपने समय व समाज में घटित होने वाली घटनाओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। जिस घटना से वह जितना अधिक प्रभावित होता है, उस घटना की उतनी ही सशक्त अभिव्यक्ति उसके साहित्य में देखी जा सकती है। मॉरिशस द्वीप में जन्में बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार अनत जी ने अपनी प्रखर प्रतिभा, कुशल आलोचकीय दृष्टि व सशक्त लेखनी के माध्यम से अपने युगसत्य को अपनी रचनाओं में उकेरा है। ब्रिटिश औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में सन् 1834 ई॰ में 'शर्तबन्द प्रथा' के तहत मॉरिशस आने वाले भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की गोरे शासकों के शासनकाल में विविधोंमुखी शोषण एवं उस शोषण से निजात पाने हेतु भारतीय मजदूरों द्वारा किए जाने वाले संघर्ष को अनत जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं- गोरे शासकों द्वारा भारतीय मजदूरों का शोषण, उनके साथ भेद-भावपरक व्यवहार, रंगभेद की समस्या, जाति-पाँत, ऊँच-नीच की समस्या, मालिक-मजदूर संघर्ष, कृषक जीवन की समस्याएँ, भारतीयों का बलात् धर्मांतरण, नशाखोरी, वेश्यावृत्ति, असफल-प्रेम की समस्या, सत्ता द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग का शोषण, कानून-व्यवस्था तथा पूँजीपतियों की साठ-गाँठ व मजदूरों का विद्रोही तेवर आदि को अनत जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से चित्रित किया है। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में व्याप्त समस्याओं को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से चित्रित किया गया है.

- **आप्रवासी भारतीय मजदूरों पर गोरे शासकों के अमानवीय अत्याचार-** गोरे मालिकों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को दी जाने वाली यातनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति अनत जी के विभिन्न उपन्यासों में हुई है। अनत जी द्वारा रचित- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में गोरे शासकों, शक्कर कोठी के मालिकों, उनके सरदारों व दलालों द्वारा भारतीय मजदूरों के साथ किए जाने वाले अन्याय, अत्याचार, छल-कपट, उपेक्षा व अमानवीय व्यवहार का सजीव चित्रण किया गया है।

ब्रिटिश औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में 'शर्तबन्द प्रथा' के तहत जिन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को सन् 1834 ई॰ के आस-पास गोरे शासकों के दलालों द्वारा छल-कपटपूर्वक मॉरिशस में पत्थरों के नीचे सोना मिलने एवं अपार धन-सम्पदा बटोर लाने का प्रलोभन देकर ले जाया गया था, उन मजदूरों को वहाँ पर गोरे शासकों एवं कोठी के मालिकों, उनके सरदारों एवं दलालों के द्वारा तरह-तरह से प्रताड़ित किया जाता था। इन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को जहाज-यात्रा के दौरान से ही प्रताड़ित किया जाने लगता था। जिन आशाओं-आकाँक्षाओं, उमंगों एवं उल्लास के साथ वे मॉरिशस की ओर प्रस्थान करते हैं, वे उमंगें जहाज-यात्रा के दौरान निराशा व पश्चाताप् में बदल जाती हैं। और जब मॉरिशस की धरती पर पहुँचते ही उन्हें अपनी वास्तविक स्थिति का भान होता है, कि उन्हें मॉरिशस में कुली के रूप में लाया गया है न कि धन बटोरने के लिए, उस समय उन पर वज्रपात-सा गिरता है। मॉरिशस की धरती पर पहुँचते ही सर्वप्रथम उन्हें अपने वास्तविक नाम व जाति को खोना पड़ता है। वहाँ पर उन्हें टीन पर लिखे नंबर के नाम से पुकारा जाता है और उनकी जाति भारतीय कुली मानी जाती है। तात्पर्य यह कि भारतीय

मजदूरों से उनकी पहचान छीन ली जाती है। इतना ही नहीं इन जहाज़ी भाइयों को पराई भूमि में अलग-अलग कोठी के मालिकों द्वारा दलालों से खरीद लिया जाता था। कोठी के मालिकों द्वारा कुलियों का चयन करते समय उनकी कद-काठी, शारीरिक स्वास्थ्य आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता था। और हृष्ट-पुष्ट मजदूर को खरीदने के लिए कभी-कभी मालिकों में झगड़ा तक हो जाता था। प्रवासी घाट पर गोरे शासकों द्वारा भारतीय मजदूरों की खरीद-फरोख्त से संबन्धित एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"कोई सात कोठियों के मालिक अपने सरदारों और ठेकेदारों के साथ अपनी-अपनी कोठी की फेहरिश्त न्यायाधीश या प्रवासी रक्षक को सौंप चुके थे। सभी मजदूर अपने-अपने नंबर गले में लटका चुके थे।---- शक्कर कोठी का एक तगड़ा मालिक अपने सरदार और ठेकेदार के साथ सामने आ गया। जुबेदा को ऊपर से नीचे तक देखता रहा। अपने अगल-बगल के दोनों व्यक्तियों से फ्रेंच में बातें की। सभी मजदूर दो कतारों में खड़े थे। कोठी का मालिक मुआयना करते हुए इस तरह उनके सामने से निकल गए गोया कि भेड़-बकरियों का मुआयना कर रहे थे।--- कुछ मालिक सिर्फ गठीले मर्दों और औरतों को ही अपनी टोली में लेना चाह रहे थे।"**[1] कोठी मालिकों द्वारा भारतीय मजदूरों की खरीद-फरोख्त का उल्लेख अनत जी ने 'लाल पसीना' उपन्यास में भी किया है। गोरे शासकों व मालगासी सरदारों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों से पत्थर तोड़ने और गन्ने की खेती जैसे कठोर श्रम वाले काम करवाए जाते थे। यदि कभी कोई मजदूर काम के थकान से या धूप की तपन से बचने के निमित्त थोड़ी देर के लिए आराम करने लगता तो उस पर सरदारों की लाठियों, कोड़ों व बाँसों की बौछार होने लगती। यदि कभी कोई मजदूर अपने अन्य साथी पर होने वाले अत्याचार के खिलाफ बीच-बचाव करता या मालिकों से सवाल-जवाब करता तो उस पर सरदारों के बाँसों की बौछार शुरू हो जाती थी। कोठी के मालिकों का अत्याचार सिर्फ बाँसों की बौछार तक ही सीमित नहीं होता था बल्कि उनके द्वारा मजदूरों पर मालिकों के पालतू कुत्ते छोड़ दिए जाते थे ताकि वे मजदूरों की बोटी-बोटी कर डालें। कोठी के मालिकों द्वारा मजदूरों को दी जाने वाली विविधोंमुखी यातनाओं से संबन्धित एक उदाहरण प्रस्तुत है- **"लँगड़वा साहब**

ने उसके (सोनालाल) शरीर से कपड़े उतरवाकर उसकी देह को ईख के रस से चप-चप करवाकर कड़कती धूप में पेड़ से बँधवा दिया था। जिस समय मजदूरों की नजर उस पर पड़ी थी, उसका शरीर लाल चींटियों से खदभद भरा हुआ था। पीड़ा से चिल्लाते-चिल्लाते वह बेसुध हो गया था। उसके पास फटकने की इजाजत किसी को नहीं थी। लँगड़वा साहब के दोनों कुत्ते उसके इर्द-गिर्द घूमने को छोड़ दिए गए थे। बस्ती का शायद ही ऐसा कोई मजदूर था, जिसका इन कुत्तों से पाला न पड़ा हो। कइयों की बोटी-बोटी नुच जाने से बची थी। दिल दहला देने वाली वह कड़वी यादगार आज भी कई लोगों के भीतर ताजा थी।"[2]
उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार मजदूरों को प्रताड़ित किया जाता था। उपर्युक्त उदाहरण में सोनालाल नामक भारतीय मजदूर को दूसरी कोठी के मजदूरों को मालिकों के खिलाफ भड़काने के आरोप में कड़कती धूप में पेड़ से लटका दिया जाता है उस पर गन्ने के रस को लपेटकर चींटियाँ छोड़ दी जाती हैं और मालिकों के कुत्ते भी छोड़ दिए जाते हैं ताकि वे सोनालाल की बोटी-बोटी नोच सकें।

अपने उपन्यासों के जरिए अनत जी ने यह भी चित्रित किया है यदि कोई मजदूर अपने साथ होने वाली ज्यादती व अन्याय के बारे में मालिकों से कुछ पूँछते या विरोध करते तो उन मजदूरों पर भी कोड़ों की बौछार शुरू हो जाती या उन्हें कैद में डाल दिया जाता या उनसे बैलों की जगह गन्ने से भरी गाड़ी खिंचवायी जाती थी। 'लाल पसीना' उपन्यास में दाऊद मियाँ, गौतम व उसके बाप की यातनाओं के माध्यम से अनत जी ने इस स्थिति पर प्रकाश डाला है। इस सन्दर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है- **"दाऊद के तीसरी बार कहने पर गौतम ने कमर झुकाई। एक हाथ से सामने के मोटे गन्ने को थामकर दूसरे हाथ से गँड़ासा चलाना चाहा कि पीछे से गेंडा की चोट खाकर वह लोचिया-सा गया। उसके संभलते-संभलते गेंडा उसकी पीठ पर बती-बती हो गया। वह भूल गया था कि मार खाते समय बोलना मना है। उसने पूछा, "क्यों मार रहे हो मुझे?" इसके तुरन्त बाद सभी कुछ**

यान्त्रिक गति से हो गया था। दो और सरदार दो तरफ से आकर एकदम सामने खड़े हो गए थे। वह हिल पाता कि तभी तीनों सरदारों ने उसे दबोच लिया।-----गौतम को ईखों के ऊपर से घसीटते हुए चट्टानों के पिछवाड़े में ले जाकर पूरी ताकत के साथ ढकेल दिया गया। बेहोशी हालत में उसे जामुन के पेड़ से बाँधकर कोड़ों की मार से होश में लाने की कोशिश होती रही।

"गौतम के बाप की सजा एकदम इससे भिन्न रही। ईख से लदी गाड़ी से बैल को हटाकर उसे बैल की जगह बाँध दिया गया और चाबुक की आवाज के साथ उससे गाड़ी को आगे खिंचवाया गया। उसने गन्ने काटते समय जो गाना शुरू किया था, उसको दोहरवाते हुए उसके शब्द-शब्द पर दस-दस कोड़े लगाए गए।"[3] स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में कोठी के सरदारों द्वारा भारतीय मजदूरों से मेहनत तो रात-दिन करवायी जाती, लेकिन खाने के लिए जो भी अनाज दिया जाता वह सड़ा-गला और कीड़ों से युक्त होता था। अस्पतालों में बीमार कैदियों को भी अधपका व पनछोछार भात दिया जाता। विभिन्न प्रकार के झूठे आरोप में जिन मजदूरों को कैद में डाल दिया जाता था उनके साथ होने वाले दुर्व्यवहार का भी चित्रण अनत जी के उपन्यासों में हुआ है। कैदखाने की अव्यवस्था का वर्णन करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"तीन फीट चौड़ी और पाँच फीट ऊँची उस कोठरी में गौतम को पंद्रह दिन रहने पड़े थे। दिन में बस एक मुट्ठी अध-उबला चावल दरार से उसके सामने फेंक दिया जाता था। पंद्रह दिन में कभी एक पल के लिए भी उस कोठरी का दरवाजा नहीं खोला गया था। पंद्रह वर्ष से उस कोठरी में न कभी झाड़ू फेरा गया था और न कभी वहाँ की सीली दुर्गंध को बिखर जाने के लिए दरवाज़े को पूरा खोला गया था। आठ-दस दिन के भीतर दंडित मजदूर या तो अपने ही मल-मूत्र की दुर्गंध से खुद लाश में बदलकर दुर्गन्धित हो उठता था या तो पन्द्रह दिन बाद दरवाज़े के थोड़ा खुलने पर अधमरी हालत में बाहर आता था।"[4]**

अनत जी ने कोठी के मालिकों व सरदारों की उन दमनकारी नीतियों का भी पर्दाफाश किया है जिसके तहत वे भारतीय मजदूरों को दंडित करने के लिए नए-नए तरीके अपनाते थे। वे विद्रोही स्वभाव वाले मजदूरों को कभी गायब करा देते, तो कभी उन पर झूठा आरोप लगाकर काम से निकाल देते और उन्हें कैद में डलवा देते। कभी-कभी विद्रोही स्वभाव वाले मजदूरों को सूली पर लटका दिया जाता और जनता में यह अफवाह फैला दी जाती कि अमुक मजदूर ने आत्महत्या कर ली है। और इस नृशंस कार्य के लिए वे काले भारतीयों का सहयोग लेते थे ताकि इन कुकर्मों का आरोप उन पर न आए। गोरों द्वारा भारतीय मजदूरों के निमित्त रची गयी नयी-नयी साज़िशों के बारे में प्रकाश डालते हुए अनत जी 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में मदन द्वारा कहलवाते हैं- **"इसलिए कि गोरे हाथ अब मजदूर पर चाबुकों और डंडों के प्रहार से थक गए हैं।" डंडों की बौछार आस-पास की कुछ कोठियों में बन्द हो चुकी थी। मजदूरों ने अभी राहत की साँस ली ही थी कि एक दूसरी तरह की सजा शुरू हो गयी थी उन इलाकों में। दो महीने में मोरेल तब्लिसमाँ और लँगड़वा कोठी के सत्तरह मजदूरों ने फाँसी लगा ली थी। शुरू के दो-तीन हादसों को तो लोगों ने स्वाभाविक मान लिया था, लेकिन जब दिन दहाड़े अच्छे-खासे मजदूर भी बकाइन, इमली और बरगद की शाखाओं पर झूलते मिले तो सबसे पहले मदन ने ही उसे आत्महत्या मानने से इन्कार कर दिया। कई दिनों बाद फाँसी लगे व्यक्तियों के बारे में जब देवराज ने पूछताछ शुरू की तो पता चला कि ये वे लोग थे जो कोठी वालों से या तो प्रश्न कर बैठे थे या जिन्होंने कोठी की शर्तों को मानने से इन्कार कर दिया था। सीता के पति विवेक की गिरफ्तारी के बाद उसके मौत की कई अफवाहें फैलाई गयी थीं, पर एक दिन उसे भी नदी के पास जामुन के दरख्त से झूलते पाया गया था। मंगरु के बेटे की लाश तीनकोनिया पर मिली थी। गाँव का कोई भी आदमी उन मौतों को आत्महत्या मानने को तैयार नहीं हुआ था।——-विद्रोह की अगवानी करनेवालों की हत्याएँ हुई हैं।"[5]** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार गोरों द्वारा भारतीय मजदूरों को प्रताड़ित करने के

लिए विविधोंमुखी शोषण के तरीकों का इस्तेमाल किया जाता था। गौरांग शासकों द्वारा काले भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ किए गए अमानवीय अत्याचार, क्रूरतम व बर्बर व्यवहार की यथार्थपरक अभिव्यक्ति अनत जी के 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' उपन्यासों में हुई है। 'लाल पसीना उपन्यास में पृष्ठ संख्या- 24, 25, 26, 45, 64, 83, 87, 128, 195, 201, 202, 235, 246, 247, 248, व 314 में भी गोरों के अमानवीय अत्याचार का चित्रण किया गया है। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में पृष्ठ संख्या- 10, 18, 19, 20, 23, 26, 31, व 74 में तथा 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में पृष्ठ संख्या- 10, 73, 81, 82, 83, 84, 85, 103, 126, 182, 184, 260, 303 में और 'हम प्रवासी' उपन्यास में पृष्ठ संख्या- 22, 30, 31, 74, 75, 79, 89, 90, 93, 113, 138, 157, 158, 161, 162, 354 में भी गोरे शासकों की भारतीय मजदूरों के प्रति किए गए दुर्व्यवहार, अनीति, छल-कपट, क्रूरता, बर्बरता, अमानवीयता आदि का सजीव अंकन किया गया है।

- **गोरे शासकों द्वारा भारतीय मजदूरों के साथ भेद-भावपरक व्यवहार-** औपनिवेशिक देश मॉरिशस में श्वेत शासकों द्वारा 'शर्तबंद प्रथा' के अन्तर्गत आने वाले भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ कई स्तरों पर भेद-भाव किया जाता था। गौरवर्णी शासकों के शासनकाल में भारतीय मजदूरों को कभी भी मनुष्य के रूप में नहीं देखा गया। उनकी नजरों में भारतीय काले-कलूटे, असभ्य, जंगली, जाहिल, गँवार आदि थे। न तो उन्हें खाने-पहनने की तमीज है और न ही बातचीत करने की। वे जंगलियों की तरह रहते हैं। भारतीय मजदूरों के प्रति इसी उपेक्षापूर्ण दृष्टि की वजह से वे उन पर तरह-तरह की फब्तियाँ कसते और उन्हें तरह-तरह से प्रताड़ित करते। कठोर-से-कठोर काम करवाकर भी न तो भरपेट खाने को देते

और न ही पूरा पारिश्रमिक देते। अनपढ़ और बेबस मजदूरों पर विभिन्न प्रकार के झूठे आरोप लगाकर सजा के रूप में उनके वेतन से कटौती कर लेते। गोरों द्वारा आप्रवासी भारतीय मजदूरों के साथ रंग, आय, श्रम, जाति, लिंग, शिक्षा व स्वतन्त्रता आदि के आधार पर भेद-भावपरक व्यवहार किया जाता था। अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से गौरांगों द्वारा काले भारतीय मजदूरों के साथ किए जाने वाले भेद-भावपरक व्यवहार का जीवंत चित्रण किया है। उनके द्वारा रचित उपन्यासों- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व हम प्रवासी' आदि में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ होने वाले भेद-भाव का सजीव अंकन किया गया है। मॉरिशस में गोरों द्वारा भारतीयों को सबसे कठोर कामों के लिए नियुक्त किया जाता था तथा आसान कामों के लिए अन्य लोगों को नियुक्त किया जाता था। इस स्थिति का चित्रण अनत जी ने 'लाल पसीना' उपन्यास में किया है। उपन्यास में किसनसिंह के माध्यम से काम के आधार पर किए जाने वाले भेद-भावपरक व्यवहार का पर्दाफाश किया गया है। चीनी कारखाने में भारतीय मजदूरों के साथ होने वाले भेद-भाव के बारे में किसनसिंह कहता है- **"वहाँ के सभी अच्छे काम मालगासी करते थे। वहाँ जो भारतीय मजदूर थे, वे तो वहाँ हाड़-माँस के कल की तरह लगाए गए थे। कोल्हू के बैल और उनमें कोई अन्तर था ही नहीं। उन लोगों से किसन ने कई बार पूछा था कि वहाँ के सभी अच्छे कामों पर केवल क्रियोल क्यों थे। इसके उत्तर में उसे हर बार यही कहा जाता- क्योंकि वे लोग भारतीय नहीं।———सभी योग्यता होने पर भी भारतीय लोगों को कोई भी ऐसा काम नहीं दिया जाता जो बेहतर था और जिस पर गोरों और मालगासियों का एकाधिकार-सा था। सबसे अच्छे काम गोरों के लिए होते थे, कुछ बेहतर काम उनके लिए होते जो न तो गोरे थे और न ही भारतीय। अपने-आप को सान्त्वना देने के लिए अगर भारतीयों के पास कुछ था तो वह यह कि काम, काम होता है। उसके लिए बदतर और बेहतर का प्रश्न ही क्यों?"[6]** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है

कि किस प्रकार आप्रवासी भारतीय मजदूरों को अन्य मजदूरों से नीचा दिखाने का काम किया जाता था और उनसे बैलों की तरह रात-दिन काम लिया जाता था।

मॉरिशस में गौरांगों द्वारा न तो भारतीय मजदूरों को कहीं आने-जाने की इजाजत थी और न ही उन्हें उनके धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सव व पर्व मनाने की छूट थी। यदि कभी कोई मजदूर अपने धार्मिक ग्रन्थों- रामायण, गीता, हनुमान चालीसा आदि की पंक्तियाँ गुनगुनाते हुए मिल जाता तो उस पर कोड़ों की बौछार की जाती, उनके धार्मिक-पौराणिक ग्रन्थों को जला दिया जाता। इतना ही नहीं उनके घर के द्वार या दरवाजों पर किसी देवी-देवता के चित्र बने होते तो उन पर गोबर से लिपवा दिया जाता या दीवार को तोड़ दिया जाता। साथ ही भारतीयों के देवी-देवताओं को काला-कलूटा आदि शब्दों से संबोधित किया जाता और उनका उपहास किया जाता तथा स्वयं को परमात्मा का पुत्र मानते और भारतीयों का बलात् धर्मांतरण कराते। जो ऐसा करने से इन्कार कर देता उसे वे लोग पागल घोषित कर देते थे। 'लाल पसीना' उपन्यास में नालेताम्बी एक ऐसे ही वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसको गोरे शासक भारतीय देवी-देवताओं में आस्था रखने के कारण पागल घोषित कर देते हैं- **"कोठी का पादरी भी उससे यही कहा था कि तुम पागल हो ताम्बी, भगवान के पुत्र की स्तुति न करके तुम काले-कलूटे देवी-देवताओं की पूजा करते हो, तुम पत्थरों की मूर्तियाँ पूजने वाले सभी पागल हो।"**[7] गोरों द्वारा आप्रवासी भारतीयों को न तो किसी उच्च पद पर पदासीन किया जाता और न ही उन्हें सरकारी संस्थाओं में प्रवेश दिया जाता। न तो भारतीयों के बच्चों को गोरे शासकों के स्कूलों में प्रवेश दिया जाता और न ही उनके साथ संपर्क बढ़ाने दिया जाता। भारतीय बच्चों के साथ शैक्षिक स्तर पर किए जाने वाले भेद-भाव परक व्यवहार का चित्रण अनत जी ने 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में परकाश व देवराज के आपसी वार्तालाप के माध्यम से किया है। परकाश जब अपने हम उम्र के अन्य बच्चों को स्कूल से लौटते हुए देखता है तब वह देवराज से प्रश्न करता

है कि आखिर उसके गाँव के बच्चे उस स्कूल में पढ़ने क्यों नहीं जाते। वे सिर्फ बैठका में ही क्यों पढ़ते हैं। इस संदर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है-

"उसने दस-पंद्रह बच्चों को उस बड़े गाँव के स्कूल से लौटते देखा था।

"चाचा! हमारे गाँव के बच्चे स्कूल क्यों नहीं जाते?"

"तुम लोगों की पढ़ाई तो गाँव में ही हो जाती है। मदन चाचा भी तुम्हें पढ़ाता है।"

"हम लोग स्कूल थोड़े ही जाते हैं। हम तो बैठका में पढ़ते हैं।"

"यही अँग्रेजी-फ्रेंच हमें भी क्यों नहीं पढ़ाई जाती?"

"ये बड़े लोगों के बच्चे पढ़ते हैं।"[8]

अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि यदि कभी कोई मजदूर या उनके बच्चे बीमार पड़ जाते तो कोठी की ओर से नियुक्त डॉक्टरों द्वारा भी मजदूरों के साथ भेद-भाव बरता जाता। वे न तो समय पर उनका इलाज करते और न ही रोग से संबन्धित सही दवा देते। कभी-कभी तो गलत दवा देकर मजदूरों को मौत के घाट भी उतार दिया जाता था। मलेरिया के प्रकोप से पीड़ित बच्चों के इलाज में डॉक्टरों द्वारा दिखाई जाने वाली लापरवाही एवं मजदूरों के बच्चों के साथ किए जाने वाले भेद-भावपरक व्यवहार के सन्दर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है- **"कुनैन की जो गोलियाँ डॉक्टर दे गया था, उससे एक भी बच्चा नहीं बच सका था। दाऊद मियाँ कहते रहे थे कि बीमारों को अच्छा करने वाली गोलियाँ तो डॉक्टर बड़े लोगों के बच्चों को खिला आया है, बस्ती के बच्चों को तो आटे की गोलियाँ दे दी गयी हैं। एक ही सप्ताह में ग्यारह बच्चों की मौत के बारे में जब कोठी के सरदार से कहा गया और पूछा गया कि उस बीमारी के दौरान डॉक्टर सिर्फ एक ही बार बस्ती में क्यों पहुँचा, तो उसने सौ सवालों का एक ही जवाब दिया था- उसका काम महीने में एक ही बार पहुँचना होता है।"[9]** अस्पताल में डॉक्टरों द्वारा भारतीय मजदूरों के साथ किए जाने

वाले अन्यायपरक व्यवहार का चित्रण 'लाल पसीना' उपन्यास में भी मिलता है। उपन्यास का एक पात्र मँगरु अपने मित्र कुन्दन से कहता है- **"साले आदमी अस्पताल आते हैं अच्छा होने के लिए, यहाँ तो रोग और भी बढ़ाने के लिए जाना पड़ता है। जहाँ लगी से पानी पिलाया जाता है। दवाई तक के लिए छिछियाय पड़ेला।"**[10] मँगरु पुन: कहता है- **"दवाई कभी खाने से पहले दी जाती थी, कभी बाद में। कभी यह कहकर बिल्कुल ही नहीं दी जाती कि दवाई अभी पहुँची नहीं। सभी मरीजों को एक ही दवाई दी जाती थी। वही सफेद रंगवाली।"**[11]

भारतीय मजदूरों को रंग के आधार भी भेद-भाव की साजिश का शिकार होना पड़ता था। भले ही मजदूरों के बच्चे कितने ही शैक्षिक योग्यता से सम्पन्न एवं कार्य-कुशल हो किन्तु उन्हें सरकारी पदों पर नौकरी नहीं दी जाती थी। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में हरि के माध्यम से इस स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। हरि पढ़ा-लिखा नवयुवक है, वह शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहता है बावजूद इसके उसे पुलिस की नौकरी में नियुक्ति नहीं मिलती। क्योंकि उसके पास न तो सिफारिश करने वाला कोई है और न ही वह गौरांग है। इस संदर्भ में हरि एवं उसके बहनोई के मध्य हुए वार्तालाप को देखा जा सकता है। हरि कहता है- **"दो बरस से लगातार कोशिश करके असफल रहा हूँ।"**

"पर तुम तो काफी पढ़े-लिखे हो?"

"यहाँ सरकारी नौकरी और वह भी पुलिस की नौकरी के लिए केवल प्रमाणपत्र ही काफी नहीं होते।"

"तुम्हारे पास तो शारीरिक योग्यता भी है। शरीर से तुम पूरी तरह सुगठित हो पुलिस के काम के लिए।"

"हाँ, पर मेरा नाम कुछ और होना चाहिए था।"

"यह दिन बदलेंगे भाई! हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। यह नाम, जात और मजहब देखकर नौकरी दिए जाने का रिवाज बंद होकर रहेगा।"[12]

नौकरी में किए जाने वाले भेद-भाव का चित्रण 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में भी अनत जी ने परकाश के माध्याम से दर्शाया है। परकाश शिक्षित नवयुवक है, उसके पास पर्याप्त योग्यता एवं ज्ञान भी है लेकिन कहीं पर उसे नौकरी नहीं मिल पाती। क्योंकि वह सभी योग्यता के बावजूद भी काला भारतीय है। परकाश के साथ होने वाले भेद-भाव को निम्न शब्दों में व्यक्त किया गया है- **"उसने बीसों जगह पत्र लिखे। कहीं से उत्तर तक नहीं आया। कहीं से बुलाया आया तो अड़चने भी आयीं। एक तो उसका रंग इसमें आड़े आया और फिर उसका नाम भी। वह परकाश न होकर आन्द्रे, मिशेल, जोर्ज होता तो पहले ही अवसर पर उसे नौकरी मिल गयी होती।"[13]** उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस प्रकार भारतीयों को रंग के आधार पर उपेक्षित किया जाता था। पर्याप्त योग्यता रखने के बावजूद भी उन्हें नौकरी में नहीं रखा जाता था।

- **आप्रवासी भारतीयों द्वारा आप्रवासी भारतीयों का शोषण-** मारीच देश में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को न सिर्फ अंग्रेज़ शासकों व गोरे सरदारों द्वारा दी गयी विविध प्रकार की यातनाओं को सहना पड़ता था, बल्कि इसके साथ ही अंग्रेजों के शोषणतंत्र में शामिल आप्रवासी भारतीय लोगों द्वारा दी गयी यातनाओं को भी सहना पड़ता था। ये ऐसे आप्रवासी भारतीय मजदूर थे जो चंद भौतिक सुविधाओं के चक्कर में पड़कर, अपनी हैसियत बनाने के उद्देश्य से गोरों द्वारा दिए जाने वाले विविध प्रकार के प्रलोभन- पद, प्रतिष्ठा, जमीन-जायदाद, आदि के वशीभूत होकर, गोरे शासकों के हाथों अपनी आत्मा को गिरवी रखकर स्वार्थ की रोटी सेंकने में मशगूल हो गए थे। और गोरे

शासकों के आदेश पर अपने ही जहाज़ी भाई-बंधुओं को तरह-तरह से प्रताड़ित करते। कभी-कभी तो ये गोरे शासकों से भी बढ़कर कड़ी सजा देने से भी नहीं चूकते थे। अनत जी द्वारा रचित- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में उन तमाम आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की पोल खोली गयी है, जो गोरे शासकों के खिदमतगार थे। और अपने ही भाई-बंधुओं का गला काटने में उन्हें जरा भी झिझक नहीं रह गयी थी। 'लाल पसीना' उपन्यास में रामजी सरदार, हरखू सरदार, जीतुआ सरदार व विवेक नामक पात्रों के माध्यम से अनत जी ने उन आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की लोभी प्रवृत्ति का चित्रांकन किया है, जो आरंभ में तो गोरों द्वारा किए जाने वाले अन्याय व अत्याचार का विरोध करते हैं किन्तु गोरे शासकों द्वारा दिए जाने वाले विविध प्रकार के प्रलोभन- पद व प्रतिष्ठा, जमीन-जायदाद आदि में आकर गोरों के हिमायती बन जाते हैं और अपने ही जहाज़ी भाइयों के प्रति गोरों से भी बढ़कर अत्याचार करने लगते हैं। उपन्यास में विवेक एक ऐसा ही चरित्र है, जो आरंभ में मजदूरों की दयनीय स्थिति को देखकर श्वेत शासकों के खिलाफ आंदोलन खड़ा करता है लेकिन जब गोरे शासकों द्वारा उसे कोठी का सरदार बना देने एवं काले भारतीय मजदूरों में सबसे अधिक वेतन देने का प्रलोभन दिया जाता है, तब विवेक का सारा आक्रोश शीला पड़ जाता है। जब उसकी बहन सोमा उसके आंदोलन के बारे में पूछती है तब वह जो जवाब देता है उससे उसकी लोभी प्रवृत्ति का पता चलता है- **"लड़ाई तो खत्म हो गयी।—- समझौता हो गया?——मजदूरों की स्थिति का तो मुझे पता नहीं, पर मेरी अपनी स्थिति जरूर बदल गई।—-अब तक मैं मूर्ख था। दूसरों के हित के लिए अपना कम ख्याल रखता था। तुम्हें यह जानकर खुशी होगी सोमा, कि तुम्हारा यह भाई कल से कोठी का मुख्य सरदार है। मुझे जो तनख्वाह मिलेगी, वह अब तक किसी भी काली जाति को इस टापू में नहीं मिल पाई है।"**[14] अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि ये लोभी प्रवृत्ति के आप्रवासी

भारतीय मजदूर, जो गोरों के हिमायती बनकर अपने ही भाई-बंधुओं पर अपनी धाक जमाते हैं, न सिर्फ स्वार्थ की रोटियाँ सेंकते हैं बल्कि अंग्रेजों से वाहवाही लूटने के चक्कर में अंग्रेजों से भी बढ़कर अन्य मजदूरों पर जुल्म ढ़ाते हैं। अपने ही लोगों के प्रति इनमें इतनी निर्दयता व क्रूरता की भावना घर कर जाती है कि ये उन पर बाँसों की बौछार करने, कोड़ा बरसाने, उन्हें कैद में डालने व फाँसी के फंदे पर लटकाने से भी नहीं चूकते थे। इन धनलोलुप, श्वेत शासकों के हिमायती काले भारतीय सरदारों के क्रूरतम एवं अमानुषिक कृत्य का पर्दाफाश करते हुए कुन्दन कहता है- **"यही वह जीतुआ सरदार है, जिसने अपने हाथों से दो मजदूरों को रेल की पटरी से बाँधकर रेल को हरी झंडी दिखा दी थी।——अपने समय में इसी जीतुआ के बाप ने नए कारखाने के लिए गाँव के सबसे छोटे बच्चे को कारखाने की नींव के नीचे अपने हाथों दबाया था।"**[15] इसी तरह रामजी सरदार के कुकृत्यों का पर्दाफाश करते हुए कुन्दन का वक्तव्य है-

"जीवन भर तुम मजदूरों के पीछे रहे हो।"----"क्यों? जुल्म ढाते ही रहना चाहते हो?"—— "तुमने जिन्दगी-भर चुगली की है। अब आगे नहीं करोगे।"—"तुमने जिन्दगी-भर मजदूरों को धोखा दिया है। अब आगे नहीं दोगे।"——"तुमने जिन्दगी-भर मजदूरों पर बाँसों की बौछार की है।"——"जिन्दगी-भर तुमने हमारी बहू-बेटियों को बेचा है। एक-एक मजदूर का हक मारा है तुमने।"——"तुमने बाजार में आदमी को गुलाम की तरह बेचा है।"——"आज भी तुम व्यवसाय करते हो। मजदूरों की हाय बेच-बेचकर तुम आय बढ़ा रहे हो।"[16] उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस प्रकार आप्रवासी भारतीय ही गोरों के साथ मिलकर अपने ही लोगों पर तरह-तरह के जुल्म ढ़ाते रहते थे। अपने ही जहाज़ी भाइयों का हक मारकर अपनी आय में बढ़ोतरी करते। अपने ही भाई-बंधुओं को गुलामों की तरह बेचते तथा गोरे शासकों की वासनापूर्ति हेतु अपनी ही बहन-बेटियों को मालिकों तक पहुँचाने से भी नहीं

चूकते थे। ऐसा करके वे गोरों से घनिष्ठता बढ़ाते और अपनी आमदनी में दिनों-दिन इजाफा करते।

काले भारतीयों द्वारा अपने ही भाई-बंधुओं के प्रति अमानवीय व्यवहार का चित्रण अनत जी के 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' उपन्यासों में भी हुआ है। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में पृष्ठ संख्या- 10, 11और 13 में तथा 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में पृष्ठ संख्या- 73 में तथा 'हम प्रवासी' उपन्यास में पृष्ठ संख्या- 65, 66 व 67 में आप्रवासी भारतीय मजदूरों द्वारा अपने ही बस्ती के लोगों व जहाज़ी भाइयों पर ढ़ाए जाने वाले जुल्मों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

- **कानून-व्यवस्था व पूँजीपतियों की मिलीभगत-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से मॉरिशस के कानून-व्यवस्था की भी पोल खोली है, जो अपने कर्तव्य का निर्वाह न करके आप्रवासी भारतीयों को न्याय न दिलाकर उनके शोषकों के समर्थक बने हुए थे। मॉरिशस की कानून-व्यवस्था व न्याय-व्यवस्था सिर्फ उन्हीं लोगों का साथ देती थी जो धनवान थे या जिनकी छत्रछाया में उन्हें पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती थी। अनत जी ने उन पुलिसकर्मियों व मजदूरों के रक्षकों की पोल खोली है, जो गोरे शासकों व कोठी के मालिकों व पूँजीपतियों से साठ-गाँठ करके मजदूरों के ही शोषक बन जाते थे। अनत जी द्वारा रचित 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में गोरे शासकों के साथ कानून-व्यवस्था व मजदूर-रक्षकों की मिलीभगत का चित्रण किया गया है। 'लाल पसीना' उपन्यास में जब कोठी के सरदार द्वारा ज़बरदस्ती मजदूरों की जमीन पर कब्जा कर लिया जाता है, जिस पर बस्ती के मजदूर अपनी निजी खेती करते थे। मजदूरों द्वारा अपने हक के लिए कानून-व्यवस्था से गुहार लगाई जाती है।

लगभग 17 हजार मजदूर हस्ताक्षर करके मालिकों की ज़्यादतियों के खिलाफ अर्जी भेजते हैं किन्तु उसका कोई सार्थक परिणाम न निकला। क्योंकि कानून-व्यवस्था कोठी के मालिकों के इशारे पर काम करती है। कानून-व्यवस्था द्वारा मजदूरों के प्रति किए गए अन्याय एवं कोठी के मालिकों के साथ उनकी मिलीभगत का उल्लेख करते हुए दाऊद मियाँ का बेटा कहता है- **"यह क्यों भूल रहे हो कि पिछले दिनों सत्रह हजार मजदूरों के अँगूठे का किसी पर कोई असर नहीं हुआ था।"** तब धनलाल किसनसिंह से कहता है- **"किसन चाचा, एक बात हमें अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए। इस देश में इस छोर से उस छोर तक हर बस्ती में ये साहब लोग जो मनमानी कर रहें हैं, वह इसलिए कर रहें हैं कि इनको पूरा यकीन है कि इनकी करतूतों को हुकूमत कभी गुनाह नहीं करार देगी। पता नहीं अभी पिछले हफ्ते की बात आप लोगों को मालूम है या नहीं। जुवाँस कोठी की बात है, पुलिस के सिपाही की हाजिरी में दो मजदूरों पर आधे घण्टे तक बाँसों की बौछार होती रह गयी थी। खून से तर पीठ के साथ दोनों मजदूरों को पुलिस ने इस अभियोग में गिरफ्तार कर लिया कि उन्होंने मजदूरों को भड़काने की कोशिश की थी। एक मजदूर की पत्नी जब पुलिस के पाँव पर गिरकर गिड़गिड़ाने लगी तो उसे भी हिरासत में ले लिया गया।"**[17] इसी तरह बस्ती के लोग जब मालिक के पास अनाज माँगने के उद्देश्य से जाते हैं तब मालिकों द्वारा उन कोड़ों की बौछार की जाती है और उन पर कुत्ते छोड़ दिए जाते हैं। और मदन की आँखें फोड़ दी जाती हैं। क्योंकि मदन मजदूरों का नेता था। मालिकों द्वारा मजदूरों के साथ की जाने वाली ज्यादती की शिकायत लेकर जब बस्ती के लोग थानेदार के पास न्याय की गुहार लेकर जाते हैं तब थानेदार मजदूरों की कोई बात नहीं सुनता बल्कि मजदूरों पर ही अनाज चुराने का झूठा आरोप लगा देता है। मजदूरों एवं थानेदार के मध्य हुई वार्तालाप के माध्यम से कानून व्यवस्था की लापरवाही एवं गोरे शासकों से मिलीभगत की पोल खुलती है। उपन्यास से एक अंश दृष्टव्य है-

'धनपतवा ने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाहट-भरे स्वर में अपनी फरियाद सामने रखी।

"थानेदार साहब, हमारा एक आदमी कई दिनों से गायब है। कल हमारे दो आदमियों को बेरहमी से पीटा गया है। उनमें से एक की आँखें फोड़ दी गयी हैं। अगर आप हमारी सहायता नहीं करेंगे तो यह जुल्म होता ही रहेगा।"

थानेदार ने धनपतवा को गौर से सुनने के बाद ज़ोर से ठहाका लगाया।

"तुम जिस गायब आदमी की बात करते हो, वह नदी में कहीं डूब मरा होगा। रही आँखें फूटने की बात सो वह तो एकदम साफ है।"

----तुम झूठ बोल रहे हो। जिस समय यह घटना घटी थी, तुम पाँचों में से कोई वहाँ था?"

—-जिस समय यह घटना घटी थी पुलिस का सिपाही वहाँ मौजूद था। उसने आँखों देखी बात हमें बताई है।"

"नहीं साहब, वहाँ पुलिस का कोई भी आदमी नहीं था। कोठी का मालिक और रखवार थे।"——

थानेदार की चीख से धनपतवा सहम गया।

थानेदार ने अपने स्वर को नीचा लाते हुए कहा, "हमारे आदमी का कहना है कि तुम्हारे दोनों आदमी मालिक से अनाज माँगने पहुँचे थे। मालिक के यह कहने पर कि अनाज नहीं है, दोनों में से एक आदमी साहब पर लपक पड़ा था। वह साहब की गर्दन दबोचे हुए था कि कोठी के दो कुत्ते उस पर कूद पड़े थे। कुत्तों से डरकर दोनों व्यक्ति पागलों की तरह वहाँ से भागे थे और उसी भागदौड़ में तुम्हारे दोनों आदमियों में से एक सेंहुड़ की दीवार पर जा गिरा था और उसकी आँखें सेंहुड़ के काँटों से घायल होकर जाती रहीं।"

"आँखें सेंहुड़ के काँटों से जख्मी हुई थीं यह सही है, पर वह अपने-आप उन काँटों पर जा गिरा था यह सही नहीं।"

"तुम्हारा मतलब है मैं झूठा हूँ?"

"नहीं साहब।"

"तो फिर यहाँ से ओझल हो जाओ।"[18]

प्रस्तुत उदाहरण से स्पष्ट है कि आप्रवासी भारतीय मजदूरों को यदि एक तरफ गोरे शासकों के विविधोंमुखी शोषण का शिकार होना पड़ता था तो दूसरी तरफ जनता के रक्षक कानून-व्यवस्था की साज़िशों का भी शिकार होना पड़ता था। ऐसी स्थिति में उनका शोषण दोहरा हो जाता था। पुलिस कर्मचारियों के अतिरिक्त मजदूरों के हितार्थ नियुक्त मजदूर-रक्षक भी मजदूरों की हित-चिंता को दरकिनार कर मालिकों से साठ-गाँठ करके अपना उल्लू सीधा करने लगते थे।

- **आप्रवासी भारतीय मजदूरों का विद्रोही स्वर-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की बेबसी व शोषित दशा का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ ही मजदूरों के विद्रोही तेवर का भी चित्रण किया है। अनत जी ने यह दर्शाया है कि गिरमिटिया मजदूर तो मालिकों की ज़्यादतियों को सहना अपनी नियति मान बैठे थे। वे उनके अत्याचारों के खिलाफ किसी प्रकार का विरोध नहीं करते थे किन्तु उनकी संताने गौरांग मालिकों के अन्याय, अत्याचार, छल-कपट, अमानुषिक व्यवहार का खुलकर विरोध करते हैं। वे मालिकों की विविधोंमुखी शोषण के तरीकों का तीव्र विरोध करते हैं। नवयुवकों द्वारा गोरे मालिकों के प्रति किया जाने वाला विरोध कई स्तरों पर होता है। अनत जी द्वारा रचित- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में गोरे मालिकों के अत्याचार के प्रति आप्रवासी भारतीय मजदूरों के विद्रोह को देखा जा सकता है। 'लाल पसीना' उपन्यास में किसनसिंह एक ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो गोरे मालिकों, कोठी के सरदारों व दलालों के द्वारा अपने साथ व भारतीय मजदूरों के साथ किए गए अन्याय का विरोध करता है, भले ही इसके लिए उन्हें गोरों की प्रताड़नाओं का शिकार होना पड़ा हो। गोरे मालिकों के

शासनकाल में काले भारतीयों को किसी प्रकार के धार्मिक कृत्य करने व धार्मिक-पौराणिक ग्रन्थों की पंक्तियाँ गुनगुनाने की छूट नहीं थी। यदि कभी किसी मजदूर के मुँह से कोई गीत गाते हुए सुन लिया जाता था तो मालिकों द्वारा उस पर कोड़ों की बौछार की जाती। किन्तु किसनसिंह लँगड़वा साहब की धमकियों की परवाह न करते हुए बैठका में आधी रात तक गाने-बजाने का कार्यक्रम जारी रखता है- **"पहली बार जब काफी रात तक लोगों का गाना-बजाना होता रहा था तो लँगड़वा साहब ने आदमियों को भेजकर उसे रोकने का आदेश दिया था।----धमकियों के बावजूद आज भी आधी रात तक महफिल जमी रही।----लँगड़वा साहब ने कहा था- "तुम लोग जंगलियों की तरह शोर मचाते हो।" ढिठाई के साथ किसन ने कहा था,- नहीं साहब, हम अपनी थकान दूर करते हैं ताकि दूसरे दिन ताजगी के साथ काम शुरू कर सकें।"**[19] वह न सिर्फ लंगड़वा साहब के प्रश्न का ढिठाई के साथ उत्तर देता है बल्कि मजदूरों के साथ होने वाले अन्याय के प्रति साहब से सवाल भी करता है। वह कोठी के सरदार से पूछता है- **"साहब, इस जी जान की मेहनत का हमें गलत इनाम क्यों दिया जाता है? "गाड़ियों के बाँस हमारी पीठ पर क्यों तोड़े जाते हैं साहब?"**[20] अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूक किसनसिंह बस्ती के सभी लोगों को अपने हक व अधिकार को पाने के लिए एकजुट होकर मालिकों के खिलाफ विद्रोह करने की सलाह देता है। और उसके कुशल नेतृत्व में बस्ती के मजदूर मालिकों के अत्याचार के खिलाफ आवाज बुलंद करते हैं। वे अपने श्रम का सही पारिश्रमिक पाने के लिए एवं अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखने के लिए साहबों के खिलाफ हड़ताल जारी करते हैं। मालिकों के प्रति मजदूरों द्वारा किए गए विरोध की एक झलक निम्नवत् प्रस्तुत है- **"सात बस्तियों ने एकसाथ कदम उठाए। खेतों में श्मशान जैसा सन्नाटा छाया रहा। लछमनसिंह ने अपने सभी आदमियों के बीच कहा कि छिलल बकरी भागे न पाए। समुद्री इलाके की बस्ती में रामोतार महतो ने बस्ती के सभी मजदूरों को समुद्र किनारे इकठ्ठा किया। बड़े ही ओजपूर्ण शब्दों में उसने कहा, "सोनरवा के सौ लोहरवा के एक।" मुखराम साव ने भी अपने लोगों से यही कहा कि**

"हइ तीता ईख एक ही धार में काट फेंके के होय।" किसन की बस्ती के लोग नदी के पास इकट्ठे हुए थे। पहले वाक्य कुन्दन के थे, "आज का समय हम सबन के लिए जामवन्त है। जिस तरह जामवन्त ने हनुमान जी को उनकी शक्ति की जानकारी दी थी, उसी तरह आज का समय हम सबन को, हमारी शक्ति को ललकार रहा है। सात बस्तियों की ताकत है। सात बस्तियों की ताकत है हमारे साथ----"——सात बस्तियों के लोग सात स्थानों पर एक ही निर्णय के साथ रामायण गाते रहे।——दूसरे दिन के लिए भी वही संकल्प था। सातों बस्तियों में अनाज के बर्तन खाली पड़े थे।——दूसरे दिन भी खेतों में मक्खियाँ नहीं भिनकी। उसी उत्साह के साथ सातों स्थानों पर लोगों के जुटाव हुए। सिपाही और तीन सरदार तीन बार आए और चले गए। तीसरे दिन भी खेतों में सूनापन रहा।"[21] इन आप्रवासी भारतीय मजदूरों द्वारा न सिर्फ अपने मालिकों के खिलाफ भारी हड़ताल की जाती है बल्कि ये मालिकों के सम्मुख अपनी कुछ शर्तें भी रखते हैं। मजदूरों के प्रतिनिधि किसनसिंह द्वारा मालिकों से रखी जाने वाली शर्तें इस प्रकार हैं-

"हमारी पहली माँग यह है कि हमें आदमी समझा जाए। बैल नहीं हमारी मेहनत के बाद अगर हमारी पीठ नहीं थपथपाई जा सकती तो बदले में बाँसों की बौछार भी हमें नहीं चाहिए।----मैं सातों कोठियों के मजदूरों की ओर से बोल रहा हूँ। हमने प्रण कर लिया है कि भूखे मर जाएँगे, पर बाँसों की मार खाने को तैयार नहीं होंगे।"

"हम बस्तियों के भीतर कैदियों की तरह नहीं रह सकते। हमें उस घिरावट से बाहर आने-जाने की स्वतन्त्रता हो।" हम स्वतंत्र रूप से अपनी पंचायत और बैठक लगा सकें। पूजा-पाठ कर सकें। हमारी चौथी माँग यह है कि हम अनाज और डॉक्टर से वंचित नहीं रहना नहीं चाहते——-हमारी माँगे अगर पूरी नहीं हुई तो कल सात की जगह सत्तर बस्तियाँ यहाँ खड़ी दिखाई पड़ेगी। पाँचवीं बात भी सुन लीजिये। हमारी बहनों और बहू-बेटियों का आदर होना चाहिए। पिछले महीने एक बस्ती में चार लड़कियों ने आत्महत्या कर ली थी। सभी की अंतिम माँग यह है कि हमारे बच्चों को पढ़ने का अवसर दिया जाए।"[22] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व के प्रति जागरूक मजदूरों ने मालिकों

के अमानवीय अत्याचार व विविधोंमुखी शोषण के खिलाफ एकजुट होकर आंदोलन खड़ा करते हैं और मालिकों से अपनी शर्तें मनवाने में सफल होते हैं। गोरे मालिकों व सरदारों की ज़्यादतियों के खिलाफ व अपने अधिकारों को प्राप्त करने के उद्देश्य से मजदूरों द्वारा समय-समय पर विभिन्न रूपों में विरोध जारी रहता है। जिसकी सफल अभिव्यक्ति अनत जी के उपन्यासों में हुई है। 'लाल पसीना' उपन्यास में पृष्ठ संख्या– 75, 100, 119, 133, 208, 219, 224, 229, 243, 254 व 284 में भी मालिकों के शोषण के प्रति आप्रवासी भारतीय मजदूरों के विद्रोही तेवर को देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में पृष्ठ संख्या- 12, 63, 68, 77, 159, 161 व 162 में गोरे मालिकों, कोठी के सरदारों के विरुद्ध आप्रवासी भारतीय मजदूरों के विद्रोही तेवर की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में पृष्ठ संख्या- 57, 67, 84, 186, 214, 258 व 286 में हरि व परकाश के माध्यम से मालिकों के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाले मजदूरों का चित्रण किया गया है, जो गोरे मालिकों की विविध प्रकार की साज़िशों व यातनाओं का शिकार होकर भी आप्रवासी भारतीय मजदूरों के हितार्थ संघर्षरत रहते हैं। और अपने अभीष्ट की प्राप्ति भी करते हैं। अनत जी द्वारा रचित 'हम प्रवासी' उपन्यास में भी पृष्ठ संख्या- 16, 30, 39, 40, 74, 75 व 101 में मधुवा नामक पात्र के माध्यम से गोरे मालिकों, कोठी के सरदारों व पूँजीपतियों की शोषणपरक नीतियों के प्रति आवाज उठाने वाले आप्रवासी भारतीय मजदूरों का चित्रण किया गया है।

- **गोरे मालिकों द्वारा मजदूरों के संगठन शक्ति को तोड़ना-** अनत जी गोरे शासकों की उस कपटपूर्ण नीति का भी पर्दाफाश करते हैं, जिसके तहत वे आप्रवासी भारतीय मजदूरों के संगठन शक्ति को खण्डित करने की कोशिश करते थे। गोरे शासक यह नहीं चाहते थे कि मजदूरों में कभी एकता स्थापित हो, क्योंकि उन्हें भय था कि कहीं ये बहुसंख्यक काले

भारतीय मजदूर एकजुट होकर उनके खिलाफ धावा न बोल दें। जिससे उन्हें मॉरिशस द्वीप पर शासन करने में असुविधा हो। इसीलिए गोरे शासकों द्वारा भारतीय मजदूरों के साथ कभी भी मानवतापूर्ण व्यवहार नहीं किया गया। मजदूरों की एकता को खण्डित करने के लिए गौरांग शासकों द्वारा भारतीय मजदूरों के बीच कभी जातिवाद की आग भड़काई जाती, तो धर्म व संप्रदाय के नाम पर उन्हें अलग करने की कोशिश की जाती। उनमें अलगाव की भावना पैदा करने के लिए कभी उनके मध्य हैसियत का अन्तर दिखाया जाता, तो कभी क्षेत्रवाद का सहारा लिया जाता। कभी-कभी भाषाई स्तर पर विभाजित करने की साजिश रची जाती। कभी-कभी कुछ लोभी प्रवृत्ति के भारतीयों को पद-प्रतिष्ठा, जमीन-जायदाद आदि का प्रलोभन दिया जाता, तो कभी भारतीयों का ईसाईकरण करके उन्हें विभाजित करने की साजिश रची जाती थी। अनत जी द्वारा रचित- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे' व 'और पसीना बहता रहा' उपन्यासों में श्वेत साम्राज्यवादियों द्वारा आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की एकता को खण्डित करने के विविधोंमुखी तरीकों का यथार्थपरक चित्रण किया गया है, जिन्हें अपनाकर वे लोग भोले-भाले भारतीय मजदूरों को गुमराह करने की कोशिश करते हैं। मालिकों द्वारा जाति, धर्म व हैसियत के आधार पर मजदूरों को विभाजित करने की साजिश का उल्लेख करते हुए 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास का मुख्य पात्र मदन कहता है- **"उसके लिए बात केवल धर्म की नहीं थी, बल्कि एक पहचान और एक संगठित शक्ति को मिटा देने की साजिश थी वह। नालेताम्बी जब से अपना धर्म छोड़कर उस दूसरे धर्म को अपनाए हुए था तब से वह गाँव के किसी भी संगठन में हिस्सा नहीं लेता था। कोठी में सरदार बन जाने के बाद वह बस्ती छोड़ गया था। उसे तो कोठी के उस इलाके में टीन का घर मिला था, जहाँ सरदार रखवार और कारखाने के अफसर रहते थे।——बस्ती के मगनलाल और रेतनों को नालेताम्बी प्रभावित करके पहले ही ईसाई बना चुका था।——धर्म-परिवर्तन के बाद लोगों को जो विशेष दर्जा, जो खास तरह की अहमियत मिल जाती थी, उससे बाकी लोगों की स्थिति और भी दयनीय हो जाती थी। दो जनों की प्रगति से एक सामूहिक शक्ति खण्डित हो जाती थी।**

पड़ोस की बस्तियों में ऐसा ही हुआ था। धर्म-परिवर्तित लोग मजदूरों के साथ जुड़ने से इन्कार कर देते थे। उनकी अपनी अलग हैसियत बन जाती थी। वे कोठी की व्यवस्था के साथ जुड़कर अपने भाइयों के खिलाफ हो जाते थे।"[23] गोरे शासकों द्वारा न सिर्फ धर्म के नाम पर मजदूरों की एकता को खण्डित करने की साजिश रची जाती है बल्कि इसके साथ ही जमीन-जायदाद का प्रलोभन भी दिया जाता है। सरदारों द्वारा मजदूरों को दिए जाने वाले प्रलोभन का जिक्र करते हुए 'लाल पसीना' उपन्यास का मुख्य पात्र किसनसिंह सातों बस्ती के मुखियाओं से कहता है- **"तुम सबन से थोड़ा पहले हियाँ चमरु सरदार आईल रहल। कहल लगे कि हमार बस्ती हय संकल्प से अपने के अलग कर देई त साहब हमें दो बीघा जमीन दान देई के तैयार बा।"**[24] उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस तरह गोरे शासकों के सरदार व दलाल भारतीयों की एकता व उनके संगठन शक्ति को तोड़ने की साजिश रचते थे। अनत जी ने गोरे मालिकों के उस भय को भी दर्शाया है, जिसके तहत वे काले भारतीय मजदूरों के संगठन शक्ति को तोड़ने का हर संभव प्रयास करते हैं। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में रोलाँ साहब के द्वारा अपने खरीदे हुए भारतीय सरदारों को दिए गए चुनौती के माध्यम से मालिकों के भय को एवं उसके निवारणार्थ उनके प्रयासों को देखा जा सकता है। रोलाँ साहब अपने हिमायती काले भारतीय सरदारों को मजदूरों की एकता को खण्डित करने का आदेश देते हुए कहता है- **"हर बस्ती में ये मजदूर एक होकर विद्रोह करने लगे हैं। तुम लोग उन्हें विभाजित करके उनकी ताकत को कम नहीं कर पा रहे। वू जेत देवोरियें। बेकार के लोग हो तुम सभी।"------तुम सभी को एक आखिरी मौका दे रहा हूँ इन मजदूरों के संगठन को तोड़ने का। इनकी बनी शक्ति बनी रही तो नालेताम्बी तुम, हरखू तुम और तुम दोनों भी कोठी से निकाल दिए जाओगे।----"अगर दूसरी कोठियों की तरह इस कोठी के मजदूर सिर उठा पाये तो तुम लोगों की खैरियत नहीं रहेगी।"**[25] गोरे मालिकों द्वारा सरदारों को यह भी आदेश दिया जाता था कि यदि मजदूरों के नेता आसानी से उनके प्रलोभन में आयें तो उन्हें व्यक्तिगत रूप से खरीदने की कोशिश की जाए और यदि

वे इस प्रलोभन को भी न स्वीकार करें तब उन्हें रास्ते से हटा दिया जाए। इसके लिए कभी उन्हे झूठे आरोप में कैद में डाल दिया जाता, तो कभी नजरबंद कर दिया जाता। कभी मौत के घाट उतार दिया जाता।

- **मालिक-मजदूर संघर्ष-** अनत जी ने मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व मॉरिशस में गोरे शासकों व आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के मध्य होने वाले हिंसात्मक विद्रोह का भी यथार्थपरक अंकन किया है। उनके द्वारा रचित 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' उपन्यास में मालिक-मजदूर संघर्ष की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। 'लाल पसीना' उपन्यास में किसनसिंह के नेतृत्व में गोरे मालिकों की ज़्यादतियों के खिलाफ जो आंदोलन किया जाता है, उससे क्रोधित होकर गोरे मालिक व उनके सरदार मजदूरों पर तरह-तरह के जुल्म ढ़ाने शुरू कर देते हैं। मालिकों द्वारा मजदूरों की जमीन पर जबर्दस्ती कब्जा कर लिया जाता है, जिस पर मजदूरों का बैठका, काली माई का चबूतरा था तथा जिस पर मजदूरों ने मिलकर सब्जियाँ उगाई थीं। जब मजदूरों के नेता किसनसिंह द्वारा बस्ती की उस जमीन को अपने हक में पाने हेतु मालिकों से निवेदन किया जाता है, तब मालिक उसकी बातों को अनसुनी करके उस पर गोलियों की बौछार कर देते हैं। जिसमें किसनसिंह की जान चली जाती है। इस सन्दर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है- **"साहब, मैंने अपना सारा जीवन आप जैसे मालिकों की सेवा में लगा दिया। पहली बार और आखिरी बार आपसे प्रार्थना कर रहा हूँ---यह तीन बीघा खेत हमारे लिए छोड़ दीजिए। इसमें हमारी फसल, हमारी कालीमाई और हमारा बैठका है। आप यह मान लें और मैं फिर से अपने अंतिम दिनों तक आपकी सेवा में लौटने को तैयार हूँ।" वह दो कदम आगे बढ़ा ही था कि एक सरदार ने उसे पीछे से धकेल दिया। उसके नीचे गिरते ही धनलाल और फरीद सरदार पर झपट पड़े। उन पर लाठियाँ चल पड़ीं। मजदूर अपनी जगह**

से उठकर आगे बढ़े। लाठियाँ चलीं धड़ाधड़। बंदूकें तन गईं।—लोग मुँडेरों पर से पत्थर उठाने लगे थे। लाठियों के जवाब में पथराव होते देर नहीं लगी। बड़ा साहब भीड़ से हटकर अपनी बग्घी तक पहुँच चुका था। उसने वहीं से गोली चलाने का आदेश दिया था।—पहली गोली चली—धाँय—किसनसिंह की छाती से टकराकर सन गई गरम खून से।—-किसनसिंह की मृत्यु इतिहास की मृत्यु थी।——गोली चली ही थी, धाँय की आवाज के साथ किसनसिंह धराशायी ही हुआ था- खून बहा ही था कि मजदूरों के बीच से गर्जन हुआ था। और अभी उस गर्जन की प्रतिध्वनि होने ही वाली थी कि सिपाही, सरदार और बड़े साहब दौड़ गए थे- उसी दिशा को जिस दिशा से आए थे।"[26] इसी तरह 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में भी हरि, परकाश व उसके अन्य सहयोगियों द्वारा जब गोरे मालिकों से अपने हक की माँग की जाती है तब मालिकों द्वारा उनके आवाज को दबाने की कोशिश की जाती है, जिसमें वे कानून का सहारा लेकर मजदूरों पर लाठीचार्ज व गोलियाँ चलवाते हैं। उपन्यास में हरि व उसके अन्य साथी मजदूर-संघ का निर्माण करने की योजना बनाते हैं, किन्तु मालिकों को यह गवारा नहीं होता कि मजदूर उनके खिलाफ आवाज बुलंद करें इसके लिए वे मजदूरों पर विभिन्न प्रकार के आरोप लगाकर, कानून का सहारा लेकर मजदूरों के आंदोलन को बगावत का रूप देने की योजना बनाते हैं। जब मजदूरों द्वारा 'श्रम कानून' का विरोध किया जाता है, जिसमें मजदूरों के हितों को दरकिनार कर मालिकों के हितों की बात कही गयी थी, तब गोरे शासकों द्वारा इस हड़ताल को रोकने हेतु हर संभव प्रयास किए जाते हैं। मजदूरों की हड़ताल को रोकने हेतु मालिकों की तरफ से गोलियाँ भी चलायी जाती हैं- **"इतने में ही ठाँय-ठाँय करके गोलियाँ चलीं——पहली गोली को छाती पर खाकर नूर मुहम्मद नीचे गिरा।——दूसरी गोली नंदू को लगी। तीसरी मार्देमूतू के सिर को बेध गई और चौथी गोली खाकर जब गोविंद जमीन पर गिरा तो उसकी भात की टोकरी से वह खाली बोतल भी गिरकर चकनाचूर हो गई, जिसमें कुछ घंटे पहले उसने**

अपनी बिटिया के लिए गन्ने का रस भरा था!"[27] उपन्यास में हरि व उसके सहयोगियों द्वारा 'कोर्वे प्रथा' (जिसमें छुट्टी के दिन मजदूरों को मालिकों के यहाँ बेगारी करनी पड़ती थी) शराब विरोधी आंदोलन, चरागाह के लिए आंदोलन, किया जाता है, जिसके लिए मजदूरों को अपनी जानें तक गँवानी पड़ती हैं। बैठका में मजदूरों के जुटाव में गोरे शासकों व काले भारतीय मजदूरों के मध्य हुए हिंसात्मक कार्यवाही की एक झलक दृष्टव्य है- **"दोनों सिपाही, जिन्हें इंस्पेक्टर का आदेश था, बिना किसी की परवाह किए भीतर घुस गए।---बाहर से कई मजदूर एक साथ भीतर पहुँचे और दोनों पुलिस सिपाहियों को घसीटकर बाहर ले आए।---आगे के सिपाहियों के हाथों में लाठियाँ थीं। दूसरी कतार में खड़े सिपाहियों के कंधों की बंदूकें उनके हाथों में आ गई थीं। मजदूर, जिनमें औरतें भी थीं, पुलिस द्वारा ढकेले जाने लगे।---औरतें आगे बढ़ीं और पुलिस उन्हें बड़ी बेरहमी से ढकेलकर पीछे करने लगी। लेकिन जब एक ही साथ चार-पाँच औरतें पुलिस की लाठियाँ खाकर गिरीं, तो करीब पचास से भी ज्यादा मजदूर बिखयाई मधुमक्खियों की तरह सिपाहियों पर टूट पड़े। पुलिस इंस्पेक्टर घबरा गया---उसने चिल्लाकर हुक्म दिया- "फायर!"---बन्दूकों से लैस पुलिस सिपाहियों ने अपने सामने वाले मजदूरों पर इस तरह गोलियाँ दागीं, गोया खरगोश या हिरनों पर निशाना साध रहे हों। अनगिन खूँखार गोलियाँ अनेक पीठों और छातियों से टकराईं। धराशायी होने वाला पहला आदमी था महादेव।---उन खूनी गोलियों ने अंजलि को भी नहीं बख्शा। अपनी कोख में अपने पहले बच्चे को लिए वह जमीन पर छटपटाते हुए दम तोड़ गई। तांबी को पीठ पर गोली लगी और मरने से पहले वह करीब दस मिनट तक पाँवों से रौंदा जाता रहा।---अठारह मजदूरों के ज़ख्म इतने गहरे थे कि उन्हें बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुँचाया गया।"**[28] उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में गौरांग शासकों एवं काले भारतीय मजदूरों के मध्य होने वाले हिंसात्मक विद्रोह एवं मालिक-मजदूर संघर्ष की झाँकी प्रस्तुत की है।

- **आप्रवासी भारतीय मजदूरों का बलात् धर्मांतरण-** मॉरिशस में 'शर्तबन्द प्रथा' के अन्तर्गत जाने वाले आप्रवासी भारतीय मजदूरों के साथ गोरे शासकों द्वारा तरह-तरह के अमानवीय अत्याचार तो किए ही जाते थे इसके साथ ही उनका बलात् धर्मांतरण भी किया जाता था। भारतीय मजदूरों को ईसाई बनाने के लिए गोरे शासकों द्वारा तरह-तरह के हथकंडे अपनाए जाते थे। कभी-कभी विविध प्रकार के प्रलोभन- पद, प्रतिष्ठा, जमीन, जायदाद आदि दिए जाते, तो कभी उन्हें नौकरी से निकाल देने की धमकी दी जाती, कभी-कभी तो हिन्दू-धर्म की एवं उनके देवी-देवताओं की निंदा करके अपने धर्म (ईसाई धर्म) की श्रेष्ठता का बखान किया जाता और कभी-कभी तो कोड़ों की बौछार करके जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कराया जाता था। अनत जी ने अपने संवेदनशील हृदय, पैनी दृष्टि व प्रखर प्रतिभा के माध्यम से गोरों द्वारा आप्रवासी भारतीयों का बलात् धर्म-परिवर्तन की प्रक्रिया की यथार्थपरक अभिव्यक्ति अपने साहित्य में की है। अनत जी के विभिन्न उपन्यासों- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे' व 'हम प्रवासी' में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में भारतीय मजदूरों का गोरे शासकों, कोठी के सरदारों व पादरियों द्वारा कराये गए बलात् धर्मांतरण की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में पादरी जोजेफ के माध्यम से उन तमाम ईसाई धर्म-प्रचारकों का चित्रण किया गया है, जो भारतीयों को ईसाई बनाने के लिए तरह-तरह के योजनाएँ बनाते हैं। इसके लिए वे साम-दाम-दण्ड-भेद सभी प्रकार की नीतियाँ अपनाने से भी नहीं चूकते हैं। ईसाई धर्म-प्रचारक जोजेफ बस्ती के मजदूरों को ईसाई धर्म अपनाने के लिए उपदेश देता है जिसमें वह एक तरफ अपने ईसा मसीह के गुणों एवं उनके प्रभाव का बखान करता है तो दूसरी तरफ हिन्दुओं के देवी-देवताओं की निन्दा करता है और उन्हें शक्तिहीन करार देते हुए ईसा की शरण में आने की सलाह देता है। वह अनपढ़ मजदूरों के मध्य तरह-तरह के चमत्कारिक प्रयोग भी करके

दिखाता है ताकि लोग उसकी बातों पर सहज ही विश्वास कर लें और ईसाई धर्म स्वीकार कर लें। पादरी जोजेफ द्वारा बस्ती के मजदूरों के मध्य दिए गए कपटपूर्ण उपदेश का पर्दाफाश करते हुए मदन कहता है- भाई जोजेफ ओज से भरे स्वर में बोल रहा था- **"कुछ आदमी एक बिगड़ी हुई दशा को पहुँच जाते हैं क्योंकि उन्हें भगवान के सही रूप की जानकारी नहीं होती और वे उस प्रभु का भजन नहीं कर पाते। रास्ते बहुत होते हैं। लेकिन भगवान तक पहुँचने का एक ही रास्ता होता है। लोग गलत रास्तों पर इधर-से-उधर भटकते रह जाते हैं और सही रास्ते के अभाव में मंजिल तक नहीं पहुँच पाते। हम सभी की मंजिल प्रभु की बाँहें हैं।"——लोग झूठ-मूठ के पूजा-पाठ में गलत देवी-देवताओं के चक्कर में भटकते रहते हैं। उन्हें न तो सुख मिलता है, न शान्ति।———मैं यहाँ इसलिए आया हूँ ताकि यहाँ जो अँधेरा है उसे दूर करके प्रभु की रोशनी फैला सकूँ। मैं जिस बस्ती में जाता हूँ वहाँ आस-पास की बस्तियों से दुखी लोग चले आते हैं प्रभु की कृपा पाने। इस समय मेरी बगल में दो पुरुष और एक स्त्री मौजूद हैं।——-यह औरत अन्धी है। प्रभु ने हजारों अन्धों को फिर से आँखें दी हैं। यह स्त्री इस बात को जानती है, इसीलिए इसके भीतर भी रोशनी की चाह पैदा हो गयी है। प्रभु स्वयं रोशनी है। उसकी भक्ति में रोशनी है, उसके आलम में रोशनी है, उसके नाम में रोशनी है।"—"इस बस्ती के लोगों——-तुम अंधविश्वास में पड़ रहे हो। गलत भगवान की पूजा में वक्त बरबाद करते हो। एक बार सही प्रभु पर नेह लगाओ, ये सारे बुरे दिन मिट जायेंगे। हम जहाँ खड़े हैं, यहाँ एक लाशापेल बनाया जाएगा। इस गिरजाघर में प्रभु-पुत्र की प्रतिमा होगी। नालेताम्बी को यहाँ का पादरी बनाया जाएगा और तुम सभी की जिन्दगी में रोशनी आ जायेगी। यह अँधेरा हमेशा-हमेशा के लिए मिट जायेगा। मौत के बाद हम सभी को प्रभु की गोद में जाना है। प्रभु की उस दुनिया में उसी को स्थान मिलता है जो उसकी भक्ति में जीवन गुजारकर उस तक पहुँचता है।"[29]** उपर्युक्त उदाहरण से ईसाई पादरियों की कपटपूर्ण नीति का साफ पता चलता है, जिसके तहत वे अनपढ़, गरीब, आर्थिक तंगी से जूझते भोले-भाले मजदूरों का धर्मांतरण कराने की योजना बनाते हैं। अनत

जी ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से उन भारतीय मजदूरों का भी चित्रण किया है जो पादरियों के प्रलोभन में आकर या उनके धमकियों के वशीभूत होकर धर्म-परिवर्तन कर लेते हैं। 'लाल पसीना' उपन्यास में सोन्द्रों, शिवेन और नालेताम्बी के माध्यम से उन सैकड़ों आप्रवासी भारतीय मजदूरों का चित्रण किया गया है जो पद व प्रतिष्ठा के लोभ में पड़कर अपने धर्म का परित्याग करके ईसाई धर्म को अंगीकार कर लेते हैं। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"उस पादरी ने बड़े गर्व के साथ मदन को यह बताया था कि तीन महीने के भीतर वह तीन सौ भारतीयों को सही रास्ते पर लाने में सफल हुआ था। वह सही रास्ता सलीब का रास्ता था- परमात्मा के पुत्र का रास्ता था। उसने मदन को यह भी बताया था कि शिवेन सीमों बनकर मजदूर से सरदार बन गया था---वह फेहरिश्त बहुत लम्बी थी।"**[30] अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि आप्रवासी भारतीय मजदूरों का बलात् धर्मांतरण कराने की इस प्रक्रिया में सिर्फ गोरे शासकों का ही हाथ नहीं था बल्कि उनके साथ कुछ काले भारतीय भी थे, जो पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करके गोरों के हिमायती बन बैठे थे। गोरों द्वारा आप्रवासी भारतीय मजदूरों का बलात् धर्मांतरण कराने के लिए उन पर तरह-तरह के जुल्म ढाये जाते, उन्हें कोड़ों से पीटा जाता, भूखा रखा जाता और जबर्दस्ती ईसा मसीह का नाम लेने को कहा जाता तथा उनके देवी-देवताओं का उपहास किया जाता। मजदूरों के साथ की जाने वाली ज़्यादतियों के सन्दर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है- **"कुन्दन भैया-----मुझसे बार-बार यही कहा जाता कि मैं अपने गले की उस ताबीज को उतार फेंकूँ जिसके भीतर हनुमान जी का चित्र था। मैं इनकार करता रहा, मेरी पीठ पर कोड़े बरसते रहे। मुझे गिरजाघर के आँगन में खड़ा करके घंटे को ज़ोर से बजाया जाता----- फिर मुझसे कहा जाता कि मैं घुटने टेककर असली परमात्मा का नाम लूँ।---मैंने सलीब वाली चेन लेने से इनकार किया---मेरे गले से मेरी माँ की निशानी उस ताबीज को नोच लिया गया।---तुम पतियाओगे नहीं कि उनके साथ हमारे अपने लोग भी मिले हुए थे।"**[31] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार गोरे शासकों व उनके हिमायती काले भारतीयों द्वारा मजदूरों को धर्म परिवर्तन करने के लिए बाध्य किया जाता था और अगर

कोई मजदूर उनके प्रलोभन को ठुकराकर अपना धर्म नहीं बदलता तो उसको तरह-तरह से प्रताड़ित किया जाता। 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यास में भी अनत जी ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से आप्रवासी भारतीय मजदूरों का बलात् धर्मांतरण कराने वालों गोरे शासकों उनके खिदमतगार काले भारतीय मजदूर एवं ईसाई पादरियों की कपटपूर्ण नीति का पर्दाफाश किया है। साथ ही उन चापलूसी प्रवृत्ति के आप्रवासी भारतीय मजदूरों का भी चित्रण किया गया है, जो गोरों के प्रलोभन में आकर पद व प्रतिष्ठा के चक्कर में अपनी आत्मा को गिरवी रखकर अपना धर्म बदल लेते हैं और अपने अन्य भाई-बंधुओं को भी ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। 'हम प्रवासी' उपन्यास में पृष्ठ संख्या- 85, 86, 87, 98, 99 व 100 में गोरे शासकों द्वारा आप्रवासी भारतीय मजदूरों का बलात् धर्मांतरण कराने की प्रक्रिया को यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है।

- **आप्रवासी भारतीयों में जाति-पाँत, ऊँच-नीच की भावना-** अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के मध्य व्याप्त जाति-पाँत, ऊँच-नीच की भावना को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' आदि में आप्रवासी भारतीय मजदूरों की जातिगत अहमन्यता को चित्रित किया है। इन उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि 'शर्तबंद प्रथा' के तहत गिरमिटिया मजदूर के रूप में भारत से मॉरिशस आने वाले मजदूरों की मॉरिशस में कोई व्यक्तिगत पहचान नहीं रह पाती थी। भले ही वे भिन्न-भिन्न जाति, संप्रदाय, धर्म, भाषा, संस्कृति को मानने वाले थे या भिन्न-भिन्न क्षेत्र से संबन्धित थे। मॉरिशस की धरती पर उनकी पहचान सिर्फ और सिर्फ कुली के रूप में थी। आपस में इनका रिश्ता जहाज़ी भाई का था। ये सभी गिरमिटिया मजदूर थे। पराई भूमि में पहुँचकर संकट के क्षणों में ये सभी धर्म व संप्रदाय के

लोग सभी प्रकार के भेद-भाव को मिटाकर एकजुट होकर रहते थे। किन्तु कुछ मामलों में इन आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा जातिगत भेद-भाव की भावना को बरकरार रखा जाता था, विशेषकर वैवाहिक सम्बन्धों के अवसर पर। आप्रवासी भारतीय मजदूरों में कोई भी अभिभावक यह नहीं चाहता था कि उनकी संताने अपने से नीची जाति के लड़के या लड़की से शादी करें। इससे उनकी जातिगत श्रेष्ठता को ठेस पहुँचती है। उन्हें अपने परिवार व समाज से बहिष्कृत होने का भय सताता रहता है। इसी वजह से वे अपनी जाति से बाहर की लड़की या लड़के से शादी करने का पुरजोर विरोध करते नजर आते हैं। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में मनोहरसिंह अपनी पुत्री का हाथ उसके प्रेमी सुगुनवा को नहीं सौंपता। क्योंकि मनोहरसिंह की नजर में सुगुनवा चमार जाति का युवक है और उनकी बेटी क्षत्रिय जाति से है। इसी तरह 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में हरि व उसकी प्रेमिका प्रभा के वैवाहिक संबंध में जातिगत भिन्नता आड़े हाथों आती है। क्योंकि हरि ब्राह्मण जाति का युवक है और प्रभा नीची जाति की युवती है। हरि प्रभा से प्रेम करता है तथा उसी से विवाह भी करना चाहता है। शुरू में हरि की माँ इस बात का विरोध करती है किन्तु हरि एवं परकाश के द्वारा समझाये जाने पर वह इस रिश्ते के लिए हाँ कर देती है। किन्तु हरि एवं प्रभा के विवाह के बारे में जब वह अपने देवर से बात करती है तब वे इस विवाह का सख्त विरोध करते हैं। तथा धमकी भी देते हैं कि अगर यह शादी हुई तो वह आइन्दा इस घर में कभी कदम नहीं रखेंगे। अपने देवर के इन वचनों से हरि माँ व्यथित हो जाती है उसे जाति बहिष्कृत होने का भय सताता रहता है साथ ही वह इस बात से भी चिंतित हो जाती है कि नीची जाति की बहू लाने से कल उसकी बेटियों से कौन ब्याह करेगा। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"अपने पति के परिवार के सभी रिश्तेदारों से कट जाने की अपनी इस पीड़ा को हरि की माँ रात-भर रो-रोकर घोलती-पिघलाती रही।—–अब तो कोई भी अच्छा घर मेरी बेटियों को नहीं मिल पाएगा।——उसकी बेटियों को ब्राह्मण घर मिलना अब संभव नहीं है।"**[32] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि आप्रवासी भारतीय मजदूरों में वैवाहिक सम्बन्धों के अवसर पर जातिगत समानता को कितना महत्व

प्रदान किया जाता था। 'हम प्रवासी' उपन्यास में मधुवा व उसकी प्रेमिका सोनाली के पिता के आपसी वार्तालाप के माध्यम से मॉरिशसीय समाज में व्याप्त जाति-पाँत व ऊँच-नीच की भावना को वाणी प्रदान की गयी है। आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों में भी कोई अपने को किसी संप्रदाय विशेष का घोषित करके स्वयं को अन्य मजदूरों से उच्च मानने लगा था, तो कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के आधार पर अपने को अन्यों से भिन्न मानने लगे थे। कोई पद व प्रतिष्ठा के आधार पर अपने को श्रेष्ठ घोषित करने में लगा था। कुछ ऐसे लोग भी थे जो भारत में शूद्र जाति से संबन्धित थे किन्तु मॉरिशस आकर स्वयं को ब्राह्मण जाति का मानने लगे थे। 'हम प्रवासी' उपन्यास में मधुवा नामक युवक जो भारत में नीची जाति से संबन्धित था, मॉरिशस में स्वयं का संबंध ब्राह्मण जाति से मानता है। और ब्राह्मण युवती सोनाली को पाने के लिए उसके पिता से भी अपना गलत परिचय बताता है। ताकि सोनाली का पिता अपनी बेटी का हाथ उसे सौंप सके। इस संदर्भ में मधुवा का कथन है- **"सोनाली के पिता को तो इस झूठ पर यकीन हो गया है कि मैं ब्राह्मण हूँ। सच्चाई जानने के बाद क्या वह मुझे सोनाली से विवाह करने देगा?"----अगर मैं बड़ी जाति का होता और सोनाली छोटी जाति की तो मैं या तो उसे अपनी तरह बड़ी जाति का बना लेता---।-------'जात-पाँत की तो यही सबसे बड़ी सच्चाई है। इसे भारत में भी देख चुके हो और लगता है कि अब यह जहर यहाँ भी फैलने वाला है।'---- धन इकट्ठा हो जाने पर आदमी की जाति अपने आप बादल जाती है।----जब जहाज से उतरे थे तो हमारे गाँव के धोबी के बेटे सोहना ने अनुबंध के वक्त जब उससे जाति के बारे में पूछा गया था तो उसने अपनी जाति ब्राह्मण बता दी थी।' यानी कि चालाकी से यहाँ आकर वह बड़जतिया बन गया।"**[33] अनत जी ने न सिर्फ हिन्दू धर्म में व्याप्त जाति-पाँत, ऊँच-नीच की भावना को चित्रित किया है बल्कि 'अचित्रित' उपन्यास में मुस्लिम समुदाय में व्याप्त जातिगत श्रेष्ठता व ऊँच-नीच की भावना को चित्रित किया है।

- **वेश्याजीवन की त्रासदी-** अपने संवेदनशील हृदय व पैनी दृष्टि के कारण अनत जी अपने समाज में घटित होने वाली हर छोटी-बड़ी घटनाओं को अपने लेखन का आधार बनाया है। जिसके परिणामस्वरूप उनके साहित्य में समाज में उपेक्षित समझी जाने वाली वेश्याओं की त्रासदपूर्ण जीवन की भी यथार्थपरक अभिव्यक्ति हुई है। अनत जी ने अपने साहित्य के माध्यम से मॉरिशसीय समाज में व्याप्त वेश्यावृत्ति की समस्या, उसे अपनाने के विभिन्न कारणों- महँगाई, आर्थिक तंगी, बेरोजगारी, परिवार के मुखिया के असामयिक मृत्यु आदि, वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देने वाले-कानून-व्यवस्था, धर्म के ठेकेदारों, नेताओं, मंत्रियों आदि की संलिप्तता व वेश्याओं की आशा-आकाँक्षाओं, कुंठा, निराशा, अकेलेपन आदि को दर्शाया है। अनत जी द्वारा रचित 'अचित्रित' उपन्यास में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस समाज में व्याप्त वेश्यावृत्ति की समस्या एवं वेश्याजीवन की त्रासदी एवं उनके आशा-आकाँक्षाओं की सफल अभिव्यक्ति हुई है। प्रस्तुत उपन्यास में अनत जी विभिन्न पात्रों- वानी, मरियम, मरियम की चाची, विक्रम, योगेश, कानून-व्यवस्था, पंडे-पुरोहित, आदि के माध्यम से वेश्यावृत्ति के धंधे में शामिल लोगों का चित्रण किया है। वानी, मरियम व मरियम की चाची के माध्यम से अनत जी ने वेश्यावृत्ति में शामिल स्त्रियों की आशा-आकाँक्षाओं, बेबसी, अकेलेपन, कुंठा, मानसिक पीड़ा, घर, परिवार व समाज से कटने की पीड़ा व सामाजिक उपेक्षा आदि मनोभावों की जीवंत झाँकी प्रस्तुत की है। अनत जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि जो स्त्रियाँ किसी कारणवश वेश्यावृत्ति के धंधे में शामिल हो जाती हैं उन्हें न तो उनके घर वाले अच्छी दृष्टि से देखते हैं और न ही समाज के लोग। उन्हें हर जगह और हर समय लोगों की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में ऐसी स्त्रियों की स्थिति तो और भी दयनीय हो जाती है। वेश्यावृत्ति में शामिल स्त्रियों से न कोई बात करना पसंद करता है और न ही किसी प्रकार के सामाजिक

गतिविधियों, उत्सवों, त्यौहारों, रस्मों-रिवाजों आदि में सम्मिलित किया जाता है। अपने ही लोगों द्वारा उपेक्षित होने पर उनकी (वेश्याओं की) मानसिक पीड़ा और बढ़ जाती है। वानी के माध्यम से लेखक ने वेश्याओं की इसी मानसिक पीड़ा को चित्रित किया है। अपने परिजनों से बिछुड़ने की पीड़ा को व्यक्त करते हुए वह कहती है- **"मैंने जब अपना घर छोड़ा था तो यह ख्याल कभी मन में नहीं आया था कि उस घर के लिए कभी मेरे भीतर इतनी छटपटाहट पैदा हो सकती है। तब तो मैंने इस ख्याल के साथ उस घर और उसके लोगों याने मेरी माँ और मेरी बहनों से रिश्ता तोड़ा था कि आइन्दा उस दुनिया से मेरा कोई संबंध रहेगा ही नहीं; लेकिन उस दुनिया से बेहतर पाकर जहाँ न भूख थी न अभाव था, मैं अपने को उसमें एकदम से खोकर अपने को सारे अतीत से काटने की बहुत चेष्टा करके भी वैसा नहीं कर पाई। मैंने सोचा था कि सभी अभावों से बच गई थी मैं। वह मेरी भूल थी। अभाव तो यहाँ भी था, चाहे वह रोटी-कपड़ों का नहीं था। माँ की याद तो मुझे आती ही रही थी, पर अपनी छोटी बहनों की याद कभी मुझे तिलमिलाकर रख देती थी। आज जब मुझे यह पता चला था कि राधिका की अगले सप्ताह शादी हो रही है तो मेरी यह तिलमिलाहट और भी बढ़ आई थी।"[34]** उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से वेश्याजीवन की त्रासदी का चित्रांकन किया गया है। पिता की असमय मृत्यु एवं परिवार की आर्थिक तंगी तथा काम के अभाव के चलते वानी वेश्यावृत्ति अपनाने पर मजबूर हो जाती है। वानी अपने स्वाभिमानी स्वभाव के कारण भीख माँगकर गुजारा नहीं करना चाहती, जैसा कि उसकी माँ करती थी। इसी वजह से वह वेश्यावृत्ति में शामिल होकर अपना पेट पालने लगती है। जिसके लिए उसे अपनी माँ, बहन, परिवार, गाँव सभी कुछ छोड़ना पड़ता है। वेश्यावृत्ति अपनाने से जहाँ एक ओर उसकी आर्थिक समस्याएँ कुछ हद तक कम हो जाती हैं वहीं दूसरी ओर वह मानसिक कुंठा का भी शिकार हो जाती है। क्योंकि वह अपनी माँ, बहन आदि के विछोह को सहन नहीं कर पाती और न ही अपने अतीत से पीछा छुड़ा पाती है। परिवार से दूर होने का तथा दुबारा उस परिवार में शामिल न हो पाने का दुख उसे

सदैव सालता रहता है। वेश्यावृत्ति अपनाने के बाद वह चाहकर भी अपने घर वापस नहीं जा सकती, क्योंकि इससे उसके परिवार वालों को समाज के सामने लज्जित होना पड़ेगा। अनत जी ने वानी की मनोव्यथा के माध्यम से उन समस्त वेश्याओं के अकेलेपन, कुंठा, निराशा आदि की झाँकी प्रस्तुत की है, जो किन्हीं कारणों से वेश्या बनने पर मजबूर हो गईं थीं तथा जो समाज द्वारा हेय समझी जाती हैं। अनत जी ने न सिर्फ वेश्याओं की मनोव्यथा को अभिव्यक्ति प्रदान की है बल्कि इसके साथ ही उनकी आकाँक्षाओं को भी चित्रित किया है। वानी की जीवनाकाँक्षा को व्यक्त करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"मेरे भीतर आज भी अपने एक घर, एक परिवार की चाह रह-रहकर पैदा हो जाती थी, जबकि मरियम अपनी जिन्दगी को किसी भी हालत में किसी रस्म-रिवाज तथा संवेदना के किसी अनुबंध के जरिये विभाजित करके जीने को तैयार नहीं थी। प्यार पाने और प्यार देने की अभिलाषा उसके भीतर भी उमड़ आती थी पर वह थी कि यह कह कर रह जाती थी- यह अपने आप चढ़ने वाला नशा है, अपने आप उतरता भी रहता है।"[35]** उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से अनत जी ने वेश्यावृत्ति में संलग्न उन स्त्रियों की मानसिक व्यथा एवं उनके जीवनाकाँक्षा को चित्रित किया है, जो वेश्या होते हुए भी मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण हैं। जिनके अंदर एक सामान्य नारी की भाँति इच्छाएँ जागृत होती हैं वे भी किसी की पत्नी, प्रेमिका व माँ बनने की ख़्वाहिश रखती हैं, उन्हें भी ममत्व सताता है। 'अचित्रित' उपन्यास में मरियम व वानी के माध्यम से अनत जी ने वेश्याओं की माँ एवं पत्नी बनने की ललक को रूपायित किया है। परिवार बसाने की चाह से ही मरियम इस्माइल के बच्चे की माँ बनने की इच्छा रखती है। वह बिना किसी रस्म-रिवाज के बंधन में बंधे इस्माइल से संबंध रखना चाहती है और माँ बनने की ख़्वाहिश पूरा करना चाहती है। वह वानी से कहती है- **"मैं चाची से पूछना चाहती थी कि जब वह हमें अपने भविष्य की आजादी दे रही थी तो क्या उसमें हमें माँ बनने का हक भी दे रही थी, पर पूछ न सकी।——मैं माँ बनना चाहती हूँ।—मैं किसी**

की बीवी होना चाहती हूँ।—-बिना शादी-निकाह किए।"[36] वानी विक्रम नामक अपने एक ग्राहक, जो कि उसका धनिष्ठ मित्र व प्रेमी है, की पत्नी बनने की ख़्वाहिश रखती है किन्तु सामाजिक मर्यादा के भय से विक्रम वानी को अपना सब कुछ मानते हुए भी पत्नी का दर्जा नहीं दे पाता है। इस संदर्भ में वानी एवं विक्रम के मध्य हुए एक वार्तालाप को देखा जा सकता है। वानी कहती है- **"विक्रम एक मौके पर बहुत अधिक भावुक होकर बोला था- तुम मेरी सभी कुछ हो- सभी कुछ।—-मैं बोल गई थी- सभी कुछ होकर भी तुम्हारी पत्नी नहीं हुई।– तुम मेरी पत्नी से भी अधिक हो।– वेश्या नहीं होती तो रखैल जरूर हो सकती थी।– वानी मैं, मैं तुमसे शादी कर सकता था—-जरूर कर सकता–। अगर मैं वेश्या न होती तब तो।– हाँ। तुम वेश्या नहीं होती तो मैं तुमसे शादी कर लेता—-मुझे किसी की परवाह नहीं-–।**

- मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। बहुत प्यार करता हूँ।

- इतना अधिक कि अपनी औरत बनाने की जरूरत ही नहीं और न ही रखैल बनाने की।

- मैं विकी की पत्नी नहीं थी। उसकी रखैल भी नहीं थी। मैं तो उसकी दोस्त थी। उसकी जिन्दगी थी।"[37] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में वेश्यावृत्ति में शामिल स्त्रियों को न तो कोई सम्मान देता है और न ही उनसे कोई शादी करना चाहता है। और न ही उन्हें इस नारकीय जीवन से उबारने का कोई सार्थक कदम उठाता है। वेश्यावृत्ति के पेशे में वेश्याओं को बच्चे जनमने की भी इजाजत नहीं रहती। इससे उनके पेशे में बाधा उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार वे समाज में उपेक्षित जीवन जीने पर मजबूर रहती हैं।

- **गैर-कानूनी धन्धा/ नशीले पदार्थों का व्यवसाय-** अनत जी ने अपने समाज में घटित होने वाली हर छोटी-बड़ी घटनाओं को अपने लेखन का विषय बनाया है। अनत जी ने मॉरिशसीय समाज में व्याप्त नशाखोरी, नशीले पदार्थों के धंधों को बढ़ावा देने वाले

नेताओं, मंत्रियों, पुलिस कर्मचारियों, अस्पताल के परिचारक व धर्म के ठेकेदारों की संलिप्तता की पोल खोली है। साथ ही नशीले पदार्थों के सेवन से ग्रसित कम उम्र के बच्चों का भी चित्रण किया है। अनत जी द्वारा रचित 'अचित्रित' उपन्यास में वानी नामक वेश्या के कथन के माध्यम से देश में नशाखोरी को बढ़ावा देने वालों की पोल खोली गयी है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"लकड़ी की बेंच में हमारी बगल ही में बैठी एक महिला ने हमें बताया कि कल अस्पताल के एक परिचारक के बस्ते से अफीम की छोटी-छोटी पोटलियाँ बरामद हुई हैं। ——-कैसे-कैसे लोग इस नशीली दवा के धंधे से जुड़े हुए हैं। अस्पताल का परिचारक, जिसे नशीली दवा लेने वाले इन रोगियों के हाथों और दिमाग से इन दवाओं को छीन फेंकना था, वही उन्हें वह जहर थमाने का काम कर रहा था।——-- देश में फैल रही इन नशीली दवाओं के बारे में (वानी ने) अपनी हैरानी जाहिर की थी और वह (अनवर) हँसकर बोला था- तुम यह पूछ रही हो यह चीज इन सारी जगहों में कैसे पहुँच जाती है। अरे इसका धंधा सिर्फ हम बेकार लोग ही नहीं करते। इसे फैलाने वालों में कॉलिज का अध्यापक भी है, कैदखाने का सिपाही भी है, अस्पताल का परिचारक भी इसमें उतना ही शामिल है जितना होटलों में काम करने वाला कोई नौकर। इस धन्धे से तो दवाखाने वाला भी कमाता है, पुलिस भी, राजनेता भी और-—और तो और, मेरे अपने एक दोस्त का बाप भी गाँजे का यह कारोबार करता है। जानते हो उसका पेशा क्या है? वह पुजारी है।"[38]**

अनत जी ने न सिर्फ नशीली दवाओं के अवैध धन्धे में शामिल विभिन्न उच्च-पदाधिकारियों की पोल खोली है बल्कि इसके साथ ही यह भी दर्शाने का प्रयास किया है कि इन नशीली दवाओं के धन्धे में कम उम्र के बच्चे भी शामिल हैं। उपन्यास में मरियम का भाई अनवर के माध्यम से उन तमाम कम उम्र के बच्चों की मन: स्थिति को दर्शाया गया है जो नशीली दवाओं के आडिक्ट हैं। साथ ही इस गैर-कानूनी धन्धे में शामिल हैं। नशीली दवाओं के

सेवन से व्यक्ति पर जो दुष्प्रभाव पड़ता है, उसका भी चित्रण अनत जी ने अनवर के माध्यम से किया है। नशीली दवाओं के सेवन से अनवर की हालत अत्यंत ही दयनीय हो जाती है। अनवर के बारे में वानी का कथन है- **"हफ्ते भर बाद वह इधर आया था। इस हफ्ते भर में उसकी हालत इतनी अधिक बिगड़ी दिख रही थी कि मुझे हैरानी हुई। आँखें एकदम खाली और खोखली थीं। आँसू की एक बूँद भी नहीं थी उनमें। उसका गोरा चेहरा हल्दी से पुता हुआ-सा नजर आ रहा था। साफ दिखाई पड़ रहा था कि उसमें कुछ था तो सिर्फ नशीली गोलियों की चाह। पिछले दिनों मरियम ने बताया था कि अब तो वह सुइयाँ भी लेता है, स्नीफ और ट्रीप दोनों लेता है। मैं जानती थी कि उसे समझाना बेकार था।"[39]**

- **भारतीय मजदूरों को दलालों द्वारा दिए गए प्रलोभन-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यह भी दर्शाने का प्रयास किया है कि 'शर्तबंद प्रथा' के तहत मॉरिशस आने वाले भारतीय मजदूरों के साथ गोरे शासकों के सरदार व उनके दलाल किस प्रकार से भारतीय मजदूरों को झूठे वायदों के जाल में फँसाकर, उन्हें तरह-तरह के प्रलोभन देकर, मॉरिशस में प्रत्येक पत्थर के नीचे सोना-ही-सोना मिलने का सब्जबाग दिखाकर तथा मॉरिशस से अपार धन-सम्पदा बटोर लाने का प्रलोभन दिया जाता। इस प्रकार के झूठे प्रलोभन देकर उन्हें मॉरिशस आने के लिए तैयार करते थे। दलालों द्वारा आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को दिए जाने वाले विभिन्न प्रकार के प्रलोभनों की सशक्त अभिव्यक्ति अनत जी के साहित्य में देखी जा सकती है। उनके द्वारा रचित- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में दलालों द्वारा भारतीय मजदूरों को दिए जाने वाले प्रलोभनों की यथार्थपरक अभिव्यक्ति हुई है। 'लाल पसीना' उपन्यास में अनत जी ने किसनसिंह के पिता रघुसिंह व जतन के माध्यम से उन तमाम आप्रवासी भारतीयों की व्यथा को दर्शाया है जिन्हें दलालों द्वारा मॉरिशस आने के लिए ठगा गया है।

किसनसिंह अपने बाप व उसके मित्र जतन के साथ दलालों द्वारा किए गए झूठे वायदों के बारे में सोचता है- **"उसका बाप और जतन दोनों एक साथ चले थे। आरा जिले से मॉरिशस के बन्दरगाह तक। जहाज पर सवार होने से पहले दोनों ने एक साथ गोरों के ठेकेदारों को यह कहते सुना था- चलो! मारीच के देश चलो। अकाल से पीड़ित लोग डगमगाते खड़े हो गए थे। आँखें फाड़े लोगों ने आपातकाल में पहुँचे उन मसीहों से सुना था: "अब यहाँ पार पाना मुश्किल है। यहाँ की इस बंजर जमीन के मोह में तुम सभी कुत्ते-बिल्ली की मौत मरोगे। यहाँ कोई वर्तमान नहीं, कोई भविष्य नहीं।—" ———वहाँ कोई भूखा नहीं मर सकता। अनाज बेशुमार है वहाँ। रुपया और सोना तो हर पत्थर के नीचे है। जिन चीजों** के **लिए तुम लोग यहाँ तड़प रहे हो, वहाँ ये ही चीजें तुम लोगों के लिए तड़प रही हैं।"**[40] गोरे शासकों के सरदारों व दलालों द्वारा अकाल से पीड़ित गरीब भारतीय मजदूरों को दिए जाने वाले झूठे छलावों के बारे में 'लाल पसीना' उपन्यास का एक अन्य पात्र सोमा का ससुर (लखन) अपनी पत्नी से कहता है- **"इहे वो हरखू बाटे जो भारत में कागज पर सही कराते हुए बोला था कि वो हम सबन को स्वरग में ले जाने ख़ातिर आया था।——-बोलत रहल-हियाँ बिहार में एक दाना चावल के पीछे दस-दस आदमी जूझल बा, जबकि वहाँ मारीच में अनाज़, पैसा और सोना आदमी के लिए तड़पत बा। हमर बात मानो, वहाँ हर चट्टान के नीचे ख़जाना, हर पत्थर के नीचे सोना ही सोना है। एक रात में हमनी के धनी बना देवे के वो दोनों हाथ ऊपर करके किरिया खयले रहल लछी।"**[41] उपर्युक्त दोनों उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस प्रकार गोरों के दलाल मॉरिशस से भारत आकर यहाँ के भोले-भाले मजदूरों, विशेषकर पूर्वी-उत्तर प्रदेश व बिहार के सूखा व अकाल से पीड़ित गरीब जनता को मॉरिशस में सुखमय जीवन यापन का सब्जबाग दिखाकर तथा विभिन्न प्रकार के झूठे प्रलोभन देकर उन्हें बंधुआ मजदूर के रूप में मॉरिशस लाते। क्योंकि इस कार्य के लिए उन्हें गोरे शासकों की तरफ से प्रत्येक मजदूर पर पैसा मिलता था। इसीलिए वे

येन-केन प्रकारेण भारतीय मजदूरों को अपने जाल में फँसाते और मॉरिशस में लाकर उन्हें कोठी के मालिकों के हवाले कर देते।

अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ आप्रवासी भारतीय मजदूरों की शोषणग्रस्त दशा, मालिक-मजदूर संघर्ष, गोरों द्वारा भारतीय मजदूरों का बलात् धर्मांतरण, गोरों की अमानवीयता आदि का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ ही मॉरिशसीय समाज में व्याप्त रंगभेद की समस्या, असफल प्रेम का चित्रण, बिखरते दाम्पत्य-जीवन, गोरों द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग का शोषण, भारतीय मजदूरों की यथास्थितिवादी प्रवृत्ति, भीरू प्रवृत्ति, महामारी का प्रकोप, भारतीयों की जहाज-यात्रा की यातनाएँ, उनके मॉरिशस आने के कारण व स्वदेश छोड़ने का पश्चाताप् आदि का भी यथार्थपरक चित्रण किया है। अत: कहा जा सकता है कि अनत जी ने अपनी पैनी दृष्टि के कारण अपने समाज में व्याप्त हर एक समस्या पर अपनी लेखनी चलायी है जिसके परिणामस्वरूप उनकी रचनाओं में उनके युगसत्य की झलक दिखाई देती है।

ख- राजनीतिक संघर्ष

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार अनत जी ने अपने साहित्य के माध्यम से न सिर्फ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है बल्कि इसके साथ ही तत्कालीन राजनीतिक परिघटनाओं को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस 'उप-अध्याय' के अन्तर्गत सन् 1834 ई॰ के आस-पास 'शर्तबंद प्रथा' के तहत मॉरिशस की ओर प्रस्थान करने वाले आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की जागरूक राजनीतिक चेतना एवं अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए उनकी प्रतिबद्धता तथा उनके राजनीतिक संघर्ष का चित्रण किया जाएगा। साथ ही आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को जागरूक करने

वाली उन तमाम स्थितियों, परिस्थितियों व व्यक्तियों के योगदान को भी चित्रित किया जाएगा जिसके जरिए उनमें राजनीतिक चेतना का विस्तार होता है, और जिनकी मदद से वे अँग्रेजी दासता से मॉरिशस को आजाद कराते हैं और मॉरिशस की विधानसभा में अपनी पैठ बनाते हैं। तथा देश की शासन-व्यवस्था पर काबिज होते हैं।

अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के राजनीतिक संघर्ष को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। साथ ही स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक गतिविधियों, चुनावी सरगर्मियों, सत्तासीन मंत्रियों व नेताओं की वादाखिलाफी प्रवृत्ति, चुनाव जीतने हेतु अपनाए जाने वाले विभिन्न राजनीतिक हथकण्डों- विपक्षी को चुनाव से पीछे हट जाने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन देना, धमकी देना, उस पर हमला करवाना, सभाओं में गुंडा-गर्दी व दंगा-फसाद करवाना, चारित्रिक लांछन लगाना, जनता से सहानुभूति प्राप्त करने हेतु स्वयं पर झूठा हमला करवाना, वोटों की खरीद-फरोख्त, प्रेस व कानून से साठ-गाँठ करना, पोलिंग बूथों पर कब्जा, विपक्षियों के मुख्य कार्यकर्ताओं व एजेन्टों को खरीद लेना व रातों-रात गायब करा देना आदि का यथार्थपरक अंकन किया है। इसके अतिरिक्त चुनाव के पश्चात् मंत्रिमंडल में होने वाले विभिन्न राजनीतिक षडयंत्रों का भी चित्रण किया है।

मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व (12 मार्च 1968 ई॰ से पूर्व) मॉरिशस में बसे आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के राजनीतिक संघर्ष को जानने से पूर्व वहाँ की राजनीतिक स्थिति को जानना आवश्यक है। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक स्थिति एवं वहाँ की राजनीति पर भारतीयों की उपस्थिति पर प्रकाश डालते हुए मॉरिशस के प्रसिद्ध इतिहासकार प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"देश के संविधान के अनुसार मॉरिशस में 1921 और 1926 ई॰ में आम चुनाव आयोजित हुए थे। 1921 के आम चुनाव में भारतवंशियों के प्रथम बैरिस्टर रामखेलावन बुधन ने चुनाव लड़ा था। किन्तु पराजय के**

बाद राज्यपाल ने उन्हें मनोनीत करके सरकारी काउंसिल का सदस्य बना दिया था। इस देश के भारतवंशियों के लिए यह ऐतिहासिक घटना थी क्योंकि राज्यपाल के इस कदम से भारतवंशियों का प्रथम हिन्दू प्रतिनिधि सरकारी काउंसिल का सदस्य बना था। वास्तव में 1926 के आम चुनाव में भारतवंशियों के दो हिन्दू प्रतिनिधि देश के दो अलग-अलग चुनाव जिलों से निर्वाचित होकर सरकारी काउंसिल के सदस्य बन पाये थे। यह भारतवंशियों की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है।"[42] मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व तथा मॉरिशस में गाँधी जी के आगमन से पूर्व ही भारतीय गिरमिटिया मजदूर देश की राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगे थे। 1890 ई॰ से ही देश के मुस्लिम व्यापारी वर्ग सरकारी और म्युनिसिपल काउंसिल के चुनावों में भाग लेने लगे थे। इस संदर्भ में प्रह्लाद रामशरण पोर्ट लुई नगर पालिका के वार्षिक चुनाव का एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ प्रस्तुत करते हैं, जो इस निम्नवत् है-

पोर्ट लुई नगर पालिका का वार्षिक चुनाव-चार्ट

वर्ष	उम्मीदवारों की संख्या	भारतीय उम्मीदवारों के नाम	रैंक	हार	जीत
1890	**16**	**आसेन गुमानी**	**10वें**	"	_
1891	**14**	**आसेन गुमानी**	**13वें**	"	_
1892	**17**	**शून्य**	_	_	_
1893	**15**	**शून्य**	_	_	_
1894	**19**	**डॉ. हासेन साकिर**	**7वें**	"	_
1895	**22**	**डॉ. हासेन साकिर**	**9वें**	"	_
		एच जमालूदीन	**15वें**	"	_
1896	**12**	**डॉ. हासेन साकिर**	**8वें**	_	**एक वर्ष के लिए जीत**
1897	**11**	**डॉ. हासेन साकिर**	**3वें**	_	**तीन वर्षों के लिए जीत**
1898	**22**	**एच साकिर (डॉ. साकिर का भाई)**	**15वें**	"	_
1899	**25**	**एच साकिर**	**13वें**	"	_
		आसेन गुमानी	**20वें**	"	_
1900	**22**	**डॉ. हासेन साकिर**	**4वें**	_	**तीन वर्षों के लिए जीत**
1901	**19**	**सी. पी. पिपर्डी**	**10वें**	"	_
		का. गोपाल स्वामी	**14वें**	"	_
		आसेन गुमानी	**16वें**	"	_ "[43]

स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में होने वाले पंचवर्षीय चुनाव एवं उस चुनाव में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की उम्मीदवारी एवं राजनीति में उनकी सक्रियता व सहभागिता का उल्लेख करते हुए मॉरिशस के इतिहासकार प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **“1885 में मॉरिशस को ब्रिटिश सरकार की ओर से एक नया संविधान मिला था। उसके अनुसार हर पाँचवें वर्ष सरकारी काउंसिल के लिए चुनाव करने का प्रावधान था। इसी संविधान के अनुसार देश में 1886 में देश में प्रथम बार आम चुनाव आयोजित हुआ था। पाँच साल बाद 1891 में दूसरा चुनाव हुआ था। इन दोनों चुनावों में भारतीय उम्मीदवार चुनाव नहीं लड़े थे। किन्तु 1896 और 1901 के आम चुनावों में एक भारतीय उम्मीदवार ने सावान जिले से चुनाव लड़ा था। उसका नाम अब्दुल्ला खलीफा था। 1896 के चुनाव में अब्दुल्ला खलीफा को 28 मत मिले थे जबकि उसके प्रतिद्वंद्वी को 191 मत प्राप्त हुए थे। इसी तरह से 1901 के चुनाव में अब्दुल्ला को उसी चुनाव जिले से 82 मत मिले थे और उसके प्रतिद्वन्द्वी को 200 मत हासिल हुए थे। आम चुनाव जनवरी में होता था।——–इसी तरह से 1901 के बाद कालक्रम से 1906, 1911, 1916 और 1921 में आम चुनाव आयोजित होते रहे। इसके साथ पोर्टलुई नगरपालिका के चुनाव भी होते रहे। दोनों चुनावों में भारतीय उम्मीदवार चुनाव लड़ते रहे। यद्यपि वे पराजित होते रहे फिर भी उनकी राजनीतिक आकाँक्षा जागृत होती रही।”[44]**

अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- ‘लाल पसीना’, ‘गाँधी जी बोले थे’, ‘और पसीना बहता रहा’, ‘अचित्रित’ व ‘हम प्रवासी’ आदि में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक स्थिति एवं आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की जागृत राजनीतिक चेतना एवं उनके राजनीतिक संघर्ष का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। उपर्युक्त वर्णित उपन्यासों के आधार पर स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के राजनीतिक संघर्ष का चित्रण किया जाएगा।

- **चुनावी सरगर्मी-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में होने वाले चुनाव एवं चुनावी सरगर्मी का यथार्थपरक चित्रण किया है। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में परकाश व उसके सहयोगियों के माध्यम से आप्रवासी भारतीय मजदूरों की राजनीति चेतना एवं राजनीति में उनकी सक्रिय भागदारी का उल्लेख किया है साथ ही चुनाव जीतने हेतु उनके द्वारा किए गए प्रयासों का भी चित्रण किया है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"शायद पहली बार हिन्दी में उतने इश्तिहार निकाले गए थे। मजदूरों की कोई बस्ती, कोई भी गाँव ऐसा नहीं बचा था जहाँ की हर दुकान की दीवार पर ये इश्तहार न चिपकाये गए हों। हर गाँव हर बस्ती से दो-तीन सौ मजदूरों के पहुँचने की बात तय हुई थी। नौ जिलों की जिम्मेवारी नौ आदमियों को सौंपी गयी थी। परकाश जब पास-पड़ोस की छोटी-मोटी आयोजक सभाओं से लौट रहा था, तो यांग की दुकान के सामने रुक गया- अपने ही इश्तहार पढ़ने के लिए-**

सौ वर्षों से परिवर्तन के सारे वायदे आज भी फरेब हैं!----
पसीने की सही तौल चाहिए हमें।
मेहनत की सही कीमत।
गन्ने के खेतों के मजदूर आज भी इज्जत और अधिकार के मुहताज हैं।
हम इज्जत चाहते हैं, अधिकार चाहते हैं।
अपने बच्चों का भविष्य चाहते हैं।
सौ वर्षों के शोषण का अन्त होना चाहिए।
विधान सभा में हमें भी अपने प्रतिनिधि भेजने का हक चाहिए।
मजदूरों को भी वोट देने का अधिकार चाहिए।"[45]

प्रस्तुत उदाहरण के माध्यम से जहाँ एक ओर चुनावी सरगर्मी का उल्लेख किया गया है वहीं दूसरी तरफ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में वहाँ की राजनीति में/ शासन प्रणाली

में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की उपेक्षित दशा का चित्रण किया गया है। क्योंकि मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व वहाँ की शासन प्रणाली में सिर्फ पूँजीपतियों, धनकुबेरों व शिक्षित लोगों का ही अधिकार था, वहाँ की बहुसंख्य आम जनता की कोई सक्रिय भागीदारी नहीं होती थी और न ही उन्हें वोट देने का अधिकार था न ही विधानसभा के प्रतिनिधि बनने का प्रावधान था। लेकिन गाँधी जी, बैरिस्टर मणिलाल, बैरिस्टर बुधन, कुँवर महाराजसिंह आदि के प्रेरणा व प्रोत्साहन से आप्रवासी भारतीय मजदूरों में अपने हक के प्रति आवाज बुलंद करने की शक्ति प्राप्त होती है और इन्हीं के सहयोग से आप्रवासी भारतीय मजदूर देश की शासन-व्यवस्था में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने का संकल्प पूरा करते हैं।

'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में भी अनत जी ने हरि व रामगुलाम के माध्यम से चुनावी सरगर्मी का यथार्थपरक चित्रण किया है। इस संदर्भ में अनत जी लिखते हैं- **"चुनाव के सिर्फ पाँच दिन रह गए थे। हरि ने न तो दिन को दिन जाना और न रात को रात। जिन-जिन चुनाव क्षेत्रों में डॉ॰ रामगुलाम वाले दल के उम्मीदवार थे, वहाँ की प्राय: सभी सभाओं में उसने भाग लिया। हर ठौर पर भाषण दिया। बैठकों-सभाओं में एक-एक करके लोगों से बातें कीं। पूँजीपतियों की ओर से दिए जा रहे सारे प्रलोभनों, सारी सुविधाओं के बावजूद लोगों ने हरि की बातों को माना और डॉ॰ रामगुलाम के दल को अपने मत दिये।"[46]**

- **विपक्षियों के दोषों का बखान करना/ चारित्रिक लांछन लगाना-** चुनाव-प्रचार के दौरान प्रत्येक उम्मीदवार द्वारा अपने विपक्षी पार्टी के उम्मीदवार के दोषों का बखान करना, उसके द्वारा किए गए वायदों को गिनाना, जिसे वह अपने कार्यकाल में पूरा न कर सका

हो, विपक्षी पर चारित्रिक लांछन लगाना आम बात है। ऐसा वे इसलिए करते हैं ताकि जनता में वे अपनी पैठ बना सकें व जनमत बटोर सकें। तथा विपक्षी के प्रति जनता के मन में घृणा के भाव पैदा हो जाए जिससे जनता विपक्षी को वोट न दे। अनत जी ने चुनाव के दौरान अपनाए जाने वाले विभिन्न राजनीतिक हथकंडों का सजीव चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। उनके द्वारा रचित 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'अचित्रित' आदि उपन्यासों में चुनाव के दौरान विपक्षियों पर चारित्रिक लांछन लगाने व उनके दोषों को बखान करने का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में हरि डॉ॰ क्यूरे की प्रेरणा से मजदूरों के हित में चुनाव लड़ता है। किन्तु राजनीतिक साज़िशों के तहत उसे उस पार्टी (मजदूर दल नामक पार्टी) से हट जाना पड़ता है। जब दुबारा चुनाव का समय आता है तब वह सुखदेव विष्णुदयाल की पार्टी 'फारवर्ड ब्लाक' से चुनाव में खड़ा होता है। और चुनाव-प्रचार के दौरान अपने विपक्षी पार्टी (मजदूर दल) के दोषों का बखान कुछ इस प्रकार से करता है- **"हमारे इस फारवर्ड ब्लाक और डॉ॰ रामगुलाम के दल में जो सबसे बड़ा अंतर है, उसे मैं आपके सामने स्पष्ट करना चाहता हूँ। मजदूरों के अधिकार के लिए हम जिस संविधान की बात कर रहे हैं, वह कुछ और है। उस दल के नेताओं को न तो मजदूर-समस्या का सही ज्ञान है और न वे लोग श्रम-कानून के बारे में जानते हैं।————वे चाहते हैं कि मौजूदा श्रम-संविधान को लागू किया जाए जबकि हमारी माँग है कि मजदूरों के अधिकारों की रक्षा के लिए नया संविधान बनाया जाए। इस देश में दो-तीन बार मजदूरों पर गोलियाँ चल चुकी हैं।-——जिस औद्यौगिक श्रम-कानून की माँग हमारे विपक्षी नेता कर रहे हैं, उससे उद्योगपतियों की ही बात अधिक बनती है।-——अधिक साफ शब्दों में कहें तो जिस संविधान को लागू करने की वे लोग माँग कर रहे हैं, उससे पूँजीपति शक्ति ज्यों-की-त्यों बनी रहती है, लेकिन जो संविधान हम माँग रहे हैं उससे मजदूरों की शक्ति बढ़ जाती है।"[47]**

'अचित्रित' उपन्यास में भी अनत जी ने विपक्षी द्वारा दूसरी पार्टी के उम्मीदवारों पर दोषारोपण करना व उनके चरित्र पर लांछन लगाने की राजनीतिक साजिश का उल्लेख किया है। प्रस्तुत उपन्यास में विक्रम के माध्यम से उन राजनेताओं के चरित्र का पर्दाफाश किया गया है, जो चुनाव जीतने हेतु विपक्षी पार्टी के उम्मीदवार की प्रतिष्ठा को मटियामेट कर देना चाहते हैं। वे विपक्षी के सभी मंसूबों पर पानी फेरकर स्वयं को सत्ता पर काबिज करना चाहते हैं। इसके लिए वे किसी भी हद तक जा सकते हैं। तथा हर एक गलत कदम को राजनीति में जायज मानते हैं। विक्रम अपने विपक्षी दल के उम्मीदवार व शिक्षामन्त्री रामनाथ नौरतन की छवि को धूमिल करने एवं जनता के मन में उसके प्रति घृणा के भाव उत्पन्न करने हेतु व जनमत बटोरने के निमित्त उस (रामनाथ नौरतन) पर वेश्यागामी होने का आरोप मढ़ना चाहता है। इसके लिए वह वानी नामक वेश्या, जो उसकी प्रेमिका भी है, का सहारा लेने से नहीं चूकता। विक्रम वानी नामक वेश्या को, जो कि उसकी प्रेमिका भी है, 25 हजार रुपए देकर रामनाथ को वेश्यागामी बनाने की योजना बनाता है और वानी के साथ रामनाथ नौरतन की तस्वीर लेकर जनता के मध्य उसे उपस्थित कर उसे चरित्रहीन बताने की साजिश रचता है। रामनाथ के प्रति विक्रम द्वारा रची गयी साजिश के बारे में विक्रम वानी से कहता है- **"उन चालीस-पचास लोगों के बीच वह आदमी भी होगा जिसके लिए तुम वहाँ पहुँचोगी। जिस व्यक्ति के पास पहुँचकर उससे हाथ मिलाने के बाद मैं अपने गले की टाई की गाँठ को ठीक करने लग जाऊँगा वही आदमी रामनाथ नौरतन होगा। वह आदमी किसी भी पार्टी में हर औरत से बात नहीं करता, पर जिसको बात करने के लिए चुन लेता है उससे घण्टों तक बात करता रहता है। आज रात तुम्हें वह औरत होना है जिसके करीब रामनाथ नौरतन पहुँचकर चिपक जाए।-----तुम्हीं को उसे अपनी ओर आकर्षित करना है।------आज रात तुम हमारे मन्त्री महोदय रामनाथ नौरतन की पसंद की साड़ी में रहोगी।"[48]** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार

चुनावी उम्मीदवारों द्वारा अपने विपक्षियों को परास्त करने के लिए उनके खिलाफ साज़िश रची जाती है।

- **विपक्षियों पर दंगा-फसाद व गुंडा-गर्दी करवाना-** किसी भी देश की चुनावी गतिविधियों में चुनाव जीतने हेतु विपक्षियों के मंसूबों पर पानी फेरने के लिए विभिन्न प्रकार के राजनीतिक हथकण्डे अपनाए जाते हैं। जिसमें जातिवाद, क्षेत्रवाद, विपक्षी पर हमला करवाना, उनके सभा-सम्मेलनों को भंग करना, पत्थरबाजी करवाना, आगजनी करवाना, चुनाव से हट जाने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन व धमकी देना, दंगा-फसाद व गुंडा-गर्दी करवाना आदि बातें शामिल हैं। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों में चुनाव के दौरान होने वाली गुंडा-गर्दी व दंगा-फसाद आदि का सजीव अंकन मिलता है। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में हरि नामक आप्रवासी भारतीय युवक मजदूरों के हितार्थ विधानसभा के चुनाव में सक्रिय भागीदारी निभाता है। किन्तु उसके विपक्षी (पूँजीपति वर्ग) यह नहीं चाहते कि मजदूरों को भी देश की शासन-व्यवस्था में स्थान दिया जाए। इसलिए उनके द्वारा हरि को चुनावी रास्ते से हटाने के लिए अनेक प्रकार के षडयंत्र रचे जाते हैं। विपक्षियों द्वारा कभी उस पर हमला करवाया जाता है तो कभी उसे खरीदने की कोशिश की जाती है। कभी उसको पद-प्रतिष्ठा का प्रलोभन देकर उससे चुनाव से हटने की अपील की जाती है। सत्तासीनों, पूँजीपतियों व सरकार द्वारा हरि के प्रति किए जाने वाले विविध प्रकार के राजनीतिक षडयंत्रों की पोल खोलते हुए अनत जी लिखते हैं- **"पूँजीपति और सरकार, दोनों ने उसे हराने और कुचल देने में कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा था। तीन बार तो उस पर गुंडों ने हमला किया था, खरीद लेने की भी कोशिश की थी, उसकी अपनी यूनियन के ही दो चार लोगों को उसके खिलाफ खड़ा कर दिया गया था। पूँजीपतियों का एक ही मकसद था कि हरि को नीचा दिखाकर मजदूर आंदोलन सहित उसे भी मटियामेट कर दिया जाये। जिस घड़ी हरि ने देश-भर के श्रम-संघों की संयुक्त कमान बनाई थी, उसी क्षण उसे मौत के घाट उतारने की साजिश भी रची गई थी।"**[49] प्रस्तुत उदाहरण से स्पष्ट है कि चुनाव के

दौरान किस तरह विपक्षियों को खरीदने, उन्हें चुनाव से पीछे हट जाने के लिए विभिन्न प्रकार के राजनीतिक षडयंत्र रचे जाते हैं।

- **विपक्षी पार्टी के उम्मीदवारों की खरीद-फरोख्त-** अनत जी अपने उपन्यासों के माध्यम से उस राजनीतिक षडयंत्र का भी पर्दाफाश किया है, जिसके तहत प्रत्येक चुनावी उम्मीदवार चुनाव के समय अपनी जीत हेतु अपने विपक्षियों के मतदाताओं की खरीद-फरोख्त करने से भी नहीं चूकते। वे न सिर्फ विपक्षी पार्टी के मतदाताओं की खरीद-फरोख्त करते हैं बल्कि इसके साथ ही विपक्षी के मुख्य कार्यकर्ताओं व उनके एजेन्टों को भी अपने पक्ष में शामिल करने की योजना बनाते हैं। इस हेतु वे विपक्षी के मुख्य कार्यकर्ताओं को कभी पद-प्रतिष्ठा का प्रलोभन देते हैं तो कभी अन्य भौतिक सुविधायें मुहैया कराते हैं, कभी तात्कालिक नौकरी का प्रबंध किया जाता है तो कभी उन्हें अपनी पार्टी का नेता व मंत्री पद देने का प्रलोभन दिया जाता है, कभी जमीन-जायदाद का प्रलोभन दिया जाता है। इतना ही नहीं यदि कभी विपक्षी पार्टी के मुख्य कार्यकर्ताओं द्वारा इन सब प्रलोभनों को नकार दिया जाता है तब दूसरे दल के लोग उन्हें डरा-धमकाकर अपने पक्ष में वोट इकठ्ठा करने के लिए कहते है। और यदि उनकी बातों को अनसुना कर दिया जाता है तो वे उस व्यक्ति को नजरबन्द करवाने से भी नहीं चूकते हैं। चुनाव के दौरान विपक्षियों के एजेन्टों को खरीदने हेतु किए जाने वाले प्रयास का उल्लेख अनत जी 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में करते हैं। उपन्यास में हरि डॉ रामगुलाम के नेतृत्व में मजदूर दल का प्रतिनिधित्व करता है। चुनावी साज़िशों का शिकार होकर हरि का मित्र ईसाक, जो कि स्वयं भी मजदूर दल का सक्रिय कार्यकर्ता था, विपक्षी पार्टी में शामिल हो जाता है। ईसाक मजदूर दल को छोड़कर दूसरी पार्टी में शामिल हो जाता है और वह चाहता है कि हरि भी मजदूर दल से हटकर उस दूसरी पार्टी में शामिल हो जाए। इसके लिए वह हरि को पैसों का प्रलोभन देता है ताकि हरि मजदूर दल के लिए वोट न माँगें बल्कि उस पार्टी के लिए वोट माँगें जिस पार्टी

से वह जुड़ गया है। इस संदर्भ में हरि और ईसाक के मध्य हुए एक वार्तालाप को देखा जा सकता है- **"कार की अगली सीट पर रखा चमड़े का बैग उठाकर पीछे ले आया और उसे हरि की ओर बढ़ाकर बोला-**

इसमें चालीस हजार रूपये हैं। तुम्हारे लिए।"

"मेरे लिए ?"

"हाँ। मजदूर दल वाले तुम्हें चालीस वर्षों में भी इतनी बड़ी रकम नहीं दे सकते।"

"पर तुम भी तो मजदूर दल के ही आदमी हो।"

"परसों तक था, अब नहीं हूँ। इस रकम के बदले में तुम्हें सिर्फ उधर से इधर आ जाना है।"

"उधर से इधर का मतलब?"

"उधर, जिधर तुम हो और इधर, जिधर मैं हूँ। तुम्हें लोगों से केवल इतना कह देना है कि अपने वोट उधर न देकर इधर दें।"

"यानी कि?"

"रालीमाँ मारिस्यें को।"[50]

प्रस्तुत उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार चुनाव के समय जनमत बटोरने हेतु नेताओं, मंत्रियों व चुनावी उम्मीदवारों द्वारा विपक्षी पार्टी के मतदाताओं, उनके मुख्य कार्यकर्ताओं और एजेन्टों को खरीदने की कोशिश की जाती है।

- **मतदान की आपाधापी-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के जरिये न सिर्फ चुनाव जीतने हेतु अपनाए जाने वाले विभिन्न राजनीतिक हथकंडों का उल्लेख किया है बल्कि इसके साथ ही मतदान के दिन होने वाली आपाधापी का भी यथार्थपरक चित्रण किया है। चुनाव के दिन प्रत्येक पार्टी का उम्मीदवार यही चाहता है कि जनता सिर्फ उसी को अपना वोट दे अन्य किसी पार्टी को नहीं। इसके लिए वे चुनाव के एक दिन पहले वाली रात से ही मतदाताओं के घरों पर अपने एजेन्टों को नियुक्त कर देते हैं ताकि वे अपने पक्ष में उनसे वोट डलवा

सकें। साथ ही मतदाताओं को पोलिंग बूथ तक ले जाने के लिए उन्हें वाहन आदि की सुविधाएं भी मुहैया कराते हैं। जिससे ज्यादा-से-ज्यादा मतदाताओं को वे अपने पक्ष में कर सकें। इसके लिए वे विभिन्न प्रकार की योजनाएँ भी लागू करते हैं। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में हरि व विष्णुदयाल के नेतृत्व में 'मजदूर दल' के समर्थक चुनाव में जीतने हेतु अशिक्षित आप्रवासी भारतीय मजदूर मतदाताओं को साक्षर बनाने हेतु दिन-रात एक करके शिक्षा देने का कार्य करते हैं। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"गाँवों में अधिक-से-अधिक मतदाता तैयार करने के लिए गाँव-गाँव में एक सघन साक्षरता अभियान चलाया गया। लोगों को हिन्दी में अपना नाम लिखना सिखाने के लिए गाँव की सभी बैठकाओं में कई सप्ताह तक लगातार बच्चों की जगह बालिगों को पढ़ना-लिखना सिखाया जाता रहा। इस अभियान में पण्डित विष्णुदयाल की भूमिका सबसे महत्व की रही। यों हरि ने कोठियों में बैठकाओं के गठन और मजदूरों की शिक्षा का बहुत पहले से ख़याल रखना शुरू किया था। सुखदेव विष्णुदयाल भी उससे कहता रहा था कि जितने ज्यादा मजदूर मतदाता होंगे, उतनी ही अधिक जीत की संभावना बढ़ेगी।"[51]**

- **जीते हुए प्रत्याशी को अपदस्थ करने की साजिश-** अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने यह भी दर्शाने का प्रयास किया है कि देश की शासन-प्रणाली में अपना स्थान बनाने हेतु नेताओं, मंत्रियों व चुनावी उम्मीदवारों द्वारा न सिर्फ चुनाव जीतने हेतु विविध प्रकार के राजनीतिक हथकंडे अपनाए जाते हैं बल्कि इसके साथ ही चुनाव जीते हुए प्रत्याशी को मंत्रिमंडल में स्थान न देने के लिए उस पर तरह-तरह के बेबुनियाद व झूठे आरोप भी लगाए जाते हैं ताकि विधानसभा में विपक्षी के उम्मीदवार को कोई स्थान न मिले। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में हरि के माध्यम से अनत जी ने चुनाव जीते हुए प्रत्याशी के साथ होने वाले अन्याय का यथार्थपरक चित्रण किया है। हरि आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के हितार्थ मजदूर दल की ओर से विधानसभा के चुनाव में खड़ा होता

है। हरि द्वारा देश की राजनीति में सक्रिय भागीदारी करना देश के धनाढ्य लोगों को नहीं भाता। इसलिए वे चुनाव के दौरान हरि को तरह-तरह से परेशान करते हैं। किन्तु इन सब विरोधी परिस्थियों के बावजूद जब हरि चुनाव जीत जाता है तब विपक्षी नेताओं, मंत्रियों व पूँजीपतियों द्वारा हरि के प्रति एक षडयंत्र रचा जाता है ताकि वह विधानसभा में मजदूरों के प्रतिनिधि के रूप में विराजमान न हो सके। हरि के खिलाफ रची जाने वाली साजिश के बारे में अनत जी लिखते हैं- **"वे अब यह सोच रहे थे कि जिस आदमी ने बाहर रहकर नाक में दम कर रखा था, भीतर आने पर तो अब वह कुछ भी कर सकता है।----हरि के मजदूर यूनियन के एक आदमी को पकड़ा गया। जगनी नाम था उसका।-----यह जगनी का बच्चा भी बिक गया। इसने अदालत में तुम्हारी जीत के खिलाफ अर्जी दी है। यह दावा किया है कि तुम्हें अँग्रेजी अच्छी तरह नहीं आती, इसलिए तुम विधानसभा के सदस्य होने के अधिकारी नहीं हो।---अदालत में हरि को अनपढ़ प्रमाणित करके उसे हराने और विधानसभा में बैठने के अयोग्य साबित करने को विपक्षी दल और पूँजीपति तंत्र ने तीन वकीलों को खड़ा किया था। ये तीनों मजदूर दल के सदस्य थे, और चूँकि सुखदेव विष्णुदयाल के दल ने उनके दाँत खट्टे किए थे, इसलिए उस राजनीतिक गणित से हरि ऐसा राजनीतिज्ञ हो चला था, जिसे ऊपर उठने से पहले झुका देना उनके लिए जरूरी था।"**[52] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस तरह से चुनाव में जीते हुए प्रत्याशी को विपक्षियों द्वारा परेशान किया जाता है और उस पर झूठे आरोप लगाकर उसे मंत्रिमंडल में शामिल होने से रोकने हेतु भरसक प्रयास किया जाता है।

- **चुनाव जीतने के बाद नेताओं का अपने वायदों से मुकरना/ नेताओं की वादाखिलाफी प्रवृत्ति-** अनत जी ने सत्ता में मन्त्री पद पर पदासीन होने के लिए न सिर्फ चुनावी सरगर्मी व चुनावी हथकंडों का चित्रांकन किया है बल्कि इसके साथ ही नेताओं व मंत्रियों की उस वादाखिलाफी प्रवृत्ति का भी पर्दाफाश किया है जिसके तहत नेता व मन्त्री चुनाव-प्रचार के

दौरान आमजनता से अनेक प्रकार के झूठे वादे करके उनसे वोट लेते हैं और चुनाव जीतने के पश्चात् अपने ही चुनावी क्षेत्र के मतदाताओं व अपने सहयोगियों को भूल जाते हैं। साथ ही उनसे किए गए वादों को भी भूल जाते हैं। नेताओं की इस मनोवृत्ति का यथार्थपरक चित्रण अनत जी ने 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में डॉ रामगुलाम के माध्यम से किया है। उपन्यास में डॉ रामगुलाम विधानसभा के चुनाव में जीत हासिल करने के लिए आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के नेता हरि को अपनी पार्टी का सदस्य बना देते हैं ताकि हरि सभी मजदूरों के वोट रामगुलाम के पक्ष में डलवा सके। और हरि रात-दिन एक करके मजदूरों को रामगुलाम के पक्ष में वोट डालने के लिए प्रेरित करता रहता है। किन्तु चुनाव जीतने के पश्चात् रामगुलाम हरि से किए गए वादे को भूल जाता है। सत्ता पर पदासीन होते ही वह हरि के योगदान को भूल जाता है। वह मजदूरों के हितार्थ किए गए अपने वायदों से विमुख हो जाता है। रामगुलाम सरीखे नेताओं की वादाखिलाफी प्रवृत्ति का पर्दाफाश करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"डॉ रामगुलाम ने अपने दल की सफलता के बाद कहा कि अगर उन्हें पण्डित हरि परसाद का भारी सहयोग नहीं मिलता तो वे पूँजीपति वर्ग के सामने विजयी नहीं हो पाते। पर जैसा कि परकाश ने कहा था कि राजनीति में बहुत-सी बातें भुला देने के लिए की जाती हैं, इसलिए हरि के साथ जितने राजनीतिक वायदे किए गए थे, उन्हें भुला दिये जाने में देर नहीं लगी थी। हरि ने डॉ रामगुलाम के दोस्तों के सामने बस इतना ही कहा- "कोठी-मजदूरों और निम्न वर्ग के सरकारी या गैर-सरकारी कर्मचारियों को वोट देने का अधिकार नहीं, इसलिए राजनीतिक नेता और बुद्धिजीवी वर्ग को उनकी इतनी कम चिंता होती है। राजनीतिक नेता तो केवल उनके हित में काम करते हैं, जिनसे उन्हें वोट मिलते हैं। मेरा आपसे जुड़ने और मदद करने का उद्देश्य यह था कि मजदूरों को वोट देने का हक दिलाकर इज्जत और ताकत बख्शी जाए।----मेरा यह भी उद्देश्य था कि ये लोग वोट के अधिकारी हो जाएँ और इनके वोट के**

बल पर विधानसभा में पहुँचे नेता उनके पक्ष में काम करें------पर मेरे साथ विश्वासघात हुआ। मेरे कंधों पर चढ़कर आप सभी ने अपने वायदे भुला दिये।"[53]

- **राजनीति की ताकत व उसकी आवश्यकता-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से राजनीति की आवश्यकता एवं देश की शासन-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में राजनीति की भूमिका एवं उसकी ताकत का भी उल्लेख किया है। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में डॉ॰ क्यूरे आप्रवासी भारतीय मजदूरों के नेता हरि को देश की राजनीति में सक्रिय भागीदारी करने को प्रोत्साहित करता है साथ ही हरि को राजनीति की ताकत व उसकी आवश्यकता से रु-ब-रु कराते हुए कहता है- **"आज की दुनिया में राजनीति एक बहुत बड़ी शक्ति है। यह भी कहूँगा कि राजनीति से जुड़े हुए कई लोग दुष्चरित्र और दिमागी तौर पर सड़े हुए होते हैं। पर इसका यह मतलब नहीं कि राजनीति में आदमी अगर चाहे तो पूरी तरह ईमानदार, नि:स्वार्थ, निश्छल और नेक नहीं हो सकता। तुम जिस पार्टी से जुड़ने जा रहे हो, वह मेरी और तुम्हारी ही बनाई हुई पार्टी है।—अपने इर्द-गिर्द के लोगों की चालाकी और स्वार्थ से हमेशा सावधान रहना तथा अपने और मजदूरों के बीच किसी तीसरे को मत आने देना।"[54]**

- **राजनेताओं की महत्वाकाँक्षा-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक गतिविधियों व चुनावी हथकण्डों का यथार्थपरक अंकन किया है बल्कि इसके साथ-साथ राजनेताओं की महत्वाकाँक्षाओं का भी यथार्थपरक चित्रण किया है। 'अचित्रित' उपन्यास में विक्रम नामक चरित्र के माध्यम से राजनेताओं व मंत्रियों की स्वार्थलोलुपता व उच्च महत्वाकाँक्षा की सफल अभिव्यक्ति की गयी है। अपनी महत्वाकाँक्षा की पूर्ति हेतु राजनेता व मन्त्री किसी भी हद तक जा सकते हैं तथा हर रिश्ते-

नाते को दाँव पर लगाने से भी नहीं चूकते तथा इसके लिए वे हर अनैतिक कृत्य को भी जायज मानते हैं। अपनी उच्च महत्वाकाँक्षा के बारे में विक्रम अपनी प्रेमिका वानी से कहता है- **"मैं राजनीति में हूँ। राजनीति में आकाँक्षा और महत्वाकाँक्षा दोनों होती हैं। इसके बिना राजनीति में टिका नहीं जा सकता और अपनी महत्वाकाँक्षा के लिए राजनीति में हर चाल, हर दाँव जायज होता है।——इस सपने को मैं साकार करके रहूँगा। इस खेल को मुझे अन्त तक खेलना होगा। मैं उस व्यक्ति की जगह लेकर रहूँगा। इस देश का कुछ बनकर रहूँगा। लेकिन अब यह काम किसी दूसरे के सहयोग से करूँगा।"**[55] विक्रम अपने विपक्षी रामनाथ नौरतन को मन्त्री पद से हटाने के लिए और स्वयं को मन्त्री पद पर पदासीन करने के लिए हर नाजायज कदम उठाता है। और अपने द्वारा किए गए अनैतिक कृत्यों को वह राजनीति में जायज मानता है। वह वानी से कहता है- **"राजनीति में कोई काम गलत नहीं होता। इसमें तो केवल चुनाव की बाजी को जीतने के लिए हर नाजायज़ को जायज़ बनाना पड़ता है। मेरे मन्त्री हो जाने के बाद आगे चलकर प्रधानमन्त्री बन जाने की सभी उम्मीदें हैं इसमें।"**[56] वह अन्यत्र भी वानी से कहता है- **"राजनीति में कोई कदम गलत नहीं होता है। बस जो टिक जाये वही सही होता है। देखो वानी, मुझे कुछ बनना है और वह मैं तुम्हारी मदद के बिना नहीं बन सकता। मेरे इस क्षेत्र में हमेशा मौके की ताक होती है। मौका जैसे सामने आये उसका तत्काल फायदा उठा लेना चाहिए। राजनीति में मौके को चूक जाना सबसे बड़ा पाप समझा जाता है। एक बात और है वानी, राजनीति कोई मन्दिर-मस्जिद तो होती नहीं, जहाँ अच्छे-बुरे का ख्याल रखा जाये। यहाँ तो हर चीज जायज होती है। अच्छाई हारकर बुराई हो जाती है। यहाँ तो बस वही अच्छा समझा जाता है जो हारने से बच जाता है। तुम मुझे हारने मत दो वानी, यह मेरी जिन्दगी का सबसे बड़ा दाँव है, बिना खेले रह गया तो भी हारा ही समझा जाऊँगा।"**[57]

अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज के उस ऐतिहासिक सत्य को भी उजागर करने का प्रयास किया है जिसके तहत आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर और भारतवंशी मॉरिशसवासी दो दलों में विभक्त हो जाते हैं। औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराने के संदर्भ में आप्रवासी भारतीयों में वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो जाता है। गोरे शासकों की क्रूरता, बर्बरता, अन्याय, अत्याचार, अमानुषिक व्यवहार व भेदभावपरक रवैया से खिन्न होकर, विभिन्न औपनिवेशिक राष्ट्रों की स्वतन्त्रता से, विशेषकर भारत की स्वतन्त्रता से प्रभावित होकर तथा अनेक राजनेताओं व समाजसुधारकों की विचारधारा से प्रभावित होकर आप्रवासी भारतीय भी मॉरिशस को गुलामी की दासता से मुक्त कराने की योजना बनाते हैं। लेकिन अंग्रेजों की छत्रछाया में पलने वाले तथा उनके ख़िदमतगार कुछ आप्रवासी भारतीय मॉरिशस की स्वतन्त्रता के खिलाफ आवाज बुलंद करते हैं। आप्रवासी भारतीय मजदूरों के मध्य होने वाली इस वैचारिक टकराहट की सशक्त अभिव्यक्ति अनत जी के 'अचित्रित' उपन्यास व 'अब कल आएगा यमराज' कहानी संग्रह की 'वह आजादी' शीर्षक कहानी में हुई है। 'अचित्रित' उपन्यास में विक्रम उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जो मॉरिशस की आजादी के खिलाफ आवाज़ बुलंद करते हैं। विक्रम सरीखे राजनेताओं की देशद्रोहिता की पोल खोलते हुए रामनाथ नौरतन वानी नामक वेश्या से कहता है- **"कुछ लोग नहीं चाहते कि यह देश आजाद हो। ये लोग अपने देश ही के नहीं, बल्कि उसके भविष्य और उसकी प्रगति के भी दुश्मन हैं।"**[58] रामनाथ नौरतन पुन: कहता है- **"ये लोग जो कह रहे हैं कि अभी हम आजादी के योग्य नहीं हुए हैं ये गुलामी को बढ़ावा देने वाले लोग हैं। ये वे लोग हैं जो चाहते हैं कि हम हमेशा अंग्रेजों के अधीन रहें और लोग अपने पाँव पर खड़े न होकर घुटनों के बल ही रहें।"**[59] जब वानी द्वारा विक्रम से यह सवाल किया जाता है कि 'क्या तुम आजादी के खिलाफ हो'? तब विक्रम अपनी राजनीतिक पार्टी की पोल खोलते हुए कहता है- **"मैं नहीं हूँ। मेरी पार्टी है। मैं तो बस दोनों पार्टियों के कुछ**

दोस्तों के सहयोग से इस आजादी को उस समय तक के लिए थोड़ा-सा रोक लेना चाहता हूँ जब तक वह उनकी नहीं हमारी ली हुई आजादी न समझी जाने लगे।"[60] और जब वानी विक्रम से यह कहती है कि यदि चुनाव में रामनाथ नौरतन के पार्टी की जीत हो जाती है तब उसके कुछ ही महीनों बाद देश आजाद हो जाएगा। वानी के इस कथन को सुनकर आजादी के विरोध में नारा लगाने वाला विक्रम अपनी झल्लाहट को इन शब्दों में व्यक्त करता है- **"भाड़ में जाये यह आजादी।"**[61] विक्रम द्वारा कहे गए इन शब्दों से स्पष्ट पता चलता है कि वह और उसकी पार्टी के लोग यह नहीं चाहते कि मॉरिशस अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हो सके। इसीलिए वे इसका पुरजोर विरोध करते हैं। 'अचित्रित' उपन्यास में रामनाथ नौरतन उन बहुसंख्य लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जो मॉरिशस को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने के लिए कटिबद्ध हैं तथा अपनी सक्रिय सहभागिता निभाते हैं। रामनाथ नौरतन मीडिया के समक्ष मॉरिशस की आजादी के निमित्त किए गए कार्यों का जिक्र करते हुए कहता है- **"अगला संवैधानिक सम्मेलन अगले महीने होने जा रहा है। हमें पूरा विश्वास है कि हम अपनी माँग की सार्थकता का विश्वास अपने ब्रिटिश मित्रों को देकर रहेंगे। यह हमारी अगली बैठक होगी।——मैं इतना अवश्य कह सकता हूँ कि लंदन से सफलता पाकर लौटने के बाद चुनाव में अगर हमारी जीत हो जाती है, जो कि निर्धारित है, तो चुनाव के अधिक-से-अधिक छ: महीने बाद हम अपने देश का झण्डा फहरा सकते हैं।"**[62] आजादी के संबंध में अपनी विचारधारा व्यक्त करते हुए रामनाथ वानी से कहता है- **"मेरे अपने दिमाग में देश के हित के जितने विचार हैं उन्हें मैं तभी कार्यान्वित कर सकूँगा जब हमारी अपनी आजादी हो। यही कारण है कि इस आजादी के लिए मैं इतना सक्रिय हूँ।——अगर इस देश को आजाद करवाने में मैं अपना सहयोग नहीं दे सका या किसी कारणवश हम आजादी नहीं ला सके तो समझ लो वह मेरे अपने जीवन का सबसे बड़ा पछतावा होगा।"**[63] इसीलिए वह देश के हर नागरिक से इसमें सहयोग करने की अपील करता है। इस संदर्भ में वह वानी नामक वेश्या से कहता है- **"इस देश में आजादी तो तब ही आयेगी जब इसे छोटे-बड़े सभी का सहयोग मिलेगा।——यह तो हर आदमी के चाहने का**

प्रश्न है। इसमें तुम्हारे सहयोग का उतना ही महत्व है जितना मेरा या हमारे मुख्यमन्त्री का। कई देशों में तो हजारों लोगों को जानें तक देनी पड़ती हैं अपने देश के लिए आजादी हासिल करने में। हमें तो बस थोड़ा-सा संघर्ष करना पड़ रहा है। अपने देश की आजादी के लिए 'नहीं' कहने वाला आदमी जिंदगी भर पछताता रहेगा।"[64] उपर्युक्त कथन के माध्यम से जहाँ एक ओर रामनाथ सरीखे देशभक्तों का चित्रण किया गया है वहीं दूसरी ओर देश की जनता से यह अपील भी की गयी है कि देश की आजादी में वे अपना योगदान दें। ताकि अन्य औपनिवेशिक राष्ट्रों की तरह मॉरिशस को भी गोरों की गुलामी की जंजीरों से मुक्त किया जा सके और मॉरिशस भी एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित हो सके।

मॉरिशस की आजादी को लेकर वहाँ की आम जनता में जो वैचारिक टकराहट उत्पन्न होती है उसका सजीव चित्रण 'वह आजादी' शीर्षक कहानी में भी देखने को मिलता है। कहानी में हरिया और गाब्रियेल नामक घनिष्ठ मित्रों के बीच चुनाव के दौरान 'देश की आजादी के प्रश्न' को लेकर विवाद हो जाता है। और यह विवाद इस सीमा तक बढ़ जाता है कि वे दोनों एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं। हरिया देश की आजादी का समर्थक है जबकि गाब्रियेल आजादी का सख्त विरोध करता है। मॉरिशस की आजादी को लेकर मॉरिशस में चुनाव के दौरान जो माहौल बनता है उसका सजीव चित्रण निम्न उदाहरण के माध्यम से देखा जा सकता है- **"आजादी माँगने वाले आजादी के खिलाफ बोलनेवालों के खिलाफ नारे लगाते रहे थे और आजादी का विरोध करनेवाले आजादी की दुहाई देनेवालों के विरुद्ध आवाज बुलंद करते रहे थे। हर गाँव, हर शहर में एक हरिया और एक गाब्रियेल आमने-सामने होकर एक-दूसरे को देश का शत्रु घोषित करते रहे थे। गाँव-गाँव, शहर-शहर इश्तहार लगे थे– 'आजादी लेकर रहेंगे।' नहीं, हमें कच्ची आजादी नहीं चाहिए।'–– गाब्रियेल चिल्ला उठा था- 'आजादी पा लेने के बाद देश का भविष्य अंधकार में डूब**

जाएगा। हमारे बन्दरगाह में जहाज चावल-आटा नहीं उतारेंगे। देश नंगा हो जाएगा। हमारे बच्चे भूखे मरेंगे। वीव जुवाल। हमारे नेता गायेंता जुवाल की जय।' उससे भी बुलंद आवाज में हरिया चिल्लाया था- 'आजादी प्रगति लाएगी, खुशहाली फैलेगी। हम अलग-अलग खेमे के न होकर एक राष्ट्र के वासी होंगे। एक देश, एक झण्डा, एक राष्ट्र। वीव चाचा रामगुलाम। चाचा रामगुलाम की जय हो।"[65] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में 'जहाज़ी भाई' कहे जाने वाले आप्रवासी भारतीयों में इस कदर वैचारिक मतभेद व्याप्त हो जाता है कि वे एक-दूसरे के दुश्मन तक बन जाते हैं।

अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के राजनीतिक संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की है, बल्कि इसके साथ ही उन स्थितियों, परिस्थितियों व व्यक्तियों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष योगदान को भी सराहा है जिनकी प्रेरणा से आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर देश की राजनीति में सक्रिय भागीदारी करने के लिए प्रेरित होते हैं तथा अपने अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा करते हुए मॉरिशस की राजनीति में अपनी पैठ बनाते हैं साथ ही देश की शासन-व्यवस्था की बागडोर संभालते हैं। अनत जी अपने उपन्यासों में उन भारतीय व गैर-भारतीय व्यक्तियों की चर्चा करते हैं जिनकी प्रेरणा से आप्रवासी भारतीय मजदूरों में राजनीतिक चेतना का उदय होता है। ऐसे व्यक्तियों में भारत के समाज सुधारकों, आप्रवासी भारतीयों के शुभचिंतकों व साहित्यकारों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिनमें महात्मा गाँधी, बैरिस्टर बुधन, कुँवर महाराजसिंह, लाला लाजपत राय, गोपाल कृष्ण गोखले, मुंशी प्रेमचंद, बनारसीदास चतुर्वेदी विद्वानों के अलावा गैर-भारतीय समाज सुधारकों व मजदूरों के हितैषियों में जार्ज आंडरसन, रेमी ओलिए जैसे लोगों के नाम

उल्लेखनीय हैं। सन् 1901 ई० में दक्षिण अफ्रीका से लौटते समय गाँधी जी लगभग 15 दिनों तक मॉरिशस द्वीप पर रुके थे। वे वहाँ के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साहस, संघर्ष, परिश्रमशीलता तथा उनकी शोषित, पीड़ित, उपेक्षित दशा से द्रवित हो जाते हैं। जिसके परिणामस्वरूप वे आप्रवासी भारतीयों से यह अनुरोध करते हैं कि यदि तुम्हें अपनी दयनीय स्थिति को सुधारना है तो वे देश की राजनीति में सक्रिय भागीदारी करें और अपने बच्चों को शिक्षा दिलायें। आप्रवासी भारतीय मजदूरों के हितार्थ गाँधी जी द्वारा दिये गए उद्बोधन को अनत जी निम्नवत् प्रस्तुत करते हैं। वे लिखते हैं- **"गाँधी जी ने इन शब्दों के साथ उस भीड़ को संबोधित किया- 'मेरे देश से पहुँचे मेरे भाई, बहनों.....मैं जानता हूँ कि इस देश को समृद्ध बनाने में आप लोगों का कितना बड़ा योगदान रहा है।....शोषण के बीच सारे अत्याचारों को झेलकर भी आपने जिस सहनशीलता का और अहिंसा से इस मिट्टी पर अपना पसीना बहाया उसी का फल है इस देश की हरियाली और इसकी समृद्धि।.....आप सभी से मेरे दो विशेष अनुरोध हैं- राजनीति से दूर रहकर आप अपने अधिकार को नहीं पा सकते। लोग आपकी इज्जत करना सीखे इसके लिए आप लोगों को सक्रिय रूप से राजनीति में भाग लेना होगा। आपके प्रतिनिधि को बाहर से नहीं, बल्कि विधानसभा के भीतर से अपने अधिकारों का तकाजा करना होगा.....।...आप लोगों से मेरा एक दूसरा अनुरोध है। आप जी जान से अपने बच्चों को पढ़ाइए। ये ही इस राष्ट्र के सर्वस्व बनेंगे।....इस देश के स्कूल में हरेक बच्चों के लिए जगह होनी चाहिए। वह शिक्षा ही है जो आपके बच्चों को किसी के भी सामने खड़े हो पाने की शक्ति दे सकती है।"[66]** मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की शोषित पीड़ित दशा से द्रवित होकर गाँधी जी भारत पहुँचकर 'गोपाल कृष्ण गोखले' द्वारा स्थापित 'भारतीय सेवक समाज' नामक संस्था में कार्यरत नवयुवक मगनलाल मणिलाल को मॉरिशस जाने और गिरमिटिया मजदूरों की दयनीय स्थिति में सुधार हेतु प्रेरित करते हैं। गाँधी जी की प्रेरणा से 11 अक्टूबर 1907 ई० को मॉरिशस में बरिस्टर मणिलाल का आगमन हुआ। वे मॉरिशस में पाँच वर्षों तक रहे और आप्रवासी भारतीयों की वास्तविक स्थिति से रु-ब-रु होकर उनके

हितार्थ अनेक ठोस कदम उठाए तथा उन्हें उनकी शक्ति का एहसास दिलाकर उनमें राजनीतिक चेतना का विस्तार किया। आप्रवासी भारतीय मजदूरों के प्रति मणिलाल की प्रतिबद्धता को अनत जी निम्न शब्दों में दर्शाते हैं- **"वकील ने पूरी बस्ती को आश्वासन दिया था कि वह उन्हीं के काम के लिए राज्यपाल से मिलने जा रहा था।—-आप लोग आवेश में आकर कोई भी गलत कदम न उठाएँ। तनाव के कुछ कम होने पर ही समस्या का हल आसान हो सकेगा। कल आप लोगों की बस्ती में पहुँच रहा हूँ। मुझे पूरी आशा है कि आप सभी की कठिनाई दूर हो जाएगी। इस देश में भारतीय मजदूरों की स्थिति सुधर जाए, इसके अतिरिक्त मेरी कोई और प्रतिबद्धता नहीं। आप लोग हताश न हों।"[67]** आप्रवासी भारतीय मजदूरों के हितार्थ बैरिस्टर मणिलाल द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए मॉरिशस के इतिहासकर प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"पाँच लंबे वर्षों तक रहकर मणिलाल डॉक्टर ने निम्नलिखित कार्य किए थे जिनकी बदौलत वर्तमान मॉरिशस का रूप निखरा है- देश के विभिन्न भागों में सार्वजनिक जुटाव आयोजित करना, अदालतों में असहाय मजदूरों की नि: शुल्क पैरवी करना, कोठी-मालिकों की शोषण-प्रवृत्ति का लेखों द्वारा पर्दाफाश करना, धार्मिक विषयों की चर्चा करके विभिन्न धर्मावलम्बियों का मतभेद दूर करना, शर्तबंद मजदूरों की समस्याओं को 'अखिल भारतीय नेशनल कांग्रेस' के सामने पहुँचाना, हिंदुस्तानी पत्र को निकालकर प्रवासी भारतीयों के गौरव की रक्षा करना, दो ऐतिहासिक मुकदमों को लड़कर अभारतीय कानूनदाँ के दाँत खट्टे करना, 'यंग मेन्स हिन्दू एसोसिएशन' तथा 'आर्य समाज जैसी शक्तिमान संस्थाओं की स्थापना करना, 'हिंदुस्तानी' के सम्पादन के लिए पण्डित आत्माराम विश्वनाथ को भारत से बुलवाया, आर्य समाज के सुदृढ़ीकरण के लिए बर्मा से डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज को भेजा, शाही आयोग के सामने भारतीयों का प्रतिनिधि बनाकर बयान देना, भारतीय नवयुवकों को उच्च शिक्षा के लिए**

विदेश जाने की प्रेरणा देना, 1910 और 1911 के भारतीय नेशनल कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में मॉरिशस के भारतवंशियों का प्रतिनिधित्व करना, दक्षिण अफ्रीका जाकर गाँधी जी को अपने कार्यों का ब्यौरा देना, मॉरिशस में सत्याग्रह आंदोलन का सूत्रपात करना।"[68] बैरिस्टर मणिलाल के योगदान व उनके द्वारा आप्रवासी भारतीय मजदूरों को दिये गए प्रोत्साहन का उल्लेख अनत जी ने 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में भी पृष्ठ संख्या 167 में किया है। मणिलाल के बाद सन् 1915 में बैरिस्टर आर. के. बुधन का आगमन होता है। इनके द्वारा आप्रवासी भारतीय मजदूरों के हितार्थ किए कार्यों का उल्लेख अनत जी 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में पृष्ठ संख्या 172, 177, 179-180, 188 व 192 में किया है। बैरिस्टर बुधन के पश्चात् सन् 1924 ई॰ में भारत से तत्कालीन भारतीय सरकार द्वारा भारतीय आप्रवासन संबंधी समस्याओं पर जाँच हेतु कुँवर महाराजसिंह का आगमन होता है। वे मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय मजदूरों की वास्तविकता से रु-ब-रु होकर भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट भेजते हैं जिसमें यह सिफारिश की जाती है कि 'शर्तबंद प्रथा' को हमेशा के लिए बंद कर दिया जाए। आप्रवासी भारतीय मजदूरों के हितार्थ कुँवर महाराजसिंह के योगदान एवं उनके द्वारा दिये गए प्रोत्साहन का उल्लेख अनत जी 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में करते हैं। उपन्यास में कुँवर महाराजसिंह उपन्यास के नायक परकाश के माध्यम से मजदूरों की बस्ती जाकर उनकी वास्तविक स्थिति का पता लगाते हैं और उनकी दयनीय दशा को देखकर उससे उबरने हेतु उन्हें उपाय भी सुझाते हैं तथा मजदूरों को देश की राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभाने की सलाह भी देते हैं। वे परकाश को संबोधित करते हुए कहते हैं- **"तुम चाहते हो कि तुम्हारे अपने लोगों को उनके अधिकार मिलें, उनकी इज्जत हो और खुशहाली प्राप्त हो तो तुम्हें अपने प्रभाव को और भी बढ़ाना होगा। तुम्हें अपनी आवाज केवल मजदूरों की सभाओं और मालिकों के दफ्तरों में ही नहीं बुलंद करनी है। तुम्हारी आवाज में दम है। इसे अब अपने देश की विधानसभा में**

बुलंद करो।.....तुम्हीं वह आदमी हो जो आने वाले दस वर्षों में इस देश और इसके मजदूरों को एक राजनीतिक शक्ति प्रदान कर सकते हो। मैं तो अपनी रिपोर्ट तुम्हारी सरकार को भी दूँगा और अपनी सरकार को भी।.... मेरी सबसे बड़ी माँग तुमसे यही होगी कि तुम अभी से एक राजनीतिक मंच तैयार करना शुरू कर दो- तुम्हीं ने कहा था कि गाँधी जी भी यहाँ के लोगों से यही माँग कर गये हैं। मैं भी यही माँग तुमसे कर रहा हूँ।"69 आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के हितार्थ काम करने वालों में कुछ ऐसे अभारतीय लोग भी शामिल थे जिन्होंने तमाम प्रकार के कष्टों को सहकर, सरकार की उपेक्षा का शिकार होकर भी भारतीय मजदूरों के निमित्त संघर्ष किया। ऐसे लोगों में जार्ज एंडरसन व रेमी ओलिए के नाम प्रमुख हैं। औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में गोरों के शोषणतंत्र में पिस रहे आप्रवासी भारतीय मजदूरों की दयनीय स्थिति से द्रवित होकर रंगीन जाति के नेता व गैर-भारतीय रेमी ओलिए अपनी कुशल पत्रकारिता के जरिये अंग्रेज़ शासकों के भ्रष्ट्र शासनतंत्र व भारतीय मजदूरों के साथ किए जाने वाले भेदभाव परक व्यवहार का खुलासा करते हैं। तथा आमजनता के सम्मुख गोरों के काली करतूतों का पर्दाफाश करते हैं, जिसकी वजह से उन्हें सरकार की उपेक्षा एवं उसके कोपभाजन का शिकार भी होना पड़ता है। रेमी ओलिए के योगदान की सराहना करते हुए प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं- **"भारतीयों के आगमन के कुछ साल बाद मॉरिशस में रेमी ओलिए युग आया था। रेमी ओलिए अभारतीय होते हुए भी प्रवासियों के मित्र और शुभचिंतक थे। ये कुशल पत्रकार और निर्भीक वक्ता थे। उन्होंने मजदूरों पर किए गये अत्याचारों के विरुद्ध अपनी आवाज उठायी थी। उन्होंने भारतीयों की वास्तविक स्थिति को जनता के सामने प्रकट करने में कोई कसर नहीं रखी। उस समय रंगीन जाति का एकमात्र पत्र 'सॉंचिनेल-द-मॉरिशस' था। इसी पत्र में ओलिए महोदय ने सरकारी धन के दुरुपयोग, अस्वस्थ शिक्षा-प्रणाली तथा राजनीतिक दुर्व्यवस्था आदि विषयों पर निर्भीकतापूर्वक लेख लिखे थे।"70** 'हम प्रवासी' उपन्यास में अनत जी ने जार्ज एंडरसन की नेकनीयती व आप्रवासी भारतीय मजदूरों के प्रति सहयोग की भावना का

चित्रण किया है। आप्रवासी भारतीय मजदूरों पर शक्कर कोठी के मालिकों द्वारा ढाये जाने जुल्मों के खिलाफ आवाज उठाने वाले मजदूरों के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए तथा मजदूर नेता को आश्वासन देते हुए एंडरसन कहते हैं- **"आप लोगों में से कुछ लोगों की शंका जायज है। कि अब स्थिति में काफी सुधार आ चुका है। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट भी आप लोगों को यह आश्वासन दे चुके हैं कि कोठियों में आपके साथ पहले जैसे दुर्व्यवहार की नौबत नहीं आएगी। वैसे भी हर शक्कर कोठी में मैं नियमित रूप से अपने सहायकों के साथ आता रहूँगा।"**[71] आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों में राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने एवं मॉरिशस को गुलामी की दासता से मुक्त कराने में न सिर्फ भारतीय व गैर-भारतीय समाज सुधारकों, शुभचिंतकों, विद्वान मनीषियों का योगदान है बल्कि इसके साथ ही भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम व क्रांतिकारी नेताओं की विचारधारा भी शामिल है। इस संदर्भ में अनत जी डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका से एक साक्षात्कार में कहते हैं- **"भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम से ही मॉरिशस को अपनी स्वतन्त्रता के अभियान की प्रेरणा मिली थी। जब पं॰ वासुदेव विष्णुदयाल का जन-आंदोलन अपनी पराकाष्ठा पर था, तभी से हम भी 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' तथा 'स्वराज्य' की आवाज बुलंद करने लगे थे। महात्मा जी के अहिंसा-आंदोलन की हम लोग कद्र करते थे, लेकिन उस समय मॉरिशस की पुरानी और नई पीढ़ियों की धमनियों में नेता जी सुभाषचंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद और भगतसिंह के नारे उमड़ने लगे थे। उस समय न जाने किस भारतीय कवि का यह नारा हमारा भी नारा था कि -**

'हम रण मतवाले सैनिक हैं सुरसमरांगन में जाएंगे।

आवेश भरा है नस-नस में, कुछ करके दिखलाएँगे।'

क्रांतिकारी आंदोलन से हम लोग प्रभावित थे, लेकिन हमारे बीच जो क्रांति हुई वह शांत क्रांति के रूप में हुई।"[72]

ग- आर्थिक संघर्ष

अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के सामाजिक एवं राजनीतिक संघर्ष को दर्शाया है बल्कि इसके साथ ही उनके आर्थिक संघर्ष को भी यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। अनत जी द्वारा रचित- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्थिक विपन्नता, आर्थिक विपन्नता से जूझते किसान-मजदूरों की दयनीय स्थिति, आर्थिक विपन्नता के विभिन्न कारणों एवं उसके दुष्परिणामों- शराब की लत, जुआ की लत, नशीले पदार्थों का सेवन व उसके धंधे में संलिप्तता, वेश्यावृत्ति, वेश्यागमन, चोरी, पारिवारिक कलह, बिखरते दाम्पत्य जीवन आदि की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

- **आर्थिक विपन्नता का चित्रण-** अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के आर्थिक विपन्नता एवं तंगहाली जीवन का सजीव चित्रांकन अपने उपन्यासों में किया है। 'लाल पसीना' उपन्यास में पुष्पा एवं किसनसिंह के आपसी वार्तालाप के माध्यम से मजदूरों के अभावग्रस्त जीवन को दर्शाया गया है। पड़ोस की अन्य बस्ती में गो-पालन की बात सुनकर जब पुष्पा किसनसिंह से गाय पालने की अपनी अभिलाषा जाहिर करती है तब किसन उसे गो-पालन में आने वाली कठिनाइयों से परिचित कराते हुए और अपनी

बस्ती की आर्थिक विपन्नता से रु-ब-रु कराते हुए कहता है- **“अपने घरों में तो जूठा-कूँठा खाने के लिए चूहा भी नहीं हैं। जहाँ चूहे को बिना खाये मर जाना होता है, वहाँ तुम गाय की बात कर रही हो?”[73]** उपर्युक्त कथन के माध्यम से अनत जी ने आर्थिक तंगी की भयावहता को दर्शाया है कि जहाँ पर अर्थाभाव की वजह से भूखे रहकर जीवन का निर्वाह करना पड़ रहा है। इस अभाव की वजह से लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते तो शौक आदि पूरा करने का सवाल ही नहीं उठता। अनत जी ने आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की उस स्थिति का भी चित्रांकन किया है, जब उन्हें कई-कई दिनों तक भूखा रहना पड़ता था और उस भूख को मिटाने के लिए उन्हें तमाम प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **“खेतों की पहली फसल शुरू होने में अभी दो महीने से कम की अवधि नहीं शेष थी। कुएँ, खेत, बैठका, नदी, तट, हर जगह यही प्रश्न किया जाता रहा- ये दो महीने बाल-बच्चे क्या खाएँगे?——फरीद के साथ मदन उन घरों को देख आया था, जहाँ तीन दिन से मुट्ठी भर भात में गुजारा हो रहा था। हाँडी में बचे हुए अनाज को एकाध सप्ताह ले जाने के लिए और कोई दूसरा उपाय था ही नहीं। जिन घरों ने इस परहेज को अपनाया था, वहाँ बच्चे भी थे। मदन को इसी बात की अधिक चिंता थी कि ये बच्चे अपने पेट को दबाये कैसे सो सकते थे।”[74]** आर्थिक विपन्नता से जूझते परिवारों का चित्रण अनत जी ने ‘अचित्रित’ उपन्यास में वानी के परिवार के माध्यम से किया है। वानी अपने घर की आर्थिक तंगी एवं उसके भयावह रूप का चित्रण करते हुए कहती है- **“हमारे घर से कुछ दूरी पर एक विवाह था। हम लोगों को दावत तो नहीं मिली थी पर मेरी माँ ने मुझे आदेश दिया था कि एक टोकरी लिए हल्दी के बाद वहाँ पहुँच जाऊँ। जब लोगों को खाना परोसा जाने लगे तो किसी जान-पहचान की महिला से मैं पूरी-तरकारी माँग लाऊँ। तीन दिनों से मेरी माँ बीमारी की हालत में शहर नहीं जा पाई थी। पकाने के लिए घर में कुछ भी नहीं था।——अपनी दोनों बहनों की आँखों में भूख और खाने की चाह देखकर तड़प उठी थी।———मीरेय की**

माँ जब अपने दोनों कुत्तों को आवाज देकर उनके पात्रों में खाना उड़ेलने के लिए आगे बढ़ी थी तो मेरे मन में आया था कि मैं दौड़कर उसके हाथ से वह खाना अपनी बहनों के लिए छीन लाऊँ। अपनी छोटी बहनों को पहले भी मैं भूख के कारण रोते हुए भात-भात की माँग करते सुन चुकी थी लेकिन उस दिन का उन दोनों का बिलखना मेरे कलेजे को चीर गया था।"[75]

'लाल पसीना' उपन्यास में सोमा की सास के माध्यम से अनत जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि आर्थिक तंगी की वजह से आप्रवासी भारतीयों को न सिर्फ भूखों रहना पड़ता था बल्कि तन ढकने के लिए वस्त्र से भी वंचित रहना पड़ता था। आप्रवासी भारतीय मजदूर एक ही वस्त्र को पैबंद लगा-लगाकर वर्षों पहनते थे। इस संदर्भ में सोमा की सास अपनी आर्थिक विपन्नता को व्यक्त करते हुए सोमा से कहती है- **"बहू। देख छोटे सन्दूक के ऊपर डिबिया में सुई तागा होई, तनी लेते आना त। इस धोती को छोड़त भी नाहीं बनत। बीस-बरस से हर घाम-पानी में साथ देती आई है। भारत से मारीच तक।—-कई बार तुमने सिया है- चिथरी-चिथरी होने से बचाया है। पर अब त लगत बा कि एकर दिन पूरे हुए। हये धोती में हम जहाज पर चढ़ा था।"[76]** आर्थिक तंगी के चलते भारतीय मजदूर जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी न तो भर पेट भोजन कर पाते थे और न ही तन ढकने को वस्त्र खरीद पाते और न ही अपने बच्चों को उचित शिक्षा दिला पाते। अनत जी ने आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की इस आर्थिक विपन्नता को 'अचित्रित' शीर्षक उपन्यास में भी दर्शाया है। इस उपन्यास में वानी, जो कि पेशे से वेश्या है, अपने बचपन को याद करते हुए अपनी आर्थिक तंगी का खुलासा निम्न शब्दों में करती है- **"मेरी माँ की अपनी एक ही साड़ी थी। वह उसे हर शाम धोकर रात भर सूखने के लिए छोड़ देती थी ताकि वह उसे सुबह पहनने को मिल सके। रात में वह भीतरी कपड़ों में रहती।"[77]** वह पुन: कहती है- **"मेरी माँ ने बहुत कम अवसरों पर हमें भूखा सोने दिया है। घर की हाँड़ी में जब कुछ भी**

नहीं होता था तो वह कहीं-न-कहीं से कच्चे पपीते तोड़ लाती। उसकी तरकारी पकाकर हमें कंद के साथ परोस देती थी। हमारे घर पर तो सन के कड़वे फल तक की तरकारी पका करती थी। एक बार कुछ न मिलने पर मेरी माँ ने एक कड़ाही संजीहन की भाजी बना डाली थी। हम तीनों बहनों ने, जब कि हम दिन भर की भूखी थी, उस साग को भरपेट खा लिया था। सुबह होते-होते हम तीनों के पेट कुछ इस कदर खराब हुए थे कि दो दिनों तक हमारे पेट बहते रहे।"[78] इसी आर्थिक तंगी की वजह से वानी की पढ़ाई भी रुक जाती है क्योंकि उसके पिता के पास उतने पैसे नहीं थे जिससे कि वह वानी की पढ़ाई का खर्च वहन करते। अपने पिता की आर्थिक विपन्नता और उसकी वजह से पढ़ाई में आने वाली दिक्कतों का उल्लेख करते हुए वानी कहती है- **"मुझे नंगे पाँव स्कूल जाते-देख कहता था कि अगले साल से मैं जूते पहनकर स्कूल जाऊँगी। अगले साल मैंने जूते तो नहीं पहने पर कड़ी धूप में अंगारे-से गरम कोलतार की सड़क पर अपने पाँवों को जलाने से बचाने के लिए कई बच्चों की तरह मैं भी पाँवों में आम की सूखी गुठलियाँ चिपका कर चलती थी। पेड़ से हम लोग लसौड़े तोड़ते और उसी से गुठलियाँ चिपका लेते। गुठलियों से चलने में कुछ दिक्कत तो होती थी, किन्तु पैर जलने से बच जाते थे। धीरे-धीरे चलकर हम स्कूल देर से पहुँचते और इसके लिए मार खानी पड़ती थी। ऐसे तो मेरी पढ़ाई छठी कक्षा से आगे हो ही नहीं सकी थी।"[79]** उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से अनत जी ने न सिर्फ वानी की आर्थिक विपन्नता को दर्शाया है बल्कि स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के समस्त आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्थिक विपन्नता एवं उसकी वजह से उत्पन्न समस्याओं को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में भी अनत जी ने आर्थिक विपन्नता का चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में हरि नामक पात्र आप्रवासी भारतीयों की आर्थिक तंगी एवं उससे उत्पन्न भुखमरी और उस भुखमरी को शांत करने के उपायों पर प्रकाश डालते हुए उन वृक्षों के प्रति आभार प्रकट करता है, जिनकी वजह से बस्ती के लोगों की क्षुधा शांत हुई है। हरि 'फ्रीआपें' वृक्ष को अन्नदाता मानता है। क्योंकि अन्न के अभाव में कन्द,

मान्योक, मकई और फ्रीआपें के फल ही आप्रवासी भारतीय मजदूरों की क्षुधा पूर्ति का साधन थे। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"फ्रीआपें के पेड़ के नीचे पहुँचकर हरि उसके फलों को देखता रहा।——उसका पिता इस फल को विलायती कटहल कहता था,—हरि इस पेड़ को अन्नदाता कहता था। इस देश में मजदूरों के सौ वर्षों के अपने इतिहास में फ्रीआपें, जिसका अर्थ रोटीफल है, लोगों को उसी तरह भूख से मरने से बचाता आया था जिस तरह श्वेत कन्द, मान्योक और मकई। मजदूरों के आँगनों में अगर कन्द, मान्योक, मकई और रोटीफल के पेड़-पौधे नहीं होते, तो चावल के आटे के अभाव में कितने ही लोग मर गए होते। हरि के अपने घर में भी कन्द, सफेद कन्द, मकई और रोटीफल को कभी उबालकर, तो कभी उनकी रोटियाँ पकाकर खाया था। चावल की जगह मकई का भात तो कभी रोज का आहार था। उसी तरह उसके घर रोटीफल के पराठे भी बनते और उसी की तरकारी भी।"**[80] 'हम प्रवासी' उपन्यास में भी अनत जी ने मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्थिक तंगी एवं उससे जूझते परिवारों का चित्रण किया है।

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों के माध्यम से मॉरिशसीय समाज में न सिर्फ आप्रवासी भारतीय मजदूरों की आर्थिक तंगी का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ ही उन विभिन्न कारणों पर भी प्रकाश डाला है जिनकी वजह से मजदूरों को आर्थिक तंगी का शिकार होना पड़ता है। आर्थिक तंगी के प्रमुख कारणों में- महँगाई की समस्या, बेरोजगारी, बेकारी, कम पारिश्रमिक देना, गोरों द्वारा मजदूरों के हक का शोषण, नौकरी में भेद-भावपरक व्यवहार, प्राकृतिक आपदा- आँधी, तूफान, सूखा, अकाल, महामारी आदि, शराब व जुएँ की लत नशाखोरी, परिवार के मुखिया की असामयिक मृत्यु आदि हैं।

- **मालिकों द्वारा मजदूरों के श्रम का शोषण-** आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्थिक तंगी का एक प्रमुख कारण मालिकों द्वारा मजदूरों के श्रम का शोषण भी है। मॉरिशस में गोरे मालिकों तथा कोठी के सरदारों द्वारा भारतीय मजदूरों से अधिक-से-अधिक तथा कठोर-से-कठोर काम करवाया जाता लेकिन जब मजदूरों को वेतन देने की बारी आती तब उन पर तरह-तरह के आरोप लगाकर उनके वेतन से कटौती कर ली जाती। कभी मजदूरों का वेतन यह कहकर काट लिया जाता कि वे काम पर देर से पहुँचे हैं, तो कभी काम में गड़बड़ी निकाल कर उनके वेतन में कटौती की जाती। यदि कभी कोई मजदूर बीमारी आदि की वजह से एक दिन काम पर न पहुँच पाता तो दूसरे दिन उससे दुगुना श्रम करवाया जाता और साथ में एक दिन का वेतन भी काट लिया जाता। कभी मालिकों के खिलाफ आवाज उठाने पर सजा के तौर पर वेतन में कटौती कर ली जाती थी। यदि कभी भारतीय मजदूरों द्वारा अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु अन्य प्रयास किए जाते, जैसे- खेतों में सब्जी का व्यवसाय करना, गो-पालन आदि तो उन पर पाबंदी लगा दी जाती। उनके खेतों की फसलों को तहस-नहस कर दिया जाता और गायों के लिए चारे पर रोक लगा दी जाती थी ताकि मजदूरों की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार की उन्नति न हो सके। गोरे शासकों के शोषणतंत्र में पिसते भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की शोषित दशा का चित्रण अनत जी ने कई उपन्यासों में किया है। अनत जी द्वारा रचित 'लाल पसीना' उपन्यास में गोरे शासकों की शोषणपरक नीति का पर्दाफाश करते हुए उपन्यास का एक पात्र दाऊद मियां किसन से कहता है- **"साहब को पता चल गया है कि खेतों को जोतकर हम अपनी स्थिति में थोड़ा-बहुत सुधार ला सकें हैं। हमारी स्थिति में सुधार आए, यह साहबों को गवारा कैसे हो सकता है? इधर की ताजा सब्जियों से हमने अपनी सेहत भी कुछ सुधार ली है, यह भी इन्हें पसंद नहीं। अपने को ये हमारे पसीने की हर बूँद के मालिक मानते हैं। यह कैसे सह सकते हैं कि हम अपनी गिरवी पड़ी पसीने की बूँदों को अपने लिए भी बहाएँ।"[81]** आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ गोरों द्वारा किए जाने वाले

अत्याचार का वर्णन करते हुए 'लाल पसीना' उपन्यास का पात्र धनलाल कहता है- **"हमारी कमर तोड़ने के लिए ऐसा किया जा रहा है। पिछवाड़े की वह जमीन जिसमें हम अपने लिए थोड़ी-बहुत सब्जियाँ उगा लेते हैं——अब हम अपनी खेती नहीं कर सकते।——खेतों को घिरवा दिया गया किसन भैया। अब हम कल से वहाँ नहीं जा सकते।——उस जमीन पर अगले सप्ताह गन्ने का नया कारख़ाना बनेगा।——खेतों के चारों ओर कँटीले तार लगा दिये गए हैं। दो सिपाही बन्दूक लिए पहरा दे रहे हैं। हमारी फसलें उसी में रह गईं।"[82]**

अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि गोरे मालिक न सिर्फ मजदूरों के हक को मारते थे बल्कि मजदूरों के लिए श्रम कानून में जो वेतन नियत किया गया था, उस पर भी कटौती करते थे। गोरों द्वारा मजदूरों के वेतन में की जाने वाली कटौती का उल्लेख करते हुए 'लाल पसीना' उपन्यास का एक पात्र कहता है- **"पंद्रह सौ रुपया? यानी हर मजदूर पर सौ रुपया। "हमारा मूल्य जब आदमी पीछे सौ रुपया है तो फिर हमें आठ आना रोजाना क्यों मिलता है?"[83]** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार मालिकों द्वारा मजदूरों के हक एवं श्रम का शोषण किया जाता था और उन्हें वास्तविक वेतन से दूर रखा जाता था। 'हम प्रवासी' उपन्यास में भी अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों की शोषित दशा एवं गोरों के शोषणतंत्र का चित्रण किया है। पूँजीपतियों द्वारा आम जनता की शोषित दशा का वर्णन करते हुए मधुवा अपने मित्र हनीफ से कहता है- **"क्योंकि ये होशियार लोग होशियारी से जुल्म ढाते रहते हैं और बड़ी होशियारी से जुर्म करके बच जाते हैं। हड़पने वाले तथा शोषण करने वाले कुछ-से-कुछ बन जाते हैं और हम कहीं के होकर भी कहीं के नहीं रह जाते।"[84]**

- **नशाखोरी से उत्पन्न आर्थिक विपन्नता-** आप्रवासी भारतीय मजदूरों की आर्थिक विपन्नता का एक प्रमुख कारण नशाखोरी भी है। अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि परिवार के मुखिया का शराब, जुँआ, घुड़दौड़ में सट्टा लगाने आदि के लत से ग्रसित होने की वजह से भी घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहती है। 'अचित्रित' उपन्यास में वानी के पिता के माध्यम से अनत जी ने उन परिवार के मुखियाओं का चित्रण किया है जो शराब के नशा से ग्रस्त होकर अपने घर की सुख शान्ति, धन-सम्पदा सभी को गँवा देते हैं और स्थिति यहाँ तक बिगड़ जाती है कि वे लोग न तो अपने परिवार का उचित ढंग से पालन-पोषण कर पाते हैं और न ही उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाते हैं। और मृत्योपरांत अपने परिवार को आर्थिक तंगी के दलदल में छोड़ देते हैं। उपन्यास में वानी का पिता एक सम्पन्न व्यक्ति था लेकिन शराब व जुँआ की लत लग जाने पर वह अपनी पैतृक संपत्ति तक को गँवा देता है। उसकी मौत के बाद वानी की माँ को अपने बच्चों का भरण-पोषण करने के लिए भीख माँगने तक की नौबत आ जाती है और वानी को काम के अभाव में वेश्यावृत्ति अपनानी पड़ जाती है। वानी अपने पिता की आर्थिक संपन्नता एवं उसके शराबी एवं जुआड़ी स्वभाव के बारे में बताती हुई कहती है- **"मेरा बाप कभी अपने बाप की छोड़ी हुई एक छोटी-सी जायदाद का मालिक था। आज जो समुद्री इलाके में एक बीघा जमीन की अच्छी ख़ासी कीमत होती है। मेरे बाप की दो लतें थीं- जुआ और शराब। जुआरी वह पहले था, शराबी बाद में बना। पहले तो उसने उस समुद्री इलाके की जमीन को गिरवी रखकर तीन हजार रुपये का कर्जा लिया था। फिर जब उसे नहीं भर पाया तो लाख रुपए की जमीन को पंद्रह हजार में बेंच दिया।———शुरू में जब मेरा बाप शिवालय के बगल के बरगद के नीचे दो-तीन हजार रुपए ताश के खेल में हार चुकने के बाद ही घुड़दौड़ की ओर लपका था। मेरी माँ से हर बार यह कहकर शहर को दौड़ जाता था कि देखना उस तीन हजार के तीस हजार बनाकर लौटूँगा। और उस प्रक्रिया में पंद्रह हजार का पैसा-पैसा घोड़ों के पीछे स्वाहा हो गया। शराब का चस्का तो उसे अपने मालिक के यहाँ की पार्टियों की बची-खुची शराब से लगा**

था लेकिन वह लत बनी पंद्रह हजार की हार के बाद।"[85] प्रस्तुत अंश में लेखक ने वानी के पिता के माध्यम से उन व्यक्तियों के चरित्र को उजागर किया है जो अधिक धन कमाने के लोभ में जुआ खेलने, शर्त लगाने जैसे कृत्यों को अपनाते हैं और जुआ व शराब की लत से ग्रस्त होकर अपनी पैतृक संपत्ति तक को दाँव में लगा देते हैं। और इसी आर्थिक तंगी के चलते वानी की माँ दर-दर भीख माँगने पर मजबूर हो जाती है और वानी वेश्यावृत्ति के धंधे में शामिल हो जाती है। अपनी आर्थिक विपन्नता को दूर करने एवं अपनी जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से वानी देह-व्यापार करने लगती है। इस संदर्भ में वानी का कथन है- **"भीख माँगते हुए मैं शर्माती थी इसलिए मैंने इस पेशे को अपना लिया। यह मेरी ओर से किसी अदालत में कोई दलील नहीं थी। यह तो उस प्रश्न का उत्तर था जो कई बार लोगों ने मुझसे या तो पलंग पर जाने से पहले किया था या पलंग पर से उतरते हुए।"[86]** वानी अपनी माँ द्वारा भीख माँगने के कारणों पर भी प्रकाश डालती है। वह बताती है कि- **"हमारे बाड़े में आग लग जाने से जब उसके भीतर की चारों बकरियाँ और दूध देने वाली गाय जल गई थीं तब से मेरी माँ का स्वभाव और भी चिड़चिड़ेपन से भर आया था। जिस कोठी में दो-तीन सप्ताह काम किया था, वहाँ के सरदार ने ईख के खेतों के बीच मेरी माँ के साथ धड़-पकड़ की थी जिसकी वजह से उसने वहाँ का काम छोड़ दिया था। मैं तब शायद आठ वर्ष की होने की थी जब मेरी माँ ने शहर की गलियों में भीख माँगने का अपना धंधा शुरू किया था।"[87]**

- **बेरोजगारी से उत्पन्न आर्थिक तंगी-** आर्थिक तंगी का एक प्रमुख कारण काम का अभाव व नवयुवकों की बेरोजगारी भी है। अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में व्याप्त बेरोजगारी की समस्या को दर्शाया है साथ ही बेरोजगारी की वजह से उत्पन्न आर्थिक विपन्नता एवं आर्थिक तंगी को झेलते हुए लोगों की मानसिक कुंठा एवं निराशा की भी झाँकी प्रस्तुत की है। इसके साथ ही अनत जी ने यह भी दर्शाने का प्रयास किया है कि बेरोजगारी की वजह से न सिर्फ लोगों में कुंठा घर कर जाती है बल्कि

इसके साथ ही लोग गलत रास्ते पर भी चलने लगते हैं। कोई चोरी करने पर मजबूर हो जाता है, तो कोई शराब व जुआ का आदी हो जाता है, तो कोई नशीली दवाओं के धंधे में शामिल हो जाता है, तो कोई शीघ्रातिशीघ्र धनवान बनने के चक्कर में धुड़दौड़ में शर्त लगाने लगता है। और कई लोग तो नशीली दवाओं के सेवन करने लगते हैं। 'अचित्रित' उपन्यास में अनत जी ने मरियम के भाई अनवर और उसके दोस्तों के माध्यम से उन कम उम्र के युवकों का चित्रण किया है, जो काम के अभाव में आर्थिक तंगी से जूझते हैं और बेरोजगारी की त्रासदी को झेलते हुए अंतत: नशीले पदार्थों के धंधे में शामिल हो जाते हैं। मरियम का भाई अनवर देश में व्याप्त बेरोजगारी एवं उससे उत्पन्न मानसिक कुंठा तथा उसके दुष्परिणामों को व्यक्त करते हुए वानी से कहता है- **"मैं अपने पाँचों दोस्तों के लिए कुछ करना चाहता हूँ। उसके लिए मुझे तुम्हारी मदद चाहिए। मेरे ये पाँचों दोस्त तीन-चार सालों से नौकरी तलाशते-तलाशते अब खुद अपने को खो देने की कोशिश में लगे हुए हैं।—-—-ये पाँचों कल ही से नशा करना छोड़ देंगे अगर इन्हें कोई नौकरी मिल जाए तो। बेकारी के दर्द को ये लोग पीते हैं; नशीली गोलियाँ नहीं।"**[88] देश में व्याप्त बेरोजगारी की समस्या का उल्लेख करते हुए वानी कहती है- **"मैं कहाँ से लाऊँगी नौकरियाँ? जो मुझे नहीं मिली वह मैं औरों को कैसे दिला सकती हूँ। आज अगर मुझे नौकरी मिली होती तो मैं यहाँ होती क्या?"**[89]

- **प्राकृतिक आपदा से उत्पन्न आर्थिक विपन्नता-** अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि आप्रवासी भारतीय मजदूरों की आर्थिक विपन्नता का एक प्रमुख कारण प्राकृतिक आपदा भी है। जिसमें बाढ़, सूखा, अकाल, आँधी, तूफान, महामारी आदि शामिल हैं। मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय मजदूर जहाँ एक ओर गोरों के अमानवीय अत्याचारों एवं उनके द्वारा कम वेतन देने, वेतन में कटौती करने आदि की

वजह से उत्पन्न आर्थिक तंगी का शिकार होते हैं वहीं दूसरी ओर विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं की वजह से आर्थिक तंगी का शिकार होते हैं। समुद्र तट से घिरे होने के कारण मॉरिशस में वर्ष में दो-तीन बार तूफान आते हैं। जिनकी वजह से वहाँ का जन जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। इसके साथ ही कभी सूखा, कभी अकाल, कभी महामारी, कहीं आगजनी, कहीं अतिवृष्टि आदि की वजह से भी आप्रवासी भारतीय मजदूरों को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। आँधी, तूफान, सूखा आदि की वजह से किसानों की फसले तहस-नहस हो जाती हैं। वस्तुओं की मूल्य वृद्धि हो जाती है, महँगाई की वजह से मजदूरों की स्थिति और भी डांवाडोल हो जाती है। 'लाल पसीना' उपन्यास में अनत जी ने प्राकृतिक आपदा-तूफान की वजह से अस्त-व्यस्त आप्रवासी भारतीयों के जीवन एवं उनकी आर्थिक तंगी तथा आर्थिक तंगी से जूझते लोगों का चित्रण किया है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"तूफान के दो सप्ताह बाद अनाज के भाव को प्रचंड रूप लेते देखा गया। बस्ती के बच्चों का बिलबिलाना था जो हर एक के लिए असह्य था। टोकरी भर सफेद कन्द पाने के लिए मदन और फरीद को अठारह मील की यात्रा करनी पड़ी थी। उन कन्दों को मीरा ने अपने यहाँ उबाला था और बस्ती के सभी बच्चे उसके घर टूट पड़े थे। अपने साथ लाए हुए आधे कन्द को ताजा रखने के लिए मदन ने उन्हें जमीन के नीचे गाड़ दिया था। उसके खेत पहुँचते ही कुछ बच्चे उन्हें वहाँ से निकालकर कच्चे खा गए थे। जिन्हें नहीं मिला था, वे विलखते रह गए थे।------खेतों में काम की रफ्तार ढ़ीली पड़ गई थी। लोग पानी पी-पीकर होड़ नहीं लगा सकते थे। तीसरे दिन माँड़, हर चौथे दिन भात की बारी भी इस बार बढ़कर लम्बी हो गयी थी। खेतों में जूझते हुए सवा-सौ लोगों में बस कोई दस-बीस ही थे, जिन्हें अपनी बारी पर भात नसीब नहीं हुआ था।"**[90] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि प्राकृतिक आपदा के कारण किस प्रकार आप्रवासी भारतीय मजदूरों को अर्थाभाव एवं भुखमरी का सामना करना पड़ता है। इसी तरह 'अचित्रित' उपन्यास में वानी के परिवार

के माध्यम से आगजनी के शिकार लोगों का चित्रण किया गया है। वानी के घर में आग लग जाने से उसके आय के स्रोत गाय एवं बकरियाँ भी उसी में जल जाती हैं। जिसकी वजह से वानी की माँ को अपने बच्चियों का भरण-पोषण करने के लिए भीख तक माँगनी पड़ती है। अपनी आर्थिक तंगी का कारण बताते हुए वानी कहती है- **"हमारे बाड़े में आग लग जाने से जब उसके भीतर की चारों बकरियाँ और दूध देने वाली गाय जल गई थीं तब से मेरी माँ का स्वभाव और भी चिड़चिड़ेपन से भर आया था। जिस कोठी में दो-तीन सप्ताह काम किया था, वहाँ के सरदार ने ईख के खेतों के बीच मेरी माँ के साथ धड़-पकड़ की थी जिसकी वजह से उसने वहाँ का काम छोड़ दिया था। मैं तब शायद आठ वर्ष की होने को थी जब मेरी माँ ने शहर की गलियों में भीख माँगने का अपना धन्धा शुरू किया था।"**[91]

- **परिवार के मुखिया की असामयिक मृत्यु-** आर्थिक विपन्नता का एक प्रमुख कारण घर के मुखिया की असामयिक मृत्यु भी है। अनत जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि आर्थिक तंगी की वजह कभी-कभी परिवार में एक मात्र कमाऊ व्यक्ति का होना भी है। जहाँ पर खाने और पहनने वालों की संख्या ज्यादा होती है और कमाने वाला सिर्फ एक व्यक्ति। ऐसी दशा में न तो परिवार के सभी सदस्यों की उचित देखभाल हो पाती है और न ही उनकी सभी जरूरतें पूरी हो पाती हैं। और यदि उस परिवार का कोई सदस्य हमेशा बीमार रहता है तब तो स्थिति और भी भयावह हो जाती है। और यदि कमाने वाले व्यक्ति की असामयिक मृत्यु हो जाती है तब उस घर की आर्थिक स्थिति और भी खराब हो जाती। अनत जी द्वारा रचित विभिन्न उपन्यासों में इस समस्या को दर्शाया गया है। 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में अनत जी ने परिवार के मुखिया व एक मात्र कमाऊ की आसामयिक मृत्यु से होने वाली आर्थिक तंगी का चित्रण किया है। 'अचित्रित' उपन्यास में वानी के पिता की असामयिक मृत्यु हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप उन्हें विभिन्न संदर्भों में आर्थिक तंगी

का शिकार होना पड़ता है। पिता की मृत्यु के पश्चात् वानी की माँ को अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए काम की तलाश रहती है, लेकिन काम के अभाव में वह भीख माँगने का धंधा अपनाने पर मजबूर हो जाती है और आर्थिक सहयोग के लिए वानी को भी भीख माँगने की सलाह देती है। पिता की असामयिक मृत्यु से वानी के घर की स्थिति अत्यंत ही दयनीय हो जाती है। इस संदर्भ में वानी कहती है- **"मेरे बाप की मृत्यु यही कोई दो-तीन महीने पहले हुई थी। हमारे घर की तंगहाली इतनी बढ़ आयी थी कि घर के चूल्हे और रसोई के काक्रोच सभी पड़ोसी के घरों को भाग गए थे। वही पहला अवसर था जब मेरी माँ पड़ोस के घरों से माँड़ माँग लाती और उसमें नमक मिलाकर हमें पीने को देती। आगे चलकर भीख माँगने का प्रशिक्षण मेरी माँ को पास-पड़ोस से कुछ-न-कुछ माँगकर लाते रहने से ही मिल गया था।"**[92] अपने परिवार की आर्थिक विपन्नता को दूर करने के उद्देश्य से वानी की माँ वानी को भी भीख माँगने की सलाह देती और जब वानी द्वारा भीख माँगने से इंकार कर दिया जाता है तब वह अपनी बेटी को ही खरी-खोटी सुनाने लगती है। इस संदर्भ में वानी का कथन है- **"मैं भीख नहीं माँग सकती थी इसलिए चोरी-चुपके कई जगहों पर नौकरी तलाशी और निराशा पाई। मेरी माँ मुझसे खिन्न होकर यह कहने लगी कि अगर मैं उसके साथ शहर की गलियों में खाक-छानने को तैयार नहीं हुई तो वह मेरी दोनों छोटी बहनों को अपने साथ ले जाकर रोज शहर के बाजार के आगे पटरी पर बैठ जाएगी।——मेरी माँ यह भी तो कहने लगी थी कि अपनी दोनों छोटी बच्चियों का पेट तो वह किसी-न-किसी तरह भर दिया करेगी पर मुझ जैसी साँड़नी के लिए वह क्यों गलियों की खाक छानती फिरे।"**[93] पिता की असामयिक मृत्यु से उत्पन्न आर्थिक तंगी को दूर करने के उद्देश्य से वानी नौकरी की तलाश करती है किन्तु सर्वत्र निराशा मिलने पर वह अंतत: वेश्यावृत्ति के धन्धे में शामिल हो जाती है। 'लाल पसीना' उपन्यास में भी अनत जी ने देह-व्यापार के माध्यम से आर्थिक तंगी व भूख की पीड़ा को दूर करने के प्रयास को दर्शाया है। उपन्यास में मजदूरों की बस्ती में फैली आर्थिक तंगी एवं तज्जनित उत्पन्न भूख की पीड़ा को कुछ हद तक कम करने के उद्देश्य से दाऊद मियाँ अपनी पत्नी ज़ीनत को कोठी के मालिक

के यहाँ जाने की सलाह देता है। क्योंकि कोठी का मालिक अपनी कामवासना की पूर्ति हेतु बस्ती की सुन्दर युवतियों एवं मजदूरों की बहू-बेटियों को धन का प्रलोभन देकर अपने यहाँ रात गुजारने के लिए आमंत्रित करते थे। दाऊद की पत्नी ज़ीनत भी सुन्दर थी जिसकी सुन्दरता पर गोरे मालिक का बेटा सम्मोहित था। इसी वजह से वह ज़ीनत को भी अपने यहाँ बुलाता है। जब ज़ीनत उसके यहाँ जाने से इन्कार करती है तब उसका पति दाऊद उसे बस्ती के लोगों के भूख का हवाला देकर उसे वहाँ जाने के लिए प्रेरित करता है। वह ज़ीनत से कहता है- **"तुम सिर्फ मेरी खातिर नहीं हो ज़ीनत-----।"**

शाम को तुम्हें रेमो साहब के बेटे के यहाँ जाना है।"

-----ज़ीनत के दोनों हाथों को अपने हाथों में लेकर दाऊद ने धीरे से कहा, "ज़ीनत, ऐसा पहली बार नहीं हो रहा।"

-------लोग मर रहे हैं बिना खाना, बिना दवाई।"

-----एक बहुत बड़े उद्देश्य के लिए थोड़ी देर आँखें मूँद लेने से क्या अनर्थ हो जाएगा? तुम औरत हो ज़ीनत। और औरत की देह रोटी का कोई टुकड़ा नहीं होती जो किसी के मुँह लगने से जूठी हो जाए। तुम जूठी नहीं होओगी। पर याद रहे, अपने को उसके हवाले करने से पहले सौदा हो जाना चाहिए। तुम पहले उसे राजी कर लेना, फिर अपने को समर्पित करना।"[94] उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से अनत जी ने आर्थिक तंगी की वजह से उत्पन्न भुखमरी का चित्रण किया है। साथ ही अनत जी ने उस विडम्बना पर भी प्रकाश डाला है जहाँ पर पति अपनी पत्नी की ओर नजर रखने वाले पराए पुरुष के प्रति विद्रोह का भाव रखता है लेकिन आर्थिक तंगी की वजह से दाऊद अपनी पत्नी को स्वयं ही पराए मर्द की वासना पूर्ति का साधन बनने की सलाह देता है ताकि उससे बस्ती की भुखमरी को कम किया जा सके।

- **आर्थिक असमानता-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के जरिए मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों एवं कोठी मालिकों के मध्य व्याप्त आर्थिक असमानता को भी चित्रित किया है। अनत जी मॉरिशस समाज के उस सत्य को उजागर करते हैं, जहाँ पर रात-दिन कठोर-से-कठोर मेहनत करने वाले मजदूर अपने दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं- रोटी, कपड़ा और मकान आदि की पूर्ति नहीं कर पाते। अपने बच्चों को न तो भरपेट भोजन दे पाते हैं और न उनकी शिक्षा पूरी करा पाते हैं और न ही बीमारी की अवस्था में सही इलाज करा पाते हैं। वहीं दूसरी ओर मजदूरों के श्रम का शोषण करने वाले गोरे सरदार व कोठी के मालिक बिना किसी मेहनत के दिनों-दिन अमीर होते जा रहे हैं, उनके पास सभी भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। मजदूरों की स्थिति से बेहतर तो मालिकों के कुत्तों की है। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में गोरे शासक यह नहीं चाहते थे कि जिन सुविधाओं का उपयोग वे लोग करते हैं उनका उपयोग भारतीय मजदूर भी करें। वे यह नहीं चाहते थे कि जैसी आरामतलब जिंदगी को वे लोग जी रहे हैं, वैसी आरामतलब जिंदगी मजदूरों को भी नसीब हो। इसलिए गोरे शासकों, कोठी के सरदारों व उनके हिमायतियों द्वारा यह कोशिश की जाती थी कि आप्रवासी भारतीय मजदूरों को कभी वह अवसर ही न प्रदान किया जाए जिससे कि उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके और वे भी सुखमय जीवन जी सकें। इसलिए गोरों द्वारा आप्रवासी भारतीयों को तरह-तरह से परेशान किया जाता था। जिससे मजदूरों की स्थिति में कोई सुधार नहीं होता। वर्षो के कठोर परिश्रम के बावजूद भी उनकी स्थिति पूर्ववत् रहती है। आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की इस स्थिति का चित्रण अनत जी ने 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' उपन्यासों में किया है। 'लाल पसीना' उपन्यास में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों एवं गोरे मालिकों के मध्य व्याप्त आर्थिक असमानता का यथार्थपरक अंकन किया गया है। मालिकों एवं मजदूरों की आर्थिक असमानता का उल्लेख करते हुए मदन कहता है- **"हमारे**

लोगों की पैदा की हुई यह हरियाली किसकी है? ये खेत किसके हैं? ये लहलहाते गन्ने किसके हैं? ईख के रस की मिठास किसकी है? उस करारे व्यंग्य के बारे में सोचकर मदन तिलमिला उठा।

पसीना किसी का, फसल किसी की।

किसी को मिठास, किसी को कड़वाहट।

एक ओर मजदूरों की झोपड़ियाँ थीं घास-फूस की बनी।

दूसरी ओर मालिकों का वह नीले रंग का महल था, तीन बीघे की फुलवारी के बीच। जी तोड़ मेहनत करने वालों और बैठकर खाने वालों के बीच का अंतर।——क्या वजह है कि गन्ने के फल से एक आदमी राजा है, दूसरा कंगाल?"[95] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ अन्याय किया जाता था। उनके श्रम का शोषण करके गोरे मालिक दिनों-दिन अमीर होते गए और रात-दिन श्रम करने के बाद भी भारतीय मजदूर दिनों-दिन गरीब होते गए। मालिकों एवं मजदूरों की स्थिति में व्याप्त असमानता को एवं गोरों के शोषणचक्र का पर्दाफाश करते हुए मदन स्वयं से कहता है- **"हर फसल, हर कटनी से मालिक की तिजोरी भरी थी उसने। हर फसल, हर कटनी के बाद चूहे नाचे थे उनके घरों की खाली हाँडियों में। उन लोगों का अपना था ही क्या? ईख के सूखे पत्तों का छाजन भी कल उनका न रहा। जिस खेत को अपना समझा गया था, उस पर भी मालिक का कब्जा होने जा रहा था- हो ही चुका था। वह जंजीर में बाँधा जा चुका था।"[96]** 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में भी अनत जी ने आप्रवासी भारतीय मजदूरों एवं गोरे मालिकों के मध्य व्याप्त आर्थिक असमानता का यथार्थपरक चित्रण किया है। उपन्यास में परकाश देवराज से इस आर्थिक असमानता के संदर्भ में तरह-तरह के सवाल करता है।

परकाश सोचता है कि रात-दिन कठोर-से-कठोर मेहनत करने पर भी उसके पिता व बस्ती के लोगों को आर्थिक विपन्नता का सामना करना पड़ता है। न तो उन्हें पेट भर भोजन नसीब होता है, न ही तन ढकने को वस्त्र और न ही रहने लायक घर नसीब होता है। जबकि वहीं पर बिना परिश्रम किए गोरे मालिकों व कोठी के सरदारों के पास सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं। परकाश देवराज से पूछता है कि आखिर मालिकों के पास इतना बड़ा घर कैसे है तथा उनके बच्चों को इतने अच्छे कपड़े कहाँ से मिलते हैं और उनके पास इतना सारा पैसा कहाँ से आता है? इस संदर्भ में परकाश एवं देवराज के मध्य हुई एक वार्तालाप को देखा जा सकता है। परकाश देवराज से कहता है- **"इन लोगों को इतने सुन्दर कपड़े कहाँ से मिलते हैं?—-इतना पैसा कहाँ से मिलता है इन लोगों को?" हम सभी मजदूर इनके लिए कमाते हैं। अपने लिए भी क्यों नहीं रखते? वे जो हमें देते हैं वही हम लेते हैं।"**[97] अनत जी ने 'हम प्रवासी' उपन्यास में भी मालिक और मजदूर की आर्थिक असमानता का चित्रण किया है। मॉरिशस के जंगलों को काटकर उसे नन्दन वन बनाने वाले आप्रवासी भारतीयों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उनके श्रम बूँदों का फल मालिकों की तिजोरी में कैद हो जाता था। मॉरिशस की पथरीली व बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने में आप्रवासी भारतीयों का अप्रतिम योगदान रहा है। उन्होंने ही अपने कठोर श्रम के द्वारा मॉरिशस की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाया तथा वैश्विक स्तर पर मॉरिशस को पहचान दिलाई लेकिन उन्हीं मजदूरों को उनके श्रम का पूरा पारिश्रमिक न देकर गोरों द्वारा उन्हें तरह-तरह से शोषित किया जाता। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों के कठोर श्रम एवं मालिकों द्वारा उनके श्रम के शोषण का उल्लेख करते हुए आप्रवासी भारतीयों की आर्थिक विपन्नता का चित्रण निम्नवत् किया गया है- **"क्यों भूलते हो कि यह देश आज तीस-पैंतीस साल पहले तक पथरीला था, बंजर था। तुम और तुमसे पहले यहाँ भारतीय मजदूरों ने इस बंजर भूमि को हरियाली में बदल दिया। पर जिन्होंने पथरीली माटी को उर्वर बनाया, जंगलों को काटकर, पत्थरों की जमीन की छाती चीरकर बाहर निकाल चट्टानों पर भी**

गन्ना उगाया, सफेद सोने की फसल उगाई, आज उन्हें क्या मिला?—चालीस साल होने को हैं इस द्वीप पर पहले भारतीय मजदूरों के आगमन के। इन चालीस वर्षों में गोरे मालिक कहाँ से कहाँ पहुँचते रहे और हम जहाँ थे वहीं रहे। उम्मीदें कसैली निकलीं।——-इस भूमि पर तुमने अपने पसीने की बूँदें बोकर, गन्ने उगाए हैं, अपने आँसू बहाकर गन्ने काटे और लादे हैं। खून बहाकर जीवन का सामना किया है।———इस देश में आज हजारों भारतीय मेहनतकश हैं, अफ्रीकी मजदूर हैं, चीनी कामगार हैं, पर जमींदारों और धनपतियों की तुलना में उनकी स्थिति है ही क्या?———चालीस साल बीतने को हैं, अभी और चालीस साल गुजर जाएँगे और स्थिति यही रहेगी।"[98] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय मजदूरों के साथ अन्यायपरक व्यवहार किया जाता था। जिसके परिणामस्वरूप मजदूर रात-दिन मेहनत करके भी गरीब थे और गोरे मालिक बिना किसी परिश्रम के अमीर थे।

- **आम आदमी की जीवनाकाँक्षा-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ आप्रवासी भारतीयों की आर्थिक विपन्नता को दर्शाया है बल्कि इसके साथ ही उनकी आशा-आकाँक्षाओं को भी वाणी प्रदान की है। अनत जी ने यह दर्शाया है कि 'शर्तबंद प्रथा' के तहत जिन लोगों को छल-कपटपूर्वक, मॉरिशस में धन-बटोरने का प्रलोभन देकर, सुखमय जीवन यापन के झूठे सपने दिखाकर भारत से मॉरिशस लाया गया था उन आप्रवासी भारतीयों को मॉरिशस में कुत्तों से भी गैर-गुजरा जीवन-यापन करना पड़ रहा है। मॉरिशस आकर मजदूरों के सारे अरमानों पर पानी फिर जाता है। यहाँ पर उनके साथ पशुवत व्यवहार किया जाता, कठोर-से-कठोर श्रम करवाया जाता, बावजूद इसके उन्हें भूखों मरना पड़ता था। गोरे शासकों के शासनतन्त्र में मजदूरों के साथ अनेक प्रकार के भेद-भावपरक व्यवहार किए जाते। आप्रवासी भारतीयों के साथ यह भेद-भाव कई स्तरों पर

किया जाता था। कभी रंग के आधार पर, कभी भाषा के आधार पर, श्रम एवं पारिश्रमिक के अवसर पर भी भेद-भाव किया जाता था। दूसरे शब्दों में कहें तो भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को मॉरिशस की भूमि पर गोरों द्वारा कभी इंसान माना ही नहीं गया। उन्हें हाड़-माँस निर्मित काम करने की मशीन माना गया था। उनके भावों-विचारों, आशाओं-आकाँक्षाओं, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, धार्मिक-सांस्कृतिक आस्थाओं की निंदा की जाती। तथा गोरों द्वारा आप्रवासी भारतीयों को तरह-तरह से प्रताड़ित किया जाता। न तो उन्हें भर पेट भोजन नसीब होता था और न ही तन ढकने को वस्त्र और न ही उनके साथ मानवीय व्यवहार किया जाता था। अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में गोरे शासकों के विविधोंमुखी शोषणतन्त्र में पिस्ते आप्रवासी भारतीयों की जीवनाकाँक्षा को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'लाल पसीना' उपन्यास में किसनसिंह के माध्यम से आप्रवासी भारतीयों की जीवनाकाँक्षा को व्यक्त किया गया है। उपन्यास में किसनसिंह रेखा से कहता है- **"हम लोगों को हवेली की इच्छा नहीं है। हमें अपने कुत्तों को दस मजदूरों का खाना एक बार में नहीं खिलाना है। अपने पाँवों के सही-सलामत होते तक हमें गाड़ियों और बग्घी की कोई जरूरत नहीं। अपने तन ढाँपने के लिए हमें उतने सारे भड़कीले कपड़े नहीं चाहिए। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम रौंदे जाने पर भी आह तक न भरें, पगड़ी उछाले जाने पर अपने हाथों को सिर तक भी न पहुँचाएँ, घी, मलाई न सही, पर चावल के साथ कीड़े भी तो नहीं माँगते? पसीने की आखिरी बूँद देते हुए जब हममें हिचक नहीं तो हम जूतों और बाँसों की बौछार भी नहीं चाहते।"**[99]

प्रस्तुत अंश के माध्यम से जहाँ एक ओर मजदूरों की जीवनाकाँक्षा को चित्रित किया गया है वहीं दूसरी ओर आप्रवासी भारतीयों के साथ गोरे शासकों के अमानवीय व्यवहार की भी झलक दिखाई देती है। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीयों को न तो इज्जत दी जाती थी और न ही उन्हें किसी प्रकार का कोई अधिकार

प्राप्त था। आप्रवासी भारतीयों को हर प्रकार से शोषित किया जाता था, उनकी इच्छाओं-आकाँक्षाओं को दबाया जाता था, उन्हें मनुष्य की श्रेणी में रखा ही नहीं जाता था। उनकी दशा मालिकों के पालतू कुत्तों से भी गैर-गुजरी थी। गोरे शासकों के शोषण से त्रस्त होकर आप्रवासी भारतीय उनके खिलाफ विरोध भी करने लगते हैं। वे अपने अधिकार और इज्जत को पाने के लिए गोरे शासकों से सवाल-जवाब भी करते हैं। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"इज्जत और अधिकार हमें कब मिलेंगे? हमें कब तक दबाया जाएगा?"**[100] प्रस्तुत उदाहरण के माध्यम से जहाँ एक ओर मजदूरों की अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूकता की भावना का बोध होता है वहीं दूसरी ओर मजदूरों की सामान्य जीवनाकाँक्षा की भी झलक दिखाई देती है।

अनत जी ने अपने उपन्यासों के जरिए उन आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का भी चरित्रांकन किया है, जो अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से कभी धर्म परिवर्तन कर लेते हैं तो कभी गोरे शासकों के हिमायती बनकर अपने ही भाई-बंधुओं का गला घोटते हैं। इसके लिए उन्हें गोरे शासकों की तरफ से तरह-तरह के प्रलोभन दिए जाते हैं। कभी पद का प्रलोभन दिया जाता है, तो कभी प्रतिष्ठा का, कभी जमीन-जायदाद का प्रलोभन दिया जाता है, तो कभी बच्चों के बेहतर भविष्य का सपना दिखाया जाता है। गोरों के विविधोंमुखी प्रलोभन में आकर अपनी हैसियत को बनाने वाले आप्रवासी भारतीयों का चित्रण अनत जी ने अपने कई उपन्यासों में किया है। अनत जी द्वारा रचित 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में गोरे शासकों के हिमायती काले भारतीयों का चित्रण किया गया है। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में रामसेवक के माध्यम से उन आप्रवासी भारतीयों के चरित्र को उजागर किया गया है जो गोरे शासकों, कोठी के मालिकों व सरदारों से साठ-गाँठ

करके अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाते हैं। रामसेवक अपनी पत्नी की वजह से पन्द्रह बीघे जमीन का मालिक बन जाता है। उसकी इतनी हैसियत हो जाती है कि कभी-कभी गोरे सरदार उसके द्वारा की गयी सिफारिशों पर बराबर ध्यान भी देते हैं। इस संदर्भ में मदन का वक्तव्य है- **"रामसेवक ने भी अगर बस्ती को छोड़ा था तो इसी एक बात के लिए कि उस नयी बस्ती में रहकर वह अपने बच्चों को शिक्षा दिला सके।------और उसके लिए धाँधलेबाजी से भी वह चूकता नहीं था।-------वह पन्द्रह बीघा जमीन का मालिक बन बैठा था। लोग कहते थे कि वह उसकी पत्नी की सुन्दरता का ही फल है।-----लोगों के खेत छीने जाने पर उसी ने गोरे मालिक से बात करके कुछ जमीन छुड़वा दी थी। मजदूरों को नौकरी से हटाये जाने पर भी उसने अपने मालिक से बातें करके चालीस मजदूरों को फिर से कोठी की नौकरी दिलवायी थी।-----मालिक उससे कहीं ज्यादा उसकी पत्नी की बात मान लेता था।"**[101] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट पता चलता है कि मॉरिशस में जिन आप्रवासी भारतीयों की आर्थिक स्थिति थोड़ी-बहुत सुधरी हुई नजर आती है, उन्हें इसकी कीमत भी चुकानी पड़ती थी। कभी धर्म-बदलकर, तो कभी पत्नी की सुन्दरता की वजह से, जो गोरों का मन-बहलाव करती हैं। अनत जी ने उन आप्रवासी भारतीयों का भी चित्रण किया है जो रातों-रात धनवान बन जाने के भरसक प्रयास करते हैं। अत्यधिक धन की लालसा में कुछ लोग धर्म-परिवर्तन करके ईसाई बन जाते हैं, तो कुछ लोग लड़कियों की बिक्री करके धन कमाते हैं, तो कुछ दलाली करके, जिन्हें प्रत्येक मजदूर पर कुछ पैसे मिल जाते हैं। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में अनत जी ने मार्देमूतू व अन्य पात्रों के माध्यम से रातों-रात धनवान बनने वालों का पर्दाफाश किया है। मार्देमूतू के संदर्भ में मदन स्वयं से कहता है- **"वह जानता था कि मार्देमूतू अगर रातों-रात पच्चीस बीघे जमीन का मालिक हो गया, तो इसलिए कि वह अपना धर्म बदलकर ईसाई हो गया है। चरण महतो की दक्षिण की ओर अगर छोटी-सी कोठी है तो वह इसलिए कि वह गोरों का हरकाठी था-हर मजूर के पीछे उसे रुपया मिला है। ललनवा और दर्शनवा ने अपने गोरे मालिक के यहाँ समय-समय पर लड़कियाँ पहुँचायी**

थीं इसलिए शहर में उनके भी बड़े-बड़े घर थे। सुलेमान मालिकों के पास मजदूरों की चुगलखोरी करके कपड़ों की दुकान खोले बैठा था—।"[102] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि जिन लोगों ने गोरों की चापलूसी की है उन्हीं की आर्थिक स्थिति में थोड़ा-बहुत सुधार हो सका है।

घ- धार्मिक एवं सांस्कृतिक संघर्ष

प्रस्तुत 'उपखंड' के अन्तर्गत अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित उन आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था का वर्णन किया गया है, जिन्हें सन् 1834 ई॰ में 'शर्तबंद प्रथा' के तहत दलालों द्वारा छल-कपट पूर्वक मॉरिशस लाया गया है। अनत जी के विभिन्न उपन्यासों में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था एवं पराई भूमि में अपने धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु उनके द्वारा किए गए कठोर संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है।

आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था को एवं पराई भूमि में उसके संरक्षण हेतु किए गए संघर्ष को जानने से पूर्व यह जानना आवश्यक हो जाता है कि 'संस्कृति' क्या है? इसके अन्तर्गत किन-किन तत्वों का समावेश है? संस्कृति की परिभाषा क्या है? एवं मानव जीवन के विकास में संस्कृति की क्या भूमिका है?

"व्यक्ति जन्मत: पशु के समान होता है। परन्तु वह अपनी पाशविक शक्तियों पर नियन्त्रण तथा समाजोपयोगी तत्वों का विकास संस्कृति के द्वारा करता है। अर्थात् व्यक्ति अपना विकास संस्कृति के द्वारा ही करता है। व्यक्ति के आस-पास का प्राकृतिक वातावरण उस पर बहुत प्रभाव डालता है। इस प्राकृतिक वातावरण में व्यक्ति को समायोजित होने में

संस्कृति बहुत सहायता करती है। समायोजन की प्रक्रिया में व्यक्ति जो नए-नए आविष्कार करता है, वे संस्कृति के ही अंग हैं।"[103]

"संस्कृति किसी समाज की पहचान होती है। यह उसके रहन-सहन एवं खान-पान की विधियों, व्यवहार प्रतिमानों, रीति-रिवाज, कला-कौशल, संगीत-नृत्य, भाषा-साहित्य, धर्म-दर्शन, आदर्श-विश्वास और मूल्यों के विशिष्ट रूप में जीवित रहती है।"[104]

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज से पृथक उसका कोई अस्तित्व नहीं है। अत: वह समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अपने प्रयत्न से उसे एक संगठन का रूप देता है। तत्पश्चात् वह समाज में एक निर्धारित व्यवस्था विकसित कर स्थापित करता है। इसी सम्पूर्ण व्यवस्था को हम संस्कृति कहते हैं। व्यापक अर्थ में संस्कृति में वह सब आता है जो मानव द्वारा निर्मित एवं विकसित हैं जैसे- बर्तन, वस्त्र, आभूषण, मकान, मशीन, हथियार, आवागमन के साधन, रहन-सहन एवं खान-पान की विधियाँ, व्यवहार मानदण्ड, भाषा साहित्य, कला-कौशल, संगीत, नृत्य, धर्म-दर्शन, आदर्श-विश्वास एवं मूल्य आदि।

संस्कृति शब्द का अर्थ है- ठीक प्रकार से सोच-समझ कर किया गया कार्य। 'संस्कृति' शब्द को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। मानवशास्त्री टायलर के अनुसार- **"संस्कृति वह जटिल पूर्णता है, जिसमें उन सब ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, विधि, रीति-रिवाज तथा इसी प्रकार की अन्य क्षमताओं एवं आदतों का समावेश होता है जिन्हें मनुष्य समाज के एक सदस्य के रूप में सीखता है।"**[105] समाजशास्त्री संस्कृति को सीखे हुए व्यवहार के रूप में स्वीकार करते हैं। उनके मत

में संस्कृति में वह सब कुछ आता है, जो हम समाज के सदस्य के रूप में सीखते हैं। ओटावे के अनुसार- **"किसी समाज की संस्कृति से अर्थ उस समाज की सम्पूर्ण जीवन पद्धति से होता है।"**[106]

संस्कृति के संबंध में डॉ.लक्ष्मी झमन अपने विचार व्यक्त करते हुए एक लेख में लिखते हैं- **"संस्कृति जीवन की विधि है। जो भोजन खाते हैं, जो कपड़े पहनते हैं, जो भाषा बोलते हैं और जिस भगवान की पूजा करते हैं, ये सभी संस्कृति के पक्ष हैं। संस्कृति उस विधि का प्रतीक है जिसमें वे चीजें सम्मिलित हैं जो हमने समाज के सदस्य के नाते उत्तराधिकार में प्राप्त की हैं जैसे कला, संगीत, साहित्य, शिल्पकला आदि।"**[107] उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि संस्कृति सीखे हुए व्यवहार प्रतिमानों का योग है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित होती रहती है। संस्कृति परिवर्तनशील होती है। यह सिर्फ मानव समाज में पायी जाती है। इसमें संतुलन और संगठन का गुण होता है। संस्कृति में समायोजन की क्षमता होती है। यह सार्वभौमिक, सामाजिक और विशिष्ट होती है। यह वैयक्तिक न होकर सामाजिक होती है। संस्कृति किसी समाज या समूह के लिए आदर्श होती है जिसके अनुसार समाज के लोग आचरण करने का प्रयास करते हैं।

प्रस्तुत 'उप-अध्याय' के अन्तर्गत उन आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था को दर्शाया गया है जिन्हें दासप्रथा की समाप्ति के पश्चात् औपनिवेशिक देशों की ओर 'शर्तबन्द प्रथा' के तहत, जो दासत्व का ही दूसरा रूप था, सन् 1834 ई॰ में भारत से बहुतायत मात्रा में ले जाया गया। औपनिवेशिक देश मॉरिशस में गन्ने की खेती हेतु वहाँ के गोरे शासक अपने दलालों को भेजकर भारत से काफी मात्रा में भारतीय मजदूरों को मँगवाए। दलालों द्वारा भोले-भाले, अशिक्षित, गरीबी व अकाल से

पीड़ित पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के लोगों को मॉरिशस में पत्थरों के नीचे सोना-ही-सोना मिलने व अपार धन-सम्पदा बटोर लाने का छलावा दिया जाता, सुखमय जीवन-यापन के सब्जबाग दिखाए जाते। तथा तरह-तरह के प्रलोभन व धमकियाँ देकर भी भारतीय मजदूरों को मॉरिशस आने के लिए प्रेरित किया जाता। भूख और अकाल से पीड़ित भारतीय मजदूर अपने घर, परिवार, गाँव व देश को छोड़कर सुखमय जीवन की तलाश में मॉरिशस जाने के लिए तैयार हो गए। मॉरिशस जाते समय इन मजदूरों ने रामायण, गीता, महाभारत, आल्हा, हनुमान चालीसा आदि धार्मिक, पौराणिक ग्रन्थों को अपने साथ थाती के रूप में सँजो लिया था। यही ग्रंथ जहाज यात्रा के दौरान, संकट के समय भारतीय मजदूरों का संबल बने। अपने जनों से बिछुड़ने के गम को भुलाने एवं स्वयं में नवीन चेतना का संचार करने के लिए वे लोग इनकी पंक्तियाँ गुनगुनाते। मॉरिशस में गोरे शासकों द्वारा आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ तमाम प्रकार के भेद-भाव परक व्यवहार किए जाते तथा उनसे कठोर-से-कठोर श्रम करवाया जाता था। अत्यधिक मेहनत करवाने के बावजूद भी मजदूरों को न तो भरपेट भोजन दिया जाता और न ही क्षण भर का आराम। यद्यपि भारतीय मजदूरों को एग्रीमेंट के तहत मॉरिशस लाया गया था, लेकिन मॉरिशस में उनकी स्थिति गुलामों से भी बदतर थी। उनके साथ पशुवत् व्यवहार किया जाता था। उन्हें स्वतंत्र रूप से किसी भी प्रकार का काम करने की छूट नहीं थीं। यदि मजदूरों द्वारा गन्ने के खेतों में काम करते समय या अपनी थकान को मिटाने के उद्देश्य से रामायण, गीता, आल्हा आदि के छंदों को गाया जाता तो गोरे शासक व कोठी के सरदारों द्वारा उन मजदूरों पर कोड़े बरसाये जाते। इतना ही नहीं उनके धार्मिक ग्रन्थों को जला दिया जाता था तथा उनके देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को खंडित कर दिया जाता और उनका उपहास किया जाता। ब्रिटिश सत्ता के अधीन मॉरिशस में गोरों के शासनतंत्र में शोषित आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था एवं उसके संरक्षण हेतु किए गए संघर्ष को अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यथार्थपरक

अभिव्यक्ति प्रदान की है। अनत जी द्वारा रचित– 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व (सन् 1834 ई॰ से 1968 ई॰ तक) आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्ष एवं उसके प्रति उनके अटूट लगाव का चित्रण किया गया है।

- **धार्मिक आस्था-** अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के धार्मिक लगाव एवं निष्ठा तथा अपने धर्म को पराई भूमि में रोपित करने के प्रयासों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। 'लाल पसीना' उपन्यास में किसनसिंह, सुखुवा व जतन नामक पात्र के माध्यम से उन आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था को दर्शाया गया है जो पराई भूमि में गोरों के विरोधों को झेलते हुए भी अपने धर्म का पालन करते हैं एवं अपने धर्मग्रन्थों के प्रति अगाध निष्ठा रखते हैं। भारत के समान मॉरिशस में भी बहुदेववाद की प्रथा विद्यमान है। मॉरिशस में ईश्वर के विभिन्न रूपों- दुर्गा, काली, राम, कृष्ण, हनुमान, शिव जी व सूर्यदेव आदि की पूजा की जाती है। उनके घरों की दीवारों पर स्वास्तिक, ओउम् आदि के संकेत बने रहते हैं साथ ही आँगन में तुलसी चौरा और द्वार के बाहर हनुमान जी की प्रतिमा व उनकी लाल ध्वजा फहराती रहती है। आप्रवासी भारतीयों द्वारा प्रत्येक वर्ष अपनी रक्षा हेतु कालीमाई के निमित्त बहरिया पूजा का आयोजन किया जाता है। बहरिया पूजा के दौरान बस्ती के सभी लोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार चंदा देते हैं और उस पैसे से देवी को प्रसन्न रखने हेतु बकरे को खरीदा जाता है और उसकी बलि दी जाती है। 'लाल पसीना' उपन्यास में किसनसिंह के माध्यम से आप्रवासी भारतीयों द्वारा कालीमाई की पूजा-उपासना एवं उनके प्रति अगाध आस्था को व्यक्त किया गया है। जब गोरे सरदारों द्वारा भारतीय मजदूरों की उस जमीन

को हड़पने की साजिश रची जाती है, जिस पर कालीमाई का चौतरा व उनका सामाजिक संगठन का स्थान बैठका है, तब किसनसिंह बस्ती के लोगों को संबोधित करते हुए जो वक्तव्य कहता है उससे उसकी धार्मिक आस्था एवं उसके संरक्षण के प्रति उनके प्रयास की झलक मिलती है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"आस-पास की ये सारी जमीन हम लोगन की थी। जंगल काटकर हम सबन ने खेती की थी। सभी खेतवा हमसे ले लिए गए। कानून हमनी के साथ न रहल। चुप रह जायके परल। बची-खुची तीन बीघा जमीन है——— एकरे में कालीमाई के चौथरा भी बा, बैठका भी। अब तक के सभी परिश्रम के साथ बनाओल गइल कालीमाई के चौथरा भी देबे के पड़ जाए, बैठका भी। पता नहीं तुम सबन के आखिरी विचार का होय, पर हमार सुन लो।———अब तक तुम लोगों ने कालीमाई पर सिरफ बकरों की बलि दी है———अगर कालीमाई का चौथरा हम लोग के हाथ से गइल त हमार बलि के बाद। हमार मरल देह पर भी हियाँ सुअर के बाड़ा बन सकी, ऐसे नाहीं। कालीमाई के ना कभी सुअर चढ़ल बा ना चढ़ी।"**[108] उपर्युक्त उदाहरण से न सिर्फ आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक आस्था का पता चलता है बल्कि इसके साथ ही यह भी पता चलता है कि अपने इष्ट देव की प्रतिमा के संरक्षण हेतु वे अपनी जान तक देने को तत्पर रहते हैं। आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा कालीमाई की पूजा के साथ-साथ हनुमान जी पर भी अगाध आस्था रखी जाती है। संकट के समय में हनुमान जी को याद कर ये लोग अपने में नई चेतना एवं ऊर्जा का संचार करते हैं। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा हनुमान जी पर विशेष आस्था रखी जाती थी। इस संदर्भ में 'लाल पसीना' उपन्यास से किसनसिंह का कथन दृष्टव्य है- **"इतना बड़ा पहाड़ उठाए हुए भी हनुमान जी के चेहरे पर दुख और चिन्ता नाम की कोई चीज नहीं थी।———हनुमान——शक्ति----शक्ति की ही पूजा तो उसके घर में होती थी। उस दिन जब रेखा आँगन में पेड़ के नीचे उस स्थान को लीपकर एक छोटी-सी लाल झंडी फहरा रही थी, तो इसी शक्ति के देवता के नाम पर।———आँगन में उसने रेखा**

को हनुमान जी के चबूतरे के पास अर्घ्य देते पाया। उस लाल ध्वजा का रंग किसन को कुछ और भड़कीला लगा। रेखा ने कहा था कि यही ध्वजा महाभारत के उस रथ पर भी थी, जिसे भगवान कृष्ण अर्जुन के लिए चला रहे थे।"[109] 'अचित्रित' उपन्यास में अनत जी ने वानी की माँ के माध्यम से आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक आस्था का चित्रण किया है। यद्यपि उपन्यास में वानी को नास्तिक दिखाया गया है। वह न तो किसी देवी-देवता की पूजा-अर्चना करती है और न ही कभी किसी धार्मिक उत्सव व आयोजनों में सम्मिलित होती है। लेकिन उसकी माँ नियमित देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करती है और तमाम प्रकार के धार्मिक आयोजनों में सम्मिलित भी होती है। तथा अपने हर कार्य की सफलता का श्रेय ईश्वर की कृपा को मानती है। वह अपनी पुत्री वानी को भी, जो ईश्वर पर अनास्था रखती है, पूजा-पाठ करने व संध्या भजन व कीर्तन में शामिल होने की सलाह देती है। जब वानी द्वारा ईश्वरीय सत्ता के प्रति नकारात्मक भाव रखे जाते हैं तब वह वानी से जो बात कहती है उससे वानी की माँ की ईश्वर के प्रति अटूट आस्था का पता चलता है। उपन्यास में वानी अपनी माँ की धार्मिक आस्था के बारे में प्रकाश डालते हुए कहती है- **"हमारे गाँव में पुराना मंदिर था।----मेरी माँ नियमित रूप से पूजा करने जाती थी। भगवान से कुट्टी के बाद से मैं कभी नहीं गई पूजा करने। आज भी भगवान से मेरी कुट्टी है।---घर पर संध्या पाठ होते समय भी मैं उसमें भाग नहीं लेती। मेरी माँ कहती- चुड़ैल कहीं की, जब जिन्दगी में आफत आएगी तो सारी शेख़ी मिट जाएगी, तब भगवान-भगवान चिल्लाती फिरोगी।"**[110]

अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ आप्रवासी भारतीयों की ईश्वर के प्रति अटूट आस्था व लगाव को व्यक्त किया है बल्कि इसके साथ ही यह भी दर्शाया है कि मॉरिशस आने वाले विभिन्न धर्मावलम्बी मजदूर संकट के समय अपने-अपने धर्म व संप्रदाय के अनुरूप अपने इष्टदेव को याद करते हैं और उनसे अपनी रक्षा की गुहार लगाते

हैं। 'हम प्रवासी' उपन्यास में अनत जी ने उन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के धार्मिक लगाव को दर्शाया है, जो 'शर्तबन्द प्रथा' के अन्तर्गत दलालों द्वारा छल-कपट पूर्वक मॉरिशस लाए गए। इन मजदूरों को कलकत्ता डिपो से पशुओं की तरह जहाजों में भरकर ले जाया जाता। जहाजों में इनके साथ तरह-तरह के जुल्म ढाये जाते। जहाजों के अंदर न तो सभी लोगों को बैठने के लिए पर्याप्त जगह होती थी और न ही भरपेट भोजन मिलता। जो भोजन दिया जाता वह भी अधपका व सड़ा-गला होता था। जिसकी वजह से वे लोग उल्टी व दस्त के शिकार हो जाते। उचित देखभाल व दवा के अभाव में कईयों की तो जान भी चली जाती थी। और यदि कभी कोई मजदूर जहाज के कप्तान व दलाल से सवाल-जवाब करते तो उनको जीवित ही समुद्र के हवाले कर दिया जाता। और कभी-कभी तो मौसम खराब होने की वजह से उनकी समुद्री यात्रा कष्टदायक हो जाती थी। अपने देश छोड़ने के दुख व जहाज के कष्टों को भुलाने के उद्देश्य से तथा अपने सिर पर मड़राते संकट के निवारण हेतु सभी जहाज़ी भाई अपने-अपने इष्टदेव से प्राणरक्षा की गुहार करने लगते हैं। विभिन्न क्षेत्रों से तथा विभिन्न संप्रदाय से संबन्धित लोगों की धार्मिक आस्था को चित्रित करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"जहाज में उत्तर प्रदेश के अलावा मद्रास, आंध्र और बंबई के लोग भी थे।——-नाव के जहाज के पास पहुँचते ही चार भिन्न भाषाओं में दुआओं-प्रार्थनाओं का गुंजन होता रहा।---अब जहाज के सभी लोग मन में एक प्रार्थना लिए थे-**

- **'हे प्रभु। और अधिक यातना से हमें बचा लो।'**
- **हे गणपति। हमें कारेंटाइन में न भेजना।'**
- **हे मुरुगा। हमें धरती पर ले चलो, जहाँ हम तुम्हारे नाम का कोविल बना सकें।**
- **चंपा ने दुर्गा का आह्वान किया था।"**[111]

इसी तरह जहाज यात्रा के दौरान भयंकर तूफान के समय आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्तनाद का उल्लेख करते हुए अनत जी उनकी धार्मिक आस्था के

बारे में लिखते हैं- **"यात्रियों की चीख रह-रहकर सुनाई पड़ जाती थी। महावीर बस अपनी ही आवाज में हनुमान चालीसा सुनता रहता था। चम्पा मन-ही-मन बोलती जा रही थी, "संकटमोचन हमारा यह संकट हर लो। पवनपुत्र इस जहाज को डूबने मत देना।" और घण्टों बाद जब तूफान का प्रकोप कम होता गया तो चम्पा ने अपने पति से कहा, "महावीर स्वामी ने हमारी प्रार्थना सुन ली।"[112]** 'हम प्रवासी' उपन्यास में महावीर नामक पात्र समुद्री यात्रा के दौरान तूफान आने पर सब लोगों की रक्षा हेतु न सिर्फ हनुमान चालीसा का पाठ करता है बल्कि इसके साथ ही वह रामायण का पाठ भी करने लगता है। क्योंकि उसको विश्वास है कि भगवान अपने भक्तों की रक्षा जरूर करेंगे, भगवान भक्तों की बातों को जरूर सुनते हैं। महावीर की धार्मिक आस्था के बारे में लेखक की टिप्पणी है- **"महावीर ने रात में अपनी झोली से रामायण निकालकर उसका पाठ किया था। हनुमान जी के नाम का लंबा जाप किया था।——भगवान कुछ बातें सुन लेता है, कुछ अनसुनी कर देता है।"[113]** अनत जी ने महावीर के माध्यम से यह भी दर्शाने का प्रयास किया है कि आप्रवासी भारतीय अपने इष्टदेव के प्रति व्रत-उपवास, पूजा-पाठ, नामस्मरण, जप-तप, मान-मनौती, प्रार्थना आदि विभिन्न प्रकार के कर्मकाण्ड करते हैं। संकट के समय अपने को ऊर्जावान बनाए रखने के लिए वे राम, कृष्ण, हनुमान आदि देवताओं की वीरगाथात्मक कथाओं का श्रवण करते हैं तथा तत्संबंधित धार्मिक, पौराणिक ग्रन्थों का परायण भी करते हैं। और वे लोग अपने धार्मिक ग्रन्थों को सदैव अपने पास रखते हैं। क्योंकि वे इन धार्मिक ग्रन्थों को अपनी शक्ति का स्रोत मानते हैं। महावीर भारत से मॉरिशस जाते समय अपने धार्मिक ग्रंथ रामायण की एक प्रति साथ में लिए रहता है। समुद्री यात्रा पूरी होने पर मॉरिशस के तट पर जहाज से उतरते समय उसकी (महावीर की) झोली, जिसमें रामायण थी, जहाज में ही छूट जाती है। जब वह अपनी झोली को खोज रहा होता है तभी जहाज का कप्तान उससे यह जानने की कोशिश करता है कि आखिर उस झोली में क्या था, जिसे वह इतनी व्यग्रता

से खोज रहा है। इसके प्रत्युत्तर में महावीर जो जवाब देता है उससे उसकी धार्मिक आस्था व अपने धर्म ग्रन्थों के प्रति लगाव की झलक तो मिलती ही है साथ ही यह भी पता चलता है कि वह ग्रंथ उसकी जीवनी शक्ति भी है। महावीर और जहाज के कप्तान के मध्य जो वार्तालाप होता है उससे संबन्धित उदाहरण दृष्टव्य है-

"क्या है उस झोली में ?"

"मेरा सब कुछ। मेरा धर्म, मेरा विश्वास, मेरी शक्ति——-।"

"हाँ साहिब, उसमें मेरा धर्मग्रंथ है।"

"मेरी रामायण है उस झोली में।"[114]

'लाल पसीना' उपन्यास में भी अनत जी ने जतन नामक पात्र के माध्यम से धर्म ग्रन्थों के प्रति लगाव रखने वालों का चित्रण किया है। जतन भारत से आते समय कुछ धार्मिक पुस्तकें भी साथ में लाता है। संकट के समय तथा अपने में नवीन ऊर्जा का संचार करने एवं अपने दुख-दर्द को भुलाने के लिए उसे इन पुस्तकों से शक्ति प्राप्त होती है। इसीलिए वह चाहता है कि इन पुस्तकों को एवं उनमें निहित जीवनी शक्ति को आगे आने वाली पीढ़ी के लोगों को हस्तान्तरित किया जाए। इसी उद्देश्य से वह अपनी पुस्तकों को किसनसिंह को सौंपने की योजना बनाता है। किसनसिंह को अपनी पुस्तकें सौंपते हुए जतन कहता है- **"किसन। मेरे बाद ये सारी पुस्तकें, जिन्हें मैं अपना सबसे बड़ा ऐश्वर्य मानता हूँ, तुम्हारी होगी। इन्हें लुका-छिपाकर बड़ी कठिनाई से यहाँ तक ला सका था। यहाँ की कठिन-से-कठिन घड़ियों में इन पुस्तकों ने मुझे धैर्य दिया है, इसलिए मैं चाहूँगा कि इनका सही उपयोग होता रहे।"**[115] उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि आप्रवासी भारतीयों द्वारा न सिर्फ धर्म ग्रन्थों को मॉरिशस लाया गया बल्कि विपरीत परिस्थितियों

में इन धार्मिक, पौराणिक ग्रन्थों से जीवनी शक्ति भी प्राप्त की गयी है। और इसी वजह से वे लोग यह चाहते हैं कि इन ग्रन्थों में निहित जीवन शक्ति एवं ज्ञान को आगामी पीढ़ी को सौंपा जाए।

- **सांस्कृतिक संघर्ष-** अनत जी ने मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की पराई भूमि में धार्मिक आस्था एवं उनके धार्मिक संघर्ष की झाँकी प्रस्तुत करने के साथ-साथ उनके सांस्कृतिक संघर्ष की भी झाँकी प्रस्तुत की है। भारत की तरह मॉरिशस भी एक बहु-सांस्कृतिक सम्बन्धों द्वारा राष्ट्र है। मॉरिशस में भी विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय व जाति के लोग रहते हैं। जिनकी अपनी-अपनी भाषा-बोली, रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन, पर्व-त्यौहार, मत-मान्यताएँ, रूढ़ियाँ व अंधविश्वास आदि हैं। तथा सभी धर्म के लोग अपने-अपने मतानुसार अपने रीति-रिवाजों का पालन करते हैं। गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस आने वाले लोगों में सभी धर्म के लोग मिलते हैं जिनमें हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, क्रियोल, तमिल, चीनी, मद्रासी आदि भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के लोग शामिल हैं। भारत की तरह मॉरिशस में भी गंगा-जमुनी संस्कृति की उपस्थिति है। लेकिन मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व मॉरिशस में गोरे शासकों के शासनकाल में किसी भी आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर को स्वतंत्र रूप से कोई भी धार्मिक व सांस्कृतिक कृत्य- पर्व-त्यौहार, रीति-रिवाज आदि को मनाने की छूट नहीं थी। गोरे शासकों द्वारा इन विभिन्न धर्मावलंबी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को तरह-तरह से प्रताड़ित किया जाता। मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व मॉरिशस में भारतीयों को न तो अपने रीति-रिवाज का पालन करने दिया जाता और न ही उन्हें अपनी भाषा व बोली को बोलने दिया। साथ ही गोरों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की भाषा की खिल्ली उड़ाई जाती और उन्हें जाहिल व गँवार शब्दों से संबोधित किया जाता। अनत जी द्वारा

रचित 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के सांस्कृतिक संघर्षों की सफल अभिव्यक्ति हुई है। सांस्कृतिक संघर्ष के अन्तर्गत पराई भूमि में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार, लोकमान्यता, परम्पराएँ, अंधविश्वास, रूढ़ियाँ आदि विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला जाएगा।

- **रीति-रिवाज-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा निभाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के रीति-रिवाजों, संस्कारों, परम्पराओं आदि की सफल अभिव्यक्ति की है। गिरमिटिया मजदूर के रूप में भारत से मॉरिशस जाने वाले आप्रवासी भारतीय वहाँ से अपने रीति-रिवाजों को भी संस्कार के रूप में लेते आए हैं जिसकी वजह से मॉरिशस में भी लगभग वही रीति-रिवाज मिलते हैं, जिनकी उपस्थिति भारतीय समाज में है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत के समान मॉरिशस में भी विभिन्न प्रकार के रस्मों को मनाने की परंपरा विद्यमान है। भारत से आने वाले आप्रवासी भारतीय मजदूरों ने पराई भूमि में विविध प्रकार के संकट को झेलते हुए एवं विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए अपने रीति-रिवाजों को जीवंत बनाए रखा तथा उसे आगामी पीढ़ी को हस्तांतरित करने के लिए प्रयत्नशील रहे। मॉरिशसीय समाज में बच्चे के जन्म पर जन्मोत्सव, नामकरण, मुंडन, कर्णभेद, विद्यारंभ, विवाह, मृत्योपरांत दाह संस्कार आदि की प्रथा है। जिसमें घर-परिवार, पड़ोस व बस्ती के लोग तथा सगे-संबंधी शामिल होते हैं और संबन्धित संस्कार में अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। यद्यपि गोरों के शासन में भारतीय मजदूरों को किसी भी प्रकार के कोई उत्सव व सामूहिक कार्य करने की छूट नहीं थी। यदि कभी मजदूरों द्वारा गोरों की आज्ञा का उल्लंघन

किया जाता तो उन पर कोड़ों व बाँसों की बौछार की जाती, उन्हें कुत्तों से नुचवाया जाता, पेड़ों से लटका दिया जाता, गन्ने से भरी बैलगाड़ी खिंचवायी जाती। इन तमाम प्रकार के अमानुषिक अत्याचारों को सहकर भी भारतीयों ने अपने रीति-रिवाजों का परित्याग नहीं किया अपितु वे उसका पालन करते रहे। मॉरिशस में बच्चे के जन्म के अवसर पर बस्ती के लोगों द्वारा ढोलक आदि वाद्य यंत्र बजाए जाने और ललना गीत गाये जाने की परंपरा विद्यमान है। इस अवसर पर पँवरियों को बुलाया जाता है और पड़ोस की औरते इकठ्ठा होकर सोहर गीत गाती हैं। बच्चे के जन्म के अवसर पर होने वाली विभिन्न गतिविधियों को अनत जी ने 'लाल पसीना' उपन्यास में किसन के पुत्र मदन के जन्म के माध्यम से दर्शाया है। किसन अपने पुत्र मदन के जन्म के अवसर पर होने वाले विविध प्रकार के कार्यक्रमों को याद करते हुए कहता है- **"उधर बच्चे का रोना हुआ था और दाऊद की अंगुलियाँ ढपली पर थिरक गई थीं।------तीन दिन से लगातार वह ढपली के अंगारों पर सेंके जा रहा था और बच्चे के रोने की आवाज सुनते ही वह ढपली के साथ खड़ा हो गया था, पहाड़ के नीचे की नई बस्ती में जन्मा वह बच्चा था और ज़ीनत ने पहला 'ललना' गाया था।—-छब्बीस लंबे वर्ष बीत चुके थे, जब बस्ती में पहली बार द्वीप के पूर्वी भाग से पँवरिया आया था। फूल की थरिया का बजना उसके फूटने के बाद ही रुका था।"[116]** उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से अनत जी ने बच्चे के जन्म पर होने वाले समस्त लोकाचार का उल्लेख किया है। इसी तरह विवाह संस्कार एवं दाह-संस्कार के समय की जाने वाली समस्त गतिविधियों की चर्चा अनत जी के उपन्यासों में की गयी है।

स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को न तो वैदिक रीति से विवाह करने की अनुमति थी और न ही अपनी मनपसंद जीवन साथी चुनने की छूट थी। और न ही शवदाह की छूट थी। क्योंकि सन् 1810 ई॰ में मॉरिशस द्वीप पर जब अंग्रेजों का आधिपत्य स्थापित हो जाता है तब फ्रेंचों और अंग्रेजों के मध्य एक संधि हुई थी जिसमें

फ्रेंचों ने अंग्रेजों से यह शर्त रखी थी कि द्वीप पर भले ही अंग्रेजी हुकूमत हो किन्तु देश की शासन प्रणाली में उनके (फ्रेंचों द्वारा) द्वारा बनाए गए नियमों, क़ानूनों, धर्म, भाषा, रीति-रिवाज आदि को यथावत् लागू किया जाए। संधि की शर्तों के अनुसार तत्कालीन समय में मॉरिशस में फ्रेंचों द्वारा निर्मित नियम, कानून, रीति-रिवाज, धर्म, भाषा आदि का पालन किया जाता था। फ्रेंचों द्वारा निर्मित नियमों व क़ानूनों में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के हितार्थ किसी भी प्रकार के नियम व कानून नहीं बने थे। उनके साथ काले दासों जैसा वर्ताव किया जाता। न तो उन्हें किसी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त थीं और न ही उन्हें अपने रीति-रिवाजों, परम्पराओं आदि को मनाने की छूट थी। और न ही लौकिक रीति से विवाह करने की छूट थी। सन् 1912 ई॰ में मजदूरों के हितार्थ एक कानून बना जिसमें आप्रवासी भारतीय मजदूरों को लौकिक रीति से विवाह करने की छूट दी गयी। तदुपरान्त द्वीप में आप्रवासी भारतीय मजदूरों द्वारा लौकिक रीति से विवाह होने लगे। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में होने वाले वैवाहिक रस्मों का उल्लेख अनत जी ने 'लाल पसीना' उपन्यास में किया है। प्रस्तुत उपन्यास में अनत जी ने सोमा एवं संतू के वैवाहिक सम्बन्धों के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि मॉरिशस द्वीप पर सोमा एवं संतू प्रथम आप्रवासी भारतीय दम्पति हैं जिनकी शादी लौकिक रीति से सम्पन्न हुई है। मॉरिशस द्वीप की इस ऐतिहासिक घटना की यथार्थपरकता को उपन्यास की पात्र लछिया एवं उसकी बहू सोमा के आपसी वार्तालाप के माध्यम से देखा जा सकता है। लछिया अपनी बहू सोमा से कहती है- **"जब से इस धरती पर हमरे पाँव पड़े हैं, हमने पहला ब्याह देखा यहाँ। यह कैसे हो सकता है? हमसे पहले भी तो इन सारे लोगों के ब्याह हुए होंगे? यहाँ कौन किसको ब्याह करने देता? हम लोगन की गिनती आदमी में थोड़े ही होवत रहल।------सोमा बेटी, तुम्हारे को यह नहीं मालूम कि जब हम लोग जहाज से उतरे थे तो घूँघट के साथ। हमारे बीच के मर्दन से कहा गया था कि जिसे चाहे वे लोगन अपनी घर वाली बना लें। घूँघट हटाके पसंद करे के हुकुम कोई के न मिलत ई खातिर गोर की पातली देख-देख के जेकर**

मन में जे आल ओके पसन्द कर लिया गया।-----सोमा बिटिया, तुम और संतू बड़े भाग वाली हो। धूम-धाम, गाना-बजाना, खाना-पीना, लोग-बाग के ना होल ता ना होल, कोई बात नहीं, पर संतू तुम्हारी माँग में सींदुर तो भर पाया। इस मारीच देसवा की तुम पहली-पहली दुलहनिया हो।"[117] स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस द्वीप में आप्रवासी भारतीयों को परम्परागत रूप से विवाह करने की छूट नहीं थी। इस तथ्य की पुष्टि करते हुए 'लाल पसीना' उपन्यास में किसनसिंह का पिता रघुसिंह, जो कि बस्ती का मुखिया है, कहता है- **"तीन वर्ष लगातार पंचायत का मुखिया होते चला आ रहा था। बड़े ही साहस के साथ देश की पहली शादी का आयोजन उसी ने करवाया था। इस द्वीप में हिन्दू रीति-रिवाज से हुआ सन्तू और सोमा का विवाह पहला विवाह माना जाता है। कुलियों को विवाह करने का अधिकार ही कहाँ था। खुद रघुसिंह ने तो कतार में खड़ी कोसिला के पाँव की पातली देखकर उसे पत्नी मान लिया था।"[118]** उपर्युक्त दोनों उदाहरणों से स्पष्ट है कि स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में गोरों के शासन में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को अपने रीति-रिवाज, परंपरागत मान्यताओं व संस्कारों को मनाने की छूट नहीं थीं लेकिन अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति सजग आप्रवासी भारतीयों ने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने संस्कारों को जीवंत बनाए रखा और अपने अधिकारों की लड़ाई लड़कर अपने रीति-रिवाजों, संस्कारों व मूल्यों-मान्यताओं को जीवित रखा और आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित किया।

अनत जी ने न सिर्फ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के रीति-रिवाजों, परम्पराओं, मान्यताओं पर लगने वाली रोक का वर्णन किया है बल्कि इसके साथ ही यह भी दर्शाया है कि तमाम प्रकार के अवरोधों को झेलते हुए भी आप्रवासी भारतीय अपने रीति-रिवाजों, संस्कारों आदि का पालन करते हैं। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास

में अनत जी परम्परागत हिन्दू रीति-रिवाज से होने वाले वैवाहिक कार्यक्रम का यथार्थपरक अंकन किया है। प्रस्तुत उपन्यास में हरि की बहन देवी के शादी के माध्यम से अनत जी आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा निभाए जाने वाले वैवाहिक रस्म को दर्शाया है। अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि आर्थिक तंगी को झेलते हुए भी ये आप्रवासी भारतीय अपने रीति-रिवाजों को पूरी शिद्दत से निभाते हैं। उपन्यास में हरि की बहन देवी के शादी के अवसर पर हरि आर्थिक तंगी का शिकार था। लेकिन बस्ती के लोगों के आपसी सहयोग की वजह से विवाह से संबन्धित उसकी सभी जरूरते पूरी हो जाती हैं। बस्ती का हर सदस्य अपनी क्षमता अनुसार देवी की शादी में मदद करता है। ताकि देवी की शादी में किसी प्रकार की कमी न रह पाए। गाँव वालों की इस परोपकारी प्रवृत्ति पर प्रकाश डालते हुए हरि परकाश से कहता है- **"देवी का ब्याह लगता है मैं या मेरी माँ नहीं कर रहे हैं बल्कि गाँव वाले मिलकर कर रहे हैं।------गाँव का प्राय: हर आदमी इन पाँच-सात दिनों में कुछ-न-कुछ हमारे घर जरूर पहुँचा गया है।"**[119] देवी के विवाह के अवसर पर गाँव वालों एवं बैठका की ओर से मिलने वाली मदद का उल्लेख करते हुए हरि कहता है- **"माँ ने बताया कि वे (बैठका के प्रधान महेन्दर सिंह) सभी की ओर से देवी की शादी के लिए तीस रुपए देने आए हैं। दो दिन पहले जब संतोष की माँ आधा बोरा आटा लिए आयी थी---विवाह के अभी सात दिन बाकी थे, पर गाँव के दो-तीन लोग रोज कुछ-न-कुछ लिए आ जाते थे, यहाँ तक कि लूला गाड़ीवान घनश्याम भी टोकरी भर आलू दे गया था। जानू नाई ने अपनी बीवी के हाथों अपने ही खेत से पंद्रह किलो प्याज भिजवा दी थी।---पंचों ने तो इतना कुछ दे दिया है कि सब मेहमानों को खिला-पिलाकर भी चावल-आटा-दाल खत्म नहीं हो पाएगा।-----जतन शाव के बेटे उमदत्त ने रास्ते ही में हरि से कह दिया था कि टमाटर और कच्चू के लिए उसे कोई चिंता नहीं करनी है।----बाकी कोई ऐसी चीज नहीं थी जो लोग नहीं दे गए।"**[120] उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से जहाँ एक ओर आप्रवासी भारतीय मजदूरों के आपसी सहयोग की भावना के दर्शन होते हैं वहीं दूसरी ओर हिन्दू रीति-रिवाज से होने वाले वैवाहिक रस्म की झलक मिलती है। अनत जी के उपन्यासों में

मृत्यु के पश्चात् एवं दाह संस्कार से पूर्व मृत आत्मा की शांति हेतु मातमपुरसी प्रथा की भी अभिव्यक्ति हुई है। मातमपुरसी के अवसर मृतक व्यक्ति की आत्मा की शांति हेतु शव के पास लोटा में जल भरकर और उसके समीप दीपक जलाकर रख दिया जाता है। इस अवसर पर गाँव व बस्ती के लोगों के अतिरिक्त सगे-संबंधी आदि आते हैं तथा रात भर रामायण आदि सत्संग का पाठ होता है दूसरे दिन शवयात्रा निकाली जाती है। और हिन्दू रीति से दाह-संस्कार किया जाता है।

- **पर्व-त्यौहार-** अनत जी ने अपने उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा मनाए जाने वाले विभिन्न पर्वों और त्यौहारों का चित्रण किया है। भारत के समान मॉरिशस भी बहु-सांस्कृतिक सम्बन्धों वाला देश है। जहाँ पर विभिन्न संस्कृतियों के लोग रहते हैं। जो अपनी-अपनी परम्परा के अनुसार अपने रीति-रिवाजों, संस्कारों व पर्व और त्यौहारों को मनाते हैं। यद्यपि मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व आप्रवासी भारतीय मजदूरों को किसी भी प्रकार के धार्मिक कृत्य, पर्व-त्यौहार व सामूहिक उत्सव मनाने की छूट नहीं थी। फिर भी आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों ने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सवों को जीवन्त बनाए रखा। मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय मजदूरों द्वारा होली, दीपावली, महाशिवरात्रि, रामनवमी, नवरात्रि, रक्षाबंधन आदि विभिन्न हिन्दू पर्व तथा मुस्लिमों के ईद, मोहर्रम आदि तथा ईसाइयों के क्रिसमस व नववर्ष तथा तमिलों के कावड़ी आदि प्रमुख पर्व मनाए जाते हैं। 'लाल पसीना' उपन्यास में अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा विपरीत परिस्थितियों में भी अपने पर्व को मनाने की प्रतिबद्धता को चित्रित किया है। उपन्यास में इस स्थिति को किसनसिंह एवं उसके पुत्र मदन के माध्यम से दर्शाया गया है। किसनसिंह अपने पुत्र मदन से कहता है- **"जानते हो मदन, हमारे अपने लोग जब से इस देश में पहुँचे हैं, उन्होंने कोई त्यौहार, कोई**

उत्सव नहीं मनाया। तुम्हारी अपनी पीढ़ी तो गिरमिटिया नहीं। तुम किसी बंधेज में नहीं, फिर भी न जाने कौन-सी दास मनोवृत्ति है, जिसके तुम सब भी कैदी हो।——-दूसरे दिन शाम को बैठका के आँगन में बस्ती के सभी लोगों का जुटाव हुआ।—-उसी के बीच मदन ने कहा, "कहते हैं कि होली खुशी और समृद्धि का त्यौहार है- विजय का त्यौहार है। कुछ ही दिनों में यह त्यौहार आ रहा है। बैठका के सदस्यों की ओर से यह तय हो चुका है कि इस बार इस त्यौहार को मनाकर रहेंगे।"[121] अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि आप्रवासी भारतीय इस पर्व को उल्लास का पर्व तो मानते ही हैं साथ ही इसे मजदूरों के संगठन का एक बहाना भी मानते हैं। इस संदर्भ में मदन मीरा से कहता है- **"मैं इस देश की बैठका-बैठका में पहुँचकर होली का आयोजन करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि होली हमारे लिए एक त्यौहार के साथ-साथ संगठन का बहाना बने।"**[122] होली पर्व को मनाने के लिए आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर आर्थिक तंगी को झेलते हुए भी बड़ी उत्सुकता से होली के आयोजन की तैयारी में जुट जाते हैं और होली के दिन परम्परागत वाद्य यंत्रों-झाल, ढोलक आदि के साथ फाग गाते हैं और विभिन्न प्रकार के खेलों का प्रदर्शन करते हैं। होली के अवसर पर आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा किए जाने वाले कृत्यों का चित्रण करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"अभावों के बीच बस्ती में होली की तैयारियाँ होती रहीं। सुगुन बारह नौजवानों के साथ रामलीला की तैयारी करने में लगा रहा।——-बस्ती में झाल-ढोलक के साथ होली का खेल शुरू हो चुका था।"**[123] इसी तरह अनत जी द्वारा रचित अन्य उपन्यासों में महाशिवरात्रि, दुर्गापूजा आदि को मनाए जाने का उल्लेख मिलता है।

- **लोकविश्वास व लोक मान्यताएँ-** कोई भी संवेदनशील साहित्यकार अपने समय व समाज में घटित होने वाली घटनाओं से प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकता। और प्रत्येक समाज में कुछ लोकविश्वास व लोक मान्यताएँ व रूढ़ियाँ होती हैं, जिन्हें उस समाज के लोग पूरी

शिद्दत से निभाते हैं। अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से अपने समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के लोकविश्वास व लोकमान्यताओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनके द्वारा रचित -'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों में व्याप्त विभिन्न प्रकार के लोकविश्वासों की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। 'लाल पसीना' उपन्यास में अनत जी ने अनुमान आधारित लोकविश्वास को चित्रित किया है। इस उपन्यास में अनत जी ने यह दर्शाया है कि जब पश्चिमी आकाश में धूमकेतू और आकाश में तारों के साथ झाड़ू सदृश आकृति एक साथ दिखायी देती है तब कोई-न-कोई अनिष्ट जरूर होता है। बस्ती के लोगों द्वारा आकाश में धूमकेतु और तारों के साथ झाड़ू सदृश आकृति को देखकर जो हलचल होती है तथा आगामी संकट से संबन्धित उनमें जो भय व्याप्त हो जाता है उसके बारे में अनत जी लिखते हैं- **"जब पश्चिमी आकाश में धूमकेतु देखकर पूरी बस्ती में यह डरावना स्वर फैल गया था कि आकाश में तारे के साथ झाड़ू उगा है। जवान लोगों ने पहली बार सुना कि झाड़ू उगना आगे के दिनों के बहुत बड़े संकट का संकेत होता है। वह झाड़ू सात दिनों तक आकाश पर रहा। उससे लोगों का भय बढ़ता ही गया था। उस अवसर पर भी सभी दरवाजे-खिड़कियाँ सवेरे बन्द हो जाती थीं।"**[124] इसी तरह 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में अनत जी ने वर्षा संबंधी पूर्वानुमान का चित्रण किया है। मॉरिशसीय समाज में अतिवृष्टि सम्बन्धी अनेक प्रकार के संकेत व लक्षण को मान्यता दी गयी है। रात के समय मेढकों का टर्राना, आँगन की धूल में गौरैया का नहाना, लाल चींटियों के ऊपर पर (पंख) उगना, घोंघों को दीवार पर ऊपर की ओर चढ़ते देखना आदि विभिन्न प्रकार के दृश्य आगामी भारी वर्षा का संकेत देते हैं। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में हरि के माध्यम से आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के मध्य व्याप्त वर्षा सम्बन्धी संकेतों के बारे में अनत जी लिखते हैं- **"उस दिन तो हरि को पूरा विश्वास हो गया था कि एक-दो दिन में भारी बरसात होकर रहेगी, जब उसने रात में मेढकों को टर्राते सुना**

था। दूसरी बार जब अपने आँगन की धूल में गौरैया को नहाते देखा था, तो भी उसे पानी बरसने की उम्मीद हुई थी। फिर जब उसने लाल चींटियों के ऊपर पर उगते देखे और आकाश में मँडराते पक्षियों को उन उड़ती चींटियों पर झपटते देखा था, तो भी सोचा कि इस बार पानी अवश्य बरसेगा। कुछ घोंघों को दीवार पर काफी ऊपर चढ़ते देखकर भी उसने मूसा से कहा था कि देखना, दो दिन के भीतर मूसलाधार बारिश होकर रहेगी।"[125]

अनत जी ने अपने उपन्यासों में न सिर्फ आगामी घटनाओं से संबन्धित पूर्वानुमानों, संकेतों जैसे लोकप्रचलित मान्यताओं का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ ही स्वप्नफल सम्बन्धी लोकमान्यता को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। भारत के समान मॉरिशसीय समाज में भी रात के समय देखे गए विभिन्न प्रकार के स्वप्नों के अलग-अलग फल एवं उनके शुभ-अशुभ संकेत सम्बन्धी लोकमान्यता प्रचलित हैं। व्यक्ति द्वारा देखे गए कुछ स्वप्न भविष्य में साकार हो जाते हैं और कुछ साकार नहीं होते। इसी तरह कुछ स्वप्न आगामी घटनाओं का शुभ संकेत दे जाते हैं तो कुछ अशुभ संकेत देते हैं। अनत जी द्वारा रचित- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोल थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में विभिन्न पात्रों एवं घटनाओं के माध्यम से स्वप्नफल सम्बन्धी लोकमान्यताओं को चित्रित किया गया है। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में मीरा की मौसी जो स्वप्न देखती है, उससे वह भविष्य के प्रति आशंकित हो जाती है। क्योंकि वह रात में स्वप्न में आसमान से फूलों का बरसना देखती है, जो अशुभ माना जाता है। इस स्वप्न को देखकर वह भविष्य में अनिष्ट की आशंका से भयभीत हो जाती है। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"परकाश के पास ही खड़ी थी मीरा की मौसी। वह मन-ही-मन हनुमान जी का नाम जपे जा रही थी। पिछली रात उसने आसमान से फूलों के बरसने का सपना देखा था। उठते ही मीरा से बोली थी, गाँव में अनर्थ होने वाला है।"[126]** अनत जी ने अपने उपन्यासों

के माध्यम से उस लोकप्रचलित मान्यता को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है, जिसके तहत यह स्वीकार किया जाता है कि पाँव की ओर से जन्म लेने वाला व्यक्ति यदि शरीर के दर्द से पीड़ित व्यक्ति पर अपना पाँव फेर दे तो पीड़ित व्यक्ति का दर्द ठीक हो जाता है। इस लोक प्रचलित मान्यता की झलक अनत जी द्वारा रचित 'अचित्रित' उपन्यास में देखी जा सकती है। उपन्यास में वानी नामक पात्र का जन्म पाँव की ओर से होता है जिसकी वजह से अनेकों लोग अपने शरीर की पीड़ा को दूर करने के उद्देश्य से उसके पास आते हैं। और वानी द्वारा उनके पीड़ित शरीर पर पाँव फेरने से वे अपने को पीड़ामुक्त अनुभव करते हैं। लोगों की इस मान्यता के बारे में वानी कहती है- **"माँ बताती थी कि मेरा जन्म पाँव की ओर से हुआ था इसीलिए गाँव के छोटे-बड़े कई लोग अपने शरीर के दर्द को लिए हमारे घर आते थे। मैं दर्द की जगह पाँव फेर दिया करती थी और लोग अपने को चंगा समझ लेते थे।"**[127]

- **अंध विश्वास-** अनत जी अपने उपन्यासों के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के मध्य व्याप्त अंधविश्वास की भी झाँकी प्रस्तुत की है। भारत से जाने वाले ये आप्रवासी भारतीय अपने साथ अपनी धार्मिक आस्था के साथ-साथ अपने समाज में व्याप्त अंधविश्वास को भी लेते गए हैं। जिसके परिणामस्वरूप भारत के समान मॉरिशस में भी जादू-टोना, झाड़-फूँक, तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेत, चुड़ैल, डी, देवी का प्रकोप आदि विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों की भरमार है। अनत जी द्वारा रचित- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के अंधविश्वास को दर्शाया गया है। 'लाल पसीना' उपन्यास में कोसिला, गोपाल की माँ व गौतम की माँ के माध्यम से उन आप्रवासी भारतीयों का चित्रण किया गया है, जो भूत-प्रेत, चुड़ैल, डी आदि पर विश्वास करते हैं। तथा बीमारी व अन्य प्रकार की घटनाओं का संबंध वे किसी व्यक्ति विशेष की काली साया से जोड़ लेते हैं। भूत-प्रेत की सत्ता पर विश्वास

करने एवं झाड़-फूँक द्वारा भूत को भगाने वालों पर लेखक ने प्रकाश डाला है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है। मृत आत्मा की काली साया से होने वाली क्षति का उल्लेख करते हुए कोसिला कहती है- **"सुनुआ गूँगे की मृत्यु हो गयी थी। तभी से हमारे खेत की रौनक जाती ही रही, साथ-साथ हमारे परिवार पर उसकी वह भटकती आत्मा सवार हो गई।-----गोपाल की माँ आँखें बंद करके मंत्र पढ़ने लगी।----गौतम की माँ उस चुड़ैल की कहानी सुना रही थी, जिसके कारण उसके सातों बच्चों में से एक का भी स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। किसी को रोहानी नहीं थी। उसके ससुर की जान भी लेकर वह चुड़ैल बच्चों का पीछा नहीं छोड़ रही थी।-----गोपाल की माँ ने अपनी कहानी शुरू कर दी। उसका आदमी तो बड़े-बड़े भूत-प्रेत और चुड़ैलों को मुट्ठी में बाँधें रहता था। घर के कोने में जो देवकूर था, वहाँ उसके घुटने के बल हो जाने पर बस------बोल भगत का चाहेला? जलते हुए कपूर को उसने हाथों में लेकर शरीर को झकझोरा और वर्षों से लगा हुआ भूत पाँवों को सिर पर रखे भाग खड़ा होता है।"[128]** इसी तरह 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में भी आप्रवासी भारतीयों के अंधविश्वास को देखा जा सकता है। इस उपन्यास में कोठी के सरदारों द्वारा जब देवराज नामक आप्रवासी भारतीय युवक को गोरों के विरुद्ध आवाज उठाने के जुर्म में मालिकों के कुत्तों द्वारा नुचवाया जाता है। उस घटनास्थल पर सीता का 10 वर्षीय बालक परकाश भी खड़ा रहता है। कुत्तों द्वारा देवराज की बोटी-बोटी हो जाने पर तथा खून से सनी हुई उसकी काया को देखकर परकाश के अंदर भय समा जाता है। वह उस वीभत्स दृश्य को अपने जेहन से निकाल नहीं पाता। जिसकी वजह से उसकी तबीयत खराब हो जाती है। वह रात में सोते समय भी उस घटना से संबन्धित बातों को बड़बड़ाता रहता है। परकाश की ऐसी दशा के पीछे बस्ती की स्त्रियाँ अलग-अलग तर्क प्रस्तुत करती हैं। कुछ लोगों का मत है कि माता के प्रकोप की वजह से परकाश की ऐसी हालत है, तो अन्य लोग उसे भूत-प्रेत की छाया का शिकार मानते हैं। इसी वजह से वे डाक्टरी इलाज न कराकर मान-मनौती, पूजा-पाठ, झाड़-फूँक का सहारा लेती हैं। कोई परकाश पर तुलसी के जल का छिड़काव करने की

सलाह देता है, तो कोई उसके सिरहाने पर चाकू-छुरी आदि रखने की सलाह देता है। परकाश के भय को दूर करने हेतु मीरा जो उपाय करती है उससे बस्ती वालों के अंधविश्वासी होने की पुष्टि होती है। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"उसके भय को मिटाने के लिए मीरा पुजारी के यहाँ से तुलसी का पानी ले आई थी। उसकी कुछ बूँदों को परकाश पर छिड़ककर उसने मदन के यहाँ से आयी हनुमान चालीसा को उसके सिरहाने रख दिया। परकाश को रह-रहकर चिहुँकते पाकर उसने एक छुरी भी उसके बिस्तर के नीचे रख दी।"**[129] परकाश की नाजुक हालत को देखकर मीरा की मौसी उसे माता का प्रकोप मानती है। माता के प्रकोप के निवारण हेतु वह परकाश के ऊपर से सिक्का उतारकर परकाश के ठीक होने की मनौती मानती है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"मीरा की मौसी ने पहुँचते ही एक सिक्के को परकाश के सिर के चारों ओर तीन बार घुमाकर मीरा को थमा दिया था- "एको सँजो के रख दे बेटी। देवी मैया रक्छा करी।" उस औंछें हुए सिक्के को मन की मनौतियों के साथ सीता ने दीवार की कालीमाई के चित्र के नीचे वाले तख्ते पर रख दिया था।"**[130]

'अचित्रित' उपन्यास में वानी की माँ के माध्यम से अनत जी ने 'डी' पर विश्वास करने वालों का चित्रण किया है। वानी की गाय जब बछड़े को जन्म देती है उस समय उसकी माँ अपने घर में स्थित देवी-देवताओं की पूजा करती है साथ ही 'डी साहब' को खुश करने हेतु उन पर शराब, मछली आदि चढ़ावा चढ़ाती है। अपनी माँ द्वारा किए जाने वाले इन टोटकों का उल्लेख करते हुए वानी कहती है- **"मुझे अनायास ही वे दिन याद आ गए जब हमारे घर गाय के बछड़े के जनमने पर मेरी माँ घर के भीतर देवी-देवताओं की पूजा के साथ-साथ तथा बाड़े के पास डी साहेब को रोटी-मछली, सिगरेट और शराब चढ़ाती, और दोनों रस्मों पर वह कपूर अगरबत्तियाँ और धूप एक साथ जलाती थी।"**[131] उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस प्रकार आप्रवासी भारतीयों में विभिन्न प्रकार के अंधविश्वास

व्याप्त हैं। अनत जी ने न सिर्फ आप्रवासी भारतीयों के अंधविश्वास को दर्शाया है बल्कि इसके साथ ही यह भी दर्शाया है कि आप्रवासी भारतीयों में दैवीय प्रकोप का भय भी सदैव विद्यमान रहता है। वे अपने अनिष्ट को दूर करने हेतु कालीमाई व अन्य देवी-देवताओं की पूजा करते हैं तथा समय-समय पर उन पर चढ़ावा चढ़ाते हैं। और जब कभी किसी कारणवश वे चढ़ावा आदि नहीं चढ़ा पाते तब वे देवी के प्रकोप से भयभीत रहते हैं। साथ ही यदि कभी कोई अनहोनी घट जाती है तब वे उसके मूल कारण की जाँच न करके उस घटना को दैवीय कोप से जोड़ देते हैं। इतना ही नहीं यदि कभी कोई व्यक्ति उनके देवी-देवताओं की खिल्लियाँ उड़ाते हैं या उनका अपमान करते हैं तब वे यह कहते पाए जाते हैं कि इसने अभी देवी का प्रकोप देखा ही कहाँ है। 'लाल पसीना' उपन्यास में अनत जी ने आप्रवासी भारतीयों के इस मत को निम्नवत् दर्शाया है। गोरे शासकों द्वारा जब बस्ती के मजदूरों को गाँव में कालीमाई के चबूतरा की स्थापना करने पर रोक लगा दी जाती है तब मजदूरों के जो उद्गार हैं उससे उनके दैवीय प्रकोप के भय को देखा जा सकता है- **"हम सबन मिलकर गाँव में कालीमाई की स्थापना करना चाहत रहीं पर कोठी वाले गोरवा ने आज्ञा ही न दी-----साले मौगो को मालूम नाहीं कि राज करते राजा जइहें, रूप करते रानी, वेद पढ़त पंडित जइहें, रह जयहीं नेक निशानी।"------उसने मन-ही-मन पूछा: आखिर धरम-करम के मामले में दखल देने वाले ये कौन होते हैं? इन हरामजादों ने अभी देवी मैया का कोप नहीं देखा। सारी शेख़ी निकल जाएगी।"**[132] 'लाल पसीना' उपन्यास में अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि दैवीय प्रकोप का भय न सिर्फ आप्रवासी भारतीयों में व्याप्त है बल्कि इसके साथ ही भारतीयों की धार्मिक आस्था और उनके देवी-देवताओं की उपेक्षा व निंदा करने वाले गोरे शासकों में भी विद्यमान है। कालीमाई के प्रकोप से भयाक्रांत गोरे शासकों के डर का वर्णन करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"बस्ती के प्रवेश द्वार पर पीपल के नीचे सिन्दूर टीके वाले पत्थर को लात मारकर उलट देने के बाद जब कोस्तां साहब का पाँव**

अच्छा होने से रहा तो उस समय दूसरे प्रकोप के भय से उसने पीपल के नीचे बहरिया पूजा की इजाजत दे डाली थी।"[133]

- **लोकगीत-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा गाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के लोकगीतों का भी उल्लेख किया है। आप्रवासी भारतीय मजदूरों द्वारा विभिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के गीतों को गाया जाता है। मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीयों द्वारा बच्चे के जन्म के अवसर पर 'ललना' व 'सोहर' गीत गाया जाता है तो शादी-ब्याह के अवसर पर विवाह से संबन्धित गीत गाये जाते हैं। विवाह के अवसर पर भी विभिन्न रस्मों- तिलक, माटी कोड़ाई, द्वार-पूजा, कोहबर, परछन आदि से संबन्धित कई प्रकार के गीत गाये जाते हैं। इसके साथ ही खेतों में काम करते समय गाये जाने वाले श्रमगीत, जाँते पर आटा पीसते समय गाया जाने वाला जँतसार गीत, इन्द्रदेव को प्रसन्न करने एवं वर्षा हेतु गाया जाने वाला हरपरौरी गीत आदि का भी उल्लेख अनत जी के साहित्य में हुआ है। आप्रवासी भारतीय स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले जँतसार गीत का उल्लेख करते हुए 'लाल पसीना' उपन्यास में अनत जी लिखते हैं- **"बरगद के पेड़ के नीचे औरतें मकई पीसती हुई चक्की की घरघराहट के साथ स्वर मिलाये जँतसार गाये जा रही थीं। जाँते की उस घरघराहट ने सबसे पहले उसे (कुन्दन को) कैद की याद दिलाई, फिर जँतसार के राग से बिहार का वह गाँव याद आ गया जहाँ उसकी माँ एकदम इसी तरह सतवा पीसती हुई गाया करती थी। उन जँतसारों की इधर-उधर की एकाध पंक्तियाँ उसे आज भी याद थीं। औरतों के स्वर के साथ वह (कुन्दन) भीतर-ही-भीतर गुनगुनाता रहा।——-**

"मोरे नैहर के सँदेसवा लेके तू पहुँचो

मोरे भैया ताकत हूँ मैं तोरी राह

गवाँ के कुवाँ पानी से भरल होवे

कि अकाल मचेला चहूँ ओर

ननदीया मोरी जो तोहे आने न देवे

मोरे भैया देना न तू ओके चन्दरहार

मोरे नैहर------।"[134]

अनत जी ने न सिर्फ घरेलू काम-काज के अवसर पर औरतों द्वारा गाये जाने वाले गीतों का उल्लेख किया है बल्कि इसके साथ ही खेतों में काम करने वाले पुरुषों द्वारा भी गाये जाने वाले श्रमगीतों का उल्लेख किया है। 'लाल पसीना' उपन्यास में भगत के माध्यम से खेतों में काम करते समय आप्रवासी भारतीयों द्वारा गाये जाने वाले श्रमगीतों की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। इस संदर्भ में अनत जी लिखते हैं- **"काम करते हुए भगत का गुनगुनाना जारी रहा-**

तोहे का मिलेला ओ राजा

गरीबन के रोवा दुखवा के ?

खेतवा तोहर होवे

पसीना हमार बहे

फिर भी राजा

हमार तोहार साझा न होवे

तोहे का मिलेला ओ राजा

हमार हकवा के मार के-----।"[135]

उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से जहाँ एक ओर आप्रवासी भारतीय मजदूरों द्वारा गाये जाने वाले श्रमगीत को दर्शाया गया है वहीं दूसरी ओर गोरे शासकों की अन्यायपरक नीति एवं भारतीय मजदूरों के साथ किए जाने वाले भेद-भाव परक व्यवहार को भी

दर्शाया गया है। अनत जी ने फसल की कटनी के समय गाये जाने वाले गीतों का भी चित्रण किया है। 'लाल पसीना' उपन्यास में फसल तैयार होने पर कटनी के समय किसानों द्वारा गाये जाने वाले गीत एवं किसानों की उत्सुकता के बारे में अनत जी लिखते हैं- **"चाँदनी रातों में गाने-बजाने का जो कार्यक्रम बैठका के आँगन में होता था, वह खेतों में ही होने लगा था। काम करते हुए लोग गा-बजा लेते थे। गाते-बजाते काम कर लेते थे। खेत की पहली फसल की बेसब्री गाने का विषय बन जाया करती थी-**

पहली फसलवा के धीमा होवे चाल हो

माँड़ो की दुलहीन जैसा

जेकर पाँवे होवे महावर हो

पहली फसलवा के धीमा होवे चाल हो

ठंडवा में उमड़े बदरवा सा

जेकर बरसवा होवे देर हो

पहली फसलवा के धीमा होवे चाल हो

सौतन घर फँसे बलमा सा

जेकर वापसी लगे युगवा हो——"[136]

अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने न सिर्फ श्रमगीतों की परम्परा का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ ही यह भी दर्शाया है कि गीतों के माध्यम से आप्रवासी भारतीय अपने अतीत को भी याद करते हैं। 'लाल पसीना' उपन्यास में सोमा का ससुर अपने अतीत को याद करता है, जिसे वह गीतों के माध्यम से व्यक्त करता है-

"सुनी के नाम हम मारीच के दीपवा हो——

पहुँचे अरी हम पाने को सोनवा——पाने को——

बदले में मिलेला भाई बाँसों की मार हो——

छिलछिल गयली सब मजदूरन की पीठवा——मजदूरन-----

कोल्हू के बैल बने इखवन पीसन को-----

छोड़ा था देस अपन कुली बनन को-----कुली----।"[137]

- **साहित्यिक संघर्ष-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्ष को चित्रित किया है बल्कि इसके साथ ही उनके साहित्यिक संघर्ष को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। सन् 1834 ई० में 'शर्तबंद प्रथा' के तहत जिन भारतीय मजदूरों को मॉरिशस लाया गया था उनके साथ-साथ उनकी भाषा व बोली भी मॉरिशस पहुँची। ब्रिटिश औपनिवेशिक देश होने के कारण मॉरिशस में अँग्रेजी व फ्रेंच भाषा का आधिपत्य था, जिसे अनपढ़ आप्रवासी भारतीय मजदूर न तो समझ पाते थे और न ही बोल पाते थे। आपसी वार्तालाप के समय वे लोग हिन्दी भाषा, विशेषकर भोजपुरी बोली का प्रयोग करते थे। क्योंकि यह भाषा उनकी मातृभाषा थी। मॉरिशस आने वाले अधिकांश आप्रवासी भारतीय मजदूर पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार जिले के थे, जहाँ पर भोजपुरी बोली बोली जाती है। मॉरिशस में भारतीय मजदूरों द्वारा बोली जाने वाली बोली का उपहास किया जाता। गोरों द्वारा उनके सरदारों व दलालों द्वारा हिन्दी व भोजपुरी बोलने वालों का मज़ाक उड़ाया जाता साथ ही हिन्दी को गँवारों व जाहिलों की भाषा कहा जाता था। हिन्दी बोलने वालों पर तरह-तरह के जुल्म ढाये जाते थे। किन्तु विपरीत परिस्थितियों में भी आप्रवासी भारतीयों ने अपने धर्म एवं संस्कृति की तरह अपनी मातृभाषा को पराई भूमि में जीवन्त बनाए रखा। और इसी भाषिक एकता के बल पर गोरों के अमानवीय व्यवहार का खुलकर विरोध किया तथा

मॉरिशस को अंग्रेजों की दासता से मुक्त करवाया। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' आदि में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साहित्यिक संघर्ष को यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। इन उपन्यासों में अनत जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि आप्रवासी भारतीय पराई भूमि में विभिन्न प्रकार की यातनाओं को सहते हुए भी अपने भाषा को जीवन्त बनाए रखा और इसी भाषिक लगाव के चलते वे उसके संरक्षण के लिए भी प्रयत्नशील रहते हैं। 'लाल पसीना' उपन्यास में जतन के माध्यम से उन आप्रवासी भारतीयों का चित्रण किया गया है जो अंग्रेजों द्वारा दिए गए दारुण दंडों को सहते हुए भी बैठका में बस्ती के बच्चों को चोरी से हिन्दी की शिक्षा देता है, तथा मौखिक रूप से किस्से-कहानियाँ सुनाकर बच्चों में आत्मबल का संचार करता। जतन के भाषिक लगाव एवं उसके संरक्षण हेतु उसके प्रयासों को अनत जी ने निम्नवत् प्रस्तुत किया है- **"जतन थोड़ा बहुत रामायण गुनगुना लेता था। हनुमान चालीसा की चौपाइयाँ उसे कंठस्थ थीं। किस्से कहानियों की एक-दो पुस्तकें भी वह पढ़ लेता था। इसी के बल उसे शब्दों का थोड़ा-बहुत ज्ञान औरों से अच्छा ही था।——उसी घर में चोरी-चुपके किसन ने अक्षर और शब्द पहचाने थे। बस्ती के और भी कुछ लोगों को जतन ने पढ़ना सिखाया था।"**[138] लंगड़वा सरदार के मना करने के बावजूद भी जतन अपने घर में लोगों को हिन्दी पढ़ाता था। जतन न सिर्फ हिन्दी पढ़ाने का काम करता है बल्कि वह तो उस ज्ञान को आगे की पीढ़ी को हस्तांतरित करने की सोचता है ताकि जिन पुस्तकों की मदद से उसे जीवन जीने के सूत्र मिलते हैं उन्हीं पुस्तकों से आगे की पीढ़ी भी लाभान्वित हो सके। जतन अपनी पुस्तकों को किसनसिंह को देने की योजना बनाता है। किसन को अपनी पुस्तक सौंपते हुए वह (जतन) कहता है- **"किसन। मेरे बाद ये सारी पुस्तकें, जिन्हें मैं अपना सबसे बड़ा ऐश्वर्य मानता हूँ, तुम्हारी होंगी। इन्हें लुका-छिपाकर बड़ी कठिनाई से यहाँ ला सका था। यहाँ की**

कठिन-से-कठिन घड़ियों में इन पुस्तकों ने मुझे धैर्य दिया है, इसलिए मैं चाहूँगा कि इनका सही उपयोग होता रहे।"139

- **बैठका का महत्व-** मॉरिशसीय समाज में 'बैठका' आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा निर्मित एक स्वनिर्मित व सामूहिक संस्था है। जिसमें बस्ती के लोग शाम के समय एकत्रित होते, अपनी-अपनी समस्याओं को बैठका के सदस्यों व प्रधान के सामने रखते और अपनी समस्याओं का निदान करते। बैठका में ही एकत्रित होकर आप्रवासी भारतीय मजदूर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते। बैठका ही वह स्थान है, जिसे आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक संस्था माना जाता है। इसी स्थान (बैठका) पर एकत्रित होकर गिरमिटिया मजदूर गोरों द्वारा दी गयी विविधोंमुखी यातनाओं को भुलाने का प्रयास करते और शाम के समय इसी जगह पर एकत्रित होकर गा-बजाकर अपने में नवीन चेतना का संचार करते तथा विविध प्रकार की सामाजिक समस्याओं का निदान खोजते। बैठका ही वह स्थान है जहाँ पर एकजुट होकर आप्रवासी भारतीयों ने अपनी धार्मिक आस्था को जीवंत बनाए रखा। साथ ही अपनी भाषा व संस्कृति को जीवन्त बनाए रखा। बैठका में ही मजदूरों के बच्चों को हिन्दी की शिक्षा दी जाती तथा रामायण, गीता आदि का सामान्य ज्ञान दिया जाता ताकि वे इन ग्रन्थों का सार ग्रहण कर सकें और उसे अपने जीवन में उपयोग में ला सकें। बैठका में ही बच्चों को विभिन्न प्रकार की प्रेरक कहानियाँ सुनाई जाती, ताकि वे उनसे कुछ सीख ले सकें और भविष्य में अपने जीवन को बेहतर बना सकें। बैठका ही वह स्थान हैं जहाँ पर एकजुट होकर आप्रवासी भारतीयों ने अपने साथ होने वाले अन्याय का प्रतिकार और गोरे शासकों से अपने हक के लिए लड़ाई लड़ी। बैठका ही आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की राजनीतिक संस्था भी थी। जहाँ पर उन्होंने अपनी राजनीतिक समस्याओं का हल निकालते। यहीं पर मजदूरों में संगठन शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ और संगठित होकर मजदूरों

ने गोरे शासकों के खिलाफ विद्रोह किया जिसके परिणामस्वरूप मॉरिशस ब्रिटिश शासकों के चंगुल से मुक्त हुआ। आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के जीवन में बैठका का महत्वपूर्ण स्थान है। जिसकी अभिव्यक्ति अनत जी के उपन्यासों में हुई है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' आदि में आप्रवासी भारतीय मजदूरों के जीवन में बैठका के महत्व एवं बैठका को सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक-सांस्कृतिक संस्था के रूप में चित्रित किया गया है। 'लाल पसीना' उपन्यास में जतन नामक पात्र के माध्यम से आप्रवासी भारतीय मजदूरों के जीवन में बैठका की आवश्यकता एवं उसके महत्व को दर्शाया गया है। जतन पराई भूमि में अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था को जीवन्त बनाए रहता है। वह अपने साथ लाई गयी पुस्तकों- रामायण, गीता, आल्हा आदि से विपरीत परिस्थितियों में जीवन जीने के सूत्र खोजता है। वह यह भी चाहता है कि जिन पुस्तकों से कठिनाई के समय में उसे जीवन का सहारा मिला वही पुस्तकें वह आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करना चाहता है। वह अपनी पुस्तकों को किसनसिंह को सौंप देता है ताकि उनमें निहित जीवन सूत्रों का सही उपयोग होता रहे। जतन की यह भी इच्छा थी कि मजदूरों की बस्ती में एक बैठका होना चाहिए। इसके लिए वह मालिक से जमीन माँगने की योजना बनाता है। जतन की इच्छा को प्रकट करते हुए किसनसिंह कहता है- **"उसके जतन चाचा की एक बहुत बड़ी इच्छा यह थी कि मालिक को किसी तरह मनाकर जमीन का एक छोटा-सा टुकड़ा माँगा जाए और उसमें एक बैठक खड़ी की जाए।"**[140] अनत जी ने न सिर्फ बैठका की आवश्यकता को चित्रित किया है बल्कि इसके साथ बैठका में होने वाली गतिविधियों का भी चित्रण किया है। 'लाल पसीना' उपन्यास में सुखुवा नामक पात्र बैठका में मजदूरों के बच्चों को नि:शुल्क हिन्दी की शिक्षा देता है साथ ही अपनी संस्कृति को विरासत के रूप में हस्तांतरित करता है। तथा बच्चों में नवीन चेतना एवं ऊर्जा का संचार करते हुए उन्हें देश का कर्णधार कहता है। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"वह सुखुवा ही था जो गौतमवा के बाद बच्चों को बैठका में इकठ्ठा**

करके रामागति सिखाता था।------सुखुवा ही ने सभी बच्चों के आगे मुस्कराते हुए कहा था, "यह देश तुम सभी का है----तुम सभी यहाँ जन्में हो---यहीं तुम्हें मरना है। कागज़ के टुकड़े पर यह चाहे किसी का क्यों न हुआ, लेकिन इस पर कल तुम्हारी श्रमबूँदों का मुहर होगा। ----यह तुम्हारा वह सपना है जिसे नींद के बाद भी तुम्हें सँजोकर रखना है---"[141] इसी तरह 'हम प्रवासी' उपन्यास में सोनाली मजदूरों के बच्चों को हिन्दी सिखाती है तथा मौका मिलने पर बैठका में रामायण का पाठ भी करती है। इस संदर्भ में मधुवा का कथन है- **"वह मानता था कि सोनाली सुन्दर थी, अच्छी थी। वह मधुवा से अधिक पढ़ी-लिखी भी थी। गाँव में उसके पिता द्वारा बनाए छोटे से बैठका में वह बच्चों को हिन्दी पढ़ाती भी थी। कई बार मधुवा उसे रामायण पढ़ते सुन चुका था।"[142]** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि बैठका में हिन्दी की शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक ग्रन्थों की चर्चा की जाती थी। रामायण, गीता, आल्हा, हनुमान चालीसा आदि का पाठ होता था। इन ग्रन्थों की पंक्तियाँ गाकर मजदूर एक तरफ अपनी मानसिक व शारीरिक थकान को कम करते तो दूसरी तरफ अपने में नवीन चेतना एवं ऊर्जा का संचार करते। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"किसन अपने हाथ की ढपली को इस तरह थपथपा उठता कि बैठे-ही-बैठे लोग झूमने लग जाते। लोग दिन-भर की कड़ी मेहनत की थकान को सचमुच ही भूल जाते-----कोड़ों और बाँसों की बौछार के दर्द भी अपने-आप कम हो जाते थे। गा-बजाकर तथा खुली हवा को अपनी फ़रियाद सुनाकर ये सभी मजदूर आश्वासन पा जाते। भीतर और बाहर की पीड़ा को कम करने के लिए इससे अच्छा उपाय उनके लिए दूसरा था ही नहीं।"[143]**

- **अतीत के प्रति मोह एवं भारत छोड़ने का पश्चाताप्-** अनत जी के उपन्यासों में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की अतीत के प्रति मोह एवं भारत छोड़ने के पश्चाताप् को भी वाणी प्रदान की गयी है। क्योंकि मॉरिशस आने से पूर्व गोरे शासकों के दलालों द्वारा भारतीय मजदूरों को जो झूठे सपने जैसे- मॉरिशस में हर पत्थर के नीचे सोना है, पत्थर

पलटने पर सोना-ही-सोना मिलेगा, अन्न व धन की कमी नहीं है, सुखमय जीवन यापन के छलावे, आदि विविध प्रकार के सब्जबाग दिखाए गए थे। बेहतर जीवन की तलाश में निकले लोग जब मॉरिशस की धरती पर कदम रखते हैं तब उन्हें सच्चाई का पता चलता है कि उन्हें ठगा गया है, उन्हें बंधुआ मजदूर के रूप में खरीदा गया है उस समय उनके सपने चकनाचूर हो जाते हैं। जब उनसे कठोर-से-कठोर श्रम करवाकर भी आधा पेट भोजन दिया जाता, जो सड़ा-गला व अधपका होता था। पारिश्रमिक में कटौती की जाती। बीमार होने पर भी काम करवाया जाता। उस समय आप्रवासी भारतीय स्वदेश छोड़ने का पश्चाताप् करते, अपने भाग्य को कोसते, उस समय उन्हें अपना अतीत बेहद प्यारा लगने लगता। आप्रवासी भारतीय मजदूरों की इस पीड़ा एवं व्यथा को अनत जी अपने कई उपन्यासों में चित्रित किया है। 'हम प्रवासी' उपन्यास में अपने अतीत को याद करते हुए हनीफ अपने मित्र मधुवा से कहता है- **"वहाँ, जहाँ यह सबक तो मिला कि अपनी जन्मभूमि से अच्छी कोई जगह नहीं होती, जहाँ के दर्द में भी एक सुकून होता है।"[144]** इसी तरह मधुवा भारत छोड़कर मॉरिशस में आ बसने के अपने निर्णय पर पश्चाताप् करता है। वह स्वयं से तर्क-वितर्क करता है- **"लगता है तुम्हें भारत छोड़ने का अब पछतावा हो रहा है। 'मैं तो अपने आप से यह पूछ रहा हूँ कि मैंने भारत छोड़ा क्यों? क्या कमी थी वहाँ? वहाँ क्या नहीं था जो यहाँ पा लिया?"[145]** महावीर अपने स्वदेश छोड़ने की पीड़ा को अकबर से निम्न शब्दों में व्यक्त करता है- **"एक बात का संतोष मन को जरूर है कि हमारे अपने देश के लोग पहले से यहाँ बसे हुए हैं। इसलिए पराई भूमि पर पहुँच जाने की उदासी नहीं रहेगी।"—-यह तो ठीक है, महावीर भाई, मगर मैं तो वतन की याद दिल से निकाल ही नहीं पा रहा। वतन से दूर होना बहुत ही बड़ी पीड़ा है।"[146]**

निष्कर्ष:

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्याय 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष' के अंतर्गत अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज एवं उस समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की त्रासदपूर्ण जीवन का यथार्थपरक चित्रण किया है। अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने 'हिन्द महासागर का मोती' कहे जाने वाले द्वीप मॉरिशस की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का सजीव अंकन किया है। अपनी प्रखर आलोचकीय दृष्टि व सशक्त लेखनी के माध्यम से अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज की हर छोटी-बड़ी घटनाओं को वाणी प्रदान किया है। 'सामाजिक संघर्ष' के अंतर्गत स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में व्याप्त विविध प्रकार की समस्याओं – गोरों द्वारा आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का शोषण, आप्रवासी भारतीयों द्वारा आप्रवासी भारतीयों का शोषण, गोरे शासकों के दलालों द्वारा भारतीयों का शोषण, कानून-व्यवस्था द्वारा भारतीयों की उपेक्षा व शोषण, मालिक-मजदूर संघर्ष, मजदूरों के संगठन को तोड़ने की साजिश, गोरे शासकों द्वारा भारतीयों का बलात् धर्मांतरण, मजदूरों में जाति, धर्म, संप्रदाय व मजहब के नाम पर फूट डालना, शोषण के खिलाफ मजदूरों का विद्रोही तेवर, पूँजीपति व कानून व्यवस्था की मिलीभगत, पूँजीपतियों द्वारा गैर-कानूनी व अवैध धंधों को बढ़ावा देना तथा नशीले पदार्थों के धंधे में संलिप्तता, वेश्याजीवन की त्रासदी आदि को वाणी प्रदान की गयी है। 'राजनीतिक संघर्ष' नामक 'उप-अध्याय' के अन्तर्गत स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज की अव्यवस्थित शासन-प्रणाली, भ्रष्ट राजनीति, चुनावी सरगर्मियों, चुनाव जीतने हेतु राजनेताओं व मंत्रियों द्वारा अपनाये जाने वाले विभिन्न राजनीतिक हथकण्डों- विपक्षी के दोषों का बखान

करना, विपक्षी पर चारित्रिक लांछन लगाना, विपक्षियों पर दंगा-फसाद व गुंडा-गर्दी का आरोप लगाना तथा उन पर हमले करवाना, विपक्षियों के वोटों व एजेन्टों की खरीद-फरोख्त, पोलिंग बूथों पर कब्जा करना, मतदान हेतु जनता से तमाम खोखले वादे करना, चुनाव जीते हुए प्रत्याशी को मंत्रिमण्डल में शामिल न करने की योजना बनाना व उसे अपदस्थ करना आदि का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। साथ ही देश के कुशल संचालन हेतु राजनीति की आवश्यकता उसके महत्व व उसके ताकत को भी दर्शाया गया है। अनत जी ने उन विभिन्न कारणों पर भी प्रकाश डाला है जिनके माध्यम से आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों में राजनीतिक चेतना का उदय व प्रसार होता है और जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन व राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित होकर भारतीय गिरमिटिया मजदूर देश की राजनीति में प्रवेश कर अपने विरोधियों से संघर्ष करते हुए देश की शासन-व्यवस्था में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। 'आर्थिक संघर्ष' नामक 'उप-अध्याय' के अन्तर्गत स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के मध्य व्याप्त आर्थिक विपन्नता तथा आर्थिक तंगी के विभिन्न कारणों- मालिकों द्वारा मजदूरों के श्रम का शोषण करना, परिश्रम का उचित मूल्य न देना, कम-से-कम वेतन पर काम पर रखना व वेतन में कटौती कर लेना, असमान वेतन देना, काम का अभाव, नवयुवकों की बेरोजगारी, नौकरी व पदोन्नति में योग्यता, अनुभव व वरिष्ठता के स्थान पर जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाई-भतीजावाद, घूँसखोरी व चापलूसी प्रवृत्ति का बोलबाला आदि को दर्शाया गया है। इसके साथ ही आर्थिक तंगी की वजह से उत्पन्न विभिन्न प्रकार की समस्याओं- मानसिक कुंठा, पारिवारिक कलह, दाम्पत्य जीवन में विखराव, व्यक्ति की सामाजिक अवहेलना आदि का चित्रण किया गया है तथा व्यक्ति के जीवन पर उसके दुष्परिणामों को भी दर्शाया गया है। 'धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्ष'

नामक ‘उप-अध्याय’ के अन्तर्गत स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में ‘शर्तबंद प्रथा’ के तहत मॉरिशस जाने वाले आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की अपने धर्म व संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा व प्रेम को दर्शाया गया है। साथ ही आप्रवासी भारतीयों द्वारा पराई भूमि में अपनी सभ्यता, संस्कृति व धार्मिक आस्था को जीवन्त बनाए रखने हेतु किए संघर्ष की भी सफल अभिव्यक्ति हुई है। साथ ही औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा मनाए जाने वाले विभिन्न रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार, परम्पराएँ, मत-मान्यताएँ, लोकविश्वास, अंधविश्वास, आदि का सफल चित्रांकन किया गया है। आप्रवासी भारतीय मजदूरों के जीवन में 'बैठका' के महत्व को भी दर्शाया गया है। क्योंकि 'बैठका' ही मजदूरों की सामाजिक, राजनीतिक, व धार्मिक-सांस्कृतिक संस्था थी। इसके साथ ही आप्रवासी भारतीयों के देश छोड़ने के पश्चाताप व अतीत के प्रति मोह आदि भावों की भी सफल अभिव्यक्ति हुई है।

अंतत: कह सकते हैं कि अनत जी ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि व सशक्त लेखनी के माध्यम से अपने समय व समाज में घटित होने वाली घटनाओं को, विशेषकर आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की पीड़ा को व पराई भूमि में उनके सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक-सांस्कृतिक जीवन संघर्ष को साहित्यिक रूप प्रदान कर उसे न सिर्फ अपने देश के पाठकों को प्रभावित किया बल्कि विश्व के अन्य देशों के विशेषकर भारत के पाठकों, साहित्यकारों, आलोचकों आदि को प्रभावित किया। और अपनी प्रतिभा के बल पर मॉरिशस के साथ-साथ विदेशों में भी ख़ासी लोकप्रियता हासिल की है।

सन्दर्भ-सूची:

1. अभिमन्यु अनत, हम प्रवासी, पृष्ठ – 159-160
2. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृष्ठ – 100
3. वही, वही, पृष्ठ – 60
4. वही, वही, पृष्ठ – 91
5. वही, गाँधी जी बोले थे, पृष्ठ – 10-11
6. वही, लाल पसीना, पृष्ठ – 101
7. वही, वही, पृष्ठ – 257
8. वही, गाँधी जी बोले थे, पृष्ठ – 26
9. वही, वही, पृष्ठ – 31
10. वही, लाल पसीना, पृष्ठ – 32
11. वही, वही, पृष्ठ – 22
12. वही, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ – 263-264
13. वही, गाँधी जी बोले थे, पृष्ठ – 107
14. वही, लाल पसीना, पृष्ठ – 264
15. वही, वही, पृष्ठ – 111
16. वही, वही, पृष्ठ – 162-163
17. वही, वही, पृष्ठ – 219
18. वही, वही, पृष्ठ – 358-359
19. वही, वही, पृष्ठ – 52-53
20. वही, वही, पृष्ठ – 53
21. वही, वही, पृष्ठ – 148-149
22. वही, वही, पृष्ठ – 149-150
23. वही, गाँधी जी बोले थे, पृष्ठ – 82-83

24. वही, लाल पसीना, पृष्ठ – 151

25. अभिमन्यु अनत, गाँधी जी बोले थे, पृष्ठ – 87

26. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृष्ठ – 225

27. वही, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ – 150

28. वही, वही, पृष्ठ – 259-260

29. वही, गाँधी जी बोले थे, पृष्ठ – 80-81

30. वही, लाल पसीना, पृष्ठ – 311

31. वही, वही, पृष्ठ – 31

32. वही, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ – 137

33. वही, हम प्रवासी, पृष्ठ – 112-113

34. वही, अचित्रित, पृष्ठ – 59

35. वही, वही, पृष्ठ – 103

36. वही, वही, पृष्ठ – 168-169

37. वही, वही, पृष्ठ – 141

38. वही, वही, पृष्ठ – 123

39. वही, वही, पृष्ठ – 48

40. वही, लाल पसीना, पृष्ठ – 68-69

41. वही, वही, पृष्ठ – 237

42. प्रह्लाद रामशरण, गाँधी जी बोले थे: छद्म अवधारणाओं का आलेख, पृष्ठ- 8

43. वही, वही, पृ- 11

44. वही, वही, पृ- 12-13

45. अभिमन्यु अनत, गाँधी जी बोले थे, पृ- 237

46. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृ- 305

47. वही, वही, पृ- 315

48. वही, अचित्रित, पृ- 107-108

49. वही, और पसीना बहता रहा, पृ- 316

50. वही, वही, पृ- 305

51. वही, वही, पृ- 315

52. वही, वही, पृ- 317-318

53. वही, वही, पृ- 306

54. वही, वही, पृ- 299

55. अभिमन्यु अनत, अचित्रित, पृ- 145

56. वही, वही, पृ- 158

57. वही, वही, पृ- 99

58. वही, वही, पृ- 186

59. वही, वही, पृ- 167

60. वही, वही, पृ- 160

61. वही, वही, पृ- 174

62. वही, वही, पृ- 167

63. वही, वही, पृ- 180

64. वही, वही, पृ- 182

65. अभिमन्यु अनत, अब कल आयेगा यमराज, वह आजादी, पृ- 38-39

66. अभिमन्यु अनत, गाँधी जी बोले थे, पृ- 67

67. वही, लाल पसीना, पृ- 274

68. प्रह्लाद रामशरण, मॉरिशस का इतिहास, पृ- 111

69. अभिमन्यु अनत, गाँधी जी बोले थे, पृ- 228-229

70. प्रह्लाद रामशरण, मॉरिशस का इतिहास, पृ- 85

71. अभिमन्यु अनत, हम प्रवासी, पृ- 168-169

72. डॉ. कमलकिशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत: एक बातचीत, पृ- 11

73. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ- 58

74. वही, वही, पृ- 315-316

75. वही, अचित्रित, पृ- 32

76. वही, लाल पसीना, पृ- 235

77. वही, अचित्रित, पृ- 22

78. वही, वही, पृ- 24

79. वही, वही, पृ- 28

80. वही, और पसीना बहता रहा, पृ- 199

81. वही, लाल पसीना, पृ- 218

82. अभिमन्यु अनत, वही, पृ- 217-218

83. वही, वही, पृ- 224

84. वही, हम प्रवासी, पृ- 53

85. वही, अचित्रित, पृ- 17

86. वही, वही, पृ- 11

87. वही, वही, पृ- 23

88. वही, वही, पृ- 71-72

89. वही, वही, पृ- 73

90. वही, लाल पसीना, पृ-346

91. वही, अचित्रित, पृ- 23

92. वही, वही, पृ- 44

93. वही, वही, पृ- 42

94. वही, लाल पसीना, पृ- 174-175

95. वही, वही, पृ- 256

96. वही, वही, पृ- 258

97. अभिमन्यु अनत, गाँधी जी बोले थे, पृ- 25

98. वही, हम प्रवासी, पृ- 92-93

99. वही, लाल पसीना, पृ- 144

100. वही, वही, पृ- 209

101. वही, गाँधी जी बोले थे, पृ- 73-74

102. वही, वही, पृ- 38

103. शिक्षा का सामाजिक आधार, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, UG E D -01,पृ- 28

104. वही, वही, पृ- 29

105. वही, वही, पृ- 23

106. वही, वही, पृ- 23

107. संपा- प्रो॰ प्रदीप श्री धर, प्रवासी हिन्दी साहित्य: अवधारणा एवं चिंतन, पृ- 19

108. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ- 221

109. वही, वही, पृ- 157

110. वही, अचित्रित, पृ- 29

111. अभिमन्यु अनत, हम प्रवासी, पृ- 36-37

112. वही, वही, पृ- 57

113. वही, वही, पृ- 75

114. वही, वही, पृ- 108

115. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ- 70

116. वही, वही, पृ- 189

117. वही, वही, पृ- 234-235

118. वही, वही, पृ- 50-51

119. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृ- 234-235

120. वही, वही, पृ- 233-234

121. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ- 362

122. वही, वही, पृ- 363

123. वही, वही, पृ- 364

124. वही, वही, पृ- 55

125. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृ- 198

126. अभिमन्यु अनत, गाँधी जी बोले थे, पृ- 14

127. वही, अचित्रित, पृ- 40

128. वही, लाल पसीना, पृ- 47-48

129. वही, गाँधी जी बोले थे, पृ- 34

130. वही, वही, पृ- 30-31

131. वही, अचित्रित, पृ- 51

132. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ- 15

133. वही, वही, पृ- 213

134. वही, वही, पृ- 82

135. वही, वही, पृ- 152-153

136. वही, वही, पृ- 317

137. वही, वही, पृ- 236

138. वही, वही, पृ- 69

139. वही, वही, पृ- 70

140. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ- 70

141. वही, वही, पृ- 195

142. अभिमन्यु अनत, हम प्रवासी, पृ- 40

143. वही, लाल पसीना, पृ- 52-53

144. वही, हम प्रवासी, पृ- 52

145. वही, वही, पृ- 93-94

146. वही, वही, पृ- 129

चतुर्थ अध्याय

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में जहाँ एक ओर मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व (12 मार्च 1968 ई. से पूर्व) 'शर्तबन्द प्रथा' के अंतर्गत मॉरिशस आने वाले तथा गोरे शासकों के शोषण तंत्र में पिसने वाले आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण, धैर्य, साहस, संघर्ष, त्याग व बलिदान का चित्रण किया है, वहीं दूसरी ओर स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस (12 मार्च 1968 ई. के बाद) में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों व उनकी संततियों के विविधोंमुखी शोषण को भी दर्शाया है। स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त विभिन्न समस्याओं- रंगभेद की समस्या, असफल प्रेम, वैवाहिक सम्बन्धों में जाति, संप्रदाय, शिक्षा, हैसियत का अंतर, अंतर्धर्मीय प्रेम-विवाह की समस्या, कलाकार व उसकी प्रतिभा की उपेक्षा, मालिक-मजदूर संघर्ष, मजदूरों में संगठन शक्ति का अभाव, उद्योगपतियों, मिल-मालिकों व पूँजीपतियों की दमनकारी मनोवृत्ति, कानून-व्यवस्था व न्याय-व्यवस्था का पूँजीपतियों से साठ-गाँठ, नौकरी व पदोन्नति में योग्यता के स्थान पर जातिवाद, भाई-भतीजावाद, घूसखोरी व चापलूसी प्रवृत्ति का बोलबाला, नवयुवकों का विद्रोही तेवर, भ्रष्ट राजनीति, चुनावी सरगर्मी, राजनीतिक हथकंडे, नवयुवकों का विदेशों की ओर पलायन, महँगाई, आर्थिक तंगी, बेरोजगारी, वेश्यावृत्ति व नशीले पदार्थों के अवैध धंधे, पारिवारिक विघटन, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, होटल संस्कृति, मूल्यहीनता,

धर्मपरिवर्तन, वृद्धावस्था की समस्या आदि पर भी अपनी सशक्त लेखनी चलायी है। अनत जी ने 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'एक बीघा प्यार', 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'तपती दोपहरी', 'हड़ताल कल होगी', 'चुन-चुन चुनाव', 'अपनी ही तलाश', 'पर पगडंडी नहीं मरती', 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग', 'फैसला आपका', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'शब्दभंग', 'अचित्रित', 'चलती रहो अनुपमा', 'क्यों न फिर से' व 'मेरा निर्णय' आदि अपने उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त विविधोंमुखी समस्याओं का चित्रण किया है। इस अध्याय में उपर्युक्त वर्णित उपन्यासों के आलोक में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष को विवेचित किया जाएगा। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत अध्याय को निम्न उपशीर्षकों में विभक्त किया गया है-

क) सामाजिक संघर्ष

कोई भी संवेदनशील साहित्यकार अपने समय व समाज में घटित होने वाली घटनाओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। जिस घटना से वह जितना अधिक प्रभावित होगा उस घटना की उतनी ही सफल अभिव्यक्ति उसके साहित्य में मिलेगी। अभिमन्यु अनत ने औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में गोरों के शासनतंत्र व शोषणतंत्र में पलने वाले आप्रवासी भारतीयों की दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। सन् 1834 ई. में 'शर्तबंद प्रथा' के तहत मॉरिशस में प्रवास करने वाले भारतीयों के साथ गोरे शासकों द्वारा सदैव भेद-भावपरक व्यवहार किया जाता था। उनसे कठोर-से-कठोर श्रम करवाया जाता तथा छोटी-छोटी गलतियों पर कोड़ों व बाँसों की बौछार की जाती थी। साथ ही उनके रंग-रूप, पहनावा, भाषा-बोली व उनके रीति-रिवाजों की खिल्ली उड़ाई जाती थी तथा उन्हें असभ्य, जाहिल, गँवार, जंगली आदि शब्दों से संबोधित किया जाता था।

रंगभेद की समस्या: मॉरिशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरोंके साथ रंग के आधार पर कई तरह के भेद-भाव परक व्यवहार किये जाते थे। जिसकी सफल अभिव्यक्ति अनत जी के 'लाल पसीना' व 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में हुई है। इसके अतिरिक्त उनके अन्य रचनाओं में भी भारतीयों के साथ होने वाले रंगभेद को दर्शाया गया है। अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि मॉरिशस के 150 वर्षों के इतिहास में रंगभेद की समस्या आज भी बरकरार है। जिन आप्रवासी काले भारतीय मजदूरों की मेहनत, त्याग, बलिदान व संघर्ष से मॉरिशस द्वीप का कायाकल्प हुआ और जिनकी परिश्रमशीलता से यह द्वीप अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुआ। उन आप्रवासी भारतीय मजदूरों की संतानों को आज भी रंगभेद के आधार पर हर प्रकार के शोषण का शिकार होना पड़ता है। अभिमन्यु अनत ने 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में विद्यमान रंगभेद की समस्या का यथार्थपरक चित्रण किया है। इस उपन्यास में लेखक ने उपन्यास के नायक अमित, उसके मित्र मिशेल व किशोर के माध्यम से उन काले भारतीयों एवं क्रियोलों का वर्णन किया है जिन्हें हर स्तर पर रंगभेद का शिकार होना पड़ता है। अमित का मित्र किशोर पेशे से एक कुशल चित्रकार है। बहुत से लोग उसके चित्रों की सराहना भी करते हैं। किन्तु जब चित्रप्रदर्शनी लगती है, तब न तो उसके चित्रों की सराहना की जाती है और न ही कोई उन चित्रों को खरीदता है। जबकि वहीं एक गौरवर्णी फ्रांसीसी चित्रकार के चित्रों को वाहवाही दी जाती है तथा मंत्रालय के कार्यालय में टाँगने के निमित्त 2500 रुपए के 15 चित्रों को खरीद लिया जाता है। यद्यपि उसके चित्र उतने प्रभावी नहीं होते हैं बावजूद महत्व फ्रांसीसी कलाकार को ही दिया जाता है। समाज व सरकार द्वारा अपने देश के कलाकार (किशोर) के प्रति उपेक्षा के वर्ताव से खिन्न होकर अमित कहता है- **"कला की परख हमारे अपने लोगों को नहीं आती क्या? किशोर अगर गोरा होता तो क्या उसकी कला इसी तरह अर्थहीन रह जाती? इसमें दोष किसका था? जन्म के संयोग का या सामाजिक मनोवृत्ति**

का?"[1] किशोर के समान उसके मित्र मिशेल को भी रंगभेद का शिकार होना पड़ता है। अमित का मित्र मिशेल, जो युवासंघ का प्रधानमंत्री है साथ ही रंगमंच का चैंपियन है। युवा मंत्रालय की ओर से आयोजित नाट्य-प्रतियोगिताओं में वह लगातार तीन बार प्रथम अभिनेता के रूप में विजेता घोषित होता है। फ्रेंच भाषा में भी उसकी अच्छी पकड़ रहती है। लेकिन जब फ्रेंच सरकार की ओर से छात्रवृत्ति मिलने वाली होती है तब समस्त योग्यताओं के बावजूद भी छात्रवृत्ति मिशेल को न देकर किसी गौरवर्ण युवक को दे दी जाती है। मिशेल को छात्रवृत्ति इसलिए नहीं दी जाती क्योंकि वह गौरवर्ण का न होकर काला (क्रियोल) है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"फ्रांस सरकार की ओर से जब छात्रवृत्ति प्राप्त होने की बात हुई थी, उस समय हर आदमी उसे ही सबसे योग्य समझ बैठे थे। लेकिन जिस मापदंड से योग्यता नापी जाती है, उसकी उचित कसौटी पर मिशेल इसलिए नहीं उतरा क्योंकि जो उतर सका था, उसका रंग गोरा था जबकि मिशेल अपनी सभी प्रतिभाओं के बावजूद क्रियोल था।"**[2] उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में गोरे वंशजों द्वारा आप्रवासी भारतीय कलाकारों, रंगकर्मियों तथा कर्मचारियों को हर स्तर पर रंग के आधार पर नीचा दिखाया जाता है।

अनत जी ने श्यामवर्णी अमित और गौरवर्णी जानीन के असफल प्रेम-सम्बन्धों के माध्यम से भी रंगभेद की समस्या को दर्शाने का प्रयास किया है। मॉरिशस के 150 वर्षों के इतिहास में आज तक यह कानून नहीं बदला है कि किसी काले रंग वाले व्यक्ति के साथ किसी गौर वर्ण की लड़की की शादी हुई हो। जानीन और अमित के मध्य अनेक प्रकार की असमानताएँ हैं बावजूद इसके दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं व विवाह-बंधन में बंधने की योजना बनाते हैं। किन्तु जब दोनों के परिवार वालों को इस बात की खबर होती है तब दोनों परिवारों की तरफ से उन दोनों को यही सलाह दी जाती है कि वे इस असंभव बात

को भूल जाएँ। अमित की माँ अमित को समझाते हुए कहती है- **"तुम एक ऐसे प्यार को प्यार समझने लगे हो जो प्यार हो ही नहीं सकता। यह दो दिन का क्षणिक संबंध अवश्य हो सकता है, पर प्यार नहीं। तुमने तो इस देश का इतिहास भी पढ़ा है।..... तुम इस देश की सबसे असंभव बात के पीछे पड़ गए। इस देश में हर एक दूसरी जाति के बीच तुम्हें प्यार और विवाह की बातें मिल सकती हैं; लेकिन एक ही बात है जो इस देश में न कभी हुई है..... और न कभी होगी। गोरे की लड़की के साथ तुम्हारी दोस्ती शायद हो सके। पर वह तुमसे प्यार भी करे, यह न कभी हुआ है और न कभी होगा। रही शादी की बात, तुम्हें तुम्हारा पूरा जीवन दे रही हूँ..... कभी तो आकर बता देना कि किसी गोरे की बेटी किसी दूसरी जाति की बन सकी हो।"[3]** अमित की माता के समान जानीन के घर वाले भी जानीन और अमित के प्रेम-सम्बन्ध को अनुचित ठहराते हुए व द्वीप की सबसे असंभव घटना होने की बात कहते हैं। जानीन को समझाते हुए उसके परिवार वाले कहते हैं- **"जो इस देश में कभी नहीं हुआ, उसे तुम क्यों करना चाहती हो?"[4]** उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि मॉरिशसीय समाज में रंगभेद की समस्या एक ऐसी मजबूत दीवार के रूप में खड़ी है जिसको तोड़ पाना आसन नहीं है। रंगभेद की यह दीवार मनुष्यों की मानवीयता व उसकी संवेदनशीलता को खंडित करती है तथा मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है। गोरे रंग की अहमन्यता के कारण ही अंग्रेज़ अन्य लोगों से स्वयं को श्रेष्ठ व सभ्य मानते रहे हैं और अन्य लोगों को नीचा समझते रहे हैं। इस रंगभेद को बनाए रखने के लिए वे क्रूर-से-क्रूरतम व्यवहार करने से भी नहीं चूकते हैं। साम्राज्यवाद का संपूर्ण इतिहास इस बात की गवाही देता है।

नौकरी व पदोन्नति में जातिवाद, भाई-भतीजावाद का बोलबाला: अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त घूसखोरी, चापलूसी, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाई-

भतीजावाद जैसी प्रवृत्तियों पर भी अपनी सशक्त लेखनी चलायी है। अनत जी के 'तपती दोपहरी', 'तीसरे किनारे पर', 'हड़ताल कल होगी', 'शब्दभंग' व 'मेरा निर्णय' आदि उपन्यासों में नौकरी व पदोन्नति में योग्यता, अनुभव, वरिष्ठता, कार्यकुशलता के स्थान पर जातिवाद, भाई-भतीजावाद, घूसखोरी व चापलूसी की प्रवृत्ति और उसे बढ़ावा देने वालों का पर्दाफाश किया है। उपर्युक्त वर्णित उपन्यासों में अनत जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में वर्तमान समय में शिक्षित, अनुभवी, योग्य व वरिष्ठ व्यक्ति को नौकरी नहीं मिल पाती है और न पदोन्नति हो पाती है। बल्कि सिर्फ उन्हीं लोगों को नौकरी मिल पाती है या पदोन्नति होती है, जो भरपूर मात्रा में नेताओं, मंत्रियों, उच्च पदाधिकारियों व दलालों की जेब गरम करते हैं या जिनका परिचय नेताओं व मंत्रियों से रहता है तथा जो नेताओं व मंत्रियों के सगे-संबंधी हैं या जो पर्याप्त मात्रा में अपने उच्च पदाधिकारी की चापलूसी करते हैं, उन्हें समय-समय पर विविध प्रकार के तोहफे प्रदान करते हैं या संबन्धित उच्च पदाधिकारी के जाति के होते हैं या उनके क्षेत्र विशेष के होते हैं। 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में नौकरी व पदोन्नति के समय चलने वाली घूसखोरी व चापलूसी प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया गया है। उपन्यास के नायक अमित के पिता को नौकरी प्राप्त करने के लिए किन-किन लोगों की खुशामदें करनी पड़ी, कितने लोगों को पार्टियाँ देनी पड़ी, इसका उल्लेख करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"उसके बाप ने लोगों के चक्कर काटे थे। पार्टियाँ दी थीं। खुशामदें की थीं।..... उसके बाप के जीवन की वे ऐसीघड़ियाँ थीं जब उसके सामने दो-चार व्यक्तियों को खुश रखने के सिवाय कोई दूसरा काम ही नहीं था। खरगोश खरीदकर यह कहते हुए भेंट करना कि उसने शिकार किया था। अमित ने बहुत कुछ देखा था और देखकर दुखी था।"[5]** उपन्यास में अमित को नौकरी योग्यता के आधार पर नहीं मिलती है बल्कि इसीलिए मिल पाती है कि बोर्ड के सदस्यों से उसके बाप की जान-पहचान थी।

'तीसरे किनारे' उपन्यास में भी अनत जी ने यह दर्शाया है कि गरीब, शिक्षित, अनुभवी व अच्छे प्रमाण-पत्र रखने के बावजूद भी लोगों को नौकरी नहीं मिल पाती, जबकि नेताओं व मंत्रियों के सगे-संबंधियों को कम पढ़े-लिखे होने, अनुभवहीन होने पर भी नौकरी मिल जाती है। उपन्यास के नायक राकेश के चचेरे भाई को मंत्री का बेटा होने की वजह से अच्छे प्रमाण-पत्र के अभाव व अनुभवहीन होने पर भी नौकरी मिल जाती है, जबकि उससे अधिक योग्यता रखने वालों को बिना किसी सिफारिश के नौकरी नहीं मिल पाती है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"कल वह जिस ओहदे पर काम करने की सोच रहा था वह उससे ऊँचे प्रमाण-पत्र वालों को नसीब न होकर उसे नसीब हो सका था। उसने न सही पर उसके चाचा ने हमेशा से भाग्य पर विश्वास किया है। अपने भाग्य के ही सहारे वह अपने बड़े बेटे को बिना किसी प्रमाण-पत्र के अपने खास मित्र के मंत्रालय में नौकरी दिला पाया था।..... राकेश का चाचा साधारण राजनेता थोड़े ही था।"**[6] 'तपती दोपहरी' उपन्यास में भी शिक्षित, बेरोजगार, पर्याप्त योग्यता रखने वाले व्यक्तियों के स्थान पर अयोग्य व्यक्तियों के चयन प्रक्रिया पर कटाक्ष किया गया है। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"कब तक बिन योग्यता के कुछ लोगों को नौकरियाँ मिलती रहेंगी और कब तक योग्य आदमी बेकार रहेगा।"**[7] इसी तरह 'शब्दभंग' उपन्यास में भी अनत जी ने नौकरी व पदोन्नति में की जाने वाली धाँधली, घूसखोरी, भाई-भतीजावाद को अपनाए जाने का उल्लेख किया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र रोबीन अपने मित्र रहीम से MBC के दफ्तर में सहायक निदेशक के पद पर चयन प्रक्रिया में होने वाली धांधली का वर्णन करते हुए कहता है- **"तुमने सही कहा था रहीम, सहायक निदेशक का चयन तो इंटरव्यू से पहले ही हो गया है।..... इंटरव्यू क्या वह तो चक्रव्यूह था जहाँ..... खैर छोड़ो यार।..... मॉरिशस ब्रोडकास्टिंग कार्पोरेशन के सहायक निदेशक की नियुक्ति हो चुकी है।..... सहायक निदेशक तो शिक्षामंत्री के साढूभाई को ही होना था और वह हो गया।"**[8] 'शब्दभंग' उपन्यास के भी

कई प्रसंगों में नौकरी व पदोन्नति में योग्य व अनुभवी व्यक्ति के बदले नेताओं व मंत्रियों के अयोग्य व अनुभवहीन सगे-संबंधियों के चयन कर लिए जाने का उल्लेख किया गया है। 'मेरा निर्णय' उपन्यास में भी अमिता व उसके भाई के आपसी वार्तालाप के माध्यम से नौकरी व पदोन्नति में योग्यता के स्थान पर भाई-भतीजावाद, जातिवाद को वरीयता देने का उल्लेख किया गया है।

मालिक-मजदूर संघर्ष: अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त मालिक-मजदूर संघर्ष को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनके द्वारा रचित 'तपती दोपहरी', 'हड़ताल कल होगी', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' व 'मेरा निर्णय' आदि उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में व्याप्त मालिक-मजदूर समस्या का यथार्थपरक अंकन किया गया है। गोरे शासकों की फैक्टरियों, कंपनियों आदि में कार्यरत आप्रवासी भारतीय मजदूरों से मालिकों द्वारा अधिक-से अधिक काम करवाने तथा कम-से–कम वेतन देने व छुट्टी के दिनों में भी अतिरिक्त काम करवाना आम बात है। तात्पर्य यह है कि मालिकों द्वारा मजदूरों का कई दृष्टियों से शोषण किया जाता है। जब मजदूर मालिकों की इस ज्यादती से तंग आ जाते हैं तब वे एकजुट होकर अपने साथ होने वाले अन्याय को रोकने का प्रयास करते हैं। मजदूरों द्वारा संगठित होकर मालिकों के प्रति जब विद्रोह किया जाता है तब मालिकों द्वारा उनके विरोध को अनेक प्रकार के प्रलोभन, धमकी आदि देकर दबा दिया जाता है। ताकि वे पुन: उनके खिलाफ आवाज न बुलंद करें। 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में मजदूरों द्वारा किए गए हड़ताल एवं उस हड़ताल से तिलमिलाए हुए गोरे मालिकों, पूँजीपतियों की छवि को निम्नवत् प्रस्तुत किया गया है- **"चार दिन की हड़ताल के बाद वहाँ का मालिक मजदूरों के सामने आया था। गोरे मालिक का वह तमतमाया हुआ चेहरा एक बार फिर पूरे माहौल को**

लाल रंग का कर गया-कोई पच्चीस मजदूर थे जो उस रंग के कारण और भी झांवर पड़ गए थे। सभी के पार्श्व में ईख का कारख़ाना। कारखाने की चिमनी थी। ..... चिमनी का धुआँ था।"[9] अपने उपन्यासों में अनत जी ने न सिर्फ मिल-मालिक व मजदूरों की समस्याओं का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ ही पूँजीपतियों, उद्योगपतियों, मिल-मालिकों की उस कूटनीति का भी पर्दाफाश किया है जिसके तहत वे अपने अधीन कार्यरत कर्मचारियों के श्रम का शोषण करते हैं तथा मजदूरों के संगठन को तोड़ने का भरसक प्रयास करते हैं। इसके लिए वे कभी मजदूर नेता को प्रलोभन देकर खरीदने की कोशिश करते हैं तो कभी जातिवाद, संप्रदाय, धर्म, क्षेत्र आदि के आधार पर उन्हें विभाजित करने की साजिश रचते हैं। कभी-कभी तो मजदूरों के विद्रोह को शांत करने के लिए उन्हें नौकरी से निकाल देने की धमकी देते हैं, तो कभी उनमें भय उत्पन्न करने के लिए उनके घरों में आग लगवा देते हैं। कभी अगवा कर लेने व हत्या कर देने की भी धमकी दी जाती है। कभी-कभी तो मालिकों द्वारा मजदूरों के नेता को रास्ते से हटाने की भी साजिश रची जाती है। 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में अनत जी ने इस स्थिति को अमित नामक पात्र, जो कि मजदूर यूनियन का नेता है, के माध्यम से दर्शाया है। अमित अपनी नौकरी से त्यागपत्र देकर मजदूर यूनियन का नेता बन जाता है। मजदूरों के साथ किए जाने वाले अन्याय के खिलाफ वह मजदूरों को संगठित करता है। अमित के नेतृत्व में व उसके सहयोग से मजदूर अपने हक के प्रति जागरूक होकर मिल-मालिकों के खिलाफ हड़ताल करने की योजना बनाते हैं। मजदूरों की एकजुटता उनमें (गोरे मालिकों) भय का संचार करती है। इसीलिए वे इस विद्रोह को शांत करने हेतु मजदूरों के नेता अमित को ही रास्ते से हटाने का प्रयास करते हैं। वे अमित की कार दुर्घटना करवा देते हैं। उसे धमकियाँ दी जाती हैं तथा कानून का सहारा लेकर उसके हड़ताल को अवैध घोषित कराकर अमित को गिरफ्तार करने की योजना बनाई जाती है। अमित का मित्र सत्येन अमित को हड़ताल न करने की सलाह देते हुए कहता है- **"तुम अच्छी तरह समझ लो कि तुम्हारी हड़ताल गैर-कानूनी है। मीटिंग में**

पुलिस कमिश्नर की भी उपस्थिति थी। अगर तुम हड़ताल का ख्याल नहीं छोड़ते हो तो गिरफ्तार कर लिए जाओगे।..... मैं तुम्हें आगाह कर रहा हूँ।"[10] इसी तरह 'तपती दोपहरी' उपन्यास में बस चालकों द्वारा जब वेतनवृद्धि हेतु हड़ताल करने की योजना बनाई जाती है तब बस के मालिकों द्वारा हड़ताल करने वाले नेता को पदोन्नति का प्रलोभन देकर हड़ताल को रोक दिया जाता है। मालिकों द्वारा हड़ताल का नेतृत्व करने वालों की खरीद-फरोख्त का उल्लेख करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"गैरेज के लोगों से राजेन सुनता रहा कि सरकारी तथा गैर-सरकारी सभी विभागों की तनख्वाह की वृद्धि हो चुकी थी। बस चालकों और गैरेज के अन्य मैकेनिक से लेकर चपरासियों तक ने दो बार हड़ताल करने की कोशिश की और असफल रहे। यह भी कहते सुना उसने कि जिस आदमी ने लोगों की अगवानी की थी उसे बस-मालिकों ने बस-चालक से निरीक्षक बना दिया था फिर तो हड़ताल करने का उसका कोई कारण ही बाकी नहीं रह गया था।"**[11]

'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में भी अनत जी 'जोन फ्रांस' फैक्टरी के मालिक तथा उसमें कार्यरत महिला कर्मचारियों के मालिकों द्वारा विविधोंमुखी शोषण को अभिव्यक्ति प्रदान की है। उपन्यास में नेहा जोन फ्रांस फैक्टरी में कार्यरत महिला कामगारों के प्रति होने वाले अन्याय के प्रति आंदोलन करती है। मालिकों द्वारा उस आंदोलन को शांत करने हेतु नेहा को तरह-तरह के प्रलोभन व धमकी दी जाती है तथा आंदोलन के दिन उस पर तस्करी का झूठा आरोप लगाकर हिरासत में ले लिया जाता है, ताकि उसके नेतृत्व के अभाव में आंदोलन को दबाया जा सके। नेहा का मँगेतर उमेश नेहा को आंदोलन से दूर रहने की सलाह देता है तथा यह भी बताता है कि उससे पूर्व भी जिन लोगों ने सही अर्थों में मजदूरों का नेतृत्व किया था उन्हें सरकार की उपेक्षा एवं कोपभाजन का शिकार होना पड़ा। इस संदर्भ में उमेश नेहा से कहता है- **"नेहा मैं तुम्हें कुछ ऐसे नाम बताना चाह रहा हूँ, जो आज से 40 साल पहले से लेकर अभी दस साल पहले तक यूनियन के नेता थे। पहले**

तुम्हें उन तीन व्यक्तियों के नाम बताता हूँ, जिन्हें आज से कई वर्ष पहले जनता हर मंच पर फूलों के हार पहनाती थी। जगेसर दयाल का नाम तुमने कभी सुना होगा, दूसरा है एमिल जुलिए और तीसरा करमचंद है।..... आज तीनों में से एक दालपूरियाँ बेंचकर अपने परिवार को पाल रहा है। दूसरा काल-बास अनाथालय में पल रहा है और तीसरा अपनी उस बेटी के सहारे जी रहा है, जो सैलानियों के बीच कमाती है। जानती हो, इन तीनों की यह स्थिति क्यों हुई? क्योंकि ये तीनों सही अर्थों में लीडर थे, सही अर्थों में मजदूर के नेता। इन्होंने न तो कभी कोई समझौता किया और न कभी कोई रिश्वत ली।"[12] उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में मालिकों द्वारा आप्रवासी भारतीयों तथा भारतवंशी मॉरिशसीय मजदूरों के अधिकारों का उनके श्रम तथा वेतन का शोषण किया जाता था।

मजदूरों व नवयुवकों का विद्रोही स्वर: अनत जी के उपन्यासों में न सिर्फ स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में पूँजीपतियों के शोषणतंत्र में पिसते मजदूर, श्रमिकों की शोषित, पीड़ित दशा का चित्रण हुआ है बल्कि इसके साथ ही अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूक श्रमिकों के शोषण विरोधी स्वर को भी अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। मजदूरों की जागरूक चेतना एवं उनके विद्रोही स्वर तथा युवा आक्रोश की अभिव्यक्ति अनत जी के कई उपन्यासों में हुई है, जिनमें प्रमुख हैं- 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'हड़ताल कल होगी', 'तपती दोपहरी', 'पर पगडंडी नहीं मरती', 'चुन-चुन चुनाव', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' व 'लहरों की बेटी' आदि। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में फैक्टरी आदि में कामगारों, विशेषकर महिला कामगारों के साथ किए जाने वाले अन्याय एवं शोषण का वर्णन 'जोन फ्रांस' नामक फैक्टरी की महिला मजदूरों के

माध्यम से किया गया है। फैक्टरी की महिला कामगारों द्वारा अपने श्रम का पूरा पारिश्रमिक दिए जाने की माँग करना तथा अपने साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ एकजुट होकर आवाज बुलंद करना शोषण विरोधी स्वर का ही परिचायक है। इन महिला कर्मचारियों द्वारा फैक्टरी के मालिक द्वारा शर्तें पूरी होते न देखकर मालिकों के विरुद्ध आंदोलन करने की योजना भी बनाई जाती है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"इधर दो-तीन दिनों से फैक्टरी की लड़कियों में कानाफूसी के साथ इकट्ठे होते नेहा देखती जा रही थी। वास्तव में कारखाने में फिर से शुरू हो आई सख्ती के कारण लड़कियों के बीच बन रही योजना का द्योतक थी वह कानाफूसी और गुटबंदी।..... फैक्टरी की लड़कियाँ दो दलों में बँटी हुई थीं। एक दल शुरू हुई सख्ती और ओवरटाइम के लिए कम पैसे दिए जाने की शिकायत लिए ग्रांपात्रो से मिलनाचाहता था और दूसरा दल यूनियन के आदेश पर हड़ताल शुरू करना चाह रहा था।"[13]** महिला कर्मचारियों द्वारा किए गए आंदोलन की वजह से ही फैक्टरी के मालिकों को अपने नियमों में बदलाव करना पड़ता है तथा उनकी शर्तें भी माननी पड़ी। महिला कामगारों का आंदोलन इतना सशक्त था कि सरकार को भी उनके आगे झुकना पड़ा। जिसके परिणामस्वरूप 'जोन फ्रांस' कंपनी के राष्ट्रीयकरण करने की योजना बनाई जाती है और मंत्रिमंडल में फैक्टरी के राष्ट्रीयकरण संबंधी प्रस्ताव को मंजूरी मिल जाती है। श्रमिकों, मजदूरों का अपने हक के प्रति आवाज उठाना और उसका सार्थक परिणाम प्राप्त करना मजदूरों की जागरूक चेतना का ही प्रमाण है। इसी तरह 'तपती दोपहरी' उपन्यास में भी राजेन के माध्यम से पुरानी स्थितियों के प्रति नवयुवकों के विद्रोही स्वर को वाणी प्रदान की गयी है। राजेन के विद्रोही चरित्र के बारे में लेखक की टिप्पणी है- **"वह शुरू से अपने-आप से झगड़ने की कोशिश करता आ रहा है।..... उसने सुन रखा था कि द्वीप-भर के सभी बस-कर्मचारी अपने अधिकार से असंतुष्ट हो हड़ताल करने वाले थे। कर्मचारियों की इस तरह की भावनाओं से उसे खुशी मिलती। वह सदा यही चाहता था कि चारों ओर, हर क्षेत्र में विद्रोह हो। आंदोलन शुरू हो। पुराने क़ानूनों को तोड़कर नए कानून बनाए जाएँ जो नए जीवन से संबन्धित हों।"[14]** अनत जी के 'हड़ताल

कल होगी' उपन्यास में भी चीनी उद्योग के मालिकों द्वारा मजदूरों के विविधोंमुखी शोषणतंत्र को चित्रित किया गया है। साथ ही मजदूरों द्वारा अपने हक के प्रति आवाज उठाने एवं संगठित होकर मालिकों के विरुद्ध आंदोलन करने की योजना को भी दर्शाया गया है। उपन्यास का नायक अमित मजदूरों को संगठित करते हुए जो वक्तव्य देता है उससे नवयुवकों की जागरूक चेतना का पता चलता है। वह मजदूरों से हड़ताल को जारी रखने की सलाह देते हुए कहता है- **"अगर यह हड़ताल सफल नहीं हुई तो कल उनकी औलादों का हक मारा जाएगा। यह लड़ाई मजदूरों के बच्चों की लड़ाई है। यह अपनी उस शक्ति को बताने की लड़ाई है जिससे हम अपने संतानों के अधिकारों की रक्षा कर सकें। इस देश के डेढ़ सौ साल के इतिहास में यह रक्षा बहुत कम हुई है।..... इस देश में अन्य विभागों में लोगों ने डटकर अपना हक अपनाया है। खेतों के मजदूर आज भी वहीं हैं, जहाँ से कल वे चले थे। गन्ना इस देश का धन है और इसी गन्ने को पैदा करने वाला आज भी हक का मुहताज है; उन्हें आज भी तीसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है। उनके साथ इस तरह पेश आया जाता है जैसे कि वे आदमी न होकर कुछ और हों..... यहाँ मशीन की देखभाल होती है। बैलों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है, पर मजदूर की कोई परवाह नहीं करता। यह हड़ताल सिर्फ दो पैसे केलिए नहीं है बल्कि यह एक इंसानियत के तकाजे की लड़ाई है। सभी कुछ आप ही लोगों पर निर्भर है। यह हड़ताल मजदूरों की प्रतिष्ठा की है।"[15]** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में किसानों, मजदूरों, श्रमिकों का हक मारा जाता है। किसानों, मजदूरों तथा श्रमिकों द्वारा अपने हक के प्रति जागरूक होने के कारण ही वे मालिकों के विरुद्ध आवाज बुलंद करते हैं, हड़ताल व आंदोलन करते हैं और उन्हें अपनी संगठन शक्ति का परिचय देते हैं।

कानून व्यवस्था व पूँजीपतियों की मिली भगत: अनत जी अपने उपन्यासों के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त कानून-व्यवस्था की गैर-ज़िम्मेदारी तथा पूँजीपतियों के साथ उसकी मिलीभगत की पोल खोली है। अनत जी द्वारा रचित 'मेरा निर्णय', 'हड़ताल कल होगी', 'शब्दभंग', 'फैसला आपका', 'आसमान अपना आँगन' व 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' आदि उपन्यासों में कानून-व्यवस्था की लापरवाही, आम जनता के प्रति उसकी उपेक्षा पूर्ण दृष्टि तथा पदोन्नति, अतिरिक्त आमदनी पाने व धाक जमाने के उद्देश्य से नेताओं, मंत्रियों व उद्योगपतियों तथा पूँजीपतियों से साठ-गाँठ का उल्लेख किया गया है। अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि कानून-व्यवस्था चाहे भारत की हो या मॉरिशस की या इंग्लैंड की हो या किसी अन्य देश की। वह गरीब पीड़ितों का साथ न देकर, उनकी शिकायतों को अनसुनी करके तथा उनके साथ घटित वारदात की सही तरीके से जाँच नहीं करती अपितु शोषकों से साठ-गाँठ करके, उनसे तमाम पैसा लेकर शोषितों को ही दोषी करार देती है। कानून-व्यवस्था की सत्ता-पक्ष तथा पूँजीपतियों से साठ-गाँठ की झलक सर्वत्र देखी जा सकती है। साथ ही आमजनता के प्रति उसके गैर-जिम्मेदार होने की भी झलक सर्वत्र मौजूद है। कानून-व्यवस्था का नेताओं, मंत्रियों, उद्योगपतियों के हाथों की कठपुतली बने रहने से जहाँ एक ओर पीड़ित व्यक्ति को न्याय नहीं मिल पाता, वहीं दूसरी ओर घटना को अंजाम देने वाला असली गुनाहगार व दोषी, हत्यारे व चोर सरेआम जनता के मध्य बेखौफ घूमते रहते हैं। जिसकी वजह से गुनाहगारों का मनोबल और बढ़ जाता है, क्योंकि उनको मालूम है कि पैसा देकर कानून को खरीदा जा सकता है व उन्हें अपने पक्ष में किया जा सकता है।

'मेरा निर्णय' उपन्यास में अनत जी ने मॉरिशस व इंग्लैंड दोनों देशों की कानून-व्यवस्था की गैर-ज़िम्मेदारी का चित्रण अमिता व मेट्रन सोफिया की बेटी मार्सेलिना के बलात्कार के संदर्भ में किया है। लंदन की कानून व्यवस्था की गैर-ज़िम्मेदारी का चित्रण करते हुए मेट्रन सोफिया अमिता से अपनी पुत्री मार्सेलिना के साथ हुए बलात्कार के बाद दोषियों को न पकड़ पाने तथा पति के हत्यारे को सजा न दिला पाने के संबंध में कहती है- **"इसी लंदन की गली में स्किन हेड गुंडों ने उसके साथ बलात्कार करके उसकी हत्या कर दी। वह कालेज से घर लौट रही थी।..... मेरी बेटी की मृत्यु के बाद मेरे पति ने यह ठान लिया था वह अपनी बेटी के हत्यारों का पता लगाकर रहेगा। जब पुलिस स्टेशन और स्काटलैंड यार्ड के दरवाजे खटखटाते थक गया तो एक दूसरा प्रण किया था-खुद उन हत्यारों को ढूँढ निकालने का।..... उन गुंडों ने मेरे पति की भी जान ले ली।"**[16]इसी तरह अमिता के साथ हुए बलात्कार के बाद उसके बलात्कारी को सजा नहीं मिल पाती है। अमिता अपने ही पड़ोसी पंडित जीवनलाल के पुत्र सत्यानंद के हवश का शिकार होती है। जब सत्यानंद के घर वालों को उसके कृत्यों का पता चलता है तब वे सत्यानन्द को सजा न दिलाकर अमिता को ही चुप रह जाने की सलाह देते हैं ताकि उनके परिवार पर किसी प्रकार का लांछन न लगे। वे अमिता को इस घटना को भूलने के उद्देश्य से उसे इंग्लैंड जाने का खर्च भी वहन करते हैं। सत्यानंद गुनाहगार होकर भी स्वच्छंद रूप से रहता है और वह अन्य लड़कियों को भी अपने हवश का शिकार बनाता है। उसके बावजूद भी वह कानून की नजरों से बचा रहता है। जिसके परिणामस्वरूप न तो पीड़ित व्यक्ति को न्याय मिल पाता है और न ही असली गुनाहगार को सजा मिल पाती है। क्योंकि उसके घर वाले पुलिस की मुट्ठी गरम करके दोषी को बेगुनाह साबित करा देते हैं। सत्यानंद के साथ भी ऐसा ही होता है।

'शब्दभंग' उपन्यास में भी अनत जी ने पुलिस अधिकारियों, पूँजीपतियों, उद्योगपतियों, नेताओं व मंत्रियों के आपसी मिलीभगत व साठ-गाँठ का यथार्थपरक अंकन

किया है। कानून-व्यवस्था से मिलीभगत करके उद्योगपति, नेता व मंत्री देश में नशाखोरी, वेश्यावृत्ति आदि को बढ़ावा देते हैं तथा नशीले पदार्थों का गैर-कानूनी धन्धा कानून के संरक्षण में करते हैं। उस अवैध धंधे में पुलिस कर्मचारियों का भी हिस्सा रहता है। इसके साथ ही मंत्रियों व नेताओं द्वारा पुलिस अधिकारियों को अतिरिक्त लाभ व पदोन्नति का भी प्रलोभन देकर उन्हें अपने खिलाफ बोलने से रोका जाता है। उपन्यास में मंसूर नामक एक मंत्री नशीले पदार्थों का अवैध धन्धा करता है जिसे आज तक इस अवैध कृत्य के लिए किसी प्रकार की सजा नहीं मिल पाती है। क्योंकि उसे कानूनी संरक्षण प्राप्त है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"अपने सामने के दोनों अखबारों के पहले पृष्ठों पर रोबीन ने जो सबसे बड़ी सुर्खियां पढ़ीं, वे दोनों नशीले पदार्थ और राजनेताओं से संबद्ध थीं।..... दोनों अखबारों में से किसी ने भी राजनेता के नाम का उल्लेख नहीं किया था पर जिन दो-तीन मंत्रियों की ओर उनका संकेत था उन्हें अखबार के हजारों पाठकों की तरह रोबीन भी जानता था।..... उसने अपने आप से कहा भी था कि अगर वह वही मंसूर हुआ तब तो उससे उसकावास्ता रह चुका था। वह आदमी नशीले पदार्थों का सबसे बड़ा आका भी था और सबसे पुराना भी, जो कि हमेशा से राजनीतिकों के संरक्षण में मौत के अपने उस धन्धे को चलाता आ रहा था।"**[17] उपन्यास में जब रोबीन, जो पेशे से पत्रकार है, तथा प्रमोद महेश्वर मंसूर के काले कारनामों को अदालत में पेश करने की योजना बनाते हैं तब मंसूर पुलिस अधिकारी, उद्योगपति व राजनेताओं के आपसी सहयोग से बच जाता है। इसके लिए वह साम,दाम, दंड,भेद सभी नीतियों का सहारा लेता है। मंसूर पुलिस की मदद से अपने खिलाफ के सारे सबूत मिटवा देता है और रोबीन को भी पदोन्नति का प्रलोभन देता है, जब रोबीन उसकी बातों में नहीं आता तब वे उस पर हमला करवाने से भी नहीं चूकते हैं। इसके साथ ही वे अदालत के जज और सरकारी गवाह को भी खरीद लेते हैं ताकि वे उनके काले करतूतों की पोल न खोल सकें। पुलिस अधिकारी साम्यूएल नशीले पदार्थों के धन्धे में संलिप्त मंसूर व सात्रिमूतू को सजा न दिलाकर उन्हें बचाने के लिए उनके खिलाफ

के सारे सबूत अपने ही हाथों मिटा देता है। साम्यूएल मंसूर व सात्रिमूतू से कहता है- **"आप उन पाँचों तस्वीर में जरूर हैं इसीलिए तो हमने उसे उस फाइल से उड़वाया पर जब महेश्वर को खत्म करने की बात हुई तो हम लोगों ने यही तय किया कि उन तस्वीरों का जनता के सामने आना जरूरी है। ऐसा करने से पहले हमने बड़ी खूबी के साथ रेउनीयन के अपने एक जाने –पहचाने फोटोग्राफर से उन तस्वीरों की अपनी हाजिरी में ऐसी प्रिंट बनवायी जिसमें आपको और मंसूर भाई को अलग कर दिया गया। वह भी इतनी खूबी के साथ कि किसी भी माहिर से माहिर को उसका पता ही न चले।"[18]** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में किस प्रकार से अधिक पैसे कमाने के चक्कर में कानूनी संरक्षण तले बड़े-बड़े नेता व मंत्री गैर-कानूनी धंधों को बढ़ावा देकर देश को गर्त की ओर ले जा रहे हैं।

असफल प्रेम का चित्रण: अनत जी ने अपने कई उपन्यासों में युवाओं के असफल-प्रेम का चित्रण किया है। साथ ही उसकी असफलता के विभिन्न कारणों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है। यद्यपि मॉरिशस की अधिकांश जनता आप्रवासी भारतीयों की है, जो प्रवासन के आरंभ में अपनी जाति, हैसियत, धर्म व संप्रदाय आदि को भूलकर जहाज़ी भाई, गिरमिटिया मजदूर व भारतीय कुली के रूप में जाने जाते थे। उन्हीं आप्रवासी भारतीयों के मध्य अब जाति, धर्म, संप्रदाय, शिक्षा, हैसियत आदि के आधार पर अलगाव नजर आता है। आज वे इसी के आधार पर एक दूसरे को नीचा दिखाने का भी काम करते हैं। इन्हीं तथ्यों के आधार पर वे अपने बच्चों का रिश्ता भी तय करना उचित समझते हैं। जिसके परिणामस्वरूप स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में असफल-प्रेम की समस्या भी दृष्टिगोचर होती है। जिसका यथार्थपरक चित्रण अनत जी के साहित्य में हुआ है। अनत जी द्वारा रचित 'आंदोलन', 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'तपती दोपहरी', 'पर पगडंडी नहीं मरती', 'लहरों की बेटी' व 'अपना मन उपवन' आदि उपन्यासों में असफल-प्रेम एवं उसके

विभिन्न कारणों- रंगगत असमानता, जातिगत असमानता, आर्थिक असमानता, शैक्षिक असमानता, सांप्रदायिक असमानता व पारिवारिक दबाव इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है। अनत जी ने 'तीसरे किनारे' उपन्यास में जातिगत भिन्नता के कारण राकेश की मौसी के असफल-प्रेम का चित्रण किया है। क्योंकि राकेश की मौसी जिस व्यक्ति के प्रति आकर्षित होती है और जिससे शादी करना चाहती है वह दूसरी जाति से संबन्धित तथा कम हैसियत वाला था। पारिवारिक दबाव के चलते वह युवक ज्ञानार्जन का बहाना बनाकर द्वीप छोड़कर चला जाता है। जिसके परिणामस्वरूप राकेश की मौसी का प्रेम असफल रह जाता है- **"राकेश की यह मौसी कालेज के दिनों में जिस लड़के को प्यार करने लगी थी वह गैर-जाति का था। दोनों में से किसी एक ने भी जाति-पाँति तथा हैसियत आदि के भाव को कोई महत्व नहीं दिया था फिर भी दोनों के बीच का प्यार स्थायी न हो सका। परिवार के दबाव में आकर उस लड़के ने अपने वचन को आत्महत्या कर लेने दिया और एक दिन चुपके से द्वीप छोड़कर ज्ञानार्जन के लिए फ्रांस चला गया।"**[19]

'तपती दोपहरी' उपन्यास में भी गोविंद और साधना, राजेन और रजनी, दयानन्द और रजनी के प्रेम-सम्बन्धों में जातिगत भिन्नता व आर्थिक असमानता तथा पारिवारिक दबाव के चलते उनका प्रेम विवाह में परिणत नहीं हो पाता है। राजेन का मित्र गोविंद राजेन की बहन साधना के प्रति आकर्षण का भाव रखता है और साधना भी उसके प्रति आकर्षित रहती है। किन्तु दोनों की शादी इसलिए नहीं हो पाती है क्योंकि साधना अशिक्षित व गरीब घराने से संबन्धित है, जबकि गोविंद अमीर है व पढ़ा-लिखा भी है। जब राजेन को गोविंद और साधना के प्रेम-सम्बन्धों की जानकारी होती है तब वह गोविंद को इस बात से आगाह करता है कि उसके और साधना के बीच आर्थिक व शैक्षिक असमानता है। वह गोविंद को समझाते हुए कहता है- **"मैं सोचता हूँ कि साधना को प्यार करने से पहले तुमने सभी परिस्थितियों पर अच्छी तरह सोच लिया होगा। तुम्हारे और साधना के**

बीच जो भारी अंतर है इसका भी तुम्हें ख्याल रहा होगा। तुम पढ़े-लिखे हो जबकि मेरी बहन की पढ़ाई न के बराबर है, तुम धनी हो और वह गरीब है।"[20] इसी तरह रजनी और राजेन के प्रेम-सम्बन्धों में जातिगत भिन्नता आड़े आती है। क्योंकि राजेन गरीब परिवार से तथा महतो जाति का है, और रजनी समृद्ध घराने एवं क्षत्रिय जाति से है। रजनी जातिगत अंतर व हैसियत को महत्व नहीं देती है। वह राजेन से शादी करना चाहती है किन्तु राजेन दोनों के मध्य को अंतर को जानता है इसलिए वह रजनी को समझाते हुए कहता है- **"तुम भी तो धनी हो रजनी। स्कूल इंस्पेक्टर की बेटी हो।..... तुम्हारे और हमारे बीच तो एक और रुकावट है? हम लोग तो महतो हैं जबकि तुम लोग क्षत्रिय हो?..... अभी तुम बच्ची हो। तुम क्या जानों जाति-भेद किसे कहते हैं।"[21]** इसी जातिगत भेद के कारण रजनी और दयानन्द का प्रेम असफल रह जाता है। क्योंकि दयानन्द रजनी के पिता की नजर में छोटी जाति से संबन्धित युवक था, जबकि वे क्षत्रिय जाति के थे। जब उन्हें दयानन्द व रजनी के प्रेम-सम्बन्धों की जानकारी होती है तब वे दयानन्द को भला-बुरा कहकर उसको अपमानित करते हैं। रजनी के पिता द्वारा किए गए अपमान का जिक्र करते हुए दयानंद रजनी के पिता से कहता है- **"अपने घर पर तुमने मेरा अपमान सिर्फ इसलिए किया क्योंकि मैं छोटी जाति का लड़का हूँ और तुम्हारी बेटी बड़ी जाति की लड़की है। मैं बेवकूफ था। यह समझे बैठा था कि मेरी जाति वाली सभी लड़कियाँ मर गयी हैं।"[22]**

'पर पगडंडी नहीं मरती' उपन्यास में भी अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त जातिभेद, आर्थिक असमानता, पारिवारिक दबाव के चलते असफल-प्रेम का चित्रण एवं उसकी परिणति का चित्रण किया है। इस उपन्यास में नारायण पांडे के पुत्र धीरजवा व सीमा नामक युवती के असफल-प्रेम का चित्रण किया गया है। धीरजवा पड़ोस के गाँव की सीमा नामक युवती के प्रति आकर्षण रखता है तथा वह उससे शादी करना चाहता है। वह सीमा को अपने घर में लाता है किन्तु धीरजवा के माता-पिता उसके रिश्ते को मंजूरी नहीं

देते हैं। क्योंकि सीमा उनकी नजरों में नीची जाति की है। इसीलिए वे उनके रिश्ते को स्वीकार नहीं करते हैं और उन्हें भला-बुरा कहकर घर से निकल जाने की धमकी भी देते हैं। यद्यपि धीरजवा उनका इकलौता पुत्र है बावजूद इसके वे उसकी खुशियों को नजरंदाज करके अपनी झूठी मान-मर्यादा व सामाजिक प्रतिष्ठा की दुहाई देते हैं। नारायण पांडे विक्रम से कहता है- **"तुमने सुनी न धीरजवा की करतूत।..... नाक कटवा दी मेरी।..... जात नियर जात नाहीं। इस सूअर को अपनी जात वाली नहीं मिली?"[23]** धीरजवा की माँ भी दोनों के रिश्तों को मंजूरी नहीं देती है। वह धीरजवा से सीमा को घर से निकाल देने के लिए कहती है और धीरजवा के ऐसा न करने पर स्वयं के घर छोड़ देने का प्रण करती है। वह कहती है- **"और एक-दू दिन में जे ई धीरजवा है, पतुरिया के हियाँ से नै निकाल ले जाये त हम ही लोग घर छोड़ देब स।"** नारायण पांडे भी उसका समर्थन करते हुए कहते हैं- **"ई गाँव में हम अपन पगड़ी न नोचवाब।"[24]** धीरजवा के माँ-बाप के कटाक्ष से तंग आकर सीमा कुआँ में कूदकर अपनी जान दे देती है। धीरजवा भी माँ-बाप का परित्याग कर सदैव के लिए गाँव से चला जाता है और शहर में जाकर धर्म-परिवर्तन कर किसी मुस्लिम लड़की से निकाह कर लेता है।

'लहरों की बेटी' उपन्यास में भी आर्थिक असमानता और जातिगत भिन्नता के चलते विदुला और पंकज का प्रेम असफल रह जाता है। क्योंकि विदुला अनाथ, गरीब व नीची समझी जाने वाली मछुवा जाति की है और पंकज पढ़ा-लिखा, पेशे से अध्यापक तथा अमीर बाप का बेटा है। विदुला द्वारा पंकज की बहन की जान बचाने की वजह से उसके परिवार वाले विदुला के आभारी हैं। वे उसके साहस की प्रशंसा भी करते हैं किन्तु आर्थिक असमानता व जातिगत भिन्नता के कारण अपनी बहू बनाने से इन्कार कर देते हैं और अपने पुत्र पंकज की शादी उसकी इच्छा के विरुद्ध किसी सम्पन्न घराने की लड़की से तय कर देते हैं। 'अपना मन उपवन' उपन्यास में भी आर्थिक असमानता और जातिगत भिन्नता व

पारिवारिक दबाव की वजह से अरविंद और उर्मिला का प्रेम असफल रह जाता है। उर्मिला और अरविंद दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। किन्तु उन दोनों की पारिवारिक स्थिति और जाति में भिन्नता है जिसकी वजह से उनके प्रेम को लेकर उर्मिला की सहेली भारती आशंका व्यक्त करती है- **"मैं दोनों के बीच की अमीरी और गरीबी की दरार से डरती हूँ। अरविंद जितना धनवान है, उर्मिला उतनी ही गरीब।..... अरविंद तो उर्मिला के उस अभावग्रस्त जीवन से अवगत है, पर क्या उसके माँ-बाप उसके प्यार को समझकर इस अंतर को नजरंदाज कर पाएंगे?"**[25] अरविंद के माँ-बाप द्वारा उन दोनों को एक साजिश के तहत अलग कर दिया जाता है। उर्मिला को उच्चशिक्षा हेतु पेरिस भेज दिया जाता है और अरविंद की शादी निशा से तय कर दी जाती है। अरविंद के परिवार द्वारा अपनी उपेक्षा का वर्णन करते हुए उर्मिला कहती है- **"मेरे पेरिस प्रवास के दूसरे साल मेरी समझ में न आने वाली कुछ बातें होनी शुरू हुई थीं। कभी-कभार अरविंद का फोन आ जाता था, इस हिदायत के साथ कि मैं उसके घर फोन न करूँ।..... मुझे क्या मालूम था कि जाति के बहाने और पैसे के कारण मुझे दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकने की साजिश की शुरुआत थी वह।"**[26] उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में जातिगत भिन्नता, आर्थिक असमानता व पारिवारिक दबाव के चलते प्रेम-सम्बन्धों में दरार आ जाती है।

अनत जी ने असफल-प्रेम के साथ-साथ प्रेम के त्रिकोणात्मक स्वरूप पर भी प्रकाश डाला है। 'एक बीघा प्यार', 'कुहासे का दायरा' व 'तपती दोपहरी' उपन्यासों में इसकी सफल अभिव्यक्ति हुई है। इसके अतिरिक्त 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में हिन्दू युवक रवि व मुस्लिम युवती सलमा, 'आंदोलन' उपन्यास में हिन्दू युवक अमित व गौरवर्ण जानीन, 'घर लौट चलो वैशाली' में वैशाली और अख्तर, 'मेरा निर्णय' में अमिता व फ्रेडरिक,

'चलती रहो अनुपमा' में सुमन व जोजियान और अभिजीत व सफीना, तथा 'अपना मन उपवन' में क्रियोल लड़की रोजालीन व भारतीय युवक के माध्यम से अंतर्धर्मीय प्रेम की असफलता का चित्रण किया गया है। 'घर लौट चलो वैशाली' उपन्यास में अंतर्धर्मीय प्रेम-विवाह एवं उससे उत्पन्न पारिवारिक कलह व दाम्पत्य-जीवन के विखराव का यथार्थपरक अंकन किया गया है।

कृषक जीवन का चित्रण: अनत जी ने अपने कई उपन्यासों में किसान जीवन की समस्याओं का भी चित्रण किया है। किसान जीवन की त्रासदी एवं किसानों की आशाओं-आकाँक्षाओं उनके जीवन संघर्ष एवं कृषि व्यवसाय के प्रति उनकी मोहग्रस्तता की सफल अभिव्यक्ति अनत जी के उपन्यासों में हुई है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यास- 'और नदी बहती रही', 'एक बीघा प्यार', 'जम गया सूरज', 'तपती दोपहरी', 'अपना मन उपवन' व 'लहरों की बेटी' आदि में आप्रवासी भारतीय मजदूरों की अपने परंपरागत व्यवसाय कृषि के प्रति मोह को दर्शाया गया है। साथ ही नवयुवकों द्वारा कृषकों के प्रति किए जाने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करने एवं मजदूरों के हितार्थ मजदूर संघ की स्थापना के लिए किए गए प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है। 'और नदी बहती' रही उपन्यास में 'मधुकर' नामक चरित्र के माध्यम से उन बेबस किसान व मजदूरों की स्थिति का अंकन किया गया है जिनकी आजीविका सिर्फ और सिर्फ गन्ने की खेती पर निर्भर है और जो गोरे मालिकों के शोषणतंत्र में पिस रहे हैं। 'एक बीघा प्यार' उपन्यास में भी स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के किसानों के कठिन परिश्रम, उनकी आर्थिक विपन्नता एवं अभावग्रस्त जीवन को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है। 'जम गया सूरज' उपन्यास में लालमन, धरमेन, धनुवा भगत, जगदीश, देवन्ती व सरस आदि पात्रों के माध्यम से कृषि व्यवसाय के प्रति

मोह रखने वालों एवं उसे महत्व प्रदान करने वालों का चित्रण किया गया है। उपन्यास का नायक 'लालमन' अन्य व्यवसायों की तुलना में कृषि कार्य करना बेहतर समझता है। क्योंकि उसकी नजरों में यह पेशा उसके पूर्वजों का पेशा था जिसके बल पर उन्होंने इस द्वीप में अपनी पहचान बनाई। लालमन का मित्र धरमेन सम्पन्न घराने का होकर भी कृषि कार्य को महत्व देता है तथा अपनी पढ़ाई छोड़कर अपने परिवार के खिलाफ जाकर वह किसानों की समस्याओं को सुलझाने व मजदूर संघ के निर्माण में सहयोग करता है। 'तपती दोपहरी' उपन्यास में भी अनत जी लोचन के माध्यम से कृषि के प्रति अत्यधिक मोह रखने वाले उन नवयुवकों का चित्रण किया है, जो अपने पूर्वजों का व्यवसाय अपनाकर जीवन यापन करते हैं तथा जो कृषि कार्य में संलग्न रहकर खुशी अनुभव करते हैं। लोचन का मित्र राजेन भी किसानों को उनके परिश्रम का उचित पारिश्रमिक दिलाने हेतु संघर्षरत रहता है। इसके लिए उसे सरकारी नौकरी से निकाल दिया जाता है। वह नौकरी छूट जाने के बाद कृषि कार्य में लग जाता है और लोचन के साहचर्य से मजदूर संघ बनाने की योजना बनाता है। कृषि के प्रति राजेन के लगाव एवं कृषि के प्रति उसकी चिंता को निम्न शब्दों में उद्धृत किया गया है- **"सभी लोग भाग रहे हैं तो मैं जा रहा हूँ वरना क्या हालत होगी हमारे खेतों की। इस कृषि प्रधान देश का भविष्य क्या होगा जिसका मुख्य उद्योग खेतों में है। एक बात और है। खेतों को जवानों की आवश्यकता है, बूढ़ों की नहीं।..... 'राजेन, तू खेतों में जा रहा है ताकि खेतिहरों के लिए लड़ सके। उनको इस देश में उचित स्थान दिला सके। किसानों और मजदूरों को एकसूत्र में बाँधकर उन्हें सरकारी शोषण के प्रति सचेत करना है। उन्हें यह बताना है कि सोना उगाने वाले के भाग्य में कंकड़-पत्थर नहीं हो सकते। खेतों के मजदूरों ने अपने घोर परिश्रम के बल पर जिन महाशक्तियों को जन्म दिया और उन्हीं के नीचे वे दब नहीं सकते।"**[27] स्वयं राजेन कृषि के प्रति अपने मोह को अभिव्यक्त करते हुए कहता है कि- **"यही वह स्थान है..... इन्हीं खेतों से मैं भागा था पर आज इन्हीं के बीच लौट आया। यहीं अंत होगी जीवन की निराशा और मैं संतोष का दीर्घ श्वास लूँगा। वह नादानी थी जिसने**

इस दुनिया से मुझे अब तक दूर रखा।..... खेत वह दुनियाँ है जहाँ के रहने वाले रूखे-सूखे खाकर भी खुश और सुखी रहते हैं। यह संतोष की दुनिया है। यहाँ सादगी जीवन और मेहनत खुशी।"[28] 'अपना मन उपवन' उपन्यास में रामचरण, रंभा, खतीजा, गिरधर, धीरज आदि पात्रों के माध्यम से कृषि के प्रति लगाव रखने वालों का उल्लेख किया गया है। 'लहरों की बेटी' उपन्यास में विदुला के भाई जीवनदत्त के माध्यम से कृषि को महत्व प्रदान करने वालों का चित्रण किया गया है। अत: कहा जा सकता है कि अनत जी के उपन्यासों में किसान जीवन की त्रासदी एवं उसकी आकाँक्षाओं की सफल अभिव्यक्ति हुई है।

सत्ता द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग का शोषण: अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में सत्ता के शोषणतंत्र में पिसते बुद्धिजीवी वर्ग का भी चित्रण किया है। सत्ता में कार्यरत इन बुद्धिजीवियों को एक तरफ अपने सिद्धांतों व उसूलों के खिलाफ काम करना पड़ता है तो दूसरी तरफ अपने उच्च पादाधिकारी की उपेक्षा व ज़्यादतियों का भी शिकार होना पड़ता है। साथ ही इन्हें अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता से भी वंचित रखा जाता है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- 'हड़ताल कल होगी', 'चुन-चुन-चुनाव', 'अपनी ही तलाश', 'शब्दभंग', 'घर लौट चलो वैशाली' व 'चलती रहो अनुपमा' आदि में कलाकार, साहित्यकार, पत्रकार, आदि की शोषित दशा का चित्रण किया गया है। 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में किशोर के माध्यम से व्यवस्था की उपेक्षा के शिकार एक चित्रकार की कुंठा, निराशा व हीनभावना को चित्रित किया गया है। किशोर अपनी कला के प्रति समाज व शासन की उपेक्षा की वजह से हीनभाव से ग्रसित हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह आत्महत्या कर लेता है। 'चुन-चुन-चुनाव' में अमिष के माध्यम से सरकारी शोषणतंत्र में पिसते बुद्धिजीवी वर्ग को दर्शाया है,जो चाहकर भी व्यवस्था के अमानवीय आचरण के

प्रति आवाज नहीं उठा पाते हैं। ‘अपनी ही तलाश’उपन्यास के वासू के माध्यम से राजनीतिक षडयंत्रों के शिकार एक लेखक की कुंठा, मानसिक यातना, रचना-प्रक्रिया के संघर्ष एवं रचानाओं की सामाजिक अवहेलना तथा प्रकाशन में होने वाली दिक्कतों का चित्रण किया गया है। इसके साथ ही लेखक के अस्तित्व की तलाश के प्रयासों को दर्शाया गया है। ‘शब्दभंग’ उपन्यास में ‘रोबीन’ नामक स्वाभिमानी व परिश्रमी युवक के माध्यम से टेलीविज़न व पत्रकारिता से जुड़े राजनीतिक शोषणतंत्र के शिकार कर्मचारी की मानसिक कुंठा व तनाव को दर्शाया गया है। ‘घर लौट चलो वैशाली’ में समीर के माध्यम से नाट्य विधा के लेखन व नाटक को अभिनीत करने वाले कलाकारों के प्रति सरकार व समाज की उपेक्षापूर्ण दृष्टि को चित्रित किया गया है। साथ ही लेखकों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति में सरकार द्वारा किए गए हस्तक्षेपों का भी वर्णन किया गया है। समीर के प्रति लेखक का कथन है- **“वह नाटक महज नाटक-प्रेम के लिए नहीं लिखता था और न ही उसके मंचन के पीछे समय और वक्त दोनों खर्च करता रहता था। उसका लिखा और मंचित हर टेलीविज़न नाटक और मंच नाटक एक सवाल हुआ करता था और यही कारण था कि सवाल न पसंद करने वाली व्यवस्था उसके कुछ नाटकों पर पाबंदी लगाने से भी नहीं झिझकी थी। यहाँ तक की रामायण पर आधारित उसके एक नाटक को टेलीविज़न में उस वक्त रोक लिया गया था जब कि उसका सीधा प्रसारण होने ही को था।”**[29]

वेश्यावृत्ति की समस्या: अनत जी ने अपने संवेदनशील हृदय व पैनी दृष्टि के कारण देश में घटित होने वाली वेश्यावृत्ति पर भी अपनी सशक्त लेखनी चलायी है। स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में दिनों-दिन बढ़ती मँहगाई, आर्थिक तंगी, बेरोजगारी, काम के अभाव व बढ़ते होटल संस्कृति के परिणामस्वरूप वेश्यावृत्ति की समस्या उत्पन्न हो गयी है। अनत जी ने एक तरफ वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देने वाले होटल मालिकों, उद्योगपतियों, कानून-व्यवस्था

आदि पर टिप्पणी की है तो दूसरी तरफ वेश्यावृत्ति में शामिल होने वाली युवतियों की आर्थिक तंगी व उनकी बेबसी का भी अंकन किया है। वे समाज द्वारा वेश्याओं के प्रति अपनाई जाने वाली उपेक्षापूर्ण दृष्टि का भी अंकन इसके साथ करते हैं। इसके अतिरिक्त लेखक ने वेश्याजीवन की त्रासदी एवं उनकी सामाजिक उपेक्षा, मानसिक पीड़ा व उनकी वृद्धावस्था की समस्या पर भी प्रकाश डाला है। इस धन्धे में एक बार कदम रखने के बाद वेश्या को समाज में हर जगह व हर किसी की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। लोग उन्हें अच्छी नजर से नहीं देखते हैं और न ही उनसे बात करना पसंद करते हैं तथा न ही किसी प्रकार का सामाजिक संबंध बनाना चाहते हैं। ऐसी दशा में वेश्यावृत्ति में शामिल स्त्रियों की स्थिति और भी दयनीय हो जाती है। उनके पारिवारिक व सामाजिक रिश्ते खत्म हो जाते हैं। वेश्यावृत्ति में शामिल स्त्रियाँ परिवार व समाज की उपेक्षा का शिकार तो होती ही हैं साथ ही वे पत्नी, प्रेमिका व मातृत्व के सुख से भी वंचित रह जाती हैं। वे अकेलेपन का शिकार हो जाती हैं। ऐसी स्त्रियों की स्थिति वृद्धावस्था के दौरान और भी नारकीय हो जाती है। क्योंकि उनकी सेवा करने हेतु उनका कोई वारिस नहीं होता है और न ही उनके लिए सरकार द्वारा कोई सुविधा व सहायता ही प्रदान की जाती है। अनत जी द्वारा रचित 'हड़ताल कल होगी', 'शेफाली', 'अचित्रित' व 'अपनी ही तलाश' शीर्षक उपन्यासों में वेश्यावृत्ति की समस्या को चित्रित किया गया है। 'शेफाली' व 'अचित्रित' उपन्यास में वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देने वाले तथा वेश्याजीवन की त्रासदी एवं उनकी आशा–आकांक्षाओं तथा उनके पेशेगत तकाजे, उनकी सच्चरित्रता आदि की सफल अभिव्यक्ति की गयी है। 'शेफाली' उपन्यास में शेफाली के माध्यम से वेश्याजीवन की त्रासदी के साथ ही आम आदमी द्वारा वेश्याओं के प्रति अपनायी जाने वाली दृष्टि का चित्रण किया गया है। 'अचित्रित' उपन्यास में वानी व मरियम के माध्यम से आर्थिक तंगी से जूझती उन बेबस युवतियों का चित्रण किया गया है, जिनके पास अपने परिवार का भरण-पोषण की

ज़िम्मेदारी होती है और जिन्हें कहीं भी कोई और काम नहीं मिलता है। जिसकी वजह से वे वेश्यावृत्ति अपनाने पर मजबूर हो जाती हैं। इस उपन्यास में वेश्याजीवन की त्रासदी के साथ-साथ उनकी आशा-आकांक्षाओं को भी चित्रित किया गया है। वानी के माध्यम से एक वेश्या की देशभक्ति के भाव को मुखरित किया गया है।

धर्मांतरण की प्रक्रिया: औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में गोरे शासकों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का बलात् धर्म परिवर्तन कराया जाता था। उन्हें हिन्दू धर्म का परित्याग करने एवं ईसाई धर्म को अंगीकार करने की सलाह दी जाती थी। इसके लिए ईसाई धर्म को श्रेष्ठ बताया जाता था और हिन्दू धर्म में अनेक खामियाँ दिखाकर उसकी निंदा का जाती थी। धर्म परिवर्तन हेतु गोरों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को तरह-तरह के प्रलोभन भी दिए जाते थे। कभी उन्हें जमीन-जायदाद देने का प्रलोभन दिया जाता था तो कभी नौकरी देने का। कभी उनकी पदोन्नति करने का आश्वासन दिया जाता था तो कभी धमकी दी जाती थी। गोरे शासकों द्वारा हिन्दू भारतीयों का बलात् धर्म परिवर्तन करने की साजिश मॉरिशस की स्वतन्त्रता के पश्चात् भी जारी रहती है। भारतीयों को धर्म परिवर्तन करने के लिए प्रेरित करने में ईसाई पादरियों का सहयोग रहता था। पादरी लोगों को तरह-तरह से अपने जाल में फँसाने की साजिश रचते थे। इसके लिए वे साम-दाम-दण्ड-भेद सभी नीतियों को लागू करने से भी नहीं चूकते थे। अनत जी ने गोरों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को बलात धर्म-परिवर्तन कराने का उल्लेख अपने कई उपन्यासों में किया है। 'पर पगडंडी नहीं मरती' शीर्षक उपन्यास में विक्रम के माध्यम से ईसाई पादरियों द्वारा दिए जाने वाले प्रलोभन को दर्शाया गया है। विक्रम अपनी बेरोजगारी की वजह से परेशान रहता है। उसकी मुलाक़ात सिस्टर जेनी से होती है। सिस्टर जेनी उसकी इस समस्या का निदान बताते हुए उसे ईसाई धर्म अंगीकार करने की सलाह देती है। क्योंकि उसकी नजर में ईसा को मानने वाले सदैव सुखी व सम्पन्न रहते हैं।

उपन्यास में विक्रम सिस्टर जेनी की नसीहतों को याद करते हुए सोचता है- **"वह बोलती जाती-अपनी सभी व्यथा को अपने प्यारे ईसा मसीह पर छोड़ दो। जीसस नहीं हो तो पीड़न आदमी को खा जाए। जीसस हो तो पीड़न आदमी के चरणों पर अपने-आप दम तोड़ दे।"** विक्रम उसके द्वारा दिए गए प्रलोभन को निम्न शब्दों में व्यक्त करता है- **"काम तो उसके लिए उस वक्त भी नहीं था। उसी काम के चक्कर में तो सिस्टर जेनी तक पहुँचा था। सुन रखा कि ईसाई बन जाने पर बड़ी आसानी से अच्छी नौकरी मिल जाती थी। उसने सिस्टर जेनी से कहा भी था नौकरी मिल जाए और वह धर्म बदल ले। वह कहती, नौकरी के लिए ईसा मसीह से नेह न जोड़े। विश्वास और आस्था के साथ उसको अपनाए।..... द्वीप के कई पादरी तो लोगों को नौकरी का वचन देकर उन्हें तत्काल अपने धर्म में ले लेते थे। वह न तो ईसाई बन सका था और न ही उसे नौकरी मिल पायी थी।"[30]** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि धर्मांतरण हेतु किस तरह से लोगों को अपनी बातों में फंसाया जाता था। उन्हें नौकरी आदि का प्रलोभन दिया जाता था। अनत जी ने अपने उपन्यासों में वृद्धावस्था की समस्या, हिन्दू-मुस्लिम एकता, आप्रवासी भारतीयों के आपसी वैमनस्य व उनके संगठन शक्ति आदि को भी चित्रित किया है। दूसरे शब्दों में कहें तो अनत जी ने अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से अपने समय व समाज की हर छोटी-बड़ी घटना को चित्रित कर पाठक के समक्ष स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत की है।

ख) राजनीतिक संघर्ष

कोई भी संवेदनशील हृदय, पैनी दृष्टि से सम्पन्न व प्रतिभाशाली साहित्यकार अपने देश, समाज, समय व आस-पास के परिवेश में घटित होने वाली घटनाओं, क्रिया-कलापों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। भले ही यह प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर समान रूप

से न पड़े। किन्तु उन घटनाओं का व्यक्ति के मानस पर असर जरूर पड़ता है। इन घटनाओं में राजनीतिक गतिविधियाँ भी शामिल हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार अभिमन्यु अनत अपनी प्रखर आलोचकीय व्यक्तित्व के कारण अपने समाज में घटित होने वाली घटनाओं से प्रभावित हुए हैं जिनकी सफल अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में हुई है। अनत जी ने अपने साहित्य में न सिर्फ स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त किया है। बल्कि इसके साथ-ही स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के राजनीतिक हलचलों एवं चुनावी गतिविधियों को भी चित्रित किया है। 'शर्तबंद प्रथा' के अन्तर्गत मॉरिशस जाने वाले भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के त्याग, बलिदान व संघर्ष से 12 मार्च 1968 ई. को मॉरिशस अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुआ। जिसके परिणामस्वरूप मॉरिशस में प्रजातांत्रिक शासन-प्रणाली लागू हुई। अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक गतिविधियों यथा- चुनावी सरगर्मियों, सत्तासीन मंत्रियों व नेताओं की वादाखिलाफी की प्रवृत्ति, चुनाव जीतने हेतु अपनाए जाने वाले विभिन्न राजनीतिक हथकण्डे- विपक्षी पर हमला करवाना, सभाओं में गुंडा-गर्दी व दंगा-फसाद करवाना, चारित्रिक लांछन लगाना, जनता से सहानुभूति प्राप्त करने हेतु स्वयं पर झूठा हमला करवाना, वोटों की खरीद-फरोख्त, प्रेस व कानून से साठ-गाँठ करना, पोलिंग बूथों पर कब्जा, पूँजीपतियों व उद्योगपतियों से आर्थिक अनुदान लेना आदि का यथार्थपरक अंकन किया है। साथ ही चुनाव के पश्चात् पदासीन मंत्रियों व नेताओं की स्वार्थी मनोवृत्ति, विपक्षी के कार्यकाल में व्यवस्था में कार्यरत कर्मचारियों को अपदस्थ करना व अपने सगे-संबंधियों को नौकरी दिलाना, नौकरी में योग्यता व अनुभव के स्थान पर जातिवाद, भाई-भतीजावाद, क्षेत्रवाद, चापलूसी व घूसखोरी को बढ़ावा देना आदि गतिविधियों एवं मंत्रिमंडल में होने वाली खींचातानी का सजीव चित्रण किया है।

अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक घटनाओं एवं चुनावी गतिविधियों की यथार्थपरक अभिव्यक्ति अपने उपन्यासों में की है। उनके द्वारा रचित उपन्यासों- 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'कुहासे का दायरा', 'चुन-चुन-चुनाव', 'अपनी ही तलाश', 'अपनी-अपनी-सीमा', 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग', 'फैसला आपका', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'आसमान अपना आँगन' व 'क्यों न फिर से' आदि में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय मजदूरों एवं भारतवंशी मॉरिशसवासियों के राजनीतिक संघर्ष का चित्रण किया गया है। इन उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक गतिविधियों, चुनावी सरगर्मियों, नेताओं व मंत्रियों की जनता से वादाखिलाफी,नेताओं व मंत्रियों द्वारा चुनाव जीतने हेतु जनता को तरह-तरह के प्रलोभन देना, विपक्षियों पर हमला करवाना, उन्हें चुनाव से हट जाने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन व धमकी देना, विपक्षी पार्टी के उम्मीदवारों पर चारित्रिक लांछन लगाना, उसके खिलाफ गलत बयानबाजी करवाना, चुनाव के दौरान जातिवाद, क्षेत्रवाद को बढ़ावा देना, नेताओं द्वारा धार्मिक व सांप्रदायिक दंगे करवाना, चुनावी उम्मीदवारों द्वारा प्रेस, मीडिया तथा कानून से साठ-गाँठ करना, चुनाव जीतने के उद्देश्य से जनता की सहानुभूति बटोरना तथा विपक्षी पार्टी के क्षेत्र में जनता के वोट खरीदने हेतु उन्हें नौकरी व पदोन्नति का प्रलोभन देना, चुनाव के दिन विपक्षी पार्टी के उम्मीदवारों के एजेन्टों व प्रमुख कार्यकर्ताओं को खरीद लेना या उनका अपहरण करवा देना तथा विपक्षियों के पोलिंग बूथ को जब्त करा देना आदि विभिन्न गतिविधियों का यथार्थपरक चित्रण किया है।

चुनावी उम्मीदवारों द्वारा जनता से किए गए खोखले वादे: अनत जी अपने उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के राजनेताओं के दोगले चरित्र का पर्दाफास करते हैं। वे यह चित्रित

करते हैं कि चुनाव-प्रचार के दौरान ये नेता व मंत्री तथा चुनावी उम्मीदवार आमजनता से खोखलेवादे करते हैं, जिन्हें वे कभी पूरा नहीं करते हैं। उनके द्वारा जनता को इस भ्रम में रखा जाता है कि उनकी समस्याओं पर ध्यान दिया जा रहा है तथा शीघ्र ही उनकी जरूरतें पूरी की जाएँगी, जबकि वास्तव में ऐसा होता नहीं है। अनत जी ने यह भी उद्घाटित किया है कि जब इन नेताओं को वोट की जरूरत होती है तब ये आमजनता के सच्चे सेवक बनने का भी ढोंग रचते हैं। उस समय ये आम जनता की अशिक्षा दूर करने, गरीबी मिटाने, बेरोजगारी दूर करने, नौकरी दिलाने व पदोन्नति दिलाने जैसे खोखले वादों के सहारे चुनाव को जीतने की योजना बनाते हैं और इन समस्याओं को दूर करने के झूठे वादे करते हैं और स्वयं को सच्चा जनसेवक एवं देश का उद्धारक होने का दावा करते हैं। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में अनत जी ने अरुण नामक पात्र के माध्यम से नेताओं व मंत्रियों की इस सच्चे जनसेवक बनने वाली झूठी प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है। उपन्यास में अरुण एक चुनावी उम्मीदवार है। वह चुनाव जीतने के लिए जनता के समक्ष भविष्य में उनके हितार्थ काम करने व कभी शिकायत का मौका न देने का संकल्प लेता है। वह वैश्य सभा के सदस्यों से कहता है- **"आप देखेंगे कि चुनाव जीतने के बाद मैं किस तरह से आप लोगों के हित में काम करूँगा। कभी किसी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा आपको।"**[31] अरुण के ये वक्तव्य उन सभी चुनावी उम्मीदवारों की मानसिकता को दर्शाते हैं, जो जनता में अपनी पैठ बनाने एवं उनका विश्वास जीतने के लिए अनेक प्रकार के वादे करते हैं। अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यह भी दर्शाया है कि इन राजनेताओं व मंत्रियों के द्वारा चुनाव के दौरान देश की बेरोजगार जनता के साथ, विशेषकर शिक्षित नवयुवकों के साथ कपटपूर्ण व्यवहार किया जाता है। शिक्षित बेरोजगार नवयुवकों के वोट अपने पक्ष में करने के निमित्त नेताओं व मंत्रियों द्वारा तात्कालिक फर्जी रिक्तियाँ निकाली जाती हैं और उनको नियुक्ति पत्र तक दे दिया जाता है और चुनाव जीतने के पश्चात् सत्तासीन लोगों द्वारा ऐसे नवयुवकों की नौकरियाँ पुनः छीन ली जाती हैं। इस तरह चुनावी उम्मीदवारों द्वारा

शिक्षित बेरोजगार नवयुवकों के भविष्य के साथ एवं उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जाता है। नवयुवकों के साथ होने वाले चुनावी छलावे का उल्लेख करते हुए अनत जी ने लिखा है- **"लोगों को जब तार मिलने शुरू हुए तो नौकरी प्राप्ति की खुशी के साथ-साथ उनके मन में आशंका भी पैदा होनी शुरू हो गयी कि कहीं सचमुच जैसा कि अपने टेलीविज़न काम्पेईन के दौरान विपक्षी नेता ने कहा था-' यह नौकरी हमेशा के लिए नहीं है। अगर वे लोग चुनाव जीत भी जाएँगे..... तो भी आप में से कोई भी टिकेगा नहीं। आप सभी को पंद्रह दिन की तनख्वाह देकर नौकरी से हटा दिया जाएगा।"**[32] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होताहै कि चुनाव जीतने हेतु आमजनता को विशेषकर, बेरोजगार नवयुवकों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जाता है। उन्हें नौकरी का प्रलोभन देकर उनके वोट खरीदे जाते हैं और चुनाव के बाद उन्हें दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया जाता है।

चुनावी प्रक्रिया में जातिवाद को बढ़ावा देना: चुनाव प्रचार के दौरान चुनाव जीतने हेतु विभिन्न राजनीतिक हथकंडों में जातिवाद भी एक प्रमुख हथकंडा है- चुनाव जीतने व विपक्षी पार्टी को परास्त करने का। चुनाव-प्रचार के समय उम्मीदवारों द्वारा जातिवाद, क्षेत्रवाद, धार्मिक व सांप्रदायिक भेद-भाव की भी आग भड़काई जाती है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यास 'चुन-चुन-चुनाव', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'आसमान अपना आँगन' व 'क्यों न फिर से' आदि में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीति में जातिवाद को प्रश्रय देने वालों का चित्रण किया गया है। 'क्यों न फिर से'उपन्यास में अनत जी उन राजनेताओं पर टिप्पणी करते हैं जो चुनाव जीतने के लिए जनता के समक्ष समतावादी समाज-व्यवस्था को स्थापित करने का ढोंग रचते हैं और अप्रत्यक्ष रूप से जातिगत भेद-भाव की आग को भड़काते हैं और जातिगत भेद-भाव को बढ़ावा देते हैं। इस संदर्भ में उपन्यास के एक पात्र अजय जयराम का कथन है- **"जात-पाँत के बखेड़े को खड़ा करके अपने ही दल के दो सांसद**

रात को घर-घर पहुँचकर मतदाताओं को भड़काने में लगे हुए हैं। मंत्री पद न पाकर कुंठित वे लोगों को यह कहते फिर रहें हैं कि सरकार तो पहले से बहुमत में है। उसे एक और कुरसी देकर अपने वोट को बेकार क्यों जाने दिया जाए।"[33] अनत जी ने 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में भी चुनाव के दौरान जातिवाद को बढ़ावा देने वालों का उल्लेख किया है। उपन्यास में स्वस्ति जिस चुनाव क्षेत्र से खड़ी होती है उस चुनाव क्षेत्र का एक पुराना उम्मीदवार स्वस्ति की पार्टी की तरफ से उस क्षेत्र में चुनाव-प्रचार करने से साफ मना कर देता है। जब स्वस्ति उससे कारण जानना चाहती है तब वह जातिवाद को इसका मुख्य कारण बताता है। इस संदर्भ में अनत जी लिखते हैं- **"दल के एक पुराने उम्मीदवार ने उस क्षेत्र में जाने से इन्कार कर दिया था क्योंकि उस इलाके में जाति-पाँति अपनी चरम सीमा पर थी।..... इस पार्टी को चालीस वर्ष की शक्ति और सत्ता देने में मेरा योगदान जैसा शायद ही किसी का रहा हो। पिछले चुनाव में उस क्षेत्र की जाति-पाँति का मैं शिकार होते-होते बचा हूँ। मैं फिर से सियासती हाराकीरी के लिए तैयार नहीं हूँ। उसने वहाँ के अठारह वर्ष के मतदाताओं के बीच भी जाति-पाँति के इस प्रचंड रोग को पाया था। वे पहली बार मतदाता बने हुए लोग थे जिन्होंने घर-घर जाकर उनके खिलाफ कान्वैसिंग किया था।"**[34]

'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में भी देश की राजनीति में जातिवाद के प्रभाव को देखा जा सकता है। इस उपन्यास में अनत जी ने यह दर्शाया है कि चुनाव जीतने के लिए उम्मीदवारों द्वारा न सिर्फ जातिगत भेद-भाव की आग भड़काई जाती है। बल्कि इसके साथ ही जिन-जिन जातियों की संख्या अधिक होती है उन्हीं जातियों में से उम्मीदवार खड़ा करके विपक्षियों के वोट को कम करने की साजिश रची जाती है। और स्वयं को जाति विशेष का उद्धारक बताकर स्वयं के पूर्वजों का संबंध उस जाति से जोड़कर जनता से अपनत्व का भाव दर्शाकर चुनाव जीतने का प्रयास किया जाता है। इस उपन्यास में श्रमिक दल के उम्मीदवार अरुण का राजपूत सभा के सदस्यों के सम्मुख कहे गए ये वाक्य इसी मनोवृत्ति से परिचालित उम्मीदवारों की पोल खोलते हैं। वह चुनाव-प्रचार के दौरान जाति

विशेष की सभा (राजपूत सभा) को संबोधित करते हुए कहता है- **"मैं बड़े गर्व के साथ आपको यह बताना चाहूँगा कि मैं जात-पाँत को नहीं मानता, फिर भी किसी एक वर्ग पर के अन्याय को मैं पनपने नहीं दूँगा। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि मेरे अपने दादा राजपूत थे। मेरे अपने भीतर वही खून है, जो आपके भीतर है।..... मेरे पिता कहते थे कि हम लोग महाराणा प्रताप के वंशज हैं। महाराणा प्रताप नहीं होते तो भारत से हिन्दू धर्म मिट जाता।"**[35] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार चुनावी उम्मीदवार चुनाव जीतने हेतु जनता से अपना जातिगत रिश्ता कायम कर लेते हैं ताकि अपनी जाति विशेष का समझकर जनता उन्हें ही अपना वोट दे।

अनत जी ने अपने उपन्यासों के द्वारा राजनेताओं व मंत्रियों की उस मनोवृत्ति का भी पर्दाफाश किया है जिसके तहत वे चुनाव के दौरान जातिगत भेद-भाव को बढ़ाना देना उचित समझते हैं। राजनेताओं, मंत्रियों व चुनावी उम्मीदवारों का यह मानना है कि चुनाव तो जातिगत भेद-भाव के बल पर ही जीता जाता है। इसलिए वे इसे (जातिगत भेदभाव को) एक अस्त्र के रूप में प्रयोग करते हैं। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में उमेश व अरुण के वार्तालाप के माध्यम से इस तथ्य का उद्घाटन किया गया है। अरुण जाति-पाँत के भेद को अच्छा नहीं मानता है। जब वह अपने मित्र उमेश से अपने विपक्षी द्वारा जातिगत भेदभाव को बढ़ावा देने के बारे बताता है और उसके इस कृत्य की निंदा करता है तब उमेश अपने मित्र अरुण को समझाते हुए, चुनाव में जातिगत भेदभाव की राजनीति और रणनीति को उचित ठहराते हुए अरुण को भी उसे अपनाने की सलाह देते हुए कहता है- **"जो चीज राजनीति के पालन-पोषण से फैली हो, उसे राजनीति में दाखिल होकर नहीं मानोगे तो कहीं के नहीं रहोगे। चुनाव तो जात-पाँत के बल पर ही जीते जाते हैं। धर्मात्मा बनाकर नहीं। हाँ,यह दूसरी बात है कि जनता के सामने तो चिल्लाकर यही कहते रहना पड़ेगा कि तुम इस जात-पाँत के फर्क को नहीं मानते। यह तो विपक्षियों का फैलाया हुआ**

है।"[36] 'आसमान अपना आँगन' उपन्यास में भी राजनेताओं द्वारा जातिगत भेदभाव को बढ़ावा देने का उल्लेख किया गया है। उपन्यास में हंस (हरिवंश) को जब उसका मित्र प्रभात सरकार में मंत्री का पद देना चाहता है तब वह इस पद के लिए तैयार नहीं होता क्योंकि उसे यह पद जाति-विशेष के आधार पर दिया जा रहा था। जबकि वह जाति-पाँत के भेद को नहीं मानता था। वह पेशे से एक कलाकर था। जब रेशाद द्वारा उससे फिर मंत्री पद के लिए आग्रह किया जाता है और वह हंस को जाति-पाँत के चक्कर में न पड़ने की सलाह देता है, तब हंस कहता है- **"पर ये राजनीति तो मानते नहीं। तभी तो यहाँ जाति-पाँत की खेमेबाजी आजकल इतनी अहमियत रखती है। जाति के नाम पर उठ रही इन खोखली गुटबंदी सभाओं के आगे आज व्यक्ति अपनी सारी शख्सीयत के बावजूद बौना बना दिया गया है।"[37]** उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीति और चुनाव में किस प्रकार जातिवाद को भड़काया जाता है। साथ ही यह भी दर्शाया गया है कि लोगों को जातिवाद के नाम पर खंडित करके उन्हें सही नेता के चुनाव से वंचित रखा जाता है। नेताओं व मंत्रियों के चयन का आधार उनकी योग्यता व कार्यकुशलता न होकर जाति विशेष को मान लिया गया है।

गुंडा-गर्दी: चुनाव-प्रचार के दौरान विपक्षी पार्टी के सदस्यों को हराने के लिए चुनावी उम्मीदवारों द्वारा अनेक प्रकार के राजनीतिक हथकंडों का सहारा लिया जाता है, जिसमें जातिवाद, क्षेत्रवाद, धार्मिक-सांप्रदायिक दंगे, विपक्षी नेताओं के चरित्र पर लांछन लगाना, उनके दोषों का बखान करना, विपक्षी पर हमला करवाना, उसके जुटावों, सभाओं को भंग करना, पत्थर बाजी करना, आगजनी करवाना, विपक्षी को चुनाव से हट जाने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन देना, धमकी देना आदि बातें शामिल हैं। अनत जी ने 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'क्यों न फिर से', 'चुन-चुन-चुनाव', 'आसमान अपना आँगन' आदि उपन्यासों में

उपर्युक्त चुनावी गतिविधियों का सजीव अंकन किया है। चुनाव के दौरान घटित होने वाली हर एक छोटी-बड़ी घटना का जिक्र अनत जी के उपन्यासों में हुआ है। 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की चुनावी सरगर्मियों की यथार्थपरक अभिव्यक्ति की है। उपन्यास की नायिका 'स्वस्ति' को चुनाव से हट जाने के लिए विपक्षियों द्वारा उसके विरुद्ध तरह-तरह के षडयंत्र रचे जाते हैं। कभी उस पर चरित्रहीनता का आरोप लगाया जाता है तो कभी नौकरी का प्रलोभन देकर उसे चुनाव से पीछे हट जाने की सलाह दी जाती है। कभी उसके घर धमकियों भरे फोन आते हैं। इतना ही नहीं उसके मँगेतर अमिष को भी निशाना बनाया जाता है। अमिष के पास भी धमकियों भरे खत भेजे जाते हैं ताकि वह स्वस्ति को चुनाव से हट जाने के लिए मना सके। और जब ये सारे हथकंडे नाकामयाब साबित होते हैं तब विपक्षी पार्टी द्वारा स्वस्ति व उसकी पार्टी के लोगों पर हमले करवाए जाते हैं, पत्थरबाजी की जाती है। उनके गाड़ियों के टायरों पर खंजर चलाया जाता है ताकि वे लोग चुनाव-प्रचार के लिए नियत समय पर न पहुँच सके। जिससे जनता में उनके प्रति उपेक्षा के भाव उत्पन्न हो जाएँ। स्वस्ति को दी जाने वाली धमकियों एवं उसके साथ की जाने वाली गुंडा-गर्दी, पत्थरबाजी का उल्लेख करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"स्वस्ति जब उस धुंधलके में अपनी कार के पास लौटी तो धमकियाँ अपना पहला रूप दिखा चुकी थीं। कार स्टार्ट करने के बाद ही स्वस्ति और उसके साथियों को पता चला कि उसकी कार के चारों पहिये में खंजर भोंका जा चुका था।..... धमकियों का एक दूसरा रूप ठीक दूसरे दिन फिर से सामने आया।..... स्वस्ति के क्षेत्र के दो गाँवों के बीच आधे मील का जो संकरा रास्ता था उसके दोनों ओर ईख के खेत थे।..... अचानक दोनों तरफ के ईख के खेतों से कई पत्थर उछाले गए। कई पत्थर खाली गए कई पत्थर आधे मिनट से भी कम समय में एक के बाद एक धड़ाधड़ टैक्सी पर पड़े। एक पत्थर सामने के शीशे को चकनाचूर करता हुआ टैक्सी चालक की बाँह में लगा। दूसरा पत्थर काँच के टुकड़ों के बौछारों के साथ स्वस्ति के सिर से टकराकर गाड़ी में लुढ़क गया। कार में चार आदमी थे। कार जब ईख के खेत में थोड़ा भीतर जाकर मुंडेर से टकराकर रुकी तो उसके**

भीतर मुट्ठी भर बड़े तीन पत्थर थे - खून था..... काँच के बेशुमार टुकड़े थे और चीख के बाद सन्नाटा था।"[38] चुनाव के समय विपक्षियों पर न सिर्फ हमला करवाया जाता है बल्कि उनके आयोजनों, सभाओं व बैठकों में अपने दलालों व गुंडों को भेजकर गुंडागर्दी भी कारवाई जाती है। इसके अतिरिक्त विपक्षी उम्मीदवार व उनके एजेन्टों के घरों में पथराव कराना व आगजनी जैसी दुर्घटनाओं को अंजाम देने से भी वे (विपक्षी उम्मीदवार) नहीं चूकते हैं। 'क्यों न फिर से' उपन्यास का प्रमुख पात्र अजय जयराम सभा को संबोधित करते हुए कहता है- **"हमारे विपक्षी अपने पैरों के नीचे से जमीन को खिसकते पाकर अब हमारे जुटावों, बैठकों और मीटिंगों में हुड़दंगियों को भेजकर दंगे करवाने लगे हैं। उनका मकसद हमारे लोगों को उत्तेजित करके अस्त-व्यस्तता का माहौल पैदा करना है।..... इन्हें जनता से कहीं अधिक अपने स्वार्थों की चिंता है।..... ये हमारे कुछ अपने लोगों को भी हमारे खिलाफ खड़ा कर रह रहे हैं।"**[39] विपक्षी पार्टी द्वारा अपने प्रतिपक्षी पार्टी के सदस्यों पर हमला करवाने, दंगा-फसाद करवाने का उल्लेख अनत जी ने अपने अन्य उपन्यासों में भी किया है। इस स्थिति का चित्रण वे 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में भी करते हैं। इस उपन्यास में श्रमिक दल के उम्मीदवार की तरफ से मायापुर इलाके में चुनाव-प्रचार के लिए गए अरुण के मित्र उमेश और उसके पार्टी के सदस्यों पर विपक्षियों द्वारा हमला करवाया जाता है। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"मायापुर इलाके में दिन में दंगा-फसाद शुरू हो गया था। उस इलाके के एक भाग में विरोधी पक्ष का प्रभाव अधिक था। दिन में श्रमिक दल के दो मोटरों के सभी शीशे फोड़ दिए गए थे। जब तीन गाडियाँ उस जगह के करीब पहुँची तो उमेश के आदेश पर तीनों मोटरों से दल झंडे को उतार लियागया।..... अगर उसकी कारों पर झंडे होते तो उस इलाके को पार करना उसके लिए नामुमकिन होता।"**[40] 'आसमान अपना आँगन' उपन्यास के भी कई प्रसंगों में चुनाव के दौरान होने वाले दंगे-फसाद, तोड़-फोड़, पार-पीट की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

विपक्षी के दोषों का बखान करना/ चारित्रिक लांछन लगाना: सत्ता पर काबिज होने के लिए चुनावी उम्मीदवारों द्वारा न सिर्फ जातिवाद का सहारा लिया जाता है और न ही दंगे-फसाद से काम लिया जाता है बल्कि इसके साथ ही प्रतिपक्षियों पर तरह-तरह के झूठे आरोप भी मढ़े जाते हैं। जनता के समक्ष उनके दोषों का बखान किया जाता है। उनके चरित्र को कलंकित करने का प्रयास किया जाता है। चुनाव-प्रचार के दौरान विपक्षी दल को नीचा दिखाना, उनके दोषों को गिनाना, पूर्व में उसके द्वारा जनता से किए गए झूठे वादों का जिक्र करना, जिन्हें वो किसी कारणवश पूरा न कर सका हो, जनता को झूठी दिलासा देना आदि चुनावी राजनीति की सामान्य बातें हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यही सब चुनाव जीतने के राजनीतिक हथकंडे हैं, जिन्हें अनत जी ने यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में अरुण जनमत बटोरने के उद्देश्य से जनता के समक्ष अपने विपक्षी के दोषों का बखान कुछ इस प्रकार से करता है- **"हमने पचास हजार के करीब नयी नौकरियाँ पैदा कीं। विपक्षी को यह अच्छा नहीं लग रहा। ये वे ही लोग हैं, जिन्होंने आज से पंद्रह साल पहले कहा था कि अगर इस देश को आजादी मिल जाएगी तो देश में महामारी फैल जाएगी..... ये वे ही लोग हैं, जिन्होंने चावल-आटे पर के सरकारी योगदान को भी दो-तीन महीनों में फरेब का नाम दिया था। नि: शुल्क शिक्षा को भी इन्होंने रिश्वत कहा था..... ये उन्हीं लोगों के भतीजे हैं, जिन्होंने आपके बारे में कभी कहा था कि इन गँवारों को वोट का अधिकार देने का मतलब है, बंदर के हाथ में उस्तरा थमा देना। ऐसे लोगों को, चाहे वे अपने चेहरे पर देवताओं के मुखौटे लगाए क्यों न आ जाएँ, आप अपने वोट कैसे दे सकते हैं?"**[41] 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास के अतिरिक्त 'चुन-चुन-चुनाव', 'क्यों न फिर से' व 'आसमान अपना आँगन' उपन्यास में भी चुनाव के समय चुनावी पार्टियों द्वारा एक-दूसरे के दोषों को गिनाना व उन पर झूठे आरोप लगाना तथा

चारित्रिक लांछन लगाने का उल्लेख किया गया है। 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में स्वस्ति राजनीति में शामिल होकर उसकी बुराइयों को दूर करने व जनता के हितार्थ काम करने की योजना बनाती है। चुनाव-प्रचार के दौरान जब वह अपने ओजपूर्ण भाषणों से जनता में अपनी पैठ बना लेती है तब उसका प्रतिपक्षी संवेश, जो कि उसका पूर्व प्रेमी था, उस पर तरह-तरह के झूठे आरोप लगाकर जनता के मध्य उसकी छवि खराब करने की कोशिश करता है। वह उसे चरित्रहीन, पाश्चात्य रंग में रंगी, खुदगर्ज आदि शब्दों से संबोधित करता है। संवेश द्वारास्वस्ति के प्रति जनता के सम्मुख जो भाषण दिया गया है उस विषय में आश्चर्य प्रकट करते हुए स्वस्ति सोचती है- **"स्वस्ति ने कभी नहीं सोचा था कि वह संवेश आम मीटिंग में उस कदर उस पर कीचड़ उछालेगा।..... संवेश ने अपने दल के मंच से चिल्ला-चिल्लाकर कहा था कि उसके दल के अनुभवी और योग्य उम्मीदवारों के सामने सबसे घटिया किस्म के उम्मीदवार खड़े किए गए थे। स्वस्ति के ऊपर तो उसने विशेषणों की बौछार कर डाली थी। स्वस्ति के भाई ने संवेश के शब्द-शब्द को स्वस्ति के सामने रख दिया था।..... जो लड़की सिर्फ किसी से बदला लेने के प्रयोजन से चुनाव लड़ रही हो उससे जनता को कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। पाश्चात्य रंगों में रंगी हुई लड़की है। वह खुदगर्ज है। पब्स और कोफेतेरिया में बीयर के ग्लास पर ग्लास खाली कर जाने वाली लड़की देश के हित में काम नहीं कर सकती। उसकी पार्टी लिबास और चेहरे तथा व्यवहारों और विचारों से सामंती है। राजनीति में सेवा की भावना के साथ दाखिल हुआ जाता है न कि सरकार में नौकरी न मिलने की कड़वाहट और चिड़चिड़ापन लिए हुए।"**[42] इसी तरह 'क्यों न फिर से' उपन्यास में अजय जयराम के प्रतिपक्षी उस पर तरह-तरह के आरोप मढ़ते हैं। अजय द्वारा किए गए विदेशी दौरों में स्वार्थ की बू देखते हैं तथा उस पर जनता के पैसों से रंगरेलियाँ मनाने का आरोप भी मढ़ते हैं- **"अजय जयराम अपने हाथ के अखबारों को देखता रहा। मोटे अक्षरों में सुर्खी इन सात शब्दों में थी..... विदेश के अपने सरकारी मिशन के दौरान।**

सुर्खी के ठीक नीचे अजय की रंगीन तस्वीर थी, एक गोरी महिला के साथ। उसके नीचे दो कालम का लेख था। ..... अपने मंत्री पद पर होने के दिनों, पिछले छह महीनों में अजय जयराम ने ग्यारह विदेश यात्राएँ की थीं- कुछ सम्मेलन के नाम पर और कुछ आफिशियल दौरे के रूप में। यहाँ पर हम पूर्व मंत्री की उस यात्रा की एक फोटो और विवरण दे रहे हैं, जो हमें एक्सक्लूसिव रूप से हमारे एक विदेशी पाठक ने भेजा है। इस सम्मेलन की जानकारी न तो प्रेस को कभी मिली और न ही जनता को। लेकिन यह तस्वीर हजार शब्दों में इस मंत्री की रहस्यमय गतिविधि का विवरण हमारे सामने प्रस्तुत कर रही है। जनता के रुपयों से अंग्रेज़ लड़की के साथ रंगरेलियाँ।"[43] उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है राजनीति में चुनाव जीतने के लिए किस प्रकार एक दूसरे पार्टियों के उम्मीदवारों पर अनेक प्रकार के झूठे आरोप लगाये जाते हैं और जनता के मध्य उनके चरित्र को कलंकित किया जाता है जिससे जनता के मध्य विपक्षी की छवि धूमिल हो जाये और जनता उन्हें अपना वोट न दे।

जनता की सहानुभूति प्राप्त करना: अनत जी अपने उपन्यासों के माध्यम से नेताओं, मंत्रियों व चुनावी उम्मीदवारों के उस प्रवृत्ति का भी पर्दाफाश किया है, जब वे चुनाव जीतने के लिए जनता से सहानुभूति बटोरने की साजिश रचते हैं। चुनाव-प्रचार के समय उम्मीदवार अपने विपक्षियों पर न सिर्फ अनेक प्रकार के दोष मढ़ते हैं बल्कि अपने प्रतिपक्षी की छवि खराब करने, जनता में अपनी पैठ बनाए रखने एवं जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए स्वयं पर या अपनी पार्टी के सदस्यों पर झूठे हमले करवाने से भी नहीं चूकते हैं। ऐसा वे इसलिए करते हैं, ताकि बहुसंख्य जनता की सहानुभूति व उनके वोट उन्हें मिल सके। नेताओं की इस साजिश का उल्लेख अनत जी ने अपने कई उपन्यासों में किया है। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में श्रमिक दल के उम्मीदवार अरुण का मित्र उमेश जनता की सहानुभूति बटोरने के लिए अपने दो कार्यकर्ताओं पर विपक्षियों द्वारा हमला करवाने का

आरोप लगता है। जबकि वास्तव में उसके कार्यकर्ताओं पर किसी प्रकार का कोई हमला नहीं होता है। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"उमेश ने मुख्य एजेण्ट की ओर देखकर आँखों के इशारे से कुछ पूछा और दूसरे ही क्षण बाद दो नवयुवक माथे और हाथों पर पट्टियाँ लिए सामने आ गए। मैंने अखबार वालों से बात कर ली है। टेलीविज़न वालों से भी।..... टेलीविज़न और अखबारों में इन दोनों लड़कों को लेकर जो खबर आएगी उससे कम-से-कम पाँच प्रतिशत हमदर्दी के वोट मिलने का पूरा विश्वास है।..... ये दोनों प्रेस और टेलीविज़न के जरिए लोगों से यह कहेंगे कि विरोधी दल के गुंडों ने उन पर हमला किया था।"[44]** इस उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार उम्मीदवार अपने प्रतिपक्षी को हराने एवं उसकी छवि खराब करने व जनमत प्राप्त करने की साजिश रचते हैं।

अनत जी ने अपने उपन्यासों में यह भी दर्शाया है कि चुनाव के दौरान विपक्षी पार्टी के लोग अपने प्रतिपक्षी व उसके पार्टी के सदस्यों पर हमला करवाते हैं, उनकी सभाओं व जुटावों में दंगा-फसाद करवाते हैं, उनके एजेण्टों के घरों में आग लगवा देते हैं और इन सारे कृत्यों का दोष अपने विपक्षी पर मढ़ते हैं। 'क्यों न फिर से' उपन्यास का पात्र अजय जयराम अपने विपक्षी पार्टी के इन्हीं कृत्यों का शिकार होता है। उपन्यास में अजय जयराम के विपक्षी अजय के एजेन्टों के घरों पर पथराव करते हैं, जिसमें दो लोग घायल हो जाते हैं। उनके एजेन्टों को अपने पक्ष में करने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन भी देते हैं, उन्हें तोहफे देकर उन्हें खरीदेने का प्रयास करते हैं। किन्तु इस घटना के दूसरे दिन यह खबर अखबारों में इस प्रकार छापी जाती है जिसमें अजय जयराम को ही दोषी बताया जाता है। तात्पर्य यह कि इस घटना के पीछे अजय का ही हाथ है। विपक्षी अपने कृत्यों का सम्पूर्ण दोष अजय व उसकी पार्टी के सिर मढ़ देते हैं। ताकि जनता अजय की पार्टी से नफरत करने लगे और वे लोग अजय को वोट न देकर उन्हें अपना मत दें। इस घटना के संदर्भ में जब

पार्टी का प्रधानमंत्री अजय से जवाब-तलब करता है तब अजय उन सारी घटनाओं का जिक्र करता है, जिन्हें विपक्षियों ने अंजाम दिया था। अपने खिलाफ अखबारों में छपी खबरों को झूठा प्रमाणित करते हुए वह प्रधान मंत्री से कहता है- **"सारी बातें गलत हैं। न तो हमारे किसी आदमी ने उनकी गाड़ियों पर लाठियों से प्रहार किए हैं और ना ही किसी पर तलवार से वार हुआ है। उलटे हमारे एजेन्टों के दो घरों को तोड़ा-फोड़ा गया है।"**[45] विपक्षियों के द्वारा रची जाने वाली इसी प्रकार की साजिश का शिकार 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास की पात्र स्वस्ति होती है। चुनाव-प्रचार के दौरान स्वस्ति पर विपक्षी द्वारा हमला करवाया जाता है जिसमें स्वस्ति को काफी चोट आ जाती है। गंभीर रूप से घायल होने की वजह से स्वस्ति को कई दिनों तक अस्पताल में भर्ती रहना पड़ता है। किन्तु इस बात को विपक्षी पार्टी के लोग अखबारों में गलत ढंग से पेश करवाते हैं। वे लोग इस घटना को जनता की सहानुभूति बटोरने का नाटक मानते हैं। विपक्षियों के इस प्रकार के षडयंत्रों का खुलासा करते हुए स्वस्ति का रिश्तेदार रीतेश कहता है- **"उन लोगों ने तुम्हारी दुर्घटना को हमारी ही पार्टी की ओर से हुए एक नाटक प्रमाणित करने में कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा है।"**[46] उपर्युक्त वर्णित उदाहरणों से स्पष्ट है कि चुनाव के समय चुनावी उम्मीदवार चुनाव जीतने हेतु तथा विपक्षी को हराने के उद्देश्य से निम्न से निम्न स्तर के राजनीतिक हथकंडों को भी अपनाने से नहीं चूकते हैं। तात्पर्य यह कि वे राजनीति में साम-दाम-दण्ड-भेद वाली सभी नीतियों का इस्तेमाल करते हैं ताकि सत्ता उनके हाथ आ जाए।

वोटों की खरीद-फरोख्त: चुनावी सरगर्मी में विपक्षियों के एजेन्टों को भी बहला-फुसलाकर, विविध प्रकार के प्रलोभन व धमकी देकर उन्हें अपने पक्ष में कर लेना तथा उनसे अपने पक्ष में जनता से वोट करवाने की अपील करना इत्यादि गतिविधियाँ भी देखने को मिलती हैं। चुनावी-प्रक्रिया के इन राजनीतिक षडयंत्रों को अनत जी ने अपने उपन्यासों में बड़ी संगीदगी से प्रस्तुत किया है। अनत जी के 'चुन-चुन-चुनाव', 'मुड़िया पहाड़ बोल

उठा', 'आसमान अपना आँगन' व 'क्यों न फिर से' आदि उपन्यासों में चुनाव के दौरान मतदाताओं की खरीद-फरोख्त, उन्हें विविध प्रकार के उपहार (सिलाई मशीन, वाशिंग मशीन, टेलीविज़न, डी. वी. डी. प्लेयर, इत्यादि) देना, नौकरी देना, पदोन्नति करना आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है। अनत जी ने यह दर्शाया है कि चुनाव के समय प्रत्येक प्रत्याशी अपने क्षेत्र के मतदाताओं को अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर उनके मत को अपने पक्ष में तो करता ही है। इसके साथ ही वे विपक्षी पार्टी के क्षेत्र के मतदाताओं, मुख्य कार्यकर्ताओं, एजेन्टों आदि को भी खरीदने से नहीं चूकता है। इसके लिए वे विपक्षी दल के गरीब परिवारों के घरों में जा-जाकर उनसे आत्मीयता बनाते हैं, उन्हें पैसा तो देते ही हैं इसके साथ बिन योग्यता वाले को नौकरी देने व पदोनन्ति करने से भी नहीं चूकतेहैं । विपक्षी के एजेन्टों को भी भारी-भरकम रकम देकर खरीदने की कोशिश की जाती है और उनके मुख्य कार्यकर्ताओं को भी अपने पक्ष में शामिल करने की साजिश रची जाती है। यदि विपक्षी का एजेण्ट व मुख्य कार्यकर्ता उनके पक्ष में जाने से इंकार कर देते हैं तो वे उन्हें नजरबंद करने से भी नहीं चूकते हैं। 'क्यों न फिर से' उपन्यास में अजय के विपक्षी अजय के चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं के घरों में पैसा, तोहफा इत्यादि भिजवाते हैं ताकि उनके वोट भी उन्हें ही मिलें। इस संदर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है- **"अजय जयराम के अपने ही एक प्रमुख कारिंदे ने उसे बताया कि उसके बेटे को पचास हजार रुपए दिए गए। पार्टी कि एक फरमाबरदार सदस्या की बहन के घर सिलाई की मशीन छोड़ी गई। गुडलैंड्स के एक व्यक्ति ने यह बताया कि उसके भाई को टी.वी. सेट और डी.वी.डी. प्लेयर हासिल हुए।..... जयन जीतू ने यह सूचना दी कि पड़ोस के गाँव में वितरण के लिए आज दिन में उसके लिए एक व्यापारी मित्र के यहाँ से बीस वाशिंग मशीन नकद खरीदी गई।"**[47] विपक्षियों द्वारा मुख्य कार्यकर्ताओं व एजेन्टों की खरीद-फरोख्त का सजीव अंकन 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में भी किया गया है। उपन्यास में श्रमिक दल के उम्मीदवार अरुण के एजेन्टों को विपक्षी द्वारा खरीद लिया जाता है। जिसका उल्लेख लेखक ने इस प्रकार किया है- **"अरुण**

के दोनों साथी उम्मीदवारों के चेहरे पर परेशानी साफ दिख रही थी। पता चला कि पार्टी के दो प्रमुख एजेण्ट विरोधी दल की ओर से खरीद किए गए थे और वे दोनों 'न्यू-ग्रोव' के कई घरों में जा-जाकर मतदाताओं को उस दूसरी ओर कर रहे थे।"[48] इसके अतिरिक्त 'चुन-चुन-चुनाव' व 'आसमान अपना आँगन' उपन्यास में भी चुनाव के समय मतदाताओं व एजेन्टों की खरीद-फरोख्त का सजीव अंकन हुआ है।

पोलिंग बूथ पर कब्जा करना: चुनावी सरगर्मी के दौरान न सिर्फ विरोधियों की छवि खराब करने, उन पर हमला करवाने व उनके मतदाताओं की खरीद-फरोख्त की जाती है बल्कि इसके साथ-साथ उन्हें चुनाव में पराजित करने के हर संभव प्रयास भी किए जाते हैं। कभी विरोधियों के इश्तिहारों को फाड़ दिया जाता है तो कभी उन इश्तिहारों के ऊपर अपना इश्तिहार चिपकाकर उन्हें पूरी तरह से ढक दिया जाता है। कभी-कभी तो पोलिंग बूथ पर विपक्षियों के एजेंटो के रूप में अपने एजेन्टों को खड़ा कर दिया जाता है ताकि वे मनमाने ढंग से अपने पक्ष में अनपढ़ और विपक्षियों के वोटों को डलवा सकें। इन समस्त गतिविधियों की झलक अनत जी उपन्यासों में कई स्थानों पर देखी जा सकती है। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में अरुण व उमेश के माध्यम से उपर्युक्त वर्णित गतिविधियों को चित्रित करने का प्रयास किया गया है। चुनाव-प्रचार के समय वैश्य महासभा के प्रधान के जिम्मे पार्टी के झंडे, तमगे, इश्तिहार, कमीज और अन्य चीजें छोड़ते हुए उमेश ने कहा था- **"इन इश्तिहारों का इस्तेमाल चुनाव से पहले वाली रात में होना है। हम चाहते हैं कि यहाँ से पोलिंग स्टेशन तक रास्ते के किनारे पड़ने वाली कोई भी इमारत इस रंग से बच न पाए। पुलिस से बात कि जा चुकी है। आप सभी निर्भय होकर इन सारे इश्तिहारों को प्रतिद्वंद्वियों के पहले से लगे इश्तिहारों पर चिपका देंगे। उनका एक भी इश्तिहार दिखाई न पड़े। हमें छा जाना है।..... हमारे कुछ एजेण्ट विरोधी दल के एजेण्ट के रूप में पोलिंग स्टेशन पर होंगे ताकि वे अपने ढंग से अनिश्चित वोटों को हमारे पक्ष में ला सकें।"[49]** पोलिंग बूथों पर

विपक्षियों के एजेण्ट के स्थान पर अपने एजेण्टों की नियुक्ति के संदर्भ में 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास की पात्र स्वस्ति अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं से कहती है- **"हमें घर-घर अपने मतदाताओं से कहना होगा कि वे इस प्रतीक्षा में न रहें कि हमारी सवारी उन तक पहुँचे तभी वे घर से निकलेंगे। वे उन्हीं की कारों से पोलिंग स्टेशन पर पहुँचे पर वोट जहाँ देना है वहीं दे।..... कई लोग ऐसे भी होंगे जो उन लोगों की पार्टी की कमीज और बाझज पहने हुए होंगे और बालोट पेपर पर उनके क्रास यहाँ के तीनों व्यक्तियों के नामों के सामने लगेंगे।"[50]** उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस प्रकार चुनाव के दिन पोलिंग बूथों पर अपने एजेन्टों को विपक्षियों के एजेन्टों के पहनावे में खड़ा करके आमजनता को गुमराह करके उनका मतदान अपने पक्ष में करने की चाल चली जाती है।

चुनावी उम्मीदवारों की प्रेस व कानून से साठ-गाँठ: अनत जी ने यह भी उद्घाटित किया है कि चुनाव के समय चुनावी उम्मीदवारों द्वारा प्रेस, मीडिया व कानून को भी खरीद लिया जाता है। ऐसा वे इसलिए करते हैं ताकि जनमत बटोरने में व विपक्षियों के दोषों को जनता के सामने रखने में उन्हें कोई रोक-टोक न सके। समस्त घटनाओं को वे अपने ढंग से तोड़-मरोड़कर जनता के सम्मुख प्रकट कर सकें। जनता के समक्ष स्वयं को सच्चा जनसेवक बनने का ढोंग रच सकें। 'क्यों न फिर से' उपन्यास में अजय जयराम के विपक्षी कानून व प्रेस से साठ-गाँठ करके अजय के विरुद्ध षडयंत्र रचते हैं। इस संदर्भ में अजय प्रधानमंत्री से कहता है- **"इसका मतलब है कि यह षडयंत्र विपक्ष और प्रेस की मिलजुलकर पकाई गयी खिचड़ी है।"[51]**

जनता की दोगली मनोवृत्ति: अनत जी ने चुनावी सरगर्मी में उम्मीदवारों की जालसाजी के साथ-साथ चुनाव के समय आम जनता की दोगली मनोवृत्ति का भी चित्रण किया है। चुनाव के समय बहुत से मौकापरस्त लोग प्रत्येक प्रत्याशी के साथ होने का दावा करते हैं

और उनसे विविभ प्रकार के लाभ (नौकरी, पदोन्नति, पैसा, टी.वी. सेट, वाशिंग मशीन, सिलाई मशीन इत्यादि) प्राप्त करते हैं। वोट माँगने वाले हर प्रत्याशी से वे यही कहते हैं कि वोट तो हम आपको ही देंगे। किन्तु वास्तव में वे ऐसा नहीं करते हैं। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में अमीचन्द के माध्यम से जनता की इस दोगली मनोवृत्ति का पर्दाफाश किया गया है। अमीचन्द के दोहरे चरित्र को उद्घाटित करते हुए अरुण अपने मित्र उमेश से कहता है- **"मैं तो इस बात से डरता हूँ कि चारा लेकर भी न उड़ जाए। दोनों दलों की ओर से खाता है। इसका बड़ा बेटा इलाके के तुम्हारे एक प्रतिद्वन्द्वी का बहुत ही घनिष्ठ दोस्त है।"**[52]

स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की शासन-प्रणाली की कटु-आलोचना: अनत जी ने चुनावी सरगर्मी के साथ-साथ चुनाव के पश्चात् मंत्रिमण्डल में होने खींचातानी, मंत्रियों की जनता के प्रति उपेक्षाभाव, पदासीन मंत्रियों की घूसखोरी, भाई-भतीजावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद आदि को बढ़ावा देने वाली प्रवृत्ति तथा स्वार्थी मनोवृत्ति का सजीव चित्र खींचा है और उसकी कटु-आलोचना की है। इसके साथ ही यह भी दर्शाया है कि नवनियुक्त पदासीन मंत्रियों द्वारा विपक्ष के कार्यकाल में कार्यरत कुशल, वरिष्ठ व अनुभवी कर्मचारियों पर तरह-तरह के झूठे आरोप लगाकर उन्हें काम से निकाल दिया जाता है और उनके स्थान पर अपने सगे-संबंधियों को नियुक्त कर दिया जाता है, भले ही वे अनुभवहीन, अयोग्य व कम उम्र के हों। अनत जी अपने देश की राजनीतिक परिघटनाओं को चित्रित करने के साथ-साथ स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की शासन-प्रणाली की कटु-आलोचना भी करते हैं और राजनीति विषयक अपने मत को भी प्रस्तुत करते हैं। 'तीसरे किनारे पर' उपन्यास में राकेश के माध्यम से अनत जी ने अपनी राजनीति विषयक मान्यता को प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"राजनीति से उसे चिढ़ नहीं थी। क्योंकि वह जानता था कि**

राजनीति ही देश को चलाती है।..... उसके अपने विचार में राजनीति जब सशक्त होती है तो वह देश के कल्याण के लिए होती है लेकिन जब वह नामर्द होती है तो देश को भीतर-ही-भीतर खोखला बना जाती है। उसे जब अपना उल्लू सीधा करना होता है तब वह जनता के बीच जात-पात और न जाने कौन से जहर को फैला देती है।..... उसकी आँखों के सामने इस समय भाई-भतीजावाद बाँस की तरह बढ़ता जा रहा था। एक ओर अराजकता दूसरी ओर तनाव। एक ओर अभाव दूसरी ओर दिलबहलाव। उसे अपने देश का पूरा माहौल जहरीला दिखाई पड़ता। बेकारी। असंतोष।। कहीं पथराव, कहीं दंगा-फसाद, कहीं हड़ताल, कहीं प्रदर्शनकारियों का जुलूस। कहीं तानाशाही, कहीं तनाव।..... इन सभी के नीचे कुचला जा रहा था गरीब का अरमान।..... नपुंसक राजनीति हमें कहाँ ले जाएगी? कहाँ से कहाँ तो ला चुकी है? अब और कहाँ तक ले जाएगी?"[53] उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से अनत जी ने न सिर्फ अपनी राजनीति विषयक मत को दर्शाया है बल्कि देशव्यापी राजनीतिक समस्याओं एवं उसमें व्याप्त अराजकता को भी अभिव्यक्त किया है। तथा राजनीति के शोषणतंत्र में पिसते आमजनता के मनोभावों एवं उनकी कुंठा को भी व्यक्त किया है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अनत जी ने अपनी पैनी निगाह व संवेदनशील हृदय से देश की राजनीतिक गतिविधियों के समस्त पहलुओं पर लेखनी चलायी है और पाठकों के समक्ष स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक यथार्थ की सच्ची तस्वीर पेश की है।

ग) आर्थिक संघर्ष

अनत जी ने अपने उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के सामाजिक, राजनीतिक संघर्ष के साथ-साथ उनके आर्थिक संघर्ष को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त किसान, मजदूर के जीवन संघर्ष को वाणी प्रदान की है। उन्होंने इसके

साथ ही साथ आम आदमी की आर्थिक विपन्नता के विभिन्न कारणों पर भी प्रकाश डाला है। जिसके चलते आम आदमी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर पाता है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- 'जम गया सूरज', 'तपती दोपहरी', 'चौथा प्राणी', 'हड़ताल कल होगी', 'चुन-चुन-चुनाव', 'अपनी ही तलाश', 'अपनी-अपनी सीमा', 'पर पगडंडी नहीं मरती', 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'शब्दभंग', 'अचित्रित', 'लहरों की बेटी', 'चलती रहो अनुपमा' व 'मेरा निर्णय' आदि में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त आर्थिक तंगी, उसके कारणों एवं आर्थिक तंगी की वजह से उत्पन्न अनेक समस्याओं- पारिवारिक कलह, अशिक्षा, नशाखोरी, जुआ की लत, वेश्यावृत्ति, दाम्पत्य जीवन में कड़वाहट आदि व पात्रों की मानसिक कुंठा व निराशा की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। अनत जी अपने उपन्यासों में आप्रवासी भारतीयों के अभावग्रस्त जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। आप्रवासी भारतीय मजदूरों की आर्थिक विपन्नता का चित्रण 'तपती दोपहरी' उपन्यास में किया गया है। उपन्यास के मुख्य पात्र राजेन के माध्यम से लेखक ने इस समस्या का उद्घाटन किया है। लेखक की टिप्पणी है- **"राजेन उन लोगों के बारे में सोचता रहा जो बेरोजगार थे। जिनके बच्चों को रोटी नहीं मिलती थी, जिनके पास कपड़े नहीं थे। स्कूल जाने के लिए कलम नहीं थी, कल ही की तो बात है, उसके पड़ोस की एक औरत उसके घर आकर रो रही थी। किसी दूसरे गाँव में उसका एक मात्र भाई मर गया था और वहाँ पहुँचने के लिए उसके पास न तो बिन पेबन्द की कोई साड़ी थीऔर न ही बस के लिए भाड़ा ही था।..... राजेन को यह ज्ञात था कि कुछ घरों की हालत तो इससे भी गई-गुजरी होगी।"[54]** 'मेरा निर्णय' उपन्यास में भी अनत जी ने अमिता के परिवार के माध्यम से आर्थिक तंगी से जूझते बहुसंख्यक आमजनता की परेशानियों एवं उससे निजात पाने के उपायों का भी उल्लेख किया है। इस संदर्भ में उपन्यास की नायिका अमिता अपनी माँ का हवाला देते हुए कहती है- **"मेरी माँ तब दो गायों के साथ बकरियाँ भी पालकर घर चलाती**

थी। हमारे अस्तबल का छाजन दीवार सहित ढह गया था तो हफ्ते भर के लिए उस भारी बरसात में घर के भीतर पनाह देनी पड़ी थी। दोनों गायों में एक तो उस भारी बरसात में दम तोड़ गई थी। दूसरी गाय खूँटे से बंधी एक बार बैठी तो फिर कभी टाँगों पर खड़ी नहीं हो पायी और चूँकि गो-पालन के बिना जीवन-निर्वाह का कोई दूसरा रास्ता था ही नहीं, सो छः महीने बाद कहीं जाकर हमारी गोशाला में दो गाय और एक बछिया हो पायी थी, जिससे कुछ संतुलन आ सका था।"[55] इसी आर्थिक तंगी के चलते अमिता के पिता का सही तरीके से इलाज नहीं हो पाता है और उनकी मृत्यु हो जाती है। परिवार का भरण-पोषण करने हेतु अमिता की माँ को गाय व बकरियाँ पालनी पड़ती है तथा अमिता को इंग्लैंड जाना पड़ता है ताकि वह वहाँ अपनी पढ़ाई जारी रखने के साथ-साथ पार्ट-टाइम जॉब करके घर के खर्च में मदद कर सके।'पर पगडंडी नहीं मरती' उपन्यास का नायक विक्रम अपने अभावग्रस्त जीवन के माध्यम से अपने समाज में व्याप्त आर्थिक विपन्नता को निम्न शब्दों में व्यक्त करता है- **"डेढ़ मील के फासले पर था वह स्कूल। गर्मी के दिनों में रास्ते के गर्म कोलतार पर चलते हुए जब बच्चों के पाँव जलने लगते तो वे लोग आम की आंठी पर लसोड़ा रगड़कर तलुओं से चिपकाकर चलते थे।"[56]** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि भारतीय मजदूरों के पास इतनी सामर्थ्य नहीं होती थी कि वे अपने बच्चों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

'जम गया सूरज' उपन्यास में अनत जी ने लालमन के माध्यम से आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्थिक तंगी का चित्र खींचा है। आर्थिक तंगी की वजह से किसान, मजदूर अपने बच्चों का न तो उचित ढंग से पालन-पोषण कर पाते हैं और न ही उन्हें शिक्षा दिला पाते हैं। आर्थिक विपन्नता की वजह से लालमन अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाता। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"गाँव के कई लड़के अपनी पढ़ाई बीच में ही बंद कर चुके थे पर उन सभी के लिए तो ऐसा कर जाने की मजबूरी थी। उनमें एक भी ऐसा नहीं**

था जिन्होंने अपनी इच्छा से पढ़ाई छोड़ दी हो। सभी के लिए पैसे का अभाव ही सबसे बड़ा कारण था।"[57]

अनत जी अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ आप्रवासी भारतीयों की तंगहली का वर्णन किया है अपितु उन्होंने उन विभिन्न परिस्थितियों को भी उजागर किया है जिनकी वजह से आमजनता की आर्थिक स्थिति अत्यंत ही दयनीय हो जाती है। देश में नवयुवकों की बेरोजगारी, बेकारी, नौकरी में प्रमाणपत्र व कार्यकुशलता के स्थान पर जातिवाद, भाई-भतीजावाद, चापलूसी, घूसखोरी आदि को वरीयता देना तथा कंपनी व फैक्टरियों में कम आय पर महिला कामगारों की नियुक्ति करना आदि कारणों से भी आर्थिक समस्या नहीं सुलझ पाती। स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त बेकारी की समस्या को अनत जी ने अपने कई उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। 'तपती दोपहरी' उपन्यास में अनत जी बेकारी की समस्या का उल्लेख करते हुए लिखते हैं- **"आज के बेकार लोगों में बहुसंख्या पढ़े-लिखे नवयुवकों की थी। उसके गाँव ही में नहीं बल्कि द्वीप भर में सीनियर, जी. सी.ई. और एच. एस. सी. के लंबे-चौड़े प्रमाण-पत्रों के साथ हजारों नवयुवक बेकार थे। सरकार को उन पर तरस आ गया तो उन्हें इधर-उधर रास्ते बनाने-बुहारने के काम दे दिए गए थे।"[58]** स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त नवयुवकों की बेरोजगारी व बेकारी का चित्रण अनत जी ने 'पर पगडंडी नहीं मरती' व 'मेरा निर्णय' उपन्यास में भी किया है। 'पर पगडंडी नहीं मरती' उपन्यास का पात्र विक्रम स्वयं की बेरोजगारी का हवाला देते हुए कहता है- **"नौकरी मिली ही होती तो पायोनियर कार्प्स में भर्ती ही क्यों होता? सोचा तो यही था कि उधर तीन साल बिताकर लौटने के बाद सरकार में अच्छी-ख़ासी मान्यता मिल जाएगी और कहीं-न-कहीं नौकरी मिल ही सकती थी। नौकरी की तलाश में इधर से उधर भटकते रहने वालों की संख्या सुनने में आया दुगुनी हो चली थी। उसके लिए एक ही चारा था। फिर से खेतों में। खेतों से निकलकर सेना में भर्ती होते वक्त सोचा था, इन खेतों से हमेशा के लिए विदाई**

ले ली थी।..... सुना था आर्मी सर्विस का अनुभव प्रमाण-पत्रों से कम नहीं हुआ करता।"[59] 'मेरा निर्णय' उपन्यास की मुख्य पात्र अमिता अपने देश में बढ़ती बेकारी की समस्या एवं सरकार द्वारा इस समस्या के निदान हेतु उठाए गए कदम के बारे में कहती है- **"देश में बाँस की तरह बढ़ती चली आ रही बेकारी की नाजुक परिस्थिति के बीच सरकार के सामने बस एक ही विकल्प था। सबसे अधिक जरूरतमंदों के लिए सप्ताह में चार दिन की नौकरी का प्रबंध।"**[60] स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में शिक्षित नवयुवकों की बेकारी व बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है जिसे लेखक ने अपनी अन्य रचनाओं में भी उजागर किया है। 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में भी अनत जी ने शिक्षित नवयुवकों की बेरोजगारी, बेकारी व उससे उत्पन्न खीझ व अकुलाहट तथा सरकार के प्रति नवयुवकों के विद्रोही स्वर को मुखरित किया है। इस स्थिति को अनत जी ने उपन्यास की नायिका 'स्वस्ति' के माध्यम से चित्रित किया है। स्वस्ति फ्रांस से छः वर्षों के शिक्षण के उपरांत फ्रेंच साहित्य में परास्नातक की डिग्री लेकर स्वदेश (मॉरिशस) लौटती है। वह नौकरी हेतु कई जगह आवेदन पत्र भरती है किन्तु कहीं से भी उसका उत्तर नहीं आता है, जिसकी वजह से वह अत्यंत व्याकुल व परेशान रहती है। इसी क्रम में जब वह देश के अन्य शिक्षित नवयुवकों की बेरोजगारी व उनकी आर्थिक तंगी से रु-ब-रु होती है। तब वह अत्यंत दुखी हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप वह भविष्य में नौकरी न करने का निश्चय करती है और देश की राजनीति में शामिल होकर शासनतंत्र की अव्यवस्था को ठीक करने का निर्णय लेती है। देश में व्याप्त बेरोजगारी, आर्थिक तंगी एवं तज्जनित निराशा व कुंठा तथा युवकों के आक्रोश को लेखक ने निम्नवत् प्रस्तुत किया है- **"जिस निर्णय को जानने की बेताबी से वह जूझ रही थी वह तीन ही सप्ताह पहले उसके भीतर चाह के रूप में पैदा हुआ था तब जब उससे यह कहा जाता रहा था कि अभी तो फ्रांस से उसके लौटे पूरा वर्ष भी नहीं हुआ था जबकि कई ऐसे लोग दो-दो तीन-तीन या इससे भी अधिक वर्षों से बेकार घूम रहे थे। वह खुद अपने आँखों भी देख चुकी थी उन सारे स्नातकों का विरोध प्रदर्शन भी। वह बस गत्तों पर के दो वाक्य थे जिसकी वजह से उसने**

अपने उस तेरहवें आवेदन पत्र को फाड़ दियाथा। दाढ़ी वाले दुबले पतले उस युवक के हाथ के गत्ते पर उसने पढ़ा था- विधवा माँ की गाय बकरियाँ तो गयी ही थीं, जमीन भी गिरवी पड़ी है, बस प्रमाण-पत्र अब भी मुट्ठी में हैं। वह दूसरा गत्ता एक लड़की के हाथ में था। - यह एम. ए. की डिग्री मेरे पास सात सालों से है उतनी ही बेकार जितनी मैं। उस हुजूम में उस तरह के बेशुमार वाक्य थे- अंगारों और ओलों से लिखे हुए। जहाँ-तहाँ आँसू भी थे जो स्वस्ति को हक की आवाज न लग कर रियायत सी माँगती प्रतीत हुई थी।"[61] उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में नवयुवकों की बेरोजगारी एक ज्वलंत समस्या थी जिसका कोई सफल निदान सरकार नहीं कर पा रही थी। अनत जी के अपने उपन्यासों में इन स्थितियों की सफल अभिव्यक्ति की है।

अनत जी ने देश में बढ़ती नवयुवकों की बेरोजगारी, आर्थिक तंगी के मूल कारणों में महिला कामगारों को वरीयता देने को भी माना है। स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में औद्योगिक क्षेत्र में विस्तार होने के कारण अनेक विदेशी कंपनियों ने मॉरिशस पर अपने उद्योग धंधे शुरू किए। विदेशी कंपनियाँ अपने फैक्टरियों में पुरुष कामगारों की तुलना में महिला कामगारों को नौकरी पर रखना बेहतर समझती थीं। क्योंकि इससे उन्हें कम आय पर अधिक कर्मचारी मिल जाते थे। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में अनत जी ने 'जोन फ्रांस' नामक विदेशी फैक्टरी में कार्यरत महिला कामगारों के माध्यम से इस स्थिति को दर्शाया है। 'तपती दोपहरी' उपन्यास में भी नवयुवकों की बेरोजगारी व उनकी आर्थिक तंगी के प्रमुख कारणों में स्त्रियों का कामकाजी होना माना गया है। जिसकी वजह से पुरुषों को काम नहीं मिल पाता है। क्योंकि जितना काम महिला कामगारों द्वारा कम आय में करवाया जाता है। उतना काम करवाने के लिए पुरुषों को अधिक पारिश्रमिक देना पड़ेगा। इसी वजह से पुरुषों की बेकारी की समस्या और बढ़ जाती है। इस संदर्भ में उर्मिला राजेन से कहती हैं- **"यह तो मानोगे न कि यहाँ की काम करने वाली प्राय: सभी औरते इसलिए**

नहीं काम करती क्योंकि उनके घर रोटी नहीं। खेतों को छोड़कर स्कूलों से लेकर दफ्तरों तथा कारखानों तक औरतें काम करती हैं तो केवल इसलिए ताकि उनके अपने जीवन में अधिकाधिक सुख और आनंद आ सके। ऐसा करने से उनका उद्देश्य तो पूरा हो जाता है पर उन मर्दों के रास्ते बंद हो जाते हैं जो अपने बच्चों की रोटी के लिए काम ढूँढते हैं और पाते नहीं क्योंकि उन स्थानों पर औरतें बैठी होती हैं।"[62] उर्मिला के इस मत का समर्थन करते हुए राजेन भी एक दृष्टांत देता है। वह राधन नामक दर्जी का उदाहरण देते हुए कहता है- **"वह नौकरी ढूँढने शहर पहुँचा। वह तीन जगहों पर पहुँचा लेकिन हर जगह एक-दो औरतों को मर्दों के कपड़े सीते देख उसे निराश लौट आना पड़ा। अब तुम ही कहो, हर स्थान पर पहुँचने की धुन में अगर सुखी घर की औरेते भी मर्दों के स्थान पर जा बैठें तो फिर बेकार मर्दों को काम मिले तो कहाँ? यह तो एक प्रमाण रहा; इस तरह की अनेक बातें हैं।"[63]**

यह सच है कि स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में पुरुष बेरोजगारी का एक कारण सस्ते महिला मजदूरों की उपलब्धता है। पर हमें यह भी संज्ञान में रखना होगा कि इन महिला कामगारों की भी अपनी आर्थिक मजबूरी होती होगी जिसके कारण वे कम पारिश्रमिक मिलने पर भी काम करने को तैयार हो जाती हैं और मालिकों को अपने आर्थिक शोषण का मौका देती हैं। कोई भी मिल मालिक पुरुष की तुलना में महिला कामगारों को पसंद करते हैं क्योंकि एक तो उन्हें कम पारिश्रमिक देना पड़ता है, दो वे महिला कामगारों का मनचाहा शोषण कर सकते हैं और तीन महिला कामगार उनका विरोध नहीं करेंगी, कभी संगठन बनाकर हड़ताल आदि नहीं करेंगी। इस स्थिति को बदलने में मजदूर संगठनों और सरकार की अहम भूमिका हो सकती है। वे पुरुष और महिला कामगारों के लिए समान काम के लिए समान वेतन और काम के समान घंटे की माँग कर सकते हैं और उसे लागू करवा सकते हैं। इससे एक तरफ पुरुष कामगारों को समान अवसर की प्राप्ति होगी तो दूसरी तरफ महिला कामगारों को शोषण से मुक्ति मिलेगी। इसके लिए मजदूर संगठनों

और सरकार के साथ साथ लेखकों और बुद्धिजीवियों को भी सक्रिय प्रयास करना होगा। केवल आरोप लगाने और चिंता करने से कुछ नहीं होगा। इस प्रसंग में कहीं न कहीं अनत जी भी चूकते हुए दिखाई पड़ते हैं।

अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यह भी दर्शाया है कि देश में किसानों की बढ़ती आर्थिक तंगी के प्रमुख कारणों में से एक कारण 'मालिकों द्वारा मजदूरों के हक को मारना' भी है। गोरे मालिकों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के विविधोंमुखी शोषणों में-श्रम का शोषण भी शामिल है। मजदूरों का यह शोषण उस समय से जारी है जब से वे इस द्वीप में गिरमिटया मजदूर के रूप में कदम रखते हैं। मालिकों द्वारा इन मजदूरों से कठोर-से-कठोर काम करवाया जाता था और जब वेतन देने की बारी आती थी तब वे उन मजदूरों पर अनेक प्रकार के झूठे आरोप लगाकर उनके परिश्रमिक से दण्ड स्वरूप वेतन में कटौती कर देते थे। जिसके परिणामस्वरूप मजदूरों को बहुत ही कम वेतन मिल पाता था, जिससे उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं हो पाती थी। उनकी स्थिति वैसी-की-वैसी ही रह जाती थी। मजदूरों की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में लेखक ने लिखा है- **"उसके सामने डेढ़ सौ साल का पुराना इतिहास झिलमिलाकर रह गया। सूरज के धधकते उजाले में उसने मजदूरों कोपसीने में तर देखा। महसूसा उन मजदूरों के जन्म को, उनके जीवन को, उस स्थिति-परिस्थिति को-उनकी मौत को। डेढ़ सौ साल बाद वह मजदूर विरासत में कुदाली और गड़ासा पाकर आज भी मजदूर था। लगभग वही लिबास-वही झोपड़ी-वही हालत-उस लंबी यात्रा के बाद भी वही मंजिल..... वह लंबे रास्ते की यात्रा नहीं थी। एक बहुत बड़ी गोलाई की यात्रा थी, जहाँ आदमी वहीं को लौट आता है, जहाँ से यात्रा शुरू करता है।"**[64] गोरे शासकों के शोषणतंत्र व मजदूरों के प्रति उनके द्वारा किए गए अन्यायपरक व्यवहार को लेखक ने निम्न शब्दों में

व्यक्त किया है- **"ईख के खेतों के बीच से होते हुए अमित विस्तृत फैली हरियाली को देखता रहा, सोचता रहा, कितनी विराट कटनी होगी इस साल। कटाई शुरू होने में कुछ ही दिन तो बाकी थे। देश की पूरी समृद्धि खुली हवा में फैली हुई थी। फसल के बाद वह समृद्धि चार तिजोरियों में बंद हो जाएगी। खेतों के ये सारे मजदूर अपनी बूँद-बूँद देकर उसी थोड़े-बहुत ऐतिहासिक हक से संतुष्ट हो जाएँगे। एक बार उसने एक मजदूर को कहते सुना था, चीनी निगोड़ी गोरी होती है, इसलिए गोरों की हो जाती है। यही परम्परा थी। डेढ़ सौ साल से चला आ रहा नियम था। द्वीप का यही धर्म हो गया था- गन्ना खाये गोरवन सीठ्ठी हम लोगन।"[65]** उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि किस प्रकार भारतीय मजदूरों के श्रम का शोषण किया जाता था जिसके परिणामस्वरूप उनकी आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं हो पाता था। और उन्हें अनेक प्रकार के अभावों से गुजरना पड़ता था। गोरे मालिकों द्वारा आप्रवासी भारतीय मजदूरों के साथ किए गए श्रम के शोषण का उल्लेख करते हुए अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि मॉरिशस द्वीप में जिन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्थिक स्थिति कुछ सुधरी हुई नजर आती है वे अपने मेहनत के बल पर ऐसा नहीं कर पाते बल्कि इसके पीछे उनकी चापलूसी प्रवृत्ति काम करती है। मॉरिशसीय समाज में कुछ ऐसे भारतीय मजदूर भी थे जो अधिक धन कमाने की लालसा से व अपनी हैसियत बनाने के उद्देश्य से गोरे मालिकों की जी हुज़ूरी करते थे तथा जमीन-जायदाद के लोभ में धर्म-परिवर्तन करने से भी नहीं चूकते थे। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में 'सुरुजवा' नामक पात्र के माध्यम से उन आप्रवासी भारतीय मजदूरों की चापलूसी प्रवृत्ति का उल्लेख किया गया है जिसके तहत वे गोरे शासकों, नेताओं व मंत्रियों की खुशामद करके अपने बच्चों का भविष्य सुरक्षित करते हैं, अपनी आर्थिक तंगी को दूर करते हैं और आधुनिक भौतिक सुख-सुविधाओं को इकठ्ठा करते हैं। ऐसे लोगों का चरित्रांकन करते हुए नेहा कहती है- **"एक-दो गरीब लोग भी धनी हो ही गए होंगे सुरुजवा की तरह। सुरुजवा तो राजनेताओं के आगे-पीछे दौड़ते रहने वाला आदमी था। उसके बड़े लड़के को बिना किसी**

खास योग्यता के वजीफा मिल गया था। उसकी बेटी को मंत्रालय में नौकरी मिल गयी थी। खुद सुरुजवा भी बैलगाड़ी बेंचकर दो ट्रक खरीद चुका था। गाँव का वह पहला आदमी था, जिसके घर रंगीन टेलीविज़न पहुँचा था और वीडियो भी।"[66] उपर्युक्त उदाहरण से पता चलता है कि मॉरिशस में जिन भारतीय मजदूरों की आर्थिक स्थिति अन्य भारतीय मजदूरों से भिन्न है उसके पीछे का मूलकारण उनकी चापलूसी प्रवृत्ति है।

अनत जी ने यह भी चित्रित किया है कि आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों एवं उनकी संतानों की आर्थिक विपन्नता के पीछे देश में बढ़ती मंहगाई की समस्या भी है। स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त महँगाई की समस्या से गरीब, किसान और मजदूरों की आर्थिक स्थिति और भी डांवाडोल हो जाती है। अनत जी ने 'तपती दोपहरी', 'हड़ताल कल होगी' व 'पर पगडंडी नहीं मरती' आदि उपन्यासों में महँगाई की समस्या से जूझते मजदूरों की आर्थिक तंगी का चित्रण किया है। देश में दिनों-दिन बढ़ती महँगाई के कारण आमजनता विशेषकर किसानों और मजदूरों के जीवन में बहुत अंतर पड़ता है। महँगाई की वजह से अन्य व्यवसायों के कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि हो जाती है किन्तु किसानों व मजदूरों के वेतन में वृद्धि नहीं होती जिसकी वजह से उनके दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में भी बाधा पड़ती है। इस संदर्भ में 'तपती दोपहरी' उपन्यास का पात्र राजेन कहता है- **"जब कमर तोड़ महँगाई के कारण हर जगह वेतन में वृद्धि हुई है तो फिर यहाँ भी तो होनीजरूरी है। घर पर माँ कह रही थी कि पहले बाजार की जो टोकरी दस रुपये में भर जाती थी अब पचास में भी खाली रह जाती है।"[67]** द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप मॉरिशस में वस्तुओं के आयात की कमी होने एवं उनके मूल्य वृद्धि की वजह से भी मजदूर व किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है। जिसकी वजह से उनकी मूलभूत आवश्यकताओं- रोटी, कपड़ा और मकान आदि की पूर्ति नहीं हो पाती है। उनके छोटे-छोटे से सपने बिखर जाते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध की वजह से उत्पन्न महँगाई का वर्णन करते हुए

विक्रम कहता है- **"सेना में प्रवेश होने से पहले दो रुपये में पूरे परिवार के लिए सप्ताह भर का चावल आ जाता था, अब तो बीस रुपये में भी नहीं आता था। लड़ाई ने महँगाई को और भी बढ़ावा दे दिया था।"[68]** देश में निरंतर बढ़ती महँगाई की समस्या पर चिंता जाहिर करते हुए विक्रम सोचता है- **"दुकान से लौटकर विक्रम ने दोनों टोकरियाँ नीचे रखीं और खरीदी हुई चीजों की फेहरिस्त के साथ बैठ गया। चीजों को जिन दामों में छोड़ गया था वे चीजें उन दामों से दुगुनी और तीन गुनी कीमत तक पहुँच गयी थीं।..... जो कपड़ा-लत्ता कल आठ आने में आता था अब सवा - डेढ़ रुपए में मिलता है। लोग गुजारा कैसे कर पाते हैं। मुझे तो लगता है हमारा घर बनने से रहा।"[69]** उपन्यास में विक्रम के ये उद्गार न सिर्फ उसकी आर्थिक तंगी का द्योतक है बल्कि उसके साथ-साथ द्वीप के सभी किसान, मजदूर व आमजनता के उद्गार हैं, जो स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में आर्थिक तंगी की समस्या का सामना कर रहें हैं और दिनों-दिन बढ़ती महँगाई के कारण अपने ख़्वाहिशों का गला घोट रहें हैं।

स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिलने से सैलानियों के आगमन से जहाँ एक ओर देश की अर्थ-व्यवस्था मजबूत होती है। व्यापारी वर्ग की आमदनी में वृद्धि होती है वहीं दूसरी ओर उन्हीं सैलानियों की वजह से देश की आमजनता को विशेषकर, किसान व मजदूरों को महँगाई की समस्या का सामना करना पड़ता है। जिसकी वजह से देश की आमजनता और भी गरीब होती चली जाती है। उनके पास अपनी जरूरत की चीजें खरीदने तक की हैसियत नहीं रह पाती है। इस समस्या को अनत जी ने 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में मिशेल और अमित के आपसी वार्तालाप के माध्यम से चित्रित किया है। मिशेल मछली खाने की अपनी इच्छा को जब्त करते हुए, मछली के दामों में हुई मूल्य वृद्धि का उल्लेख करते हुए तथा उसके प्रमुख कारणों का निराकरण करते हुए अपने मित्र

अमित से कहता है- **"तुम भी देख लो, झींगों और लाब्स्टर खाने के लिए जेब में आठ गुने ज्यादा पैसे होने चाहिए।,**

सैलानियों की कृपा है और क्या।"

साथ-साथ चीजों के दाम पर कोई खास निगरानी भी तो नहीं। लूट का बाजार खुला हुआ है, लोग लूट रहे हैं।"

व्यापारियों का पौ हमेशा बारह रहता है। आजकल तो धनी होने का सबसे आसान तरीका यही है कि आदमी दुकान खोलकर बैठ जाए।"[70] उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से अनत जी ने उन तथ्यों को भी प्रकाश में लाने का प्रयास किया है जिनकी वजह से देश में महँगाई की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

अनत जी अपने उपन्यासों के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में बढ़ती आर्थिक असमानता को भी चित्रित किया है। देश की अधिकांश जनता आज भी उसी आर्थिक तंगी को झेलती चली आ रही है जिसे स्वतन्त्रता से पूर्व भी झेल रही थी। उनकी आर्थिक स्थिति में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नजर नहीं आता है। अपितु दिनों-दिन बढ़ती महँगाई के कारण वे और गरीब होते जा रहे हैं। जो किसान थे वे मजदूरी करने लगे और जो मजदूर थे वे भीख माँगने की कगार पर हैं। एक तरफ मॉरिशस की अधिकांश जनता रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए तरसती है तो दूसरी तरफ व्यवस्था में सत्तासीन, नेता व मंत्री तथा इनके रिश्तेदार व इनकी चापलूसी व खिदमत करने वाले निरंतर अमीर होते जा रहें हैं। ऐसे ही मुट्ठी भर लोगों के हाथ में देश की सुख-सुविधाएँ व संपन्नता कैद है। सरकार में रहने वाले तथा उससे साठ-गाँठ करने वाले चापलूस लोग लगातार विकास की प्रक्रिया में अग्रसर हैं जबकि आमजनता अभावों में जीवन गुजार रही है। अमीर दिनों-दिन और ज्यादा अमीर होते जा रहें हैं और गरीब दिनों-दिन और ज्यादा गरीब होते जा रहें हैं। देश की इसी अव्यवस्था और आर्थिक असमानता को अनत जी ने

अपने उपन्यासों के माध्यम से दर्शाया है। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में नेहा के माध्यम से देश की इस अव्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। नेहा कहती है-**"ये सारे मंत्री लोग भी तो एकदम उसी हवा के झोंके की तरह थे। बड़ों को बढ़ा जाते हैं और छोटों को दबा जाते हैं। वह तो अपने सामने गुजरे और याद रहने वाले उस पहले चुनाव से यही तो सुनती आ रही थी कि 'छोटे लोगों' की जिंदगी बेहतर बनाई जाएगी। यह बात रेडियो से भी आती और अखबारों से भी, जिन्हें कभी-कभार नेहा देख ही लेती थी। तब से आज तक दस वर्ष बीत गए। छोटे लोग-गरीब आदमी-वहीं-के-वहीं थे और बड़े लोग बढ़े ही जा रहे थे। धनी और भी धनी होता चला जा रहा था। उसके अपने ही गाँव की स्थिति काफी थी, पूरे देश की हालत समझ जाने के लिए। उसके अपने गाँव का एक भी मजदूर तो धनवान नहीं हो सका था जबकि जिसके घर कार थी, उसके यहाँ दूसरी कार भी आ गई थी।"[71]**
उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की आर्थिक असमानता को अनत जी ने स्पष्टता से व्यक्त किया है। अनत जी ने इस आर्थिक असमानता को 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग' उपन्यास में भी चित्रित किया है। इस उपन्यास में अनत जी ने मार्क ट्वेन की उस बात का खंडन किया है जिसके आधार पर मार्क ट्वेन ने इस देश के बारे में कहा था कि- ईश्वर ने स्वर्ग की रचना मॉरिशस के नकल पर की है। अनत जी ने इस स्वर्ग सदृश देश के बहुसंख्यक जनता के नारकीय जीवन का यथार्थपरक अंकन किया है। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"यह देश स्वर्ग तो है, लेकिन मुट्ठी भर लोगों का स्वर्ग है।..... यह देश करीबन दस लाख लोगों का देश है; लेकिन यह स्वर्ग केवल नौ सौ आदमियों का है बाकी का तो यह---।"[72]** लेखक का यह कथन दर्शाता है कि स्वातंत्र्योतर मॉरिशस का वैभव तो मुट्ठी भर गोरे व पूँजीपतियों की मुट्ठी में कैद है बाकी शेष जनता तो अभावों और तंगहाली में गुजारा कर रही है। मॉरिशसीय समाज में व्याप्त इस आर्थिक वैषम्य की झाँकी अनत जी ने 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में भी दर्शाया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र अमित देश की

आर्थिक असमानता (गोरे मालिकों की भव्यता व आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की विपन्नता) का उल्लेख करते हुए जानीन से कहता है-**"देख रही हो जानीन। दाईं ओर की ये झोपड़ियाँ। ये उन लोगों की दुनियाँ है जो हमेशा से यहाँ रहकर जूझते रहे। और यह बाईं ओर समुद्र की गोद के ये आलीशान बंगले। यह उन लोगों की दुनिया है जो कहीं और रहते हैं और यहाँ बस अवकाश के क्षणों में आते हैं।..... गली के दाहिने छोर से बायें तक का फासला जमीन-आसमान का है। यह फासला रबर के फीते की तरह है। समय के साथ यह और भी बढ़ता जाता है। इन बंगलों के कारण इन छोटी कुटियों को जो सबसे बड़ा फायदा पहुँचता है, वह जानती हो क्या है? शुरू के आधे दिन इन कुटियों के आँगन में धूप पहुँच ही नहीं पाती। इधर के बच्चे बंगलों की छाया में पलते हैं।"**[73] अनत जी ने न सिर्फ अपने देश की आर्थिक विपन्नता व आर्थिक असमानता का चित्र खींचा है बल्कि इसके साथ ही आम आदमी की उस जीवनाकांक्षा को भी मुखरित किया है जिसमें वह सिर्फ अभावहीन जिंदगी जीने की लालसा रखता है। 'शब्दभंग' उपन्यास का नायक रोबीन की जीवनाकांक्षा के माध्यम से आम आदमी की जीवनाकांक्षा को चित्रित किया गया है। रोबीन पेशे से पत्रकार है उसकी आमदनी इतनी नहीं है कि वह अपनी पत्नी और एक बच्ची की सही तरीके से परवरिश कर सके। वह कर्ज लेकर अपना मकान तो बनवा लेता है किन्तु सही समय पर उस कर्ज को भर नहीं पाता है। परिवार का भरण-पोषण करने के साथ-साथ उसे कर्ज को भरने की चिंता भी सताती रहती है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह लाटरी खरीदने का काम करने लगता है ताकि वह अपने छोटे से परिवार की सही ढंग से परवरिश कर सके। रोबीन द्वारा लाटरी खरीदने के संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"इधर दो सालों से रोबीन को बार-बार यह एहसास होता कि उसकी तनख्वाह पर्याप्त नहीं। अब उसे इस बात का भी एहसास होने लगा था कि विभा से उसकी अच्छी-ख़ासी नौकरी छुड़वाकर उसने भारी भूल की थी। और इस बात का भी पछतावा होता कि अपनी अहमन्यता में आकर उसने ससुराल की ओर से मिलने वाली संपत्ति को लेने से इंकार कर दिया था।..... इधर कुछ महीनों से तो वह लाटरी भी खरीदने लगा था। सहज धन की चाह पैदा हो गयी थी**

उसके भीतर।..... वास्तव में वह सहज धन की नहीं बल्कि एक सहज जीवन की ललक थी। सहज जीवन कि भी नहीं; एक बेहतर जीवन की चाह थी वह। अपनी पत्नी के बेहतर व्यक्तित्व, अपनी बेटी के लिए बेहतर परवरिश, बेहतर शिक्षा, बेहतर भविष्य और पूरे परिवार के लिए बेहतर घर, बेहतर कार, बेहतर स्टेटस।"[74]

अनत जी ने अपने उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की आर्थिक विपन्नता का सजीव अंकन किया है। साथ ही आर्थिक विपन्नता को उत्पन्न करने वाले विभिन्न कारणों को भी तलाशने की कोशिश की है। इसके अतिरिक्त उस आर्थिक विपन्नता से उत्पन्न पारिवारिक कलह, मानसिक तनाव, पारिवारिक विघटन, दाम्पत्य जीवन में बिखराव, नशा की लत, गैर-कानूनी धंधे अपनाना, वेश्यावृत्ति में शामिल होना आदि परिणामों पर भी प्रकाश डाला है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय मजदूरों व उनकी संततियों की आर्थिक तंगी एवं आर्थिक तंगी की वजह से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं तथा आर्थिकतंगी के प्रमुख कारणों की सच्ची तस्वीर पेश की है।

घ) धार्मिक व सांस्कृतिक संघर्ष

अनत जी ने अपने उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों व उनकी संतानों (भारतवंशी मॉरिशसवासी) के सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक संघर्ष का चित्रण करने के साथ ही उनकी धार्मिक सांस्कृतिक आस्था व पराई भूमि में उसके सरंक्षण के प्रयास को भी चित्रित किया है।

धार्मिक आस्था: भारत के समान मॉरिशस भी एक बहु भाषा-भाषी तथा धार्मिक-सांस्कृतिक सम्बन्धों वाला राष्ट्र है। जहाँ विभिन्न धर्म, संप्रदाय व जाति के लोग रहते हैं। सभी संप्रदाय के लोग अपने-अपने धर्मानुसार पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि के नियमों को अपनाते हैं। एक जमाने में भारत से बड़े पैमाने पर शर्तबंद मजदूरों को मॉरिशस लाया गया था। भारत से मॉरिशस आए ज़्यादातरशर्तबंद मजदूर हिन्दू धर्म को मानने वाले थे। इस प्रदेश के संकट पूर्ण स्थिति में भी उन लोगों ने हिन्दू धर्म, संस्कृति एवं ईश्वर का साथ नहीं छोड़ा था। बाद में आगे चलकर बहुत से शर्तबंद मजदूर वापस भारत चले गए परंतु तीन लाख से भी ऊपरमजदूर वहीं रह गए। मॉरिशस के इन आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों ने अपनी संततियों में हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया। उस प्रदेश में उनके लिए यही आशा की एक मात्र किरण थी जिसके बल पर उन्होंने संकटों का सामना किया और जीवित रहे। अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों एवं उनकी संतानों की हिन्दू धर्म संबंधी आस्था एवं उन्हें जीवंत बनाए रखने व आने वाली पीढ़ियों को हस्तांतरित करने के प्रयासों का चित्रण किया है। उनके द्वारा रचित लगभग सभी उपन्यासों, विशेषकर 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'चौथा प्राणी', 'शेफाली', 'चुन-चुन-चुनाव', 'चलती रहो अनुपमा', 'लहरों की बेटी', 'आसमान अपना आँगन' व 'मेरा निर्णय' आदि में विभिन्न पात्रों के माध्यम से आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था को चित्रित किया गया है। भारत के समान मॉरिशस में भी बहुदेववाद की प्रथा प्रचलित है। जिसके कारण कोई हनुमान भक्त है, तो कोई कृष्ण भक्त है। कोई शिव का उपासक है, तो कोई दुर्गा जी पर आस्था रखता है। किसी के आदर्श राम हैं तो किसी के कृष्ण हैं। कोई तुलसीदास कृत रामचरितमानस का नित्य पाठ करता है, तो कोई गीता का पारायण करता है। कोई हनुमान चालीसा का पाठ करता है, तो कोई दुर्गा की उपासना करता है। अनत जी अपने उपन्यासों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से हिन्दू धर्म के बहुदेववाद

का समर्थन किया है। 'तीसरे किनारे पर' उपन्यास में अरुणा व उसके पिता (सहदेवसिंह) के माध्यम से आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था का चित्रण किया गया है। अरुणा के पिता बच्चों के उज्ज्वल भविष्य हेतु गाँव छोड़कर शहर में बस जाते हैं। शहर में रहते हुए भी वे अपने रीति-रिवाजों व धार्मिक आस्था को बनाए रखते हैं। उनकी आस्था हनुमान जी पर रहती है। अपने सुख-दुख के क्षणों में वह हनुमान जी को ही याद करते हैं, उनकी पूजा करते हैं। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"वह हनुमान जी का भारी भक्त था। घर के आगे चौतरे पर सुबह-शाम दिया जलाते हुए वह हनुमान जी से यही प्रार्थना करता था कि उसके खानदान में कम-से-कम एक व्यक्ति तो कुछ बनकर दिखा दे।"**[75] सहदेवसिंह की धार्मिक आस्था से संबन्धित एक अन्य उदाहरण दृष्टव्य है- **"शाम को सहदेवसिंह ने हनुमान जी के चौतरे के सामने पूरा घंटा बिता दिया था। उसकी पत्नी ने भी देवी-देवताओं की मनौतियाँ की थीं। दिन भर अरुणा का उपवास था। गाँव छोड़कर शहर आ जाने पर बहुत से लोग गाँव के रस्म-रिवाजों को पीछे छोड़ आते हैं लेकिन सहदेवसिंह उन्हें साथ लाया था। उसके सभी बच्चे, चाहे उसके धार्मिक स्वभाव को महत्व न देते हों पर अरुणा ने हमेशा वही किया जो उसने अपने बाप को करते पाया था। सुबह-शाम वह भी हनुमान जी के चौतरे पर प्रार्थना करने की आदत बना बैठी थी।"**[76] उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से अनत जी ने धार्मिक कर्म-काण्ड के सभी रूपों- पूजा-पाठ, व्रत-उपवास, प्रार्थना-मनौती आदि का सटीक चित्रण किया है। इससे यह भी प्रतीत होता है कि मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था में हिन्दू धर्म के सभी कर्मकाण्ड मौजूद हैं। 'आसमान अपना आँगन'के शोभा के माध्यम से आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था का चित्रण किया गया है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"एकदम पूर्व की ओर पड़ने वाले कमरे में उसने माँ दुर्गा, श्री राम, श्री कृष्ण, हनुमान और महादेव की तस्वीरों के सामने हर शाम दीये और अगरबत्तियाँ जलाकर प्रार्थना करती थी। यही कारण था कि मांस-मछली वह सबसे बाद में पकाती- प्रार्थना से पहले कभी नहीं।"**[77] 'चलती रहो अनुपमा' में अनुपमा की धार्मिक

आस्था एवं ईश्वर पर उसके अटूट विश्वास को चित्रित किया गया है। अनत जी द्वारा रचित 'चौथा प्राणी' उपन्यास में वीणा व उसके परिवार के माध्यम से आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था एवं विश्वासों का चित्रांकन किया गया है। इसी तरह 'चुन-चुन चुनाव' उपन्यास में स्वस्ति की धार्मिक आस्था का चित्रण किया गया है। 'जम गया सूरज' में भी आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था को दर्शाया गया है। 'लहरों की बेटी' में विदुला व उसके पिता लखन के माध्यम से आप्रवासी भारतीयों के धार्मिक लगाव को देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त अनत जी के 'तीसरे किनारे पर' व 'शेफाली' नामक उपन्यासों में भी स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास की अभिव्यक्ति हुई है। 'अपना मन उपवन' उपन्यास के रामचरण के जरिए भी भारतीयों की धार्मिक आस्था को दर्शाया गया है-**"रामचरण पुस्तकों वाले कमरे में गीता पढ़ रहा था। हर रविवार को ऊँची आवाज में गीता का पाठ उसका अपना एक ऐसा नियम था जिसे आज तक उसने कभी नहीं तोड़ा।"**[78] अनत जी ने यह भी चित्रित किया है मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों द्वारा वे सभी धार्मिक कृत्य किए जाते हैं जो भारत में प्रचलित हैं। आप्रवासी भारतीयों ने परायी भूमि में रहकर गोरों के शोषणतंत्र के शिकार होकर तथा गोरों द्वारा धर्म परिवर्तन हेतु दिए गए प्रलोभनों को ठुकराकर अपनी हिन्दू धर्म विषयक धार्मिक निष्ठा को बचाए और बनाए रखा है। इसी वजह से मॉरिशस में आज भी दुर्गा-पूजा, रामनवमी, महाशिवरात्री आदि के व्रत-उपवास व पूजा-पाठ की परम्परा विद्यमान है और रामचरितमानस, हनुमान चालीसा, गीता आदि धार्मिक ग्रन्थों के नित्य पाठ किए जाते हैं तथा विशेष अवसरों (शादी-ब्याह, पढ़ाई के लिए विदेश गमन, नौकरी लगने, गृहप्रवेश आदि) पर सत्यनारायण भगवान की कथा, सुंदरकांड का पाठ व रामायण का पाठ और दुर्गा-पूजा कराने का विधान है। इसके साथ ही किसी शुभ काम करने या विदेश गमन से पूर्व मन्दिर व देवालयों में जाकर भगवान के दर्शन करने का भी विधान है। इन क्रिया-

कलापों का चित्रण अनत जी के कई उपन्यासों- 'तीसरे किनारे पर', 'चौथा प्राणी', 'चलती रहो अनुपमा', 'क्यों न फिर से', 'मेरा निर्णय' आदि में हुआ है।

सांस्कृतिक संघर्ष: भारत के समान मॉरिशस भी एक बहु-सांस्कृतिक सम्बन्धों वाला राष्ट्र है। जहाँ विभिन्न धर्म, संप्रदाय, जाति के लोग रहते हैं तथा जिनकी अपनी-अपनी निजी भाषा-बोली, खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार, मत, मान्यताएँ, रूढ़ियाँ व अंधविश्वास आदि हैं। तथा सभी संप्रदाय के लोग अपने-अपने मतानुसार पर्व-त्यौहार, पूजा-पाठ आदि नियमों को मनाते हैं। मॉरिशस में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, क्रियोल, चीनी, तमिलआदि भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के लोग रहते हैं। भारत के समान यहाँ पर भी गंगा-जमुनी संस्कृति को देखा जा सकता है। यहाँ पर सभी धर्म के लोग अपने-अपने रीति-रिवाजों, पर्व-त्यौहारों, परम्पराओं, लोकविश्वासों आदि का पालन करते हैं। मॉरिशस में सभी संप्रदायों में प्रचलित त्यौहारों को मनाया जाता है। यहाँ पर हिन्दू धर्म में प्रचलित सभी पर्व-त्यौहार मनाए जाते हैं।

पर्व और त्यौहार: अनत जी ने अपने उपन्यासों में आप्रवासी भारतीय मजदूरों एवं उनकी संतानों द्वारा मनाए जाने वालेविभिन्न पर्वों व त्यौहारों का चित्रण किया है। भारत के समान मॉरिशस भी बहु-सांस्कृतिक सम्बन्धों वाला राष्ट्र है। वहाँ पर हिंदुओं के अलावा मुस्लिम, ईसाई, चीनी, क्रियोल आदि विभिन्न धर्मावलम्बी लोग रहते हैं। सभी लोग अपने-अपने पर्वों और त्यौहारों को पूरी निष्ठा से मनाते हैं। मॉरिशस में हिन्दू पर्व- होली, दीपावली, दशहरा, रामनवमी, दुर्गापूजा (नवरात्रि), रक्षाबंधन के अलावा मुस्लिमों के-

ईद, मोहर्रम आदि तथा तमिलों के कावड़ी आदि पर्वों को मनाया जाता है। ईसाइयों के क्रिसमस व नववर्ष आदि पर्व भी मनाए जाते हैं। अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों में आप्रवासी भारतीयों द्वारा मनाए जाने वाले विभिन्न पर्वों-त्यौहारों का चित्रण किया है। 'लहरों की बेटी' उपन्यास में होली पर्व के उल्लास का वर्णन किया गया है। विदुला का भाई जीवनदत्त होली पर्व के महत्व का जिक्र करते हुए सभा के सदस्यों से कहता है- **"वैसे भी होलिका-दहन बुराई को खत्म करने के लिए ही होता आ रहा है। बुराई के होते खुशियाँ नहीं मनाई जा सकतीं। होली के रंगों का आनंद लेने के लिए आवश्यक रहा है कि सामने की बुरी चीजों को जला दिया जाए। वैसे तो इस गाँव में हम न जाने कब से होलिका का पुतला बनाकर झाल-ढोलक के साथ चौताल गाते हुए उसको जलाते आए हैं। कल फगवा है। रंगों का त्यौहार, घर-घर मिठाइयाँ पकाने और बांटने का दिन।..... पहली बार कात्रसेर में इस तरह का होलिका दहन होने जा रहा है और कल का फगवा भी अपने ढंग का निराला ही होगा।**

कुछ ही देर बाद ढोलक और झाल पर चौताल शुरू हो गया-

होली खेले रघुबीरा अवध में,होली ..... होली.....

केकर हाथ सोने की पिचकारी,

केकर हाथ होवे अबीरा।

राम के हाथ सोने पिचकारी,

सीता के हाथ अबीरा।

होली खेले रघुबीरा, अवध में..... होली..... ।"[79]

अनत जी ने अपने उपन्यासों में होली के अतिरिक्त सामूहिक रूप से मनाए जाने वाले हिन्दू धर्म के अन्य पर्वों व त्यौहारों का भी उल्लेख किया है, जिनमें- दीपावली, रक्षाबंधन,

दुर्गापूजा, रामनवमी, महाशिवरात्रि आदि प्रमुख हैं। शिवरात्रि महापर्व को मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों एवं उनकी संततियों द्वारा पूरी आस्था एवं श्रद्धा से मनाया जाता है। इस महापर्व के शुभ अवसर पर प्रत्येक श्रद्धालु शिवरात्रि से चार दिन पूर्व पैदल चलकर परीतालाब (गंगा तालाब) से काँवर में जल भरकर ले आते हैं और शिवरात्रि के दिन त्रियोले के महेश्वरनाथ शिवालय में जलाभिषेक कर पूजा-पाठ कर वापस आते हैं। इस अवसर पर वे अपनी श्रद्धानुसार दान-दक्षिणा भी देते हैं तथा भूखों व गरीबों को भोजन भी कराते हैं। अनत जी के 'जम गया सूरज', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'पर पगडंडी नहीं मरती' व 'आसमान अपना आँगन' उपन्यास में शिवरात्रि महापर्व के प्रति आप्रवासी भारतीयों की आस्था एवं उत्साह का सजीव अंकन किया है। इस संदर्भ में 'पर पगडंडी नहीं मरती' उपन्यास से एक उदाहरण प्रस्तुत है- **"अंजू अपने गाँव के छोटे-से शिवालय में शिवरात्रि देखी थी।..... अंजू ने सुन रखा था कि परीतालाब में जो मेला लगता है वह बहुत ही भव्य होता है।..... सफेद वस्त्रधारियों का बहुत बड़ा हुजूम था वह। रास्ते भर अलग-अलग गाँवों के अलग-अलग जुलूसों से होती हुई अंजू अपने पाँवों के दर्द को भूल गयी थी।..... वहाँ के वातावरण से उसे सुखद आश्चर्य हुआ था।..... उसके गाँव से पचास-पचहत्तर मर्द आए हुए थे। सभी सफेद कुर्ता, सफेद धोती में थे। सफेदी का समंदर उमड़ आया था।"[80]** 'अपना मन उपवन' उपन्यास में ईसाईयों का पर्व नववर्ष मनाने का उल्लेख किया गया है। यद्यपि यह पर्व ईसाइयों का है, बावजूद इसके हिन्दू व मुस्लिम संप्रदाय के लोगों द्वारा भी बड़े उल्लास के साथ इसमें भाग लिया जाता है। नववर्ष के आगमन को लेकर लोगों में जो उमंग और उल्लास है उससे संबन्धित एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"तीसरे मिलेनियम की तैयारी विश्व-भर की तरह मॉरिशस में भी तामझाम के साथ महीनों पहले शुरू हो गयी थी।..... लोग उसकी चर्चा के अलावा बाकी कोई चर्चा कर ही नहीं पा रहे थे। गाँवों और शहरों में भारी उमंगें थीं।..... सरकार की ओर से अगाध धन खर्चकरके 31 दिसंबर 1999 की रात को दिन में परिवर्तित कर देने की पूरी व्यवस्था की जा चुकी थी।**

देश में ऐसे वृहद सांस्कृतिक कार्यक्रमों की चर्चा हो रही थी जो इससे पहले कभी हुई ही नहीं। सारी आधुनिक सुविधाओं का पूरा फायदा उठाकर रोशनी, रंगों और ध्वनियों से पोर्टलुई के बन्दरगाह को उस चमत्कार के लिए सजा दिया गया था।..... पूरा मॉरिशस अधीरता के साथ 31 दिसंबर की रात बारह बजने की प्रतीक्षा कर रहा था।"[81] इस नववर्ष के स्वागत के लिए रामचरणके घर में रंभा, नमिता, खतीजा, गिरधर और धीरज इन सभी के परिवार इकट्ठा होते हैं।

रीति-रिवाजों का उल्लेख: अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय मजदूरों द्वारा निभाए जाने वाले रीति-रिवाजों की भी अभिव्यक्ति की है। भारत के समान मॉरिशस में भी विभिन्न प्रकार के रस्म-रिवाजों को मनाने की परंपरा है। क्योंकि भारत से जाने वाले आप्रवासी भारतीयों ने मॉरिशस की धरती पर अपने रीति-रिवाजों को जीवंत बनाए रखा था जिनकी वजह से उनकी संततियाँ आज भी उन रस्मों का पूरी शिद्दत से पालन करती हैं। मॉरिशस में बच्चे के जन्मोत्सव, उसका नामकरण, मुंडन, कर्णभेद, विद्यारंभ, विवाह, मृत्यु आदि विभिन्न संस्कारों को मनाने की प्रथा है, जिसमें घर-परिवार, पड़ोस तथा सगे-संबंधी शामिल होते हैं और तत्संबंधित रस्म में अपनी-अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। जन्मोत्सव के अवसर पर पड़ोस की औरतें इकट्ठा होकर सोहर गीत गाती हैं तो विवाह के अवसर पर विवाह से संबन्धित गीत गाती हैं। विवाह के अवसर पर सगे-संबंधियों, पड़ोसियों, हित-मित्रों को निमंत्रित किया जाता है। जिसमें शरीक होकर वे नव-दंपति को सुखमय जीवन-यापन का आशीर्वाद देते हैं। विवाह के रस्म में तिलक, हल्दी, माटी-कोड़ाई, बारात, कोहबर, विदाई आदि रस्म निभाए जाते हैं। वैवाहिक रस्मों का उल्लेख अनत जी के 'तपती दोपहरी', 'चौथा प्राणी' व

'अपना मन उपवन' उपन्यासों में प्रमुखता से हुआ है। 'अपना मन उपवन' उपन्यास में रामचरण के वैवाहिक रस्मों और उसके मित्र गोपी महतो की पोती के वैवाहिक रस्मों के माध्यम से अनत जी ने मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के विवाह पद्धति का वर्णन किया है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"रामचरण हल्दी की रस्म शुरू होने से पहले गोपी महतो के घर पहुँच गया। माटी-कोड़ाई की रस्म को पूरा करने के लिए दुल्हन की फूफू सिर पर डलिया लिए आगे-आगे आँगन से निकली और उसके पीछे रस्म के भोजपुरी गाने गाती हुई दस-बारह स्त्रियाँ चल रहीं थीं। एक ओर बच्चों का कोलाहल था तो दूसरी ओर परिवारों का घांव-मांव। तली जा रही पूरियों और सब्जियों की गंध हवा में फैली हुई थी।"**[82] उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से अनत जी ने न सिर्फ माटी-कोड़ाई रस्म का वर्णन किया है बल्कि इसके साथ ही यह भी चित्रित किया है कि यह रस्म घर की महिलाओं द्वारा सम्पन्न किया जाता है जिसमें लड़के या लड़की की बुआ की विशेष भूमिका होती है। इसी तरह 'तपती दोपहरी' उपन्यास में उर्मिला अपने भाई दर्शन की शादी के अवसर पर अपनी सहेली साधना को निमंत्रित करती हुई अपने घर में होने वाले विभिन्न रस्मों का जिक्र करती है। उर्मिला साधना से कहती है- **"माँ तो कल या परसों न्यौता देने आएगी पर मैं पहले से ही कहे देती हूँ कि भैया की शादी में तुम्हें हल्दी के दिन से हमारे यहाँ रहना होगा।तिलक की एक रात से पहले हमारे यहाँ गीत गवाया जाएगा।..... हल्दी की रात से तुम सभी का खाना-पीना हमारे ही घर होगा।"**[83]

लोक विश्वास व मान्यताएँ: अनत जी ने अपने समाज में प्रचलित उन सभी लोकमान्यताओं- पुनर्जन्म संबंधी मत, पंडितों द्वारा आगामी भविष्य के प्रति की गयी भविष्यवाणी, यात्रा संबंधी शकुन-अपशकुन का विचार, बच्चे के जन्म संबंधी शुभ-अशुभ का विचार, कौड़ी को तिजोरी में रखने से बरकत होना, जमीन पर लकीर खींचने से कर्ज

का बढ़ना, विवाह के अवसर पर बेमौसम बरसात को लड़का या लड़की द्वारा कड़ाही में खाना खाने की वजह बताना इत्यादि लोक-प्रचलित लोकमान्यताओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। जिसे अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्न शीर्षकों में विभक्त कर उनका अवलोकन किया गया है।

नवजात शिशु के जन्म संबंधी शुभ-अशुभ का विचार: अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के उन आप्रवासी भारतीयों एवं भारतवंशी मॉरिशसवासियों के लोक-विश्वासों को चित्रित किया है, जिनका संबंध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारत से रहा है। भारत से संबन्धित होने की वजह से उनके खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, परम्परा, मान्यता, लोक विश्वासों, रूढ़ियों आदि पर भारतीय प्रभाव की स्पष्ट झलक देखी जा सकती है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत में प्रचलित लोक-विश्वासों की उपस्थिती मॉरिशसीय समाज में भी देखी जा सकती है। अनत जी द्वारा रचित 'चौथा प्राणी', 'चुन-चुन-चुनाव' व 'लहरों की बेटी' उपन्यास में मॉरिशस में प्रचलित उस लोकविश्वास को चित्रित किया गया है, जिसके तहत लोग घर में जन्में नवजात शिशु को परिवार की बरकत व हानि का कारण मान लेते हैं। इस प्रकार के लोक विश्वासों की झलक भारतीय समाज में भी देखी जा सकती है। जहाँ पर माँ-बाप अपने शिशु के जन्म के बाद होने वाली बरकत का कारण उसके भाग्य को मानते हैं और कभी-कभी परिवार में होने वाली दुर्घटनाओं का परिणाम उसके दुर्भाग्य से जोड़ देते हैं। अनत जी ने मॉरिशसीय समाज में व्याप्त इस लोकमत को 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में स्वस्ति के जन्म एवं उसके बाद उसके परिवार में होने वाली बरकत के माध्यम से दर्शाया है। स्वस्ति के जन्म के बाद उसके बाप की स्थिति में काफी परिवर्तन आ जाता है। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"वह तो सोने का आंगज लेकर जन्मी थी। उसके जन्मते ही उसके बाप के दिन पलटने शुरू हो गए थे। मंदिर के पिछवाड़े की जंगल पड़ी जमीन को उसका**

बाप सभा की आज्ञा से चार-पाँच बरसों से जोतता आ रहा था। उससे कभी कुछ खास नसीब तो नहीं हुआ था पर स्वस्ति के जन्मते ही टमाटर के पौधे फूलों-फलों से इस तरह से लद आए थे कि गाँव का हर आदमी पुजारी जी के भाग्य की सराहना करने लग गया था। सबसे बड़ी बात तो यह रही कि जब फरवरी महीने में तूफान आया और प्राय: सभी खेतिहरों के खेत तहस-नहस होकर रह गए थे..... स्वस्ति के बाप के खेत को कम हानि पहुँची थी। उसके दो ही सप्ताह बाद बाजार में टमाटर का भाव उस समय के भाव से दस गुना ज्यादा होते देर नहीं लगी थी और सभी के देखते-ही-देखते पुजारी पौधों से सोने की गोलियाँ तोड़ता रहा और तीन ही महीने बाद उसने समुद्री इलाके में पाँच बीघा जमीन खरीद ली।"[84] अनत जी ने 'चौथा प्राणी' व 'लहरों की बेटी' उपन्यास में उस लोकमत को चित्रित किया है, जहाँ पर परिवार में आने वाली विपत्तियों का कारण नवजात शिशु का दुर्भाग्य मान लिया जाता है। 'लहरों की बेटी' उपन्यास में विदुला के जन्म के समय उसकी माँ तारा की मृत्यु हो जाती है। तारा शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहती है। आर्थिक तंगी व सही इलाज के अभाव में उसकी मृत्यु होती है। लेकिन गाँव के लोग विशेषकर औरतें नवजात शिशु को ही तारा की मौत का जिम्मेदार मानने लगती हैं। उस अबोध बच्चे के प्रति नकारात्मक भाव व्यक्त किया जाता है तथा मनहूस आदि शब्दों का सम्बोधन किया जाता है। विदुला के जन्म और उसकी माँ की मृत्यु के संबंध में गाँव के लोगों के बीच जो वार्तालाप होता है, उसकी एक झलक निम्नवत् प्रस्तुत है-

"बेचारी इतनी कम उम्र में चली गयी।"

"अरी, उसकी जगह बच्ची मर गयी होती।"

"वह तो माँ को खाने आयी थी, वह मनहूस क्या मरती, अभी न जाने घर में और किस-किस को खाएगी।"[85]

पुनर्जन्म संबंधी मत: भारतीय संस्कृति में जीव के 'पुनर्जन्म' व 'आवागमन' का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति के प्रति अनत जी की अगाध आस्था थी। अनत जी ने जीव के पुनर्जन्म का समर्थन किया है, जिसकी झलक उनके साहित्य में स्थान-स्थान पर देखी जा सकती है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यास 'एक उम्मीद और' व 'आसमान अपना आँगन' में पुनर्जन्म संबंधी उनकी मान्यता की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। 'एक उम्मीद और' उपन्यास पुनर्जन्म की अवधारण पर केन्द्रित है। इसमें गर्भस्थ शिशु को नैरेटर बनाकर उपन्यास का ताना-बाना बुना गया है। उपन्यास में प्रिया के गर्भस्थ शिशु (भावी नाम- आनंद) के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि व्यक्ति को अपने गलत कर्मों की सजा भुगतने के लिए बार-बार जन्म लेना पड़ता है। उपन्यास में एक अज्ञात शक्ति गर्भस्थ शिशु को उसके पूर्वजन्म के दृश्यों एवं आगामी 25 वर्षों की झलक दिखाता है। गर्भस्थ शिशु पूर्वजन्म में इंसान के रूप में जन्म लेता है फिर वह मुसलमान बन जाता है और धार्मिक कट्टरता की आड़ में धोखेबाज़ी व खून खराबा करता है। जिसकी सजा के रूप में उसे पुन: मानव का रूप दिया जाता है ताकि वह पूर्वजन्म में किए गए गलत कार्यों का प्रायश्चित कर सके। इस संदर्भ में अज्ञात शक्ति गर्भस्थ शिशु से कहती है- **"तुम पिछले जीवन में इंसान जन्मे थे फिर मुसलमान बने। और अपने दूसरे भाइयों को छलने तथा जिसे प्यार किया उसे हर हालत में अपनाने के लिए उसे धोखे में रखकर अपने को हिन्दू बताते रहे। कई हिन्दू भी तुम्हारी तरह अपने को इंसान से अधिक कट्टरपंथी धार्मिक मानकर खून-खराबे करते रहे। किसी की मासूमियत और प्यार के साथ तुमने जो धोखेबाज़ी की है; उसके किए के प्रायश्चित के लिए तुम्हें नया जन्म लेना ही होगा।"**[86] इस उपन्यास में अनत जी ने जीव के आवागमन की शाश्वतता और उसके कारण का भी उल्लेख किया है। उन्होंने दर्शाया है कि मनुष्य संसार में जन्म लेकर धरती, आकाश, हवा, आग, पानी, प्रकाश आदि को प्रकृति से उधार लेकर जीता है। वह सदैव इनका कर्जदार बना रहता है। या इनका कर्ज चुकाना भूल जाता है। जिसकी वजह से जीव को आवागमन के चक्कर काटना पड़ता है। इस संदर्भ में अज्ञात शक्ति

का कथन है- **“मैं सभी का हूँ सभी मुझमें हैं। मैं जीवन देता हूँ, जीवन लेता हूँ और जब तक सूरज उगता-डूबता रहेगा, अंधेरा और उजाला रहेगा, रात दिन होते रहेंगे। आदमी जनमता, मरता और जनमता रहेगा।”[87]** अनत जी के इस उपन्यास में पौराणिक ग्रंथ गीता का प्रभाव देखा जा सकता है। ‘आसमान अपना आँगन’ उपन्यास में मुनमुन नामक पात्र के माध्यम से जीव के पुनर्जन्म की पुष्टि की गयी है। मुनमुन को शांति नामक स्त्री के पुनर्जन्म के रूप में चित्रित किया गया है।

अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि पुनर्जन्म की अवधारण सिर्फ हिन्दू धर्म के लोग ही मानते हैं। मुस्लिम व ईसाई धर्म में पुनर्जन्म की अवधारणा नहीं है। तात्पर्य यह कि अन्य धर्म के लोग जीव के आवागमन व पुनर्जन्म को नहीं स्वीकार करते है। ‘एक उम्मीद और’ उपन्यास में गर्भस्थ शिशु, जो कि पूर्वजन्म में मुसलमान था। वह जब अज्ञात शक्ति से बातचीत करता है तब वह कहता है कि-**“पर मैं मुसलमान हूँ, इस पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं करता। मुसलमान फिर से नहीं जनमता।”[88]** इसी तरह ‘हड़ताल कल होगी’ उपन्यास में ईसाई धर्म द्वारा जीव के पुनर्जन्म को अस्वीकार किया गया है। ईसाई युवती जानीन हिन्दू युवक अमित के प्रति आकर्षण का भाव रखती है। वह अपने और अमित के बीच के वैचारिक मत और भावनात्मक लगाव को पूर्वजन्म का संबंध मानती है। अमित भी यही महसूस करता है। किन्तु जब जानीन अपने नौकर अपाया, जो कि पहले हिन्दू था बाद में ईसाई बन जाता है, से पुनर्जन्म संबंधी मान्यता की सत्यता-असत्यता के बारे में उसका मत जानना चाहती है, तब वह कहता है- **“मैं पहले मानता था।..... उसने अपने गले की सलीब**

को छूते हुए कहा, अब नहीं मानता।"[89] उपर्युक्त दोनों उदाहरणों से स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म के अलावा अन्य किसी भी धर्म में जीव के पुनर्जन्म की बात स्वीकार नहीं की जाती है।

मृत आत्माओं द्वारा अपने शुभचिंतकों को आगाह करना: अनत जी ने अपने उपन्यासों में लोक प्रचलित इस मान्यता को भी दर्शाया है कि सच्चरित व्यक्ति की मृत आत्माएँ अपने परिजनों को भावी घटनाओं से आगाह करती हैं। कभी स्वप्न के रूप में, कभी अदृश्य छाया के रूप में। अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि मृत आत्माएँ न केवल भावी घटनाओं से आगाह करती हैं बल्कि संबन्धित व्यक्ति को कुछ ऐसे राज भी बताती हैं जिनकी किसी को भी जानकारी नहीं होती है। 'आसमान अपना आँगन' उपन्यास में हंस (हरिवंश) को शांति की मृत आत्मा कभी अदृश्य वाणी रूप में तो कभी मुनमुन के माध्यम से कभी अदृश्य छाया के रूप में समय-समय पर आगाह करती है और हवेली से संबन्धित अधिकांश रहस्यों को हंस से बताती है। वह हंस की चुनाव-प्रचार के दौरान होने वाली दुर्घटना के बारे में पहले से ही सचेत कर देती है साथ ही हंस के भावी शिशु के बारे में भी कई बातें बताती है। इसी तरह 'लहरों की बेटी' उपन्यास में लखन की पत्नी तारा की मृत आत्मा लखन को स्वप्न में ढाढ़स बँधाते हुए जीवन में आगे बढ़ने के लिए कहती है- **"तुम मेरे लिए इतना व्याकुल मत होओ। तुम्हें बच्चों का ख्याल रखना है। जब तुम्हारी गोद में अपनी बेटी को छोड़ा था तब गलत बोल गई थी कि वह तुम्हारे ऊपर गई है। वह तो जैसे-जैसे बड़ी हो रही है, मेरी हमशक्ल होती जा रही है। मेरे दोनों बच्चों में तुम अपनी शक्ति और साहस कूट-कूट कर भरना ताकि वे कुछ बन सकें।"**[90]

भविष्यवाणी: अनत जी ने अपने साहित्य के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि भले ही आज मॉरिशस समाज वैज्ञानिक अनुसन्धानों के नित-नए प्रयोगों से समस्त भौतिक सुविधाओं से सम्पन्न हो गया है किन्तु उसके संस्कारों, परंपरागत मान्यताओं, लोकविश्वासों संबंधी मान्यताओं में परिवर्तन नहीं हुआ है। आज भी लोग यात्रा से पूर्व शकुन-अपशकुन का विचार करते हैं। घर के शनि दोष को दूर करने के निमित्त पूजा-पाठ करवाते हैं। बच्चों के विदेश गमन से पूर्व घर में सत्यनारायण की कथा, रामायण का पाठ, दुर्गापूजा आदि का आयोजन करते हैं। इसके साथ ही ज्योतिषशास्त्र का भी अनुकरण करते हैं। हस्तरेखा, सिरोरेखा व आँखों को देखकर किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की भविष्यवाणी करने की प्रथा विद्यमान है। अनत जी के कई उपन्यासों में इन परंपरागत रूढ़ियों व मान्यताओं को चित्रित किया गया है। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'क्यों न फिर से', आसमान अपना आँगन' व 'मेरा निर्णय' आदि उपन्यासों में भविष्यवाणी संबंधी लोक-विश्वास को चित्रित किया गया है। 'मेरा निर्णय' उपन्यास में अमिता की माँ अमिता को इंग्लैंड भेजने से पूर्व अमिता को मंदिर में दर्शन कराने ले जाती है। देवी-देवताओं की पूजा करने के बाद वह मंदिर के पुजारी से अमिता की विदेश यात्रा की कुशलता के बारे में पूछती है। इस संदर्भ में अमिता कहती है- **"मॉरिशस छोड़ने से तीन दिन पहले माँ मुझे अपने साथ लिए त्रियोले के महेश्वरनाथ मंदिर पहुँची थी। पूजा के बाद माँ के अनुरोध पर शंकरनाथ पंडित ने मेरा हाथ देखा था फिर पोथी के पन्ने पलटे थे।..... कोई अड़चन नहीं। आपकी बेटी की यात्रा शुभ होगी। विदेश में भी किसी तरह की परेशानी नहीं होगी फिर भी एक बात अच्छी तरह नहीं जँच रही है।..... पढ़ाई-लिखाई तो बहुत अच्छी तरह से चलेगी। लेकिन..... आपकी बेटी के वापस आने की उम्मीद नहीं दिख रही है। विदेश में ही बस जाने की संभावनाएँ अधिक नजर आ रही हैं।"**[91] पंडित की भविष्यवाणी के अनुरूप ही विदेश में अमिता का जीवन व्यतीत होता है। 'क्यों न फिर से' उपन्यास में भी भविष्यवाणी पर विश्वास करने वालों एवं भविष्यवाणी का व्यक्ति के जीवन में सच साबित होता दिखाया

गया है। पंडित द्वारा महिमा के प्रति की गयी भविष्यवाणी सच साबित होती है। दिल्ली निवासी महिमा जब अपने माँ-बाप के साथ छतरपुर स्थित कात्यायनी मंदिर जाती है। तब वहाँ के पुजारी महिमा की आँखों को देखकर उसके प्रति भविष्यवाणी करता हुआ कहता है- **"आपकी सुपुत्री देश-सेवा विदेशों तक करेगी, लेकिन अपने देश में बिन किए जुर्म की सजा भुगतेगी। इसकी आँखों में जहाँ संकल्प की आभा है वहीं इसके माथे पर बाधाओं की लकीरे भी नजर आ रहीं हैं, लेकिन आँखों का संकल्प इतना प्रबल दिख रहा है कि अगर इस कन्या ने उसे बनाए रखा तो विश्व की कोई बाधा उसके संकल्प को मिटा नहीं सकती।..... आपकी सुपुत्री अगर बाधाओं को पार कर जाने के अपने सामर्थ्य को बनाए रख पायी तो अपनी आभा के साथ देश की सीमा को पार करके विजेता रहेगी।"**[92] मंदिर के पुजारी के कहे हुए वाक्य महिमा के जीवन में अक्षरश: सत्य साबित होते हैं। महिमा अपने पति विमल बजाज की परित्यक्ता होकर जहाँ एक ओर अपने देश में उपेक्षा का शिकार होती है, वहीं दूसरी ओर वह अपनी मेहनत, लगन व दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर मॉरिशस और अमेरिका के भारतीय उच्चायोग में सांस्कृतिक अटायची के पद पर नियुक्त होकर अपने देश का नाम रोशन करती है। अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बरकरार रखते हुए विदेशी भूमि पर भी अपनी पहचान बनाती है।

किंवदंतियाँ: अनत जी ने अपने उपन्यासों के जरिए स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय मजदूरों के मध्य व्याप्त अनेक किंवदंतियों को भी चित्रित किया है। मॉरिशस में परीतालाब, क्यर्पीप का मृगकुंड, मुड़िया पहाड़, कात्रसेर, दे-फेर आदि स्थलों के उद्गम व नामकरण के बारे में अनेक प्रकार के कपोल कल्पित कथाएँ हैं जिनके बारे में लोगों में मतभिन्नता व्याप्त है। 'मुड़िया पहाड़' के बारे में जो लोकविश्वास, लोकमत व आमधारणा है उसका चित्रण 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में किया गया है। 'मुड़िया

पहाड़' के संदर्भ में अपना मत व्यक्त करते हुए झुनिया चाची नेहा से कहती है- **"मुड़िया पहाड़ की चोटी पर वह आदमी न जाने कब से बैठा हुआ था, एक दिन अपने ऊपर के शाप के मिट जाने पर फिर से आदमी बनाकर जमीन पर उतर आएगा।"** जबकि 'मुड़िया पहाड़' के संदर्भ में परमोदवा मौसा की अलग राय है उसके अनुसार गाँव का एक ग्वाला परियों के शाप की वजह से पत्थर बन जाता है। **"नेहा गाँव के परमोदवा मौसा से उस ग्वाले की कहानी सुन रखी थी, जो परियों के शाप से पत्थर बन गया था।"** जबकि नेहा की बचपन की सहेली चम्पा की अलग राय है। वह अपने पिता के मत का हवाला देते हुए कहती है कि 'मुड़िया पहाड़' के संदर्भ में जो कथा प्रचलित है वह झूठी है। उसका मत है कि आदमी कभी पत्थर नहीं बन सकता। बल्कि वह पत्थर ही रहा होगा, जिसको अन्य लोगों ने मानव के शापित होने की घटना से जोड़ रखा है। चम्पा नेहा से कहती है- **" 'मुड़िया पहाड़ की कहानी कपोल कल्पित थी। वह पत्थर का पत्थर ही रहेगा'- मेरे पिता कहते हैं कि मुड़िया पहाड़ की कहानी झूठी है। आदमी कभी पत्थर नहीं बन सकता।"** वहीं परमोदवा मौसा के मत का उल्लेख करती हुई नेहा कहती है कि– **"मुड़िया पहाड़ बरसों से पत्थर बना हुआ घाम-पानी को सह रहा है। एक दिन उसके अच्छे दिन आएंगे वह फिर से पहले जैसा होकर बोलने लगेगा।"**[93] इसी तरह अनत जी ने मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा की जाने वाली कालीमाई की पूजा की शुरुआत के संबंध में जो कथाएँ प्रचलित हैं, उनका भी उल्लेख किया है। 'जम गया सूरज' उपन्यास में मॉरिशस में वर्ष भर में एक बार कालीमाई को बकरे की बलि दिए जाने की परंपरा (बहरिया पूजा) के पीछे छिपे निहित कारणों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही कालीमाई के चबूतरे के निर्माण के संबंध में जो लोकमत है, उसका भी उल्लेख किया गया है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"कालीमाई के बारे में अनेक कहानियाँ थीं। कुछ लोग कहते थे कि यह चबूतरा उस समय बनाया गया था जब भारतीयों को यहाँ गुलाम के रूप में लाया जा रहा था।**

किसी एक गोरे के अत्याचार पर एक दिन सचमुच ही उस स्थान पर कालीमाई की आवाज सुनाई पड़ी थी। उसने अपने भक्तों से कहा था कि वे उसी स्थान पर एक चबूतरा बनाकर हर साल बकरे की बलि दें, बदले में वह गोरों के अत्याचार से उनकी रक्षा करेंगी। संयोग कि बात तो यह थी कि उसी रात गोरे ने भी सपने में काली के दर्शन किए थे। काली ने उससे कहा था कि अगर वह अपने मजदूरों को चबूतरा बनाने के लिए जमीन नहीं देगा तो समूचा परिवार महाकाल का ग्रास हो जाएगा।..... गोरे ने अपने सरदार को बुलाकर हुक्म दिया था कि नीम के पेड़ के नीचे आज ही से कालीमाई का चबूतरा बनना शुरू हो जाए।..... दो ही सप्ताह में चबूतरा बनकर तैयार हो गया था। कोई तीस वर्ष बाद उसी गोरे के बेटे ने उस चबूतरे को ढकोसला कहकर उस पर बैठ गया था, जो उसे नहीं करना चाहिए था। और उसी रात अचानक उसकी मृत्यु हो गयी थी। इस घटना को गाँव के सभी बूढ़े सच बताते हुए कहते हैं कि मृत्यु के समय उस गोरे के बेटे का चेहरा कोयले जैसे काला हो गया था और उसकी लंबी जीभ बाहर आ गयी थी।"[94] इस किंवदन्ती पर विश्वास करके ही आप्रवासी भारतीयों द्वारा प्रत्येक वर्ष कालीमाई के निमित्त बहरिया पूजा का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी लोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार चंदा देकर उसमें शामिल होते हैं। आधुनिक विचारों से सम्पन्न धरमेन यद्यपि इस प्रथा (बहरिया पूजा) को बंद कराने के बारे में सोचता है लेकिन स्वप्न में कालीमाई द्वारा अपने समूचे परिवार को नष्ट करने की बात सोचकर वह अपने मत को बदल देता है। इससे स्पष्ट है कि आज भी मॉरिशसवासियों में कालीमाई के प्रकोप का भय बना हुआ है। जिसकी वजह से वे हर साल बहरिया पूजा का आयोजन करते हैं।

अंधविश्वास: अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय मजदूरों और उनकी संततियों के मध्य व्याप्त तमाम प्रकार के अंधविश्वासों- भूत-प्रेत, चुड़ैल, डी, टोना-टोटका, तंत्र-मंत्र, झाड़-फूँक आदि का सफल चित्रण किया है। 'पर पगडंडी नहीं मरती', 'मुड़िया

पहाड़ बोल उठा', 'लहरों की बेटी' आदि उपन्यासों में उपर्युक्त वर्णित अंधविश्वासों की सफल अभिव्यक्ति हुई है। 'पर पगडंडी नहीं मरती' उपन्यास में सीमा नामक युवती को जब धीरजवा के माँ-बाप अपनी बहू बनाने से इंकार कर देते हैं, क्योंकि वह नीची जाति की थी, तब वह उसी गाँव के एक कुएं में कूदकर अपनी जान दे देती है। उस घटना के बाद से उस कुएं पर हमेशा के लिए सन्नाटा छा जाता है, क्योंकि लोगों को यह भय सताता रहता है कि उस स्थान पर जाने से सीमा का भूत उन पर सवार हो जाएगा। इस संदर्भ में विक्रम का कथन है- **"वह खड़ा कुएं को देखता रहा। वहाँ का पूरा माहौल परिवर्तित था।..... न किस्से होते थे और न रामायण की चर्चा होती। न लोरिकयान गायी जाती, न आल्हा। पूरा गाँव अब उस ठौर से डरता था।..... गाँव के बच्चे-बूढ़े सभी इस बात से भयभीत थे कि कहीं किसी को अकेले पाकर सीमा का साया उस पर सवार न हो जाए।"[95]** भूत-प्रेत,डी और चुड़ैल की उपस्थिती को सच मानने वालों एवं उनके प्रकोप से भयभीत रहने वालों का भी चित्रण अनत जी ने किया है। 'पर पगडंडी नहीं मरती' उपन्यास में विक्रम अपने बचपन को याद करते हुए कहता है- **"वह छोटा था। इस तीन कोनिये रास्ते पर आने से डरता था। गाँव के सभी बच्चे डरते थे।..... चुड़ैल, डी और भूत- तीनों का उस ठौर पर मिलना होता था। बिसना का बाप गाँव का ओझा था। वही वहाँ पर के तीन चिकने पत्थरों पर सिंदूर टीक आता था। सप्ताह में एक बार कपूर भी जलाता और हर महीने पूर्णमासी के दिन दारू भी चढ़ा आता। एक बार चमकी की माँ खेतों से लौटती हुई वहाँ रुक कर पता नहीं क्या कर गयी थी कि दूसरे दिन भूत-चुड़ैल और डी तीनों उस पर सवार हो गईं थीं। रात भर वह 'हाँकी-हाँकी' करती रह गयी थी। बिसना का बाप भी उस पर से भूतों को नहीं उतार पाया था। बोला था कि तीन-तीन भूतों को उतारना उसके बस की बात नहीं थी।"[96]** इसी तरह 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में उमेश चुनाव जीतने हेतु तांचीन कोलो नामक तांत्रिक युवती से अरुण के हितार्थ तांत्रिक प्रयोग करवाता है। वह तांचीन कोलो द्वारा

मंत्रसिद्ध बेबी पाउडर को हमेशा अपने पास रखने की सलाह देता है ताकि उसके प्रभाव से वह मतदान के लिए अधिक-से-अधिक लोगों को अपने वश में कर सके। उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों में भूत-प्रेत, टोना-टोटका, झाड़-फूँक आदि से संबन्धित अंधविश्वास व्याप्त हैं।

आप्रवासी भारतीयों के जीवन में बैठका का महत्व: मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के जीवन में बैठका का महत्वपूर्ण स्थान था। गोरों के अत्याचारों व विविधोंमुखी शोषण से ग्रसित भारतीय गिरमिटिया मजदूर शाम के समय बैठका में एकत्रित होकर अपना सुख-दुख बाँटते थे। और यहीं पर (बैठका में) रामायण, महाभारत, गीता, हनुमान चालीसा, आल्हा, आदि धार्मिक ग्रन्थों की चर्चा करके एक तरफ अपने गम को भुलाने का प्रयास करते, तो दूसरी तरफ इन्हीं ग्रन्थों के नायकों को अपने जीवन का आदर्श स्वीकार करके अपने में साहस व ऊर्जा का संचार करते थे। इतना ही नहीं बैठका में ही वे अपने बच्चों को हिन्दी की शिक्षा देते थे और उन्हें अपनी सभ्यता व संस्कृति का ज्ञान देते थे। इसके साथ ही वे अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक परम्पराओं व मान्यताओं को नयी पीढ़ी में हस्तांतरित करने का प्रयास करते थे। बैठका के माध्यम से भारतीय गिरमिटिया मजदूर एकसूत्र में बँधे रहते थे। एक तरह से बैठका आप्रवासी भारतीयों की सामाजिक, धार्मिक-सांस्कृतिक व साहित्यिक संस्था थी। जहाँ वे अपने समुदाय व बस्ती की विभिन्न प्रकार की समस्याओं को सुलझाते थे। बैठका में ही वे अपने विचारों का आदान-प्रदान करतेथे। बैठका के माध्यम से ही भारतीय मजदूर एकता के सूत्र में बँधकर शक्कर कोठी के मालिकों व गोरे जमींदारों के खिलाफ आवाज बुलंद करते थे और अपने अधिकारों को प्राप्त करते थे। मॉरिशस की आजादी में बैठका का अहम् योगदान रहा है। अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में बैठका के महत्व को रूपायित किया है। इसके साथ ही अनत जी ने यह भी चित्रित करने का

प्रयास किया है कि बैठका की एकता अब खंडित होने लगी है। इस विखण्डन के पीछे जातिवाद, धर्म, संप्रदाय, अमीर-गरीब, ऊँच-नीच की भावना का हाथ है। जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न संप्रदायों के अनुयायियों द्वारा अलग-अलग सभाओं व बैठकाओं का निर्माण होने लगा। जिससे जहाज़ी भाइयों की एकता खंडित होने लगी। स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में बैठका व सभाओं में होने वाली वैचारिक टकराहट का उल्लेख अनत जी के 'पर पगडंडी नहीं मरती', 'लहरों की बेटी' व 'अपना मन उपवन' उपन्यास में हुआ है। 'अपना मन उपवन' उपन्यास में रामचरण जब 'जागृति सभा' नामक बैठका में सभी लोगों के प्रवेश के वर्जित होने का कारण जानना चाहता है तो उसके प्रत्युत्तर में जो जवाब आता है उससे आप्रवासी भारतीयों के बीच बढ़ रही अलगाववादी विचारों का पता चलता है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **" 'जागृति सभा' नाम से गाँव की एक बैठका थी, जहाँ सप्ताह के हर शनिवार को सदस्यों का जुटाव होता था। सोमवार से शनिवार तक शाम को गाँव के बच्चे उसमें हिन्दी पढ़ते थे। रामचरण को जब पता चला था कि उस सभा में गाँव के हर व्यक्ति को सदस्य होने की छूट नहीं थी तो उसने उसका कारण जानना चाहा था।..... उत्तर में किसी ने कहा था कि दूसरे लोग अपने को बड़जतिया बताते हैं और हमें छोटजतिया, तो हम उनकी बैठका के सदस्य कैसे बन सकते हैं।..... ये कुछ लोग बहुसंख्यक होने का अहं लिए अपने को हमसे अलग रखते हैं। कुछ ऐसे भी लोग थे जो यहाँ तक भी बोल गए कि हम वैदिक धर्म वाले आर्यसमाजी हैं, पाखंडियों के साथ धर्म की चर्चा नहीं कर सकते। कुछ लोगों ने कुछ व्यक्तियों को मांस-मदिरा सेवन करने वाले बताया तो कुछ को सुअर पालने वाले।"[97]** उपर्युक्त उदाहरण के द्वारा अनत जी आप्रवासी भारतीयों के महत्वपूर्ण सामाजिक, धार्मिक व साहित्यिक संस्था (बैठका) के क्रमशः हो रहे क्षय और विघटन को दर्शाया है।

अतीत के प्रति मोहग्रस्तता/ पूर्वजों के प्रति आदरभाव: अनत जी ने आप्रवासी भारतीय मजदूरों की अतीत के प्रति मोह को भी दर्शाया है। अपने देश से उखड़ने व परिजनों से बिछुड़ने की पीड़ा तथा भविष्य में कभी अपनों से न मिल पाने का गम प्रत्येक आप्रवासी भारतीय की वेदना है जिसे वह मानसिक स्तर पर झेलता रहता है और समय-समय पर वह अपने पुराने दिनों को याद करता है। 'शर्तबंद प्रथा' के तहत गिरमिटिया मजदूर के रूप में भारत से आने वाले मजदूरों की स्वदेश व परिजनों से बिछुड़ने की पीड़ा को अनत जी ने अपने उपन्यासों में कई स्थानों पर चित्रित किया है। 'जम गया सूरज', 'क्यों न फिर से', 'आसमान अपना आँगन' व 'अपना मन उपवन' शीर्षक उपन्यासों में आप्रवासी भारतीयों की अतीत के प्रति मोह को तथा भारतवंशी मॉरिशसवासियों की पूर्वजों के प्रति आदरभाव को देखा जा सकता है। 'अपना मन उपवन' उपन्यास में अपने पूर्वजों के त्याग, बलिदान, साहस,संघर्षऔर शक्ति को याद करते हुए प्रियदत्त रामचरण से कहता है- **"दो बातें बहुत ही विशेष थीं हमारे पूर्वजों में अपनी धरती भारत से उखड़ने की उस पीड़ा को हद तक सह पाना और एक सख्त,अनजान जमीन पर अपनी जड़ को फैला पाने का संघर्ष। यातना और संघर्ष की इस कहानी से हमारे बच्चे कुछ भी नहीं सीख पाए।..... ये हमारे बच्चे अपने पूर्वजों के संघर्षों औरयातनाओं को भूलकर अपने को आधुनिक और विवेकी मान बैठे हैं।"**[98]

साहित्यिक संघर्ष: अनत जी ने अपने उपन्यासों में आप्रवासी भारतीयों के स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में धार्मिक सांस्कृतिक संघर्ष को दर्शाने के साथ-साथ उनके साहित्यिक संघर्ष को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'शर्तबन्द प्रथा' के तहत जिन भारतीय मजदूरों को मॉरिशस ले जाया गया उनके साथ-साथ उनकी भाषा भी उनके साथ मॉरिशस पहुँची। मॉरिशस में अँग्रेजी व फ्रेंच भाषा का बोलबाला था, जिसे अनपढ़ आप्रवासी भारतीय मजदूर नहीं

समझ पाते थे। इस वजह से वे आपसी वार्तालाप के समय हिन्दी भाषा, विशेषकर भोजपुरी बोली का प्रयोग करते थे। क्योंकि मॉरिशस जाने वाले अधिकांश मजदूर पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार के थे, जहाँ पर भोजपुरी बोली जाती है। मॉरिशस की धरती पर इन मजदूरों द्वारा बोली जाने वाली भाषा व बोली की खिल्ली उड़ाई जाती थी। हिन्दी को गँवारों की भाषा कहकर उसकी उपेक्षा की जातीथी। किन्तु आप्रवासी भारतीयों ने अपनी सभ्यता व संस्कृति के साथ-साथ अपनी भाषा को विपरीत परिस्थितियों में भी जीवंत बनाए रखा। और इसी भाषा के बल पर देश को गोरों के चंगुल से आजाद कराया। अनत जी ने यह चित्रित किया है कि जिस भाषा के बल पर मॉरिशस को स्वतन्त्रता मिलती है। स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में आज वही भाषा उपेक्षा का शिकार हो रही है। आप्रवासी भारतीय मजदूरों ने अपने सुख-दुख हिन्दी भाषा में ही व्यक्त किए थे और इसी भाषा में उन्होंने अपने जीवनानुभवों की अभिव्यक्ति की तथा हिन्दी को ही साहित्यिक भाषा के रूप में चुना। मॉरिशस की स्वतन्त्रता में हिन्दी भाषा के योगदान एवं स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में हिन्दी की उपेक्षित दशा का उल्लेख अनत जी ने अपने कई उपन्यासों में किया है। यहाँ पर 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास से एक उदाहरण दृष्टव्य है। अमिष कहता है- **"जब यहाँ के पूँजीपतियों ने आजादी के खिलाफ जिहाद शुरू की थी उस समय गाँवों की बैठक-बैठक से ईख के खेतों के चप्पे-चप्पे से स्वतन्त्रता का आह्वान हुआ था। आम आदमी की इस निश्छल अभिव्यक्ति और अदम्य शक्ति की जीत हुई थी। स्वतन्त्रता का वह स्वर हिन्दी का था। यह दावा भी केवल हिन्दी का ही हो सकता है कि अगर लोग मंत्री की कुर्सियों पर ओहदित हैं तो उसी हिन्दी के वोटों से। आज इस नए चुनाव की दहलीज पर वही हिन्दी साँसों के लिए छटपटा रही है।..... डेढ़ सौ साल से हिन्दी इस धरती की सांस्कृतिक, सामाजिक, औद्योगिक गतिविधियों और विकास के साथ जुड़ी रही है। पैंतीस सालों से इसकी पढ़ाई के लिए सरकारी स्कूलों में महत्वपूर्ण रकम खर्च की जाती है और वही भाषा आज परीक्षा का विषय बनने की योग्यता अर्जित नहीं कर सकी। बाज के पंजों में कबूतर**

की सी स्थिति लिए हिन्दी का दम इस देश में आज घुँट रहा है। जो मान्यता दो औपनिवेशिक ज़बानों को प्राप्त है वह बहुसंख्यकों की अपनी अभिव्यक्ति को नसीब नहीं। साम्राज्यवादियों के इस सांस्कृतिक साम्राज्य में कहीं अपने लोगों की साजिश तो नहीं? क्या सियासती छलावा ही हमारी नियति है।"[99] अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में न सिर्फ हिन्दी भाषा के प्रति उपेक्षा रखने वालों का चित्रण किया है बल्कि हिन्दी भाषा में रचित साहित्य- कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास इत्यादि विविध विधाओं के प्रति लोगों की, प्रकाशकों व सरकार की उपेक्षापूर्ण नीति का भी चित्रण किया है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- 'जम गया सूरज', 'हड़ताल कल होगी', 'चुन-चुन-चुनाव', 'शेफाली', 'क्यों न फिर से', 'आसमान अपना आँगन', 'चलती रहो अनुपमा' व 'अपना मन उपवन' आदि में साहित्य के प्रति उपेक्षा भाव को दर्शाया गया है। 'अपना मन उपवन' उपन्यास में प्रियदत्त के माध्यम से नाटकों के प्रति रुचि रखने वालों एवं नाटकों के भविष्य के प्रति चिन्ता रखने वाले कलाकारों का चित्रण किया गया है। वह भारतीय और पाश्चात्य नाटकों का पाठक होने के साथ-साथ उनका मंचन भी कर चुका है। वह नाटकों के भविष्य के प्रति चिंता जाहिर करता है तथा वर्तमान समय में नाटकों के प्रति आज की युवा की उपेक्षाभाव पर टिप्पणी भी करता है। प्रियदत्त रामचरण व गोपी महतो से इस संदर्भ में कहता है- **"बड़े ही दुख की बात है कि इस मुल्क में नाटक में रुचि रखने वाला कोई नहीं। काश, आज के नौजवान महाकवि कालिदास की'शंकुतला' देख पाते।..... कल जो बोलबाला था नाटक का, कहाँ लुप्त हो गया? कहाँ चले गए नाटकों की गरिमा को मंच पर सजीव करने वाले कलाकार।"**[100]अपने उपन्यासों के जरिए अनत जी ने साहित्य, कला व संस्कृति के प्रति सरकार की उपेक्षापूर्ण नीति का भी चित्रण किया है। अनत जी ने 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में किशोर व मिशेल के माध्यम से चित्रकार व रंगकर्मी के प्रति रंगभेद के आधार पर की जाने वाली उपेक्षा का चित्रण किया है। किशोर चित्रकारी के पेशे को अपनाता है

क्योंकि रंगों से उसे बहुत लगाव रहता है वह चित्रकारी के माध्यम से अपने समाज की विसंगतियों को चित्रित करने की कोशिश करता है। बहुत से लोग उसके चित्रों की तारीफ करते हैं किन्तु जब चित्रप्रदर्शनी लगती है तब सरकार द्वारा न तो उसके चित्रों की प्रशंसा की जाती है और न ही खरीदा जाता है जबकि वहीं पर फ्रेंच चित्रकार की पंद्रह चित्रों को सरकार द्वारा खरीद लिया जाता है। किशोर की उपेक्षा के संदर्भ में अमित कहता है- **"किशोर अगर गोरा होता तो क्या उसकी कला इसी तरह अर्थहीन रह जाती? इसमें दोष किसका था? जन्म के संयोग का या सामाजिक मनोवृत्ति का?"**[101] अपने चित्रों के प्रति समाज व सरकार की उपेक्षापरक दृष्टि से क्षुब्ध होकर किशोर हीनभावना का शिकार हो जाता है और अंततः वह आत्महत्या कर लेता है।

किशोर के समान मिशेल को भी रंगभेद के आधार पर सरकार की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। मिशेल क्रियोल जाति से है, वह युवा संघ का सदस्य व मंत्री होने के साथ-साथ रंगमंच का चैंपियन भी था। युवा मंत्रालय की ओर से आयोजित होने वाली नाट्य प्रतियोगिताओं में वह तीन बार लगातार प्रथम अभिनेता के रूप में सामने आता है। फ्रेंच भाषा में भी उसकी अच्छी पकड़ रहती है किन्तु जब फ्रांस सरकार की ओर से छात्रवृत्ति मिलने वाली होती है तब समस्त योग्यताओं के बावजूद उसे वह छात्रवृत्ति नहीं दी जाती। उसके स्थान पर किसी गोरे को छात्रवृत्ति दे दी जाती है। मिशेल को छात्रवृत्ति न मिलने का मुख्य कारण था- वह क्रियोल जाति का था। इस घटना की वजह से वह नाटकों के मंचन से सन्यास ले लेता है। इस संदर्भ में एक उदाहरण है- **"उस घटना के बाद अमित ने बहुत चाहा कि मिशेल अपने को रंगमंच की दुनिया से अलग न करे, पर मिशेल उस दुनिया से सिर्फ अलग ही नहीं हुआ था बल्कि उससे हमेशा के लिए घृणा कर बैठा।..... उसने फिर कभी कोई नाटक देखा ही नहीं।"**[102] 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में अमिष के माध्यम से

स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादक की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के संघर्ष को दर्शाया गया है। अमिष सांस्कृतिक संस्थान में संपादक के रूप में नियुक्त है। वह साहित्यिक पत्रिका 'इंद्रधनुष' का संपादक है। किन्तु संपादक की हैसियत से उसे संपादकीय लेखों को लिखने की छूट नहीं होती है। उस पर निदेशक का शासन चलता है। अमिष द्वारा स्वेच्छा से लिखे गए संपादकीय लेखों को निदेशक फाड़कर जला देता है और उस संपादकीय लेख के स्थान पर अपना लिखा संपादकीय जोड़कर उसे प्रकाशित करवा देता है। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- **"इन्द्रधनुष के चौथे अंक की प्रतियाँ सप्ताह भर निदेशक के दफ्तर की सेफ में बंद रहीं। दूसरे सप्ताह उसके संपादकीय पृष्ठ को फाड़कर जला दिया गया। उसकी जगह निदेशक ने अपना लिखा हुआ संपादकीय जोड़ दिया। अमिष सारा कुछ चुपचाप देखता रह गया था।"**[103] उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से अनत जी ने अपने समाज में साहित्यकारों, कलाकारों व संपादकों के प्रति किए जाने वाले अन्याय का चित्रण किया है।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति लगाव: अनत जी ने न सिर्फ कलाकारों, साहित्यकारों की शोषित दशा का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ ही हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति लगाव रखने वालों एवं उसके संरक्षण के प्रति प्रयत्नशील आप्रवासी भारतीयों का भी चित्रण किया है। 'जम गया सूरज', 'चुन-चुन-चुनाव', 'हड़ताल कल होगी', 'चलती रहो अनुपमा', 'आसमान अपना आँगन', 'अपना मन उपवन', 'क्यों न फिर से' आदि उपन्यासों में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति अनुराग रखने, उसे महत्व प्रदान करने एवं उसको संरक्षण प्रदान करने वाले साहित्य-प्रेमियों का विभिन्न पात्रों के माध्यम से चित्रांकन किया गया है। 'जम गया सूरज' उपन्यास में लालमन, 'चुन-चुन-चुनाव' में माधवसिंह, 'हड़ताल कल होगी' में किशोर, 'चलती रहो अनुपमा' में अभिजीत, सफीना, 'आसमान अपना

आँगन' में रामचरण व निशा आदि पात्रों के माध्यम से हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति रुचि रखने वालों का वर्णन किया गया है। 'जम गया सूरज' उपन्यास के पात्र लालमन की हिन्दी भाषा के प्रति लगाव को निम्नवत् दर्शाया गया है- **"ऐसे तो अँग्रेजी और फ्रेंच उसने केवल चौथी तक पढ़ी थी परंतु अपनी हिन्दी की पढ़ाई उसने काफी देर तक जारी रखी थी। एक तरह से उसकी वह पढ़ाई अभी भी रुकी नहीं थीं। उत्तमा की परीक्षा दे लेने के बाद भी वह पढ़ता ही रहता। उसे खुद इस बात का आश्चर्य होता कि हिन्दी की पढ़ाई को उसने इतनी लगन के साथ कैसे अपनाया था। खेत में भी उसकी भात की टोकरी में हिन्दी की कोई न कोई पुस्तक अवश्य होती थी।"[104]** 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में अमिष के पिता एवं माधवसिंह के माध्यम से उन आप्रवासी भारतीयों का चित्रण किया गया है जो अपने पूर्वजों की भाषा व संस्कृति को बचाए रखने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर हिन्दी की शिक्षा देते हैं व उसके प्रचार-प्रसार हेतु निजी तौर पर शिक्षण-संस्थानों (बैठका) की व्यवस्था करते हैं। इस संदर्भ में माधवसिंह कहता है- **"इस गाँव की हिन्दी पाठशाला को मैं अपने बलबूते चलाता हूँ। यह काम मेरे बाप ने भी किया था। मेरा अपना दादा इसी भाषा के लिए कोड़ों की बौछार झेल चुका था। जिस भाषा से इस देश का ऐतिहासिक संबंध इतना गहरा रहा हो उसके बहिष्कार पर चुप कैसे रहा जा सकता है।"[105]** इसी तरह 'अपना मन उपवन' उपन्यास में रामचरण के माध्यम से हिन्दी भाषा के प्रति लगाव रखने वाले आप्रवासी भारतीयों का चित्रण किया है। अनत जी ने रामचरण के माध्यम से हिन्दी भाषा की जानकारी की अनिवार्यता पर भी टिप्पणी की है। रामचरण की दृष्टि में आज के नवयुवकों को हिन्दी की जानकारी रखना बहुत ही जरूरी है। क्योंकि यह उनके पूर्वजों की भाषा है। इसी के बल पर उन्होंने इस देश में अपनी सभ्यता व संस्कृति को जीवन्त रखा तथा इसी भाषा के बल पर देश को गोरों की दासता से मुक्त कराकर अपने अधिकारों को प्राप्त किया। रामचरण हिन्दी भाषा के अध्ययन की अनिवार्यता एवं उसके महत्व को रेखांकित करते हुए अखिलेश से कहता है- **"हिन्दी पढ़ना केवल इसलिए जरूरी नहीं है कि**

हिन्दी फिल्मों के गाने और गजलें समझ में आने लगे, बल्कि इसलिए जरूरी है कि हमारे पूर्वज भारत से वहाँ की भाषाएँ भी अपने साथ ले आए थे।..... इसी भाषा में भारत के गिरमिटिया मजदूरों ने अपनी पहली उमंगें भी व्यक्त की थीं और अपने अधिकारों का पहला तकाजा भी। अपने धर्म और अपनी संस्कृति की रक्षा भी इसी भाषा के बल पर की गयी। इस देश में हिन्दी हमारी पहचान की भाषा तो रही ही है, साथ ही हमारी अंदरूनी ताकत भी रही है। इस देश के इतिहास की पहली घड़ी से आज तलक गाँव-गाँव की बैठकाओं में जिस तरह से इस भाषा की नि: शुल्क पढ़ाई होती चली आ रही है, शायद ही अपनी भाषा के प्रति इतना प्यार और इतनी लगन कहीं और देखने को मिले।"[106] उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से जहाँ एक ओर आप्रवासी भारतीयों के हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति लगाव को दर्शाया गया है, वहीं दूसरी ओर भारतवंशी मॉरिशसवासियों की अपने आप्रवासी भारतीय पूर्वजों के प्रति आस्था को भी वाणी प्रदान की गयी है।

मानव जीवन के विकास में भाषा व साहित्य की उपयोगिता: अनत जी ने हिन्दी भाषा व साहित्य को महत्व प्रदान करने के साथ-साथ मानव जीवन के विकास में भाषा एवं साहित्य की उपयोगिता को भी दर्शाया है। वे भाषा को एक ऐसा साधन मानते हैं जो भावाभिव्यक्ति के साथ-साथ मनुष्य के आपसी सम्बन्धों को बनाए रखने का काम करती है साथ ही उन्हें जोड़कर रखने का सामर्थ्य भी रखती है। इस संदर्भ में वे 'हड़ताल कल होगी' उपन्यास में लिखते हैं- **"भाषा कुछ लोगों के लिए मात्र अभिव्यक्ति होती है, कुछ लोगों के लिए यह उससे आगे की चीज होती है, भाषा आदमी को भीतर से जोड़कर एक शक्ति को बनाए रखने का साधन होती है।"[107]** 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में अमिष के माध्यम से वे भाषा संबंधी अपने मत को निम्नवत् प्रस्तुत करते हैं- **"भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का साधन नहीं हुआ करती। वह तो पूरी जाति पूरे राष्ट्र की अपनी अस्मिता अपनी गरिमा होती है।**

वह हमें अंदरूनी ढंग से जोड़ने वाली ताकत होती है। वह राजनीतिक शक्ति का स्रोत भी रहती है- रही भी।"[108] अनत जी भाषा के समान साहित्य को भी मानव का कल्याण करने वाला तथा विश्व का कल्याण करने का साधन माना है। इसके अतिरिक्त वे अन्य व्यावसायिक व तकनीकी विषयों की तुलना में साहित्य को श्रेष्ठ माना है। अनत जी की साहित्य संबंधी मान्यताओं की अभिव्यक्ति उनके कई उपन्यासों में हुई है। 'क्यों न फिर से' उपन्यास में अजय व महिमा के वार्तालाप के माध्यम से अनत जी की साहित्य संबंधी विचारधारा की अभिव्यक्ति हुई है। लेखक का मत है कि साहित्य हमें अन्य लोगों की भावनाओं व विचारों को समझने, परखने व महसूस करने की शक्ति देता है। मानवीय संवेदनाओं को जागरूक करता है, मनुष्य को संवेदनशील प्राणी बनाता है। साहित्य एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से जोड़ता है। इस संदर्भ में अजय महिमा से कहता है-**"तुम साहित्य के विद्यार्थियों की यही आंतरिक शक्ति हम जैसे आधुनिक और तकनीकी विषयों के छात्रों के पास नहीं होती। कमला भी हिन्दी-साहित्य की छात्रा थी और मुझसे कहती रहती थी कि जिस दिन मुझ जैसे राजनेता साहित्य के महत्व को समझ पाएँगे, उस दिन से विश्व का स्वरूप बदल जाएगा।..... मेरी समझ में यह बात बहुत देर से आई कि साहित्य हमें औरों की उम्मीदों और उनके दर्दों को पहचानने की अनुभूति देता है।"**[109] उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से अनत जी ने न सिर्फ साहित्य के महत्व को रूपायित किया है बल्कि इसके साथ ही विश्व के उत्थान में भी साहित्य की भूमिका को अनिवार्य माना है। उनका मत है कि साहित्य से न सिर्फ हम संवेदनशील प्राणी बनते हैं बल्कि इसके द्वारा आत्मिक, चारित्रिक, मानसिक उन्नति के साथ-साथ वैश्विक प्रगति भी संभव है। लेखक ने इस ओर भी ध्यान आकृष्ट किया है कि देश की बागडोर संभालने वाले राजनेताओं को भी साहित्य का ज्ञान होना चाहिए तभी वे जनता के दुख-दर्द, अभावों आदि को समझ सकेंगे और तभी उनके हितार्थ कुछ सार्थक कदम उठा सकेंगे। अनत जी की दृष्टि में विज्ञान की तुलना में साहित्य भरपूर और स्थायी होता है। 'तीसरे किनारे पर' उपन्यास में वे लिखते हैं- **"विज्ञान जीवन**

के कुछ भागों की सच्चाई हमें बता सकता है लेकिन वह जीवन की संपूर्णता की ओर हमें कुछ भी नहीं बता सकता। संपूर्णता केवल अच्छे साहित्य में होती है।..... साहित्य भरपूर और स्थायी होता है। वह सत्य होता है।..... वह साहित्य ही है जो यह चाहता है कि विज्ञान अपनी शक्ति का गलत उपयोग न करके उसे मानवता के हित इस्तेमाल करे।"[110]

पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव/ विसंस्कृतिकरण का स्वर: अनत जी ने जहाँ एक ओर आप्रवासी भारतीयों की अपनी भाषा, संस्कृति व धर्म के प्रति अगाध लगाव व निष्ठा को वाणी प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के भारतवंशी मॉरिशसवासियों की, विशेषकर नवयुवकों की अपने परंपरागत मान्यताओं, रीति-रिवाजों, संस्कारों, खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, पर्व-त्यौहार, भाषा-संस्कृति के प्रति उपेक्षा के भाव को भी चित्रित किया है। ये ऐसे नवयुवक हैं जो उच्चशिक्षा हेतु विदेशों की ओर पलायन करते हैं और जब वापस आते हैं तब इनके व्यवहार में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। 'चलती रहो अनुपमा' उपन्यास में रामकरण का परिवार आर्य समाज की प्रथानुसार जीवन यापन करता है। रामकरण के घर में नियमित रूप से हवन और प्रवचन होता है। अपनी संस्कृति के संरक्षण पर ज़ोर दिया जाता है। रामकरण अपने छोटे पुत्र सुमन को उच्च शिक्षा हेतु फ्रांस भेजता है। वह सुमन की विदेश यात्रा से पूर्व उसको परायी भूमि में अपनी संस्कृति को न भूलने का अनुरोध करता है तथा माँस-मछली खाने से मना करता है। किन्तु पेरिस पहुँचकर सुमन पाश्चत्य प्रभाव से स्वयं को बचा नहीं पाता है। वह वहाँ पर होटलों में माँस-मछली आदि सभी कुछ खाने लगता है तथा शराब का भी आदि हो जाता है। उसके इस व्यवहार से उसकी माँ बहुत आहत होती है। तब रामकरण अपनी पत्नी को समझाते हुए कहता है**- "समय के साथ मूल्य बदल जाते हैं इसलिए वहाँ खा-पी लेता है, यहाँ आकर फिर छोड़ सकता है। आदमी पर देश के रहन-सहन और आबोहवा का**

प्रभाव तो पड़ता ही है।"[111] 'अपना मन उपवन' में अनत जी ने रामचरण व गोपी महतो के माध्यम से आज की युवा पीढ़ी की फैशनपरस्ती व पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से ग्रसित मानसिकता का चित्रण किया है। गोपी महतो रामचरण से प्रश्न करता है- **"आखिर ये आज के लड़के-लड़कियाँ ऐसे कपड़े क्यों पहनते हैं, जिससे चलने तक में उन्हें दिक्कत होती है? घर पर बताए बिना ये आजकल के लड़के आधी रात तक बाहर रहते हैं। यह कहाँ तक उचित है?..... ये लोग पढ़ाई के कम, लेकिन फुटबाल के इतने दीवाने क्यों हैं? बड़ों को न कोई आदर, न कोई राम-सलाम। ये लोग जा कहाँ रहे हैं? बड़ों के सामने सिगरेट तो दूर की बात रही, ये चौदह-पंद्रह साल के लड़के बीयर तक पीने से नहीं शर्माते। क्या ऐसा करके ये अपने को आधुनिक बताना चाहते हैं? ये देखा-देखी की प्रवृत्ति तो कल कुछ भी करवा सकती है।"**[112] अनत जी ने न सिर्फ विसंस्कृतिकरण के खतरों को चित्रित किया है बल्कि इसके साथ ही विलुप्त होते संस्कारों, रीति-रिवाजों, मतों-मान्यताओं, आचार-विचार में आये परिवर्तनों पर भी टिप्पणी की है। 'मेरा निर्णय' व 'अपना मन उपवन' उपन्यासों में विलुप्त होती भारतीय परंपरा, संस्कृति, रीति-रिवाजों पर प्रकाश डाला गया है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों एवं भारतवंशी मॉरिशसवासियों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक-सांस्कृतिक जीवन संघर्षों का यथार्थपरक चित्रण किया है। सामाजिक समस्या के अन्तर्गत रंगभेद की समस्या, नौकरी व पदोन्नति में जातिवाद, भाई-भतीजावाद

का बोलबाला, मालिक-मजदूर संघर्ष, भ्रष्ट शासन-प्रणाली के खिलाफ नवयुवकों का विद्रोही स्वर, सत्ता द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग का शोषण, किसान जीवन की समस्या, धर्मांतरण की प्रक्रिया, वेश्यावृत्ति की समस्या, अंतर्जातीय व अंतर्धर्मीय प्रेम-विवाह् की समस्या, असफल-प्रेम का चित्रण, आप्रवासी भारतीयों का आप्रवासी भारतीयों से संघर्ष, आप्रवासी भारतीयों का अन्य समुदाय के लोगों से संघर्ष आदि विभिन्न समस्याओं को उद्घाटित किया गया है। राजनीतिक समस्या के अन्तर्गत देश की अव्यवस्थित शासन-प्रणाली, भ्रष्ट राजनीति, चुनावी सरगर्मी, मंत्रियों व नेताओं की स्वार्थलोलुपता, जनसमस्याओं की उपेक्षा, नवयुवकों के विद्रोह् व आंदोलनों को दबाना, मंत्रिमण्डल में होने वाली खींचातानी आदि की सफल अभिव्यक्ति अनत जी के उपन्यासों में हुई है। आर्थिक समस्या के अन्तर्गत देश में व्याप्त बेरोजगारी, शिक्षित नवयुवकों की बेकारी, नौकरी की चयन प्रक्रिया में योग्यता व अनुभव के स्थान पर जातिवाद, भाई-भतीजावाद, क्षेत्रवाद का बोलबाला, आर्थिक तंगी के विभिन्न कारणों एवं आर्थिक तंगी की वजह् से उत्पन्न मानसिक कुंठा, पारिवारिक कलह् व आर्थिक विपन्नता आदि का सफल चित्रण किया है। धार्मिक-सांस्कृतिक समस्याओं के अन्तर्गत आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था, भाषा एवं साहित्य एवं कला के प्रति उनका लगाव एवं उसके संरक्षण के प्रयास, सत्ता द्वारा हिन्दी भाषा, साहित्य एवं कलाकार की उपेक्षा, परंपरागत मूल्यों व मान्यताओं का विघटन, पारिवारिक विघटन, विसंस्कृतिकरण का प्रभाव आदि की सफल अभिव्यक्ति अनत जी के उपन्यासों में हुई है। अपनी प्रखर प्रतिभा एवं सशक्त लेखनी के जरिए अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के समाज में व्याप्त हर एक छोटी-बड़ी घटना को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है।

संदर्भ-सूची:

1. अभिमन्यु अनत, हड़ताल कल होगी, पृष्ठ -16
2. वही, पृ- 31
3. वही, पृ- 26-27
4. वही, पृ- 135
5. वही, पृ- 11
6. अभिमन्यु अनत,तीसरे किनारे पर, पृ- 5
7. अभिमन्यु अनत,तपती दोपहरी, पृ- 52
8. अभिमन्यु अनत,शब्दभंग, पृ- 28
9. अभिमन्यु अनत,हड़ताल कल होगी, पृ- 8
10. वही, पृ- 156
11. अभिमन्यु अनत,तपती दोपहरी, पृ- 47
12. अभिमन्यु अनत,मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृ- 170
13. वही, पृ- 73
14. अभिमन्यु अनत,तपती दोपहरी, पृ- 100
15. अभिमन्यु अनत,हड़ताल कल होगी, पृ- 159
16. अभिमन्यु अनत,मेरा निर्णय, पृ- 28
17. अभिमन्यु अनत,शब्दभंग, पृ- 66
18. वही, पृ- 123
19. अभिमन्यु अनत,तीसरे किनारे पर, पृ- 89
20. अभिमन्यु अनत,तपती दोपहरी, पृ- 58
21. वही, पृ- 74-75
22. वही, पृ- 97
23. अभिमन्यु अनत,पर पगडंडी नहीं मरती, पृ- 46
24. वही, पृ- 50

25. अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, पृ- 216

26. वही, पृ- 203

27. अभिमन्यु अनत, तपती दोपहरी, पृ- 109

28. वही, पृ- 110-111

29. अभिमन्यु अनत, घर लौट चलो वैशाली, पृ- 94

30. अभिमन्यु अनत, पर पगडंडी नहीं मरती, पृ- 26-27

31. अभिमन्यु अनत, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृ- 28

32. वही, पृ- 66

33. अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृ- 139

34. अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृ- 78

35. अभिमन्यु अनत, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृ- 57

36. वही, पृ- 56

37. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृ- 170

38. अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृ- 121-122

39. अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृ- 143

40. अभिमन्यु अनत,मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृ- 67

41. वही, पृ- 67

42. अभिमन्यु अनत,चुन-चुन-चुनाव, पृ- 92-93

43. अभिमन्यु अनत,क्यों न फिर से, पृ- 157

44. अभिमन्यु अनत,मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृ- 70-71

45. अभिमन्यु अनत,क्यों न फिर से, पृ- 150

46. अभिमन्यु अनत,चुन-चुन-चुनाव, पृ- 142

47. अभिमन्यु अनत,क्यों न फिर से, पृ- 152-153

48. अभिमन्यु अनत,मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृ- 71

49. वही, पृ- 69

50. अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृ- 160

51. अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृ- 151

52. अभिमन्यु अनत, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृ- 58

53. अभिमन्यु अनत,तीसरे किनारे पर, पृ-71-72

54. अभिमन्यु अनत,तपती दोपहरी, पृ- 79

55. अभिमन्यु अनत,मेरा निर्णय, पृ- 8-9

56. अभिमन्यु अनत, पर पगडंडी नहीं मरती, पृ- 49

57. अभिमन्यु अनत,जम गया सूरज, पृ- 68

58. अभिमन्यु अनत,तपती दोपहरी, पृ- 16

59. अभिमन्यु अनत,पर पगडंडी नहीं मरती, पृ- 27

60. अभिमन्यु अनत,मेरा निर्णय, पृ- 10

61. अभिमन्यु अनत,चुन-चुन-चुनाव, पृ- 5-6

62. अभिमन्यु अनत,तपती दोपहरी, पृ- 41

63. वही, पृ- 41

64. अभिमन्यु अनत,हड़ताल कल होगी, पृ- 63

65. वही, पृ- 70

66. अभिमन्यु अनत,मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृ- 63

67. अभिमन्यु अनत,तपती दोपहरी, पृ- 48

68. अभिमन्यु अनत,पर पगडंडी नहीं मरती, पृ- 28

69. वही, पृ- 33-34

70. अभिमन्यु अनत,हड़ताल कल होगी, पृ- 83

71. अभिमन्यु अनत,मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृ- 63

72. अभिमन्यु अनत,मार्क ट्वेन का स्वर्ग, पृ- 200

73. अभिमन्यु अनत,हड़ताल कल होगी, पृ- 114

74. अभिमन्यु अनत,शब्दभंग, पृ- 9-10

75. अभिमन्यु अनत,तीसरे किनारे पर, पृ- 23

76. वही,पृ- 174

77. अभिमन्यु अनत,आसमान अपना आँगन, पृ- 69

78. अभिमन्यु अनत,अपना मन उपवन, पृ- 181

79. अभिमन्यु अनत,लहरों की बेटी, पृ- 295

80. अभिमन्यु अनत, पर पगडंडी नहीं मरती, पृ- 104-105

81. अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, पृ- 329-330

82. वही, पृ- 68-69

83. अभिमन्यु अनत,तपती दोपहरी, पृ- 69

84. अभिमन्यु अनत,चुन-चुन-चुनाव, पृ- 11

85. अभिमन्यु अनत,लहरों की बेटी, पृ- 33

86. अभिमन्यु अनत,एक उम्मीद और, पृ- 43

87. वही, पृ- 43

88. वही, पृ- 43

89. अभिमन्यु अनत, हड़ताल कल होगी, पृ- 42

90. अभिमन्यु अनत,लहरों की बेटी, पृ- 34

91. अभिमन्यु अनत,मेरा निर्णय, पृ- 144

92. अभिमन्यु अनत,क्यों न फिर से, पृ- 177

93. अभिमन्यु अनत,मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृ- 36-37

94. अभिमन्यु अनत,जम गया सूरज, पृ- 145

95. अभिमन्यु अनत,पर पगडंडी नहीं मरती, पृ- 76

96. वही, पृ- 44

97. अभिमन्यु अनत,अपना मन उपवन, पृ- 107

98. वही, पृ- 251

99. अभिमन्यु अनत,चुन-चुन-चुनाव, पृ- 124-125

100. अभिमन्यु अनत,अपना मन उपवन, पृ- 185

101. अभिमन्यु अनत,हड़ताल कल होगी, पृ- 16

102. वही, पृ- 31

103. अभिमन्यु अनत,चुन-चुन-चुनाव, पृ- 126

104. अभिमन्यु अनत,जम गया सूरज, पृ- 20

105. अभिमन्यु अनत,चुन-चुन-चुनाव, पृ- 161-162

106. अभिमन्यु अनत,अपना मन उपवन, पृ- 308

107. अभिमन्यु अनत,हड़ताल कल होगी, पृ- 18

108. अभिमन्यु अनत,चुन-चुन-चुनाव, पृ- 125

109. अभिमन्यु अनत,क्यों न फिर से, पृ- 19

110. अभिमन्यु अनत,तीसरे किनारे पर, पृ- 30

111. अभिमन्यु अनत, चलती रहो अनुपमा, पृ- 99

112. अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, पृ- 245

पंचम अध्याय

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्री

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में न सिर्फ 'शर्तबन्द प्रथा' के तहत गोरों द्वारा छल-कपट पूर्वक मॉरिशस लाये गए भारतीय गिरमिटिया मजदूरों एवं भारतवंशी मॉरिशस वासियों के जीवन संघर्ष को चित्रित किया है बल्कि इसके साथ ही 'शर्तबंद प्रथा' के तहत मॉरिशस में लायी गयी भारतीय गिरमिटिया महिला मजदूरों एवं उनकी संततियों के विविधोंमुखी शोषण को भी यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। मॉरिशस में गोरे शासकों द्वारा आप्रवासी भारतीय मजदूरों के साथ-साथ आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के साथ भी अनेक प्रकार के अभद्र व्यवहार किए जाते थे। मॉरिशसीय समाज में गोरों के शासनकाल में आप्रवासी भारतीय महिला कामगारों को पुरुषों की अपेक्षा दोहरे शोषण का शिकार होना पड़ता था। एक तरफ उन्हें खेतों में सुबह से शाम तक पुरुष कामगारों के बराबर काम करना पड़ता था। तो दूसरी तरफ महिला मजदूरों को गोरे शासकों, मिल मालिकों, कोठी के सरदारों, दलालों आदि की हवश का भी शिकार होना पड़ता था। आप्रवासी भारतीय पुरुषों की तुलना में आप्रवासी भारतीय महिला कामगारों की स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी। उनसे अधिक से अधिक काम करवाकर भी अत्यल्प पारिश्रमिक दिया जाता था।

अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों- 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'जम गया सूरज', 'तपती दोपहरी', 'लाल पसीना', 'चौथा प्राणी', 'शेफाली', 'चुन-चुन-चुनाव', 'अपनी-अपनी सीमा', 'पर पगडंडी नहीं मरती', 'फैसला आपका', 'मुड़िया पहाड़ बोल

उठा', 'अचित्रित', 'और पसीना बहता रहा', 'लहरों की बेटी', 'घर लौट चलो वैशाली', 'चलती रहो अनुपमा', 'आसमान अपना आँगन', 'हम प्रवासी', 'क्यों न फिर से', 'अपना मन उपवन' व 'मेरा निर्णय' आदि के माध्यम से मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व व स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय स्त्री एवं भारतवंशी महिलाओं की शोषित, पीड़ित, उपेक्षित एवं दयनीय दशा को वाणी प्रदान की है साथ ही उनके शोषणविरोधी स्वर एवं नारी मुक्ति की चेतना को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत अध्याय को निम्न शीर्षकों में विभक्त किया गया है-

क- पितृसत्तात्मकता और स्त्री

ख- पारिवारिक एवं आर्थिक जीवन

ग- नारी मुक्ति की चेतना

क- पितृसत्तात्मकता और स्त्री

पुरुष प्रधान सामाजिक संरचना में स्त्री को पुरुषों की दासी, सेविका, अनुगामिनी व उसकी वासना पूर्ति का साधन माना गया है। पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत ही दयनीय होती है। इस संरचना के तहत समाज में स्त्री की स्थिति दोयम दर्जे की होती है। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के तहत समाज को संचालित करने के लिए जो नियम व कानून बनाए जाते हैं उसमें स्त्रियों की न तो कोई सक्रिय भागीदारी होती है और न ही उनसे कोई सलाह व मशविरा लिया जाता है। और न ही उनके हितार्थ कोई ठोस कदम उठाया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इस समाज (पितृसत्तात्मक समाज) व्यवस्था में पुरुषों द्वारा बनाए गए नियम व कानून ही मान्य होते हैं। वे ही समाज को संचालित करने के लिए तरह-तरह के नियमों का प्रावधान करते हैं। पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों द्वारा लिए गए निर्णय ही मान्य होते हैं। पुरुष प्रधान समाज

में स्त्रियों की आशाओं, आकांक्षाओं, उनके भावों व विचारों को कोई महत्व नहीं दिया जाता। और न ही उनके द्वारा किए गए निर्णय को मान्यता दी जाती है। इस व्यवस्था के तहत स्त्री को पुरुषों की आज्ञा मानने वाली, घर गृहस्थी चलाने वाली तथा वासनापूर्ति का साधन मात्र माना गया है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक-सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्र में पुरुषों का ही वर्चस्व रहा है। वैदिक व पौराणिक काल में स्त्रियों को समाज में प्रथम स्थान प्राप्त था। उन्हें वे सभी अधिकार व सुविधाएँ प्राप्त थीं जो पुरुषों को प्राप्त थीं। उस काल में स्त्रियों को देवी का स्थान प्राप्त था। वे पूजनीय मानी जाती थीं। इस संदर्भ में एक श्लोक प्रचलित है- **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'** अर्थात् जहाँ नारी की पूजा की जाती है वहाँ देवता निवास करते हैं। किन्तु समय के परिवर्तन के साथ-साथ स्त्रियों के प्रति लोगों की धारणा बदलती गयी और उसके अधिकारों को सीमित कर दिया गया। उसे घर की शोभा बढ़ाने वाली वस्तु मान लिया गया। उसकी इच्छाओं, आकाँक्षाओं, भावों व विचारों आदि की उपेक्षा की जाने लगी। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था ने स्त्रियों को मात्र भोग की वस्तु बना दिया। उसे देवी के पद से हटाकर दासी का स्थान दे दिया।

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों के माध्यम से मॉरिशस के पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों एवं भारतवंशी मॉरिशसीय स्त्रियों की शोषित, पीड़ित, उपेक्षित व दयनीय स्थिति का यथार्थपरक चित्रण किया है। अनत जी ने अपने उपन्यासों के द्वारा मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को चित्रित किया है। अनत जी द्वारा रचित 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में सन् 1834 ई० में 'शर्तबंद प्रथा' के तहत भारत से मॉरिशस जाने वाली

आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की गोरे शासकों के विविधोंमुखी शोषणतंत्र में शोषित दशा का यथार्थपरक चित्रण किया गया है, तो 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'एक बीघा प्यार', 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'तपती दोपहरी', 'चौथा प्राणी', 'शेफाली', 'चुन-चुन चुनाव', 'अपनी-अपनी सीमा', 'पर पगडंडी नहीं मरती', 'फैसला आपका', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'लहरों की बेटी', 'घर लौट चलो वैशाली', 'चलती रहो अनुपमा', 'क्यों न फिर से', 'अपना मन उपवन' व 'मेरा निर्णय' आदि उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में स्त्रियों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्ष की सफल अभिव्यक्ति की गई है।

पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्रियों की वास्तविक स्थिति का मूल्याँकन उनके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक-सांस्कृतिक अधिकारों के संदर्भ में किया जा सकता है।

- **स्वतन्त्रता पूर्व (12 मार्च 1968 ई॰ से पूर्व) पितृसत्तात्मक मॉरिशसीय समाज में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति-** मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व (12 मार्च 1968 ई॰ से पूर्व) गोरों के शासनकाल में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के समान गिरमिटिया स्त्रियों को किसी भी प्रकार के सामाजिक अधिकार नहीं प्राप्त थे। ब्रिटिशों के शासनकाल में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर स्त्रियों की स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी। इन गिरमिटिया स्त्रियों को तत्कालीन परिवेश में दोहरे शोषण का शिकार होना पड़ता था। एक तरफ उनसे पुरुष श्रमिकों के समान कठोर-से-कठोर काम करवाया जाता तो दूसरी तरफ उन्हें गोरे शासकों, कोठी के सरदारों व दलालों की हवश का शिकार भी होना पड़ता था। कभी उन्हें मालिकों की तरफ से तरह-तरह के प्रलोभन दिए जाते तो कभी उनके साथ जबरदस्ती की जाती। खेतों में काम करने

वाली मजदूर स्त्रियों एवं उनकी बहू-बेटियों पर सरदारों द्वारा हमेशा तरह-तरह के कटाक्ष किए जाते थे। वे न तो खेतों में सुरक्षित थीं और न ही बस्ती में। गोरों की वासनापूर्ति हेतु सरदारों द्वारा सुंदर व जवान स्त्रियों की तलाश जारी रहती थी। सुंदर स्त्री चाहे विवाहिता हो या कुंवारी उसे कोठी के मालिक की हवश का शिकार होना ही पड़ता था। 'लाल पसीना' उपन्यास में अनत जी ने गोरों द्वारा भारतीय मजदूर स्त्रियों पर ढाये जाने वाले जुल्मों को यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है। कोठी का एक सरदार दाऊद मियाँ से उसकी पत्नी की माँग करते हुए तथा उसे प्रलोभन देते हुए कहता है- **"तुम अपनी औरत को मेरे पास भेजो—— तुम्हें एक गोरा बच्चा मिलेगा। शाम को गास्तों आएगा। उसी के साथ भेज देना।"[1] (अभिमन्यु, लाल पसीना, पृ-171)** गोरे शासकों व सरदारों की हवश का शिकार हुई स्त्रियों की दयनीय दशा का चित्रण करते हुए अनत जी 'लाल पसीना' उपन्यास में लिखते हैं- **"जुवेदा, भगवतिया, तांगेची- ये सभी लड़कियाँ उन कीमती कपड़ों को पहनकर साहब की कोठी पर जा चुकी थीं। लछमनसिंह चाहकर भी उन लड़कियों को नहीं रोक सका था। सातों लड़कियों को अपनी आँखों से उसने घसीटे जाते देखा था। उनमें से दो-तीन के आँसुओं को वह जरूर पोंछ सका था। आज रात नंदू की लड़की की जाने की बारी थी।——-बार-बार दुहाई देते हुए भी नंदू जानता था कि रेखा को वहाँ जाने से रोकना असंभव था। ऐसा वह अपने प्राण देकर भी नहीं कर सकता था।———-भगवती और तांगेची ने आत्महत्या कर ली थी। दो और लड़कियों ने अपने को नदी की धारा के साथ बह जाने दिया था।——-उसकी अपनी पत्नी पर भी साहब की आँखें थीं। उसकी पत्नी बस्ती की सबसे सुन्दर स्त्री थी।"[2] (अभिमन्यु, लाल पसीना, पृ-127)** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस तरह से आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर स्त्रियों को पितृसत्तात्मक मॉरिशसीय समाज में प्रताड़ित किया जाता था। भारतीय स्त्रियों के प्रति गोरे शासकों व कोठी के सरदारों के अमानवीय अत्याचारों एवं उनकी

भोगवादी दृष्टि को अनत जी ने 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में हरखू सरदार के माध्यम से अनत जी ने उन भारतीय मजदूरों का चित्रण किया है, जो पद व प्रतिष्ठा के लोभ में आकर अपने ही भाई-बंधुओं व बहू-बेटियों पर अत्याचार करते हैं। कोठी के मालिक व सरदार की वासनापूर्ति हेतु हरखू सरदार अपनी ही बस्ती की औरतों के प्रति गलत दृष्टिकोण रखता है। वह मालिक की वासना पूर्ति हेतु औरतों को तरह-तरह के प्रलोभन देता है। रम्भा को देखकर टोपीवाला अफसर हरखू से कहता है- **"बढ़िया माल है हरखू। साहब खुश हो जाएगा।"**

फिर तो हरखू ने रम्भा के कान में कहा था, "एगो गोर लयका के माँ बन जयबे। का बोलत हवे? साथ में साहब तोके दू बीघा जमीन भी दे डाली।-----टोप वाले अफसर के हाथ की बंदूक उन सभी की बाहों से ज्यादा लम्बी थी। उसकी नली से एक-एक को धँसोड़ता हुआ वह आगे बढ़ आया था और रम्भा की कलाई को अपने फौलादी पंजे में जकड़ लिया था।"[3] (गाँधी जी बोले थे, 16-17) प्रस्तुत अंश में अनत जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि पितृसत्तात्मक समाज में, विशेषकर गोरों के शासनकाल में स्त्रियों को उपभोग की वस्तु माना जाता था। उनकी (स्त्रियों की) व्यक्तिगत इच्छाओं व आकाँक्षाओं को कोई महत्व नहीं दिया जाता था। अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि आप्रवासी भारतीय स्त्रियों को गोरों की हवश का शिकार न सिर्फ खेतों व गलियों में होना पड़ता था बल्कि बस्ती व घर के भीतर भी उनकी आबरू सुरक्षित नहीं थी। गोरों के सरदार मजदूरों की बस्ती में घुसकर उनकी बहू-बेटियों के साथ बलात्कार करते थे। और घर के लोग चाहकर भी उनका विरोध नहीं कर पाते थे। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में मनोहरसिंह अपनी बस्ती में स्त्रियों के साथ होने वाले अन्याय व अत्याचार

का उल्लेख करते हुए मदन से कहता है- **"मैं जिस बस्ती को छोड़कर आप लोगों की पनाह में आया था। उस बस्ती में मेरी एक बेटी के साथ उस कोठी के सरदार ने बलात्कार किया था। वह बस्ती आप लोगों की बस्ती की तरह कोठी से अलग न होकर कोठी की अपनी ही बस्ती थी। वहाँ सरदार कभी-कभार गोरे मालिकों से भी अधिक प्रभुत्व दिखाते थे। मेरे घर में जबरदस्ती प्रवेश करके उसने वैसा किया था। मैंने अपनी बेटी को आत्महत्या करने नहीं दी। वह आज भी अपनी ओढ़नी में मुँह छिपाए घर की चारदीवारी के भीतर रहती है।" (गाँधी जी बोले थे, पृ-46)** अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि पुरुष प्रधान समाज में गोरे शासकों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूर औरतों के साथ न सिर्फ ज़ोर-जबरदस्ती की जाती थी बल्कि इसके साथ-साथ उन पर लात-घूँसों की बौछार भी की जाती थी। भारतीय मजदूर स्त्रियों को खेतों में काम करते समय कोठी के सरदारों की हिंसात्मक व क्रूरतम व्यवहार का भी सामना करना पड़ता था। गन्ने के खेतों में काम करते समय यदि कोई स्त्री अपनी अन्य सहकर्मियों से किसी कारणवश पीछे रह जाती या कोई स्त्री थकान दूर करने के उद्देश्य से थोड़ी देर बैठ जाती तो उसे मालिकों व कोठी के सरदारों द्वारा अश्लील से अश्लील गालियाँ दी जाती और उन पर लात-घूँसों से प्रहार किया जाता। चाहे वह स्त्री बीमार हो या अत्यधिक वृद्ध हो या गर्भवती हो। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में रामबरन की पत्नी देवन्ती के माध्यम से गोरों के शोषणतंत्र में पिसती तथा उनकी ज़्यादतियों की शिकार स्त्रियों का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। स्त्रियों के प्रति गोरों के अमानवीय अत्याचार को दर्शाते हुए अनत जी लिखते हैं- **"कुछ दिन पहले रामबरन चाचा की पत्नी को, जो कि खाद के ढेर से टोकरी में खाद भर रही थी, छोटे मालिक ने यह कहते हुए ढकेल दिया था कि तुमसे कहा गया है, खाद उठाते समय ईख की पत्तियों को हटा दिया करो। और तुम खाद खोदकर केवल सूखी पत्तियाँ उठा रही हो। धक्का खाकर हमेशा बीमार रहने वाली देवन्ती खाद के ढेर पर मुँह के बल जा गिरी थी।" (और**

पसीना बहता रहा, 12) पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में गोरे शासकों द्वारा गिरमिटिया मजदूर स्त्रियों को विविध तरीकों से सताया जाता था। गोरे शासकों के सरदार व दलाल खेतों में काम करने वाली मजदूर स्त्रियों पर लात-घूँसे से प्रहार करने से भी नहीं चूकते थे साथ ही वे मजदूर स्त्रियों पर तरह-तरह के झूठे आरोप लगाकर उन्हें प्रताड़ित करते। गिरमिटिया मजदूर स्त्रियों के प्रति गोरे शासकों के अमानवीय अत्याचार का उल्लेख करते हुए 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में अनत जी लिखते हैं- **"अब तो सुनते हैं, कि सरदारों की मनमानी इतनी बढ़ गयी है कि वे औरतों पर लात उठाने की हद तक पहुँच गए हैं।—रामबरन चाचा यहाँ पर हैं। उनकी बीवी देवन्ती चाची पर जब उस सरदार ने लात चलायी थी तो खेत में काम कर रहे सभी मजदूरों ने देखा था, पर किसी ने चूँ तक नहीं की।"(अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, प्री -104-105)** भारतीय गिरमिटिया मजदूर स्त्रियों के प्रति गोरे शासकों की बर्बरता का चित्रण करते हुए 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में अनत जी पुन: लिखते हैं- **"संतोष ने सूचना दी थी कि उस कोठी में एक गर्भवती औरत को मालिक ने झोंटा पकड़कर घसीटते हुए खेत से निकाला है। उस औरत के पेट में जो बच्चा था, गोरे मालिक की लातों की चोट से वह गर्भ में ही मर गया और उस स्त्री को भी बड़ी कठिनाई से बचाया जा सका है।" (और पसीना बहता रह, 288)** उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट पता चलता है कि गौरांगों के शासनकाल में गिरमिटिया स्त्रियों की स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी। इन स्त्रियों को कभी खेतों में गोरों की हवश का शिकार होना पड़ता तो कभी उनके हिंसात्मक व्यवहार का शिकार होना पड़ता था और कभी आर्थिक रूप से उनका शोषण किया जाता। इन शोषित स्त्रियों की मदद करने वाला कोई भी नहीं था। न तो इन स्त्रियों के पति इनके साथ होने वाले अन्याय का विरोध कर पाते थे और न ही इन्हें किसी प्रकार का कानूनी संरक्षण प्राप्त था।

अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने यह भी दर्शाने का प्रयास किया है कि पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में कानून व्यवस्था भी आम जनता विशेषकर गिरमिटिया मजदूर स्त्रियों की मदद न करके उनके गुनाहगारों- पूँजीपतियों, मिल-मालिकों, कोठी के सरदारों की हिमायती बन जाती है। स्वतन्त्रता पूर्व मॉरिशसीय समाज में गिरमिटिया स्त्रियों के प्रति कानून की उपेक्षापरक दृष्टि का उल्लेख करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"जिस गर्भवती औरत को गोरे मालिकों ने लातें मारी थीं और पेट में ही जिसके बच्चे की मृत्यु हो गयी थी, उसे लेकर प्रभा ने पुलिस थाने के सामने कोई पचहत्तर औरतों के साथ धरना दिया था और यह माँग की थी कि उस बच्चे की मृत्यु के लिए कोठी-मालिक पर मुकदमा चलाया जाए। लेकिन पुलिस ने आश्वासन देकर भी उस पर मुकदमा नहीं चलाया था।" (और पसीना बहता, 289)** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि कानून व्यवस्था भी गोरे शासकों की शोषण में पिसती महिला मजदूरों को न्याय न दिलाकर शोषकों का समर्थन करती है।

अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने यह भी दर्शाने का प्रयास किया है कि स्त्रियों का शोषण न सिर्फ गोरे शासकों द्वारा किया जाता था बल्कि इसके साथ ही उन्हें अपने ही घर के पुरुषों द्वारा भी शोषित किया जाता था। स्त्री चाहे जिस वर्ग की हो, घर की चारदीवारी के भीतर उनका विविधोंमुखी शोषण होता था। 'हम प्रवासी' उपन्यास में करीम परेमजी के घर की स्त्रियों के माध्यम से सम्पन्न घरों की स्त्रियों की शोषित, पीड़ित व दयनीय स्थिति का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। मधुवा अपने मित्र हनीफ से करीम परेमजी जैसे धनाढ्य लोगों की अपने ही घर की स्त्रियों के प्रति किए जाने वाले अत्याचार का उल्लेख करते हुए कहता है- **"मेरा यह नया मालिक तो अपनी पत्नी और अपनी दोनों बहुओं से दासियों से भी गया-गुजरा व्यवहार करता है।**

खुद मौज-मस्ती की जिन्दगी जीता है और अपनी बीवी व बहुओं को बंद कमरे में तो रखता ही है, उनके साथ इस बेरुखेपन से पेश आता है कि जैसे वे केवल आदेश पालन करने के लिए हैं। अपनी पत्नी से अपने पाँव के जूते उतरवाता और पहनवाता है। मैंने दो अवसरों पर उसे अपनी पत्नी पर जूते चलाते देखा है।"(अभिमन्यु हम प्रवासी, 33)

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस तरह पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों को दोयम दर्जे में रखा जाता है। करीम परेम जी सरीखे बहुसंख्यक लोग ऐसे हैं जो आज भी स्त्रियों के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण रखते हैं, तथा स्त्रियों को मात्र पुरुषों की आज्ञा का पालन करने वाली मानते हैं। और उनके साथ पशुवत व्यवहार करने से भी नहीं चूकते।

अनत जी ने उन स्त्रियों की शोषित दशा का भी चित्रण किया है जो अपनी आजीविका हेतु गाय व बकरियाँ पालकर अपने परिवार का पालन-पोषण करती हैं। तथा जो गायों के लिए हरे चारे के लिए गोरों के खेतों में जाती हैं। कोठी के सरदारों द्वारा सिर्फ उन्हीं औरतों को घास काटने दिया जाता था जो समय-समय पर उनके मालिकों की वासनापूर्ति के लिए राजी हो जाती या जिनके पति गोरों की बेगारी करते या कम कीमत पर काम करते। इसके अतिरिक्त अन्य स्त्रियों को घास नहीं काटने दिया जाता था। स्त्रियों को घास काटने से रोकने के लिए सरदारों द्वारा तरह-तरह के हथकंडे अपनाए जाते थे। स्त्रियों के प्रति सरदारों द्वारा की जाने वाली ज्यादती का चित्रण करते हुए अनत जी 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में लिखते हैं- **"हमारे इलाके की कुछ औरतें मोस्वाजी की कोठी में घास काटने गई थीं। उन्हें पता नहीं था कि घास के बीच कोठीवाले ने लकड़ी के टुकड़े में कीलें गाड़कर उन्हें चारों ओर फैला दिया है। दो औरतों के पाँवों में एक ही साथ कई कीलें चुभ जाने से उन्हें अस्पताल में दाखिल होना पड़ा है।"-----यही नहीं, उन औरतों के रोने-चिल्लाने पर दो सरदार मालिक के साथ आ पहुँचे और उन्होंने उनमें से कई औरतों के हंसुवे छीन लिए। मालिक ने सरदारों को**

आदेश दिया कि वे घास की गठरियों पर पेशाब कर दें और सरदारों ने उन औरतों के सामने ही पेशाब किया।" (और पसीना बहता रहा, 286) उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि गोरे शासकों द्वारा आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया स्त्रियों के साथ किस तरह के अमानवीय व्यवहार किए जाते थे। भारतीय गिरमिटिया औरतों के साथ होने वाले पशुवत व्यवहार, अन्याय व अत्याचार का उल्लेख करते हुए हरि नामक पात्र कहता है- **"बहुत पहले से वह यह सोचता आ रहा था कि औरतों को यों जानवरों की तरह एक ठौर से दूसरे ठौर लाने-ले-जाने का सिलसिला बंद होना चाहिए।—कई बार उसे यह भी खबर मिलती थी कि फलां ठौर पर कोई औरत लारी से गिर गई है। किसी की टाँग टूटने की खबर मिलती थी तो किसी के हाथ टूटने की। कई बार तो उन ऊँची लारियों पर चढ़ते-उतरते ही औरतें घायल हो चुकी थीं।———-मालिक के आदेश और गाली-गलौज पर ही चालक ने जल्दबाज़ी और असावधानी से लारी को चला दिया था, जबकि वह औरत अभी चढ़ ही रही थी। इसके बावजूद अदालत ने उस औरत को ही कसूरवार ठहराया था।" (और पसीना बहता रहा, 106)** भारतीय गिरमिटिया औरतों के साथ होने वाली ज्यादती के प्रति चिंता जाहिर करते हुए अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि उनके साथ होने वाले अन्याय में कुछ भारतीय स्त्रियाँ भी शामिल हैं जो थोड़े-बहुत प्रलोभन में आकर अपने ही समान स्त्रियों के साथ अन्याय होने देती हैं। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"मजदूरों की हालत बदलने की कोशिश तो सालों पहले से होती आ रही है, पर इन घास काटने वाली औरतों की चिंता हम लोगों ने कभी नहीं की। तुमने पिछले हफ्ते की घटना सुनी?"**

"रूपचंद की पतोहूवाली न ?

"हाँ, दो रखवारों ने उसके साथ बलात्कार किया। लेकिन जिन दूसरी औरतों ने यह देखा, उनमें से एक भी सरदारों के खिलाफ गवाही देने को तैयार नहीं हुई। एक

अंकवारी घास के लिए हर सप्ताह चवन्नी देकर रखवारों को पटाये रखना पड़ता है। जो देने की हैसियत नहीं रखतीं, उनसे ये रखवार दूसरी तरह लाभ उठाने की कोशिश करते हैं।"----हमारे यहाँ तो जिस जंगल से औरतें घास काटती थीं, उसे मालिकों ने चारों तरफ कँटीले तारों से घेर दिया है।" (और पसीना बहता रहा, 133)

- **स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के पितृसत्तात्मक समाज में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की सामाजिक स्थिति-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ गोरे शासकों के शोषणतंत्र में पिसती गिरमिटिया मजदूर स्त्रियों की दयनीय दशा का निरूपण किया है बल्कि इसके साथ ही स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला है। पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में पुरुषों द्वारा स्त्रियों को सदैव दोयम दर्जे का प्राणी माना गया है। जिसके फलस्वरूप स्त्रियों को उन सभी सुविधाओं, अधिकारों से वंचित रखा जाता था, जिनकी वे हकदार थी। समाज में उन्हें बराबर का दर्जा नहीं दिया जाता था। सभी सुविधाएँ, सभी प्रकार के अधिकार व निर्णय करने का दायित्व पुरुषों द्वारा निर्वहन किया जाता था। पुरुष प्रधान सामाजिक संरचना में स्त्रियों को मात्र भोग की वस्तु, वासनापूर्ति का साधन तथा घर की शोभा बढ़ाने वाली वस्तु मात्र माना गया जिसके परिणामस्वरूप स्त्रियों के भावों, विचारों, इच्छाओं-आकांक्षाओं आदि को दरकिनार कर दिया गया और पुरुषों द्वारा निर्मित कायदे-क़ानूनों को उन पर थोप दिया गया। स्त्री को पुरुषों की अनुगामिनी मात्र माना जाने लगा। साथ ही कई स्तरों पर उनसे भेदभावपरक व्यवहार किया जाने लगा। उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश की जाने लगी। पुरुष प्रधान सामाजिक संरचना में स्त्रियों के साथ होने वाले विविध प्रकार के भेदभावपरक रवैये की यथार्थपरक अभिव्यक्ति अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों में की है। 'चलती रहो अनुपमा' उपन्यास में कुसुमवाती के

माध्यम से पति द्वारा शोषित नारी की दयनीय दशा का चित्रण तो किया ही गया है साथ ही स्त्रियों के प्रति पुरुषों की भोगवादी मनोवृत्ति का भी पर्दाफाश किया गया है। कुसुमवाती अपने पति की ज़्यादतियों एवं उसकी भोगवादी मनोवृत्ति का परिचय निम्न शब्दों में देती है- **"तुम्हारा चाचा तो मुझसे ब्याह करके यह माने बैठा था कि वह मर्द है और मैं औरत हूँ। शुरू-शुरू में उसे इस बात का ज्ञान तो अवश्य था कि मेरा और हमारे दो बच्चों का पेट भरना, उन्हें नंगे रहने से बचाना उसका फर्ज था। लेकिन वक्त के साथ वह इस बात को भूलता गया और सोचता रहा कि वह मर्द है मैं औरत हूँ। मैं उसके भोग का साधन हूँ और उसके लिए बच्चे जनने वाली।" (चलती रहो अनुपमा, 137-138)**

इसी तरह 'लहरों की बेटी' उपन्यास में भी अनत जी ने कमल और ललिता के प्रेम-सम्बन्धों के माध्यम से स्त्रियों के प्रति पुरुषों की भोगवादी मनोवृत्ति का चित्रांकन किया है। उपन्यास में शांति नामक स्त्री विदुला और पंकज के प्रेम-सम्बन्ध की असफलता की आशंका जाहिर करते हुए विदुला को समझाते हुए ललिता और कमल के मध्य घटित होने वाली घटना का उदाहरण पेश करती हुई विदुला से कहती है- **"तुम्हें अपनी मौसेरी बहन के साथ हुई वह घटना बता ही दूँ। वह तुम्हारी ही तरह सुन्दर थी। मेरी मौसी के घर के सामने ही डाकघर था, जिसमें एक शहरी बाबू काम करता था। ललिता को देखते ही वह उस पर लट्टू हो गया था।---मेरे मौसा ने जब जाना कि डाकघर का अधिकारी है और वह भी शहर का रहने वाला तो ललिता का हाथ सौंपने को वे तुरंत राजी हो गए। ———ललिता को भी कमल पसन्द आ गया था। वह सुबह-शाम ललिता से मिलता और साल बीतते- बीतते परिणाम यह हुआ कि ललिता पाँव से भारी हो गयी।-----कमल के परिवार वालों ने स्पष्ट कह दिया कि वे किसी भी हालत में अपने बेटे की शादी ललिता से करने को तैयार नहीं। मेरा मौसा भी उन लोगों से**

मिला। हाथ जोड़े, विनती की, पर उत्तर वही-का-वही रहा।——आज भी ललिता बीस साल बाद भी अविवाहित है। लोग अब उसे ललिता न कहकर पगलिया कहते हैं।" (लहरों की बेटी, 210-211) उपर्युक्त उदाहरण में ललिता की इस विक्षिप्त दशा का जिम्मेदार कमल और उसके परिवार वाले हैं, जो झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए ललिता और उसके गर्भस्थ शिशु का परित्याग कर देते हैं। कमल की वासना का शिकार हुई एवं उसके द्वारा ठुकरायी जाने पर ललिता की मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है, उसे समाज की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। जबकि ललिता के गुनाहगर कमल पर किसी प्रकार का चारित्रिक दोष नहीं लगता।

पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों द्वारा स्त्रियों के साथ भेदभावपरक व्यवहार किया जाता है। वे स्त्रियों को दोयम दर्जे का प्राणी मानते हैं। समाज में पुरुषों के वर्चस्व की पोल खोलते हुए एवं स्त्रियों की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए शोभा हंस से कहती है- **"मैं जब किसी के जीवन का अभिन्न हिस्सा समझी जाने वाली थी तब वह आदमी मुझे मालिक नजर आया था और मैं उसकी दासी बनी रह गयी थी। मेरी तो माँ तक ने मुझे यह कहकर विदाई दी थी कि मैं औरत हूँ और मुझे औरत बने रहना है। उसने कभी यह नहीं कहा कि मैं पत्नी हूँ। उसने यह भी कहा था कि औरत हमेशा मर्द से छोटी होती है- उम्र से भी और बदन से भी। उसके सपने को मर्द से कम आकांक्षा रखनी चाहिए। उसकी इच्छा भी मर्द के बराबर नहीं होनी चाहिए। मर्द औरत से ज्यादा ताकतवर होता है औरत मर्द से ज्यादा कमजोर। मुझसे कहा गया था कि अब पिता का घर पराया हो गया और जहाँ जा रही हूँ वह मेरा घर होगा; पर मैं तो उस घर में किराएदार ही बनी रही।" (आसमान अपना आँगन, 316)** उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से अनत जी ने यह स्पष्ट किया है कि पुरुषवर्चस्व वादी समाज में प्राथमिकता पुरुष को

ही दी जाती है, भले ही वह कितना बड़ा अपराध कर डाले या कुसंगतियों का शिकार हो। जबकि कर्मशील स्त्री को दोयम दर्जे का प्राणी माना जाता है। स्त्रियों के प्रति पुरुषों की वर्चस्ववादी मानसिकता तथा समाज में स्त्रियों को दोयम दर्जे का प्राणी मानने वालों पर कटाक्ष करती हुई नंदिनी कहती है- **"मर्दों में आज भी यह विश्वास बना हुआ है कि औरत शृंगार का साधन है, नुमाइश और ब्यूटी कांटेस्ट की वस्तु है, फैशन की कठपुतली है। हमारे देश में तो आज भी लड़की के जन्म पर उसे लाटरी का दूसरा इनाम कहा जाता है और लड़के को फर्स्ट प्राइज़। लड़का सोना समझा जाता है और लड़की चाँदी। हमारे कुछ महान लेखकों तक ने औरत को फ्रेयल्टी जाई नेम इस विमन, अबला कहा है।" (आसमान अपना आँगन, 249)** उपन्यास में नंदिनी समाज में स्त्रियों की भागीदारी, उनके द्वारा निभायी जाने वाली ज़िम्मेदारी का उल्लेख करते हुए स्त्रियों के प्रति पुरुषों द्वारा किए जाने वाले भेद-भावपरक व्यवहार पर कटाक्ष करते हुए कहती है- "**यह सही है कि कुछ क्षेत्रों को मर्द अपने अधिकार में मानते आ रहे थे। उन क्षेत्रों में औरतों का प्रवेश वर्जित था। पर आज के समय के साथ औरत उन सभी 'मेन ओनली' के दरवाजों को खोलकर भीतर प्रवेश होने में सफल रही है। कल तक रसोई से जूझती रहने वाली और चारदीवारी के भीतर बंदिनी बनी रहने वाली नारी आज कहाँ नहीं है? विज्ञान, कला, साहित्य, कानून, राजनीति, व्यवसाय, सेना –कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ वह चमक नहीं पाई हो। पर इतना होते हुए भी औरत कुछ लोगों के लिए आज भी मर्द की एक कोमोडिटी मात्र है। वे यह मानकर चलते हैं कि औरत को हमेशा मर्द पर निर्भर रहना है। मर्द घर का मालिक है, सरकार उसकी होती है, कानून उसके बनाए होते हैं; यानी कि हर स्थान पर उसी का वर्चस्व है।" (आसमान अपना आँगन, 249)** स्त्रियों के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण और उनके साथ भेदभाव परक व्यवहार करने वालों पर टिप्पणी करती हुई नंदिनी वर्तमान समाज में स्त्रियों की

स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहती है- **“औरत मर्द के मुक़ाबले शरीर से कमजोर होते हुए भी भीतर से मर्द से अधिक सहनशील और शक्तिशाली होती है। मर्द दफ्तर से लौटकर आराम का हकदार हो जाता है, जबकि औरत दफ्तर या फैक्टरी से लौटकर भी घर और रसोई के कामकाजों में लगी ही रहती है। हमारे देश का इतिहास इस बात का गवाह है कि गाँवों में औरतें अगर खेतों की मजदूरी के बाद घरों में गाय-बकरियाँ और मुरगियाँ आदि पालकर अतिरिक्त आमदनी नहीं पैदा करती तो मर्द की मजदूरी के सहारे जीना दुश्वार हो जाता है। कई घरों में औरतों की इन्हीं आमदनियों से जमीन खरीदी गई, बच्चों को पढ़ाया गया और घर बनाए गए। इन सारी विशेषताओं के बावजूद आज भी औरत को मर्द की सेवा करने वाली, उसके आदेश का पालन करने वाली, उसका खाना पकानेवाली और उसकी शारीरिक प्यास बुझाने का साधन समझा जाता है। मर्द चार औरतों से संबंध रखकर मर्दानगी का दावा करता है और यदि औरत भी ऐसा करले तो बदचलन मान ली जाती है।” (आसमान अपना आँगन, 249)**

किसी भी देश के पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों के प्रति इसी प्रकार के भेदभावपरक व्यवहार की झलक कमोबेश मात्रा में देखी जा सकती है। ‘अस्ति-अस्तु’ उपन्यास में भी अनत जी ने स्त्रियों के प्रति पुरुषों की भोगवादी एवं वर्चस्ववादी मनोवृत्ति का चित्रण किया है। उपन्यास की नायिका दिव्या स्त्रियों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए संगीता से कहती है- “**इधर औरत के सौ साल के इतिहास में तीन महत्वपूर्ण मोड़ आए हैं। औरत को उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक इंतजार करना पड़ा ताकि उसे बराबर की सही शिक्षा के अवसर मिले और वह उच्च पदों पर कार्य कर सकें। दूसरा मोड़ काफी बाद में आया जिससे वह राजनीति में भाग ले सकी। तीसरा दौर वह है जो अब भी चला आ रहा है –मर्दों से बराबरी के अधिकार की माँग।”––“आज भी वह अपनी**

सामाजिक हैसियत के लिए मर्द के आधीन है। हर निर्णय के लिए मर्द पर निर्भर रहती है।" (अस्ति-अस्तु, 58) स्त्रियों को दोयम दर्जे में रखने वाले पुरुषों पर कटाक्ष करती हुई दिव्या संगीता से कहती है- "**मैं किसी नरेश को नहीं जानती। मैं उस मर्द को जानती हूँ जिसने अपनी पसंद, अपने धर्म, अपने कानून, अपने अधिकार और अपने स्वर के सामने औरत को शुरू से आज तक दूसरे दर्जे की चीज बनाए रखा है।" (अस्ति-अस्तु, 100)** उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में पुरुषों द्वारा स्त्रियों के प्रति किए गए भेदभावपरक व्यवहार, भोगवादी मनोवृत्ति, आदि का यथार्थपरक चित्रण किया है।

- **वैवाहिक सम्बन्धों को तय करने में पुरुषों का वर्चस्व/ स्त्री के निर्णय की उपेक्षा-** अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के तहत पुरुषों द्वारा स्त्रियों के भावों व विचारों के प्रति की जाने वाली उपेक्षा को भी यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है।

पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्रियों के प्रति न सिर्फ भोगवादी दृष्टिकोण अपनाया जाता है, बल्कि इसके साथ ही उन्हें घर की शोभा बढ़ाने वाली वस्तु मात्र माना जाता है। इस व्यवस्था के तहत किसी भी प्रकार के निर्णय में स्त्रियों की भागीदारी को महत्व नहीं दिया गया। फिर चाहे वे किसी भी प्रकार के सामाजिक कार्य हो या फिर स्त्रियों के व्यक्तिगत कार्य हों। स्त्रियों को अपने व्यक्तिगत भावों व विचारों को प्रकट करने की स्वतन्त्रता नहीं थी और न ही वे अपने लिए कोई निर्णय ले पाती थीं। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था ने स्त्रियों का यह अधिकार भी छीन लिया कि वे अपने मनपसंद व्यक्ति से शादी कर सकें। जबकि वैदिक काल में स्त्रियों को यह अधिकार

प्राप्त था कि वे अपना जीवनसाथी स्वयं चुन सकें। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों का वर्चस्व होने से स्त्रियों को स्वयं की पसंद का जीवनसाथी चुनने का अधिकार छिन जाता है। वे सिर्फ उसी से शादी कर सकती हैं जिसे उनके घर के लोग विशेषकर पिता, भाई आदि ने चुना हो। वैवाहिक सम्बन्धों के निर्णय में पुरुषों के वर्चस्व और उस निर्णय की शिकार हुई स्त्रियों की दयनीय दशा का निरूपण 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'कुहासे का दायरा', 'अपनी-अपनी सीमा', 'अचित्रित', 'और पसीना बहता रहा', 'लहरों की बेटी', 'आसमान अपना आँगन', क्यों न फिर से', 'अपना मन उपवन' व 'मेरा निर्णय' आदि उपन्यासों में किया गया है।

'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में अनत जी ने प्रभा के माध्यम से उन स्त्रियों की शोषित पीड़ित दशा का चित्रण किया है जिन्हें उनके घर वाले उनके प्रेमी से विवाह करने की इजाजत नहीं देते। इसके लिए कभी वे जातिगत भिन्नता का हवाला देते हैं तो कभी हैसियत के अंतर का हवाला देते हैं। कभी शैक्षिक अंतर का हवाला देते हैं तो कभी सामाजिक मान-मर्यादा आड़े आती है। उपन्यास में प्रभा जिस व्यक्ति से प्रेम करती है और जिससे वह शादी भी करना चाहती है उसके पिता जातिगत भिन्नता का हवाला देकर अपनी पसंद के दूसरे लड़के से प्रभा की शादी करवा देता है। प्रभा का पिता प्रभा की इच्छाओं को दरकिनार कर जिस व्यक्ति से शादी करवाता है उस शादी के लिए प्रभा की माँ भी नहीं तैयार रहती, किन्तु वह अपने पति की जिद के आगे कुछ नहीं कर पाती। लेकिन जब उन्हें यह पता चलता है कि जिस व्यक्ति से प्रभा की शादी की गयी है, वह पहले से ही एक रखैल रखे हुए है, तब प्रभा की माँ (अनुराधा) सीमा से जो वाक्य कहती है उससे स्पष्ट पता चल जाता है कि समाज में आज भी वर्चस्व पुरुषों का ही है। वैवाहिक संबंध के निर्णय में पुरुष वर्चस्ववादी निर्णय को महत्व देने एवं

स्त्रियों के मत की अवहेलना करने वालों पुरुषों पर कटाक्ष करती हुई अनुराधा कहती है- **"मैं क्या करती सीमा, हुकुम तो मर्दों का चलता है। ये भी अब खुद पछता रहे हैं। इस बात की जानकारी तो इन्हें भी नहीं थी कि लड़के की पहले से ही कोई रखैल है।----मैं उस रिश्ते के लिए तैयार ही कहाँ थी।" (और पसीना बहता रहा, 281)** इसी तरह 'अपना मन उपवन' उपन्यास में अरविंद के पिता उसकी प्रेमिका उर्मिला से उसकी शादी इसलिए नहीं करवाते, क्योंकि उर्मिला निम्न जाति की थी। अरविंद के घर वाले उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बहाने उर्मिला को विदेश भेज देते हैं और अरविंद की शादी निशा से तय कर देते हैं। इसी समस्या को अनत जी ने 'लहरों की बेटी' उपन्यास में विदुला एवं पंकज के प्रेम-सम्बन्धों के माध्यम से दर्शाया है। आर्थिक असमानता एवं जातिगत भिन्नता के चलते पंकज के घर वाले विदुला को अपने घर की बहू बनाने से इंकार कर देते हैं, यद्यपि विदुला का उनके ऊपर भूत एहसान रहता है। 'मेरा निर्णय' उपन्यास में अमिता व फ्रेडरिक के माध्यम से अंग्रेज़ पुरुषों की मानसिकता का उल्लेख किया है। अमिता नर्सिंग का कोर्स करने हेतु फ्रांस जाती है जहाँ पर उसका परिचय फ्रेडरिक नामक फ्रांसीसी युवक से होता है। धीरे-धीरे उनकी मित्रता प्रेम में बदल जाती है। भिन्न-भिन्न परिवेश एवं संस्कृति होने के बावजूद दोनों सिविल मैरेज कर दाम्पत्य सूत्र में बंध जाते हैं। जब अमिता फ्रेडरिक के बच्चे को जन्म देती है तब फ्रेडरिक बच्ची को अपने रंग की न पाकर उसे अपनाने से इन्कार कर देता है। अमिता पर तरह-तरह के आरोप लगाकर उसके न चाहने पर भी उससे संबंध विच्छेद कर लेता है। पुरुष के निर्णय के वर्चस्व के बारे में अमिता कहती है- **"अंग्रेज़ भी इतने संदिग्ध दिमाग के हो सकते हैं। इसे तो मैंने सोचा ही नहीं था। 18 महीने ही हुए होंगे की कानूनी शादी भी इतनी आसानी से टूट गयी। औरत के न चाहने पर भी मर्द के वर्चस्व की जीत हो ही गयी।" (मेरा निर्णय, 14)**

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि पुरुष चाहे जिस देश, समाज, जाति व समुदाय का हो स्त्रियों के प्रति उसकी दृष्टि सदैव भोगवादी ही रही है। स्त्री उसके लिए वासनापूर्ति का साधन और मनोरंजन की वस्तु मात्र है। पुरुष स्त्री के वर्चस्व को उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को सदैव कुचलता रहा है। कभी उसके चरित्र पर उंगली उठाकर तो कभी उसके सतीत्व पर, तो कभी उसके मातृत्व पर लांछन लगाकर उसे अपने से नीचा दिखाने की कोशिश करते रहे हैं।

- **पितृसत्तात्मक समाज में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीतिक स्थिति-** अनतजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की सामाजिक स्थिति एवं उनके संघर्ष का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ ही स्वतंत्रता-पूर्व व स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीतिक स्थिति व उनके राजनीतिक संघर्ष को भी चित्रित किया है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों -'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'अचित्रित' आदि में स्वतंत्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीतिक स्थिति, उनकी राजनीति विषयक विचारधारा व राजनीतिक पहल का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। तथा 'मुड़िया पहाड बोल उठा', 'चुन-चुन-चुनाव' व 'आसमान अपना आँगन' शीर्षक उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीतिक स्थिति एवं उनके राजनीतिक संघर्ष को यथार्थ परक अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है।

स्वतंत्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासनकाल में आप्रवासी भारतीय मजदूरों के सामान आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की भी देश की राजनीति में किसी प्रकार की सक्रिय भागीदारी नहीं थी। दूसरे शब्दों में कहें तो मॉरिशस की शासन

व्यवस्था पर सिर्फ और सिर्फ गोरों का आधिपत्य था। वे ही इस देश की शासन व्यवस्था पर काबिज थे। देश की शासन व्यवस्था पर आमजनता विशेषकर, आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का स्थान नगण्य था। इस अवधि तक आप्रवासी भारतीय स्त्रियों को न तो वोट देने का अधिकार प्राप्त था और न ही अपना प्रतिनिधि चुनने की छूट थी। और न ही देश की शासन व्यवस्था पर काबिज होने के लिए किसी प्रकार का सहयोग व प्रोत्साहन दिया जाता। बावजूद इसके आप्रवासी भारतीय मजदूर स्त्रियाँ अपने अस्तित्व और अस्मिता को पहचान कर अपने हक व अधिकार की लड़ाई लड़ती हैं। वे गोरे शासकों की अनीति व अन्यायपरक व्यवहार का विरोध करती हैं। तथा गोरे शासकों के विविधोन्मुखी शोषण तंत्र में पिसते हुए उनसे निजात पाने के उपाय सोचती हैं। इतना ही नहीं वे बस्ती के मजदूरों के साथ मिलकर गोरों के खिलाफ किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के जुटावों, आंदोलनों व हड़तालों में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। यद्यपि तत्कालीन मॉरिशसीय समाज में उनकी स्थिति अत्यनत ही दयनीय व सोचनीय दशा को प्राप्त थी इसके बावजूद वे पुरुषों के साथ कंधे-से-कन्धा मिलाकर अपने साथ होने वाले अन्याय व शोषण को रोकने में सहयोग करती हैं तथा अपनी प्रगतिशील चेतना का परिचय देती नजर आती हैं। जिसकी झलक अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों - 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'अचित्रित' उपन्यास में देखी जा सकती है।

स्वतंत्रता-पूर्व मॉरिशस में गोरे शासकों व कोठी के सरदारों के क्रूरतम व्यवहार, शोषणपरक नीति, अमानवीय अत्याचार व भेद-भाव परक व्यवहार से क्षुब्ध होकर जब कई बस्तियों के मजदूर इकठ्ठा होकर कोठी के मालिकों के खिलाफ हड़ताल जारी रखते हैं तो उस हड़ताल में स्त्रियाँ भी उतनी ही तत्परता से शामिल होती हैं। इतना ही

नहीं जब पुलिस कर्मियों द्वारा हड़ताल करने वाले मजदूरों पर लाठीचार्ज व गोलियों की बौछार की जाती है तब भी स्त्रियाँ उन हमलों से डरकर मैदान नहीं छोड़ती बल्कि डटकर उनकी ज्यादतियों का सामना करती हैं और अपने अन्य साथिनों को भी मैदान में डटे रहने के लिए प्रेरित करती हैं। मजदूर आंदोलन में स्त्रियों की सक्रिय भागीदारी एवं उनके साहस का उल्लेख करते हुए अनतजी 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में लिखते हैं- "मर्दों ने अपनी-अपनी स्त्रियों को पीछे चले जाने को कहा, तो अंजलि सामने आ गई। उसने अपनी साथिनों को सम्बोधित करके कहा- "हमें भी देखना है कि पुलिस हमें कहाँ तक ढ़केलकर पीछे ले जा सकती है।" (अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृ- 259) उपर्युक्त उदाहरण में अंजलि का कथन यह प्रमाणित करता है कि स्वतंत्रता-पूर्व मॉरिशस में भले ही स्त्रियों को लिखित रूप में किसी भी प्रकार के राजनीतिक अधिकार नहीं प्राप्त थे लेकिन स्त्रियाँ अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति सजग रहती हैं और अपने साथ होने वाले अन्याय का विरोध भी करती हैं तथा पुरुषों के साथ कन्धा-से-कन्धा मिलाकर घर की चारदीवारी को पारकर देशव्यापी हड़ताल व आन्दोलनों में अपनी भागीदारी निभाती हैं।

अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों - 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व ' अचित्रित' आदि के माध्यम से स्वतंत्रता-पूर्व मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की विभिन्न प्रकार के हड़ताल व आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी का भी उल्लेख किया है। जिसके माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि भले ही पुरुषों के समान स्त्रियों को भी किसी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियों में शामिल न किया गया हो, बावजूद इसके आप्रवासी भारतीय स्त्रियाँ पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर गोरे मालिकों, कोठी के सरदारों आदि के खिलाफ आवाज बुलंद

करने व हड़ताल जारी रखने में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन करती हैं। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में प्रभा सुगुनवा व अंजलि ऐसी नारी पात्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो गोरे शासकों, कोठी के मालिकों व उनके शोषणतंत्र में शामिल लोगों के खिलाफ आंदोलन व भूख हड़ताल तक करती हैं तथा अपने अन्य साथियों के साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करती और कानून का सहारा लेकर गुनाहगारों को सजा भी दिलवाती हैं। उनके द्वारा किए गए ये सभी कार्य उनकी जागरूक राजनीतिक चेतना का ही परिणाम है। प्रस्तुत उपन्यास में जब पंडित हरिप्रसाद के नेतृत्व में शराब-विरोधी आंदोलन चलाया जाता है तब उनके उस आंदोलन को खंडित करने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न हथकंडे अपनाए जाते हैं। इसी के तहत पंडित हरि प्रसाद एवं उसके सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया जाता है। हरि प्रसाद एवं उनके सहयोगियों को जेल से छुड़वाने के लिए बस्ती के मजदूर एकजुट होकर हड़ताल करते हैं और स्वयं की गिरफ्तारी करवाने का निर्णय लेते हैं तब स्त्रियाँ भी उनके इस जुटाव में अपनी भागीदारी करती हैं। वे भी भूख हड़ताल जारी रखती हैं और स्वयं की गिरफ्तारी करवाने के लिए भी तत्पर रहती हैं। आप्रवासी भारतीय स्त्रियों द्वारा हरि प्रसाद की रिहाई को लेकर एवं शराब-विरोधी आंदोलन को सही करार देते हुए उनके साहस एवं संघर्ष को निम्नवत् प्रस्तुत किया गया है- "पंडित जगदंबी अभी हर जगह के मजदूरों को जुटाने में लगा हुआ था कि उसकी गिरफ्तारी का वारंट भी निकल आया।---मॉरिशस के हर कोने से हजारों लोग तेररूज़ पहुँचे, ताकि वहाँ से एक विराट जुलूस आगे बढ़े। काटेज की करीब सौ से ऊपर महिलाएँ पहले ही से तेररूज़ रेलवे स्टेशन पर धरना दिये बैठी थीं। ------दूसरे गांवों की मजदूर औरतों को जब काटेज की औरतों के संकल्प का पता चला तो वे भी अपने-अपने प्रान्तों से निकलकर तेररूज़ पहुँचने लगीं।-----प्रत्येक गाँव और प्रत्येक घर से औरत और मर्द एक साथ रास्तों पर निकल आए। सभी अपने हाथों को आगे किए गिरफ्तारी के लिए बढ़ते रहे।" (अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृ- 273)

शराब-विरोधी आंदोलन के नेता पंडित हरि प्रसाद की रिहाई के निमित्त आप्रवासी भारतीय स्त्रियों द्वारा किया गया धरना प्रदर्शन, गिरफ़्तारी के लिए आगे बढ़ आना व भूख-हड़ताल जारी रखना ये सभी गतिविधियाँ आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीतिक चेतना की आधारशिला कही जा सकती हैं। पंडित हरि प्रसाद की रिहाई को लेकर आप्रवासी भारतीय स्त्रियों द्वारा किये गए भूख-हड़ताल का उल्लेख करते हुए अनत जी लिखते हैं- "मोताईलोंग गाँव के छोटे-से मंदिर में करीब सात दिनों से प्रभा नामक एक बीस वर्षीय शादी-शुदा स्त्री भूख हड़ताल कर रही है। ------यह परित्यक्ता स्त्री इसलिए भूख-हड़ताल कर रही है ताकि सरकार शराब-विरोधी आंदोलन के नेता और उनके साथियों को रिहा कर दे।------ इन सात दिनों से उस महिला ने न तो मुँह में एक दाना रखा है और न ही पानी की एक बूँद।------अगर प्रभा देवी को कुछ हो गया तो उसकी पूरी जिम्मेदारी सरकार पर होगी।" (अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृ- 276)

'अचित्रित' उपन्यास में अनत जी ने वानी के माध्यम से उन स्त्रियों का चित्रण किया है, जो मॉरिशस की आजादी के पक्ष में रहती हैं। यद्यपि वानी का प्रेमी विक्रम उस पक्ष से चुनाव लड़ता है जिस पार्टी के लोग मॉरिशस की आजादी के सख्त खिलाफ थे। जबकि विक्रम का विपक्षी रमानाथ नौरतन नामक मंत्री मॉरिशस को गोरों की दासता से मुक्त कराने के लिए सतत संघर्षरत रहता है। चुनाव के दौरान विक्रम वानी नामक वेश्या, जिसके प्रति विक्रम का आकर्षण रहता है,की मदद लेकर अपने विपक्षी पार्टी के उम्मीदवार व शिक्षामंत्री रामनाथ नौरतन की छवि ख़राब करने की योजना बनाता है। इस काम के लिए वह वानी को पच्चीस हजार रूपये देता है और वानी को यह सलाह देता है कि वह रामनाथ को होटल में आमंत्रित करे ताकि होटल में रामनाथ

को वानी नामक वेश्या के साथ रंगे हाथों पकड़ा जाए और जनता के सम्मुख उसे चरित्रहीन व वेश्यागामी घोषित किया जाए। लेकिन विक्रम की घनिष्ठतम होने के बावजूद भी वानी विक्रम के इन कारनामों में सहयोग देने के लिए तैयार नहीं होती। वह विक्रम से रामनाथ के सच्चरित्र के बारे में जनमत व्यक्त करते हुए कहती है- "मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा यकीन है फिर भी मैं एक निर्दोष को इस तरह की साजिश में नहीं फँसा सकती। जिससे पूछो वह कहता है कि वह आदमी बड़ा ही नेक है।" (अभिमन्यु अनत, अचित्रित, पृ- 99) वानी न सिर्फ रमानाथ नौरतन के प्रति सहानुभूति रखती है बल्कि वह रामनाथ का समर्थन भी करती है ताकि मॉरिशस को ब्रिटिश दासता से मुक्त कराया जा सके। इसके लिए वह अपने घनिष्ठ मित्र विक्रम के मंसूबे पर पानी फेर देती है। वानी, विक्रम के कहने पर रामनाथ को एक होटल में आमंत्रित तो करती है लेकिन उस कमरे के सुराख़ को ढक देती है जहाँ से वानी के साथ रामनाथ की तस्वीर खींचने की योजना बनाई जाती है। वानी विक्रम के मंसूबे पर पानी फेरकर जहाँ एक ओर सच्चे जनसेवक व देशभक्त को बदनाम होने से बचाती है वहीं दूसरी ओर अप्रत्यक्ष रूप से रामनाथ नौरतन का सहयोग करके उस राजनीतिक पार्टी का समर्थन करती नजर आती है, जो मॉरिशस की स्वतंत्रता के लिए एड़ी-चोटी एक किए हुए थी। वानी द्वारा विक्रम के गलत मंसूबों पर पानी फेरना व रमानाथ को चारित्रिक पतन से बचाना ताकि रामनाथ चुनाव जीतकर मॉरिशस को आजादी दिला सके, आदि विचार वानी की राजनीतिक चेतना की पृष्ठभूमि कहे जा सकते हैं।

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ स्वतंत्रता-पूर्व मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीतिक विचारधारा, सामाजिक- राजनीतिक संगठनों, आन्दोलनों व हड़तालों में उनकी सक्रिय भागीदारी का उल्लेख किया है।

बल्कि इसके साथ-साथ स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीतिक स्थिति एवं उनकी राजनीति विषयक विचारधारा, राजनीति में प्रवेश करने का उद्देश्य व उनके दृढ़ संकल्प तथा राजनीतिक संघर्ष का भी चित्रण किया है। उनके द्वारा रचित 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'चुन-चुन-चुनाव', 'आसमान अपना आँगन' आदि उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीतिक स्थिति एवं राजनीति में उनकी सक्रिय भागीदारी का चित्रण किया गया है।

विभिन्न प्रकार के हड़ताल व आन्दोलनों एवं विभिन्न व्यक्तियों के अथक संघर्षों के परिणामस्वरूप 12 मार्च 1968 ई० को मॉरिशस गोरों की दासता से आजाद हो जाता है। आजादी के परिणामस्वरूप आप्रवासी भारतीय मजदूरों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक-सांस्कृतिक व शैक्षिक स्थिति में काफी सुधार होता है। जिसके परिणामस्वरूप आप्रवासी भारतीय स्त्रियाँ भी पढ़-लिखकर शैक्षिक दृष्टिकोण से समर्थ बनती हैं इतना ही नहीं वे अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूक भी रहती है। इसी वजह से वे अपने साथ होने वाले हर प्रकार की ज्यादतियों का तीव्र विरोध करती हैं तथा शोषणतंत्र में शामिल लोगों की छवि को बेनकाब करती है। इतना ही नहीं वे देश-विदेश की सामाजिक, राजनीतिक स्थिति की भी जानकारी रखती हैं तथा देश की भ्रष्ट शासन-प्रणाली व सत्तासीन नेताओं व मंत्रियों के काले कारनामों का कच्चा चिटठा भी जनता के सम्मुख उजागर करती हैं। तथा देश की शासन प्रणाली व शासकों में बदलाव की गुहार लगाती नजर आती हैं।

अनत जी ने 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'चुन-चुन-चुनाव' व 'आसमान अपना आँगन' आदि उपन्यासों के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीतिक चेतना, राजनीतिक स्थिति व उनके राजनीतिक संघर्ष को यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान किया है। 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में अनत जी स्वस्ति के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि स्वस्ति सरीखी विदेश से उच्च-शिक्षा प्राप्त की हुई लड़कियाँ न सिर्फ अपने देश की सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक स्थिति पर नजर रखती हैं बल्कि विदेशों की भी सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक स्थिति व गतिविधियों की भी जानकारी रखती हैं। स्वस्ति फ्रांस से उच्च शिक्षा प्राप्त करके आती हैं वह यहाँ पर नौकरी के लिए कई जगह आवेदन पत्र देती है जब समस्त योग्यताओं के बावजूद उसे व उसके सरीखे अन्य शिक्षित लोगों को नौकरी नहीं मिल पाती जबकि अयोग्य व्यक्तियों को आसानी से नौकरी मिल जाती है, तब स्वस्ति देश की भ्रष्ट शासन प्रणाली को ख़त्म करने की योजना बनाती है तथा स्वयं भी राजनीति में शामिल होने का दृढ़ संकल्प लेती है ताकि वह देश में व्याप्त विसंगतियों को ख़त्म कर सके। स्वस्ति के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीति विषयक विचारधारा एवं राजनीतिक चेतना का उल्लेख करते हुए अनत जी लिखते हैं - "पहले पहल स्वस्ति को लगा कि अफ्रीकी आक्रोश की तेवर और उसके मुद्दे सभी अलग थे। उसके अपने देश की समस्याओं से उसका कुछ भी लेना-देना नहीं था पर बाद में धीरे-धीरे उसे अफ्रीकी स्वर में एक अपनापन का आभास हुआ। उधर रंग, परिस्थिति और पहचान का संघर्ष था, इधर मान्यता, स्थिति और अधिकार का द्वंद्व था। उधर लड़ाई श्वेत और अश्वेत के बीच थी, इधर सम्पन्नता और विपन्नता के बीच। कहीं-न-कहीं मुद्दा एक हो जाता था। ------वह सोचती अपने देश के पूँजीपतियों को धमकाने, लूटने या

उनके क़त्ल से कहीं आसान तरीका था उन्हें अपनी शक्ति बताकर अब तक के स्थापित मूल्यों को बदल देने को विवश कर देना। उन्हें अपनी शक्ति को गलत ढंग से इस्तेमाल करने से रोकना। वह पूँजीपति शक्ति का सही उपयोग चाहती थी। अपनी इस धारणा में वह अमिष और रीतेश से भी अलग खड़ी हो जाती थी।" (अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव,पृ-78) अपनी इसी राजनीतिक विचारधारा से प्रेरित होकर वह देश में बढ़ती बेरोजगारी व शिक्षित नवयुवकों की बेकारी, नौकरी व पदोन्नति में योग्यता के स्थान पर बढ़ते भाई-भतीजावाद, जातिवाद ,क्षेत्रवाद, घूंसखोरी आदि को जड़ से ख़त्म करने की सोचती है। वह भ्रष्ट शासन प्रणाली को सुधारने के उद्देश्य से राजनीति में शामिल होती है - "उसे तो हार-जीत से कहीं अधिक ख्याल था स्थिति को सुधार सकने वाली प्रक्रिया के साथ अपने को जोड़ पाने का।" (अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृ- 61) अपनी सुधारवादी दृष्टिकोण के जरिये ही स्वस्ति देश की भ्रष्ट शासन-व्यवस्था पर कटाक्ष करती है तथा अपने घर के लोगों द्वारा लाख समझाये जाने के बावजूद राजनीति में शामिल होने की अपने निर्णय को बदल नहीं पाती। राजनीति विषयक अपनी विचारधारा को व्यक्त करते हुए वह अमिष से कहती है - "राजनीति सिर्फ ख़राब-ही-ख़राब करती है यही रट लगाते रहने से तो स्थिति दिन-ब-दिन और भी बिगड़ती जाएगी। इससे बेहतर तो यही होगा कि कुछ-न-कुछ किया जाए।" (अभिमन्यु, चुन-चुन-चुनाव, पृ- 12) इसी बेहतरी के निमित्त स्वस्ति समाज में समतामूलक समाज की योजना बनाती है। स्वस्ति यह नहीं चाहती है कि देश के मुट्ठी भर लोग सभी सुविधाओं का उपभोग करें और बहुसंख्यक आमजनता को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी तरसना पड़े। इसलिए वह क्रांति का आह्वान करती है। स्वस्ति की परिवर्तन कामी विचारधारा के बारे में अनत जी लिखते हैं - "स्वस्ति ने महसूसा था कि सचमुच दक्षिण पंथी व्यवस्था के सामाजिक लोकतंत्र के

ये नारे स्वत्वाधिकार निदेशन और उद्योगों में मजदूर भी साझेदार होगा, एक छलावा बनकर रह जाता है। इसीलिए वह चिल्लाई थी - ऐसी व्यवस्था में तो आदमी अपने पसीने की हर बूँद को पूँजीपतियों की तिजोरी के हवाले कर जीने को विवश है। इस विवशता को खंडित करना है। अपने उन विचारों में जिनसे आज सारी पूँजी मुट्ठी भर लोगों की मुट्ठियों में है और जिससे वंचित आदमी की हैसियत पाने में असमर्थ है। क्रांति लाने के लिए वामपंथ ही एक रास्ता है।" (अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, 47)

अनत जी ने अपने उपन्यासों के जरिये न सिर्फ स्त्रियों की राजनीतिक विचारधारा को अभिव्यक्ति प्रदान की है बल्कि इसके साथ ही यह भी दर्शाया है कि किस प्रकार आप्रवासी भारतीय स्त्रियाँ दृढ संकल्प लेकर व्यवस्था में सुधार करने के उद्देश्य से व जनहित की भावना से राजनीति में प्रवेश करती हैं। 'आसमान अपना आँगन' की नंदिनी नवजागरण पार्टी की तरफ से चुनाव लड़ती है। चुनाव-प्रचार के दौरान दिए जाने वाले भाषण में उसकी दृढ संकल्प शक्ति व जनहित के भाव देखे जा सकते हैं। नंदिनी देश की वर्त्तमान दशा का उल्लेख करते हुए नेताओं व मंत्रियों की कूटनीति का पर्दाफाश करती है तथा नेताओं द्वारा जनता को किस प्रकार छला जाता है इस पर भी प्रकाश डालती है। नंदिनी द्वारा दिए भाषण का उल्लेख करते हुए एवं उसके विचारों के बारे में अनत जी लिखते हैं- "नंदिनी गंभीरता के साथ बोले जा रही थी - यह मेरी प्रतिज्ञा है। ये आज मंत्री बने बैठे लोग यह भूल बैठे हैं कि वे आज जहाँ हैं, आपके पहुँचाएँ हैं। राजकीय संरक्षण और ताकत के नशे में वे अपने को, आपके प्रतिनिधि, आपके सेवक न मानकर अपने को स्वामी और नेता तथा जनता को दास मानने लगे हैं। -------ये बोलते रहते हैं, पर करते कुछ नहीं। नशीले पदार्थों को रोकने, इस जहर से हमारी नई पीढ़ी को तबाह होने से रोकने की लम्बी-चौड़ी बातें करके भी ये न तो उस

जहर को देश में आने से रोक सके और न ही मौत के सौदागरों को गिरफ़्तार कर पाए। -----इस देश की महिलाओं के हित के लिए क्या-क्या करने की आवाजें नहीं बुलंद की गयीं, पर क्या औरतों को वे सारे अधिकार दिला पाए ये लोग? आजादी के इतने साल बाद बार-बार औरत की दुहाई दी जाती रही है, पर शक्कर कोठियों, फैक्टरियों या दफ्तरों में काम करने वाली कितनी औरतों को ये लोग मर्दों के समान स्थिति दे पाए? ओहदों की बात तो दूर रही, बराबर के हक़ से भी उन्हें वंचित रखा गया है।" (अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आंगन, 375) नंदिनी जिस उद्देश्य से राजनीति में प्रवेश करती है उसका निराकरण करते हुए जनता के समक्ष इस प्रकार कहती है - "मैं आपके सामने वायदे लेकर नहीं आयी हूँ। मैं आपसे अपने इस देश के लिए कुछ करने का अवसर माँगने आयी हूँ। मैं शोषितों, पीड़ितों, दंड़ितों और बहिष्कृतों की आवाज बनने के सपने लेकर आपके सामने आयी हूँ। मैं आपके सहयोग से उस भयानक जंगल में दाखिल होना चाहती हूँ जहाँ आदमी को मेमने समझने वाले बहुत सारे भेड़ियों से उन्हें बचाना है। जो चेहरों पर मुखौटे लगाए अधिकार, न्याय, विकास, प्रगति, आधुनिकता, सम्पन्नता के ढिंढोरे पीटते रहे हैं, उनकी ये बातें केवल सुनाई पड़ती रहीं हैं, पर दिखाई कभी नहीं देती। इनके सारे संघर्ष अपने और अपने रिश्तेदारों के हित के लिए होते रहे हैं। " (अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, 376)

अनत जी ने अपने उपन्यासों के जरिये न सिर्फ स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीतिक पहल का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ ही चुनाव के दौरान महिला प्रत्याशी के साथ -साथ उनके सहयोगियों एवं वोटरों की सक्रियता का भी यथार्थपरक चित्रण किया है। वे लिखते हैं - "उत्तर प्रान्त के दो चुनाव

क्षेत्रों में महिलाएँ बहुत ही कम संख्या में वोट देने पहुँची। नंदिनी को अपने चुनाव-क्षेत्र में जब इस खतरे का आभास मिला तो वह तुरंत ही अपनी कर्मठ सहयोगी वनमाला जगेसर के साथ काम में जुट गई। घर-घर पहुँचकर महिलाओं को मतदान के लिए राजी करने में अनुराधा भी नंदिनी के साथ कंधे-से-कन्धा मिलाकर रही। -------बोनकोई की महिलाओं ने जबरदस्त ढंग से चुनाव में भाग लिया। उस सक्रियता को देखकर हंस ने प्रभात से कहा, "महिलाएँ अगर सहमकर घर ही रह जाती तो हमारी जीत की संभावना जाती रहती।" (अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, 407)

अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की राजनीति में सक्रियता का वर्णन तो किया ही है साथ ही यह भी दर्शाने का प्रयास किया है कि इन महिला प्रत्याशियों को किस कदर विपक्षी के साजिशों का शिकार भी होना पड़ता है। विपक्षी पार्टी द्वारा कभी उन्हें चुनाव से हट जाने के लिए सलाह दी जाती है, तो कभी धमकी भरे पत्र भेजे जाते हैं, कभी उन्हें नौकरी देने का प्रलोभन दिया जाता है, तो कभी उन पर चारित्रिक लांछन लगाने की कोशिश की जाती है। लेकिन इन सब साजिशों को झेलते हुए महिला उम्मीदवार अपनी निर्भीकता व दृढ संकल्प शक्ति का परिचय देती हैं। और इसी संकल्प शक्ति के बल पर चुनाव जीतकर सत्ता पर काबिज होने का अधिकार प्राप्त कर लेती हैं। 'आसमान अपना आँगन' की नंदिनी व 'चुन-चुन-चुनाव' की स्वस्ति आदि ऐसी नारी चरित्र का उदहारण पेश करती हैं, जो चुनाव के दौरान आने वाली विविधोन्मुखी बाधाओं को पारकर अपने विपक्षी को परास्त करते हुए बहुमत से चुनाव जीत जाती हैं। चुनाव में महिला प्रत्याशी की जीत का वर्णन करते हुए अनत जी लिखते हैं -"अंतिम परिणाम इस प्रकार था। नवजागरण पार्टी को पैंतालीस सीटें प्राप्त हुईं थीं और सत्ताधारी पक्ष को केवल अठारह सीटें। -----जो पिछले

चुनावों में चुप थे वे उछल पड़े, जो पहले झूम उठे थे वे उदास हो चले। -------नंदिनी अपने दोनों साथी उम्मीदवारों से कोई दो हजार वोट अधिक पाकर अव्वल आई थी।" (अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, 408)

- **पितृसत्तात्मक समाज में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की आर्थिक स्थिति-** अनत जी ने अपने उपन्यासों में न सिर्फ आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की सामाजिक, राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डाला है बल्कि इसके साथ ही उनकी आर्थिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला है। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्रियाँ न सिर्फ घर के अंदर शोषित, प्रताड़ित होती थी बल्कि घर के बाहर काम-धंधों की जगहों पर भी पुरुषों की अहंवादिता एवं शोषण का शिकार होती हैं। जिसकी अभिव्यक्ति अनत जी के विभिन्न उपन्यासों में हुई है। 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासनकाल में स्त्रियों के आर्थिक शोषण का चित्रण किया है। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में कोठी के सरदारों द्वारा आप्रवासी महिला मजदूरों के साथ किए गए आर्थिक शोषण का उल्लेख करते हुए तथा सरदारों की शोषणपरक नीति का पर्दाफाश करते हुए उपन्यास का एक पात्र मूसा कहता है- "**उनका कहना है कि घास काटने और ईख की पत्तियों पर उन्हीं औरतों का अधिकार होगा जो कोठी में काम करती हैं। कुछ कोठी वाले तो इस हद तक चले गए हैं कि जो औरत कोठी में काम नहीं करती, उसे एक ही शर्त पर घास बटोरने का अधिकार होगा कि उसके लिए उसका पति मुफ्त में कोठियों में काम करे, यानी कि मजदूरी का पारिश्रमिक पैसे के बजाय चारे के रूप में दिया जाए।---और अगर औरतें शर्त मानकर खेतों में लौट गई तो वे उस दोगुने काम से तो मरेंगी ही,----**

—-हमारा विरोध तो उन पर ढ्राए जाने वाले जुल्मों के खिलाफ है। लेकिन उन जुल्मों को मिटाना बहुत कठिन है। कानून बना-बनाकर हम थक जाएँगे, पर कोठियों में औरतों का शोषण कभी नहीं रुकेगा।——-जो काम वे औरतों से एक रुपये में करवाने के आदी थे, उसी काम के लिए उन्हें मर्दों को ढाई रुपए देने पड़ते हैं।" (और पसीना बहता रहा, 284) उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट पता चलता है कि किस तरह गौरवर्णी शासकों के शासनकाल में भारतीय महिला कामगारों का श्रम के आधार पर शोषण किया जाता था। कठोर-से-कठोर श्रम करवाकर भी उन्हें उनके पारिश्रमिक से वंचित रखा जाता था या तो कम वेतन दिया जाता था।

अनत जी अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के काम के स्थान पर होने वाले आर्थिक शोषण का चित्रण करते हैं बल्कि इसके साथ ही स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में भी महिला कामगारों के साथ होने वाले अन्यायपरक व्यवहार को भी दर्शाते हैं। मॉरिशस की स्वतन्त्रता के बाद स्त्रियों की स्थिति में कुछ इजाफा होता है। जिसके परिणामस्वरूप वे पढ़-लिखकर स्वावलंबी बनने की कोशिश करती हैं। वे अपने को सिर्फ घर के काम-काज तक सीमित नहीं रखना चाहती। बल्कि अर्थोपार्जन करके स्वयं और स्वयं के परिवार को आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करना चाहती है ताकि उनके परिवार को आर्थिक तंगी का सामना न करना पड़े। इसके लिए कम कीमत पर भी मिलों, कारखानों व फैक्टरियों आदि में काम करने लगती हैं। किन्तु वहाँ पर कंपनी के मैनेजरों, फैक्टरी के मालिकों आदि के द्वारा उनके श्रम का शोषण किया जाता है। एक तरफ उन्हें पुरुष कामगारों की तुलना में समान काम के लिए कम वेतन दिया जाता है। तो दूसरी तरफ उनसे अधिक-से-अधिक काम करवाने की साजिश रची जाती। और अतिरिक्त काम के लिए जो मूल्य निर्धारित

किया, उसे भी नहीं दिया जाता था। फैक्टरी आदि जगहों पर महिला कामगारों के साथ होने वाले अन्याय एवं उनके श्रम के शोषण का चित्रण अनत जी ने 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास के माध्यम से चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में 'जोन फ्रांस' नामक विदेशी कंपनी में कार्यरत महिला कामगारों के साथ फैक्टरी के मालिक व मैनेजरों की शोषणपरक नीति का पर्दाफाश करते हुए महिला कर्मचारी कहती हैं-"**हम लोग ओवरटाइम करने से इंकार नहीं करते, पर उसके लिए जो विशेष पैसे दिये जाते हैं, वह कानूनी ढंग से नहीं दिये जा रहे हैं। और फिर उससे बड़ा अनर्थ तो वह व्यवहार है, जो तीन-चार दिनों से हम लोगों के साथ शुरू हुआ है। दिन भर की उतनी सख्ती के बाद ओवरटाइम के लिए हममें जान ही कहाँ बचती है। (मुड़िया पहाड़ बोल उठा, 73)** फैक्टरी में मालिकों की दमनकारी तरीकों का पर्दाफाश करते हुए उपन्यास की एक पात्र आन्त्वानेत कहती है- "**हम लोग पहले से ही अन्य कारखानों से अधिक काम करती आ रही हैं। इधर अचानक हमसे और भी पच्चीस प्रतिशत अधिक मेहनत करवाकर हमें निचोड़ लेने को सोचा गया है।" (मुड़िया पहाड़, 74)** उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट पता चलता है कि किस तरह महिला कामगारों का आर्थिक शोषण किया जाता था। पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ ही अधिक शोषित हुई हैं। फिर वह चाहे ब्रिटिशकाल में हो या स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में। कभी वे गोरे शासकों की अन्यायपरक नीति का शिकार होती हैं तो कभी मिल मालिकों, मैनेजरों की शोषणपरक एवं अन्यायपरक नीति का शिकार होती हैं। शारीरिक, मानसिक शोषण के साथ-साथ अर्थ के स्तर पर भी उनका शोषण किया जाता था।

- **आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की धार्मिक-सांस्कृतिक स्थिति-** अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर स्त्रियों की सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक संघर्ष को चित्रित किया है बल्कि इसके साथ ही उनकी धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था एवं पराई भूमि में उसे जीवन्त बनाए रखने के प्रयास को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। अनत जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि भले ही औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों को किसी भी प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक अधिकार नहीं प्राप्त थे, उनकी स्थिति पुरुष मजदूरों की तुलना में बदतर थी फिर भी वे पराई भूमि में विविध रूपों में अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था को जीवंत रखने का सार्थक प्रयास करती हैं। आप्रवासी भारतीय स्त्रियाँ न सिर्फ अपनी संस्कृति को बचाए रखने का प्रयास करती हैं बल्कि उसे आगामी पीढ़ी को हस्तान्तरित करने में भी अपनी महत भूमिका का निर्वहन करती हैं।

भारत के समान मॉरिशस में भी बहुदेववाद का प्रचलन है जिसमें विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना, की जाती है तथा अपने कल्याणार्थ व्रत-उपवास, मान-मनौती आदि की जाती है। मॉरिशस में भी आप्रवासी भारतीय स्त्रियों द्वारा विभिन्न देवी-देवताओं- राम, कृष्ण, शिवजी, हनुमान, दुर्गा, काली आदि की पूजा की जाती है। जिसकी अभिव्यक्ति अनत जी के लगभग सभी उपन्यासों में हुई है। उनकी बहुत सी स्त्री पात्र ऐसी है जो विषम परिस्थितियों में भी अपनी धार्मिक आस्था को जीवन्त बनाए रखती हैं। उनके द्वारा नित्य-प्रति सूर्य को जल समर्पित किया जाता है, संध्या पाठ किया जाता है। तथा संध्या के समय तुलसी चौरे व हनुमान जी के चौतरे पर दीपक जलाया जाता है। तथा संकट के समय अपने इष्टदेव को याद कर उनसे संकट टालने की गुहार लगाई जाती है। तथा उन्हें यह विश्वास भी रहता है कि ईश्वर उनकी प्रार्थना जरूर सुनेंगे और उन्हें संकट से उबारेंगे। आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के इस विश्वास को

अनत जी 'हम प्रवासी, उपन्यास में चम्पा के माध्यम से चित्रित करते हैं। समुद्री यात्रा के दौरान भयंकर तूफान के समय आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर में काफी हलचल मच जाती है। सभी लोग जहाज को डूबने से बचाने के लिए अपने इष्टदेव से निवेदन करते हैं। चम्पा भी हनुमान जी से संकट टलने की गुहार लगाती जिसका उल्लेख करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"यात्रियों की चीख रह-रहकर सुनाई पड़ जाती थी। महावीर बस अपनी ही आवाज में हनुमान चालीसा सुनता रहता था। चम्पा मन-ही-मन बोलती जा रही थी, "संकटमोचन हमारा यह संकट हर लो। पवनपुत्र इस जहाज को डूबने मत देना।" और घण्टों बाद जब तूफान का प्रकोप कम होता गया तो चम्पा ने अपने पति से कहा, "महावीर स्वामी ने हमारी प्रार्थना सुन ली।" (हम प्रवासी, पृ-57)** उपर्युक्त उदाहरण में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था एवं विश्वास की स्पष्ट झलक देखी जा सकती है। इसी तरह 'लाल पसीना' उपन्यास का पात्र किसनसिंह अपने घर में होने वाली पूजा का, विशेषकर रेखा द्वारा की जाने वाली पूजा का उल्लेख करते हुए आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की धार्मिक आस्था को निम्न शब्दों में व्यक्त करता है- **"इतना बड़ा पहाड़ उठाए हुए भी हनुमान जी के चेहरे पर दु:ख और चिंता नाम की कोई चीज नहीं थी। हनुमान——शक्ति——शक्ति की ही पूजा तो उसके घर में होती थी। उस दिन जब रेखा आँगन में पेड़ के नीचे उस स्थान को लीपकर एक छोटी-सी लाल- झंडी फहरा रही थी, तो इसी शक्ति के देवता के नाम पर।——आँगन में उसने रेखा को हनुमान जी के चबूतरे के पास अर्ध्य देते पाया।" (लाल पसीना, पृ- 157)** 'अचित्रित' नामक उपन्यास में वानी की माँ के माध्यम से अनत जी ने पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्रियों की धार्मिक आस्था एवं उसे भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करने के प्रयास को व्यक्त किया है। वानी की माँ धार्मिक विचारों वाली महिला है। वह नित्य-प्रति पूजा-पाठ करती, संध्या वंदन करती तथा विभिन्न

धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में सम्मिलित होती है। इतना ही नहीं वह अपने हर कार्य की सफलता का श्रेय ईश्वर के प्रताप को ही मानती है। ईश्वर के प्रति अनास्था रखने वाली अपनी पुत्री वानी को वह सलाह देती है कि वह भी पूजा-पाठ करे, संध्या के समय होने वाले भजन-कीर्तन में वह भी सम्मिलित हो। और जब वानी द्वारा ईश्वर के प्रति आस्था नहीं प्रकट की जाती तब वह वानी को फटकार भी लगाती है। वानी अपनी माँ की धार्मिक आस्था का चित्रण करते हुए एवं ईश्वर के प्रति उनके अटूट विश्वास को व्यक्त करते हुए कहती है- **"हमारे गाँव में पुराना मंदिर था।——मेरी माँ नियमित रूप से पूजा करने जाती थी। भगवान से कुट्टी के बाद मैं कभी नहीं गयी पूजा करने। आज भी भगवान से मेरी कुट्टी है।---घर पर संध्या पाठ होते समय भी मैं उसमें भाग नहीं लेती थी। मेरी माँ कहती-चुड़ैल कहीं की, जब जिंदगी में आफत आएगी तो सारी शेख़ी मिट जाएगी, तब भगवान-भगवान चिल्लाती फिरोगी।" (अचित्रित, पृष्ठ- 29)**

अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने न सिर्फ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था एवं लगाव को चित्रित किया है बल्कि इसके साथ-साथ स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था एवं लगाव को भी दर्शाया है। अनत जी द्वारा रचित लगभग सभी उपन्यासों में, विशेषकर- 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'चौथा प्राणी', 'शेफाली', 'चुन-चुन-चुनाव', 'चलती रहो अनुपमा', 'लहरों की बेटी', 'आसमान अपना आँगन' व 'मेरा निर्णय' आदि में विभिन्न पात्रों के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था, उसके प्रति उनकी अगाध निष्ठा, भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित करने हेतु उनके द्वारा किए जाने वाले प्रयास की सफल अभिव्यक्ति हुई है। 'तीसरे किनारे पर' उपन्यास में अरुणा एवं उसकी माँ के

माध्यम से आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की ईश्वर के प्रति निष्ठा के भाव को दर्शाया गया है- **"शाम को सहदेवसिंह ने हनुमान जी के चौतरे के सामने पूरा घंटा बिता दिया था। उसकी पत्नी ने भी देवी-देवताओं की मनौतियाँ की थीं। दिन भर अरुणा का उपवास था। अरुणा ने हमेशा वही किया जो उसने अपने बाप को करते पाया था। सुबह-शाम वह भी हनुमान जी के चौतरे पर प्रार्थना करने की आदत बना बैठी थी।" (तीसरे किनारे पर, पृष्ठ- 174)** इसी तरह 'आसमान अपना आँगन' की शोभा, 'चलती रहो अनुपमा' की अनुपमा, 'चौथा प्राणी' की वीणा, 'चुन-चुन-चुनाव' की स्वस्ति, 'लहरों की बेटी' की विदुला, व 'शेफाली' की शेफाली आदि स्त्री पात्रों के जरिये अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के धार्मिक-सांस्कृतिक लगाव, उसके संरक्षण के प्रयास एवं भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करने की ललक को यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान किया है।

ख- पारिवारिक एवं आर्थिक जीवन

- **पारिवारिक जीवन**

मॉरिशसीय समाज में स्त्रियों की पारिवारिक स्थिति भारतीय स्त्रियों के ही समान है। जिस प्रकार भारतीय समाज में स्त्रियों का काम घर संभालना, मूल्यों को संरक्षित करना व उनको जीवन्त बनाए रखना तथा आगामी पीढ़ी को हस्तान्तरित करना है। जो धर्म-कर्म में सबसे निपुण मानी है। उन्हीं के समान मॉरिशस की बहुसंख्यक स्त्रियों का कार्य भी घर संभालना, बच्चों की देख-रेख करना व रीति-रिवाजों, परम्पराओं, मान्यताओं को जीवित रखना है। घर के बाहर के निर्णयपुरुष करते हैं और घर के अंदर होने वाले कार्यक्रमों का निर्णय स्त्रियाँ करती हैं। इस सन्दर्भ में भवन्ती महिमा से कहती है- **"देखों, इस घर में रूपये-पैसे तथा दूसरी तकनीकी बातों के लिए मर्दों का निर्णय सर्वोपरि होता हैं, पर जहाँ**

तक रस्म-रिवाज और धरम-करम की बात है उसमें पुरूषों का नहीं नारियों का निर्णय सबसे अधिक मायने रखता है। इसलिए इस घर में तुम्हारी हैसियत की निर्णायक मैं हूँ।" (अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृ-84)

अनत जी ने अपनी रचनाओं में, विशेषकर कहानियों एवं उपन्यासों में आप्रवासी भारतीय मजदूरों की शोषित, पीडित, उपेक्षित दशा का चित्रण करने के साथ-साथ आप्रवासी भारतीय मजदूरों की स्त्रियों बहु-बेटियों पर ढाये जाने वाले जुल्मों पर भी प्रकाश डाला है। आप्रवासी भारतीय महिला मजदूरों को पुरूषों की अपेक्षा दोहरे शोषण का शिकार होना पड़ता है। एक तरफ उन्हें गोरों की त्रासदी झेलनी पड़ती है तो दूसरी तरफ अपने ही घर परिवार में उनकी स्थिति दोयम दर्जे की होती है। जहाँ पुरूष कामगार को खेतों में काम करने के पश्चात् घर में आराम करने की फुर्सत मिल जाती है, वहीं महिला कामगार को वह सुविधा नहीं मिलती। क्योंकि उसे तो घर-परिवार और बच्चों की भी देखभाल करनी पड़ती है। इसके साथ ही पशुओं के भोजन की व्यवस्था भी उसी की जिम्मेदारी होतीहै। उसे घर के भी सारे काम करने पड़ते है । इस प्रकार आप्रवासी महिला कामगारों को पुरूषों की तुलना में ज्यादा काम करने के पश्चात् भी आराम करने की फुर्सत नहीं मिल पाती। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में अनत जी ने देवी के सन्दर्भ में हरि के वक्तव्य के माध्यम से स्त्रियों की पारिवारिक एवं आर्थिक स्थितिकोनिम्नवत दर्शाया है-

"रसोई लीप चुकने के बाद देवी जब हरि के ठीक सामने अपने हाथ-पाँव धोने लगी, तो वह उसे देखता रहा। सोचने लगा कि इस घर में वही तो एक है, जो दिन-रात सभी जनों के लिए सबसे अधिक काम करती है।........... हरि को आज पहली बार ऐसा लगा कि वह इस समाज की विडम्बना है मर्द पाँच-सात घण्टे काम करके स्वयं को परिवार का पालन-पोषण करने वाला मान लेता है, लेकिन घर में जो औरत पन्द्रह-बीस घन्टे काम करती है,

वह उस मेहनत के लिए एक पैसे की भी हकदार नहीं समझी जाती। मर्द काम से लौटने के बाद थका-माँदा माना जाता है, उसके लिए आराम और सेवा जरूरी हो जाती है, लेकिन घर में काम करके औरत जैसे कभी थकती ही नहीं। अगर उसे भी थकान के एहसास का आभास मिला होता तो फिर मर्द के हाथ-पाँव दबाने का फर्ज कौन निभाता। हरि ने पहली बार अपने को इतने पेचीदा सवाल के रूब रू पाया। कहाँ तो वह मर्दों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध था और कहाँ औरत को उसी हालत में हरने देने के विवशता से भरा था। कुछ औरते तो खेतों और घरों, दोनों जगह काम करके भी मर्द को प्राप्त सुविधाओं से वंचित थी। मजदूरों के लिए तो हरि जमींदारों, मिल-मालिकों और सरकार-सभी से झगने को तैयार था, पर आज पहली बार उसने अपने आप से पूछा औरतों के बेहतर दिनों के लिए किससे लड़ा जाये?" (अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा,पृ-198)

हरि के माध्यम से अनत जी ने औरतों के बेहतर भविष्य व समाज में उनको समान अधिकार व महत्व दिलाने के सन्दर्भ में जो सवाल उठाया है, वह समस्या आज भी जीवन्त है। आज भी समाज में चाहे वह जिस देश का समाज हो, स्त्रियों को वे समस्त सुविधाएँ, अधिकार नहीं प्राप्त है जो पुरूषों को प्राप्त है, चाहे वे स्त्रियाँ घरेलू काम करने वाली हों या दफ्तरों में काम करने वाली। जहाँ एक पुरूष दफ्तरो, खेतों कारखानों आदि में 8 घण्टे काम करने के पश्चात् आराम करने का हक प्राप्तकर लेता है वहाँ महिला कामगार को वह आराम नसीब नहीं होता क्योंकि उसे घर के भीतर की सभी जिम्मेदारियों को भी निभाना पड़ता है। उसे सास-ससुर, पति के सेवा के अतिरिक्त घर की हर छोटी-बड़ी चीजों की देखभाल करना, घर के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की जिम्मेदारी भी

उसी की होती है। इतना सब करने के बाद भी एक स्त्री को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना की पुरूष को दिया जाता है। समाज में व्याप्त इसी असमानता व स्त्रियों के प्रति भेदभावपरक व्यवहार को अनत जी ने अपने साहित्य में स्थान दिया है।

- **भिन्न-भिन्न परिवेश में जीवन यापन करने वाली स्त्रियों का चित्रण**

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों के माध्यम से भिन्न-भिन्न परिवेशों में रहने वाली तथा भिन्न-भिन्न संस्कृतियों को मानने वाली स्त्रियों के भाव-विचार व व्यवहार का भी चित्रण किया है। 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में अनत जी स्वस्ति की माँ के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के अनुकूल आचरण करने वाली तथा भारतीय संस्कृति के अनुकूल आचरण करने वाली स्त्रियों का चित्रण किया है। जो सदैव पिता, पति व पुत्र की छत्रछाया में जीवन गुजारना मंजूर करती हैं। भले ही उन्हें घर में पति व पुत्र की उपेक्षाओं का शिकार होना पड़े। या बात-बात पर पति द्वारा प्रताड़ित की जाती हों। ऐसी स्त्रियों के सन्दर्भ में अनत जी लिखते हैं- **"स्वस्ति ने दो छोर देखे थे। अपने घर में अपनी माँ के रूप में वह जिस नारी को देखती आ रही थी। वह उसके बाप की पत्नी से कहीं अधिक उस घर की दासी थी। इसलिए नहीं कि उस पर जुल्म ढाया जाता था या उसे उस तरह की हैसियतके लिए मजबूर किया जाता था। उसके लिए तो वही जीवन उसका धर्म था। उतने बड़े घर में सिर्फ एक ही तो नौकरानी थी और उसे भी रसोई में प्रवेश करने की इजाजत नहीं थी।" ...."अपने घर के भीतर अपने पति की डांट-डफ्ट और चारदीवारी का सारा काम-काज ही उसका अपना संकुचित संसार था।.........स्वस्ति का बाप कभी पुजारी था पर उसकी माँ तो उसके बाप की क्षण-क्षण की पुजारिन थी। उस आदमी की सबसे बड़ी कठोरता को भी चुपचाप सह जाना उसकी पूजा थी। उसकी नियति थी। ये ही सारी बातें**

थी स्वस्ति को अपने घर की रीति-रिवाजों से बगावत कर जाने में विवश कर देने की।" (अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृ-28)

स्वस्ति की सहेलियों के माध्यम से अनत जी उन नवयुवतियों का चित्रण करते हैं जो विदेशी भूमि में जाकर वहीं की संस्कृति को अपना लेती हैं। स्वस्ति की सहेलियाँ- रोजालीन व निकोल पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करके उसके अनुसार जीवन जीने की कोशिश करती हैं। आधुनिकता के रंग में रंगी हुई वे लोग उन परम्परागत मूल्यों, मान्यताओं, रीति-रिवाजों, संस्कारों आदि को नकारती हैं। तथा किसी भी प्रकार के बंधन में न बँधकर स्वतंत्र जीवन जीने की चाह रखती है। इस सन्दर्भ में अनत जी लिखते हैं- **"और एक दूसरी दुनिया स्वस्ति वहाँ पेरिस में देख आयी थी। फ्रांस्वाज रोजालीन और निकोल की वह विस्तृत दुनिया। वह दूसरा छोर था। स्वस्ति बीच में खड़ी थी। दोनों में से किसी एक को ज्यों-का-त्यों अंगीकार कर जाना उसे गवारा नहीं था। एक में घुटन और अकुलाहट थी दूसरे में खो जाने का भय था। एक बन्दीगृह था दूसरा बिन छाजन का बिन अहाते का एक फैलाव। एक ओर उसकी माँ थी जो बस नौ बच्चों को जन्म देती रही थी। दूसरी ओर थी फ्रांस्वाज, रोजालीन और निकोल न शादी में जकड़े जाने की चाह थी, न माँ बनने की इच्छा।" (अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृ-28-29)**

- **आर्थिक संघर्ष**

अभिमन्यु अनत अपने उपन्यासों में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की पारिवारिक जीवन चित्रण करने के साथ साथ उनके आर्थिक संघर्ष को वाणी प्रदान की है। अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों 'लाल पसीना', 'अचित्रित', 'चौथा प्राणी', 'चलती रहो अनुपमा',

'मेरा निर्णय', 'क्यों न फिर से', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'आसमान अपना आँगन', 'चुन चुन चुनाव' आदि के स्त्री पात्रों द्वारा क्रमशः मीरा, वाणी, वीना, अनुपमा, अमिता, महिमा, नेहा, शोभा, स्वस्ति आदि के माध्यम से आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के आर्थिक स्थिति, आर्थिक तंगी की वजह जिसमे- बेरोजगारी, महंगाई, नौकरी का अभाव, पति के नशे का आदि होना, एकमात्र कमाऊ, परिवार के मुखिया की असामयिक मृत्यु आदि एवं आर्थिक तंगी के निवारण हेतु स्त्रियों द्वारा अपनायी जाने वाली युक्तियां आदि का सफल चित्रांकन किया गया है। देश मे दिनों-दिन बढ़ती महंगाई के कारण किसान, मजदूरोंकी आर्थिक स्थिति और भी डावांडोल हो जाती है। एक तरफ उन्हें बेरोजगारी की वजह से काम की तलाश में भटकना पड़ता है तो दूसरी तरफ उन्हें उचित पारिश्रमिक नही मिलता। परिणामस्वरूप उनका आर्थिक संतुलन बिगड़ जाता है या फिर वे अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति तक नही कर पाते हैं। दिनों दिन बढ़ती महंगाई के कारण उत्पन्न होने वाली आर्थिक समस्या का चित्रण एवं उससे निजात पाने हेतु किये जाने वाले संघर्ष को अनत जी ने 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में नेहा के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त करते हैं-**"इधर कुछ दिनों से जब मँहगाई एकाएक बाँस की तरह बढ़ आयी थी और अभाव में उसकी माँ का यह कोसना अधिक प्रचण्ड हो चला था तो नेहा किसी न किसी तरह की एक नौकरी के लिए छटपटाने लगी थी।" (अभिमन्यु अनत, मुडिया पहाड़ बोल उठा,पृ-7)**

'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में नेहा अपनी आर्थिक विपन्नता को दर्शाते हुए उससे निजात पाने के लिए संघर्षरत रहती है। पिता की बीमारी की वजह से उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नही रहती, जिसके परिणामस्वरूप नेहा को पिता की बीमारी एवं अपनी बहनों के लिए पढ़ाई आदि के निमित्त होने वाली ख़र्च की चिंता रहती है। अपने परिवार को इस आर्थिक विपन्नता से उबरने हेतु वह फैक्टरी में काम करने लगती है। नेहा

के परिवार की आर्थिक विपन्नता का चित्रण करते हुए अनत जी लिखते हैं-**"उसे वह दिन याद आ गया, जब उसके घर से बहिला गाय मजबूरीकी हालत में कसाई के हाथ बेंच दी गयी थी।...........नेहा भी यह निश्चय कर उठी थी कि उसे अपनी माँ की जिम्मेदारी को अपने कंधे भी कुछ लेना ही था। अंजू और छाया में अभी एक दस साल की थी तो दूसरी छः साल की। उसके पिता ने अपने परिवार में बेंटे की जो इच्छा की थी, वह अधूरी समझ ली गयी थी; लेकिन नेहा प्रण कर चुकी थी कि वह अपने पिता के लिए बेटा प्रमाणित होकर रहेगी।" (अभिमन्यु अनत, मुडिया पहाड़ बोल उठा, 8)** अनत द्वारा रचित 'चलती रहो अनुपमा', 'चौथा प्राणी', 'लहरों की बेटी', 'अचित्रित', 'मेरा निर्णय' आदि उपन्यासों में भी आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के आर्थिक संघर्ष का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। उपर्युक्त वर्णित उपन्यासों की स्त्री पात्र क्रमशः अनुपमा, वीणा, विदुला, वानी, अमिता, आदि के माध्यम से उन स्त्रियों का चित्रण किया गया है जिनके ऊपर अल्पायु में ही पिता व भाई के अभाव के कारण आर्थिक जिम्मेदारी का बोझ आ जाता है। 'आसमान अपना आँगन' में शोभा अपनी आर्थिक विपन्नता को इन शब्दों में व्यक्त करती है-

"मैं अपने उन दिनों को कैसे बिसार सकती हूं माँ बाप के होते हुए तीन दिन बिना खाये.....पेट की भूख के लिए तो अलग तरीके अपनाने पड़ते थे। अपनी माँ के बीमारी के कारण रसोई के सारे काम उसे तो करने ही पड़ते थे, पर साथ साथ अनाज की व्यवस्था भी कई बार उसे ही करनी पड़ जाती थी। विशेषकर जब उसके पिता की मृत्यु के बाद से उसकी माँ को एक एक करके पहले मुर्गियाँ बेचनी पड़ी थी फिर बकरियां और उसके बाद गाय के साथ बछड़ा भी, अपने गहनों से तो उसके माँ को बहुत पहले हाथ धोने पड़ गए थे। घर मे चावल दाल के अभाव में शोभा कभी मकई का भात पकाती तो कभी सफेद कंद उबालकर अपना और अपनी माँ का पेट भर पाती।" (आसमान अपना आँगन, पृ-225)

- **स्त्रियों का आर्थिक शोषण**

अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के साथ होने वाले आर्थिक शोषण का भी चित्रांकन किया है। खेतों और फैक्ट्रियों में काम करने वाली महिला कर्मचारियों को समान काम के लिए समान वेतन नहीं दिया जाता। यद्यपि उनसे काम तो पुरुष कामगारों के बराबर ही लिया जाता है, बावजूद इसके उन्हें कम आय दी जाती है। अनत जी महिला कामगारों के साथ होने वाले अन्याय को अपने विभिन्न उपन्यासों में चित्रित करते हैं किन्तु 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में स्त्रियों के साथ श्रम के आधार पर होने वाले भेद-भाव परक व्यवहार का यथार्थपरक चित्रण किया है। इसके साथ ही अनत जी यह भी दर्शाते हैं कि खेतों और फैक्टरियों आदि में कार्यरत महिलाओं को पुरुष कामगारों की तुलना में न सिर्फ कम पारिश्रमिक दिया जाता है। बल्कि उनसे अधिक-से-अधिक काम करवाने की भी साजिश रची जाती है। जिसके तहत उनसे बेगारी करवाकर भी उनको समय पर पूरा वेतन नहीं दिया जाता। महिलाओं के साथ होने वाली इस ज्यादती का उल्लेख करती हुई 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास की एक पात्र जुबेदा कहती है-**"यह सही है कि हम लोगों से बहुत ही ज्यादा मेहनत कराई जा रही है, फिर भी अगर पैसा मिलता है तो काम किसी-न-किसी तरह हम लोग कर ही लेंगे। बिना किसी उम्मीद के हम में से कोई भी जानलेवा मेहनत क्यों करना चाहेगी?" (अभिमन्यु अनत, मुडिया पहाड़ बोल उठा, पृ-77)**

- **पति द्वारा शोषित स्त्रियों की मनोव्यथा**

अभिमन्यु अनत ने अपने साहित्य में उन स्त्रियों की मनोव्यथा एवं पीड़ा को भी वाणी प्रदान किया है। जिन्हें अपने जीवन साथी की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है तथा उनके क्रूरतम व्यवहारों का सामना करना पड़ता है। पति द्वारा अपनी पत्नियों के साथ किए

जाने वाले अभद्र व्यवहार की झाँकी अनत जी के कई उपन्यासों में देखी जा सकती है। लेकिन जिन उपन्यासों में इस स्थिति की पुरजोर अभिव्यक्ति हुई है उनमें- 'अपनी-अपनी-सीमा', 'फैसला आपका', 'घर लौट चलो वैशाली', 'अपना मन उपवन', 'आसमान अपना आँगन', 'क्यों न फिर से', 'हम प्रवासी' व 'मेरा निर्णय' आदि के नाम लिए जा सकते हैं। उपर्युक्त वर्णित उपन्यासों में अनत जी जहाँ एक ओर पति-पत्नी के मध्य होने वाली टकराहट एवं उस टकराहट की शिकार स्त्रियों की शोषित, पीड़ित व उपेक्षित दशा का चित्रण किया है। वहीं दूसरी ओर दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न होने वाली टकराहट के विभिन्न कारणों पर भी प्रकाश डाला है। इन कारणों में कभी पति की आर्थिक तंगी आड़े हाथों आती है, तो कभी पति का नशे की लत का शिकार होना। कभी पति का वेश्यागामी होना या परस्त्रीगमन की ओर उन्मुख होना। कभी स्त्री का पर पुरुष के प्रति आकर्षण आड़े हाथों आता है, तो कभी उसकी संतानहीनता या वंशवृद्धि के वारिस न दे पाना। 'अपनी-अपनी सीमा' उपन्यास में सीमा एवं आलोक के माध्यम से पति के अतिमहत्वाकांक्षी होने की वजह से दाम्पत्य जीवन में आने वाली टकराहट का चित्रण किया गया है। सीमा एवं उसके पति आलोक के मध्य उत्पन्न होने वाले आपसी कलह का मुख्य कारण आलोक का अति महत्वाकांक्षी स्वभाव है। वह जल्द-से-जल्द धनवान बन जाने की कोशिश करता है लेकिन वास्तविक जीवन में उसे आर्थिक तंगी का शिकार होना पड़ता है। हीनभावना से ग्रसित होने के कारण वह छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा करने लगता है और उसका यह क्रोध सीमा पर निकलता है। सीमा द्वारा गलती न किए जाने पर भी वह सीमा पर हाथ उठता है। और सीमा को तरह-तरह से प्रताड़ित करता है। आलोक द्वारा सीमा के साथ किए गए अभद्र व्यवहार को निम्न उदाहरण के माध्यम से देखा जा सकता है- **"ऐसे तो आदमी बैल को भी नहीं मारता। भीतर पहुँचकर उसने सीमा को बेहोश पाया था। दो स्त्रियाँ उसे पानी की छीटों के साथ इत्र सुंघाने में लगी हुई थीं। होश आने पर सीमा अपने सास से लिपट गयी**

थी। उधर मधु के सिर से भी खून बह रहा था। वह अपनी भाभी के आगे आ गई थी, और आलोक ने उसे ढ़केल दिया था। ——सीमा के शरीर से बिल्कुल खून नहीं बह रहा था, लेकिन मधु के कहने पर जब पीठ से कपड़े हटाए गए थे तब लातों के निशान उसके आधे शरीर पर झलक रहे थे। पीठ और पंजरी कुचली हुई सी लग रही थी।" (अपनी-अपनी-सीमा, 62-63) इसी तरह 'आसमान अपना आँगन' का दिनेश अपनी पत्नी अनुराधा पर जुल्म ढाता है। दिनेश और अनुराधा के मध्य होने वाली कलह का मुख्य कारण दिनेश का परस्त्रीगमन है। वह शादी-शुदा होने के बावजूद अपने दूर के रिश्तेदार नंदिनी के प्रति आकर्षण का भाव रखता है साथ ही विदेश यात्रा के दौरान भी अनेक स्त्रियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है। अनुराधा द्वारा जब दिनेश की इन ज्यादतियों से बाज आने को कहा जाता है तब वह अनुराधा पर ही हाथ उठा देता है। और यह धमकी भी देता है कि वह उसके व्यक्तिगत जीवन में ताक-झाँक न करे और न ही कोई सवाल करे नहीं तो इसके लिए उसे जान से हाथ भी धोना पड़ सकता है। इस सन्दर्भ में एक उदहारण दृष्टव्य है - **" अनुराधा के दिमाग में फिर से दिनेश की आवाज झनझना उठी, तुम अगर इसी तरह मेरी व्यक्तिगत जिंदगी में दखलंदाजी करती रहोगी तो एक दिन——अपनी जान से हाथ धो बैठोगी।" (आसमान अपना आँगन, 298)**

इसी तरह 'अपना मन उपवन' शीर्षक उपन्यास में अनत जी नमिता के परित्यक्त जीवन एवं उसकी त्रासदपूर्ण स्थिति का सजीव अंकन किया है। नमिता एवं विपिन के दाम्पत्य जीवन में होने वाली टकराहट का मूल कारण विपिन की पूर्व प्रेमिका, शालिनी का प्रवेश है। विपिन और शालिनी एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, वे दोनों शादी भी करना चाहते हैं लेकिन पारिवारिक दबाव के चलते दोनों दांपत्य-सूत्र में नहीं बंध पाते। विपिन की माँ विपिन की शादी नमिता से करवा देती है। नमिता से शादी हो जाने के बाद भी विपिन के मन में शालिनी के प्रति ही आकर्षण का भाव रहता है। और इसी वजह से नमिता और

विपिन के संबंधों में दरार आ जाती है। परिणामस्वरूप विपिन घर छोड़कर शालिनी के पास चला जाता है और उसी के साथ रहने लगता है। विपिन के घर छोड़कर चले जाने से नमिता की मनोदशा अत्यंत दयनीय हो जाती है। वह पति द्वारा उपेक्षित की जाती है। नमिता अपने परित्यक्ता जीवन की त्रासदी एवं अपनी मनोव्यथा को इस प्रकार व्यक्त करती है- **"मेरी सास मुझे धैर्य बंधाती हुई कहती रहती थी कि एक बच्चे के जन्म जाने पर वह नाम रगड़ता हुआ इस घर को लौट आएगा।------आज नमिता का वह बच्चा ग्यारह साल का हो चला था। और उधर सात साल होने को हैं-जबसे उसके पति ने इस घर को हमेशा के लिए छोड़ दिया। .....अपनी सास के कहने पर ही उस दिन, आज से साढ़े छह साल पहले, नमिता ने अपनी सास के साथ पड़ोस के उस गाँव में पहुँचने की हिम्मत की थी।.... घर से निकलने से पहले उसकी सास ने उसे यह हिदायत दे रखी थी कि उस बेहया घर-उजाड़न औरत के सामने वह तनिक भी न डरे और अपने पति से भी डटकर अपना अधिकार जताए। उस औरत के साथ नमिता और उसकी सास की गरमा-गरम बहस घंटे-भर तक चली थी। ऐसा होते ही विपिन खूंखार रूप से अपनी माँ की ओर लपका था उसे ऐसा करते देख नमिता माँ-बेटे के बीच आ खड़ी हुई थी। नमिता को सामने पाकर अपनी माँ को छोड़ विपिन ने नमिता को एक ऐसा धक्का दिया कि वह सीढियों से लुढ़कती हुई नीचे को आ गिरी थी। चोट इतनी गहरी आई थी कि उससे उठा नहीं गया था। ....डाक्टरी मुआयने और एक्स-रे के बाद पता चला कि कमर की एक हड्डी को गहरी चोट पहुँची थी और एक नस छटक कर दूसरी नस के साथ चिपक-सी गई थी।" (अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन,पृ-18;** भावसाम्य–अपनी-अपनी सीमा उपन्यास की सीमा-आलोक से पृ सं०-62-63)

- **अकेलेपन की त्रासदी**

अनत जी ने अकेलेपन की त्रासदी को झेलने वाली स्त्रियों एवं उस त्रासद स्थिति के विभिन्न पहलुओं पर भी अपनी लेखनी चलायी है। अपने विभिन्न उपन्यासों- 'तीसरे किनारे पर', 'लहरों की बेटी', 'चलती रहो अनुपमा', 'आसमान अपना आँगन', 'अपना मन उपवन', 'जम गया सूरज', 'अपनी ही तलाश', 'शेफाली', 'लाल पसीना', 'घर लौट चलो वैशाली' व ' अचित्रित' आदि के स्त्री पात्रों द्वारा क्रमशः राजेन की मौसी, दुलारी, सफीना, नंदिनी, रोजालीन, सरस्वती, रूना, शेफाली, मीरा, वैशाली, नीता आदि के माध्यम से एकाकी जीवन यापन करने वाली एवं अकेलेपन के दंश को झेलने वाली स्त्रियों की मनोव्यथा को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। 'अचित्रित' उपन्यास में नीता अपने अकेलेपन की वजह एवं उसकी पीड़ा को व्यक्त करते हुए मन्त्रियों व नेताओं की पत्नियों के अकेलेपनके दंश को व्यक्त करते हुएवानी से कहती है- **"इससे पहले चन्दन जो काम करता था उसमें आजादी थी। जिम्मेवारी कम थी और हम लोगों को घूमने-फिरने का खूब अवसर मिलता था यह फाइनेन्स मिनिस्ट्री का काम तो इतनी अधिक जिम्मेवारी का काम है कि कभी तो रात-रात भर उसे बाहर रहना पड़ता है। दो पैसा ज्यादा पानेकी बहुत बड़ी सजा है यह। मैं तो ऊब जाती हूँ। कभी लगता है कि अपनी कोई जिन्दगी है ही नहीं। मन्त्रीका सलाहकार बनकर चन्दन अपने घर में पराया-सा बन गया है।" (अभिमन्यु अनत, अचित्रित, पृ-**38)

'शेफाली' उपन्यास में शेफाली अपनी जिन्दगी से तंग आकर एक दिन आत्महत्या करने का प्रयास करती है। जब अशित उससे फोन पर बात करते समय उससे आत्महत्या करने के कारण पूछता है। तब वह कहती है- **"अशित, जिन्दगी..... जिन्दगी जीने के लिए**

...........जी भरकर जीने के लिए भी होती है पर ....पर कभी जिन्दगी दफना देने के लिए भी होती है। अशित" (अभिमन्यु अनत, शेफाली, पृ-13) शेफाली, निरर्थकताबोध व जिन्दगी से ऊब जाने के परिमाणस्वरूप वह आत्महत्या करने की कोशिश करती है। नींद की कई गोलियाँ एक साथ खा लेने के बाद वह अशित के पास फोन करती है अशित को बातों के दौरान पता चलता है कि वह आत्महत्या कर चुकने के बाद अन्तिम साँसे गिन रही है। तभी अशित उसके ऐसा करने (आत्महत्या) की वजह पूछता है तब शेफाली कहती है- **"दो ही कारण तो होते है किसी सफर को खत्म करने के मंजिल या थकान।" जब अशित उससे कहता है कि क्या तुमने मंजिल पा ली क्या? तब वह कहती है-"थक तो सकती हूँ।" (अभिमन्यु अनत, शेफाली, पृ-25)** शेफाली का यह कथन 'थक तो सकती हूँ।' उसकी जिन्दगी के अकेलेपन, ऊब को व्यक्त करता है। क्योंकि शेफाली पेशे से एक वैश्या है जो सदैव समाज द्वारा तिरस्कृत व अपमानित होती रहती है। इसके साथ ही अशित का साथ छूट जाना व विनोद की पत्नी की प्रताड़नाओं से पीडित होकर वह आत्महत्या करने का निर्णय लेती है।

'अपना मन उपवन' शीर्षक उपन्यास में शालिनी व रोजालीन के माध्यम से परिवार द्वारा उपेक्षित स्त्रियों की मानसिक व्यथा एवं उनके अकेलेपन के दंश को दर्शाया गया है। शालिनी रोजालीन से कहती है- **"सोचती हूँ, तुम जैसी सहेली मुझे नहीं मिली होती तो मैं अपने जीवन की नीरसता में कब तक घुटती शराब को तुमसे अधिक महत्व दिया और मेरे पति ने गांजे को मुझसे ज्यादा प्यार किया। वह मेरे पैसे को दोस्तों के बीच गंवाता रहा, तुम्हारा वाला तुम्हारे पैसे से अपने दोस्तों को पिलाता रहा। एक ने शराब के पीछे अपनी जान गँवा दी, दूसरा गांजे की लत के कारण जेल पहुँच गया। तुम्हारे परिवार**

ने तुम्हारा बहिष्कार इसलिए कर दिया, क्योंकि तुमने एक हिन्दू से ब्याह किया। मेरे परिवार ने मुझे इसलिए त्याग दिया, क्योंकि मैंने उनके ठुकराए हुए व्यक्ति से शादी कर ली.........." (अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन,पृ-113) इसी तरह 'तीसरे किनारे पर' उपन्यास में राजेन की मौसी के माध्यम से प्रेमी द्वारा परित्यक्त नारी की मनोव्यथा एवं उसके अकेलेपन के दंश को प्रस्तुत किया गया है। अनत जी लिखते हैं- **"राकेश की यह मौसी कालेज के दिनों में जिस लड़के को प्यार करने लगी भी वह गैर-जाति का था। दोनों में से किसी एक ने भी जाति-पाँति तथा हैसियत आदि के भाव को कोई महत्व नहीं दिया था फिट भी दोनों के बीच का प्यार स्थायी न हो सका। परिवार के दबाव में आकर उस लड़के ने अपने वचन को आत्महत्या कर लेने दिया और एक दिन चुपके से द्वीप छोड़कर ज्ञानार्जन के लिए फ्रांस चला गया। राकेश की मौसी अपनी वेदना को सभी से छुपाकर भी अपने बहनोई से न छिपा सकी और फिर तो अपने बाप की मृत्यु के बाद उसे बहनोई के घर का ही सहारा मिला।......... अपने को परिस्थिति की दासी बनाकर भी वह सीमा से बाहर नहीं हुई। पैंतीस वर्ष की उम्र में वह आज भी अविवाहित थी। उसे कभी भी बच्चे नहीं होंगे इस बात को जानकर भी वह दु:खी नहीं हुई थी। ...... तभी से राकेश को वह अपना बेटा मानती थी।" (तीसरे किनारे पर, पृ-89)**

- **वेश्याजीवन की त्रासदी**

अनत जी अपने कथा साहित्य के माध्यम से उन स्त्रियों के जीवन संघर्ष एवं उनकी जीवनाकाँक्षा का भी यथार्थपरक चित्रण किया है जो न चाहते हुए भी आर्थिक तंगी की पराकाष्ठा को कुछ हद तक काम करने के उद्देश्य से वेश्यावृत्ति की ओर उन्मुख होती हैं। रोजगार के अभाव, बेकारी और आर्थिक तंगी की वजह एवं परिवार के मुखिया के

असामयिक मृत्यु की वजह से जिनकी पारिवारिक स्थिति ठीक नहीं रहती। ऐसी स्थिति में कुछ स्त्रियाँ देह-व्यापार करके जीवन यापन करने की ओर उन्मुख होती हैं। ताकि वे अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें एवं अपनी आर्थिक विपन्नता को काम कर सके तथा स्वयं किसी के सिर पर बोझ न बन सकें। अनत जी ने 'शेफाली' एवं 'अचित्रित' शीर्षक उपन्यासों के माध्यम से वेश्या जीवन की ओर उन्मुख होने वाली स्त्रियों की पीड़ा, उनकी शोषित, पीड़ित, उपेक्षित व दयनीय दशा को प्राप्त स्थिति का सजीव का अंकन किया है। साथ ही उन विभिन्न कारणों पर भी प्रकाश डाला है जिनकी वजह से स्त्रियाँ देह-व्यापार जैसे निकृष्ट धंधे में शामिल होने पर मजबूर हो जाती हैं। यद्यपि वे यह भी जानती हैं कि देह-व्यापार के पेशे में प्रवेश करने पर उन्हें न तो उनके घर वाले सम्मान की दृष्टि से देखेंगे और न ही समाज के लोग। वेश्यावृति में शामिल स्त्रियों को न तो किसी सामाजिक समारोहों में शामिल किया जाता है और न ही उन्हें उनके घर के लोग घर में होने वाले समारोहों में बुलाते हैं। ऐसी स्थिति में उनकी पीड़ा और भी बढ़ जाती है।

वेश्याओं के प्रति लोगों द्वारा अपनायी जाने वाली उपेक्षापरक दृष्टि एवं वेश्यावृत्ति में शामिल स्त्रियों की मनोव्यथा एवं उनकी आशा-आकाँक्षा, भाव-विचारों एवं अकेलेपन की त्रासदी को अनत जी ने 'शेफाली' उपन्यास की शेफाली एवं 'अचित्रित' उपन्यास की वानी, मरियम आदि पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। शेफाली के माध्यम से वेश्याओं की मनोव्यथा एवं उनके मानसपटल पर चल रहे अन्तर्द्वन्द्व को निम्नवत चित्रित किया गया है। इस सन्दर्भ में शेफाली का कथन है-**"मेरे दोनों कानों की आरे से दो आवाजें थी। तुम्हारा जीवन पीछे छूट चुका है, तुम लौट जाओ वहीं इसी में तुम्हारा हित है, लौट जाओ, तुम**

कुछ नहीं हो कुछ नहीं तुम शून्य हो, शून्य हो, तुम धरती का बोझ हो।" (अभिमन्यु अनत, शेफाली, पृ-118)

लेखक ने यह प्रश्न उठाया है कि जो स्त्री मजबूरी वश वेश्यावृत्ति करने लगती है, उसके प्रति समाज द्वारा रूखा व्यवहार क्यों किया जाता है? क्या वेश्यावृत्ति करनेसे उसके सभी संवेदनाएँ व भावनाएँ खत्म हो जाती है? क्यों उसके सद्गुण समाप्त हो जाते है? क्या वह मनुष्य की श्रेणीमें नही रहती? क्या उसको जीवन जीने का अधिकार छिन जाता है? या वह किसी को प्रेम नहीं कर सकती या उससे कोई प्रेम नहीं कर सकता। या वह पत्नी बनने के गुणों से वंचित रह जाती है। लेखक ने शेफाली के माध्यमसे वेश्या जीवन की इन्हीं त्रासद स्थितियों को यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है।

अशित अपने आप से सवाल करता है**- "वेश्या क्या होती है? औरत अगर वेश्या होती है तो फिर वेश्या औरत क्यों नहीं होती?" (अभिमन्यु अनत, शेफाली, पृ-38**) प्रस्तुत अंश में लेखक ने अशित के माध्यम से वेश्याओं के प्रति अपनायी जाने वाली उपेक्षापूर्ण दृष्टि का वर्णन किया है। वेश्या जीवन की त्रासदी को एक 'एक थाली समन्दर' कहानी में भी छमिया नामक स्त्री के माध्यम से व्यक्त किया है। 'अचित्रित' उपन्यास में मरियम के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि वेश्यावृत्ति में शामिल स्त्रियों के मन में भी परिवार बसाने की चाह होती है।तथा वे भी किसी की पत्नी, प्रेमिका बनने के सपने देखती हैं, उन्हें भी ममत्व सताता है।

- **स्त्री के सहधर्मिणी रूप का चित्रण**

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के अनुकूल आचरण करने वाली एवं स्त्रियों के प्रति परम्परागत मान्यता को प्राथमिकता देने वाली स्त्रियों का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ ही आधुनिक चेतना से सम्पन्न, अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूक, अपने कर्तव्य एवं अधिकारों के प्रति सजग रहने वाली स्त्रियों के सहधर्मिणी रूप का भी चित्रांकन किया है। जो मात्र घर की चारदीवारी तक स्वयं को सीमित न रखकर शिक्षा एवं रोजगार के निमित्त एवं समाज कल्याण के भाव से प्रेरित होकर विदेश तक का सफर तय करती हैं। आधुनिक चेतना से युक्त युवतियाँ पुरुषों की अनुगामिनी मात्र नहीं बने रहना चाहती बल्कि वे तो पुरुषों के साथ कन्धे-से-कन्धा मिलाकर, बल्कि उससे एक कदम आगे चलने की ख्वाहिश रखती हैं। इस सन्दर्भ में 'अस्ति-अस्तु' उपन्यास की दिव्या का कथन दृष्टव्य है- **"पहले मैं मर्दों के साथ कन्धे-से-कन्धा मिलाकर चलना चाहा था।——अब मैं मर्दों से आगे निकलने की सोच रही हूँ।" (अभिमन्यु अनत, अस्ति-अस्तु, 99)**

अनत जी द्वारा रचित विभिन्न उपन्यासों- 'तीसरे किनारे पर', 'आंदोलन', 'जम गया सूरज', 'चुन-चुन-चुनाव', 'अस्ति-अस्तु', 'आसमान अपना आँगन', 'क्यों न फिर से' व 'मेरा निर्णय' आदि में क्रमश: मारीज, रमावती, सरस, स्वस्ति, दिव्या, नंदिनी, महिमा व अमिता आदि स्त्री पात्रों के माध्यम से आधुनिक चेतना से संपन्न एवं स्त्री के सहधर्मिणी रूप की चित्रण किया गया है। 'तपती दोपहरी' उपन्यास में उर्मिला और राजेन के आपसी वार्तालाप के माध्यम से अनत जी स्त्री के सहधर्मिणी रूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं-

"औरत अगर केवल दिल की बातें सुनने की आदी होती तो आज उसका वास्तविक रूप देखने को नहीं मिलता। आज की औरत तो मर्द के साथ कदम उठाने की शक्ति रखती है। वह तो कहीं पुरूष का हाथ है जो कहीं उसका दिमाग। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ औरत नहीं है।" (अभिमन्यु अनत, तपती दोपहरी, पृ-40) यहाँ पर लेखक ने उक्त कथन के माध्यम से नारी के प्रति समाज में प्रचलित उस मान्यता का खण्डन किया है कि स्त्री की जगह घर के अन्दर शोभा की वस्तु है। उसका मुख्य कार्य बच्चों का पालन-पोषण करना, परिवार संभावना व पुरूष की वासनापूर्ति का साधन बनना है। लेखक ने स्त्री के कोमल रूप की चर्चा के साथ-साथ उसके हृढ़ संकल्प, साहस, धैर्य आदि की भी प्रशंसा की है। जिसके परिणामस्वरूप स्त्रियाँ घर के काम-काज से लेकर देश चलाने तक का कार्य करने में सक्षम है। स्त्री के सहधर्मिणी रूप की चर्चा करते हुए 'आसमान अपना आँगन' उपन्यास की नंदिनी कहती है-**"यह सही है कि कुछ क्षेत्रों को मर्द अपने अधिकार में मानते आ रहे थे। उन क्षेत्रों में औरतों का प्रवेश वर्जित था। पर आज के समय के साथ औरत उन सभी 'मेन-ओनली' के बन्द दरवाजों को खोलकर भीतर प्रवेश होनें में सफल रही है। कल तक रसोई से जूझती रहने वाली और चारदीवारी के भीतर बन्दिनी बनी रहने वाली नारी आज कहाँ नहीं है? विज्ञान, कला, साहित्य, कानून, राजनीति, व्यवसाय, सेना-कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ वह चमक नहीं पाई हो।——हमारे कुछ महान लेखकों तक ने औरत को फ्रेयल्टी जाई नेम इज विमन, अबला कहा है; पर समय इन धारणाओं को खंडित कर दिया। औरत मर्द के मुकाबले शरीर से कमजोर होते हुए भी भीतर से मर्द से अधिक सहनशील और शक्तिशाली होती है। मर्द दफ्तर से लौटकर आराम का हकदार हो जाता है, जबकि औरत दफ्तर या फैक्टरी से लौटकर भी घर और रसोई के कामकाजों में लगी ही रहती है। हमारे देश का इतिहास इस बात का गवाह है कि गाँवो में औरतें अगर खेतों की मजदूरी के बाद**

घरों में गाय-बकरियाँ और मुरगियाँ आदि पालकर अतिरिक्त आमदनी नहीं पैदा करती तो मर्द की मजदूरी के सहारे जीना दुश्वार हो जाता है। कई घरों में औरतों की इन्हीं आमदनियों से जमीन खरीदी गई, बच्चों को पढ़ाया गया और घर बनाए गए।" (अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृ-249) उपर्युक्त उदहारण से स्पष्ट पता चलता है कि स्त्रियाँ न सिर्फ घरेलू काम-काज ही करती हैं, बल्कि घर-परिवार की सुख-सुविधा के लिए विभिन्न प्रकार के छोटे-मोटे काम करके अपने परिवार की आर्थिक स्थिति तो सुधारती ही है साथ ही घर के पुरुषों की आर्थिक स्तर पर मदद भी करती हैं।

- **परित्यक्ता जीवन का चित्रण**

अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'जम गया सूरज', 'फैसला आपका', 'घर लौट चलो वैशाली', 'क्यों न फिर से', 'अपना मन उपवन', 'अचित्रित', व 'मेरा निर्णय' आदि में क्रमशः कृष्णावती, रमावती, सरस, प्रिया सिबलिक, वैशाली, महिमा, नमिता, राधिका, अमिता, हुस्ना, विद्यावती आदि स्त्री पात्रों के माध्यम से पति द्वारा परित्यक्त नारी जीवन के वेदना को मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'अपना मन उपवन' उपन्यास में नमिता के माध्यम से पति द्वारा परित्यक्त नारी जीवन की वेदना को मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। उपन्यास में नमिता का पति विपिन पारिवारिक दबाव के कारण नमिता से शादी तो कर लेता है, किंतु वह नमिता के साथ कभी सुखी न रह पाया था। शादी शुदा होने के बाद भी विपिन का आकर्षण अपनी प्रेमिका शालिनी के प्रति रहता है। शादी से पूर्व नमिता को इस बात की जानकारी नही रहती है कि विपिन की प्रेमिका है और वह उससे शादी करना चाहता है। नमिता और विपिन के दाम्पत्य जीवन में शालिनी

के प्रवेश से उनका दाम्पत्य जीवन बिखर जाता है। विपिन घर छोड़ कर चला जाता है और शालिनी के साथ रहने लगता है। अपने परित्यक्त जीवन की मनोव्यथा को व्यक्त करते हुए नामिता कहती है-**"कुछ देर बाद नमिता अपने घर के भीतर अकेली बैठी सोच रही थी- अगर सचमुच धर्मा के दादा-दादी की यह निशानी बिक गई तो धर्मा का क्या हाल होगा? मस्तिष्क में तनाव बढ़ आने से कमर का दर्द फिर से जोर पकड़ता गया। वह दर्द तो बना हुआ था और सर्दी के शुरू हो जाने से नमिता को तड़पाने भी लगा था, पर नमिता थी कि उसे भुलाए बैठी थी। उस दर्द को ख्याल से उतारकर वह उसके अहसास को भी नकारती आ रही थी, ठीक अपने परिव्यक्ता होने के दर्द की तरह। इधर कुछ दिनोंसे न तो उसे अपने परिव्यक्ता होने का डर था और न ही विकलांग होने का पर आज धर्मा का भविष्य सोचकर उसके ये दोनों दर्द फिर से स्पंदन पा गए थे।"......विपिन के घर छोड़कर जाने के बाद नमिता जब तड़पकर थक गई थी तो स्वयं को आश्वासन देती हुई वह लौट आएगा।........लेकिन जब से विपिन के यहाँ से अपमानित और घायल होकर नमिता अपनी सास के साथ लौटी थी, उसने अपनी उम्मीदों को अपने भीतर घुट-घुटकर मर जाने दिया था।" (अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, पृ-83)**

'और नदी बहती रही' उपन्यास की कृष्णावती अपने परित्यक्त जीवन की वेदना को सहती रहती है। जब मधुकर द्वारा उससे (कृष्णावती) उसके विगत जीवन के बारे में जिज्ञासा व्यक्त की जाती है तब कृष्णावती अपने परित्यक्त जीवन की मनोव्यथा का उल्लेख करते हुए कहती - **"एक दिन अचानक ही गोद में बच्चा लिए वह लौट आई थी और सौत के रूप में मेरी वह बेइज्जती हुई जिसका मुझे सपने में भी ख्याल नहीं था। बात बिजली की तरह गाँव-भर में फैलते देर लगी। गाँव के लोगो के सामने मुँह दिखाना मुझे बड़ा कठिन**

महसूस हुआ, इसीलिए उस राम में घर से बाहर हो गयी। मेरे सामने कोई दूसरा चारा नही था। इसलिए बेबसी की हालत में पति का घर छोड़ना न चाहकर भी मुझे छोड़ना पड़ा।..........चाँदनी रात थी। बिना किसी मंजिल का ख्याल करके मैं चलती रही। मै जल्द से जल्द गाँव छोड़ देना चाहती थी- कहाँ पहुँचूँगी इसकी चिंता मुझे नही थी, इसलिए मैं अंधाधुंध बढ़ती गई।" (अभिमन्यु अनत, और नदी बहती रही, पृ-82-83)

पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में नारी आज भी किसी न किसी रूप में शोषण का शिकार होती रही है। 'क्यों न फिर से' उपन्यास में विमल बजाज के माध्यम से उन अहंवादी पुरूषों का चित्रण किया गया है जो स्त्रियों को मात्र अपनी सुख-सुवधिा और उन्नति पाने के मार्ग के रूप में मानते है और जैसे ही उनकी स्वार्थपूर्ण हो जाता है वे उन्हें दूध में पड़ी हुई मक्खी के समान अपनी जिन्दगी से बाहर निकाल फेंकते हैं और दूसरे की तलाश में जुट जाते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने एक तरु शोषकों का चित्रण किया है तो दूसरी तरु स्त्रियों की दीन-हीन दशा का चित्रण किया है। इस सन्दर्भ में महिमा का कथन दृष्टव्य है। वह कहती है-**"महिमा उस स्त्री के बारे में सोच उठी जो आज भी बजाज खानदान के महल की बंदिनी थी। उससे पहले दो सौत आज उसका पति उसे नकार कर नए शिकार पर निकला हुआ है। वह सोचती गई: क्या वह पहली स्त्री इसलिए परित्यक्त हुई, क्योंकि वह अलग संस्कृति की थी? मै महिमा इसलिए दूध की मक्खी की तरह फेंक दी गई, क्योंकि मैं उस कुल को उसकी मनचाही गरिमा नहीं दे सकी? यह जो आज भी उस परिवार का हिस्सा बन बैठी है, इसलिए महल में भी तिरस्कृत है; क्योंकि वह वहाँ के वैभव के सामने आत्मसमर्पित हो गई?"** ('क्यों न फिर से', 97) 'अचित्रित' उपन्यास में वानी की बहन राधिका के माध्यम से लेखक ने परिव्यक्ता स्त्री का वर्णन किया है। राधिका की शादी जिस व्यक्ति से की जाती है, जो पहले से ही किसी अन्य स्त्री को अपनी रखैल के

रूप में रखता है। शादी के कुछ दिन बाद वह राधिका को अपने घर से निकाल देता है। वह (राधिका) कानून का सहारा लेती है किन्तु कानून भी उसकी मदद नहीं कर पाता। जिससे दु:खी होकर राधिका अपनी बहन वानी के पास आ जाती है और कोई छोटा-मोटा काम-धन्धा करके अपना गुजारा करने की योजना बनाती है। वह अपनी माँ एवं बहन के सिर बोझ नहीं बनना चाहती। राधिका अपने परित्याग का वर्णन इस प्रकार करती है-**"उसने मुझे छोड़ दिया दीदी। घर से निकाल दिया। वह व्यक्ति पहले से शादीशुदा है उसने शादी तो नहीं की थी, उसे भगा ले आया था। मेरी शादी से कोई सात-आठ महीने पहले ही वह औरत छोड़ गयी थी। सभी लोगों ने यही सोचा था कि उस औरत से अब उसका कुछ भी लेना-देना नहीं है। मेरे ब्याह के चौथे दिन ही वह औरत लौट आयी थी और उस औरत ने आते ही सभी से कहा कि इस घर में पहले आयी थी। इसलिए मेरे पति पर उसका हक पहले बनता है। पुलिस ने तो यह कहा कि अगर हमारी सरकारी शादी हुई। अब तुम इस घर में एक मिनट भी नहीं रह सकती। उसने मुझे धक्के देकर घर से निकाल दिया। मैं कहाँ जाती माँ के पास कौन-सा मुह लेकर जाती।"** ('अचित्रित' पृ-155)

- **स्त्री जीवन की सार्थकता के प्रति परम्परागत सोच का वर्णन**

अनत जी अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी जीवन की सार्थकता के प्रति उस परम्परागत सोच को भी वाणी प्रदान की है, जिसके तहत स्त्री को पति के अनुकूल आचरण करने वाली, उसकी इच्छाओं को पूरा करने वाली, उसकी रात-दिन सेवा करने वाली माना गया है। जहाँ पर स्त्री के व्यक्तिगत भावों व विचारों की अभिव्यक्ति का कोई स्थान नहीं है। इस परंपरागत सोच के अनुसार स्त्री को मात्र घर की शोभा बढ़ाने वाली वस्तु, माना गया है। अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों में स्त्रियों के प्रति अपनायी जाने वाली इस परंपरागत

सोच को अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस सन्दर्भ में 'आसमान अपना आँगन' उपन्यास की शोभा- **"मै जब किसी के जीवन काअभिन्न हिस्सा समझी जाने वाली थी तब वह आदमी मुझे मालिक नजर आया था और मै उसकी दासी बनी रह गई थी।........... मेरी तो माँ तक ने मुझे यह कहकर विदाई दी थी कि मैं औरत हूँ और मुझे औरत बना रहना है। उसने कभी यह नहीं कहा कि मैं पत्नी हूँ। उसने यह भी कहा था कि औरत हमेशा मर्द से छोटी होती है- उम्र से भी और बदन से भी।———— मर्द औरत से ज्यादा ताकतवर होता है और औरत मर्द से ज्यादा कमजोर। मुझसे कहा गया था कि अब पिता का घर पराया हो गया और जहाँ जा रही हूँ वह मेरा घर होगा; पर तो उस घर में किराएदार ही बनी रही। वहाँ की गरीबी ने वह दु:ख नहीं दिया जो वहाँ के दस्तूर देते रहे।" (अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृ-316)**

'अपना मन उपवन' उपन्यास की नमिता भी नारी जीवन की सार्थकता के प्रति परंपरागत सोच का वर्णन करते हुए कहती है- **"वह बार- बार यही सुनती रही थी कि माँ-बाप का घर लड़की का अपना घर नहीं होता। बार-बार उसे यही भरोसा दिया गया था कि उसका अपना घर ससुराल होगा। और मन में कई उम्मीदें लिए वह ससुराल के लिए अपना पहला कदम उठाती कि उसकी माँ के साथ-साथ परिवार और पड़ोस की बुजुर्ग स्त्रियों ने उसे याद दिलाई थी-वह अपने घर जा रही है। उस घर में उसके सास-ससुर उसके अपने होंगे। देवर ओर ससुर अपने होंगे। ननद और गोतनी अपनी होंगी। उसका पति उसका अपना सर्वस्व होगा।" (अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, पृ-16)**

- **त्याग एवं करुणा की प्रतिमूर्ति / समर्पण भरा जीवन**

अनत जी नारी जीवन के विविध रूपों का चित्रण अपने उपन्यासों में करते हैं। जिसमें से एक रूप त्याग एवं करुणा की प्रतिमूर्ति है। उनके द्वारा रचित विभिन्न उपन्यासों- 'लाल पसीना', 'अचित्रित', 'चौथा प्राणी', 'चलती रहो अनुपमा', 'लहरों की बेटी' आदि में नारी जीवन के उदात्त रूप की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। 'चौथा प्राणी' उपन्यास की नायिका वीणा के माध्यम से 16 वर्षीय बालिका के जीवन संघर्ष एवं उसके त्याग, बलिदान, साहस एवं धैर्य तथा दृढ संकल्प का चित्रण किया है। उपन्यास में वीणा को पिता की आकस्मिक मृत्यु एवं माँ की असाध्य बीमारी की वजह से अल्पवय में ही घर की समस्त जिम्मेदारी संभालनी पड़ जाती है। उसे अपनी माँ के साथ-साथ अपनी दोनों छोटी बहनों एवं छोटे भाई की भी परवरिश करना पड़ता है। अपने परिवार का भरण-पोषण एवं उनकी अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए वह गाय पालती है। ताकि उसका दूध बेंचकर कुछ हद तक घर की आर्थिक तंगी को कम किया जा सके। और जब भयंकर तूफान की चपेट में आकर उसकी गाय व बकरियाँ मर जाती हैं तब वह खेतों में मजदूरी करके जीवन निर्वाह करती है। वीणा अपने बीमार माँ के साथ-साथ अपने भाई-बहनों के लिए भी चिंतित रहती है। वह उनके पढ़ने के लिए भी पैसा इकठ्ठा करती है ताकि उसके भाई-बहन पढ़-लिखकर कुछ बन सके और अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार ला सकें। वह स्वयं स्कूल न जाकर अपनी बहनों को पढ़ाने के लिए तत्पर रहती है। वह अपनी बहन बिंदू को शहर में पढ़ने के लिए भेजती है। अपने उपन्यास में अनत जी जहाँ एक ओर वीणा के संघर्षमय जीवन को चित्रित किया है वहीं दूसरी ओर उसे आदर्श प्रेमिका के रूप में भी चित्रित किया है। वीणा, माधव नामक युवक से प्रेम करती है। माधव भी वीणा से प्रेम करता है। किन्तु इनका प्रेम वासनात्मक न होकर आदर्शमय रहता है। उनके प्रेम में श्रद्धा एवं विश्वास के भाव समाये रहते हैं। वीणा का चरित्र एक आदर्श स्थापित करता है। अल्पायु में ही पारिवारिक और आर्थिक जिममेदारी को अपने सिर ले लेती है। अपने व्यक्तिगत हितों का परित्याग करके वह अपनी माँ, बहन, भाई आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह सदैव

तत्पर रहती है। 'चलती रहो अनुपमा' उपन्यास में अनुपमा के माध्यम से पितृविहीन बालिका के पारिवारिक एवं आर्थिक जीवन संघर्ष का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। पिता की मृत्यु, भाई का गूंगापन, माँ की बीमारी की वजह से अनुपमा के सर पर परिवार सम्हालने की जिम्मेदारी आ जाती है। वह अपनी माँ एवं भाई तथा स्वयं के जीवन निर्वाह के लिए चाय बागान में काम करके अपनी आर्थिक तंगी को दूर करने की कोशिश करती है। पारिवारिक जिम्मेदारी एवं जरूरतों को पूरा करने हेतु उसे विभिन्न प्रकार के स्थानों में काम करना पड़ता है। कभी वह चाय के बागान में मजदूरी करके अपने परिवार का भरण पोषण करती है, तो कभी फैक्ट्री में काम करके तो कभी नाट्य प्रदर्शन में भूमिकाओं का निर्वहन करके। अनुपमा अपने माँ एवं भाई की सेवा सुश्रुषा के साथ-साथ अपने मंगेतर गीतेश की, जिसकी कर दुर्घटना हो जाती है, भी पूरे मनोयोग से सेवा करती है। इतना ही नही, वह (अनुपमा) अपने मानस पिता अभिजीत के बीमार होने पर उसकी भी सेवा करती है। अनुपमा एक कुशल अभिनेत्री भी है, वह अभिजीत द्वारा रचित नाटकों में पात्रों की भूमिका का बखूबी से निर्वहन करती है, तथा अभिजीत के नाट्य प्रदर्शनों को सफल एवं प्रसंशनीय बनाती है। अनुपमा के रूप में एक अच्छी बेटी, बहन, अच्छी शिष्या, कुशल अभिनेत्री व लगनशील तथा परिश्रमशील स्त्री एवं आदर्श पत्नी की झलक देखी जा सकती है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य से काम लेती है, तथा नारी जीवन का आदर्श प्रस्तुत करती है।

'लहरों की बेटी' उपन्यास में दुलारी के माध्यम से नारी जीवन के उदात्त रूप का चित्रण किया गया है। दुलारी वैधव्य जीवन को जीते हुए दूसरों के हिट के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाली स्त्री है। दुलारी, जीवनदत्त और विदुला को माँ का स्नेह देती है, साथ ही इनके लिए अपनी जमीन बेचकर लखन की पैतृक जमीन को लेती है। वह

बैठका और सभा के लिए भी अपनी जमीन दान के रूप में देती है। साथ ही वह शांति और गौतम का पुनर्विवाह भी कराती है। वह गांव वालों की निःस्वार्थ भाव से कुछ न कुछ मदद करती है, जिसके परिणामस्वरूप सभी लोग उसकी प्रसंशा करते नही अघाते। 'अचित्रित' में वानी के माध्यम से व 'लाल पसीना' में मीरा तथा 'और पसीना बहता रहा' में प्रभा अंजली आदि स्त्री पात्रों के माध्यम से नारी के त्याग, बलिदान, साहस और संघर्ष को दर्शाया गया है जो आदर्श एवं करुणा की प्रतिमूर्ति है।

- **स्त्री स्वभाव को न समझ पाने का वर्णन**

हमारे समाज में सदियों से स्त्रियों के स्वभाव को न समझ पाने के कारण उनके सम्बन्ध में एक पंक्ति बार- बार दोहरायी जाती है- "त्रिया चरित्र दैवो न जानति" जिसमें यह कहा गया है कि स्त्रियों के स्वभाव को तो स्वयं ईश्वर भी नहीं जान पाया तो मनुष्य उसे कैसे पहचान पायेगा अर्थात् स्त्रियों के सन्दर्भ में कोई एक स्पष्ट धारणा बना लेना आसान नहीं है, क्योंकि उनका स्वभाव बदलता रहता है। वे चंचल प्रवृत्ति की होती है। अत: कोई व्यक्ति यह चाहे कि अमुख स्त्री स्वभाव की है तो उसकी यह धारणा गलत, साबित होगी। स्त्री के अनेक रूप समाज में मिलते है कभी उसे अबला, असहाय व निरीह प्राणी माना गया है, तो कभी वही स्त्री दुर्गा, काली भी बन जाती है। कभी उसे लक्ष्मी माना जाता है तो कभी डायन व चुडैल से भी सम्बोधित किया जाता है। कभी वह ममत्व व त्यागकी प्रतिमूर्ति बन जाती है, तो कभी हिंसात्मक रूप भी अपना लेती है। कभी उसके सती सावित्रीव पतिव्रता स्त्री की पदवी दी जाती है तो कभी उसे वैश्या व चरित्रहीन की कोटि में रखा जाता है। उसका स्वभाव व व्यवहार उसकी परिस्थितियों के अनुसार

बदलता रहता है। स्त्रियों के प्रति इसी विचारधारा को व्यक्त करते हुए अशित शेफाली के बारे में कहता है-"**वास्तव में शेफाली अस्पष्ट थी। वह आधुनिक पेंटिंग्स की तरह थी। कभी एकदम करीब की चीख लगती कभी दूर की।" (**अभिमन्यु अनत, शेफाली, पृ-14)

- **पुरुष के जीवन में स्त्री का स्थान**

अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्रियों के पारिवारिक एवं आर्थिक जीवन संघर्षों एवं उनके उत्तरदायित्वों का यथार्थपरक अंकन तो किया ही है साथ ही पारिवारिक जीवन के लिए एवं पुरुष के जीवन को पूर्णता प्रदान करने में स्त्रियों की भूमिका का भी सजीव अंकन किया है। अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से अनत जी यह दर्शाते हैं कि भले ही पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में स्त्रियों को दोयम दर्जे का प्राणी माना जाता हो। उसे घर की शोभा बढ़ाने वाली वस्तु माना जाता हो या सास-ससुर व पति सेवा करने वाली, पति का अनुकरण करने वाली, बच्चों का लालन-पालन करने वाली माना जाता हो। किन्तु एक पुरुष के जीवन में उसका जो स्थान है उसे अन्य कोई नहीं पूरा कर सकता। पुरुष के जीवन में स्त्री के आगमन से जो परिवर्तन होता है, उसका सजीव चित्रण अनत जी के उपन्यासों में देखा जा सकता है। अनत जी द्वारा रचित 'आसमान अपना आँगन' उपन्यास में हंस (हरिवंश) के एकाकी जीवन में शोभा के आने से जो परिवर्तन होता है उसका चित्रण करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"हंस अपने पूरे होश-हवास के साथ सोचे जा रहा था। ----शोभा। उसके आने से पहले वह अपने सीमित पाता था, अधूरा-अधूरा। अब लगता है आदमी अपने को सीमित या अधूरा क्यों माने। औरत और मर्द दो अलग-अलग सत्य नहीं हो सकते। शोभा को अपने जीवन में पा लेने के बाद उसे यह विश्वास हो गया था कि स्त्री-पुरुष की एक सूत्र में बंधी शक्ति से ही विश्व का संतुलन बना**

रह सकता है। उस रात उसने शोभा से कहा भी तो था, 'तुम्हारी ऊपरी कोमलता में जो अंदरूनी ताकत है उससे मेरा संकल्प और भी दृढ़ हो गया है। औरत और मर्द मैं और तुम नहीं हो सकते। उन्हें अपना अलग अहम न होकर हम होना चाहिए। तुन्हें पाकर अपने को पा सका हूँ। कल मैं लिखने वाला, चित्र बनाने वाला एक मशीन था, एक यंत्र था उद्योग से जुड़ा। आज में लिखने वाला, चित्र बनाने वाला, उद्योगों से जुड़ा एक आदमी हूँ।" (आसमान अपना आँगन, 243)

पुरुष के जीवन में नारी की आवश्यकता एवं उसके महत्त्व का निरूपण अनत जी ने 'तीसरे किनारे पर' उपन्यास में भी रूपायित किया है। उपन्यास में नायक राकेश के जीवन में अरुणा के आगमन से जो परिवर्तन होता है या राकेश जिस परिवर्तन को महसूस करता है उसका उल्लेख करते हुए वह अरुणा से कहता है - **"अपने जीवन के अस्त-व्यस्त और अस्पष्ट क्षणों को जीते रहने के बाद आज तुम्हें पाकर मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि अब तक जिसे जीता रहा वह एक खोखली, अधूरी, नीरस और झूठी जिंदगी थी। ——-मेरा भरपूर, सम्पूर्ण, अमृतमय और सच्चा जीवन तो उस दिन शुरू हुआ जब तुमने मेरे जीवन में प्रवेश किया। तुम आयी अरुणा और मेरे जीवन की भयानक अँधेरी रात सुहानी रात में बदल गयी। ——आज मैं यह कैसे न मानूँ कि संसार के सभी सुखों को एक सूत्र में गूँथकर तुमने मुझे भेंट कर दिया। तुम्हें पाने से पहले मेरा अपना जीवन एक श्मशान-सा था, सभी सुविधाओं के बावजूद भी मैं एक लाश था। ——--मेरे भीतर की भारी उदासी और निराशा को मिटाकर तुमने मुझे नयी आशा दी।" (तीसरे किनारे पर, 173)**

ग- नारी मुक्ति की चेतना

अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर स्त्रियों की गोरों के शासनकाल में विविधोंमुखी शोषण को दर्शाया है बल्कि इसके साथ ही आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के शोषण विरोधी स्वर को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। उन्होंने विभिन्न स्त्री पात्रों के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि भले ही आप्रवासी भारतीय स्त्रियों को समाज में दूसरे दर्जे में रखा जाता हो, उन्हें पुरुषों के अधीन रखा जाता हो, उनके निर्णय व विचारों को महत्व न प्रदान किया जाता हो, किंतु आप्रवासी भारतीय स्त्रियों में अपने साथ किये जाने वाले भेदभावपरक व्यवहार और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने एवं उसका तीव्र विरोध करने का साहस भी विद्यमान है जो उनके अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूकता का परिचायक है। मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व आप्रवासी भारतीय स्त्रियों की नारी मुक्ति की चेतना को अनत जी अपने कई उपन्यासों -'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' व 'हम प्रवासी' आदि में चित्रित किया है। 'शर्तबंद प्रथा' के तहत जिन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को छलकपटपूर्वक मॉरीशस लाया गया था, उन मजदूरों से कोठी के सरदार कठोर-से-कठोर काम करवाते, आधा पेट खाने को देते तथा छोटी-छोटी गलतियों पर बाँसों व कोड़ों की बौछार करते। बैलों के स्थान पर भारतीय मजदूरों से ही गन्ने से भरी बैलगाड़ी खिंचवाते। गोरे शासकों के इस अमानुषिक व्यवहार से छुब्ध होकर खेतों में काम करने वाली मजदूर स्त्रियाँ उसका सख्त विरोध करती हैं। वे एकजुट होकर कोठी के सरदार से खेतों में काम करने वाले मजदूरों के साथ होने वाले अत्याचार को रुकवाने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। वे कहती हैं**" -हम औरतों के पास इतना साहस है कि हम सब कोठी को घेर के चिल्लाचिल्ला के पूछें कि आखिर कब तक खेतवन में गाड़ी के गाड़ी बाँस गिरत -**

रही और मजदूरन की पीठ पर टूटत रही? कब तक गन्ने से भरल गाड़ी बैल के बदले आदमी से खिंचवायी जाए? हे सूरज नारायण, कब गजब गिरावोगे इन जुलुम ढाहने वालों पे?" (लाल पसीना, 239) उपर्युक्त उदाहरण से जहाँ एक ओर आप्रवासी भारतीय मजदूरों के साथ गोरों के अमानवीय अत्याचार की झाँकी प्रस्तुत की गयी है, वहीं दूसरी ओर आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के शोषण विरोधी स्वर को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है।

'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में भी अनत जी ने प्रभादेवी नामक पात्र के माध्यम से स्त्रियों के शोषण विरोधी स्वर को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। प्रभा सरकार के सम्मुख शराब-विरोधी आंदोलन चलाती है। वह शराब की वजह से बढ़ती नशाखोरी को जड़ से खत्म कराने हेतु सरकार से अपील करती है। क्योंकि शराब की वजह से देश के नवयुवक पथभ्रष्ट हो रहे हैं साथ ही आर्थिक तंगी का एक प्रमुख कारण भी नशाखोरी ही है। शराबी पति की वजह से प्रभा का दाम्पत्य जीवन भी बिखर जाता है। शराब की बिक्री को बंद करवाने के लिए वह शराब विरोधी भूख-हड़ताल करती है। प्रभा सुगुनवा द्वारा सामाजिक उत्थान हेतु किए जाने वाले संघर्ष को चित्रित करते हुए अनत जी लिखते हैं- **"मोताई लाँग के गाँव के छोटे से मंदिर में करीब सात दिनों से प्रभा नामक एक बीस वर्षीय शादी-शुदा स्त्री भूख-हड़ताल कर रही है। पति को शराब की बुरी लत थी। इसलिए इस स्त्री ने ससुराल में आत्महत्या करने की कोशिश की, पर पड़ोसियों ने बचा लिया था। अंत में पति के द्वारा मार-पीटकर घर से निकाल दिए जाने पर वह अपने मायके लौटने को विवश हो गयी। नोत्रदाम की रहने वाली यह परित्यक्ता स्त्री, जिसका पूरा नाम प्रभा सुगुनवा है, इसलिए भूख-हड़ताल कर रही है ताकि सरकार शराब-विरोधी आन्दोलन के नेता और उसके साथियों को रिहा कर दे।——-इन सात दिनों से उस महिला ने न तो मुँह में**

एक दाना रखा है और न पानी की एक बूँद। हम सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि अगर प्रभा देवी को कुछ हो गया तो उसकी पूरी ज़िम्मेदारी सरकार पर होगी।" (और पसीना बहता रहा, 276) अनत जी ने प्रभा के माध्यम से आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के साहस, त्याग एवं बलिदान तथा उनके संघर्षमय जीवन की सजीव झाँकी प्रस्तुत की है। भारतीय मजदूरों द्वारा नशाखोरी के विरोध में क्रांतिकारी कदम उठाए जाते हैं। उन निर्दोष क्रांतिकारी नेताओं को जब कैद में डाल दिया जाता है, तब प्रभा उन्हें कैद से रिहा कर देने के लिए भूख-हड़ताल करती हैं। उसके द्वारा जारी किए गए भूख-हड़ताल से उसकी सेहत दिन-ब-दिन बिगड़ती चली जाती है बावजूद इसके वह अपने हड़ताल को खत्म नहीं करती। वह अपने संकल्प पर अडिग रहती है। उसकी दृढ़ संकल्पशक्ति को दर्शाते हुए अनत जी लिखते हैं- **"प्रभा देवी की हड़ताल का अठारहवाँ दिन।——-नोत्रदाम की प्रभा देवी, जो कि पण्डित हरि प्रसाद और उसके साथियों की रिहाई के लिए मोताईलोंग में भूख-हड़ताल कर रही है, एकदम कमजोर हो गई है।——-कई लोग प्रभा देवी से यह माँग कर चुके हैं कि वह अपनी भूख-हड़ताल छोड़ दे, पर वह किसी की भी बात सुनने को तैयार नहीं है।——-भारी कोशिश की प्रभा को मनाने की।——-पर वह टस से मस होने को तैयार नहीं। आज उसकी भूख-हड़ताल का बीसवाँ दिन था।" (और पसीना बहता रहा, 279)** उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि अनेक प्रकार के शोषणों की शिकार होकर भी आप्रवासी भारतीय स्त्रियाँ पुरुषों के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलती हैं। पुरुषों के साथ-साथ वे भी राष्ट्रहित व समाजहित के कार्यों में अपना अमूल्य योगदान देने के लिए तत्पर रहती हैं। तथा जनहित में किए जाने वाले कार्यों में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। प्रभा नामक पात्र द्वारा किया गया भूख-हड़ताल उसकी जागृत चेतना एवं स्त्री मुक्ति कामी चेतना का जीवन्त प्रमाण है।

अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में शोषित, पीड़ित दशा एवं पारिवारिक एवं आर्थिक संघर्ष को दर्शाया है बल्कि इसके साथ ही स्त्रियों की अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूकता एवं उनके शोषण विरोधी स्वर को भी वाणी प्रदान किया है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'तपती दोपहरी', 'लाल पसीना', 'चुन-चुन-चुनाव', 'अपनी-अपनी सीमा', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'अचित्रित', 'और पसीना बहता रहा', 'लहरों की बेटी', 'चलती रहो अनुपमा', 'आसमान अपना आँगन', 'अपना मन उपवन', 'अस्ति-अस्तु', 'क्यों न फिर से' व 'मेरा निर्णय' आदि में नारी मुक्ति के स्वर की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। उपर्युक्त वर्णित उपन्यासों में पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के तहत नारी शोषण के जो तरीके थे उनके खिलाफ आवाज बुलन्द की गयी है। आधुनिक शिक्षित भारतवंशी मॉरिशसीय नवयुवतियाँ अब उन परंपरागत मूल्यों, मान्यताओं को नकारती हैं जो पितृसत्तात्मक समाज द्वारा निर्मित हैं, तथा जिन्हें उन पर जबरन थोपा गया है या उनके सहमति के बगैर बनाया गया है। आधुनिक चेतना से सम्पन्न व प्रगतिशील विचारधारा से प्रेरित स्त्रियाँ अब हर चीज को तर्क की कसौटी पर कसकर ही अपनाना चाहती हैं। वे अब पुरुषों की दासी व अनुगामिनी नहीं होना चाहती बल्कि वे बराबर का दर्जा प्राप्त करना चाहती हैं। 'तीसरे किनारे पर' उपन्यास में मारीज़, राकेश की पूर्व प्रेमिका, के माध्यम से आधुनिक विचारों से सम्पन्न नवयुवती का चित्रण किया गया है, जो पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति को महत्व देती है तथा परंपरागत मान्यताओं के प्रति नकारात्मक भाव रखती है। वह हिन्दू धर्म की सनातन परंपरागत विवाह संस्कार के प्रति उदासीन रहती है। इस संस्कार के अंतर्गत वह पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्रियों की शोषित व दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालती है व विवाह संस्कार को स्त्रियों के शोषण का एक प्रमुख कारण मानती है तथा इसे स्त्रियों

की स्वतन्त्रता का बाधक तत्व मानती है। मारीज़ स्वतंत्र, उन्मुक्त व आत्मनिर्भर जीवन जीने की आकाँक्षा रखती है। जब उसका मित्र राकेश मारीज़ से उसके विवाह न करने का कारण पूछता है तब वह राकेश से कहती है- **"मेरे पास अच्छी ख़ासी नौकरी है जिससे अपनी जिंदगी के उन दिनों को बिताने के लिए मुझे किसी की मदद की कोई जरूरत नहीं। शादी के बाद औरत अपनी आजादी को खो बैठती है यह बात मुझे जरा भी पसंद नहीं। मैं इस बात को नहीं मानती हूँ कि मर्द औरत का अवलंब है। अगर यह बात कुछ लोगों के लिए आज भी सच है तो मैं बिना उस सहारे के भी जीकर उसे झूठा प्रमाणित कर दूँगी। मेरे लिए विवाह एक बंधन है और इससे ज्यादा कुछ नहीं। इस आधुनिक युग में जान-बूझकर अपने को किसी बंधन में बाँधकर जीना मूर्खता नहीं तो और क्या है?" (अभिमन्यु, तीसरे किनारे पर, पृ- 99)** मारीज़ परंपरागत विवाह संस्कार को नकारती हुई उसे महत्व न देते हुए राकेश से पुन: कहती है- **"मैं एक व्यक्तिगत आवश्यकता को अपने आदर्श से अधिक महत्व नहीं दे सकती। लड़कियों की शादी की बात प्राय: उस समय सोची जाती है जब वह परिवार के लिए बोझ प्रतीत होने लगती है। मैं अपने परिवार के लिए बोझ नहीं। परंपरा से चली आयी सभी मान्यताएँ आज खण्डित हो रहीं हैं तो फिर विवाह जैसी पुरानी और फिजूल बात को क्यों अटूट रखा जाये?" (वही, पृ- 99)** और अपनी इसी विचारधारा से प्रेरित होकर मारीज़ शादी किए बगैर राकेश के साथ लिव-इन-रिलेशनशिप में वर्षों से रह रही है। जब राकेश द्वारा उससे जीवन की पूर्णता के बारे में प्रश्न किया जाता है तब वह (मारीज़) शादी को जीवन की पूर्णता का अनिवार्य तत्व मानने से इन्कार करते हुए कहती है- **"मेरा जीवन कभी भी अपूर्ण नहीं रहा। विवाह की सबसे गयी-गुजरी प्रतिक्रिया यह होती है कि उससे नारी अपनी सारी कोमलता को गवाँकर पारिवारिक बोझ के नीचे दब जाती है।---और---कहीं-कहीं तो वह दासी से भी गयी-गुजरी होती है। अगर विवाह केवल सेक्स को ध्यान में रखकर- जैसा कि प्राय: होता है- किया जाता है तो उससे बेहतर तो यह है कि विवाह किया ही न जाए।" (वही, पृ- 100)**

उपर्युक्त उदाहरणों द्वारा मारीज़ के माध्यम से स्त्रियों में अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूकता की भावना को उजागर किया गया है। मारीज़ द्वारा विवाहसंस्कार को नकारना और विवाह-पूर्व शारीरिक संबंध बनाना व लिव-इन-रिलेशनशिप को महत्व देना उसके द्वारा पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाने का द्योतक है तथा नारी मुक्ति के स्वर का परिचायक है। 'तपती दोपहरी' उपन्यास में भी अनत जी नारी मुक्ति के स्वर को वाणी प्रदान की है। उपन्यास में उर्मिला और राजेन के मध्य चल रही वार्तालाप के माध्यम से लेखक ने नारी मुक्ति की चेतना का चित्रण किया है। नारी को मात्र पुरुष की अनुगामिनी न मानकर उसके सहधर्मिणी रूप की चर्चा करते हुए उर्मिला राजेन से कहती है- **"औरत अगर केवल दिल की बातें सुनने की आदी होती तो उसका वास्तविक रूप देखने को नहीं मिलता। आज की औरत तो मर्द के साथ कदम उठाने की शक्ति रखती है। वह तो कहीं पुरुष का हाथ हैं, तो कहीं उसका दिमाग। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ औरत नहीं है।" (तपती दोपहरी, 40)** उर्मिला के उक्त कथन के माध्यम से अनत जी ने नारी के प्रति समाज में प्रचलित उस मान्यता का खंडन किया है जिसके तहत स्त्री की जगह सिर्फ घर के अंदर है, उसका मुख्य कार्य सास-ससुर व पति की सेवा करना, बच्चे जनना, बच्चों का पालन-पोषण करना व परिवार संभालना आदि है। अनत जी न सिर्फ नारी के कोमल रूप की चर्चा करते हैं बल्कि उसके दृढ़ संकल्प, साहस, धैर्य आदि की भी प्रशंसा करते हैं जिसके चलते स्त्रियाँ घर के काम-काज से लेकर देश चलाने तक का कार्य करने में सक्षम हैं। 'चुन-चुन-चुनाव' उपन्यास में स्वस्ति के माध्यम से एक ऐसी ही नारी का चित्रण किया गया है जो अपने समाज व देश में व्याप्त बुराइयों, विशेषकर राजनीतिक धांधलेबाजी को जड़ से खत्म करने का वीणा उठाती है। वह अपने समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों (अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक तंगी, श्रम का शोषण, भाई-भतीजावाद, जातिवाद, चापलूसी प्रवृत्ति आदि) पर अपनी नजर दौड़ाती है तथा उन्हें दूर

करने का संकल्प लेती है और देश की राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभाती है। तमाम प्रकार के अवरोधों को पारकर वह अपने पथ पर अग्रसर होती है। तथा पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में पुरुषों के समक्ष कंधे-से-कंधा मिलाकर चलने का साहस करती है। स्वस्ति को चुनाव से हटाने के लिए उसके विपक्षियों द्वारा तरह-तरह के प्रलोभन व धमकियाँ दी जाती हैं तथा उस पर हमला भी करवाया जाता है ताकि वह डरकर चुनाव से पीछे हट जाए किन्तु स्वस्ति पर इन धमकियों का कोई असर नहीं होता। वह चुनाव में भागीदारी करके जीत भी हासिल करती है। स्वस्ति की क्रांतिकारी विचारधारा और अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति जागरूकता एवं नारी मुक्ति की चेतना का पता उस समय लगता है जब वह चुनाव-प्रचार के दौरान जनता को संबोधित करती है। वह जनता को उनकी वास्तविक स्थिति से रु-ब-रु कराते हुए एवं जनता में नवीन ऊर्जा का संचार करते हुए कहती है- **“आप लोग हमेशा से धारा से साथ बहते रहे हैं। इसी में सार्थकता समझी गयी। पर धारा के साथ तो मरी हुई मछली बहती है जिंदा मछली तो धारा के खिलाफ बहती है।———कठिनाइयाँ जीवंतता का तकाजा करता है न कि गिड़गिड़ाहट का। हमें पुराने पिटे-पिटाए विचारों से मुक्ति पानी है। हमें अपने मस्तिष्क में क्रांति लानी है अन्यथा देश की हालत ऊपरी टीमटाम के बावजूद भीतर-ही-भीतर और भी खोखला होता चला जाएगा। हम किसी आदमी विशेष किसी महान नेता के विरुद्ध नहीं बोल रहे। हम सिस्टम को बुरा बता रहें हैं। उससे लड़ रहें हैं।” (चुन-चुन-चुनाव, 111-112)**

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि भारतवंशी मॉरिशसीय स्त्रियाँ अब हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलकर चलती हैं और अपने साथ होने वाले भेद-भावपरक व्यवहार का खुलकर विरोध भी करती हैं। ‘मुड़िया पहाड़ बोल उठा’ उपन्यास में अनत जी ने फैक्टरियों आदि में महिला कामगारों के साथ होने वाले अन्याय एवं उनके विविधोंमुखी शोषण का वर्णन ‘जोन फ्रांस’ नामक फैक्टरी की महिला मजदूरों के माध्यम से दर्शाया है।

साथ ही महिला वर्करों द्वारा अपने पारिश्रमिक का पूरा श्रम न दिए जाने एवं अतिरिक्त काम करने के लिए उचित वेतन के माँग का भी चित्रण किया है, जो स्त्री चेतना एवं अपने प्रति किए गए अन्याय के प्रति सजगता का परिचायक है। इस उपन्यास में अनत जी ने नेहा के माध्यम से नारी मुक्ति के स्वर को भी वाणी प्रदान की है। 'जोन फ्रांस' फैक्टरी की महिला कामगारों के साथ मैनेजर की सख्ती एवं उसके अभद्र व्यवहार तथा श्रम का पूरा पारिश्रमिक न दिए जाने पर व अतिरिक्त काम करवाने पर वेतन में कटौती करने पर सभी स्त्रियाँ एकजुट होकर मालिक के खिलाफ आंदोलन खड़ा करती हैं। उनके सशक्त व शांत आंदोलन की वजह से फैक्टरी के मालिक को अपने निर्णयों में बदलाव करना पड़ता है और उन्हें कामगारों की शर्तें भी माननी पड़ती हैं। इतना ही नहीं इन महिला कामगारों का आंदोलन इतना सशक्त होता है कि सरकार को भी इनकी माँगों के सामने नतमस्तक होना पड़ता है जिसके फलस्वरूप 'जोन फ्रांस' फैक्टरी का राष्ट्रीयकरण करने की योजना बनायी जाती है। अपने प्रति अन्याय के खिलाफ लड़कियों का आक्रोश एवं उनकी जागरूक चेतना का ही प्रमाण है कि वे एकजुट होकर फैक्टरी के मालिक के विरुद्ध हड़ताल करती हैं। इस संदर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है- **"इधर दो-तीन दिनों से फैक्टरी की लड़कियों में कानाफूसी के साथ इकट्ठे होते नेहा देखती आ रही थी। वास्तव में कारखाने में फिर से शुरू हो आई सख्ती के कारण लड़कियों के बीच बन रही योजना का द्योतक थी वह कानाफूसी और गुटबंदी।——फैक्टरी की लड़कियाँ दो दलों में बँटी हुई थीं। एक दल शुरू हुई सख्ती और ओवरटाइम के लिए कम पैसे दिए जाने की शिकायत लिए ग्रां पात्रों से मिलना चाहता था और दूसरा दल यूनियन के आदेश पर हड़ताल शुरू करना चाह रहा था।" (मुड़िया पहाड़ बोल उठा, 73)**

'लहरों की बेटी' उपन्यास में अनत जी ने दुलारी के माध्यम से आधुनिक चेतना से सम्पन्न और परम्परागत जड़ मान्यताओं के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाली उन तमाम

स्त्रियों का चित्रांकन किया है जो पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था द्वारा लागू किए गए नियमों का उल्लंघन करती है। पितृसत्तात्मक समाज में जिस स्त्री का पति दिवंगत हो जाता है उस स्त्री को आजीवन सफेद साड़ी पहनने का विधान है साथ ही उसे अन्य किसी भी प्रकार के शुभ कार्यों व रस्मों में शामिल नहीं किया जाता। किन्तु दुलारी विधवा होकर भी सफेद साड़ी नहीं पहनती। इसके लिए उसे ससुराल से निकाल दिया जाता है। जब वह विदुला के पिता लखन के सानिध्य में आती है तो गाँव वाले उसके बारे में तरह-तरह के अफवाह फैलाते हैं, तथा लखन की मौत का फायदा उठाकर उसके बेटे जीवनदत्त को अपने वश में करने एवं लखन की जायदाद को हड़पने का आरोप भी उस पर लगाया जाता है, जो कि नितांत गलत हैं। दुलारी द्वारा शांति को न्याय दिलाने के संदर्भ में धनदेव दुलारी को तरह-तरह की धमकी देता है। धनदेव की धमकियों से आजिज़ आकर वह झुमकी मौसी से जो वाक्य कहती है उससे उसकी निर्भीकता, साहस व नारी मुक्ति के स्वर का पता चलता है। उसका कथन है- **"मौसी मैं किसी की धमकी के आगे झुककर नहीं जी सकती।—मैं जानती हूँ मौसी कि लोगों के मुँह तो हम लोग नहीं बंद कर पाएँगे, पर जैसा कि तुम कहती रहती हो- जब अपने भीतर कोई चोर बैठा न हो तो फिर डर किस बात का? बातों से अगर घाव लगता तो आज हम इस तरह नहीं रहते। लोगों के बोलने की परवाह हम क्यों करें।" (लहरों की बेटी, 143)** दुलारी के साहस का बखान करते हुए लखन दुलारी से कहता है- **"दुनियाँ बदल रही है दुलारी। औरत को अब छुई-मुई वाली आदत छोड़नी पड़ेगी। औरतों को अब मर्दों के पीछे-पीछे नहीं बल्कि एकदम बगल में चलना होगा।——पूरा गाँव तुम्हारी नेकनीयती, तुम्हारे साहस और तुम्हारे संकल्पों को जानता है।" (लहरों की बेटी, 142)**

'चलती रहो अनुपमा' उपन्यास में कुसुमावती के माध्यम से नारी की जागरूक चेतना एवं स्त्री सशक्तीकरण का चित्रण किया गया है। कुसुमावती अपने पति की नशाखोरी प्रवृत्ति एवं पारिवारिक दायित्वों के प्रति गैर-जिम्मेदार होने की वजह से परेशान रहती है। जिसकी वजह से उसे ही अपने परिवार का पालन-पोषण करना पड़ता है। अपने पति की खुदगर्जी एवं उसकी अहंवादी प्रवृत्ति पर प्रकाश डालते हुए वह अनुपमा से कहती है- **"तुम्हारा चाचा तो मुझसे ब्याह करके यह माने बैठा था कि वह मर्द है और मैं औरत हूँ।—– पच्चीस की उम्र के बाद मुझे औरत से मर्द बनना पड़ा था। ऐसा नहीं करती तो मेरी बेटियों का भी वही हाल होता जो रामधनवा की दोनों बेटियों का हुआ। मैं तुम्हारे चाचा को एक खुदगर्ज के रूप में पाकर सोचा था कि वह मेरी किस्मत की देन है। लेकिन जब मैंने यह निर्णय लिया कि मैं अपने जीवन को अपने ढंग से जीऊँगी, तब मैंने किस्मत को झटका देकर अपने से अलग कर दिया था। अपने आप से कहा था कि- दुनिया अगर मरद लोगन की है तो औरत की भी काहे नै होय सकी।"** (चलती रहो अनुपमा, 138) कुसुमावती द्वारा कहे गए ये वाक्य जहाँ एक ओर पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में नारी की शोषित एवं उपेक्षित दशा का चित्रण करते हैं, वहीं दूसरी ओर नारी मुक्ति के स्वर को भी दर्शाते हैं। अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति सचेत रहने के कारण ही कुसुमावती अपने पति की ज़्यादतियों का विरोध करती है और अपने मेहनत के बल पर अपनी बेटियों का पालन-पोषण करती है। 'आसमान अपना आँगन' शीर्षक उपन्यास में भी अनत जी ने शोभा, नंदिनी व अनुराधा के माध्यम से उन स्त्रियों का चित्रण किया है जो पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के तहत अनेक प्रकार से प्रताड़ित की जाती हैं तथा जो अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु विपरीत परिस्थितियों से डटकर मुक़ाबला करती हैं। उपन्यास में अनुराधा अपने पति दिनेश की ज़्यादतियों को सहते-सहते तथा उसके अन्य स्त्रियों के साथ अवैध संबंध की बातें सुनते-सुनते जब ऊब जाती है तब वह दिनेश को अपनी आदतों से बाज आ जाने को कहती है। लेकिन दिनेश द्वारा अनुराधा की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। बल्कि

वह अनुराधा को मारने-पीटने लगता है तथा अनुराधा को जान से हाथ धो देने की धमकी देता है तब अनुराधा भी दिनेश पर हाथ उठा देती है और दिनेश को आगाह करते हुए कहती है- **"तुम अपने अंदर से यह बात निकाल फेंकना, दिनेश कि इस घर में मेरी मौत एक दिन एकाएक होकर रहेगी और लोग उसे स्वाभाविक मृत्यु समझने को विवश हो जाएँगे।——-अनुराधा मेज पर से फूलदान उठाते हुए बोल उठी थी, 'जहाँ हो वहीं रहो, वरना—--एक और बात जान लो, मेरी लिखी हुई एक चिट्ठी एक ऐसी जगह सुरक्षित है, जो मुझे कुछ होते ही सीधे पुलिस के हाथ पहुँचकर रहेगी।" (आसमान अपना आँगन, 298-299)** अनुराधा अपने सास से अपने पति दिनेश की अन्य स्त्रियों से अवैध सम्बन्धों के बारे में बताते हुए तथा दिनेश के सानिध्य से मुक्त होने का अपना निर्णय सुनाते हुए कहती है- **"इधर वर्षों से इस घर में मैं और आप करते ही क्या रहे हैं? उसे सही रास्ते पर लाने की कोशिशें, उसके वायदों पर विश्वास, विश्वासों को बार-बार टूटते हुए चुपचाप देखते रहना और उसकी उन हरकतों को नए रंग-रूपों के सामने आते तथा उनसे दुखी होकर कराहते रहने के अलावा हमने किया ही क्या। नहीं, माँजी, अब पानी सिर तक आ गया। अभी कल तक उस चीनी लड़की का चक्कर और नंदिनी को परेशान करते रहने का उसका घिनौना खेल चल रहा था, अब तो मलेशिया से लौटने के बाद से उस मलेशियन व्यापारी की बीवी के साथ उसकी रंगरेलियों की बातें हर गली-कूचे में होने लगी हैं। मुझे मत रोकिएगा, माँजी। मैं इस चरित्रहीन आदमी से मुक्त होकर अपने बच्चों का ख्याल बहुत अच्छी तरह रख पाऊँगी। मैं चलती हूँ। लालमाटी में वहाँ का महिला समाज मेरी राह देख रहा होगा।" (आसमान अपना आँगन, 389)** अनुराधा द्वारा दिनेश के प्रति अपने सास से कहे गए ये वाक्य उसकी जागरूक चेतना एवं नारी मुक्ति के स्वर के परिचायक हैं। इस उपन्यास में नंदिनी एक ऐसी नारी पात्र है जो उन तमाम नवयुवतियों का प्रतिनिधित्व करती है जो

आधुनिक समय में स्वतंत्र जीवन जीने की आकाँक्षा रखती हैं। वह (नंदिनी) स्वयं के विचारों के बारे में शोभा से कहती है- **"कालेज के दिनों से ही मैं यह सोचा करती थी कि मैं अपने जीवन को बहुत ही स्वतंत्र रूप से और निजी ढंग से जीऊँगी। अपनी जिंदगी को अपने पकड़ में रखे मैं अपनी धड़कनों की स्वयं स्वामिनी रहना चाहती थी। मैं एक तरह से अपने आप से विद्रोह कर जाने पर आमादा थी। पेरिस में पढ़ते समय मेरा निर्णय ज़ोर पकड़ता गया।-----मैं आज भी अपने जीवन को अपने मूल्यों पर जीना चाहती हूँ। (आसमान अपना आँगन, 120-121)** नंदिनी न सिर्फ स्वयं स्वतंत्र जीवन जीने की आकाँक्षी है बल्कि वह उन सभी स्त्रियों को उनके हक एवं अधिकार दिलाना चाहती है जिनके अधिकारों का हनन पितृसत्तात्मक समाज द्वारा किया गया है। वह उन मूल्यों, मान्यताओं, परम्पराओं व नियमों-क़ानूनों में परिवर्तन चाहती है जिनके द्वारा स्त्रियों की स्वतन्त्रता में बाधा उत्पन्न होती है या उनकी इच्छाओं-आकाँक्षाओं को दबा दिया जाता है व उनके अरमानों का गला घोट दिया जाता है। स्त्रियों को उनकी सही पहचान व समाज में उनको समान अधिकार दिलाने के संदर्भ में नंदिनी का कथन है- **"औरत की सही पहचान, उसकी सही इज्जत के लिए उसके अपने अधिकार के लिए उन तमाम क़ानूनों को बदलना होगा जिन्हें मर्दों ने अपने लिए बनाया हुआ है।" (वही, 249)**

नंदिनी के समान 'अस्ति-अस्तु' उपन्यास की नायिका दिव्या भी आधुनिक चेतना से सम्पन्न युवती है। जो उन पुराने मूल्यों व मान्यताओं तथा रीति-रिवाजों व सामाजिक बंधनों को तोड़ने की आकाँक्षी है जिनके द्वारा स्त्रियों का शोषण किया जाता है। दिव्या उन पाश्चात्य लेखिकाओं की विचारधारा से प्रभावित है, जिन्होंने औरत की आजादी को महत्व प्रदान किया है। दिव्या कहती है- **"औरत की आजादी की जंग में मैं इन अग्रगामियों की समर्थक हूँ।" (अस्ति-अस्तु, 57)** दिव्या न सिर्फ औरत की आजादी की समर्थक है बल्कि वह

पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलने की ख़्वाहिश रखती है। अपने प्रेमी नरेश द्वारा ठुकरायी जाने पर वह कहती है- **"पहले मैं मर्दों के साथ कंधे-से कंधा मिलाकर चलना चाहा था।------अब मैं मर्दों से आगे निकलने की सोच रही हूँ। तब साथ चलने का प्रण था। आज उससे आगे होकर उसे अपने पीछे चलाने का प्रण है।" (अस्ति-अस्तु, 99-100)** दिव्या स्त्रियों के साहस, संघर्षशक्ति व धैर्य तथा उसकी कार्यकुशलता के बारे में शकील से कहती है- **"मर्द अगर अपनी जिंदगी की भूल को आसानी से भूल सकता है तो औरत उसे अपने जेहन में चिपकाए क्यों रहे।------औरत को अगर अवसर दिया जाए तो वह मर्द द्वारा अधिकृत क्षेत्र में भी उससे आगे निकल सकती है।" (अस्ति-अस्तु, 161)** उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में भारतवंशी मॉरिशसीय स्त्रियों की अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा के प्रति सजगता एवं जागरूकता का चित्रण किया है। तथा अपने अधिकारों के लिए उनके द्वारा किए गए संघर्ष को वाणी प्रदान किया है।

अनत जी द्वारा रचित 'क्यों न फिर से' उपन्यास में भी नारी मुक्ति की चेतना को वाणी प्रदान की गयी है। इस उपन्यास में लेखक ने महिमा व भवन्ती के माध्यम से आधुनिक चेतना से युक्त विचारशील स्त्रियों का चरित्रांकन किया है, जो पुरुषों की अहंवादिता व हर क्षेत्र में उनके एकाधिकार का सर्वत्र विरोध करती हैं। भवन्ती यद्यपि घरेलू काम-काज करने वाली स्त्री है, जो पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के अधीन रहकर जीवन का निर्वाह कर रही है। फिर भी उसके विचारों में नारी के साथ अन्याय करने वालों के प्रति तीव्र आक्रोश के भाव विद्यमान हैं। भवन्ती समाज में नारी की शोषित, पीड़ित, उपेक्षित व दयनीय स्थिति का मूल कारण पुरुषों की अहंवादी दृष्टि को मानती है। उसका मत है कि समाज में स्त्रियों को भी हर क्षेत्र में बराबरी का दर्जा दिया जाए न कि उसे घर की चहारदीवारी के भीतर कैद करके रखा जाए। स्त्रियों को दोयम दर्जे में न रखा जाए।

इसलिए वह पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था से अनुरोध करती है कि समाज में स्त्रियों को भी वही सब अधिकार दिए जाएँ जो पुरुषों को प्राप्त हैं तथा स्त्रियों के श्रम, त्याग, बलिदान आदि को सराहा जाए और उन्हें भी अपने अनुकूल जीवन जीने का हक मिले। भवन्ती के इन विचारों से उसकी नारी मुक्ति की चेतना का पता चलता है। एक प्रसंग में वह अपने पति को फटकारते हुए कहती है- **"आप मर्द लोग जहाँ औरतों को अधनंगी देखकर मन ही मन खुश होते हैं वहीं अपने कपटी स्वभाव के कारण लोगों के बीच उसकी निंदा करने लग जाते हैं।" (क्यों न फिर से, 60)** स्त्रियों की निंदा करने पर भवन्ती न सिर्फ अपने पति को फटकार लगाती बल्कि इसके साथ ही वह पुरुषों की अहंवादी स्वभाव एवं उन रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं पर चोट करती है जिनके तहत स्त्रियों की स्वतन्त्रता को, उसके अस्तित्व को कोई महत्व नहीं दिया जाता। जहाँ पर उसे मात्र पुरुषों की अनुगामिनी माना जाता है। इस संदर्भ में वह महिमा से कहती है- **"मर्दों ने तो शुरू से ही औरतों को अपने अधीन रखने के लिए उसे घूँघट और बुरके में रखा। उसके पाँवों में पाजेब के रूप में जंजीर बाँध दी। चूड़ियाँ देकर हथकड़ियाँ पहना दीं। शादी के पंडाल में बाप ने बेटी का कन्यादान करके पति को तोहफे के रूप में दे दिया। पति ने टीका और सिंदूर लगवाकर उसके माथे पर अपना माल होने की मुहर लगा दी। मरकर पति दिए हुए सुहाग को छीन ले जाता है यानी कि मेरे बाद तुम्हारी अब वह पहचान नहीं रही।" (क्यों न फिर से, 61)** भवन्ती के ये कथन पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्री की दयनीय स्थिति को दर्शाता है जहाँ पर स्त्रियों को बचपन में पिता की छत्रछाया में, उसके बनाए कायदे-क़ानूनों के तहत जीना पड़ता है और शादी के बाद उसे पति के अधीन रहना पड़ता है। उसे पति के सुख-दुख एवं उसकी इच्छाओं का ख्याल रखना पड़ता है। एवं बुढ़ापे में पुत्र के अधीन रहना पड़ता है। तथा उसके द्वारा बनाए गए नियमों-क़ानूनों के तहत जीवन यापन करना पड़ता है। उसकी (नारी की) इच्छा-आकाँक्षा, भावों व विचारों को कोई महत्व नहीं दिया जाता। उपन्यास में

भवन्ती उन परम्पराओं, रीति-रिवाजों की निंदा करती है जिनके पालन में स्त्रियों के अरमानों का गला घोटा जाता हो। वह कहती है- **"अगर इन्हीं मान्यताओं को बनाए रखने में तहजीब और नारी-इज्जत की रक्षा निहित है और पुरुष की मर्दानगी की धौंस चलती रहे तो औरत बगावत का तेवर अख़्तियार क्यों नहीं करेगी? अपनी पसंद का कुछ कर जाने का प्रयत्न क्यों न करे?" (क्यों न फिर से, 61)**

अनत जी ने भवन्ती के माध्यम से यह भी दर्शाया है कि प्राचीन समय में स्त्रियों की स्थिति दोयम दर्जे की नहीं थी बल्कि समाज में उनको प्रथम स्थान प्राप्त था। उस समय उन्हें पुरुषों से आगे रखा गया था। वे पूजनीय मानी जाती थीं। तथा समाज में उन्हें भी वे सभी अधिकार प्राप्त थे जो पुरुषों को प्राप्त थे। लेखक ने विभिन्न देवी-देवताओं का नामोल्लेख करते हुए यह प्रमाणित किया है कि प्राचीनकाल में स्त्रियों को हमेशा सम्मान दिया जाता था उनकी भी स्वतन्त्रता का ख्याल रखा जाता था। किन्तु धीरे-धीरे पुरुषों में अहंवादी प्रवृत्ति ज़ोर पकड़ती गई और अपने को श्रेष्ठ घोषित करने के चक्कर में स्त्रियों को दोयम दर्जे में रखने लगे और उनका दायरा सीमित कर दिया तथा उन्हें घर की शोभनीय वस्तु मानकर, संस्कारों की दुहाई देकर उन्हें घर में कैद कर दिया गया तथा उनके भावों, विचारों, इच्छाओं व आकाँक्षाओं को दरकिनार कर स्वयं के बनाए नियम-कानून उन पर थोपने लगे। इस संदर्भ में भवन्ती का कथन है- **"औरत का दर्जा आरंभ में मर्द से पहले था। मर्दों को यह गवारा नहीं हुआ और उन्होंने उमा-शंकर, सीता-राम, राधा-कृष्ण, स्त्री-पुरुष जैसी परंपरा को तोड़कर पति-पत्नी, भाई-बहन, राजा-रानी का सिक्का चला दिया।" (क्यों न फिर से, 61)**

प्रस्तुत उपन्यास (क्यों न फिर से) में अनत जी ने महिमा के माध्यम से भी आप्रवासी भारतीय स्त्री की नारी मुक्ति की चेतना को स्वर प्रदान किया है। महिमा मूलत: दिल्ली की निवासी है। 20 वर्ष की उम्र में ही एक करोड़पति के बेटे विमल के साथ उसकी शादी कर दी जाती है। शादी के पश्चात् वह एक बेटी को जन्म देती है। जिसके कारण उसके ससुराल वाले उसे घर से निकाल देते हैं, क्योंकि उनको अपने व्यवसाय के लिए वारिस की जरूरत थी। ससुराल द्वारा ठुकराई जाने पर वह अपनी आजीविका चलाने के लिए मॉरिशस के भारतीय उच्चायोग में सांस्कृतिक अटायची के पद पर कार्य करने लगती है। जहाँ उसकी मुलाक़ात अजय जयराम नामक एक मंत्री से होती है। अजय से घनिष्ठता बढ़ने पर महिमा अपनी आपबीती सुनाती है। जब अजय उससे कहता है कि विमल से तलाक न होने पर तुम कानूनी रूप से आज भी उसकी पत्नी हो। तब इसके प्रत्युत्तर में महिमा जो वाक्य कहती है उससे उसकी स्त्री मुक्ति की चेतना की झलक मिलती है। वह अजय से कहती है- **"स्त्री ठुकराए जाने के बाद अपनी खोई हुई आजादी पा लेती है। आजाद होकर मैंने स्वयंबर के रूप में तुम्हें अपना बनाया है- जीवन भर के लिए।" (क्यों न फिर से, 86)** अपनी इसी विचारधारा के आधार पर वह अजय से अपना संबंध बनाती है। उससे शादी करने के लिए तैयार हो जाती है। और जब विमल पुन: उसे अपने घर वापस चलने के लिए कहता है तब वह उसके इस प्रस्ताव को ठुकरा देती है और भविष्य में दुबारा न मिलने की हिदायत देती है। महिमा द्वारा लिए गए ये निर्णय उसकी अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति सजगता का ही परिचायक है। जो पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था द्वारा बनाए गए क़ानूनों का उल्लंघन करके अपने मनमुताबिक अपना जीवन जीती है।

'अपना मन उपवन' शीर्षक उपन्यास में भी अनत जी ने उर्मिला एवं निशा के माध्यम से आधुनिक विचारों तथा नारी मुक्ति की चेतना से सम्पन्न स्त्रियों का चित्रण किया है। जो पुरुषवादी वर्चस्व की ज़्यादतियों का शिकार होकर एवं उनकी चुनौतियों का

सामना करते हुए अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बनाए रखती हैं। उपन्यास में निशा और उर्मिला दोनों ही अरविंद नामक धनाढ्य युवक के प्रेम-जाल में फँसती हैं। अरविंद आरंभ में उर्मिला से विवाह करने की योजना बनाता है किन्तु जातिगत भेद-भाव के कारण उसके परिवार वाले उसकी शादी उर्मिला से नहीं कराते। अरविंद के जीवन से उर्मिला को हटाने के लिए उसे उच्चशिक्षा प्राप्त करने के बहाने से पेरिस भेज दिया जाता है और अरविंद की शादी निशा से तय कर दी जाती है। किन्तु शादी से पूर्व जब निशा को उर्मिला और अरविंद के प्रेम-सम्बन्धों की जानकारी होती है और उर्मिला को ठुकराने की जानकारी होती है तब वह अरविंद से अपना रिश्ता तोड़ लेती है। अरविंद के परिवार वालों द्वारा समझाए जाने पर भी वह अपने फैसले पर अडिग रहती है। निशा द्वारा अरविंद से विवाह न करने का संकल्प ही उसके अपने अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा के प्रति प्रयास को दर्शाता है। इसी तरह 'मेरा निर्णय' उपन्यास में अमिता के माध्यम से आधुनिक चेतना से सम्पन्न, अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूक तथा पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था को चुनौती देने वाली स्त्रियों का चित्रण किया गया है। अमिता पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन में तमाम कठिनाइयों का सामना करते हुए इंग्लैंड में नर्सिंग का कोर्स पूरा करती है। वहाँ पर वह अपनी परंपरा व संस्कृति के विरुद्ध जाकर फ्रेडरिक नामक फ्रांसीसी युवक से अंतर्धर्मीय विवाह करती है। वह फ्रेडरिक से सिविल मैरिज करती है। तथा एक बच्ची को जन्म देती है। फ्रेडरिक द्वारा अपनी बच्ची का रंग गोरा न पाकर वह बच्ची और अमिता दोनों को अपने जीवन से निकाल देता है। वह अमिता पर तरह-तरह के दोषारोपण करता है तथा अमिता के न चाहते हुए भी वह उससे तलाक ले लेता है। फ्रेडरिक द्वारा ठुकराई जाने पर भी वह टूटती-बिखरती नहीं। और जब फ्रेडरिक की मृत्यु के पश्चात् उसकी बहन फ्रेडरिक की जमीन-जायदाद के कागजात देने हेतु अमिता के पास आती है तब वह उन कागजातों को लेने से इंकार कर देती है। वह अपनी बेटी विमला की समस्त जिम्मेदारियों का निर्वहन अकेले ही करती है। यद्यपि पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में उसे विमला के पिता को लेकर तमाम प्रकार के अवरोधों से गुजरना पड़ता है। क्योंकि मॉरिशस लौटने पर उसके

साथ एक बच्ची को देखकर उसके सगे-संबंधी व गाँव के लोग उसके पति एवं विमला के पिता के बारे में तमाम प्रकार के प्रश्न करते हैं। विमला को स्कूल में दाखिला दिलाने के समय भी उसे इस समस्या से गुजरना पड़ता है। किन्तु वह सबसे स्पष्ट कह देती है वही विमला की माँ एवं पिता दोनों है। तथा पितृसत्तात्मक समाज में वह अकेली ही विमला की माँ एवं पिता दोनों के दायित्वों को निभाती है। अमिता अपने संघर्ष एवं साहस का उल्लेख करते हुए हुस्ना से कहती है- **"जब फ्रेडरिक मुझे उस बड़ी मुसीबत में छोड़ गया था तो मैं टूटते-टूटते बची थी।———अगर मैं दो कठोर आघातों से चकनाचूर नहीं हुई थी तो एक और कारण यह भी है कि मैं अपने मुजरिमों के सामने हार मानने को कभी तैयार नहीं थी।" (मेरा निर्णय, 109)** अमिता पुरुषों की अहंवादी प्रवृत्ति पर कुठाराघात करते हुए कहती है- **"मर्द की मर्दानगी दिखानेवाले पहले नामर्द को तो मैंने पंडित जीवनलाल जी के घर पर देखा था जो औरतों की स्वीकृति पाए बिना अपनी नपुंसकता दिखा गया था। फ्रेडरिक- वह दूसरा नामर्द मेरे जीवन में दाखिला पा सका जो अपनी बच्ची को अपने रंग की न पाकर अपने रंग और संदेह की नपुंसकता दिखा गया।" (मेरा निर्णय, 46)** 'लाल पसीना' उपन्यास में भी अनत जी आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के शोषण विरोधी स्वर को दर्शाया है। गोरे शासकों एवं कोठी के सरदारों के अत्याचारों से त्रस्त होकर भारतीय आप्रवासी मजदूर स्त्रियाँ एकजुट होकर कोठी के सरदार से खेतों में काम करने वाले मजदूरों के साथ होने वाले अत्याचार को रुकवाने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। वे कहती हैं- **"हम औरत के पास इतना साहस है कि हम सब कोठी को घेर के चिल्ला-चिल्ला के पूछें कि आखिर कब तक? कब तक खेतवन में गाड़ी के गाड़ी बाँस गिरत रही और मजदूरन की पीठ पर टूटत रही? कब तक गन्ने से भरल गाड़ी बैल के बदले आदमी से खिंचवाई जाए?——हे सूरजनारायन, कब गज़ब गिरावोगे इन जुलुम ढाहनेवालों पे?" (लाल पसीना, 239)** उपर्युक्त उदाहरण से जहाँ एक ओर भारतीय मजदूरों के साथ गोरों के अमानवीय

अत्याचार की झाँकी प्रस्तुत की गयी है, वहीं दूसरी ओर भारतीय आप्रवासी मजदूर स्त्रियों की नारी मुक्ति के स्वर को भी वाणी प्रदान की गयी है तथा शोषण विरोधी स्वर को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि जिस प्रकार अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों (पुरुष वर्ग) के जीवन संघर्ष एवं उनकी जीवनाकाँक्षा, गोरों के शोषण तंत्र में पिसते भारतीय मजदूरों की शोषित, पीड़ित, उपेक्षित व दयनीय दशा को प्राप्त स्थिति का एवं उस शोषित दशा से निजात पाने के उनके संघर्ष, त्याग एवं बलिदान का यथार्थपरक चित्रण किया है। ठीक उसी प्रकार अनत जी ने भारतीय गिरमिटिया स्त्रियों की भी शोषित,पीड़ित, उपेक्षित एवं दयनीय दशा को प्राप्त स्थिति का सजीव चित्रांकन किया है। अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'चुन-चुन चुनाव', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'आंदोलन', 'शेफाली', 'अपनी -अपनी सीमा', चौथा प्राणी', 'घर लौट चलो वैशाली', 'लहरों की बेटी', 'चलती रहो अनुपमा' व 'मेरा निर्णय' आदि के माध्यम से स्वतंत्रता-पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में नारी जीवन की शोषित, पीड़ित, उपेक्षित दशा का यथार्थपरक चित्रांकन किया है। अनत जी आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के जीवन संघर्ष के साथ-साथ उनके हर्ष-विषाद, आशा-आकाँक्षा, भाव-विचार, मत-मान्यताएँ आदि को भी वाणी प्रदान करते हैं।

अनत जी एक तरफ पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में नारी की शोषित दशा का चित्रण करते हैं, तो दूसरी तरफ पारिवारिक व आर्थिक दायित्वों का निर्वहन करने वाली स्त्रियों के भी चित्र खींचे हैं। उनके उपन्यासों में एक तरफ जहाँ परम्परागत मूल्यों-मान्यताओं, रीति-रिवाजों, रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों को मानने वाली स्त्रियों के दर्शन होते हैं, तो दूसरी तरफ आधुनिक विचारों से युक्त,अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति सजग रहने वाली युवतियों के भी दर्शन होते हैं, जो उन परंपरागत मूल्यों व मान्यताओं को मानने से साफ इंकार करती हैं, जिनसे उनके भाव व विचारों को ठेस पहुंचती है। या जिन्हें पुरुषों ने व्यक्तिगत हित को ध्यान में रखकर बनाया है। अनत जी न सिर्फ घरेलू काम-काज सँभालने वाली स्त्रियों का चित्रण करते है, बल्कि इसके साथ ही उन स्त्रियों का चित्रांकन किया है, जो घर की सीमाओं को पारकर देश चलने तक का सफर तय करती हैं। अनत जी ने अपने उपन्यासों में हर जाति, धर्म व संप्रदाय की स्त्रियों को स्थान दिया है साथ ही हर आय वर्ग की स्त्री पात्रों को नायकत्व प्रदान किया है। अनत जी के संवेदनशील हृदय व पैनी दृष्टि का परिणाम ही है कि उन्होंने समाज में सबसे उपेक्षित समझी जाने वाली स्त्रियों, जो वेश्यावृत्ति में शामिल हैं, को भी अपने उपन्यासों का विषय बनाया और उनके उदात्त चरित्र को भी पाठकों के सामने पेश किया। 'शेफाली' उपन्यास की शेफाली एवं 'अचित्रित' उपन्यास की वानी के माध्यम से वेश्या जीवन की त्रासदी को झेलती एवं सामाजिक उपेक्षा की शिकार तथा वेश्याओं की जीवनांकांक्षा आदि का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। अनत जी कृष्णावती, प्रभा, अमिता, नमिता, राधिका, हुस्ना, विद्यावती, उर्मिला आदि स्त्री पात्रों के माध्यम से विभिन्न कारणों से पति द्वारा परित्यक्त स्त्री की मनोदशा का सजीव अंकन किया है। अत: कहा जा सकता है कि अनत जी न सिर्फ नारी जीवन के बाह्यसंघर्ष को चित्रित किया है बल्कि उनके मानसिक उथल-पुथल की भी मार्मिक अभिव्यक्ति की है।

अनत जी के स्त्री पात्रों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए डॉ कमलकिशोर गोयनका जी 'अचित्रित' उपन्यास की भूमिका में लिखते हैं- “विश्व प्रसिद्ध कथाकार शरत एवं प्रेमचंद की नायिकाओं के समान अभिमन्यु की नायिकाएँ भी बड़ी सशक्त होती हैं, गिरी होने पर भी स्वयं उठती हैं और दूसरों को भी उठाती हैं, उन्हें उदात्त बनाती हैं।” (अभिमन्यु अनत, अचित्रित, भूमिका से, पृष्ठ- 10)

सन्दर्भ-सूची:

1. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृष्ठ- 171,
2. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृष्ठ- 127
3. अभिमन्यु अनत, गाँधीजी बोले थे, पृष्ठ- 16-17
4. अभिमन्यु अनत, गाँधीजी बोले थे, पृष्ठ- 46
5. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 12
6. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 104-105
7. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 228
8. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहापृष्ठ- 289
9. अभिमन्यु अनत, हम प्रवासी, पृष्ठ- 33
10. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 286
11. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 106
12. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 133
13. अभिमन्यु अनत, चलती रहो अनुपमा, पृष्ठ- 137-138
14. अभिमन्यु अनत, लहरों की बेटी, पृष्ठ- 210-211
15. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 316
16. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 249

17. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 249
18. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 249
19. अभिमन्यु अनत, अस्ति-अस्तु, पृष्ठ-58
20. अभिमन्यु अनत, अस्ति-अस्तु, पृष्ठ- 100
21. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 281
22. अभिमन्यु अनत, मेरा निर्णय, पृष्ठ- 14
23. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 259
24. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 273
25. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ-276
26. अभिमन्यु अनत, अचित्रित, पृष्ठ- 99
27. अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृष्ठ- 78
28. अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृष्ठ-61
29. अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृष्ठ-12
30. अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृष्ठ-47
31. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 375
32. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 376
33. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 407
34. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 408
35. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 284
36. अभिमन्यु अनत, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृष्ठ- 73
37. अभिमन्यु अनत, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृष्ठ- 74
38. अभिमन्यु अनत, हम प्रवासी, पृष्ठ-57
39. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृष्ठ- 157
40. अभिमन्यु अनत, अचित्रित, पृष्ठ- 29

41. अभिमन्यु अनत, तीसरे किनारे पर, पृष्ठ-174
42. अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृष्ठ-84
43. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 198
44. अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृष्ठ-28
45. अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृष्ठ-28-29
46. अभिमन्यु अनत, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृष्ठ-7
47. अभिमन्यु अनत, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृष्ठ- 8
48. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 225
49. अभिमन्यु अनत, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृष्ठ-77
50. अभिमन्यु अनत, अपनी-अपनी-सीमा, पृष्ठ- 62-63
51. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ-298
52. अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, पृष्ठ- 18
53. अभिमन्यु अनत, अचित्रित, पृष्ठ-38
54. अभिमन्यु अनत, शेफाली, पृष्ठ-13
55. अभिमन्यु अनत, शेफाली, पृष्ठ- 25
56. अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, पृष्ठ-113
57. अभिमन्यु अनत, तीसरे किनारे पर, पृष्ठ-89
58. अभिमन्यु अनत, शेफाली, पृष्ठ-118
59. अभिमन्यु अनत, शेफाली, पृष्ठ-38
60. अभिमन्यु अनत, अस्ति- अस्तु, पृष्ठ- 99
61. अभिमन्यु अनत, तपती दोपहरी, पृष्ठ-40
62. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ-249
63. अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, पृष्ठ-83
64. अभिमन्यु अनत, और नदी बहती रही, पृष्ठ-82-83

65. अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृष्ठ-97
66. अभिमन्यु अनत, अचित्रित, पृष्ठ-155
67. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ-316
68. अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, पृष्ठ-16
69. अभिमन्यु अनत, शेफाली, पृष्ठ-14
70. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ-243
71. अभिमन्यु अनत, तीसरे किनारे पर, पृष्ठ-173
72. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृष्ठ- 239
73. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ- 276
74. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृष्ठ-279
75. अभिमन्यु अनत, तीसरे किनारे पर, पृष्ठ- 99
76. अभिमन्यु अनत, तीसरे किनारे पर, पृष्ठ- 99
77. अभिमन्यु अनत, तीसरे किनारे पर, पृष्ठ- 100
78. अभिमन्यु अनत, तपती दोपहरी, पृष्ठ-40
79. अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, पृष्ठ- 111-112
80. अभिमन्यु अनत, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, पृष्ठ- 73
81. अभिमन्यु अनत, लहरों की बेटी, पृष्ठ- 143
82. अभिमन्यु अनत, लहरों की बेटी, पृष्ठ- 142
83. अभिमन्यु अनत, चलती रहो अनुपमा , पृष्ठ- 138
84. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 298-299
85. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 389
86. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 120-121
87. अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, पृष्ठ- 249
88. अभिमन्यु अनत, अस्ति- अस्तु, पृष्ठ- 57

89. अभिमन्यु अनत, अस्ति- अस्तु, पृष्ठ- 99-100
90. अभिमन्यु अनत, अस्ति- अस्तु, पृष्ठ- 161
91. अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृष्ठ- 60
92. अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृष्ठ- 61
93. अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृष्ठ- 61
94. अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृष्ठ- 61
95. अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, पृष्ठ- 86
96. अभिमन्यु अनत, मेरा निर्णय, पृष्ठ- 109
97. अभिमन्यु अनत, मेरा निर्णय, पृष्ठ- 46
98. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृष्ठ-239

उपसंहार

मॉरिशस में रहकर भी हिन्दी भाषा व साहित्य के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहने वाले लेखकों में अभिमन्यु अनत का नाम सबसे ऊपर रहा है। मॉरिशस में जन्मे हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार अभिमन्यु अनत ने मॉरिशस के साथ-साथ भारत के हिंदी पाठकों में भी खासी लोकप्रियता हासिल की है। अभिमन्यु अनत सर्वाधिक चर्चित भारतेतर साहित्यकार हैं जो मॉरिशस में रहते हुए भी हिंदी भाषा व साहित्य के विकास के लिए सदैव चिंतित और प्रयत्नशील रहे हैं और हिंदी भाषा में अपना सर्वाधिक लेखन किया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबंध को 5 अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय 'अभिमन्यु अनत: व्यक्तित्व और कृतित्व' है। इसे दो उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप अध्याय 'अभिमन्यु अनत: व्यक्तित्व' में अभिमन्यु अनत का जन्म, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा, पारिवारिक व आर्थिक स्थिति, व्यवसाय, पुरस्कार, सम्मान आदि का तथ्यात्मक वर्णन किया गया। साथ ही उन तमाम स्थितियों,घटनाओं व व्यक्तियों का भी उल्लेख किया गया है जिनसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनंत जी का जीवन प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त अनत जी के लेखन को प्रभावित करने वाले विभिन्न व्यक्तियों, साहित्यकारों, मनीषियों, चिंतकों व आंदोलनों का भी उल्लेख किया गया है। साथ ही अनत जी के साहित्यिक मानस के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली मान्यताओं एवं विचारधाराओं पर भी प्रकाश डाला गया है। दूसरा उप अध्याय

‘अभिमन्यु अनत: कृतित्व’ है, इसमें अनंत जी द्वारा विविध विधाओं यथा- कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, संस्मरण, निबंध, जीवनी, यात्रा साहित्य, संकलन-संपादन आदि में रचित रचनाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त 1937 ई॰ को मॉरिशस के उत्तर प्रांत के त्रिओले नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम पतिसिंह व माता का नाम सुभागो देवी था। अनत जी के पूर्वज बिहार के आरा जिले से मॉरिशस पहुँचे थे। मॉरिशस में अपने पूर्वजों के आगमन और उनके साथ गोरों द्वारा किए गए छल-कपट और दुर्व्यवहार के बारे में अनत जी बताते हैं –“मेरे दादा जी गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस लाये गये थे। उन्हें “कुली” कहा जाता था। उस समय मॉरिशस को फ्रांसीसियों से अंग्रेजों ने जीत लिया था, लेकिन देश में फ्रांसीसियों का प्रभुत्व नहीं मिटा था। उन्हीं फ्रांसीसियों की कोठी में काम करने के लिए भारतीय मजदूर लाये गये थे, क्योंकि मडागास्कर से आए हुए दास, दास-प्रथा की समाप्ति के कारण, ईख के खेतों में काम करने से इनकार कर चुके थे। जिन शर्तों और परिस्थितियों में भारतीय मजदूरों को मॉरिशस में जीना पड़ा वे हृदयविदारक हैं। ‘लाल पसीना’ उसी व्यथा, उसी इतिहास का उपन्यास है। लोगों पर चाबुकों की बौछार होती थी। सप्ताह भर के काम के लिए बारह आने और दो डिबिया चावल-दाल मिलते थे। अपनी संस्कृति से उन्हें हटाने की कोशिश हर बार की जाती थी। ‘रामायण’ और हिन्दी पढ़ना मना था। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने पर थोड़ी-बहुत इज्जत मिल जाती थी और खेतों से हटकर दफ्तरों में नौकरी मिल पाती थी। एक बहुत ही लंबी अवधि के बाद

भारतीय मजदूर अपने सिर उठाने में सफल हुए थे। इससे पहले खेतों में काम करते हुए कमर सीधी करने का मतलब था-गोरे मालिकों की गालियों की बौछार और कोड़ों की मार। मॉरिशस में मेरे परिवार के साथ वही सब कुछ हुआ जो अन्य हजारों मजदूरों के साथ हुआ। कपड़े रोटी की मोहताजी और खून-पसीना एक करके गोरे-मालिकों की तिजोरियाँ भरने की विवशता उनके सामने थी। चोरी-चुपके हिन्दी पढ़ते-पढ़ाते अपनी संस्कृति को जीवित रखे आ रहे थे। उन अत्याचारों को मैंने देखा तो नहीं था, लेकिन उनके परिणामों को भुगता जरूर। उसी के फलस्वरूप गरीबी को भोगते हुए। उस शोषण को मानसिक स्तर पर हर वक्त जीता रहा। उसे जीकर ही ऐतिहासिक यातनाओं की प्रतिक्रियास्वरूप लेखक बना।"[1] अनत जी का बचपन अत्यंत गरीबी में बीता। गरीबी के कारण अनत जी अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाए। उनकी स्कूली शिक्षा मात्र तीसरी कक्षा तक ही हो पाई। इस संदर्भ में वे एक साक्षात्कार में डा. कमल किशोर गोयनका से कहते हैं- "इस जन्म में तो पढ़ने और प्रमाणपत्र हासिल करने का मुझे अवसर ही नहीं मिला। यह बात एकदम सही है कि गलियों में मेरी पढ़ाई हुई। आम आदमी मेरे अपने विश्वविद्यालय के अध्यापक रहे और अपने देश की तत्कालीन स्थितियों और परिस्थितियों ने मेरे भीतर के रचनाकार को जन्म दिया।"[2]

अनत जी का बचपन अभावों में बीता था, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें औपचारिक शिक्षा से वंचित रहना पड़ा। अपनी पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु अनत जी को विभिन्न प्रकार के व्यवसाय की ओर उन्मुख होना पड़ा। यद्यपि वे स्वभावत: एक लेखक थे,

बावजूद उन्हें खेतों में मजदूरी करनी पड़ी तथा कुछ दिनों तक बस कंडक्टर का भी काम करना पड़ा। 18 वर्षों तक उन्होंने मॉरिशस में हिन्दी अध्यापन का कार्य किया तथा तीन वर्षों तक युवा मंत्रालय मॉरिशस में नाट्य-कला विभाग में नाट्य-शिक्षक के रूप में कार्य किया। उन्होंने न केवल नाट्य शिक्षक का काम किया बल्कि इसके साथ ही नाट्य-लेखन, सम्पादन व नाट्य मंचन व निर्देशन का भी दायित्व निभाया। इसके उपरांत दो वर्ष के लिए महात्मा गाँधी संस्थान, मॉरिशस में हिन्दी शिक्षक का पदभार ग्रहण किया तथा मॉरिशस में भारतीय भाषा-विभाग एवं सर्जनात्मक लेखन तथा प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष के रूप में 24 वर्षों तक कार्य किया। वे कई वर्षों तक संस्थान की हिन्दी पत्रिका 'बसंत' एवं बाल-पत्रिका 'रिमझिम' के भी संपादक रहे। इसके बाद उन्होंने मॉरिशस स्थित 'रवीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान' के निदेशक का पदभार ग्रहण किया। 4 जून 2018 को अनंत जी का देहावसान हुआ।

अभिमन्यु अनत को भारत के विभिन्न संस्थाओं द्वारा उनके साहित्यिक योगदान हेतु साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित किया गया है। इसके अलावा उन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली; राजीव गाँधी स्मृति परिषद; के. के. बिड़ला फाउंडेशन, नई दिल्ली; भारत भवन, भोपाल; केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा; महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा आदि द्वारा भी सम्मानित किया गया एवं साहित्य अकादमी द्वारा 'मानद महत्तर सदस्यता' भी प्रदान की गई।

'मॉरिशस के प्रेमचंद' कहे जाने वाले एवं हिन्दी भाषा को विदेशी भूमि में पुष्पित एवं पल्लवित करने वाले आप्रवासी साहित्यकार अभिमन्यु अनत को साहित्यिक क्षेत्र में विभिन्न संघर्षों का सामना करना पड़ा, विशेषकर सत्ता के कोपभाजन का शिकार होना पड़ा। जिस प्रकार भारत में प्रेमचंद की कुछ रचनाओं को भारतीय सरकार ने जब्त कराकर उन्हें आग के हवाले कर दिया था। ठीक उसी प्रकार मॉरिशस में अनत जी की कुछ रचनाओं को मॉरिशसीय सरकार ने जब्त कराकर उन्हें आग के हवाले कर दिया था क्योंकि सरकार को उन रचनाओं में देशद्रोह की गंध महसूस हो रही थी। सरकार यह नहीं चाहती कि उसके काले कारनामों को जनता के सामने उजागर किया जाए। इसीलिए वह उनकी रचनाओं को जलाने का आदेश दे देती है तथा रचनाकार पर देशद्रोही का झूठे आरोप मढ़ देती है। अपने साहित्यिक संघर्ष एवं अपनी रचनाओं के प्रति सरकार की उपेक्षापूर्ण नीति का वर्णन करते हुए अनत जी कहते हैं- "अभिव्यक्ति का संकट मुझे कई बार झेलना पड़ा है। यहाँ तक कि मेरे एक कविता-संग्रह के कारण मुझे देशद्रोही का खिताब भी मिला। मेरा एक नाटक 'कोप-भवन' एक ही प्रदर्शन के बाद खतरनाक घोषित कर दिया गया और टेलीविज़न कार्यक्रम में तय होकर भी प्रसारित नहीं हो सका। 'वसंत' पत्रिका के एक अंक की सभी प्रतियाँ जला दी गयी थीं, क्योंकि उसमें मेरे संपादकीय को व्यवस्था पचा नहीं पा रही थी। टेलीविज़न पर मेरा 40 मिनट का पाक्षिक साहित्यिक कार्यक्रम चलता था। उसे भी आपत्तिजनक कहकर रोक दिया गया, जबकि कलात्मक स्तर पर कुछ ही दिन पहले विभाग का निदेशक उसे स्थानीय टेलीविज़न का सबसे बेहतरीन कार्यक्रम मान चुका था। व्यवस्था के भीतर रहकर भी मैंने कभी अपनी अभिव्यक्ति को गिरवी नहीं रखा। अपने जलाए गए

संपादकीय को 'धर्मयुग' में छपवाकर ही रहा। काफी शोर हुआ, पर मैंने अपनी लेखकीय स्वतन्त्रता को कभी नीलाम नहीं किया।... मेरे एक नाटक 'मरिशा गवाही देना' के प्रसारण के बाद मुझे टेलीविज़न से हटा दिया गया। मेरी एक लघुकथा 'एकलव्य' को 'वसंत' से उड़ा दिया गया।"[3]

कोई भी सृजनशील साहित्यकार बिना किसी उद्देश्य के साहित्य-सृजन नहीं करता। अनत जी अपने लेखन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं- "मैंने अपनी सभी रचनाओं- कविता, कहानी, नाटक, लेख, उपन्यास आदि में यही चाहा है कि आदमी और आदमी के बीच संवाद हो सके, रिश्ते बन सकें। चाहे वह मजदूर और मालिक के बीच का हो, राजनीतिज्ञ और अवाम के हो, ग्राहक और बनिया के हो, गुरु और शिष्य के हो, पति और पत्नी के हो, वेश्या और समाज के हो... बस सभी के बीच मानव-मूल्यों के आधार पर सही रिश्ता बन सके।"[4] अनत जी साहित्य के क्षेत्र में स्वांत: सुखाय की भावना से नहीं प्रवृत्त होते बल्कि बहुजन हिताय की भावना से वे साहित्य-सृजन में प्रवेश करते हैं। साहित्य के क्षेत्र में वे अपने को एक बौद्ध यात्री मानते हैं, जो बहुजन हिताय की भावना से आगे की ओर बढ़े जा रहे हैं।

अनत जी साहित्य की उपयोगिता के संबंध में अपनी राय व्यक्त करते हुए कहते हैं- "साहित्य को मैं लेखक की आत्माभिव्यक्ति अवश्य मानता हूँ, लेकिन उसे मात्र आत्माभिव्यक्ति नहीं मानता। मैं उसे कुहासे के बीच की वह रोशनी मानता हूँ जो यात्री को

सही दिशा दे सके। कोलाहल के बीच किसी मंदिर से आती हुई वह शंख-ध्वनि मानता हूँ उसे जो किसी खतरे के प्रति सचेत करती हो। कविता और साहित्य अपने सभी विचारों में एक परिभाषा है, एक अर्थ है, एक सुझाव है, दृष्टि देने का प्रश्न भी है। इसे मैं अनुभूति भी मानता हूँ और एक बेहतर जीवन के लिए अनुभूति का नियंत्रण भी। वह मानवीय सम्बन्धों और मूल्यों की सर्जना है। साहित्य जहाँ सत्य, शिव और सुंदर है वहाँ शिव का वह तांडव रूप अख़्तियार करने का अधिकारी भी है। तब आलोचना उसका धर्म हो जाता है जो विध्वंश के लिए नहीं, बल्कि नवनिर्माण के लिए होती है। मेरे अपने लिए तो साहित्य कि यही परिभाषा और उपयोगिता रही है।"[5]

अनत जी एक कुशल कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार होने के साथ-साथ एक चित्रकार भी थे। लेखन से पूर्व अनत जी का चित्रकारी के प्रति विशेष अनुराग था। लेकिन व्यवस्था व जनता द्वारा उनके चित्रों को वह महत्व नहीं प्रदान किया गया, जिनके वे हकदार थे, फलस्वरूप चित्रकारी के प्रति उनका मोहभंग हो जाता है। सत्ता व समाज द्वारा अपने कलाकार जीवन की उपेक्षा के दर्द व कुंठा को अनत जी ने अपने कई उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। वे चित्रकारी को छोड़कर लेखन के प्रति इसलिए भी उन्मुख होते हैं, क्योंकि जिन प्रश्नों को वे उठाना चाहते थे उसकी सफल अभिव्यक्ति वे चित्रों में नहीं कर पा रहे थे। इसलिए वे लेखन को अपनाते हैं। इस संदर्भ में वे कहते हैं- "लेखक से पहले मेरा रिश्ता तूलिका, कैनवास और रंगों से था। बहुत सारी तस्वीरें बनाने के बाद मुझे लगा कि

मैं फलक पर अपने प्रश्नों को नहीं उतार पा रहा हूँ तो मैंने उस इरादे को अपने से इस्तीफा दे दिया।"[6]

अनत जी की पहली रचना एक रेडियो नाटिका थी। इसके बाद उन्होंने कहानियाँ लिखीं। इसके साथ-साथ उन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलायी है। कविताएँ उन्होंने सबसे बाद में लिखना शुरू किया। उनकी पहली कविता का शीर्षक था- 'पसीना किसी का, फसल किसी की।' यह अपने में कई कविताओं को लिए हुए एक कविता थी। इस कविता को भारत के तत्कालीन 'नवभारत टाइम्स' के संपादक महावीर ने अपने अखबारों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया था क्योंकि महावीर इस कविता से बहुत प्रभावित हुए थे। कविता की अंतर्वस्तु में मालिक मजदूर के संघर्ष को चित्रित किया गया था जिसका संबंध स्वयं अनत जी के जीवन से था।

अनत जी की प्रथम प्रकाशित रचना 'टूटी प्रतिमा' कहानी है। जो मॉरिशस से ही प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'अनुराग' में पंडित दौलतराम शर्मा के संपादकत्व में प्रकाशित हुई थी। भारत से प्रकाशित होने वाली उनकी पहली रचना 'लहरें कराह उठीं' शीर्षक से 'रानी' पत्रिका में छपी थी। अनत जी की प्रथम पुस्तकाकार रचना 'और नदी बहती रही' उपन्यास है, जो भारत से सन् 1970 ई॰ में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ।

अनत जी ने अपने साहित्य में समाज की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। साथ ही गोरों व सत्तासीन लोगों के शोषणतंत्र में शोषित एवं अपने प्रति किए जाने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज न उठा पाने वाले गूंगे वर्ग की पीड़ा को व्यक्त किया है। अपने लेखन के केंद्रीय विषय के बारे में वे कहते हैं- "मेरा लेखन एक समर्पित लेखन है। मैं उन सभी वर्गों की पीड़ा को शब्द देने का प्रयास करता हूँ जिनकी आवाजें जब्त हैं। मेरे पात्रों में वह फाइलों के नीचे दबता हुआ क्लर्क भी है, अफसरों की गुलामी को स्वीकारे हुए चपरासी भी है, मंत्री को चुनाव के दौरान बालोट पर छोटा-सा क्रास देकर अब ईसा का क्रास पीठ पर लिए दबा जा रहा आदमी भी है, मालिकों के लिए जमीन पर उगी फसल काटता हुआ गरीब मजदूर भी है, वह औरत भी है जो वेश्या है पर भोगने वालों की नजर में औरत नहीं है। वास्तव में, मैं उन बहरों तक उनकी आवाज पहुँचाने की चेष्टा करता हूँ, जो इनकी आवाजों को न सुन पाने का स्वांग रचे होते हैं।"[7]

अभिमन्यु अनत बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। इन्होंने हिन्दी भाषा के अतिरिक्त फ्रेंच व अँग्रेजी भाषा में भी लेखन कार्य किया है। मॉरिशस के वे एकमात्र ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने गद्य-पद्य की प्राय: सभी विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, कविता, एकाँकी, यात्रा-साहित्य, संस्मरण, जीवनी, अनुवाद, सह-लेखन आदि) में अपनी लेखनी चलायी है। इसके साथ-साथ इन्होंने बाल-साहित्य, सम्पादन/संकलन व नाट्य निर्देशन में भी अपनी अहम् भूमिका अदा की है। अनत जी एक कुशल कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार भी थे जिसकी झलक इनके सम्पूर्ण

रचनाकर्म में दिखाई देती है। अनत जी ने अपनी रचनाओं में मॉरिशस में रहने वाले आप्रवासी भारतीयों की संघर्ष गाथा व गोरे शासकों की बर्बरता को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। 'लाल पसीना', 'गांधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' तथा 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास और 'गूंगा इतिहास' नाटक में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के जीवन संघर्ष और गोरे शासकों तथा कोठी के सरदार दलाल आदि के अत्याचारों का यथार्थ चित्रण किया गया है। अनत जी के उपन्यासों का मूल स्वर है मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के दीर्घकालीन जीवन संघर्ष का उद्घाटन। अनत जी के कथा- साहित्य में विषयों की विविधता है, जिसके कारण इन्हें 'मॉरिशस का प्रेमचंद' कहा जाता है। विषयगत विविधता के साथ-साथ विधागत विविधता भी इनके रचनाकर्म की विशेषता है। अनत जी ने उपन्यास और कहानी के अलावा नाटक, एकाँकी, कविता, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा-साहित्य, संस्मरण आदि विधाओं में लेखनी चलायी है। सृजनात्मक लेखन के अलावा उन्होंने अनुवाद और संपादन का भी कार्य किया है।

उपन्यास विधा:

अनत जी ने लगभग 32 उपन्यासों की रचना की है जिनके नाम निम्नवत् हैं:

1) और नदी बहती रही (1970)
2) आंदोलन (1971)
3) एक बीघा प्यार (1972)
4) जम गया सूरज (1973)

5) तीसरे किनारे पर (1976)

6) तपती दोपहरी (1977)

7) लाल पसीना (1977)

8) चौथा प्राणी (1977)

9) कुहासे का दायरा (1978)

10) शेफाली (1979)

11) हड़ताल कल होगी (1979)

12) चुन-चुन-चुनाव (1981)

13) अपनी ही तलाश (1982)

14) अपनी-अपनी सीमा (1983)

15) पर पगडंडी नहीं मरती (1983)

16) गांधी जी बोले थे (1984)

17) मार्कट्वेन का स्वर्ग (1985)

18) फैसला आपका (1986)

19) मुड़िया पहाड़ बोल उठा (1987)

20) शब्दभंग (1989)

21) अचित्रित (1990)

22) और पसीना बहता रहा (1993)

23) लहरों की बेटी (1995)

24) घर लौट चलो वैशाली (1995)

25) चलती रहो अनुपमा (1998)

26) आसमान अपना आँगन (2000)

27) अस्ति-अस्तु (2003)

28) एक उम्मीद और (2003)

29) हम प्रवासी (2004)

30) क्यों न फिर से (2004)

31) अपना मन उपवन (2006)

32) मेरा निर्णय (2010)

कहानी संग्रह: अनत जी ने लगभग 200 कहानियों की रचना की है। अब तक इनके 8 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनके नाम निम्नवत् प्रस्तुत हैं:-

1) खामोशी के चीत्कार (1976)

2) इंसान और मशीन (1976)

3) वह बीच का आदमी (1981)

4) एक थाली समंदर (1988)

5) अभिमन्यु अनत की आरंभिक कहानियाँ (2002)

6) मातमपुरसी (2007)

7) अब कल आएगा यमराज (2010)

8) बवंडर बाहर-भीतर (2011)

नाटक: अनत जी की साहित्यिक यात्रा का आरंभ नाटकों से हुआ है उन्होंने स्वीकार किया है कि उनकी पहली रचना रेडियो नाटिका थी। अनत जी के अब तक 6 नाटक प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं:-

1) विरोध (1977)
2) तीन दृश्य (1981)
3) गूँगा इतिहास (1984)
4) रोक दो कान्हा (1986)
5) भरत सम भाई (1990)
6) देख कबीरा हाँसी (1995)

कविता संग्रह: अनत जी के अब तक 4 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं–

1) नागफनी में उलझी साँसे (1977)
2) कैक्टस के दाँत (1982)
3) एक डायरी बयान (1985)
4) गुलमोहर खौल उठा (1995)

संकलित ग्रंथ: अनत जी द्वारा संकलित रचनाएँ निम्नवत् हैं:-

1) आत्मविज्ञापन (1984)
2) 'Les Nuit' (Translation in French By Aslekha Callyarm-Proag) (1984)
3) अभिमन्यु अनत: समग्र कविताएँ (1998)
4) अभिमन्यु अनत: प्रतिनिधि रचनाएँ (1999)

संपादित ग्रंथ: अनत जी द्वारा संपादित ग्रन्थों की संख्या 7 है, जिनके नाम निम्नवत् हैं:-

1) मॉरिशस की हिन्दी कविता (1975)
2) मॉरिशस की हिन्दी कहानी (1976)
3) मॉरिशसीय हिन्दी कहानियाँ (1987)
4) मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि (1988)
5) मॉरिशस के हिन्दी एकाँकी (1990)
6) सोमदत्तबखौरी की चुनी हुई कविताएं (1990)
7) वसंत चयनिका (1993)

जीवनी: अनत जी द्वारा रचित दो जीवनी ग्रंथ मिलते हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं:-

1) जन आंदोलन के प्रणेता: प्रो॰ वासुदेव विष्णुदयाल (1987)
2) मजदूर नेता: राम नारायण (1988)

एकाँकी: अनत जी द्वारा रचित छः एकांकियों के नाम इस प्रकार हैं:-

1) परिवर्तन
2) क्लर्क की मौत
3) बिल्ली को दफना दो
4) मरिशा गवाही देना
5) जारी रहे तलाश
6) महामारी

यात्रा-साहित्य: अनत जी द्वारा लिखित तीन यात्रा-साहित्य के नाम निम्नवत् हैं:-

1) मेरी क्यूबेक यात्रा
2) कुछ यादें बंबई की
3) यादों का पहर

संस्मरण: अनत जी द्वारा रचित प्रमुख पाँच संस्मरणों के नाम इस प्रकार हैं:-

1) प्रधानमंत्री का वह दफ्तर
2) आज भी शूद्र हूँ
3) ईंट की रोटी
4) मैं चरित्रहीन पढ़ रहा था
5) डाक्टरों का मुर्दा

आत्मकथा: अनत जी द्वारा लिखित आत्मकथा का नाम निम्नवत् है:-

1) यादों का पहला पहर (2005)

अनूदित ग्रंथ: अनत जी ने लेखन के साथ-साथ अनुवाद कार्य भी किया है। उनके द्वारा अनूदित पुस्तक का नाम निम्नवत् है:-

1) मॉरिशस में भारतीय प्रवासियों का इतिहास (1978)

सह लेखन: अनत जी ने सह लेखन का भी कार्य किया है। सह-लेखन से संबन्धित ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं:-

1) Mauritius Its People and Culture (1987) [Co-Writer with S. Selvon and Dr. I. Asgarally]
2) 'History of the Port' (1987) [Co-Writer: S. Selvon]

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, संवेदनशील हृदय व पैनी दृष्टि से सम्पन्न अनत जी ने अपनी रचनाओं में अपने समय व समाज का यथार्थ चित्र खींचा है तथा विविध विधाओं में साहित्य-सृजन करके अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया है। इन्होंने मॉरिशसीय समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन्होंने वस्तु और शिल्प दोनों ही दृष्टियों मॉरिशसीय हिन्दी कथा साहित्य को नवीनता प्रदान कर हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में अपनी अहम् भूमिका का निर्वाह किया।

द्वितीय अध्याय 'मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय' है। इसे तीन उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप अध्याय 'मॉरिशस: इतिहास और भूगोल की अंतर्यात्रा' है। इसके अंतर्गत मॉरिशस के इतिहास एवं वहाँ की भौगोलिक स्थिति का वर्णन किया गया है। इतिहास के अंतर्गत मॉरिशस में अरबों, पुर्तगालियों, डचों, फ्रेंचों और ब्रिटिशों के आगमन, कार्यकाल, योगदान और पलायन का विवेचन किया गया है। साथ ही मॉरिशस में अप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के आगमन का भी उल्लेख किया गया है। भौगोलिक स्थिति के अंतर्गत मॉरिशसद्वीप की उत्पत्ति, जलवायु, सागरीय और स्थलीय जीव-जंतु, वन संपदा, ज्वालामुखियों के अवशेष, पर्यटन स्थल, समुद्र तट आदि का विवेचन किया गया है।

मॉरिशस हिन्द महासागर में स्थित एक छोटा सा द्वीप है, जो अफ्रीका के दक्षिणपूर्वी तट से 2000 किलोमीटर दूरी पर अवस्थित है। मॉरिशस संसार का एक अनोखा देश है जिसका ऐतिहासिक संबंध हालैण्ड, फ्रांस, अफ्रीका, इंग्लैंड, चीन और भारत आदि देशों से जुड़ा रहा है। मॉरिशस द्वीप की खोज तब हुई जब डच, फ्रेंच तथा अंग्रेज़ जातियाँ अपने-अपने व्यापारिक हितों को ध्यान में रखकर हिन्द महासागर के तटवर्तीय देशों को तथा पूर्व के देशों को अपने-अपने उपनिवेश बनाने में संलग्न थे। सर्वप्रथम अरबवासियों का आगमन मॉरिशस द्वीप पर हुआ था। फिर 17वीं शताब्दी के प्रारंभ में पुर्तगालियों का आगमन हुआ और उन्होंने इस द्वीप पर कब्जा कर लिया। 1638 से लेकर 1710 ई. तक पुर्तगालियों का कब्जा इस द्वीप पर रहा। बाद में फ्रांसीसी आए और उन्होंने इस पर कब्जा कर लिया।

1715 से लेकर 1810 ई. तक फ्रांस का कब्जा इस द्वीप पर रहा। नौसैनिक युद्ध (ग्रांपोर्ट युद्ध) के बाद ब्रिटेन ने मॉरिशस पर कब्जा कर लिया और उसका यह कब्जा 1810 से लेकर 1968 ई. तक मॉरिशस के स्वतंत्र होने तक बरकरार रहा। लंबे संघर्ष के बाद 1968 ई. में मॉरिशस को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और 1992 ई. में वहाँ गणतंत्र की स्थापना हुई। अगर ध्यान से देखा जाए तो मॉरिशस के प्रारंभिक तीन शताब्दियों का इतिहास यूरोपीय उपनिवेशिक शक्तियों की अमानुषिक लूट, बर्बरता और अत्याचार की गवाह रही है जिसने मॉरिशस के इतिहास, भूगोल एवं समाज को अनगिनत घाव दिये हैं।

दूसरे उप अध्याय 'आप्रवासी भारतीयों की अवधारणा' में प्रवास, प्रवासी, आप्रवासी, भारतवंशी आदि शब्दों को परिभाषित किया गया है तथा प्रवास के विभिन्न प्रकारों की चर्चा की गई है। तीसरा उप अध्याय 'मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन' है। इसमें विभिन्न जत्थों में भिन्न-भिन्न उद्देश्य से तथा भिन्न-भिन्न रूपों में मॉरिशस आने वाले भारतीयों का वर्णन किया गया है। मॉरिशस में सन 1758 ई. के आसपास भारतीय गुलामों का आगमन होता है तो 1810 ई. में भारतीय सैनिकों एवं कैदियों का आगमन होता है। उसके बाद 1834 से 1920 ई. तक प्रतिज्ञाबद्ध कुली के रूप में कई जत्थों में भारतीयों का आगमन मॉरिशस में होता है। भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के आगमन की चर्चा अनत जी ने अपने उपन्यासों 'लाल पसीना' और 'हम प्रवासी' में स्पष्ट रूप से की है।

मॉरिशस उन भारतेतर देशों में से है जहाँ सन् 1834 ई॰ से शर्तबंद प्रथा के अंतर्गत, जो दासत्व का दूसरा रूप था, भारतीयों को भेजा जाता रहा। इसके अंतर्गत सन् 1923 ई॰ तक लगभग साढ़े चार लाख भारतीय मॉरिशस आये जिनमें से लगभग डेढ़ लाख भारतीय अपना पट्टा पूरा कर स्वदेश (भारत) लौट गए और शेष तीन लाख के करीब लोग यूरोपीय गोरों के अमानवीय अत्याचार सहकर भी वहीं रह गये। जिन भारतीयों के आत्मबलिदान से इस देश का कायाकल्प हुआ और जिनकी परिश्रमशीलता से यह संसार के मानचित्र पर उभरा उन्हीं भारतीयों की संतानों ने बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में अपने राजनीतिक अधिकारों को पहचानकर संघर्ष किया और बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में मॉरिशस को स्वतंत्र कराके अपने नेतृत्व का उदाहरण पेश किया। आज उन्हीं में से कुछ लोग या उनके वंशज प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, गवर्नर जनरल, सरकारी और अर्द्ध-सरकारी संस्थानों के निदेशकों के अलावा बैंकों के निदेशक, बीमा कंपनियों के संचालक, कृषि तथा वाणिज्य मण्डल के निदेशक आदि बनकर अपनी पहचान बनाए हुए हैं। इसी वर्ग से उच्चकोटि के लेखक और साहित्यकार भी हुए जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की। ऐसे लेखकों में अभिमन्यु अनत, प्रह्लाद रामशरण, रामदेव धुरंधर, सोमदेव बखौरी, मुनीश्वरलाल चिंतामणि आदि प्रमुख हैं। ये सभी मॉरिशस में रहकर हिंदी भाषा और साहित्य के विकास के लिए प्रयत्नशील रहे हैं तथा अपने सदप्रयासों से मॉरिशसके हिंदी साहित्य को वैश्विक पहचान दिलाई।

तृतीय अध्याय 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष' है। इसे चार उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप अध्याय 'सामाजिक संघर्ष' है। अनत जी ने अपनी प्रखर प्रतिभा, कुशल आलोचकीय दृष्टि व सशक्त लेखनी के माध्यम से अपने युगसत्य को अपनी रचनाओं में उकेरा है। ब्रिटिश औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में सन् 1834 ई॰ में 'शर्तबन्द प्रथा' के तहत मॉरिशस आने वाले भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की गोरे शासकों के शासनकाल में विविधोंमुखी शोषण एवं उस शोषण से निजात पाने हेतु भारतीय मजदूरों द्वारा किए जाने वाले संघर्ष को अनत जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं- गोरे शासकों द्वारा भारतीय मजदूरों का शोषण, उनके साथ भेद-भावपरक व्यवहार, रंगभेद की समस्या, जाति-पाँत, ऊँच-नीच की समस्या, मालिक-मजदूर संघर्ष, कृषक जीवन की समस्याएँ, भारतीयों का बलात् धर्मांतरण, नशाखोरी, वेश्यावृत्ति, असफल-प्रेम की समस्या, सत्ता द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग का शोषण, कानून-व्यवस्था तथा पूँजीपतियों की साठ-गाँठ व मजदूरों का विद्रोही तेवर आदि को अनत जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से चित्रित किया है। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में व्याप्त समस्याओं को आप्रवासी भारतीय मजदूरों पर गोरे शासकों के अमानवीय अत्याचार, गोरे शासकों द्वारा भारतीय मजदूरों के साथ भेद-भावपरक व्यवहार, आप्रवासी भारतीयों द्वारा आप्रवासी भारतीयों का शोषण, कानून-व्यवस्था व पूँजीपतियों की मिलीभगत, आप्रवासी भारतीय मजदूरों का विद्रोही स्वर, गोरे मालिकों द्वारा मजदूरों के संगठन शक्ति को तोड़ना, मालिक-मजदूर संघर्ष, आप्रवासी भारतीय

मजदूरों का बलात् धर्मांतरण, आप्रवासी भारतीयों में जाति-पाँत, ऊँच-नीच की भावना, वेश्याजीवन की त्रासदी, गैर-कानूनी धन्धा/ नशीले पदार्थों का व्यवसाय, भारतीय मजदूरों को दलालों द्वारा दिए गए प्रलोभन आदि बिन्दुओं के माध्यम से विश्लेषित किया गया है। जिसकी सशक्त अभिव्यक्ति 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में हुई है।

'लाल पसीना' अनत जी का बहुचर्चित उपन्यास है। इसमें अनत जी ने भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण व संघर्ष के साथ-साथ गोरे शासकों की अमानवीयता, क्रूरता, बर्बरता व अन्याय का यथार्थपरक चित्रण किया है। मॉरिशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित इस उपन्यास में उन आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के जीवन संघर्ष की कहानी है जिन्हें चालाक फ्रांसीसी और ब्रिटिश उपनिवेशवादी सोना मिलने के सब्जबाग दिखाकर मॉरिशस ले गए थे। मॉरिशस में इन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ गोरे शासक तरह-तरह के अत्याचार करते थे। मजदूरों से कठोर-से-कठोर काम करवाकर भी न तो उन्हें भरपेट भोजन दिया जाता और न ही पानी। भूख-प्यास से बेहाल इन मजदूरों से खेतों में न सिर्फ पत्थरों की खुदाई व गन्ने की खेती करवाई जाती बल्कि इसके साथ ही बैलों के स्थान पर भारतीय मजदूरों से ही गन्ने से भरी गाड़ी भी खिंचवायी जाती थी। इतना ही नहीं यदि कभी कोई मजदूर किसी कारणवश खेत में देर से पहुँचता या बीमारी की वजह से अपने अन्य सहकर्मियों से काम में पीछे रह जाता तो उस सरदारों के कोड़े बरसने लगते तथा गालियों की बौछार शुरू हो जाती थी। यदि कभी कोई

मजदूर अपने साथ होने वाले अन्याय के बारे में सरदारों से सवाल करते तो उनको भी तरह-तरह से प्रताड़ित किया जाता। विद्रोही स्वभाव के मजदूरों को कभी नजरबंद कर दिया जाता तो कभी उन पर मालिकों के पालतू कुत्ते छोड़ दिये जाते या उन्हें पेड़ों से लटका दिया जाता। और कभी-कभी तो उनकी (गोरे शासकों की) निर्दयता इस कदर बढ़ जाती थी कि वे मजदूरों को मौत के घाट भी उतारने से नहीं चूकते थे। और मजदूरों में यह अफवाह फैला देते कि अमुक मजदूर ने आत्महत्या कर ली। इतना ही नहीं गोरे शासकों द्वारा कई स्तरों (रंग, आय, श्रम, जाति, लिंग, शिक्षा व स्वतन्त्रता आदि) पर भेद-भावपरक व्यवहार किया जाता था। श्वेतवर्णी शासकों के शासनकाल में भारतीय मजदूरों को कभी मनुष्य के रूप में देखा ही नहीं गया। उनकी (गोरे शासकों की) नजरों में भारतीय मजदूर काले-कलूटे, असभ्य, जंगली, जाहिल, गँवार आदि थे, जिन्हें न तो खाने-पहनने की तमीज है और न ही बात करने का ढंग है। भारतीय मजदूरों का रंग काला होने के कारण वे उन पर तरह-तरह की फब्तियाँ भी कसते थे और सदैव उनकी उपेक्षा करते रहते थे। कार्यस्थलों पर श्रम के आधार पर होने वाले अन्याय का उल्लेख करते हुए अनत जी लिखते हैं- "वहाँ के सभी अच्छे काम मालगासी करते थे। वहाँ जो भारतीय मजदूर थे, वे तो वहाँ हाड़-माँस के कल की तरह लगाए गए थे। कोल्हू के बैल और उनमें कोई अंतर था ही नहीं।-------सभी योग्यता होने पर भी भारतीय लोगों को कोई भी ऐसा काम नहीं दिया जाता जो बेहतर था और जिस पर गोरों और मालगासियों का एकाधिकार-सा था। सबसे अच्छे काम गोरों के लिए होते थे, कुछ बेहतर काम उनके लिए होते थे जो न तो गोरे थे और न ही भारतीय।

अपने आप को सांत्वना देने के लिए अगर भारतीयों के पास कुछ था तो वह यह कि काम, काम होता है। उसके लिए बदतर और बेहतर का प्रश्न ही क्यों?"[8]

'लाल पसीना' उपन्यास की ऐतिहासिकता तथा घटनाओं एवं पात्रों की यथार्थता के संबंध में अनत जी एक साक्षात्कार में डा॰ कमल किशोर गोयनका से कहते हैं- "लाल पसीना, उन छोटे लोगों का इतिहास है जिन्होंने बहुत बड़ा काम किया। इन्हीं लोगों ने सबसे पहले मानवीय अधिकारों और स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी। यह अभियान खेतों और बैठकाओं से ही शुरू हुआ। हिन्दी और भारतीय संस्कृति ने इस देश को सबसे अधिक राष्ट्रीय भावना दी है।------लाल पसीना के सभी तो नहीं, पर किसनसिंह, मदन, मीरा और विवेक ये और कुछ दूसरे भी प्रमुख पात्र मेरे अपने पुरुखों में से हैं जो कभी हाड़-माँस के थे।----उनसे सम्बद्ध घटनाएँ बड़ी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत की गयी हैं। किसनसिंह अगर मेरे दादा हैं तो मदन मेरे मामा।"[9] दूसरा उप अध्याय 'राजनीतिक संघर्ष' है। अनत जी ने अपने साहित्य के माध्यम से न सिर्फ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है बल्कि इसके साथ ही तत्कालीन राजनीतिक परिघटनाओं को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस 'उप-अध्याय' में मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की जागरूक राजनीतिक चेतना एवं अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए उनकी प्रतिबद्धता तथा उसके लिए किए गए उनके राजनीतिक संघर्ष का चित्रण किया गया है। इसमें आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को जागरूक करने वाली उन तमाम स्थितियों, परिस्थितियों व व्यक्तियों के योगदान को भी चित्रित किया गया है जिसके जरिए उनमें राजनीतिक

चेतना का विस्तार होता है, और जिनकी मदद से वे अँग्रेजी दासता से मॉरिशस को आजाद कराते हैं और मॉरिशस की विधानसभा में अपनी पैठ बनाते हैं तथा देश की शासन-व्यवस्था पर काबिज होते हैं।

अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के राजनीतिक संघर्ष को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। साथ ही स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक गतिविधियों, चुनावी सरगर्मियों, सत्तासीन मंत्रियों व नेताओं की वादाखिलाफी प्रवृत्ति, इस कदर चुनाव जीतने हेतु अपनाए जाने वाले विभिन्न राजनीतिक हथकण्डों- विपक्षी को चुनाव से पीछे हट जाने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन देना, धमकी देना, उस पर हमला करवाना, सभाओं में गुंडा-गर्दी व दंगा-फसाद करवाना, चारित्रिक लांछन लगाना, जनता से सहानुभूति प्राप्त करने हेतु स्वयं पर झूठा हमला करवाना, वोटों की खरीद-फरोख्त, प्रेस व कानून से साठ-गाँठ करना, पोलिंग बूथों पर कब्जा, विपक्षियों के मुख्य कार्यकर्ताओं व एजेन्टों को खरीद लेना व रातों-रात गायब करा देना आदि का यथार्थपरक अंकन किया है। इसके अतिरिक्त इनके उपन्यासों में चुनाव के पश्चात् मंत्रिमंडल में होने वाले विभिन्न राजनीतिक षडयंत्रों का भी चित्रण किया गया है।

स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक स्थिति एवं वहाँ की राजनीति पर भारतीयों की उपस्थिति पर प्रकाश डालते हुए मॉरिशस के प्रसिद्ध इतिहासकार प्रह्लाद रामशरण

लिखते हैं- "देश के संविधान के अनुसार मॉरिशस में 1921 और 1926 ई० में आम चुनाव आयोजित हुए थे। 1921 के आम चुनाव में भारतवंशियों के प्रथम बैरिस्टर रामखेलावन बुधन ने चुनाव लड़ा था। किन्तु पराजय के बाद राज्यपाल ने उन्हें मनोनीत करके सरकारी काउंसिल का सदस्य बना दिया था। इस देश के भारतवंशियों के लिए यह ऐतिहासिक घटना थी क्योंकि राज्यपाल के इस कदम से भारतवंशियों का प्रथम हिन्दू प्रतिनिधि सरकारी काउंसिल का सदस्य बना था। वास्तव में 1926 के आम चुनाव में भारतवंशियों के दो हिन्दू प्रतिनिधि देश के दो अलग-अलग चुनाव जिलों से निर्वाचित होकर सरकारी काउंसिल के सदस्य बन पाये थे। यह भारतवंशियों की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है।"[10] मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व तथा मॉरिशस में गाँधी जी के आगमन से पूर्व ही भारतीय गिरमिटिया मजदूर देश की राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगे थे। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक स्थिति एवं आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की जागृत राजनीतिक चेतना एवं उनके राजनीतिक संघर्ष का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। चुनावी सरगर्मी, विपक्षियों के दोषों का बखान करना/ चारित्रिक लांछन लगाना, विपक्षियों पर दंगा-फसाद व गुंडा-गर्दी करवाना, विपक्षी पार्टी के उम्मीदवारों की खरीद-फरोख्त, मतदान की आपाधापी, जीते हुए प्रत्याशी को अपदस्थ करने की साजिश, चुनाव जीतने के बाद नेताओं का अपने वायदों से मुकरना/ नेताओं की वादाखिलाफी प्रवृत्ति, राजनीति की ताकत व उसकी आवश्यकता, राजनेताओं

की महत्वाकाँक्षा आदि बिन्दुओं के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक स्थिति को विश्लेषित किया गया है।

तीसरा उप अध्याय 'आर्थिक संघर्ष' है। अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के आर्थिक संघर्ष को भी यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। अनत जी द्वारा रचित- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्थिक विपन्नता, आर्थिक विपन्नता से जूझते किसान-मजदूरों की दयनीय स्थिति, आर्थिक विपन्नता के विभिन्न कारणों एवं उसके दुष्परिणामों- शराब की लत, जुआ की लत, नशीले पदार्थों का सेवन व उसके धंधे में संलिप्तता, वेश्यावृत्ति, वेश्यागमन, चोरी, पारिवारिक कलह, बिखरते दाम्पत्य जीवन आदि की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के आर्थिक विपन्नता एवं तंगहाली जीवन का सजीव चित्रांकन अपने उपन्यासों में किया है, जब उन्हें कई-कई दिनों तक भूखा रहना पड़ता था और उस भूख को मिटाने के लिए उन्हें तमाम प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। - "खेतों की पहली फसल शुरू होने में अभी दो महीने से कम की अवधि नहीं शेष थी। कुएँ, खेत, बैठका, नदी, तट, हर जगह यही प्रश्न किया जाता रहा- ये दो महीने बाल-बच्चे क्या खाएँगे?------फरीद के साथ मदन उन घरों को देख आया था, जहाँ तीन दिन से मुट्ठी भर भात में गुजारा हो रहा था। हाँडी में बचे हुए अनाज को एकाध सप्ताह ले जाने के लिए और कोई दूसरा उपाय था ही

नहीं। जिन घरों ने इस परहेजको अपनाया था, वहाँ बच्चे भी थे। मदन को इसी बात की अधिक चिंता थी कि ये बच्चे अपने पेट को दबाये कैसे सो सकते थे।"[11] स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के आर्थिक संघर्ष को आर्थिक विपन्नता का चित्रण, मालिकों द्वारा मजदूरों के श्रम का शोषण, नशाखोरी से उत्पन्न आर्थिक विपन्नता, बेरोजगारी से उत्पन्न आर्थिक तंगी, प्राकृतिक आपदा से उत्पन्न आर्थिक विपन्नता, परिवार के मुखिया की असामयिक मृत्यु, आर्थिक असमानता, आम आदमी की जीवनाकाँक्षा आदि बिन्दुओं के माध्यम से उद्घाटित किया गया है।

चौथा उप अध्याय 'धार्मिक एवं सांस्कृतिक संघर्ष' है। प्रस्तुत उप अध्याय के अन्तर्गत अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था को दर्शाया गया है। अनत जी के विभिन्न उपन्यासों में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था एवं पराई भूमि में अपने धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु उनके द्वारा किए गए कठोर संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। भूख और अकाल से पीड़ित भारतीय मजदूर अपने घर, परिवार, गाँव व देश को छोड़कर सुखमय जीवन की तलाश में मॉरिशस आए थे। मॉरिशस आते समय इन मजदूरों ने रामायण, गीता, महाभारत, आल्हा, हनुमान चालीसा आदि धार्मिक, पौराणिक ग्रन्थों को अपने साथ थाती के रूप में सँजो लिया था। यही ग्रंथ जहाज यात्रा के दौरान, संकट के समय भारतीय मजदूरों का संबल बने। अपने जनों से बिछुड़ने के गम को भुलाने एवं स्वयं में नवीन चेतना का संचार करने के लिए वे लोग इनकी पंक्तियाँ गुनगुनाते। मॉरिशस में

गोरे शासकों द्वारा आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ तमाम प्रकार के भेद-भाव परक व्यवहार किए जाते तथा उनसे कठोर-से-कठोर श्रम करवाया जाता था। अत्यधिक मेहनत करवाने के बावजूद भी मजदूरों को न तो भरपेट भोजन दिया जाता और न ही क्षण भर का आराम। यद्यपि भारतीय मजदूरों को एग्रीमेंट के तहत मॉरिशस लाया गया था, लेकिन मॉरिशस में उनकी स्थिति गुलामों से भी बदतर थी। उनके साथ पशुवत् व्यवहार किया जाता था। उन्हें स्वतंत्र रूप से किसी भी प्रकार का काम करने की छूट नहीं थीं। यदि मजदूरों द्वारा गन्ने के खेतों में काम करते समय या अपनी थकान को मिटाने के उद्देश्य से रामायण, गीता, आल्हा आदि के छंदों को गाया जाता तो गोरे शासक व कोठी के सरदारों द्वारा उन मजदूरों पर कोड़े बरसाये जाते। इतना ही नहीं उनके धार्मिक ग्रन्थों को जला दिया जाता था तथा उनके देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को खंडित कर दिया जाता और उनका उपहास किया जाता। ब्रिटिश सत्ता के अधीन मॉरिशस में गोरों के शासनतंत्र में शोषित आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था एवं उसके संरक्षण हेतु किए गए संघर्ष को अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। अनत जी द्वारा रचित–'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व (सन् 1834 ई॰ से 1968 ई॰ तक) आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्ष एवं उसके प्रति उनके अटूट लगाव का चित्रण किया गया है। 'धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्ष' नामक 'उप-अध्याय' के अन्तर्गत स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में 'शर्तबंद प्रथा' के तहत मॉरिशस जाने वाले आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया

मजदूरों की अपने धर्म व संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा व प्रेम को दर्शाया गया है। साथ ही आप्रवासी भारतीयों द्वारा पराई भूमि में अपनी सभ्यता, संस्कृति व धार्मिक आस्था को जीवन्त बनाए रखने हेतु किए संघर्ष की भी सफल अभिव्यक्ति हुई है। साथ ही औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा मनाए जाने वाले विभिन्न रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार, परम्पराएँ, मत-मान्यताएँ, लोकविश्वास, अंधविश्वास, लोकगीत, साहित्यिक संघर्ष आदि का सफल चित्रांकन किया गया है। आप्रवासी भारतीय मजदूरों के जीवन में 'बैठका' के महत्व को भी दर्शाया गया है। क्योंकि 'बैठका' ही मजदूरों की सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक-सांस्कृतिक संस्था थी। इसके साथ ही आप्रवासी भारतीयों के देश छोड़ने के पश्चाताप व अतीत के प्रति मोह आदि भावों की भी सफल अभिव्यक्ति हुई है।

चतुर्थ अध्याय 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष' है। इसे चार उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में जहाँ एक ओर मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व (12 मार्च 1968 ई. से पूर्व) 'शर्तबन्द प्रथा' के अंतर्गत मॉरिशस आने वाले तथा गोरे शासकों के शोषण तंत्र में पिसने वाले आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण, धैर्य, साहस, संघर्ष, त्याग व बलिदान का चित्रण किया है, वहीं दूसरी ओर स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस (12 मार्च 1968 ई. के बाद) में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों व उनकी संततियों के विविधोंमुखी शोषण को भी दर्शाया है। स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त विभिन्न

समस्याओं- रंगभेद की समस्या, असफल प्रेम, वैवाहिक सम्बन्धों में जाति, संप्रदाय, शिक्षा, हैसियत का अंतर, अंतर्धर्मीय प्रेम-विवाह की समस्या, कलाकार व उसकी प्रतिभा की उपेक्षा, मालिक-मजदूर संघर्ष, मजदूरों में संगठन शक्ति का अभाव, उद्योगपतियों, मिल-मालिकों व पूँजीपतियों की दमनकारी मनोवृत्ति, कानून-व्यवस्था व न्याय-व्यवस्था का पूँजीपतियों से साठ-गाँठ, नौकरी व पदोन्नति में योग्यता के स्थान पर जातिवाद, भाई-भतीजावाद, घूसखोरी व चापलूसी प्रवृत्ति का बोलबाला, नवयुवकों का विद्रोही तेवर, भ्रष्ट राजनीति, चुनावी सरगर्मी, राजनीतिक हथकंडे, नवयुवकों का विदेशों की ओर पलायन, महँगाई, आर्थिक तंगी, बेरोजगारी, वेश्यावृत्ति व नशीले पदार्थों के अवैध धंधे, पारिवारिक विघटन, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, होटल संस्कृति, मूल्यहीनता, धर्मपरिवर्तन, वृद्धावस्था की समस्या आदि पर भी अपनी सशक्त लेखनी चलायी है। अनत जी ने 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'एक बीघा प्यार', 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'तपती दोपहरी', 'हड़ताल कल होगी', 'चुन-चुन चुनाव', 'अपनी ही तलाश', 'पर पगडंडी नहीं मरती', 'मार्कट्वेन का स्वर्ग', 'फैसला आपका', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'शब्दभंग', 'अचित्रित', 'चलती रहो अनुपमा', 'क्यों न फिर से' व 'मेरा निर्णय' आदि अपने उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त विविधोंमुखी समस्याओं का चित्रण किया है। इस अध्याय में उपर्युक्त वर्णित उपन्यासों के आलोक में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष को विवेचित किया गया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत अध्याय को चार उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय 'सामाजिक संघर्ष' में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं- रंगभेद

की समस्या, नौकरी व पदोन्नति में योग्यता के स्थान पर भाई-भतीजावाद, जातिवाद का बोलबाला, मालिक-मजदूर संघर्ष, नवयुवकों व मजदूरों का विद्रोही स्वर, कानून-व्यवस्था व पूँजीपतियों की मिलीभगत, असफल-प्रेम व अन्तर्जातीय व अंतर्धार्मीय विवाह की समस्या, वेश्याजीवन की त्रासदी, बलात धर्मांतरण की प्रक्रिया, कृषक जीवन की त्रासदी व समस्याएँ, सत्ता द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग का शोषण, आप्रवासी भारतीयों का आप्रवासी भारतीयों से संघर्ष, आप्रवासी भारतीयों का अन्य समुदाय के लोगों से संघर्ष आदि को विवेचित, विश्लेषित किया गया है। अनत जी द्वारा रचित विभिन्न उपन्यासों- 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'एक बीघा प्यार', 'तीसरे किनारे पर', 'तपती दोपहरी', 'हड़ताल कल होगी', 'अपनी ही तलाश', 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'अचित्रित' व 'मेरा निर्णय' आदि में उपर्युक्त वर्णित समस्याओं की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

दूसरे उप अध्याय 'राजनीतिक संघर्ष' में स्वातन्त्र्योत्तर मॉरिशस की अव्यवस्थित शासन प्रणाली, भ्रष्ट राजनीति, नेताओं व मंत्रियों की स्वार्थलोलुपता, जनसमस्याओं की उपेक्षा, नवयुवकों के विद्रोह व आंदोलन को दबाना, राजनीतिक गतिविधियों, चुनावी सरगर्मियों, विभिन्न राजनीतिक षडयंत्रों- चुनावी उम्मीदवारों द्वारा जनता से किए गए खोखलेवादे, चुनावी प्रक्रिया में जातिवाद को बढ़ावा देना, गुंडा-गर्दी, विपक्षी के दोषों का बखान करना/ चारित्रिक लांछन लगाना, जनता की सहानुभूति प्राप्त करना, वोटों की खरीद-फरोख्त, पोलिंग बूथ पर कब्जा करना, चुनावी उम्मीदवारों की प्रेस व कानून से साठ-गाँठ, जनता की दोगली मनोवृत्ति तथा चुनाव के पश्चात मंत्रिमंडल में होने वाली खींचातानी

आदि को विश्लेषित किया गया है। जिसकी सशक्त अभिव्यक्ति अनत जी के विभिन्न उपन्यासों- 'चुन-चुन-चुनाव', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'चलती रहो अनुपमा', 'आसमान अपना आँगन' व 'क्यों न फिर से' आदि में हुई है।

तीसरा उप-अध्याय 'आर्थिक संघर्ष' है जिसके अंतर्गत स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों की आर्थिक स्थिति का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। अनत जी द्वारा रचित 'और नदी बहती रही', 'जम गया सूरज', 'एक बीघा प्यार', 'तपती दोपहरी', 'चौथा प्राणी', 'शब्दभंग', 'लहरों की बेटी', 'चलती रहो अनुपमा' व 'मेरा निर्णय' शीर्षक उपन्यासों में क्रमश: मधुकर, लालमान, सोम, राजेन, बीणा, रोबीन, विदुला, अनुपमा व अमिता नामक पात्रों के माध्यम से आर्थिक तंगी से जूझते परिवारों का चित्रण किया गया है। 'जम गया सूरज' उपन्यास में अनत जी ने लालमन के माध्यम से आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्थिक तंगी का चित्रण किया है। आर्थिक विपन्नता की वजह से किसान-मजदूर अपने बच्चों का न तो उचित ढंग से पालन-पोषण कर पाते हैं और न ही उन्हें उनकी औपचारिक शिक्षा पूरी करा पाते हैं। आर्थिक विपन्नता की वजह से लालमन अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाता। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- “गाँव के कई लड़के अपनी पढ़ाई बीच में ही बंद कर चुके थे पर उन सभी के लिए तो ऐसा कर जाने की मजबूरी थी। उनमें एक भी ऐसा नहीं था जिन्होंने अपनी इच्छा से पढ़ाई छोड़ दी हो। सभी के लिए पैसे का अभाव ही सबसे बड़ा कारण था।“[12] अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ आर्थिक तंगी से जूझते किसानों, मजदूरों का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ-साथ

आर्थिक विपन्नता के विभिन्न कारणों- काम का अभाव, शिक्षित नवयुवकों की बेरोजगारी, नौकरी में योग्यता व वरिष्ठता के स्थान पर जातिवाद, भाई-भतीजावाद, घूँसखोरी व चापलूसी को महत्व देना, आदि पर भी प्रकाश डाला है। तथा आर्थिक तंगी की वजह से उत्पन्न मानसिक कुंठा, पारिवारिक कलह, आर्थिक असमानता, सामाजिक उपेक्षा आदि का भी यथार्थपरक चित्रण किया है। जो अनत जी की सूक्ष्म अवलोकन दृष्टि का परिचायक भी है। चौथे उप अध्याय 'धार्मिक व सांस्कृतिक संघर्ष' में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों की पराई भूमि में धार्मिक आस्था भाषा, साहित्य एवं कला के प्रति उनकी मोहग्रस्तता तथा उसके संरक्षण हेतु उनके द्वारा किए गए प्रयासों का सफल चित्रांकन किया गया है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों, विशेषकर 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'चौथा प्राणी', 'शेफाली', 'चुन-चुन-चुनाव', 'चलती रहो अनुपमा', 'लहरों की बेटी', 'आसमान अपना आँगन' व 'मेरा निर्णय' आदि में क्रमश: राधिका, सहदेवसिंह का परिवार, वीणा, शेफाली, धरती, अनुपमा, विदुला, शोभा व अमिता के माध्यम से उन आप्रवासी भारतीयों का चित्रण किया है जो किसी भी दशा में अपनी धार्मिक आस्था को डिगने नहीं देते बल्कि विपरीत परिस्थितियों में भी पूरी शिद्दत के साथ अपने इष्ट को याद करते हैं, उनकी पूजा-अर्चना, व्रत-उपवास, मान-मनौती आदि करते हैं। 'मेरा निर्णय' की अमिता इंग्लैंड में रहते हुए भी रामनवमी का त्यौहार मनाती है। ठाकुर सहदेवसिंह बस्ती छोड़कर शहर में बस जाता है। यद्यपि शहर के अधिकांश लोग पूजा-पाठ आदि में विश्वास नहीं करते लेकिन सहदेवसिंह की धार्मिक आस्था में कोई बदलाव नहीं आता। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- "शाम को सहदेवसिंह ने हनुमान जी के चौतरे के सामने पूरा घंटा बीटा

दिया था। उसकी पत्नी ने भी देवी-देवताओं की मनौतियाँ की थी। दिन भर अरुणा का उपवास था। गाँव छोड़कर शहर आ जाने पर बहुत से लोग गाँव के रस्म-रिवाजों को पीछे छोड़ आते हैं लेकिन सहदेवसिंह उन्हें साथ लाया था।"[13] अनत जी ने न सिर्फ आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था का निरूपण किया है बल्कि इसके साथ ही उनके द्वारा मनाए जाने विभिन्न पर्वों- होली, दीपावली, महाशिवरात्रि, दुर्गापूजा, रामनवमी, दशहरा, ईद, मोहर्रम, क्रिसमस, नववर्ष आदि का भी चित्रण किया है साथ ही उनके रीति-रिवाज, लोकविश्वास व मान्यताएँ, नवजात शिशु के जन्म संबंधी शुभ-अशुभ का विचार, पुनर्जन्म संबंधी मत, मृत आत्माओं अपने शुभचिंतकों को आगाह करना, भविष्यवाणी, किंवदंतियाँ, अंधविश्वास आदि बिन्दुओं पर भी प्रकाश डाला है। अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के साहित्यिक संघर्ष को भी वाणी प्रदान की है। जिसके अंतर्गत हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति लगाव, मानव जीवन के विकास में भाषा व साहित्य की उपयोगिता, पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का प्रभाव/ विसंस्कृतिकरण का प्रभाव आदि बिन्दुओं को विवेचित विश्लेषित किया गया है।

पंचम अध्याय 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्री' है। इसे तीन उप-अध्याय में विभक्त किया गया है। इसके अंतर्गत ब्रिटिश औपनिवेशिक शासनकाल एवं स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के विविधोंमुखी शोषण एवं उनसे निजात पाने हेतु उनके द्वारा किए गए विविध प्रकार के जीवनसंघर्ष को विश्लेषित किया गया है। प्रथम अध्याय 'पितृसत्तात्मकता और स्त्री' है।

जिसके अंतर्गत स्वतन्त्रता-पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में स्त्रियों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों में उनकी स्थिति का मूल्याँकन किया गया है साथ ही पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्रियों पर ढ़ाये जाने वाले विविधोंमुखी जुल्मों पर भी प्रकाश डाला गया है। जिसकी सशक्त अभिव्यक्ति अनत जी के विभिन्न उपन्यासों में हुई है। अनत जी द्वारा रचित 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व (12 मार्च 1968 से पूर्व) मॉरिशसीय समाज में गोरे शासकों के शोषणतंत्र में पिसती स्त्रियों का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। 'लाल पसीना' की- जुबेदा, भगवतिया, तांगेची, कोसला, 'गाँधी जी बोले थे' की- ज़ीनत, सीता, 'और पसीना बहता रहा' की- प्रभा, अंजलि आदि ऐसी नारी चरित्र हैं जो उन तमाम स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिन्हें एक तरफ गोरों शासकों की अनेक यातनाओं से गुजरना पड़ता है तो दूसरी तरफ अपने ही घर में पुरुष वर्ग द्वारा प्रताड़ित की जाती हैं। अनत जी द्वारा रचित 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'चौथा प्राणी', 'शेफाली', 'अपनी-अपनी सीमा', 'फैसला आपका', 'घर लौट चलो वैशाली', 'चलती रहो अनुपमा', 'आसमान अपना आँगन', 'क्यों न फिर से' व 'मेरा निर्णय' आदि में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में स्त्रियों के संघर्षरत जीवन का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। दूसरे उप अध्याय 'पारिवारिक एवं आर्थिक जीवन' में मॉरिशस के समाज में अप्रवासी भारतीय स्त्रियों के विविध रूपों- माँ, बहन, बेटी, पत्नी आदि के रूप में उनकी पारिवारिक जिम्मेदारी एवं गतिविधियों का सजीव चित्रण किया गया है। इसके साथ ही परिवार का

भरण पोषण करने हेतु उनके द्वारा किए गए और अर्थोपार्जन के प्रयासों को भी विवेचित किया गया है। अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में दोयम दर्जे का प्राणी मानी जाने वाली स्त्रियाँ न सिर्फ अपने को घर के कामकाज तक सीमित रखती हैं बल्कि इसके साथ ही वे विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करके अपने घर के मुखिया की आर्थिक मदद भी करती हैं। 'चौथा प्राणी' उपन्यास की वीणा, 'शेफाली' उपन्यास की नायिका शेफाली, 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास की नेहा, 'अचित्रित' की वानी, 'लहरों की बेटी' की विदुला, 'चलती रहो अनुपमा' की अनुपमा, 'अपना मन उपवन' की नमिता, और 'मेरा निर्णय' उपन्यास की अमिता आदि ऐसी नारी पात्र हैं जो अपने व्यक्तिगत हित का परित्याग करके अपने परिजनों के निमित्त अर्थोपार्जन के कार्य में संलग्न रहती हैं।

तीसरे उप अध्याय 'नारी मुक्ति की चेतना' के अंतर्गत उन स्त्रियों का वर्णन किया गया है जो आधुनिक चेतना से संपन्न स्वतंत्र विचारों वाली तथा अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूक रहती हैं। साथ ही पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था की उन सड़ी-गली मान्यताओं, रीति-रिवाजों, परंपराओं, नियमों आदि का उल्लंघन करती है जिनकी वजह से उनके आशाओं - आकांक्षाओं एवं भावों-विचारों तथा अधिकारों का हनन होता है। 'आंदोलन' उपन्यास की रमावती, 'तीसरी किनारे पर' की मारीज, 'चुन-चुन चुनाव' की स्वस्ति, 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' की नेहा, 'और पसीना बहता रहा' की प्रभा, 'लहरों की बेटी' की दुलारी, 'घर लौट चलो वैशाली' की वैशाली, 'आसमान अपना आंगन' की नंदिनी, शोभा

और अनुराधा, 'अस्ति-अस्तु' की दिव्या, 'क्यों न फिर से' की महिमा, और 'मेरा निर्णय' की अमिता आदि ऐसी नारी पात्र हैं जो न सिर्फ पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं, रूढ़ियों एवं परंपराओं का विरोध करती हैं जिनसे स्त्रियों की इच्छा-आकांक्षाओं, भावों और विचारों का हनन होता है और जिनसे उनकी स्वतंत्रता में बाधा उत्पन्न होती है। ये स्त्रियाँ पुरुषों की अनुगामिनी मात्र नहीं बनी रहना चाहती हैं। ये तो पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की ख्वाहिश रखती हैं। बल्कि कुछ मामले में तो उनसे एक कदम आगे रहने की ख्वाहिश रखती हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत मॉरिशस के हिंदी भाषा के सबसे बड़े रचनाकार हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी, संवेदनशील ह्रदय और पैनी दृष्टि से संपन्न लेखक हैं। अनत जी ने अपनी रचनाओं में मॉरिशस के समय, समाज, इतिहास और उसके ताप का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने विविध विधाओं में साहित्य सर्जन करके अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया है। उन्होंने उत्तम कोटि का साहित्य रच कर हिंदी भाषा व साहित्य को वैश्विक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। उन्होंने वस्तु और शिल्प दोनों ही दृष्टि से मॉरिशस के हिंदी कथा साहित्य को नवीनता प्रदान कर हिंदी साहित्य के इतिहास को समृद्ध करने में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह किया।

संदर्भ ग्रंथ-सूची:

1. डॉ. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत: एक बातचीत, पृ- 28

2. वही, पृ- 8

3. वही, पृ- 19

4. वही, पृ- 40

5. वही, पृ- 45

6. वही, पृ- 3

7. वही, पृ- 15

8. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ- 101

9. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत: एक बातचीत, पृ- 81-82

10. प्रह्लाद रामशरण, गाँधी जी बोले थे: छद्म अवधारणाओं का आलेख, पृष्ठ- 8

11. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ- 315-316

12. वही, जम गया सूरज, पृ- 68

13. वही, तीसरे किनारे पर, पृ- 174

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

आधार ग्रन्थ:

अभिमन्यु अनत, अचित्रित, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990

अभिमन्यु अनत, अपनी-अपनी सीमा, राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली, 1983

अभिमन्यु अनत, अपनी ही तलाश, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982

अभिमन्यु अनत, अपना मन उपवन, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

अभिमन्यु अनत, अस्ति-अस्तु, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2003

अभिमन्यु अनत, आंदोलन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1971

अभिमन्यु अनत, आसमान अपना आँगन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000

अभिमन्यु अनत, एक उम्मीद और, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003

अभिमन्यु अनत, एक बीघा प्यार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1972

अभिमन्यु अनत, और नदी बहती रही, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1970

अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993

अभिमन्यु अनत, कुहासे का दायरा, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1978

अभिमन्यु अनत, क्यों न फिर से, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

अभिमन्यु अनत, गाँधी जी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984

अभिमन्यु अनत, घर लौट चलो वैशाली, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995

अभिमन्यु अनत, चलती रहो अनुपमा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998

अभिमन्यु अनत, चुन-चुन-चुनाव, अक्षय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001

अभिमन्यु अनत, चौथा प्राणी, ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977

अभिमन्यु अनत, जम गया सूरज, सूर्या प्रकाशन, राजस्थान, 1973

अभिमन्यु अनत, तपती दोपहरी, सरस्वती विहार प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977

अभिमन्यु अनत, तीसरे किनारे पर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1976

अभिमन्यु अनत, पर पगडंडी नहीं मरती, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1983

अभिमन्यु अनत, फैसला आपका, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986

अभिमन्यु अनत, मार्क ट्वेन का स्वर्ग, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986

अभिमन्यु अनत, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987

अभिमन्यु अनत, मेरा निर्णय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2010

अभिमन्यु अनत, लहरों की बेटी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995

अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977

अभिमन्यु अनत, शब्दभंग, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986

अभिमन्यु अनत, शेफाली, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1979

अभिमन्यु अनत, हड़ताल कल होगी, हिन्दी पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, 1983

अभिमन्यु अनत, हम प्रवासी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

सहायक ग्रन्थ:

अजित कुमार राय, गिरमिटिया मजदूरों का प्रवासन, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2014

अनुपमा तिवारी, प्रवासी हिन्दी साहित्य: बदलते तेवर, माया प्रकाशन, कानपुर

अभिमन्यु अनत, अब कल आएगा यमराज, ज्ञान गंगा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

अभिमन्यु अनत, अभिमन्यु अनत की आरंभिक कहानियाँ, डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2002

अभिमन्यु अनत, इंसान और मशीन, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976

अभिमन्यु अनत, एक थाली समन्दर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988

अभिमन्यु अनत, कैक्टस के दाँत, ज्ञान भारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982

अभिमन्यु अनत, खामोशी के चीत्कार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976

अभिमन्यु अनत, जन आंदोलन के प्रणेता: प्रो॰ वासुदेव विष्णुदयाल, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, 1987

अभिमन्यु अनत, देख कबीरा हाँसी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1995

अभिमन्यु अनत, नया आयाम, डायमंड बुक्स, नई दिल्ली, 2007

अभिमन्यु अनत, बवंडर बाहर-भीतर, ज्ञानगंगा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

अभिमन्यु अनत, बसंत चयनिका, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, 1993

अभिमन्यु अनत, मॉरिशस के एकाँकी, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, 1991

अभिमन्यु अनत, मॉरिशस के नौ कवि, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, 1988

अभिमन्यु अनत, मॉरिशस की हिन्दी कविता, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, 1975

अभिमन्यु अनत, मॉरिशस की हिन्दी कहानी, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, 1976

अभिमन्यु अनत, मॉरिशस की हिन्दी कहानियाँ, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, 1987

अभिमन्यु अनत, रोक दो कान्हा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986

अभिमन्यु अनत, वह बीच का आदमी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1981

अभिमन्यु अनत, विरोध, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1977

अर्जुन चव्हाण, मॉरिशस: एक सांस्कृतिक यात्रा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

आत्माराम, मोरिशस का इतिहास, आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1998

कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत: एक बातचीत, ज्ञानभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985

कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य-यात्रा, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019

कमल किशोर गोयनका, मॉरिशस के हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत: एक बातचीत, ईशा ज्ञानदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017

कमल किशोर गोयनका, मॉरिशस की हिन्दी कहानियाँ, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2014

कमल किशोर गोयनका, हिन्दी प्रवासी साहित्य, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2014

गोपालराय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005

जयनारायण राय, मॉरिशस में हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास, दिल्ली, 1970

जनार्दन कालीचरण, अभिमन्यु अनत का उपन्यास जगत: एक समीक्षा, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2001

धर्मपाल, प्रवासी, इंप्रैशन बुक्स, नई दिल्ली, 2016

नीना पाल, कुछ गाँव-गाँव कुछ शहर-शहर, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2014

नीना पाल, शराफत विरासत में नहीं मिलती, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2014

पुष्पिता अवस्थी, छिन्नमूल, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

पुष्पिता अवस्थी, भारतवंशी: भाषा एवं संस्कृति, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

प्रदीप श्रीधर, प्रवासी हिन्दी साहित्य: अवधारणा एवं चिंतन, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2018

प्रदीप श्रीधर, प्रवासी हिन्दी साहित्य: दशा एवं दिशा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

प्रह्लाद रामशरण, गाँधी जी बोले थे: छद्म अवधारणाओं का आलेख, आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2017

प्रह्लाद रामशरण, भारतीय वाङ्मय में मॉरिशस की संस्कृति, आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1964

प्रह्लाद रामशरण, मॉरिशस का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

प्रह्लाद रामशरण, लहरों की बेटी: एक अनुशीलन, आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2017

मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014

रमा, प्रवासी हिन्दी साहित्य: विविध आयाम, साहित्य संचय, नई दिल्ली, 2017

रामदेव धुरंधर, ढलते सूरज की रोशनी, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, 2019

लता, मॉरिशस का हिन्दी साहित्य, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1992

विनोदबाला अरुण, मॉरिशस की हिन्दी कथा-यात्रा, विद्या विहार, नई दिल्ली, 1997

श्यामधर तिवारी, अभिमन्यु अनत: व्यक्तित्व और कृतित्व, अभिनव प्रकाशन, आगरा, 1984

श्यामधर तिवारी, मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, विनसर पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 1997

सतीशचंद्र अग्रवाल, मॉरिशसीय हिन्दी भाषा और साहित्य, अमर प्रकाशन, मथुरा, 2007

सुरेन्द्र गंभीर, प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2017

हेमराज निर्मम, मॉरिशस के हिन्दी उपन्यासों का मूल्यॉंकन, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1992

कोश:

मानक हिन्दी कोश, (सं॰) रामचन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1978

वृहत हिन्दी कोश, (सं॰) मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 2013

संस्कृत हिन्दी कोश, (सं॰) वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, 1989

हिन्दी साहित्य कोश, (भाग-1, 2), (सं॰) धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, 1976

पत्रिकाएँ:

आजकल (प्रवासी साहित्य विशेषांक), संपादक-फरहत परवीन, दिल्ली, जनवरी 2016

आलोचना, संपादक-अपूर्वानन्द, प्रधान संपादक-नामवर सिंह, दिल्ली, जनवरी-मार्च 2012

गगनांचल (दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक), संपादक-अशोक चक्रधर, दिल्ली, जुलाई-अक्टूबर 2015

चक्रवाक (अभिमन्यु अनत विशेषांक), संपादक-निशांत केतु, दिल्ली, सयुक्तांक: 36-38, अप्रैल 2016 - दिसंबर 2016

प्रेरणा (अभिमन्यु अनत विशेषांक), संपादक-अरुण तिवारी, भोपाल, अप्रैल-जून 2013

बहुवचन (प्रवासी साहित्य विशेषांक), संपादक-अशोक मिश्रा, वर्धा, जनवरी-मार्च 2018

स्मारिका (दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक), सम्पादक-मनोहर पुरी, दिल्ली, 10-12 सितंबर 2015

समकालीन भारतीय साहित्य (अभिमन्यु अनत विशेषांक), संपादक-ब्रजेन्द्र कुमार त्रिपाठी, दिल्ली, जनवरी-फरवरी 2014

वेबसाइट:

https://www.wikipedia.com

www.hindisamay.com

https://www.shodhganga.inflibnet.ac.in

www.pravasiduniya.com

अनुसंधित्सु का जीवनवृत्त

1. नाम : आराधना शुक्ला

2. पिता का नाम : स्व. श्री जागेश्वर प्रसाद शुक्ल

3. माताका नाम : श्रीमती शकुन्तला शुक्ल

4. पता : बालकमऊ, कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश – 212 201

5. जन्मतिथि : 05.07.1992

6. शैक्षणिक योग्यता : a) HSLC (2006) – 1st Div.
b) HSSLC (2008) – 1st Div.
c) B.A. (2011) – 1st Div.
d) B.Ed. (2012) – 1st Div.
e) M.A. Hindi (2014) – 1st Div.
f) UGC-JRF (June, 2014)

7. मोबाइल : 82599 99394

8. ईमेल : shukla.aradhana2015@gmail.com

9. भाषा : हिंदी, अँग्रेजी, भोजपुरी

10. शोध प्रकाशन : 08

SN	Title	Journal	Vol (No.)	Year	ISSN	Page
1	'नौकर की कमीज' में निम्न मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण (आराधना शुक्ला & प्रो. संजय कुमार)	Mizoram University Journal of Humanities & Social Sciences (Refereed)	II (2)	2016	2395-7352	220-234
2	लाल पसीना: भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की संघर्ष गाथा (आराधना शुक्ला & प्रो. संजय कुमार)	Mizoram University Journal of Humanities & Social Sciences (Refereed)	III (2)	2017	2395-7352	152-168

SN	Title	Journal	Vol (No.)	Year	ISSN	Page
3	अभिमन्यु अनत और उनका कहानी संग्रह 'ख़ामोशी के चीत्कार' (आराधना शुक्ला)	World Translation, UGC SN. 0529, Journal No.- 48773	VI (2,3,4)	2016-2017	2278-0408	83-88
4	'दिन हमारे नहीं' कहानी में मॉरिशस की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति (आराधना शुक्ला)	International Literary Quest, UGC Serial No. 4389, Journal No.- 48910	VI (2)	2017	2319-7137	209-214
5	मालवा की लोकनाट्य शैली 'माच': अर्थ, व्युत्पत्ति और विशेषता (आराधना शुक्ला)		VII (3)	2018		174-179
6	किन्नर समाज और तीसरी ताली (आराधना शुक्ला & प्रो. संजय कुमार)	Mizoram University Journal of Humanities & Social Sciences (Refereed)	IV (2)	2018	2395-7352	178-188
7	रूपतिल्लीकी कथा: मेघालय की खासी जनजाति की संस्कृति, समाज एवं इतिहास की एक झलक (आराधना शुक्ला & प्रो. संजय कुमार)	Arun Prabha (RGU, Itanagar); UGC N.-40874	XI-XII	2018	2349-6444	85-91
8	अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में राजनीतिक गतिविधियों का यथार्थ चित्रण: 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' के सन्दर्भ में (आराधना शुक्ला & प्रो. संजय कुमार)	Mizoram University Journal of Humanities & Social Sciences (Refereed)	V (1)	2019	2395-7352	182-195

Aradhana Shukla

(आराधना शुक्ला)

अनुसंधित्सु का विवरण

नाम	:	आराधना शुक्ला
शिक्षा	:	पीएच.डी.
विभाग	:	हिंदी
शोध प्रबंध का शीर्षक	:	**अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष**
प्रवेश शुल्क के भुगतान की तिथि	:	04.08.2015
शोध प्रस्ताव की संस्तुति	:	
1) विभागीय शोध समिति की तिथि	:	11.03.2016
2) बी.ओ.एस. की तिथि	:	13.04.2016
3) स्कूल बोर्ड की तिथि	:	19.04.2016
मिज़ोरम विश्वविद्यालय पंजीयन संख्या	:	1501771
पीएच.डी. पंजीयन संख्या	:	MZU/Ph.D./861 of 19.04.2016

(प्रो. सुशील कुमार शर्मा)

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आईजोल

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष

ABHIMANYU ANAT KE UPANYASON MEIN MAURITIUS KE AAPRAVASI BHARATIYON KA JEEVAN SANGHARSH

[मिजोरम विश्वविद्यालय, आईजोल के हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत **शोध प्रबंध का सारांश (Abstract)**]

आराधना शुक्ला

ARADHANA SHUKLA

MZU Regd. No. 1501771

Ph.D. Regd. No. MZU/Ph.D./861 of 19.04.2016

हिंदी विभाग

शिक्षा एवं मानविकी संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF EDUCATION AND HUMANITIES

अगस्त, 2021

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष

ABHIMANYU ANAT KE UPANYASON MEIN MAURITIUS KE AAPRAVASI BHARATIYON KA JEEVAN SANGHARSH

प्रस्तुतकर्ता

आराधना शुक्ला

हिंदी विभाग

Aradhana Shukla

Department of Hindi

शोध-निर्देशक

प्रो. संजय कुमार

हिंदी विभाग

Prof. Sanjay Kumar

Department of Hindi

मिजोरम विश्वविद्यालय, आईजोल के शिक्षा एवं मानविकी संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) की उपाधि के लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत **शोध प्रबंध का सारांश (Abstract)]**

Submitted in partial fulfilment of the requirement of the degree of Doctorate of Philosophy in Hindi of Mizoram University, Aizawl.

शोध-सारांश

मॉरिशस में रहकर भी हिन्दी भाषा व साहित्य के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहने वाले लेखकों में अभिमन्यु अनत का नाम सबसे ऊपर रहा है। मॉरिशस में जन्मे हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार अभिमन्यु अनत ने मॉरिशस के साथ-साथ भारत के हिंदी पाठकों में भी खासी लोकप्रियता हासिल की है। अभिमन्यु अनत सर्वाधिक चर्चित भारतेतर साहित्यकार हैं जो मॉरिशस में रहते हुए भी हिंदी भाषा व साहित्य के विकास के लिए सदैव चिंतित और प्रयत्नशील रहे हैं और हिंदी भाषा में अपना सर्वाधिक लेखन किया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबंध को 5 अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय 'अभिमन्यु अनत: व्यक्तित्व और कृतित्व' है। इसे दो उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप अध्याय 'अभिमन्यु अनत: व्यक्तित्व' में अभिमन्यु अनत का जन्म, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा, पारिवारिक व आर्थिक स्थिति, व्यवसाय, पुरस्कार, सम्मान आदि का तथ्यात्मक वर्णन किया गया। साथ ही उन तमाम स्थितियों,घटनाओं व व्यक्तियों का भी उल्लेख किया गया है जिनसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनंत जी का जीवन प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त अनत जी के लेखन को प्रभावित करने वाले विभिन्न व्यक्तियों, साहित्यकारों, मनीषियों, चिंतकों व आंदोलनों का भी उल्लेख किया गया है। साथ ही अनत जी के साहित्यिक मानस के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली मान्यताओं एवं विचारधाराओं पर भी प्रकाश डाला गया है। दूसरा उप अध्याय

‘अभिमन्यु अनत: कृतित्व’ है, इसमें अनंत जी द्वारा विविध विधाओं यथा- कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, संस्मरण, निबंध, जीवनी, यात्रा साहित्य, संकलन-संपादन आदि में रचित रचनाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त 1937 ई॰ को मॉरिशस के उत्तर प्रांत के त्रिओले नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम पतिसिंह व माता का नाम सुभागो देवी था। अनत जी के पूर्वज बिहार के आरा जिले से मॉरिशस पहुँचे थे। मॉरिशस में अपने पूर्वजों के आगमन और उनके साथ गोरों द्वारा किए गए छल-कपट और दुर्व्यवहार के बारे में अनत जी बताते हैं –“मेरे दादा जी गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस लाये गये थे। उन्हें “कुली” कहा जाता था। उस समय मॉरिशस को फ्रांसीसियों से अंग्रेजों ने जीत लिया था, लेकिन देश में फ्रांसीसियों का प्रभुत्व नहीं मिटा था। उन्हीं फ्रांसीसियों की कोठी में काम करने के लिए भारतीय मजदूर लाये गये थे, क्योंकि मडागास्कर से आए हुए दास, दास-प्रथा की समाप्ति के कारण, ईख के खेतों में काम करने से इनकार कर चुके थे। जिन शर्तों और परिस्थितियों में भारतीय मजदूरों को मॉरिशस में जीना पड़ा वे हृदयविदारक हैं। ‘लाल पसीना’ उसी व्यथा, उसी इतिहास का उपन्यास है। लोगों पर चाबुकों की बौछार होती थी। सप्ताह भर के काम के लिए बारह आने और दो डिबिया चावल-दाल मिलते थे। अपनी संस्कृति से उन्हें हटाने की कोशिश हर बार की जाती थी। ‘रामायण’ और हिन्दी पढ़ना मना था। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने पर थोड़ी-बहुत इज्जत मिल जाती थी और खेतों से हटकर दफ्तरों में नौकरी मिल पाती थी। एक बहुत ही लंबी अवधि के बाद

भारतीय मजदूर अपने सिर उठाने में सफल हुए थे। इससे पहले खेतों में काम करते हुए कमर सीधी करने का मतलब था-गोरे मालिकों की गालियों की बौछार और कोड़ों की मार। मॉरिशस में मेरे परिवार के साथ वही सब कुछ हुआ जो अन्य हजारों मजदूरों के साथ हुआ। कपड़े रोटी की मोहताजी और खून-पसीना एक करके गोरे-मालिकों की तिजोरियाँ भरने की विवशता उनके सामने थी। चोरी-चुपके हिन्दी पढ़ते-पढ़ाते अपनी संस्कृति को जीवित रखे आ रहे थे। उन अत्याचारों को मैंने देखा तो नहीं था, लेकिन उनके परिणामों को भुगता जरूर। उसी के फलस्वरूप गरीबी को भोगते हुए। उस शोषण को मानसिक स्तर पर हर वक्त जीता रहा। उसे जीकर ही ऐतिहासिक यातनाओं की प्रतिक्रियास्वरूप लेखक बना।"[1] अनत जी का बचपन अत्यंत गरीबी में बीता। गरीबी के कारण अनत जी अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाए। उनकी स्कूली शिक्षा मात्र तीसरी कक्षा तक ही हो पाई। इस संदर्भ में वे एक साक्षात्कार में डा. कमल किशोर गोयनका से कहते हैं- "इस जन्म में तो पढ़ने और प्रमाणपत्र हासिल करने का मुझे अवसर ही नहीं मिला। यह बात एकदम सही है कि गलियों में मेरी पढ़ाई हुई। आम आदमी मेरे अपने विश्वविद्यालय के अध्यापक रहे और अपने देश की तत्कालीन स्थितियों और परिस्थितियों ने मेरे भीतर के रचनाकार को जन्म दिया।"[2]

अनत जी का बचपन अभावों में बीता था, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें औपचारिक शिक्षा से वंचित रहना पड़ा। अपनी पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु अनत जी को विभिन्न प्रकार के व्यवसाय की ओर उन्मुख होना पड़ा। यद्यपि वे स्वभावत: एक लेखक थे,

बावजूद उन्हें खेतों में मजदूरी करनी पड़ी तथा कुछ दिनों तक बस कंडक्टर का भी काम करना पड़ा। 18 वर्षों तक उन्होंने मॉरिशस में हिन्दी अध्यापन का कार्य किया तथा तीन वर्षों तक युवा मंत्रालय मॉरिशस में नाट्य-कला विभाग में नाट्य-शिक्षक के रूप में कार्य किया। उन्होंने न केवल नाट्य शिक्षक का काम किया बल्कि इसके साथ ही नाट्य-लेखन, सम्पादन व नाट्य मंचन व निर्देशन का भी दायित्व निभाया। इसके उपरांत दो वर्ष के लिए महात्मा गाँधी संस्थान, मॉरिशस में हिन्दी शिक्षक का पदभार ग्रहण किया तथा मॉरिशस में भारतीय भाषा-विभाग एवं सर्जनात्मक लेखन तथा प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष के रूप में 24 वर्षों तक कार्य किया। वे कई वर्षों तक संस्थान की हिन्दी पत्रिका ‘बसंत’ एवं बाल-पत्रिका ‘रिमझिम’ के भी संपादक रहे। इसके बाद उन्होंने मॉरिशस स्थित ‘रवीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान’ के निदेशक का पदभार ग्रहण किया। 4 जून 2018 को अनंत जी का देहावसान हुआ।

अभिमन्यु अनत को भारत के विभिन्न संस्थाओं द्वारा उनके साहित्यिक योगदान हेतु साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित किया गया है। इसके अलावा उन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली; राजीव गाँधी स्मृति परिषद; के. के. बिड़ला फाउंडेशन, नई दिल्ली; भारत भवन, भोपाल; केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा; महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा आदि द्वारा भी सम्मानित किया गया एवं साहित्य अकादमी द्वारा 'मानद महत्तर सदस्यता' भी प्रदान की गई।

'मॉरिशस के प्रेमचंद' कहे जाने वाले एवं हिन्दी भाषा को विदेशी भूमि में पुष्पित एवं पल्लवित करने वाले आप्रवासी साहित्यकार अभिमन्यु अनत को साहित्यिक क्षेत्र में विभिन्न संघर्षों का सामना करना पड़ा, विशेषकर सत्ता के कोपभाजन का शिकार होना पड़ा। जिस प्रकार भारत में प्रेमचंद की कुछ रचनाओं को भारतीय सरकार ने जब्त कराकर उन्हें आग के हवाले कर दिया था। ठीक उसी प्रकार मॉरिशस में अनत जी की कुछ रचनाओं को मॉरिशसीय सरकार ने जब्त कराकर उन्हें आग के हवाले कर दिया था क्योंकि सरकार को उन रचनाओं में देशद्रोह की गंध महसूस हो रही थी। सरकार यह नहीं चाहती कि उसके काले कारनामों को जनता के सामने उजागर किया जाए। इसीलिए वह उनकी रचनाओं को जलाने का आदेश दे देती है तथा रचनाकार पर देशद्रोही का झूठे आरोप मढ़ देती है। अपने साहित्यिक संघर्ष एवं अपनी रचनाओं के प्रति सरकार की उपेक्षापूर्ण नीति का वर्णन करते हुए अनत जी कहते हैं- "अभिव्यक्ति का संकट मुझे कई बार झेलना पड़ा है। यहाँ तक कि मेरे एक कविता-संग्रह के कारण मुझे देशद्रोही का खिताब भी मिला। मेरा एक नाटक 'कोप-भवन' एक ही प्रदर्शन के बाद खतरनाक घोषित कर दिया गया और टेलीविज़न कार्यक्रम में तय होकर भी प्रसारित नहीं हो सका। 'वसंत' पत्रिका के एक अंक की सभी प्रतियाँ जला दी गयी थीं, क्योंकि उसमें मेरे संपादकीय को व्यवस्था पचा नहीं पा रही थी। टेलीविज़न पर मेरा 40 मिनट का पाक्षिक साहित्यिक कार्यक्रम चलता था। उसे भी आपत्तिजनक कहकर रोक दिया गया, जबकि कलात्मक स्तर पर कुछ ही दिन पहले विभाग का निदेशक उसे स्थानीय टेलीविज़न का सबसे बेहतरीन कार्यक्रम मान चुका था। व्यवस्था के भीतर रहकर भी मैंने कभी अपनी अभिव्यक्ति को गिरवी नहीं रखा। अपने जलाए गए

संपादकीय को 'धर्मयुग' में छपवाकर ही रहा। काफी शोर हुआ, पर मैंने अपनी लेखकीय स्वतन्त्रता को कभी नीलाम नहीं किया।... मेरे एक नाटक 'मरिशा गवाही देना' के प्रसारण के बाद मुझे टेलीविज़न से हटा दिया गया। मेरी एक लघुकथा 'एकलव्य' को 'वसंत' से उड़ा दिया गया।"[3]

कोई भी सृजनशील साहित्यकार बिना किसी उद्देश्य के साहित्य-सृजन नहीं करता। अनत जी अपने लेखन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं- "मैंने अपनी सभी रचनाओं- कविता, कहानी, नाटक, लेख, उपन्यास आदि में यही चाहा है कि आदमी और आदमी के बीच संवाद हो सके, रिश्ते बन सकें। चाहे वह मजदूर और मालिक के बीच का हो, राजनीतिज्ञ और अवाम के हो, ग्राहक और बनिया के हो, गुरु और शिष्य के हो, पति और पत्नी के हो, वेश्या और समाज के हो... बस सभी के बीच मानव-मूल्यों के आधार पर सही रिश्ता बन सके।"[4] अनत जी साहित्य के क्षेत्र में स्वांत: सुखाय की भावना से नहीं प्रवृत्त होते बल्कि बहुजन हिताय की भावना से वे साहित्य-सृजन में प्रवेश करते हैं। साहित्य के क्षेत्र में वे अपने को एक बौद्ध यात्री मानते हैं, जो बहुजन हिताय की भावना से आगे की ओर बढ़े जा रहे हैं।

अनत जी साहित्य की उपयोगिता के संबंध में अपनी राय व्यक्त करते हुए कहते हैं- "साहित्य को मैं लेखक की आत्माभिव्यक्ति अवश्य मानता हूँ, लेकिन उसे मात्र आत्माभिव्यक्ति नहीं मानता। मैं उसे कुहासे के बीच की वह रोशनी मानता हूँ जो यात्री को

सही दिशा दे सके। कोलाहल के बीच किसी मंदिर से आती हुई वह शंख-ध्वनि मानता हूँ उसे जो किसी खतरे के प्रति सचेत करती हो। कविता और साहित्य अपने सभी विचारों में एक परिभाषा है, एक अर्थ है, एक सुझाव है, दृष्टि देने का प्रश्न भी है। इसे मैं अनुभूति भी मानता हूँ और एक बेहतर जीवन के लिए अनुभूति का नियंत्रण भी। वह मानवीय सम्बन्धों और मूल्यों की सर्जना है। साहित्य जहाँ सत्य, शिव और सुंदर है वहाँ शिव का वह तांडव रूप अख़्तियार करने का अधिकारी भी है। तब आलोचना उसका धर्म हो जाता है जो विध्वंश के लिए नहीं, बल्कि नवनिर्माण के लिए होती है। मेरे अपने लिए तो साहित्य कि यही परिभाषा और उपयोगिता रही है।"[5]

अनत जी एक कुशल कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार होने के साथ-साथ एक चित्रकार भी थे। लेखन से पूर्व अनत जी का चित्रकारी के प्रति विशेष अनुराग था। लेकिन व्यवस्था व जनता द्वारा उनके चित्रों को वह महत्व नहीं प्रदान किया गया, जिनके वे हकदार थे, फलस्वरूप चित्रकारी के प्रति उनका मोहभंग हो जाता है। सत्ता व समाज द्वारा अपने कलाकार जीवन की उपेक्षा के दर्द व कुंठा को अनत जी ने अपने कई उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। वे चित्रकारी को छोड़कर लेखन के प्रति इसलिए भी उन्मुख होते हैं, क्योंकि जिन प्रश्नों को वे उठाना चाहते थे उसकी सफल अभिव्यक्ति वे चित्रों में नहीं कर पा रहे थे। इसलिए वे लेखन को अपनाते हैं। इस संदर्भ में वे कहते हैं- "लेखक से पहले मेरा रिश्ता तूलिका, कैनवास और रंगों से था। बहुत सारी तस्वीरें बनाने के बाद मुझे लगा कि

मैं फलक पर अपने प्रश्नों को नहीं उतार पा रहा हूँ तो मैंने उस इरादे को अपने से इस्तीफा दे दिया।"[6]

अनत जी की पहली रचना एक रेडियो नाटिका थी। इसके बाद उन्होंने कहानियाँ लिखीं। इसके साथ-साथ उन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलायी है। कविताएँ उन्होंने सबसे बाद में लिखना शुरू किया। उनकी पहली कविता का शीर्षक था- 'पसीना किसी का, फसल किसी की।' यह अपने में कई कविताओं को लिए हुए एक कविता थी। इस कविता को भारत के तत्कालीन 'नवभारत टाइम्स' के संपादक महावीर ने अपने अखबारों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया था क्योंकि महावीर इस कविता से बहुत प्रभावित हुए थे। कविता की अंतर्वस्तु में मालिक मजदूर के संघर्ष को चित्रित किया गया था जिसका संबंध स्वयं अनत जी के जीवन से था।

अनत जी की प्रथम प्रकाशित रचना 'टूटी प्रतिमा' कहानी है। जो मॉरिशस से ही प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'अनुराग' में पंडित दौलतराम शर्मा के संपादकत्व में प्रकाशित हुई थी। भारत से प्रकाशित होने वाली उनकी पहली रचना 'लहरें कराह उठीं' शीर्षक से 'रानी' पत्रिका में छपी थी। अनत जी की प्रथम पुस्तकाकार रचना 'और नदी बहती रही' उपन्यास है, जो भारत से सन् 1970 ई॰ में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ।

अनत जी ने अपने साहित्य में समाज की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। साथ ही गोरों व सत्तासीन लोगों के शोषणतंत्र में शोषित एवं अपने प्रति किए जाने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज न उठा पाने वाले गूंगे वर्ग की पीड़ा को व्यक्त किया है। अपने लेखन के केंद्रीय विषय के बारे में वे कहते हैं- "मेरा लेखन एक समर्पित लेखन है। मैं उन सभी वर्गों की पीड़ा को शब्द देने का प्रयास करता हूँ जिनकी आवाजें जब्त हैं। मेरे पात्रों में वह फाइलों के नीचे दबता हुआ क्लर्क भी है, अफसरों की गुलामी को स्वीकारे हुए चपरासी भी है, मंत्री को चुनाव के दौरान बालोट पर छोटा-सा क्रास देकर अब ईसा का क्रास पीठ पर लिए दबा जा रहा आदमी भी है, मालिकों के लिए जमीन पर उगी फसल काटता हुआ गरीब मजदूर भी है, वह औरत भी है जो वेश्या है पर भोगने वालों की नजर में औरत नहीं है। वास्तव में, मैं उन बहरों तक उनकी आवाज पहुँचाने की चेष्टा करता हूँ, जो इनकी आवाजों को न सुन पाने का स्वांग रचे होते हैं।"[7]

अभिमन्यु अनत बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। इन्होंने हिन्दी भाषा के अतिरिक्त फ्रेंच व अँग्रेजी भाषा में भी लेखन कार्य किया है। मॉरिशस के वे एकमात्र ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने गद्य-पद्य की प्राय: सभी विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, कविता, एकाँकी, यात्रा-साहित्य, संस्मरण, जीवनी, अनुवाद, सह-लेखन आदि) में अपनी लेखनी चलायी है। इसके साथ-साथ इन्होंने बाल-साहित्य, सम्पादन/संकलन व नाट्य निर्देशन में भी अपनी अहम् भूमिका अदा की है। अनत जी एक कुशल कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार भी थे जिसकी झलक इनके सम्पूर्ण

रचनाकर्म में दिखाई देती है। अनत जी ने अपनी रचनाओं में मॉरिशस में रहने वाले आप्रवासी भारतीयों की संघर्ष गाथा व गोरे शासकों की बर्बरता को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। 'लाल पसीना', 'गांधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' तथा 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास और 'गूंगा इतिहास' नाटक में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के जीवन संघर्ष और गोरे शासकों तथा कोठी के सरदार दलाल आदि के अत्याचारों का यथार्थ चित्रण किया गया है। अनत जी के उपन्यासों का मूल स्वर है मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के दीर्घकालीन जीवन संघर्ष का उद्घाटन। अनत जी के कथा- साहित्य में विषयों की विविधता है, जिसके कारण इन्हें 'मॉरिशस का प्रेमचंद' कहा जाता है। विषयगत विविधता के साथ-साथ विधागत विविधता भी इनके रचनाकर्म की विशेषता है। अनत जी ने उपन्यास और कहानी के अलावा नाटक, एकाँकी, कविता, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा-साहित्य, संस्मरण आदि विधाओं में लेखनी चलायी है। सृजनात्मक लेखन के अलावा उन्होंने अनुवाद और संपादन का भी कार्य किया है।

उपन्यास विधा:

अनत जी ने लगभग 32 उपन्यासों की रचना की है जिनके नाम निम्नवत् हैं:

1) और नदी बहती रही (1970)
2) आंदोलन (1971)
3) एक बीघा प्यार (1972)
4) जम गया सूरज (1973)

5) तीसरे किनारे पर (1976)

6) तपती दोपहरी (1977)

7) लाल पसीना (1977)

8) चौथा प्राणी (1977)

9) कुहासे का दायरा (1978)

10) शेफाली (1979)

11) हड़ताल कल होगी (1979)

12) चुन-चुन-चुनाव (1981)

13) अपनी ही तलाश (1982)

14) अपनी-अपनी सीमा (1983)

15) पर पगडंडी नहीं मरती (1983)

16) गांधी जी बोले थे (1984)

17) मार्कट्वेन का स्वर्ग (1985)

18) फैसला आपका (1986)

19) मुड़िया पहाड़ बोल उठा (1987)

20) शब्दभंग (1989)

21) अचित्रित (1990)

22) और पसीना बहता रहा (1993)

23) लहरों की बेटी (1995)

24) घर लौट चलो वैशाली (1995)

25) चलती रहो अनुपमा (1998)

26) आसमान अपना आँगन (2000)

27) अस्ति-अस्तु (2003)

28) एक उम्मीद और (2003)

29) हम प्रवासी (2004)

30) क्यों न फिर से (2004)

31) अपना मन उपवन (2006)

32) मेरा निर्णय (2010)

कहानी संग्रह: अनत जी ने लगभग 200 कहानियों की रचना की है। अब तक इनके 8 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनके नाम निम्नवत् प्रस्तुत हैं:-

1) खामोशी के चीत्कार (1976)

2) इंसान और मशीन (1976)

3) वह बीच का आदमी (1981)

4) एक थाली समंदर (1988)

5) अभिमन्यु अनत की आरंभिक कहानियाँ (2002)

6) मातमपुरसी (2007)

7) अब कल आएगा यमराज (2010)

8) बवंडर बाहर-भीतर (2011)

नाटक: अनत जी की साहित्यिक यात्रा का आरंभ नाटकों से हुआ है उन्होंने स्वीकार किया है कि उनकी पहली रचना रेडियो नाटिका थी। अनत जी के अब तक 6 नाटक प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं:-

1) विरोध (1977)
2) तीन दृश्य (1981)
3) गूँगा इतिहास (1984)
4) रोक दो कान्हा (1986)
5) भरत सम भाई (1990)
6) देख कबीरा हाँसी (1995)

कविता संग्रह: अनत जी के अब तक 4 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं–

1) नागफनी में उलझी साँसे (1977)
2) कैक्टस के दाँत (1982)
3) एक डायरी बयान (1985)
4) गुलमोहर खौल उठा (1995)

संकलित ग्रंथ: अनत जी द्वारा संकलित रचनाएँ निम्नवत् हैं:-

1) आत्मविज्ञापन (1984)
2) 'Les Nuit' (Translation in French By Aslekha Callyarm-Proag) (1984)
3) अभिमन्यु अनत: समग्र कविताएँ (1998)
4) अभिमन्यु अनत: प्रतिनिधि रचनाएँ (1999)

संपादित ग्रंथ: अनत जी द्वारा संपादित ग्रन्थों की संख्या 7 है, जिनके नाम निम्नवत् हैं:-

1) मॉरिशस की हिन्दी कविता (1975)
2) मॉरिशस की हिन्दी कहानी (1976)
3) मॉरिशसीय हिन्दी कहानियाँ (1987)
4) मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि (1988)
5) मॉरिशस के हिन्दी एकाँकी (1990)
6) सोमदत्तबखौरी की चुनी हुई कविताएं (1990)
7) वसंत चयनिका (1993)

जीवनी: अनत जी द्वारा रचित दो जीवनी ग्रंथ मिलते हैं, जिनके नाम निम्नवत् हैं:-

1) जन आंदोलन के प्रणेता: प्रो॰ वासुदेव विष्णुदयाल (1987)
2) मजदूर नेता: राम नारायण (1988)

एकाँकी: अनत जी द्वारा रचित छः एकांकियों के नाम इस प्रकार हैं:-

1) परिवर्तन
2) क्लर्क की मौत
3) बिल्ली को दफना दो
4) मरिशा गवाही देना
5) जारी रहे तलाश
6) महामारी

यात्रा-साहित्य: अनत जी द्वारा लिखित तीन यात्रा-साहित्य के नाम निम्नवत् हैं:-

1) मेरी क्यूबेक यात्रा
2) कुछ यादें बंबई की
3) यादों का पहर

संस्मरण: अनत जी द्वारा रचित प्रमुख पाँच संस्मरणों के नाम इस प्रकार हैं:-

1) प्रधानमंत्री का वह दफ्तर
2) आज भी शूद्र हूँ
3) ईंट की रोटी
4) मैं चरित्रहीन पढ़ रहा था
5) डाक्टरों का मुर्दा

आत्मकथा: अनत जी द्वारा लिखित आत्मकथा का नाम निम्नवत् है:-

1) यादों का पहला पहर (2005)

अनूदित ग्रंथ: अनत जी ने लेखन के साथ-साथ अनुवाद कार्य भी किया है। उनके द्वारा अनूदित पुस्तक का नाम निम्नवत् है:-

1) मॉरिशस में भारतीय प्रवासियों का इतिहास (1978)

सह लेखन: अनत जी ने सह लेखन का भी कार्य किया है। सह-लेखन से संबन्धित ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं:-

1) Mauritius Its People and Culture (1987) [Co-Writer with S. Selvon and Dr. I. Asgarally]
2) 'History of the Port' (1987) [Co-Writer: S. Selvon]

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, संवेदनशील हृदय व पैनी दृष्टि से सम्पन्न अनत जी ने अपनी रचनाओं में अपने समय व समाज का यथार्थ चित्र खींचा है तथा विविध विधाओं में साहित्य-सृजन करके अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया है। इन्होंने मॉरिशसीय समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन्होंने वस्तु और शिल्प दोनों ही दृष्टियों मॉरिशसीय हिन्दी कथा साहित्य को नवीनता प्रदान कर हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में अपनी अहम् भूमिका का निर्वाह किया।

द्वितीय अध्याय 'मॉरिशस में आप्रवासी भारतीय' है। इसे तीन उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप अध्याय 'मॉरिशस: इतिहास और भूगोल की अंतर्यात्रा' है। इसके अंतर्गत मॉरिशस के इतिहास एवं वहाँ की भौगोलिक स्थिति का वर्णन किया गया है। इतिहास के अंतर्गत मॉरिशस में अरबों, पुर्तगालियों, डचों, फ्रेंचों और ब्रिटिशों के आगमन, कार्यकाल, योगदान और पलायन का विवेचन किया गया है। साथ ही मॉरिशस में अप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के आगमन का भी उल्लेख किया गया है। भौगोलिक स्थिति के अंतर्गत मॉरिशसद्वीप की उत्पत्ति, जलवायु, सागरीय और स्थलीय जीव-जंतु, वन संपदा, ज्वालामुखियों के अवशेष, पर्यटन स्थल, समुद्र तट आदि का विवेचन किया गया है।

मॉरिशस हिन्द महासागर में स्थित एक छोटा सा द्वीप है, जो अफ्रीका के दक्षिणपूर्वी तट से 2000 किलोमीटर दूरी पर अवस्थित है। मॉरिशस संसार का एक अनोखा देश है जिसका ऐतिहासिक संबंध हालैण्ड, फ्रांस, अफ्रीका, इंग्लैंड, चीन और भारत आदि देशों से जुड़ा रहा है। मॉरिशस द्वीप की खोज तब हुई जब डच, फ्रेंच तथा अंग्रेज़ जातियाँ अपने-अपने व्यापारिक हितों को ध्यान में रखकर हिन्द महासागर के तटवर्तीय देशों को तथा पूर्व के देशों को अपने-अपने उपनिवेश बनाने में संलग्न थे। सर्वप्रथम अरबवासियों का आगमन मॉरिशस द्वीप पर हुआ था। फिर 17वीं शताब्दी के प्रारंभ में पुर्तगालियों का आगमन हुआ और उन्होंने इस द्वीप पर कब्जा कर लिया। 1638 से लेकर 1710 ई. तक पुर्तगालियों का कब्जा इस द्वीप पर रहा। बाद में फ्रांसीसी आए और उन्होंने इस पर कब्जा कर लिया।

1715 से लेकर 1810 ई. तक फ्रांस का कब्जा इस द्वीप पर रहा। नौसैनिक युद्ध (ग्रांपोर्ट युद्ध) के बाद ब्रिटेन ने मॉरिशस पर कब्जा कर लिया और उसका यह कब्जा 1810 से लेकर 1968 ई. तक मॉरिशस के स्वतंत्र होने तक बरकरार रहा। लंबे संघर्ष के बाद 1968 ई. में मॉरिशस को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और 1992 ई. में वहाँ गणतंत्र की स्थापना हुई। अगर ध्यान से देखा जाए तो मॉरिशस के प्रारंभिक तीन शताब्दियों का इतिहास यूरोपीय उपनिवेशिक शक्तियों की अमानुषिक लूट, बर्बरता और अत्याचार की गवाह रही है जिसने मॉरिशस के इतिहास, भूगोल एवं समाज को अनगिनत घाव दिये हैं।

दूसरे उप अध्याय 'आप्रवासी भारतीयों की अवधारणा' में प्रवास, प्रवासी, आप्रवासी, भारतवंशी आदि शब्दों को परिभाषित किया गया है तथा प्रवास के विभिन्न प्रकारों की चर्चा की गई है। तीसरा उप अध्याय 'मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन' है। इसमें विभिन्न जत्थों में भिन्न-भिन्न उद्देश्य से तथा भिन्न-भिन्न रूपों में मॉरिशस आने वाले भारतीयों का वर्णन किया गया है। मॉरिशस में सन 1758 ई. के आसपास भारतीय गुलामों का आगमन होता है तो 1810 ई. में भारतीय सैनिकों एवं कैदियों का आगमन होता है। उसके बाद 1834 से 1920 ई. तक प्रतिज्ञाबद्ध कुली के रूप में कई जत्थों में भारतीयों का आगमन मॉरिशस में होता है। भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के आगमन की चर्चा अनत जी ने अपने उपन्यासों 'लाल पसीना' और 'हम प्रवासी' में स्पष्ट रूप से की है।

मॉरिशस उन भारतेतर देशों में से है जहाँ सन् 1834 ई० से शर्तबंद प्रथा के अंतर्गत, जो दासत्व का दूसरा रूप था, भारतीयों को भेजा जाता रहा। इसके अंतर्गत सन् 1923 ई० तक लगभग साढ़े चार लाख भारतीय मॉरिशस आये जिनमें से लगभग डेढ़ लाख भारतीय अपना पट्टा पूरा कर स्वदेश (भारत) लौट गए और शेष तीन लाख के करीब लोग यूरोपीय गोरों के अमानवीय अत्याचार सहकर भी वहीं रह गये। जिन भारतीयों के आत्मबलिदान से इस देश का कायाकल्प हुआ और जिनकी परिश्रमशीलता से यह संसार के मानचित्र पर उभरा उन्हीं भारतीयों की संतानों ने बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में अपने राजनीतिक अधिकारों को पहचानकर संघर्ष किया और बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में मॉरिशस को स्वतंत्र कराके अपने नेतृत्व का उदाहरण पेश किया। आज उन्हीं में से कुछ लोग या उनके वंशज प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, गवर्नर जनरल, सरकारी और अर्द्ध-सरकारी संस्थानों के निदेशकों के अलावा बैंकों के निदेशक, बीमा कंपनियों के संचालक, कृषि तथा वाणिज्य मण्डल के निदेशक आदि बनकर अपनी पहचान बनाए हुए हैं। इसी वर्ग से उच्चकोटि के लेखक और साहित्यकार भी हुए जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की। ऐसे लेखकों में अभिमन्यु अनत, प्रह्लाद रामशरण, रामदेव धुरंधर, सोमदेव बखौरी, मुनीश्वरलाल चिंतामणि आदि प्रमुख हैं। ये सभी मॉरिशस में रहकर हिंदी भाषा और साहित्य के विकास के लिए प्रयत्नशील रहे हैं तथा अपने सदप्रयासों से मॉरिशसके हिंदी साहित्य को वैश्विक पहचान दिलाई।

तृतीय अध्याय 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष' है। इसे चार उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप अध्याय 'सामाजिक संघर्ष' है। अनत जी ने अपनी प्रखर प्रतिभा, कुशल आलोचकीय दृष्टि व सशक्त लेखनी के माध्यम से अपने युगसत्य को अपनी रचनाओं में उकेरा है। ब्रिटिश औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में सन् 1834 ई० में 'शर्तबन्द प्रथा' के तहत मॉरिशस आने वाले भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की गोरे शासकों के शासनकाल में विविधोंमुखी शोषण एवं उस शोषण से निजात पाने हेतु भारतीय मजदूरों द्वारा किए जाने वाले संघर्ष को अनत जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं- गोरे शासकों द्वारा भारतीय मजदूरों का शोषण, उनके साथ भेद-भावपरक व्यवहार, रंगभेद की समस्या, जाति-पाँत, ऊँच-नीच की समस्या, मालिक-मजदूर संघर्ष, कृषक जीवन की समस्याएँ, भारतीयों का बलात् धर्मांतरण, नशाखोरी, वेश्यावृत्ति, असफल-प्रेम की समस्या, सत्ता द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग का शोषण, कानून-व्यवस्था तथा पूँजीपतियों की साठ-गाँठ व मजदूरों का विद्रोही तेवर आदि को अनत जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से चित्रित किया है। स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में व्याप्त समस्याओं को आप्रवासी भारतीय मजदूरों पर गोरे शासकों के अमानवीय अत्याचार, गोरे शासकों द्वारा भारतीय मजदूरों के साथ भेद-भावपरक व्यवहार, आप्रवासी भारतीयों द्वारा आप्रवासी भारतीयों का शोषण, कानून-व्यवस्था व पूँजीपतियों की मिलीभगत, आप्रवासी भारतीय मजदूरों का विद्रोही स्वर, गोरे मालिकों द्वारा मजदूरों के संगठन शक्ति को तोड़ना, मालिक-मजदूर संघर्ष, आप्रवासी भारतीय

मजदूरों का बलात् धर्मांतरण, आप्रवासी भारतीयों में जाति-पाँत, ऊँच-नीच की भावना, वेश्याजीवन की त्रासदी, गैर-कानूनी धन्धा/ नशीले पदार्थों का व्यवसाय, भारतीय मजदूरों को दलालों द्वारा दिए गए प्रलोभन आदि बिन्दुओं के माध्यम से विश्लेषित किया गया है। जिसकी सशक्त अभिव्यक्ति 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में हुई है।

'लाल पसीना' अनत जी का बहुचर्चित उपन्यास है। इसमें अनत जी ने भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण व संघर्ष के साथ-साथ गोरे शासकों की अमानवीयता, क्रूरता, बर्बरता व अन्याय का यथार्थपरक चित्रण किया है। मॉरिशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित इस उपन्यास में उन आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के जीवन संघर्ष की कहानी है जिन्हें चालाक फ्रांसीसी और ब्रिटिश उपनिवेशवादी सोना मिलने के सब्जबाग दिखाकर मॉरिशस ले गए थे। मॉरिशस में इन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ गोरे शासक तरह-तरह के अत्याचार करते थे। मजदूरों से कठोर-से-कठोर काम करवाकर भी न तो उन्हें भरपेट भोजन दिया जाता और न ही पानी। भूख-प्यास से बेहाल इन मजदूरों से खेतों में न सिर्फ पत्थरों की खुदाई व गन्ने की खेती करवाई जाती बल्कि इसके साथ ही बैलों के स्थान पर भारतीय मजदूरों से ही गन्ने से भरी गाड़ी भी खिंचवायी जाती थी। इतना ही नहीं यदि कभी कोई मजदूर किसी कारणवश खेत में देर से पहुँचता या बीमारी की वजह से अपने अन्य सहकर्मियों से काम में पीछे रह जाता तो उस सरदारों के कोड़े बरसने लगते तथा गालियों की बौछार शुरू हो जाती थी। यदि कभी कोई

मजदूर अपने साथ होने वाले अन्याय के बारे में सरदारों से सवाल करते तो उनको भी तरह-तरह से प्रताड़ित किया जाता। विद्रोही स्वभाव के मजदूरों को कभी नजरबंद कर दिया जाता तो कभी उन पर मालिकों के पालतू कुत्ते छोड़ दिये जाते या उन्हें पेड़ों से लटका दिया जाता। और कभी-कभी तो उनकी (गोरे शासकों की) निर्दयता इस कदर बढ़ जाती थी कि वे मजदूरों को मौत के घाट भी उतारने से नहीं चूकते थे। और मजदूरों में यह अफवाह फैला देते कि अमुक मजदूर ने आत्महत्या कर ली। इतना ही नहीं गोरे शासकों द्वारा कई स्तरों (रंग, आय, श्रम, जाति, लिंग, शिक्षा व स्वतन्त्रता आदि) पर भेद-भावपरक व्यवहार किया जाता था। श्वेतवर्णी शासकों के शासनकाल में भारतीय मजदूरों को कभी मनुष्य के रूप में देखा ही नहीं गया। उनकी (गोरे शासकों की) नजरों में भारतीय मजदूर काले-कलूटे, असभ्य, जंगली, जाहिल, गँवार आदि थे, जिन्हें न तो खाने-पहनने की तमीज है और न ही बात करने का ढंग है। भारतीय मजदूरों का रंग काला होने के कारण वे उन पर तरह-तरह की फब्तियाँ भी कसते थे और सदैव उनकी उपेक्षा करते रहते थे। कार्यस्थलों पर श्रम के आधार पर होने वाले अन्याय का उल्लेख करते हुए अनत जी लिखते हैं- "वहाँ के सभी अच्छे काम मालगासी करते थे। वहाँ जो भारतीय मजदूर थे, वे तो वहाँ हाड़-माँस के कल की तरह लगाए गए थे। कोल्हू के बैल और उनमें कोई अंतर था ही नहीं।-------सभी योग्यता होने पर भी भारतीय लोगों को कोई भी ऐसा काम नहीं दिया जाता जो बेहतर था और जिस पर गोरों और मालगासियों का एकाधिकार-सा था। सबसे अच्छे काम गोरों के लिए होते थे, कुछ बेहतर काम उनके लिए होते थे जो न तो गोरे थे और न ही भारतीय।

अपने आप को सांत्वना देने के लिए अगर भारतीयों के पास कुछ था तो वह यह कि काम, काम होता है। उसके लिए बदतर और बेहतर का प्रश्न ही क्यों?"[8]

'लाल पसीना' उपन्यास की ऐतिहासिकता तथा घटनाओं एवं पात्रों की यथार्थता के संबंध में अनत जी एक साक्षात्कार में डा० कमल किशोर गोयनका से कहते हैं- "लाल पसीना, उन छोटे लोगों का इतिहास है जिन्होंने बहुत बड़ा काम किया। इन्हीं लोगों ने सबसे पहले मानवीय अधिकारों और स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी। यह अभियान खेतों और बैठकाओं से ही शुरू हुआ। हिन्दी और भारतीय संस्कृति ने इस देश को सबसे अधिक राष्ट्रीय भावना दी है।------लाल पसीना के सभी तो नहीं, पर किसनसिंह, मदन, मीरा और विवेक ये और कुछ दूसरे भी प्रमुख पात्र मेरे अपने पुरुखों में से हैं जो कभी हाड़-माँस के थे।----उनसे सम्बद्ध घटनाएँ बड़ी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत की गयी हैं। किसनसिंह अगर मेरे दादा हैं तो मदन मेरे मामा।"[9] दूसरा उप अध्याय 'राजनीतिक संघर्ष' है। अनत जी ने अपने साहित्य के माध्यम से न सिर्फ स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है बल्कि इसके साथ ही तत्कालीन राजनीतिक परिघटनाओं को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस 'उप-अध्याय' में मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की जागरूक राजनीतिक चेतना एवं अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए उनकी प्रतिबद्धता तथा उसके लिए किए गए उनके राजनीतिक संघर्ष का चित्रण किया गया है। इसमें आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को जागरूक करने वाली उन तमाम स्थितियों, परिस्थितियों व व्यक्तियों के योगदान को भी चित्रित किया गया है जिसके जरिए उनमें राजनीतिक

चेतना का विस्तार होता है, और जिनकी मदद से वे अँग्रेजी दासता से मॉरिशस को आजाद कराते हैं और मॉरिशस की विधानसभा में अपनी पैठ बनाते हैं तथा देश की शासन-व्यवस्था पर काबिज होते हैं।

अनत जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के राजनीतिक संघर्ष को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। साथ ही स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक गतिविधियों, चुनावी सरगर्मियों, सत्तासीन मंत्रियों व नेताओं की वादाखिलाफी प्रवृत्ति, इस कदर चुनाव जीतने हेतु अपनाए जाने वाले विभिन्न राजनीतिक हथकण्डों- विपक्षी को चुनाव से पीछे हट जाने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन देना, धमकी देना, उस पर हमला करवाना, सभाओं में गुंडा-गर्दी व दंगा-फसाद करवाना, चारित्रिक लांछन लगाना, जनता से सहानुभूति प्राप्त करने हेतु स्वयं पर झूठा हमला करवाना, वोटों की खरीद-फरोख्त, प्रेस व कानून से साठ-गाँठ करना, पोलिंग बूथों पर कब्जा, विपक्षियों के मुख्य कार्यकर्ताओं व एजेन्टों को खरीद लेना व रातों-रात गायब करा देना आदि का यथार्थपरक अंकन किया है। इसके अतिरिक्त इनके उपन्यासों में चुनाव के पश्चात् मंत्रिमंडल में होने वाले विभिन्न राजनीतिक षडयंत्रों का भी चित्रण किया गया है।

स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक स्थिति एवं वहाँ की राजनीति पर भारतीयों की उपस्थिति पर प्रकाश डालते हुए मॉरिशस के प्रसिद्ध इतिहासकार प्रह्लाद रामशरण

लिखते हैं- "देश के संविधान के अनुसार मॉरिशस में 1921 और 1926 ई० में आम चुनाव आयोजित हुए थे। 1921 के आम चुनाव में भारतवंशियों के प्रथम बैरिस्टर रामखेलावन बुधन ने चुनाव लड़ा था। किन्तु पराजय के बाद राज्यपाल ने उन्हें मनोनीत करके सरकारी काउंसिल का सदस्य बना दिया था। इस देश के भारतवंशियों के लिए यह ऐतिहासिक घटना थी क्योंकि राज्यपाल के इस कदम से भारतवंशियों का प्रथम हिन्दू प्रतिनिधि सरकारी काउंसिल का सदस्य बना था। वास्तव में 1926 के आम चुनाव में भारतवंशियों के दो हिन्दू प्रतिनिधि देश के दो अलग-अलग चुनाव जिलों से निर्वाचित होकर सरकारी काउंसिल के सदस्य बन पाये थे। यह भारतवंशियों की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है।"[10] मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व तथा मॉरिशस में गाँधी जी के आगमन से पूर्व ही भारतीय गिरमिटिया मजदूर देश की राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगे थे। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक स्थिति एवं आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की जागृत राजनीतिक चेतना एवं उनके राजनीतिक संघर्ष का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। चुनावी सरगर्मी, विपक्षियों के दोषों का बखान करना/ चारित्रिक लांछन लगाना, विपक्षियों पर दंगा-फसाद व गुंडा-गर्दी करवाना, विपक्षी पार्टी के उम्मीदवारों की खरीद-फरोख्त, मतदान की आपाधापी, जीते हुए प्रत्याशी को अपदस्थ करने की साजिश, चुनाव जीतने के बाद नेताओं का अपने वायदों से मुकरना/ नेताओं की वादाखिलाफी प्रवृत्ति, राजनीति की ताकत व उसकी आवश्यकता, राजनेताओं

की महत्वाकाँक्षा आदि बिन्दुओं के माध्यम से स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस की राजनीतिक स्थिति को विश्लेषित किया गया है।

तीसरा उप अध्याय 'आर्थिक संघर्ष' है। अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के आर्थिक संघर्ष को भी यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। अनत जी द्वारा रचित- 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्थिक विपन्नता, आर्थिक विपन्नता से जूझते किसान-मजदूरों की दयनीय स्थिति, आर्थिक विपन्नता के विभिन्न कारणों एवं उसके दुष्परिणामों- शराब की लत, जुआ की लत, नशीले पदार्थों का सेवन व उसके धंधे में संलिप्तता, वेश्यावृत्ति, वेश्यागमन, चोरी, पारिवारिक कलह, बिखरते दाम्पत्य जीवन आदि की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। अनत जी ने स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के आर्थिक विपन्नता एवं तंगहाली जीवन का सजीव चित्रांकन अपने उपन्यासों में किया है, जब उन्हें कई-कई दिनों तक भूखा रहना पड़ता था और उस भूख को मिटाने के लिए उन्हें तमाम प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। - "खेतों की पहली फसल शुरू होने में अभी दो महीने से कम की अवधि नहीं शेष थी। कुएँ, खेत, बैठका, नदी, तट, हर जगह यही प्रश्न किया जाता रहा- ये दो महीने बाल-बच्चे क्या खाएँगे?------फरीद के साथ मदन उन घरों को देख आया था, जहाँ तीन दिन से मुट्ठी भर भात में गुजारा हो रहा था। हाँडी में बचे हुए अनाज को एकाध सप्ताह ले जाने के लिए और कोई दूसरा उपाय था ही

नहीं। जिन घरों ने इस परहेजको अपनाया था, वहाँ बच्चे भी थे। मदन को इसी बात की अधिक चिंता थी कि ये बच्चे अपने पेट को दबाये कैसे सो सकते थे।"[11] स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशस के आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के आर्थिक संघर्ष को आर्थिक विपन्नता का चित्रण, मालिकों द्वारा मजदूरों के श्रम का शोषण, नशाखोरी से उत्पन्न आर्थिक विपन्नता, बेरोजगारी से उत्पन्न आर्थिक तंगी, प्राकृतिक आपदा से उत्पन्न आर्थिक विपन्नता, परिवार के मुखिया की असामयिक मृत्यु, आर्थिक असमानता, आम आदमी की जीवनाकाँक्षा आदि बिन्दुओं के माध्यम से उद्घाटित किया गया है।

चौथा उप अध्याय 'धार्मिक एवं सांस्कृतिक संघर्ष' है। प्रस्तुत उप अध्याय के अन्तर्गत अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था को दर्शाया गया है। अनत जी के विभिन्न उपन्यासों में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था एवं पराई भूमि में अपने धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु उनके द्वारा किए गए कठोर संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। भूख और अकाल से पीड़ित भारतीय मजदूर अपने घर, परिवार, गाँव व देश को छोड़कर सुखमय जीवन की तलाश में मॉरिशस आए थे। मॉरिशस आते समय इन मजदूरों ने रामायण, गीता, महाभारत, आल्हा, हनुमान चालीसा आदि धार्मिक, पौराणिक ग्रन्थों को अपने साथ थाती के रूप में सँजो लिया था। यही ग्रंथ जहाज यात्रा के दौरान, संकट के समय भारतीय मजदूरों का संबल बने। अपने जनों से बिछुड़ने के गम को भुलाने एवं स्वयं में नवीन चेतना का संचार करने के लिए वे लोग इनकी पंक्तियाँ गुनगुनाते। मॉरिशस में

गोरे शासकों द्वारा आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ तमाम प्रकार के भेद-भाव परक व्यवहार किए जाते तथा उनसे कठोर-से-कठोर श्रम करवाया जाता था। अत्यधिक मेहनत करवाने के बावजूद भी मजदूरों को न तो भरपेट भोजन दिया जाता और न ही क्षण भर का आराम। यद्यपि भारतीय मजदूरों को एग्रीमेंट के तहत मॉरिशस लाया गया था, लेकिन मॉरिशस में उनकी स्थिति गुलामों से भी बदतर थी। उनके साथ पशुवत् व्यवहार किया जाता था। उन्हें स्वतंत्र रूप से किसी भी प्रकार का काम करने की छूट नहीं थीं। यदि मजदूरों द्वारा गन्ने के खेतों में काम करते समय या अपनी थकान को मिटाने के उद्देश्य से रामायण, गीता, आल्हा आदि के छंदों को गाया जाता तो गोरे शासक व कोठी के सरदारों द्वारा उन मजदूरों पर कोड़े बरसाये जाते। इतना ही नहीं उनके धार्मिक ग्रन्थों को जला दिया जाता था तथा उनके देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को खंडित कर दिया जाता और उनका उपहास किया जाता। ब्रिटिश सत्ता के अधीन मॉरिशस में गोरों के शासनतंत्र में शोषित आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था एवं उसके संरक्षण हेतु किए गए संघर्ष को अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। अनत जी द्वारा रचित–'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व (सन् 1834 ई॰ से 1968 ई॰ तक) आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्ष एवं उसके प्रति उनके अटूट लगाव का चित्रण किया गया है। 'धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्ष' नामक 'उप-अध्याय' के अन्तर्गत स्वतन्त्रता-पूर्व मॉरिशसीय समाज में 'शर्तबंद प्रथा' के तहत मॉरिशस जाने वाले आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया

मजदूरों की अपने धर्म व संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा व प्रेम को दर्शाया गया है। साथ ही आप्रवासी भारतीयों द्वारा पराई भूमि में अपनी सभ्यता, संस्कृति व धार्मिक आस्था को जीवन्त बनाए रखने हेतु किए संघर्ष की भी सफल अभिव्यक्ति हुई है। साथ ही औपनिवेशिक राष्ट्र मॉरिशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा मनाए जाने वाले विभिन्न रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार, परम्पराएँ, मत-मान्यताएँ, लोकविश्वास, अंधविश्वास, लोकगीत, साहित्यिक संघर्ष आदि का सफल चित्रांकन किया गया है। आप्रवासी भारतीय मजदूरों के जीवन में 'बैठका' के महत्व को भी दर्शाया गया है। क्योंकि 'बैठका' ही मजदूरों की सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक-सांस्कृतिक संस्था थी। इसके साथ ही आप्रवासी भारतीयों के देश छोड़ने के पश्चाताप व अतीत के प्रति मोह आदि भावों की भी सफल अभिव्यक्ति हुई है।

चतुर्थ अध्याय 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष' है। इसे चार उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में जहाँ एक ओर मॉरिशस की स्वतन्त्रता से पूर्व (12 मार्च 1968 ई. से पूर्व) 'शर्तबन्द प्रथा' के अंतर्गत मॉरिशस आने वाले तथा गोरे शासकों के शोषण तंत्र में पिसने वाले आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण, धैर्य, साहस, संघर्ष, त्याग व बलिदान का चित्रण किया है, वहीं दूसरी ओर स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस (12 मार्च 1968 ई. के बाद) में आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों व उनकी संततियों के विविधोंमुखी शोषण को भी दर्शाया है। स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त विभिन्न

समस्याओं- रंगभेद की समस्या, असफल प्रेम, वैवाहिक सम्बन्धों में जाति, संप्रदाय, शिक्षा, हैसियत का अंतर, अंतर्धर्मीय प्रेम-विवाह की समस्या, कलाकार व उसकी प्रतिभा की उपेक्षा, मालिक-मजदूर संघर्ष, मजदूरों में संगठन शक्ति का अभाव, उद्योगपतियों, मिल-मालिकों व पूँजीपतियों की दमनकारी मनोवृत्ति, कानून-व्यवस्था व न्याय-व्यवस्था का पूँजीपतियों से साठ-गाँठ, नौकरी व पदोन्नति में योग्यता के स्थान पर जातिवाद, भाई-भतीजावाद, घूसखोरी व चापलूसी प्रवृत्ति का बोलबाला, नवयुवकों का विद्रोही तेवर, भ्रष्ट राजनीति, चुनावी सरगर्मी, राजनीतिक हथकंडे, नवयुवकों का विदेशों की ओर पलायन, महँगाई, आर्थिक तंगी, बेरोजगारी, वेश्यावृत्ति व नशीले पदार्थों के अवैध धंधे, पारिवारिक विघटन, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, होटल संस्कृति, मूल्यहीनता, धर्मपरिवर्तन, वृद्धावस्था की समस्या आदि पर भी अपनी सशक्त लेखनी चलायी है। अनत जी ने 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'एक बीघा प्यार', 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'तपती दोपहरी', 'हड़ताल कल होगी', 'चुन-चुन चुनाव', 'अपनी ही तलाश', 'पर पगडंडी नहीं मरती', 'मार्कट्वेन का स्वर्ग', 'फैसला आपका', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'शब्दभंग', 'अचित्रित', 'चलती रहो अनुपमा', 'क्यों न फिर से' व 'मेरा निर्णय' आदि अपने उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में व्याप्त विविधोंमुखी समस्याओं का चित्रण किया है। इस अध्याय में उपर्युक्त वर्णित उपन्यासों के आलोक में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष को विवेचित किया गया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत अध्याय को चार उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय 'सामाजिक संघर्ष' में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं- रंगभेद

की समस्या, नौकरी व पदोन्नति में योग्यता के स्थान पर भाई-भतीजावाद, जातिवाद का बोलबाला, मालिक-मजदूर संघर्ष, नवयुवकों व मजदूरों का विद्रोही स्वर, कानून-व्यवस्था व पूँजीपतियों की मिलीभगत, असफल-प्रेम व अन्तर्जातीय व अंतर्धार्मीय विवाह की समस्या, वेश्याजीवन की त्रासदी, बलात धर्मांतरण की प्रक्रिया, कृषक जीवन की त्रासदी व समस्याएँ, सत्ता द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग का शोषण, आप्रवासी भारतीयों का आप्रवासी भारतीयों से संघर्ष, आप्रवासी भारतीयों का अन्य समुदाय के लोगों से संघर्ष आदि को विवेचित, विश्लेषित किया गया है। अनत जी द्वारा रचित विभिन्न उपन्यासों- 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'एक बीघा प्यार', 'तीसरे किनारे पर', 'तपती दोपहरी', 'हड़ताल कल होगी', 'अपनी ही तलाश', 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'अचित्रित' व 'मेरा निर्णय' आदि में उपर्युक्त वर्णित समस्याओं की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

दूसरे उप अध्याय 'राजनीतिक संघर्ष' में स्वातन्त्र्योत्तर मॉरिशस की अव्यवस्थित शासन प्रणाली, भ्रष्ट राजनीति, नेताओं व मंत्रियों की स्वार्थलोलुपता, जनसमस्याओं की उपेक्षा, नवयुवकों के विद्रोह व आंदोलन को दबाना, राजनीतिक गतिविधियों, चुनावी सरगर्मियों, विभिन्न राजनीतिक षडयंत्रों- चुनावी उम्मीदवारों द्वारा जनता से किए गए खोखलेवादे, चुनावी प्रक्रिया में जातिवाद को बढ़ावा देना, गुंडा-गर्दी, विपक्षी के दोषों का बखान करना/ चारित्रिक लांछन लगाना, जनता की सहानुभूति प्राप्त करना, वोटों की खरीद-फरोख्त, पोलिंग बूथ पर कब्जा करना, चुनावी उम्मीदवारों की प्रेस व कानून से साठ-गाँठ, जनता की दोगली मनोवृत्ति तथा चुनाव के पश्चात मंत्रिमंडल में होने वाली खींचातानी

आदि को विश्लेषित किया गया है। जिसकी सशक्त अभिव्यक्ति अनत जी के विभिन्न उपन्यासों- 'चुन-चुन-चुनाव', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'चलती रहो अनुपमा', 'आसमान अपना आँगन' व 'क्यों न फिर से' आदि में हुई है।

तीसरा उप-अध्याय 'आर्थिक संघर्ष' है जिसके अंतर्गत स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस में आप्रवासी भारतीयों की आर्थिक स्थिति का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। अनत जी द्वारा रचित 'और नदी बहती रही', 'जम गया सूरज', 'एक बीघा प्यार', 'तपती दोपहरी', 'चौथा प्राणी', 'शब्दभंग', 'लहरों की बेटी', 'चलती रहो अनुपमा' व 'मेरा निर्णय' शीर्षक उपन्यासों में क्रमश: मधुकर, लालमान, सोम, राजेन, बीणा, रोबीन, विदुला, अनुपमा व अमिता नामक पात्रों के माध्यम से आर्थिक तंगी से जूझते परिवारों का चित्रण किया गया है। 'जम गया सूरज' उपन्यास में अनत जी ने लालमन के माध्यम से आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की आर्थिक तंगी का चित्रण किया है। आर्थिक विपन्नता की वजह से किसान-मजदूर अपने बच्चों का न तो उचित ढंग से पालन-पोषण कर पाते हैं और न ही उन्हें उनकी औपचारिक शिक्षा पूरी करा पाते हैं। आर्थिक विपन्नता की वजह से लालमन अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाता। इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है- "गाँव के कई लड़के अपनी पढ़ाई बीच में ही बंद कर चुके थे पर उन सभी के लिए तो ऐसा कर जाने की मजबूरी थी। उनमें एक भी ऐसा नहीं था जिन्होंने अपनी इच्छा से पढ़ाई छोड़ दी हो। सभी के लिए पैसे का अभाव ही सबसे बड़ा कारण था।"[12] अनत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से न सिर्फ आर्थिक तंगी से जूझते किसानों, मजदूरों का चित्रण किया है बल्कि इसके साथ-साथ

आर्थिक विपन्नता के विभिन्न कारणों- काम का अभाव, शिक्षित नवयुवकों की बेरोजगारी, नौकरी में योग्यता व वरिष्ठता के स्थान पर जातिवाद, भाई-भतीजावाद, घूँसखोरी व चापलूसी को महत्व देना, आदि पर भी प्रकाश डाला है। तथा आर्थिक तंगी की वजह से उत्पन्न मानसिक कुंठा, पारिवारिक कलह, आर्थिक असमानता, सामाजिक उपेक्षा आदि का भी यथार्थपरक चित्रण किया है। जो अनत जी की सूक्ष्म अवलोकन दृष्टि का परिचायक भी है। चौथे उप अध्याय 'धार्मिक व सांस्कृतिक संघर्ष' में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों की पराई भूमि में धार्मिक आस्था भाषा, साहित्य एवं कला के प्रति उनकी मोहग्रस्तता तथा उसके संरक्षण हेतु उनके द्वारा किए गए प्रयासों का सफल चित्रांकन किया गया है। अनत जी द्वारा रचित उपन्यासों, विशेषकर 'जम गया सूरज', 'तीसरे किनारे पर', 'चौथा प्राणी', 'शेफाली', 'चुन-चुन-चुनाव', 'चलती रहो अनुपमा', 'लहरों की बेटी', 'आसमान अपना आँगन' व 'मेरा निर्णय' आदि में क्रमश: राधिका, सहदेवसिंह का परिवार, वीणा, शेफाली, धरती, अनुपमा, विदुला, शोभा व अमिता के माध्यम से उन आप्रवासी भारतीयों का चित्रण किया है जो किसी भी दशा में अपनी धार्मिक आस्था को डिगने नहीं देते बल्कि विपरीत परिस्थितियों में भी पूरी शिद्दत के साथ अपने इष्ट को याद करते हैं, उनकी पूजा-अर्चना, व्रत-उपवास, मान-मनौती आदि करते हैं। 'मेरा निर्णय' की अमिता इंग्लैंड में रहते हुए भी रामनवमी का त्यौहार मनाती है। ठाकुर सहदेवसिंह बस्ती छोड़कर शहर में बस जाता है। यद्यपि शहर के अधिकांश लोग पूजा-पाठ आदि में विश्वास नहीं करते लेकिन सहदेवसिंह की धार्मिक आस्था में कोई बदलाव नहीं आता। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- "शाम को सहदेवसिंह ने हनुमान जी के चौतरे के सामने पूरा घंटा बीटा

दिया था। उसकी पत्नी ने भी देवी-देवताओं की मनौतियाँ की थी। दिन भर अरुणा का उपवास था। गाँव छोड़कर शहर आ जाने पर बहुत से लोग गाँव के रस्म-रिवाजों को पीछे छोड़ आते हैं लेकिन सहदेवसिंह उन्हें साथ लाया था।"[13] अनत जी ने न सिर्फ आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक आस्था का निरूपण किया है बल्कि इसके साथ ही उनके द्वारा मनाए जाने विभिन्न पर्वों- होली, दीपावली, महाशिवरात्रि, दुर्गापूजा, रामनवमी, दशहरा, ईद, मोहर्रम, क्रिसमस, नववर्ष आदि का भी चित्रण किया है साथ ही उनके रीति-रिवाज, लोकविश्वास व मान्यताएँ, नवजात शिशु के जन्म संबंधी शुभ-अशुभ का विचार, पुनर्जन्म संबंधी मत, मृत आत्माओं अपने शुभचिंतकों को आगाह करना, भविष्यवाणी, किंवदंतियाँ, अंधविश्वास आदि बिन्दुओं पर भी प्रकाश डाला है। अनत जी ने स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के आप्रवासी भारतीयों के साहित्यिक संघर्ष को भी वाणी प्रदान की है। जिसके अंतर्गत हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति लगाव, मानव जीवन के विकास में भाषा व साहित्य की उपयोगिता, पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का प्रभाव/ विसंस्कृतिकरण का प्रभाव आदि बिन्दुओं को विवेचित विश्लेषित किया गया है।

पंचम अध्याय 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस की आप्रवासी भारतीय स्त्री' है। इसे तीन उप-अध्याय में विभक्त किया गया है। इसके अंतर्गत ब्रिटिश औपनिवेशिक शासनकाल एवं स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशसीय समाज में आप्रवासी भारतीय स्त्रियों के विविधोंमुखी शोषण एवं उनसे निजात पाने हेतु उनके द्वारा किए गए विविध प्रकार के जीवनसंघर्ष को विश्लेषित किया गया है। प्रथम अध्याय 'पितृसत्तात्मकता और स्त्री' है।

जिसके अंतर्गत स्वतन्त्रता-पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में स्त्रियों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों में उनकी स्थिति का मूल्याँकन किया गया है साथ ही पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्रियों पर ढ़ाये जाने वाले विविधोंमुखी जुल्मों पर भी प्रकाश डाला गया है। जिसकी सशक्त अभिव्यक्ति अनत जी के विभिन्न उपन्यासों में हुई है। अनत जी द्वारा रचित 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा', 'अचित्रित' व 'हम प्रवासी' शीर्षक उपन्यासों में स्वतन्त्रता-पूर्व (12 मार्च 1968 से पूर्व) मॉरिशसीय समाज में गोरे शासकों के शोषणतंत्र में पिसती स्त्रियों का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। 'लाल पसीना' की- जुबेदा, भगवतिया, तांगेची, कोसला, 'गाँधी जी बोले थे' की- ज़ीनत, सीता, 'और पसीना बहता रहा' की- प्रभा, अंजलि आदि ऐसी नारी चरित्र हैं जो उन तमाम स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिन्हें एक तरफ गोरों शासकों की अनेक यातनाओं से गुजरना पड़ता है तो दूसरी तरफ अपने ही घर में पुरुष वर्ग द्वारा प्रताड़ित की जाती हैं। अनत जी द्वारा रचित 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'चौथा प्राणी', 'शेफाली', 'अपनी-अपनी सीमा', 'फैसला आपका', 'घर लौट चलो वैशाली', 'चलती रहो अनुपमा', 'आसमान अपना आँगन', 'क्यों न फिर से' व 'मेरा निर्णय' आदि में स्वातंत्र्योत्तर मॉरिशस के पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में स्त्रियों के संघर्षरत जीवन का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। दूसरे उप अध्याय 'पारिवारिक एवं आर्थिक जीवन' में मॉरिशस के समाज में अप्रवासी भारतीय स्त्रियों के विविध रूपों- माँ, बहन, बेटी, पत्नी आदि के रूप में उनकी पारिवारिक जिम्मेदारी एवं गतिविधियों का सजीव चित्रण किया गया है। इसके साथ ही परिवार का

भरण पोषण करने हेतु उनके द्वारा किए गए और अर्थोपार्जन के प्रयासों को भी विवेचित किया गया है। अपने उपन्यासों के माध्यम से अनत जी ने यह भी दर्शाया है कि पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में दोयम दर्जे का प्राणी मानी जाने वाली स्त्रियाँ न सिर्फ अपने को घर के कामकाज तक सीमित रखती हैं बल्कि इसके साथ ही वे विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करके अपने घर के मुखिया की आर्थिक मदद भी करती हैं। 'चौथा प्राणी' उपन्यास की वीणा, 'शेफाली' उपन्यास की नायिका शेफाली, 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास की नेहा, 'अचित्रित' की वानी, 'लहरों की बेटी' की विदुला, 'चलती रहो अनुपमा' की अनुपमा, 'अपना मन उपवन' की नमिता, और 'मेरा निर्णय' उपन्यास की अमिता आदि ऐसी नारी पात्र हैं जो अपने व्यक्तिगत हित का परित्याग करके अपने परिजनों के निमित्त अर्थोपार्जन के कार्य में संलग्न रहती हैं।

तीसरे उप अध्याय 'नारी मुक्ति की चेतना' के अंतर्गत उन स्त्रियों का वर्णन किया गया है जो आधुनिक चेतना से संपन्न स्वतंत्र विचारों वाली तथा अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूक रहती हैं। साथ ही पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था की उन सड़ी-गली मान्यताओं, रीति-रिवाजों, परंपराओं, नियमों आदि का उल्लंघन करती है जिनकी वजह से उनके आशाओं - आकांक्षाओं एवं भावों-विचारों तथा अधिकारों का हनन होता है। 'आंदोलन' उपन्यास की रमावती, 'तीसरी किनारे पर' की मारीज, 'चुन-चुन चुनाव' की स्वस्ति, 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' की नेहा, 'और पसीना बहता रहा' की प्रभा, 'लहरों की बेटी' की दुलारी, 'घर लौट चलो वैशाली' की वैशाली, 'आसमान अपना आंगन' की नंदिनी, शोभा

और अनुराधा, 'अस्ति-अस्तु' की दिव्या, 'क्यों न फिर से' की महिमा, और 'मेरा निर्णय' की अमिता आदि ऐसी नारी पात्र हैं जो न सिर्फ पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं, रूढ़ियों एवं परंपराओं का विरोध करती हैं जिनसे स्त्रियों की इच्छा-आकांक्षाओं, भावों और विचारों का हनन होता है और जिनसे उनकी स्वतंत्रता में बाधा उत्पन्न होती है। ये स्त्रियाँ पुरुषों की अनुगामिनी मात्र नहीं बनी रहना चाहती हैं। ये तो पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की ख्वाहिश रखती हैं। बल्कि कुछ मामले में तो उनसे एक कदम आगे रहने की ख्वाहिश रखती हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत मॉरिशस के हिंदी भाषा के सबसे बड़े रचनाकार हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी, संवेदनशील ह्रदय और पैनी दृष्टि से संपन्न लेखक हैं। अनत जी ने अपनी रचनाओं में मॉरिशस के समय, समाज, इतिहास और उसके ताप का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने विविध विधाओं में साहित्य सर्जन करके अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया है। उन्होंने उत्तम कोटि का साहित्य रच कर हिंदी भाषा व साहित्य को वैश्विक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। उन्होंने वस्तु और शिल्प दोनों ही दृष्टि से मॉरिशस के हिंदी कथा साहित्य को नवीनता प्रदान कर हिंदी साहित्य के इतिहास को समृद्ध करने में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह किया।

संदर्भ ग्रंथ-सूची:

1. डॉ. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत: एक बातचीत, पृ- 28

2. वही, पृ- 8

3. वही, पृ- 19

4. वही, पृ- 40

5. वही, पृ- 45

6. वही, पृ- 3

7. वही, पृ- 15

8. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ- 101

9. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत: एक बातचीत, पृ- 81-82

10. प्रह्लाद रामशरण, गाँधी जी बोले थे: छद्म अवधारणाओं का आलेख, पृष्ठ- 8

11. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ- 315-316

12. वही, जम गया सूरज, पृ- 68

13. वही, तीसरे किनारे पर, पृ- 174